

श्री मन्नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती विरचित

श्री महामुनि क्षीरसागर प्रणीत

गोमटसार - कर्मकांड

卐

प्रकाशक :—

श्री महामुनि क्षीरसागर दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला
माधोगज, लश्कर (गवालियर)

०

प्रथमावृत्ति १,०००

सावन सुदी १५
वीर निर्माण सवत् २४६५

मूल्य ५)

कर्मकांड यह गोम्मटसार,

नेमिचन्द्र रचना उद्धार।

बंध उदय सत्ता इन थान,

अन्वय भावसहित व्याख्यान ॥१॥

यह व्यवहार कथन नय मान,

निश्चय कर्म रहित है जान।

यह श्रद्धा मन बंध न करे,

बंध रहित निज पद को धरे ॥२॥



अनेक ग्रन्थो के कर्त्ता और अनेक अतिशय [स्वयबोधित,
स्वयंदीक्षित, परमअध्यात्मयोगी, विद्यमानभोगपरिहारी,
दम्पतिमहाव्रतधारी, एकाविहारी, जिनवरलिंगधारी,
महासाहित्यक, महावादी, महाकवि परमाचार्य,
चारित्रशिरोमणि, सिद्धान्तचक्रवर्ती, श्रुतकेवली-
तुल्यपद] के धारक परमपूज्य श्री १००८ महामुनि

क्षीरसागर जी महाराज

१००८ महामुनि वीरसागर जी महाराज का जीवन-वृत

आपका जन्म वरैया वैश्य जाति के कांडोर गोत्र मे सौ० द्रौपदी [illegible]हिन के पश्चात् श्रावण कृष्णा ३ स० १९६० मे रिठौरा ग्राम [illegible]ल, मुरैना (गवालियर) मे हुआ था। आपका पूर्व नाम वोहरे [illegible]तीलाल जी था। पिता का नाम वोहरे पन्नालाल जी तथा माता [illegible] नाम कौशल्या वाई था। आपकी शिक्षा मुरैना जैन विद्यालय [illegible] केवल चौथी कक्षा तक हुई और ११ वर्ष की अवस्था मे आपका [illegible] साह नन्दरामजी, मोहना (गवालियर) की सुपुत्री मथुरादे साथ हो गया। लगभग ४० वर्ष की अवस्था तक आप पूर्व [illegible] मर्यादा सहित गृहस्थ-जीवन करते रहे। आपका मुख्य [illegible]वसाय कपडे की दूकान तथा साहूकारी था। चिरजीलाल जी, [illegible]नेहरीलाल जी, श्यामलाल जी, शकरलाल जी तथा अमृतलाल जी [illegible]के पाँच सुपुत्र है जो इस समय गवालियर मे कपडे का व्यवसाय [illegible] रहे हैं। विद्यालय मे शिक्षा प्राप्त करते समय ही आपके हृदय [illegible] विशेष धार्मिक अभिरुचि उत्पन्न हुई और स्वाध्याय, दर्शन, पूजन [illegible]दि आपके दैनिक नियम वन गये। वाल्यकाल से ही आपकी [illegible]वृत्ति सप्त व्यसनो से सर्वथा विमुख रही। प्रत्येक शास्त्र की [illegible]प्ति पर आप कुछ न कुछ नियम अवश्य लेते थे। एक वार [illegible]पने एक महान् नियम लिया कि पुत्र-वधू के आते ही मैं गृह [illegible]याग दूँगा। गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए भी आपका हृदय [illegible]दैव ससार से विरक्त रहा। सॉसारिक प्रलोभन आपकी पवित्र आत्मा को जरा भी विचलित न कर सके। दो पुत्रो की शादी [illegible]ोने के पश्चात् उनकी छोटी अवस्था के कारण आप ३ वर्ष तक ७वी प्रतिमा धारण कर घर पर ही रहे। अन्त मे ससार की अनित्यता को देखकर, अपने आत्म कल्याण की दृष्टि से आपने अपनी धर्मपत्नी सहित क्षुल्लक अवस्था धारण की। इससे पूर्व आपने धर्मपत्नी सहित १ वर्ष तक प्राय: सभी तीर्थो की यात्रा की। आपकी धर्मपत्नी पद्मश्री क्षुल्लिका के नाम से प्रख्यात है। ३ वर्ष

तक क्षुल्लक अवस्था मे रहने के पश्चात् स० २००७ मे भोपाल की पच कल्याणक प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर तप कल्याणक के दिन विशाल जन समुदाय की हर्ष ध्वनि के बीच आपने मुनिव्रत धारण किया। सांसारिक सुखो के समस्त साधनो के होते हुए भी, पारिवारिक एव आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होते हुए, उनको ठुकराकर आपने वर्तमान काल मे एक महान् शिक्षाप्रद आदर्श उपस्थित किया है।

अध्ययन की ओर आरम्भ से ही आपकी विशेष रुचि थी। विद्यालय छोडने के बाद भी आपने धार्मिक अध्ययन जारी रखा और समयसार प्रवचनसार आदि जैसे महान् ग्रथो का अध्ययन किया। अध्यात्मवाणी आदि जैसी महत्वपूर्ण ग्रन्थो की रचना आपके इसी अध्ययन और मनन का परिणाम है। सयम के साथ आध्यात्मिक विषय का इतना ज्ञान आपकी एक महान विशेषता है। धार्मिक एव आध्यात्मिक विषय का अपूर्व ज्ञान होने के साथ साथ आपका स्वभाव भी अत्यन्त शान्त, सरल एव गम्भीर है। भाषण शैली अत्यन्त मधुर एव प्रभावशाली है। आपका व्यक्तित्व इतना महान् है कि दर्शन करते ही हृदय मे अपूर्व शान्ति का अनुभव होने लगता है। इससे पूर्व आपने लगभग २००-२५० आध्यामिक एव महत्वपूर्ण दोहो की रचना की है। जिसमे अनेक जटिल विषयो का निर्णय किया है जो अभी तक अप्रकाशित हैं।

आप कभी भी अपने श्रोताओ को किसी व्रत को ग्रहण करने अथवा कुछ दान करने के लिये विवशनही करते। किन्तु आपका उपदेश इतना हृदयस्पर्शी होता है कि श्रोतागण स्वयमेव ही शक्ति अनुसार व्रत ग्रहण किये बिना नही रहते। आप लौकिक, धार्मिक एव समाजिक झझटो मे सर्वथा विमुख रहते हैं। आपका अधिकाश समय अध्ययन और मनन मे ही व्यतीत होता है। समाज को आप जैसे मुनिराज पर महान गर्व है।



शांतिमूर्ति, विवेकशीला श्री १०५
पद्मश्री अर्जिका जी

भूमिका

(क्षीरश्रमण)

श्री महावीर भगवान् की दिव्यध्वनि को गणधरदेव ने शब्द (द्वादशाग) रूप किया वह गुरु-परम्परा से मौखिख चला या उसमें से श्री भूतवलि आचार्य ने पट्खडागममहाश्रुत की और यतिवृपभाचार्य ने त्रिलोकपणत्ती की लिपिवद्ध रचना की उसका अनुकरण कर श्रीमन्नेमिचन्द्रसिद्धान्तचक्रवर्ती ने गोमटसार-जीवकाड, गोमटसार-कर्मकाड, लब्धिसार और त्रिलोकसार ग्रन्थ की प्राकृत भाषा मे छदवद्ध रचना की इनका प्रकाशन मेरे द्वारा ८ वर्ष पूर्व से हो रहा है जिसमें जीवकाड का प्रकाशन ४ वर्ष पूर्व हो चुका इस कर्मकाड का प्रकाशन इस वर्ष हो रहा है लब्धिसार प्रेस में दे दिया है और त्रिलोकसार के सव दोहा वन गये है और कुछ अर्थ भी लिखा जा चुका है।

इनके पूर्व मेरे द्वारा पट्खडागम के जीवस्थान खड के= १७५१ मूलसूत्रो का भाषासूत्रो में प्रकाशन आगमवाणी प्रथम भाग के नाम से १७-१८ वर्ष पूर्व हो चुका है जिसके ९३ सूत्र मे सयमशब्द है मेरे विचार शेष खडो के प्रकाशन करने के थे किंतु उनमें मुझे उदय और सत्व का वर्णन न मिला इससे उसको छोडकर इस कार्य मे सलग्न हो गया।

इस ग्रन्थ मे प्रकृतिसमुत्कीर्तन, बधोदयसत्व, सत्वस्थानभग, त्रिचूलिका, स्थानसमुत्कीर्तन, प्रत्यय, भावचूलिका, त्रिकरणचूलिका और कर्मस्थितिरचना ये ९ अधिकार है जो कि ९६५ गाथाओ द्वारा पूर्ण हुये है।

इन प्रत्येक गाथा का क्रमसे १-१ दोहा और अर्थ लिखने के पश्चात् मेरे विचार में यह आया कि जीवकॉड मे जैसा अधिकारो का क्रम है तैसा इसके अधिकारो का भी क्रम करना चाहिये इस-लिये चतुर्थ अधिकार को पाचवे अधिकार के पश्चात् कर दिया

जिससे वध, उदय, सत्व और उनके स्थानो का कथन एक क्रम पर पूर्ण हो गया आठवा अधिकार जीवकाड के गुणस्थान अधिकार मे पूर्व ही छप चुका कारण वह वहा का ही विषय था और ६वा अधिकार को स्थिति कथन की १६२वी गाथा के आगे लगा दिया कारण यह इसी जगह का विषय है। ऐसा करने से चतुर्थ-अधिकार के २ मगलाचरण, आठवे अधिकार की १७ गाथाये और ६वे अधिकार का मगलाचरण और ६१४-६२१ तक की ८ पुनुरुक्त गाथा इसतरह २८ गाथाये कम होने से ६३७ गाथाये शेष रही।

इन ६३७ गाथाओ मे से ३०६, ४१५, ४१६, ४३४, ४३५, ४३६ और ४३७ गाथा को छोडकर शेप सब गाथाये श्रीधर-सेनाचार्य के शिष्य श्री भूतवलि आचार्य के सिद्धान्त-अनुसार है जो कि परस्पर मे अविरोध रूप है इससे किसी एक आचाय का मतभेद किसी एक ही स्थान पर है तो किसी एक आचार्य का किसी अन्य एक ही स्थान पर है शेष सब जगह एकता है ऐसा आशय उपरोक्त ७ गाथाओ से स्पष्ट है इसलिये इन गाथाओ का रखना मुझे भी इष्ट रहा।

५४१वी गाथा इस ग्रन्थ मे ५३१ पर है इससे पशु १६ स्वर्ग तक जा सकते है और त्रिलोक-सार मे भी ऐसा ही लिखा है इस पर मेरे विचार इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि १६ स्वर्ग मे भी वाहनादि जाति के नीच देव होते है वहा उत्पन्न होना सभव है इसलिये गाथा ज्यो-की-त्यो है इसीतरह ६४०वी गाथा इस ग्रन्थ मे ६३० पर है उससे भोगभूमियो के आयु के छै मास शेप रहने पर आयुवध का त्रिभाग प्रारभ होता है इस पर विचार किया तो छै मास आयु के शेष रहने पर कोई कारण त्रिभाग के प्रारभ होने का दिखलाई नही देता आयु के ६ मास शेप रहने पर तो गर्भ रहने का दिखलाई देता भी है इसलिये छै मास की जगह ६ मास कर दिये है इसके अतिरिक्त सब गाथाये ज्यो-की-त्यो है और क्रम मे जो अतर किया है उसका कारण ऊपर लिख ही आया हूँ।

इस ग्रथ की मुझे दो टीकाये प्राप्त हुई एक छोटी और एक

वडी जिसमे छोटी टीका कही-कही अति सक्षेप वालवोधनी है इससे ऐसे महाग्रथ का कैसे ज्ञान हो सकता है और वडीटीका मे कही-कही अतिविस्तार है तिस पर भी वीच-वीच मे जीवकाड, त्रिलोकसार और लब्धिसार का कुछ विपय प्रकरण वनाकर रख दिया है और छपाने वाले ने जैसा लिखा मिला वैसा ही छपा दिया है वाक्यातर नही किया इसलिये टीकापर्याप्त होते हुये भी विपम वन गई यदि इसके कोई पीछे ही पड जाये तो उसको इसका ज्ञान अवश्य हो सकता है किंतु उसको जवतक सदृष्टि अधिकार का ज्ञान न हो तवतक वह भी ज्ञान नही कर सकता इन सव कठिनाईयों को दूर करने की दृष्टि से इस टीका का प्रयास किया गया है इसमे प्रत्येक गाथा का आशय दोहा और अर्थ से स्पप्ट किया गया है यदि कही कठिन विपय दृप्टि में आया है वहॉ भावार्थ और यत्न लगाकर विपय स्पप्ट करके ही छोडा है जो कि पढने से ज्ञात होगा जहॉ उन दो टीकाओ में गणित का सकेत मूल मे है वैसा ही कर दिया है वहॉ इस टीका मे स्पप्ट गणित करके लिखा है देखो भाव-अधिकार यह सव कार्य विना सहयोग के स्वय अकेले ही ५ वर्प सतत् प्रयास करने पर पूरा कर पाया हैं ।

जो मेरे द्वारा आज तक प्रकाशित हुआ है वह पूर्वोपर विरोध-रहित है, असभव दोपरहित है, पुनुरुक्त दोपरहित है, विपय यथा-स्थान सहित है और सरल वाक्य सहित स्पप्ट जिनमतपोपक है जो कि प्रथमानुयोग को छोड़कर तीन अनुयोगों की पूर्ति करता है ऐसे सिद्धान्तिक ग्रथो की जो कोई ईर्षाभाव कर दोप लगाता है वह मिथ्यात्व दृढ करता है उसका विश्वास न कर भव्यजीवो को लाभ लेना चाहिये कारण भव्य जीव वह ही है जो प्रथम पुरुप के धर्म, जाति, कुल, जीवन, त्याग, अध्ययन, मनन और धारणाशक्ति की परीक्षा कर तत्पश्चात् उसके वचनादि की परीक्षा करता है ।

भाष्य नया अथवा प्राचीन । पक्षपात को तजो प्रवीन ।।
जिसमें विषय यथा स्थान । उसको पढ़कर करलो ज्ञान ।।

यदि किसी को पुरानी टीकाओ से मिलान करके पढना हो तो नीचे लिखे यत्न को देखकर छद सख्या मिला लेना चाहिये ।

छंद क्रम दर्शक यंत्र

इसमे छद क्रम	पुराने मे छद क्रम	इसमे छद क्रम	पुराने मे छद क्रम
१–६३	१–६३	४६०–५७०	४७०–५८०
६४	१०४	५७१	५८२
६५	१०३	५७२	५८१
६६–१०४	६४–१०२	५७३–५७७	५८३–५८७
१०५–१६२	१०५–१६२	५७८	५६२
१६३–२०५	६२२–६६४	५७६–५८२	५८८–५६१
२०६–३०६	१६३–२६३	५८३–७७४	५६३–७८४
३०७	२७७	७७५–७८४	३६८–४०७
३०८	२७६	७८५–७६८	४३७–४५०
३०६–३२०	२६४–२७५	७६६–८०६	४०६–४१६
३२१–३२३	२७८–२८०	८०७–८१४	४१८–४२५
३२४	२८३	८१५	४१७
३२५	२८२	८१६–८२५	४२६–४३५
३२६	२८१	८२६–८६७	७८५–८५६
३२७–४४०	२८४–३६७	८६७–८६६	८६४–८६५
४४१–४४३	४५१–४५३	६००–६०६	८५७–८६३
४४४	४६६	६०७–६३६	८६६–८६५
४४५–४५६	४५४–४६८	६३७	६६५

सांकेतिक शब्दों का आशय

अगुरुलघु ४—अगुरुलघु १ उपघात १ परघात १ श्वासो-श्वास १ ।

अचलावली—एक आवलीकाल ।

अनादेय २—अनादेय १ अयश १ ।

आनुपूर्वी ३—नरकगत्यानुपूर्वी विना शेष ३ आनुपूर्वी ।

आहारक २—आहारकशरीर १ आहारकआगोपांग १ ।

आहारक ४—उपरोक्त २ आहारकबंधन १ आहारकसघात १ ।

उपघातादि ५—उपघात १ परघात १ श्वासोश्वास १ आताप १ उद्योत १ ।

उच्छिष्टावली—बचा हुआ काल ।

औदारिक २—औदारिक शरीर १ औदारिक आंगोपांग १ ।

तिर्यंचगति २—तिर्यंचगति १ तिर्यंचगत्यानुपूर्वी १ ।

तैजस २—तैजसशरीर १ कामणिशरीर १ ।

देवगति २—देवगति १ देवगत्यानुपूर्वी १ ।

देवगति ४—देवगति १ देवगत्यानुपूर्वी १ विक्रियकशरीर १ विक्रियकआंगोपाग १ ।

दुर्भगादि ३—दुर्भग १ दुःस्वर १ अनादेय १ ।

दुर्भगादि ४—दुर्भग १ दुःस्वर १ अनादेय १ अयश १ ।

नरकगति २—नरकगति १ नरकगत्यानुपूर्वी १ ।

नरकगति ४—नरकगति १ नरकगत्यानुपूर्वी १ विक्रियकशरीर १ विक्रियक आगोपाग १ ।

परघातादि ४—परघात १ श्वासोश्वास १ आताप १ उद्योत १ ।

प्रत्येक २—प्रत्येक १ साधारण १ ।

मनुष्यगति २—मनुष्यगति १ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ ।

मनुष्यगति ४—मनुष्यगति १ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ औदारिक-शरीर १ औदारिक आगोपाग १ ।

विक्रियक २—विक्रियकशरीर १ विक्रियकआगोपाग १ ।

विक्रियक ६—विक्रियकशरीर १ विक्रियक आगोपाग १ नरक-गति १ नरकगत्यानुपूर्वी १ देवगति १ देवगत्यानुपूर्वी १ ।

विक्रियक ८—उपरोक्त ६ विक्रियकवधन १ विक्रियकसघात १ ।

त्रस ३—त्रस १ वादर १ पर्याप्ति १ ।

त्रस ४—त्रस १ वादर १ पर्याप्ति १ प्रत्येक १ ।

त्रस ९—त्रस १ वादर १ पर्याप्ति १ प्रत्येक १ स्थिर १ शुभ १ नुभग १ सुस्वर १ आदेय १ ।

त्रस १०—उपरोक्त ९ यश १ ।

सुभग ३—नुभग १ मुस्वर १ आदेय १ ।

मूक्ष्म ३—सूक्ष्म १ अपर्याप्ति १ साधारण १ ।

सूक्ष्म ९—सूक्ष्म १ अपर्याप्ति १ साधारण १ अस्थिर १ अशुभ १ दुर्भग १ दु स्वर १ अनादेय १ अयश १ ।

स्थावर २—स्थावर १ सूक्ष्म १ ।

स्थावर ४—स्थावर १ सूक्ष्म १ पर्याप्ति १ साधारण १ ।

स्थावर १०—उपरोक्त ४ अस्थिर १ अशुभ १ दुर्भग १ दु स्वर १ अनादेय १ अयश १ ।

शयनगृद्धि ३—निद्रानिद्रा १ प्रचलाप्रचला १ स्त्यानगृद्धि १ ।

शरीर ५ से स्पर्श तक ५०—शरीर ५ वधन ५ सघात ५ सस्थान ६ आगोपाग ३ सहनन ६ वर्ण ५ गध २ रस ५ स्पर्श ८ ।

हुडकसस्थानादि ८—हुडकसस्थान १ नपुसकवेद १ दुर्भग १ अनादेय १ अयश १ नरकगति १ नरकायु १ नीचगोत्र १ ।



विषय सूची

विषय	दोहा न०
१-प्रकृतिकथन अधिकार	**१-८६**
मगलाचरण	१
जीवकर्म सम्बन्ध	२
कर्म के भेद-प्रभेद	६
आयु आदि का कार्य	११
कर्मो का क्रम	१५
कर्मो का स्वभाव	२१
निद्राओ का कार्य	२३
मिथ्यात्वभेदो की उत्पत्ति	२६
सहननो की उपज	२८
आतापउद्योत के स्वामी	३३
बधउदय में समावेश	३४
सर्वघाती प्रकृतिया	३९
पुण्यप्रकृति	४२
अनतानुबधी का कार्य	४५
पुद्गलविपाकी	४७
४ निक्षेपो का स्वरूप	५२
८ कर्मो के नौकर्म का स्वरूप	६९
२-बंध-अधिकार	**८७-३०३**
मगलाचरण	८७
उत्कृष्टादि भेद	९०
प्रकृतिबध का नियम	९२
गुणस्थानो मे अबधादि	९४
नरकादि में अबधादि	१०५
इन्द्रियादि मे अबधादि	११३
सादि अनादि बध	१२२
विरोधी-अविरोधी प्रकृति	१२५
उत्कृष्ट स्थिति बध	१२७
जघन्य स्थिति बध	१३९
आवाधा का परिमाण	१४६
ज० स्थिति निका० वि०	१४७
ज० स्थि० मे सादिभेद	१५२
आवाध का स्व०	१५५
निषेको का परिमाण	१६०
निषेक झडने की रीति	१६१
नानागुणहानि का परिमाण	१७४
परस्पर गुणित राशि	१७८
बधादि का परिमाण	१८४
त्रिकोणयत्र	१८५
निरतरस्थिति के भेद	१८६
स्थितिबधक भाव	१८८
ज०उ० बधक स्थान	१९५
ज० अनुभाग के स्थान	२०४
अनुभाग बध के जीव	२०७
उत्कृष्टादि भेद	२२१
घातियो की शक्ति	२२३
अघातिया पुण्यपापरूप	२२६
प्रदेशबध का स्वरूप	२२८
सादिद्रव्य का परिमाण	२३२
समयप्रबद्ध का परिमाण	२३४
कर्मो मे बटवारा	२३५

विषय	दोहा नं०
उत्कृष्टादि भेद	२५०
प्रदेशवधक जीव	२५४
८४ योगस्थान	२६१
योग वर्तने का काल	२८५
योगो मे जीवो का परि०	२८७
योगकर्म बधका हेतु	३००

३—उदय-अधिकार ३०४-३७५

विषय	दोहा नं०
उदय के नियम	३०४
गु० मे उदयविछुत्ति	३०६
गु० मे उदीरणा	३२१
गति मे उदय नियम	३२८
नरकादि मे अनुदयादि	३३२
इन्दियो मे ,,	३४६
काययोग मे ,,	३५२
वेद मे ,,	३६३
कपाय ले० मे ,,	३६५
भव्य आ० मे ,,	३७१

४—सत्व-अधिकार ३७६-४००

विषय	दोहा नं०
सत्व नियम	३७६
सत्वविछुत्ति	३८०
गुण० मे असत्वादि	३८५
उपशम मे अतर	३८६
मार्गणा मे असत्वादि	३८७

५—स०स्थान अधि० ४०१-४४०

विषय	दोहा नं०
मगलाचरण	४०१
सत्वस्थान के प्रकार	४०२
मिथ्यात्व के स्थान	४०८
सासादन, मिश्र स्थान	४१५
अविरत के स्थान	४१६
देशविरत ३ के स्थान	४२५
२ श्रेणी के स्थान	४२६
कनक०आ० का मत	४३४

६-बंधादिस्थान अ० ४४१-७७४

विषय	दोहा नं०
मगलाचरण	४४१
कर्मवध विधि	४४२
भुजाकारादि बध	४४३
कर्मो का उदय	४४५
कर्मो की उदोरणा	४४६
कर्मो का सत्व	४४८
दर्श० बधादिस्थान	४५०
मोह बधस्थान	४५४
भुजाकारादि	४५६
मोह के उदयस्थान	४६५
मोह स्थान, प्र०भ०	४७७
मोह सत्वस्थान	४६८
नाम वधस्थान	५११
आताप, उद्योत वाले	५१४
तीर्थकर आहार वाले	५१५
२३ आदि वधस्थान	५१६
वधस्थानो मे भग	५२२
गति आगति	५२८

विषय	दोहा न०
नरकादि मे स्थान	५३४
भुजाकारादि बध	५४४
चढने-उतरने के मार्ग	५४६
किन्ही स्थानो में अमरण	५५०
नाम के भुजाकारादि	५५५
नाम के उदयकाल	५७३
नाम के उदयस्थान	५७८
आवातर स्थान	५७९
उदयस्थानो मे भग	५९३
नाम के सत्वस्थान	५९९
मिथ्यात्व मे उद्वेलना	६०२
सम्यक्त्वग्रहण कितनीबार	६०८
श्रेणीग्रहण ,,	६०९
नाम के गु० मे सत्वस्थान	६१०
जीवो मे सत्वस्थान	६१३
मूल में बधादि भग	६१८
ज्ञान, अतराय भग	६२०
दर्शनावरणी के भग	६२१
वेदनी कर्म के भग	६२३
गोत्र के वधादि स्थान	६२५
आयु के बधादि स्थान	६२९
मोह के ,,	६४२
नाम के ,,	६८२
गति आदि मे ,,	७००
बध में उदय-सत्व	७३०
उदय में बध-सत्व	७६६
सत्व मे बध-उदय	७४३
बंध-उदय में सत्व	७५०
बध-सत्व मे उदय	७५९
उदय-सत्व मे बध	७६५
७—कर्म अव०अ०	**७७५-८२५**
मगलाचरण	७७५
प्रथम प्रश्न	७७६
द्वितीय प्रश्न	७७९
तृतीय प्रश्न	७८१
दशकरण	७८५
गुणस्थानो मे करण	७८९
सक्रमण के भेद	७९९
,, के नियम	८००
तिर्यच एकादशी	८०४
उद्वेलना प्रकृति	८०५
सक्रमणो में गुण०	८०६
सर्वसक्रमण की प्र०	८१५
विध्यात की प्रकृति	८१६
अध गुण की प्रकृति	८१७
सक्रमणों मे अल्पबहुत्व	८२०
८—आस्रव-अधिकार	**८२६-८५१**
मगलाचरण	८२६
आस्रवो के भेद	८२७
गुणस्थानों मे आस्रव	८२८
१ समय के आस्रव	८३२
स्थानो मे कूट	८३५
कूट उच्चारण	८३७

विषय	दोहा नं०	विषय	दोहा नं०
हिंसा के सयोगी भग	८४०	क्रियावादियो के भग	९१८
आठ कर्म के कारण	८४१	कालवादी	८२०
९–भाव-अधिकार	**८५२-९३७**	ईश्वरवादी	८२१
मगलाचरण	८५२	आत्मावादी	८२२
भावो का स्वरूप भेद	८५३	नियतवादी	८२३
भावो की भग विधि	८६१	स्वभाववादी	८२४
गुण०मिश्रादि स्थान	८६५	अक्रियावादी	८२५
गुणक क्षेप विधि	८७५	अज्ञानवाद के भेद	८२७
गुण० गुण्यादि	८७६	विनयवादी	८२९
गुण० मे स्थान भग	८८१	पुरुषार्थवादी	८३१
पदभगो मे भेद	८८५	दैव्यवादी	८३२
जातिपदो मे गुण्यादि	८८९	सयोगवादी	८३३
पिड–प्रत्येक पद	८९७	लोकध्वनि	८३४
गुण० सर्वपद भग	९०१	नयवाद	८३५



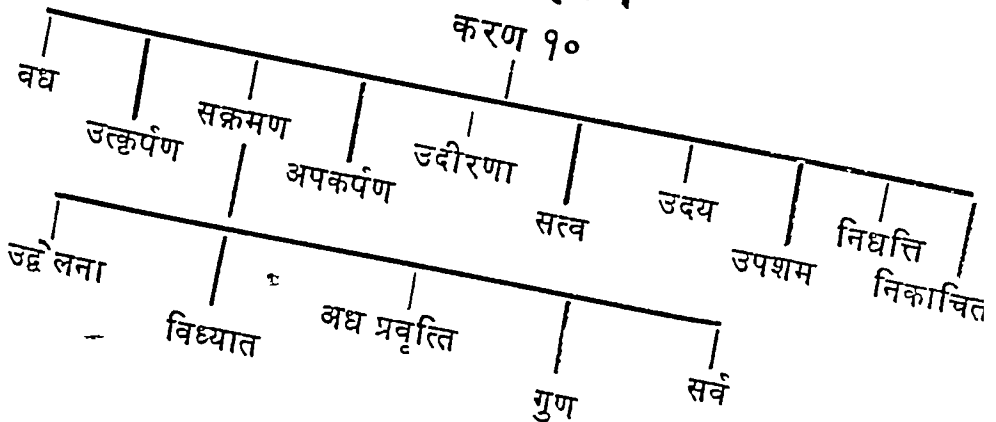
शुद्धि-पत्र

अशुद्धि	शुद्धि	पृष्ठ	पंक्ति
आयु	आउ	८	१४
४२	४	१५	८
णियया	णियमा	२५	६
उच	उच्च	२७	१२
नोकम्म	णोकम्मं	३२	२४
जन्म	जन्य	३३	२०
उपरिम	उवरिम	४३	६
आयुस्स	आउस्स	६३	१८
कोडाकोडी	कोडकोडी	६४	७
००	१००	७०	१७
तीसया	तीसिया	७०	२३
मावाधा	मवाहा	७१	१७
समाइ	मयाइं	८५	७
सव्वस्य	सव्वस्स	९०	२
प्रवद्धं	पवद्धं	९८	१६
२३२, २३८	२३८, २६८	९९	२१
सेज्जा	सेज्ज	१०१	७
गुणहानी	गुणहानि	१०२	१६
अनुभान	अनुभाग	१०८	१८
णियमेणा	णियमेण	१०९	३
उंच	ऊंच	१११	११
आवरत	अविरत	११५	१
भद	भेद	११६	११
ऽ सत्थ	ऽ सत्था	११९	१६
क्खत्तं	क्खेत्त	१२०	१०
उपवादे	उववादे	१३६	१३

अशुद्	शुद्धि	पृष्ठ	पक्ति
पदेश	पदेम	१४०	७
उपरि	उवरिं	१४१	५
पदद्धकम	तदद्धकम	१४१	५
जदिये	तदिये	१६५	२०
पचिदिय	पचिंदिय	१६५	२०
अयोग्य	अयोग	१६८	६
१०४	७४	१७३	७
दुर्भगादि १	दुर्भग १	१६७	२४
तरेस	तरस	२२४	६
२४२।२४६	२४६।२४२	२:८	१६
मेद	भेद	२३७	८
इक छै मे	इक छ मे	,,	१८
भनो	भगो	२३६	१४
णउसयम्ख	णउसयक्ख	२५६	१५
थीखवद	थीखविद	,,	१८
दुगदुग	दुगदुगा	२५६	११
सोल्लट्ठ	सोलट्ठ	२६१	१३
छक्खड	छवखड	२६३	३
भग	भग	२६६	२५
क्षीण	खीण	२७०	७
५२५७	५२६७	२६६	२१
ग्यारह	ग्यार	३०२	१२
सुरगइणे	सुरगइणा	३१०	१
सठाणाण्	सठाणाण	३११	१८
स्वर्थिसिद्धि	सवार्थसिद्धि	३२२	१४
सजयतिदए	सयमतिदए	३२३	१२
किण्लेस्स	किण्हलेस्स	३२५	१
शय	शम	,,	६
वधे	बधे	३३८	७
वधे	बधे	,,	८
सव	सव्व	३४३	२३

अशुद्धि	शुद्धि	पृष्ठ
हू	हु	३४३
समुद्दिट्ठो	समुद्दिट्ठो	३४४
समयादि	समयादी	३४४
छव्वीसह	छव्वीसट्ठ	३४६
देज्जसाणि	देज्जसाणि	३५७
भगा	भंगा	३६१
कर्न	कर्म	३६६
इति पन	इति इक पन	३६७
पढिम	पढम	३६८
तोस	तीस	४१३
बंधसा	बधंसा	४२३
वेदगेसम्मे	वेदगसम्मे	४३०
२५-२८	२५-२६-२८	४३१
उगदाल	उगदाल	४६१
सोगोय	सोगो य	४६१
तिसीसं	तितीस	४६३
पदुपच्चइगो	चदुपच्चइगो	४६८
ठाणपयार	ठाणपयारा	५०२

करण दर्पण



त्रिकोण यंत्र

(दो० १८५ का भाव)

																९
															९	१०
														९	१०	११
													९	१०	११	१२
												९	१०	११	१२	१३
											९	१०	११	१२	१३	१४
										९	१०	११	१२	१३	१४	१५
									९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
									०	०	०	०	०	०	०	०
									०	०	०	०	०	०	०	०
									०	०	०	०	०	०	०	०
									०	०	०	०	०	०	०	०
									०	०	०	०	०	०	०	०
									०	०	०	०	०	०	०	०
							९	००००००	१६०	१७६	१९२	२०८	२२४	२४०	२५६	२८८
						९	१०	००००००	१७६	१९२	२०८	२२४	२४०	२५६	२८८	३२०
					९	१०	११	००००००	१९२	२०८	२२४	२४०	२५६	२८८	३२०	३५२
				९	१०	११	१२	००००००	२०८	२२४	२४०	२५६	२८८	३२०	३५२	३८४
			९	१०	११	१२	१३	००००००	२२४	२४०	२५६	२८८	३२०	३५२	३८४	४१६
		९	१०	११	१२	१३	१४	००००००	२४०	२५६	२८८	३२०	३५२	३८४	४१६	४४८
	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	००००००	२५६	२८८	३२०	३५२	३८४	४१६	४४८	४८०
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	००००००	२८८	३२०	३५२	३८४	४१६	४४८	४८०	५१२
९	१९	३०	४२	५५	६९	८४	१००	००००००	३३८८	३७०८	४०६०	४४४४	४८६०	५३०८	५७८८	६३००

७१३०४

स्थिति बंध के परिणाम स्थान यंत्र

(दो० न० १९६ से २०२ तक का भाव)

न० समय	परिणाम स०	परिणाम से परिणाम तक			
१६	२२२	५४	५५	५६	५७
१५	२१८	५३	५४	५५	५६
१४	२१४	५२	५३	५४	५५
१३	२१०	५१	५२	५३	५४
१२	२०६	५०	५१	५२	५३
११	२०२	४९	५०	५१	५२
१०	१९८	४८	४९	५०	५१
९	१९४	४७	४८	४९	५०
८	१९०	४६	४७	४८	४९
७	१८६	४५	४६	४७	४८
६	१८२	४४	४५	४६	४७
५	१७८	४३	४४	४५	४६
४	१७४	४२	४३	४४	४५
३	१७०	४१	४२	४३	४४
२	१६६	४०	४१	४२	४३
१	१६२	३९	४०	४१	४२
	३०७२				

परिणाम योग दर्पण

(२८६ दोहा का भाव)

२ समय वर्तने वाले परिणाम-योगस्थान उनसे असख्यात गुणे अधिक हैं।

३ समय वर्तने वाले परिणामयोग स्थान उनसे असख्यात गुणे अधिक हैं।

४ समय वर्तने वाले आधे, परिणाम योग स्थान उनसे असख्यात गुणे अधिक हैं।

५ समय वर्तने वाले आधे, परिणाम योग-स्थान उनसे असख्यात गुणे अधिक हैं।

६ समय वर्तने वाले आधे, परिणाम योगस्थान उनसे असख्यात गुणे अधिक हैं।

७ समय वर्तने वाले आधे, परिणाम योगस्थान उनसे असख्यात गुणे अधिक हैं।

८ समय वर्तने वाले परिणाम योग स्थान सबसे थोडे (असख्यात) हैं।

७ समय वर्तने वाले आधे, परिणाम योगस्थान उनसे असख्यात गुणे अधिक हैं।

६ समम वर्तने वाले आधे, परिणाम योगस्थान उनसे असख्यात गुणे अधिक हैं।

५ समय वर्तने वाले आधे, परिणाम योग-स्थान उनसे असख्यात गुणे अधिक हैं।

४ समय वर्तने वाले आधे, परिणाम योगस्थान उनसे असख्यात गुणे अधिक हैं।

गुणहानि दर्पण
(२८५ दोहा का भाव)

नाम गुणहानि	चाय परिमाण	निपेकनि मे जीवनि का परिमाण	द्रव्य परिमाण
ऊपर की पचम गुणहानि	१	५ ६ ७ ८	२६
ऊपर की चतुर्थ गुणहानि	२	१० १२ १४ १६	५२
ऊपर की तृतीय गुणहानि	४	२० २४ २८ ३२	१०४
ऊपर की द्वितीय गुणहानि	८	४० ४८ ५६ ६४	२०८
ऊपर की प्रथम गुणहानि	१६	८० ९६ ११२ १२८	४१६
नीचे की प्रथम गुणहानि	१६	११२ ९६ ८० ६४	३५२
नीचे की द्वितीत गुणहानि	८	५६ ४८ ४० ३२	१७६
नीचे की तृतीय गुणहानि	४	२८ २४ २० १६	८८
		१४२२	१४२२

एक जीव सम्बन्धी प्रकृतिबंध दर्पण

गुण०	ज्ञा०	द०	वे०	मोहकर्म	आ०	नाम कर्म	गो०	अ०	कुल जोड
मि०	५	९	१	२२	१	२३,२५,२६,२८,२९,३०	१	५	६७,६९,७०,७२,७३,७४
सा०	५	९	१	२१	१	२८,२९,३०	१	५	७१,७२,७३
मि०	५	६	१	१७	१	२८,२९	१	५	६४,६५
अ०	५	६	१	१७	१	२८,२९,३०	१	५	६४,६५,६६
दे०	५	६	१	१३	१	२८,२९	१	५	६०,६१
प्र०	५	६	१	९	१	२८,२९	१	५	५६,५७
अ०	५	६	१	९	१	२८,२९,३०,३१	१	५	५६,५७,५८,५९
अ०	५	६,४	१	९	०	२८,२९,३०,३१,१	१	५	५५,५६,५७,५८,२८
अ०	५	४	१	५,४,३,२,१	०	१	१	५	२२,२१,२०,१९,१८
सू०	५	४	१	०	०	१	१	५	१७
उ०	०	०	१	०	०	०	०	०	१
क्षी०	०	०	१	०	०	०	०	०	१
स०	०	०	१	०	०	०	०	०	१
अ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

एक जीव सम्बन्धी प्रकृति उदय दर्पण

गुण.	ज्ञा.	द	वे	मोह	आ	नाम	गो	अ.	कुल जोड
मि.	५	५,४	१	१०,९,८,७	१	२१,२४,२५,२६,२७, २८,२९,३०,३१	१	५	४९,५२,५३,५४,५५, ५६,५७,५८,५९
सा.	५	५,४	१	९,८,७	१	२१,२४,२५,२६,२९,३०,३१	१	५	४८,५१,५२,५३,५६,५७,५८
मि.	५	५,४	१	,,	१	२९,३०,३१	१	५	५५,५६,५७
अ.	५	५,४	१	९,८,७,६	१	२१,२५,२६,२७,२८,२९, ३०,३१	१	५	४८,५२,५३,५४,५५,५६, ५७,५८
दे.	५	५,४	१	८,७,६ ५	१	३०,३१	१	५	५६,५७
प्र.	५	५,५	१	७,६,५,४	१	२५,२७,२८,२९,३०	१	५	५०,५२,५३,५४,५५
अ.	५	४	१	,,	१	३०	१	५	५४
अ.	५	४	१	६,५,४	१	३०	१	५	५३
अ.	५	४	१	२,१	१	३०	१	५	४९
सू.	५	४	१	१	१	३०	१	५	४८
उ	५	४	१	०	१	३०	१	५	४७
क्षी.	५	५,४	१	०	१	३०	१	५	४८
स.	०	०	१	०	१	३०,३१	१	०	३३,३४
अ.	०	०	१	०	१	९,८	१	०	१२,११

एक जीव सम्बन्धी प्रकृति सत्व दर्पण

गुण	ज्ञा	द.	वे	मोह	आ	नाम	गो.	अ	कुल जोड
मि.	५	९	२	२८,२७,२६	२	९२,९१,९०,८८,८४,८२	२	५	१४५,१४४,१४३,१४१, १३७,१३५
सा	५	९	२	२८	२	९०	२	५	१४३
मि	५	९	२	२८,२४	२	९२,९०	२	५	१४५,१४३
अ.	५	९	२	२८,२४,२३,२२,२१	२	९३,९२,९१,९०	२	५	१४६,१४५,१४४,१४३
दे	५	९	२	,,	२	,,	२	५	,,
प्र	५	९	२	,,	२	,,	२	५	,,
अ	५	९	२	,,	२	,,	२	५	,,
अ.	५	९	२	२८,२४,२१	२	,,	२	५	,,
अ.	५	९,६	२	२८,२४,२१,१३,१२,११, ५,४,३,२,१	२	९३,९२,९१,९०,८०, ७९,७८,७७	२	५	१४६,१४५,१४४,१४३, १३३,१३२,१३१,१३०
सू	५	९,६	२	२८,२४,२१,१	२	,,	२	५	,,
उ	५	९	२	२८,२४,२१	२	९३,९२,९१,९०	२	५	१४६,१४५,१४४,१४३
क्षी	५	६,४	२	०	१	८०,७९,७८,७७	२	५	१०१,१००,९९,९८
स.	०	०	२	०	१	,,	२	०	८५,८४,८३,८२
अ	०	०	२	०	२	८०,७९,७८,७७,१०,९	२,१	०	८५,८४,८३,८२,१३,१२

बंधादि-विछुत्ति-दर्पण

गुण.	वध	वि.	उदय	वि	उदी	वि	स उ	वि०	स क्षा.	वि.
मि	११७	१६	११७	५	११७	५	१४८	०	१४८	०
सा	१०१	२५	१११	९	१११	९	१४५	०	१४५	०
मि.	७४	०	१००	१	१००	१	१४७	०	१४७	०
अ	७७	१०	१०४	१७	१०४	१७	१४८	०	१४८	७
दे	६७	४	८७	८	८७	८	१४७	०	१४७	,,
प्र	६३	६	८१	५	८१	८	१४६	०	१४६	,,
अ	५९	१	७६	४	७३	४	१४६	०	१४६	७
अ	५८	३६	७२	६	६९	६	१४६	०	१३८	०
अ	२२	५	६६	६	६३	६	१४६	०	१३८	३६
सू	१७	१६	६०	१	५७	१	१४६	०	१०२	१
उ	१	०	५९	२	५६	२	१४६	०	०	०
क्षी	१	०	५७	१६	५४	१६	०	०	१०१	१६
स	१	१	४२	३०	३९	३९	०	०	८५	०
अ.	०	०	१२	१२	०	०	०	०	८५	८५

बंध भेद दर्पण

(दो० ११२, १५२, २२१, २५० का भाव)

कर्म	बध भेद	बध प्रभेद
आयु	जघन्यादि ४ प्रकार का प्रकृति दध	सादि, अध्रुव
वेदनी	,,	सादि बिना ३
शेष ६	,,	सादि आदि ४
आयु	जघन्यादि ४ प्रकार का स्थिति दध	सादि, अध्रुव
शेष ७	अजघन्य स्थिति बध	सादि आदि ४
,,	जघन्य, अनुत्कृष्ट, उत्कृष्ट स्थिति बध	सादि, अध्रुव
घातिया ४	अजघन्य अनुभाग बध	सादि आदि ४
,,	जघन्य, अनुत्कृष्ठ, उत्कृष्ट अनुभागबध	सादि, अध्रुव
वे० ना०	अनुत्कृष्ट अनुभाग बध	सादि आदि ४
,,	जघन्य, अजघन्य अनुत्कृष्ट अनुभाग बध	सादि, अध्रुव
गोत्र	अजघन्य, अनुत्कृष्ट अनुभाग बध	सादि आदि ४
,,	जघन्य, उत्कृष्ट ,,	सादि, अध्रुव
आयु	जघन्यादि ४ प्रकार का ,,	,,
आ० मो०	जघन्यादि ४ प्रकार का प्रदेश बध	,,
शेष ६	अनुत्कृष्ट प्रदेश बध	सादि आदि ४
,,	जघन्य, अजघन्य, उत्कृष्ट प्रदेश बध	सादि, अध्रुव

दातार-सूची

(दि० जैन)

१०५) सेठ कासीराम जी, बुढपुरा वाले, बवीना (झासी)
१०१) बाबू पूरनचन्द्र जी, B A., LL B. एडवोकेट, गुना
१०१) सेठ सूरजमल रमेशचन्द्र जी पाटनी, गुना
१०१) सेठ मोतीलाल बाबूलाल जी लचकिया मुगावली, गुना
१०१) सेठ भवरलाल जी जैन, चादवाड सागोद कोटा
१०१) सेठ लक्ष्मीचन्द्र कैलाशचन्द्र जी (प्रधान) झासी
१०१) ला० हरनामदास जगदीशराय जी प्रेम बीडी वाले झांसी
१०१) सेठ टीकमचन्द्र कालूराम जी, सारोला झालावाड
१०१) सौ० कुशमलता देवी ध० प० बाबूलाल जी राजाखेड़ा
१०१) बाबू रघुवरदयाल जी M. A., करोल बाग, देहली
७५) सरदारबाई ध०प०चौ० भवानीसिंह जी, अचलगढ
७१) सौ० ज्ञानमाला देवी ध०प० प्रेमचन्द्रजी प्रेम बीडी, सतना
५१) चौधराइन मिश्री बाई जी, गुना ५१) महावीर स्टोर, गुना
५१) सेठ नन्दराम भागचन्द्र जी, गुना
५१) श्री कस्तूरी बाई जी, अशोकनगर
५१) सेठ हरनारायण श्यामलाल जी, अशोकनगर
५१) सेठ मूलचन्द्र पन्नालाल जी ,,
५१) सौ० असरफी देवी ध० प० धन्नालाल जी, मुगावली
५१) सौ० बेनीबाई ध०प० हरदास जी, बवीना (झासी)
५१) सेठ मानिकचन्द्र जी लालचन्द्र जी, सागोद कोटा
५१) सेठ नानकचन्द्र राजेन्द्र कुमार जी प्रेम बीडी वाले झासी
५१) सि० पूरनचन्द्र हरषचन्द्र जी तारई, गुना
५१) पन्नालाल जी पटेल धन्नाउदा, गुना
५१) जैन साहब, सम्मा दतिया
५१) मोदी भैयालाल जी, खनियाधाना
४५) कडोरी लाल सतोष कुमार जी, अचलगढ गुना
४१) मोदी प्रेमचन्द्र रमेशचन्द्र जी मुगावली

४०) सेठ गनेशीलाल जी सर्राफ, अम्वाह—मध्य प्रदेश
३५) हजारीलाल गट्टूलाल जी, बजरगगढ
३५) अबीरचन्द्र पवनकुमार जी, बजरगगढ
३१) सेठ चपालाल कबूलचन्द्र जी, अशोकनगर
३१) सेठ गोरेलाल केवलचन्द्र जी ,,
३१) सेठ कन्हैयालाल मिण्टूलाल जी ,,
३१) हीरालाल भैयालाल जी खिसोली, झासी
३१) मा० नदकिशोर जी सिरोन, झासी
३१) गनपतलाल चपालाल जी नोहर कला, झासी
३१) प० गुलाबचन्द्र बाबूलाल जी, देवेन्द्र नगर, पना
३१) श्री दिगम्बर जैन समाज, रोनीजा दतिया
२५) छोटेलाल रमेशचन्द्र जी खुटियाल वाले, गुना
२५) सेठ मगलचन्द्र केवलचन्द्र जी भदोर वाले, गुना
२५) सेठ घासीलाल छोगालाल जी गुना
२५) पनालाल जी बाबूलाल जी हकीम, गुना
२५) हुकमचन्द्र ताराचन्द्र जी, गुना
२५) सेठ मागीलाल जी रोकडिया, गुना
२५) कस्तूरचन्द्र जी, खुटियाल वाले, गुना
२५) सेठ श्री नदनलाल शिखरचन्द्र जी, अशोकनगर
२५) दीपचन्द्र मक्खनलाल जी सर्राफ, मुगावली गुना
२५) सेठ हरचन्द्र सोहनलाल जी ,,
२५) चौ० कमलकुमार जी, चदेरी गुना
२५) सगुनचन्द्र भानुकुमार जी हाथीसाह, चदेरी गुना
२५) निर्मलकुमार अरुणकुमार जी सर्राफ ,,
२५) कवि शीलचन्द्र जी देवेन्द्रनगर, पन्ना
२५) रतनचन्द्र लक्ष्मीचन्द्र जी सर्राफ, चदेरी—गुना
२५) गुलाबचन्द्र कपूरचन्द्र जी कुलईया ,,
२५) नाथूराम मगनलाल जी कपसिया ,,

२५) रतनचन्द्र श्रीयासकुमार जी कठरिया, चदेरी–गुना
२५) लालचन्द्र विजयकुमार जी कठरिया ,,
२५) बिहारीलाल घेवरचन्द्र जी ,,
२५) सेठ गुलाबचन्द्र विजयकुमार जी ,,
२५) गोकलप्रसाद जी, बवीना–झाँसी
२५) सौ० वेनीवाई ध० प० भागचन्द्र जी, ववोना–झाँसी
२५) सौ० कातादेवी ध० प० बाबू कपूरचन्द्रजी ,,
२५) हरदास देवेन्द्र कुमार जी बडोरा, झाँसी
२५) बाबूलाल जी वकील, सागोद–कोटा
२५) सेठ प्रभूलाल पनालाल जी सेठिया, सागोद–कोटा
२५) सेठ केशरीलाल भमरलाल जी, खजूरी–कोटा
२५) सौ० बेनीवाई ध० प० रूपचन्द्र जी कडेसरा झाँसी
२५) चुखरलाल लक्ष्मीचन्द्र जी गढिया, ते० महरोनी झासी
२५) सौ० हरवादेवी ध० प० नदलाल जी पिपरा झाँसी
२५) घासीलाल बाबूलाल जी वरोदा झासी
२५) मूलचन्द्र ज्ञानचन्द्र जी करगमाखुर्द, झासी
२५) सि० चपालाल गुलाव चन्द्र जी, अचलगढ झाँसी
२५) मूलचन्द्र नेमीचन्द्र जी रुटियाई गुना
२५) सेठ गिरधारीलाल जी सोगानी, छीपावडोद कोटा
२५) सेठ जेठमल रूपचन्द्र जी गदैया, छीपावडोद ,,
२५) सेठ रामचन्द्र जी, छीपाबडोद ,,
२५) सेठ अमरलाल केशरीलाल जी, सारोला झालावाड
२५) सि० रतनचन्द्र गुलावचन्द्र जी, सहराई गुना
२५) सि० रतनचन्द्र जी, देवेन्द्र नगर, पना
२५) सि० लालचन्द्र जी, पना
२१) ज्ञानचन्द्र जी होटल वाले, गुना २१) राखन जी, गुना
२१) सेठ हुक्मचन्द्र छोगालाल जी अशोकनगर
२१) ,, भमरलाल बाबूलाल जी ,,

२१) सेठ लक्ष्मीचन्द्र जी पाटनी अशोकनगर
२१) ,, शातिलाल रमेशचन्द्र जी ,,
२१) कालूराम गट्टूलाल हलवाई, साडोरा गुना
२१) सौ० शातिदेवी ध० प० शिखरचन्द्र जी मुगावली–गुना
२१) चपालाल प्रसन्नकुमार जी चदेरी–गुना
२१) मथुरालाल शिखरचन्द्र जी ,,
२१) अमोलकचन्द्र विनोदकुमार जी, कठरिया चदेरी–गुना
२१) सेठ रामचन्द्र कैलाशचन्द्र जी जैन खजूरी–कोटा
२१) ,, आनदीलाल नेमीचन्द्र जी ,,
२१) मातेश्वरी ला० जगदीशराय जी, बीडी वाले झाँसी
२१) सौ० कमलादेवी ध०प० ला०जगदीशराय जी, बीडी वाले झाँसी
२१) जालमचन्द्र आनदीलाल जी, नोहरकला झाँसी
२१) गेदालाल रमेशचन्द्र जी, तारई गुना
२१) सेठ कन्छेदीलाल जी, राजाखेडा धोलपुर
१५) सेठ धन्नालाल खुन्नीलाल जी, गुना
१५) ,, गोकलचन्द्र धर्मचन्द्र जी अशोकनगर–गुना
१५) ,, विहारीलाल वाबूलाल जी ,,
१५) ,, सुन्दरलाल जी हिनोतिया वाले ,,
१५) ,, घासीलाल ओम्प्रकाश जी खजूरी–कोटा
१५) धन्नालाल हुक्मचन्द्र जी नोहरकलाॅ झाॅसी
११) वाबूलाल सगुनचन्द्र जी मियाना, गुना
११) कन्हैयालाल माँगीलाल जी खुटियाल, गुना
११) नन्नूलाल गेदालालजी, गुना ११) फूलचन्द्रजी ओवरसियर, गुना
११) सौ० असरफी बाई ध०प० केवलचन्द्र जी, गुना
११) गट्टूलाल रमेशचन्द्र जी, ११) नन्नूलाल जी ठेले वाले, गुना
११) डा० प्रेमचन्द्र जी, ११) गट्टूलाल हजारीलाल जी, गुना
११) दुलीचद्र राजकुमार जी, ११) रामलाल घासीलाल जी, गुना
११) बाबू राजमल वीरेन्द्रकुमारजी, ११) फूलचद्रजी कम्पाउन्डर, गुना

११) मातेश्वरी सूरजमल जी पाटनी, गुना
११) ध० प० पन्नालाल जी रसाले वाले, गुना
११) वावूलाल शातिलाल जी पान वाले, गुना
११) सौ० सुशीलादेवी ध०प० रतनचन्द्र जी, गुना
११) सौ० कमलादेवी ध०प० कमल जी, गुना
११) वावूलाल केवलचन्द्र जी पान वाले, गुना
११) भूरेलाल गेंदालाल जी गुना ११) मिश्रीलाल मिन्टूलालजी अशोक०
११) ध० प० वावूलाल जी, ११) प्यारेलाल चांदमल जी ,,
११) चौ० भैयालाल जी, ११) ध०प० मिश्रीलालजी, राजपुर ,,
११) लक्ष्मीचन्द्रजी कठरिया, ११) सेठ मूलचन्द्र छोगालालजी ,,
११) गट्टूलाल धन्यकुमार जी, ११) गेदालाल बट्टूलाल जी ,,
११) राजमल शातिलाल जी, ११) अमरचन्द्र रतनचन्द्र जी ,,
११) गेदीवाईजी मिहदपुर, ११) सि०शॉतिलाल सतोपकुमारजी ,,
११) लालचन्द्र शातिलालजी ११) चौ०मिश्रीलाल ज्ञानचन्द्रजी ,,
११) वावू हजारीलाल जी वकील मुगावली
११) मोदी ताराचन्द्र कैलाशचन्द्र जी ,
११) भैयालाल निर्मलकुमार जी ,,
११) मोदी सुखलाल ताराचन्द्र जी ,,
११) देवीलाल अशोक कुमार जी ,,
११) स० सि० मोतीलाल कुन्दनलाल जी ,,
११) रज्जूलाल प्रेमचन्द्र जी ,,
११) मातेश्वरी निर्मलकुमार जी ,,
११) सौ० कुशमादेवी ध०प० शातिलाल जी ,,
११) वावूलाल जी सर्राफ, ११) पंचमलाल जी लागोन, चदेरी
११) लखमीचन्द्र वावूलालजी, ११) कुन्दनलाल सुनीलकुमारजी ,,
११) मनोहरलाल रवीन्द्रकुमार जी, चदेरी
११) सि० ताराचन्द्र जी, ११) कुन्दनलाल जी, ववीना-झाँसी
११) सुखनदन प्रकाशचद्रजी, ११) हरवावाई माता खेमचंद्रजी ,,

११) चौ० नाथूराम जी मिठिया ववीना–झाँसी
११) लालचन्द्र जी, सागोद ११) सेठ मानिकचन्द्र जी, सागोद-कोटा
११) चौथमल जी पोद्दार ,, ११) सेठ चादमल जी पाटोदी ,,
११) सेठ मानिकचन्द्र जी सोगानी सागोद–कोटा
११) सौ० प्रेमवती ध०प० वाबू कातीलाल जी सदर झाँसी
११) पुत्तुलाल जी हलवाई ,,
११) सौ० श्रीदेवी ध०प० देवेन्द्रकुमार जी कडेसरा झाँसी
११) जिनेन्द्रकुमार धर्मचन्द्र जी तालवेहट ,,
११) पन्नालाल वच्चूलाल जी तालबेहट ,,
११) श्यामलाल शिखरचद्र जी पवा, तालवेहट ,,
११) मुन्नालाल प्रेमचद्र जी पवा, तालवेहट ,,
११) सौ० रामकलीदेवी ध०प० मक्खनलाल जी तालवेहट झाँसी
११) प्यारेलाल प्रेमचद्र जी ,,
११) सौ० फूला वाई ध०प० लक्ष्मीचद्र जी मिठिया ,,
११) ,, ,, मथुरादास जी ,,
११) सौ० पुष्पादेवी ध०प० अजितकुमार जी वकील ,,
११) इन्द्राणी वाई, ध०प० आनदीललाल जी, जमालपुर झाँसी
११) मूलचद्र निर्मलकुमार जी ,,
११) प्यारेलाल चपालाल जी ,,
११) मगनलाल सुन्दरलाल जी, खिसोली झाँसी
११) हरप्रसाद खुश्यालचद्र जी, ११) नदकुमार पूरणचद्रजी ,,
११) प्रकाशचद्र जी, ११) भगवानदास जी, वरोदा–झाँसी
११) सौ० कस्तूरीबाई ध०प० गनपतलाल जी, नोहरकला ,,
११) ,, गेदा वाई ध०प० विमलकुमार महरोनी ,,
११) कुन्दनलाल सुरेशचंद्र जी, नोहरकला ,,
११) रतनचद्र वीरेन्द्रकुमार जी, नोहरकला ,,
११) नन्नूलाल ज्ञानचद्र जी, रुटियाई–गुना
११) चौ० मोतीलाल गुलावचद्र जी, रुटियाई गुना

११) शांतिलाल जी, ११) ज्ञानचद्र जी, धन्नाउदा गुना
११) सौ० मामती बाई ध० प० कोमलकुमार जी, धन्नाउदागुना
११) नाथूलाल लेखराज जी, सारोला–झालावाड
११) अमृतलाल कन्छेदीलाल जी सहराई, गुना
११) परमानद कालूराम जी ,,
११) कन्छेदीलाल जी, खनियाधाना ११) पुजारी जी, खनियाधाना
१०) मिट्टूलाल जी कठरिया अशोकनगर
१०) श्यामलाल गेदालाल जी ,,
१०) मिश्रीलाल श्रीलाल जी हलवाई ,,
१०) नाथूलाल जी सर्राफ, मुगावली
१०) सौ० बेनी बाई ध०प० राजमल जी, मुगावली
७) हरिश्चन्द्र जी वैद्य, गुना ७) लक्ष्मीचन्द्र जी वरैया, गुना
७) मातेश्वरी चौ० सुन्दरलाल जी, ववीना, झासी
७) लक्ष्मीवाई बबीना ५) सरोजवाई, बवीना
५) मुन्नालाल जी ,, ५) बालचद्र जी ,,
५) ललिताबाई ,, ५) भगवानदास ,,
५) नेमिकुमार जी, तालबेहट–झाँसी
५) भगवानदास जी, खिसोली ५) श्यामलाल खिसोली झासी
५) गोकलचद्र जी, वरोदा ५) हजारीलाल वरोदा झाँसी
५) सुखलाल जी, सिरोन झासी ५) भैयालाल सिरोन–झाँसी
५) सौ० सुमति रानी ,, ५) सौ० हुकमाबाई सिरोन–झाँसी
५) गट्टूलाल जी, धन्नाउदा ५) नन्नूलाल जी धन्नाउदा गुना
५) राजमल जी ,, ५) व्रजलाल जी ,,
५) कबूलचन्द्र जी ,, ५) फूलचन्द्र जी ,,

५) गेंदालाल जी धन्नाउदा	५) बाबूलाल जी, धन्नाउदा
५) रामगोपाल जी छीपाबडोद	५) हेमराज जी छीपाबडोद कोटा
५) मोहनलाज जी ,,	५) सौ० मालती देवी ,,
५) कोमलचन्द्र जी मुगावली	५) कन्छेदीलाल जी मुगावली
५) वीरेन्द्रकुमार जी ,,	५) कुन्जीलाल जी ,,
५) मि० मोतीलाल जी ,,	५) दीपचद्र जी मुगावली
५) केवलचद्र जी ,	५) दयाचद्र जी ,,
५) कुजीलाल जी फट्टा ,,	५) सौ०सक्करबाई जी ,,
५) सौ० भवरीबाई गुना	५) छोटेलाल जी गुना
५) राजमल जी पान वाले ,,	५) फूलचद्र जी ,,
५) राजमल राजकुमार जी ,,	५) मोतीलाल जी बडोति ,,
५) ज्ञानचद्र जी पान वाले ,,	५) बाबू हलवाई ,,
५) ताराचद्र जी ,,	५) गुलाबचन्द्र जी हलवाई ,,
५) शानीलाल जी टरका ,,	५) फूलचन्द्र जी हलवाई ,,
५) मागीलाल जी ,,	५) रामदयाल जी खरउआ ,,
५) राजमल जी चौ० ,,	५) गेंदालाल जी ,,
५) भमरलाल जी ,,	५) नेमीचद्र जी ,,
५) मानिकचद्र जी ,,	५) फुल्लीबाई ,,
५) चौ० मोतीलाल जी ,,	५) ब्र० भमरीबाई ,,
५) नन्नूलाल जी, बजरगगढ	५) सुरेशचद्र जी, बजरगगढ
५) रमेशचन्द्र जी ,,	५) बाबूलाल जी ,,

५२४८)



नमस्कारमंत्रम्

अर्हद्भ्यो नमः सिद्धेभ्यो नमः आचार्येभ्यो नमः
उपाध्यायेभ्यो नमः लोकस्य सर्वसाधुभ्यो नमः ।

एषः पंचनमस्कारः सर्वपापप्रणाशकः ।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं भवति मंगलम् ॥

चत्त्वारि मंगलं अर्हन्मंगलं सिद्धमंगलं
साधुमंगलं केवलीकथितधर्मो मंगलम् ।

चत्त्वारि लोकोत्तमः अर्हल्लोकोत्तमः सिद्धलोकोत्तमः
साधुलोकोत्तमः केवलीकथितधर्मः लोकोत्तमः ।

चत्त्वारि शरणं गच्छामि अर्हच्छरणं गच्छामि सिद्धशरणं गच्छामि साधुशरणं गच्छामि केवलीकथित-धर्मशरणं गच्छामि ।



मंगलाचरण

प्रतिक्षण अरहत् सिद्ध को, ध्यावें श्रमण प्रसिद्ध ।
स्वर्ग मोक्ष दातार हैं, वन्दो अरहत् सिद्ध ।।१।।

जिनवानी जग जीव के, संचित कर्म नशाय ।
इससे मुनिवर ध्यावते, नमो सरस्वती माय ।।२।।

मोह तिमिर से दृग ढके, दिये ज्ञान सों खोल ।
ऐसे गुरुवर देव को, नमो नमोस्तू बोल ।।३।।

पुनि जिनवर आचार्य नमि, नमो साधु सुख दीव ।
सुख वर्धक कथनी पढो, बोधि हेतु भवि जीव ।।४।।

गोमट सार जु ग्रन्थ के, करता जिनवर मूल ।
गणधर प्रति गणधर कथित, उनके वच अनुकूल ।।५।।

नेमिचन्द्र लिपि मूल अरु, भाष्य महामुनि क्षीर ।
तिसका अब वर्णन करूँ, सुनो भव्य धरि धीर ।।६।।

महावीर शुभ रूप हैं, अरु गणधर शुभ रूप ।
कुन्द-कुन्द शुभ रूप हैं, जैन धर्म शुभ रूप ।।७।।





* श्री वीतरागाय नमः *

श्री मन्नेमिचन्द्र सैद्धान्तिक चक्रवर्ती विरचित

।। श्री महामुनि क्षीरसागर प्रणीत ।।

गोमटसार-कर्मकांड



यादव पति गिरनारि पति, राजुलि पति शिर नाय ।
कर्मकांड दोहा अरथ, लिखूं स्वपर हित लाय ॥

।। मंगलाचरण ।।

पणमिय सिरसा णेमिं गुणरयणविभूसणं महावीरं ।
सम्मत्तरयणणिलय पयडिसमुक्कित्तणं वोच्छं ।।१।।

गुणभूषण महवीर अरु, समकित गुण के थान ।
नमि पद ऐसे नेमि के, लिखूं कर्म स्थान ।।१।।

अर्थ—जो गुणो (ज्ञानादि) के आभूषण है, जो वीरो के वीर है और जो परमागाढसम्यक्त्व के धारी है ऐसे श्री नेमिनाथ—भगवान को नमस्कार करके मै गोमटसारकर्मकाण्ड ग्रथ को लिखता हूँ ।।१।।

आगे जीव और कर्म का अनादि सम्बन्ध दिखाते है ।-

पयडी सील सहावो जीवंगाणं अणाइसंबंधो ।
कणयोवले मलं वा ताणत्थित्तं सयं सिद्धं ।।२।।

प्रकृति जु स्वतः स्वभाव से, जीव साथ बँधिजाय ।
कंचन पत्थर की तरह, सत्ता स्वयं दिखाय ॥२॥

अर्थ—कर्म का स्वभाव जीव के साथ बँधने का अनादिसे है और जीव का स्वभाव कर्म को बाँधने का अनादि से है इसलिये दोनो परस्पर मे अनादि से बँधे है जैसे सुवर्ण और पाषाण ॥२॥

आगे कर्म ग्रहण का कारण दिखाते है ।

देहोदयेण सहिओ जीवो आहरदि कम्म णोकम्मं ।
पडिसमयं सव्वगं तत्तायसपिंडओव्व जलं ॥३॥

देह उदय से जीव यह, गहे कर्म नोकर्म ।
सर्व अंग से प्रति समय, गर्म लोह जल नर्म ॥३॥

अर्थ—जैसे गर्म लोहा प्रतिसमय सव अग मे जल को ग्रहण करता है तैसे यह जीव शरीर नाम कर्म के उदय से कर्म और नो-कर्मवर्गणाओ को प्रतिसमय ग्रहण करता है ॥३॥

आगे प्रति समय कर्म ग्रहण का परिमाण दिखाते है ।

सिद्धाणंतिमभागं अभव्व सिद्धादणंतगुणमेव ।
समयपबद्धं बंधदि जोगवसादो दु विसरित्थं ॥४॥

अमित भाग शिव राशि से, अभवि अमित गुण वाढ ।
बाँधे समय-प्रबद्ध को, यथायोग्य कम वाढ ॥४॥

अर्थ—यह जीव सिद्धराशि से अनतवे भाग और अभव्यराशि से अनन्त गुणे समयप्रवद्धो (अनन्तवर्गणाओ) को एक समय मे बाधता है ॥४॥

सिद्धसख्या—अनन्त से अनन्त को गुणा करने से जो परिमाण आवे उतनी सिद्धो की सख्या है ।

अभव्यसंख्या—जितना जघन्य युक्तानत (एक अनन्त का भेद) का परिमाण है उतने अभव्यजीव है।

समयप्रबद्ध—अनतपुद्गलवर्गणाओ के समूह को एक समयप्रबद्ध कहते है।

वर्गणा—अनन्तपुद्गलपरमाणुओ के समूह को एक वर्गणा कहते है।

आगे प्रति समय की निर्जरा और सत्त्व को दिखाते है।

जीरदि समयपबद्धं पओगदो णेगसमयबद्धं वा।
गुणहाणीण दिवड्ढं समयपबद्धं हवे सत्तं ॥५॥

खिरता समय प्रबद्ध इक, तप बल खिरे महान।
सत्व अंत में हीन कुछ, गुणित डेढ गुणहान ॥५॥

अर्थ—प्रत्येकजीव के प्रतिसमय मे एक समयप्रवद्ध के बराबर वँधे हुये कर्म के परमाणु फल देकर खिर जाते है और तप के बल से एक समय मे अनेक समयप्रवद्ध बराबर कर्म परमाणु खिर जाते है तो भी कुछ कम डेढ गुणहानि गुणित समयप्रबद्धो की सत्ता रहती है। इसका विशेप वर्णन आगे कर्म स्थिति अधिकार मे लिखेगे और जीवकाड के योगमार्गणा अधिकार मे लिख चुके है ॥५॥

आगे कर्म के भेद और प्रभेद दिखाते है।

कम्मत्तणेण एक्कं दव्वं भावोत्ति होदि दुविहं तु।
पोग्गलपिंडो दव्वं तस्सत्ती भावकम्मं तु ॥६॥

कर्म पने से भेद नहिं, द्रव्य भाव दो राश।
पुद्गल पिंड जु द्रव्य है, भाव कर्म फल तास ॥६॥

अर्थ—सामान्य से देखा जावे तो कर्म मे भेद नही है तो भी विशेष

दृष्टि से कर्म दो प्रकार का है द्रव्य और भाव। जिसमे पुद्गल पिंड को द्रव्य कर्म कहते है और उस पुद्गलपिंड के उदय से जो जीव के-रागादि भाव होते है उसको भावकर्म कहते है ॥६॥

आगे पुद्गलपिंड के भेद और प्रभेद दिखाते हैं।

तं पुण अट्ठविहं वा अडदालसयं असंखलोग वा।
ताणं पुण घादित्ति अघादित्ति य होंति सण्णाओ॥७॥

अठविधि भेद प्रभेद हैं, इकसौ अडतालीस।
जग असंख्य परिमाण अरु, घाति अघाती दीस॥७॥

अर्थ—सामान्य से वह कर्म आठ प्रकार का है विशेप से एकसौ-अडतालीस (१४८) भेद है अथवा असख्यातलोक बराबर भेद हैं घातिया और अघातिया के भेद से दो भेद भी है ॥७॥

आगे मूल कर्मो के आठ नाम दिखाते है।

णाणस्स दंसणस्स य आवरणं वेयणीयमोहणियं।
आउगणामं गोदंतरायमिदि अट्ठ पयडीओ ॥८॥

ज्ञान दर्शनावरणि अरु, वेदनीय अरु मोह।
आयु नाम अरु गोत्र अरु, अंतराय अठ खोह ॥८॥

अर्थ—ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, वेदनी, मोहनी, आयु, नाम, गोत्र और अतराय ये आठ मूल कर्म है ॥८॥

आगे घातिया और अघातिया कर्म के नाम दिखाते है।

आवरणमोहविग्घं घादी जीवगुणघादणत्तादो।
आउगणामं गोदं वेयणियं तह अघादित्ति ॥९॥

ज्ञान दर्शनावरणि अरु, अंतराय अरु मोह।
गुण घाती ये जीव के, शेष अघाती सोह ॥९॥

अर्थ—ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनी और अंतराय ये चार कर्म जीव के अनुजीवी (भावात्मक) गुणों का घात करते है। इस कारण इनको घातिया कर्म कहते है शेष अघातिया कर्म कहलाते है कारण इनके रहते हुए अनुजीवीगुणो का घात नही होता प्रतिजीवी (बाहरी) गुणो का घात होता है ॥९॥

आगे घातिया कर्मो के घातने योग्य गुणो को दिखाते है।

केवलणाणं दंसणमणंतविरियं य खयियसम्मं य।
खयियगुणे मदियादी खओवसमिए य घादी दु ॥१०॥

केवल दर्शन ज्ञान बल, क्षायिक समकित ख्यात।
दानादिक पन मिश्र के, अष्टादश गुणघात ॥१०॥

अर्थ—केवलदर्शन, केवलज्ञान, क्षायिकसम्यक्त्व-चारित्र, क्षायिक दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य तथा मतिज्ञानादि १८ क्षयोपशामिक भावो को ये ज्ञानावरणादि घातियाकर्म घात करते है अर्थात् जीव के सपूर्ण गुणो को प्रकट नही होने देते ॥१०॥

आगे आयुकर्म का कार्य दिखाते है।

कम्मकयमोहवड्ढियसंसारम्हि य अणादिजुत्तम्हि।
जीवस्स अवट्ठाण करेदि आऊ हलिव्व णरं ॥११॥

कर्म उदय से मोह बढ़, भव अनादि से मान।
जीव रोकने के लिए, आयू काठ समान ॥११॥

अर्थ—जीव के आयुकर्म के उदय से और मोह से वृद्धि को प्राप्त हुआ यह चतुरगति रूपीससार अनादि से है। इसमे आयुकर्म जीव को ससार मे रोकने के लिये ऐसा काम करता है जैसा कि बदीगृह में अपराधियो को रोकने के लिए एक काठ का यत्र करता है ॥११॥

आगे नामकर्म का कार्य दिखाते है।

गदिआदि जीवभेदं देहादी पोग्गलाण भेदं य ।
गदियंतरपरिणमनं करेदि णामं अणेयविहं ॥१२॥

गति आदिक जिय भेद बहु, देहादिक जड़ भेद ।
गति से गति बदला करे, नाम कार्य बहु भेद ॥१२॥

अर्थ—नामकर्म अनेक प्रकार का है यह चित्रकार की तरह एक गति से दूसरी गति को, एक देह से दूसरी देह को इत्यादि पुद्-गल भेदो को बदला करता है ॥१२॥

आगे गोत्रकर्म का कार्य दिखाते है ।

सताणकमेणागयजीवायरणस्स गोदमिदि सण्णा ।
उच्चं णीचं चरणं उच्चं णीचं हवे गोदं ॥१३॥

कुल परिपाटी से चला, जीव चरन सो गोत्र ।
ऊंच चरण से ऊंच है, नीचहि नीचा गोत्र ॥१३॥

अर्थ—जो कुल परपाटी से चला आया उस कुल वाले जीव का आचरण, उसको कुल कहते है जिस कुल मे ऊँचा आचरण होता आया है वह उच्च कुल कहलाता है और उसमे जन्म लेने वाला जीव उच्च कुली कहलाता है तथा जिस कुल मे नीचा आचरण होता आया है वह नीच कुल कहलाता है और उसमे जन्म लेने वाला जीव नीचकुली कहलाता है ॥१३॥

आगे वेदनीकर्म का कार्य दिखाते है ।

अक्खाणं अणुभवणं वेयणीयं सुहसरूपं सादं ।
दुक्खसरूवमसादं तं वेदयदीदि वेदणियं ॥१४॥

इन्द्रिय अनुभव वेदनी, सुख स्वरूप सुखनीय ।
दुख स्वरूप सो अशुभ है, वेदे वेदानीय ॥१४॥

अर्थ—जो इन्द्रिय विषय का अनुभव कराता है वह वेदनीकर्म कहलाता है जिसमे जो सुखरूप अनुभव कराता है वह सातावेदनी-कर्म कहलाता है और जो दुःखरूप अनुभव कराता है वह असाता-वेदनीकर्म कहलाता है। यह कर्म घातिया तुल्य है ॥१४॥

आगे जीव के गुणो का क्रम दिखाते है।

अत्थं देक्खिय जाणदि पच्छा सद्दहदि सत्तभंगीहिं।
इदि दंसणं य णाणं सम्मत्त होंति जीवगुणा ॥१५॥

द्रव्य देखकर जानता, पीछे कर श्रद्धान।
दर्शज्ञान सम्यक्त्व ज्यों, जीव स्वगुण क्रमजान ॥१५॥

अर्थ—ससारी जीव प्रथम किसी द्रव्य को देखता है उसके पञ्चात् उसको जानता और उसके भी पश्चात् उसपर श्रद्धान करता है इस प्रकार क्रम से दर्शन, ज्ञान और सम्यकत्व गुण प्रकट होते है इस न्याय से प्रथम दर्शनावरणी पश्चात् ज्ञानावरणी और उसके पश्चात् मोहनी कर्म का वर्णन होना चाहिये ॥१५॥

आगे ज्ञान गुण को प्रधान के नाते प्रथम दिखाते है।

अब्भरहिदादु पुव्वं णाणं तत्तो हि दंसणं होदि।
सम्मत्तमदो विरियं जीवाजीवगदमिदि चरिमे ॥१६॥

ज्ञान मुख्य लख पूर्व अरु, दर्शन पीछे गाय।
समकित पीछे वीर्य है, जीवा-जीव रहाय ॥१६॥

अर्थ—आत्मा के सब गुणो मे ज्ञान प्रधान गुण है इसलिए प्रथम रक्खा जाता है इसके पश्चात् दर्शन, सम्यक्त्व और अंत मे वीर्य को रक्खा जाता है कारण वीर्य (शक्ति) जीव और अजीव दोनो मे होता है इस कारण इन गुणों के आवरण करने वाले ज्ञानावरणी,

दर्शनावरणी, मोहनी और अतराय का क्रम रक्खा गया है ॥१६॥

आगे अतराय को अत मे रखने का कारण और भी दिखाते हैं।

घादीवि अघादिं वा णिस्सेसं घादणे असक्कादो।
णामतियणिमित्तादो विग्घं पडिदं अघादिचरिमम्हि ॥१७॥

घाती परि अन घाति वत्, शक्ति न सब गुण हंत।
नाम कार्य लय के निमिति, विघ्न अघाती अंत ॥१७॥

अर्थ—अतरायकर्म जीव के अनुजीवी (भावात्मक) गुणो का घात करता है इससे घातिया कर्म कहलाता है किन्तु उन गुणो को शेष घातिया कर्मो की तरह पूर्ण रूप से नही घात कर सकता और वह भी नाम, गोत्र और वेदनी कर्म की सहायता से घात करता है इसलिये अघातिया कर्म के समान है इस कारण से इसको सब के अत मे रक्खा है ॥१७॥

आगे आयु, नाम और गोत्र के क्रम को दिखाते है।

आयुवलेण अवट्ठिदि भवस्स इदि णाममाउपुव्व तु।
भवमस्सिय णीचुच्च इदि गोदं णामपुव्वं तु ॥१८॥

आयू बल से देह थिति, आयू पीछे नाम।
नीच ऊंच पन देह से, गोत्र अगाड़ी नाम ॥१८॥

अर्थ—आयु कर्म के वल से देह की स्थिति है इस कारण आयु के पश्चात् नाम कर्म का नाम रक्खा है और नीच तथा ऊच पना देह के आधार से है इस कारण गोत्र कर्म के पूर्व नाम-कर्म का नाम रक्खा है ॥१८॥

आगे वेदनी का बीच मे रखने का कारण दिखाते है।

घादिंव वेयणीयं मोहस्स वलेण घाददे जीवं।
इदि घादीणं मज्झे मोहस्सादिम्हि पढिदं तु ॥१९॥

घाती वत् है वेदनी, गुण घाते बल मोह।
घाति मध्य अरु मोह के, पूर्व वेदनी सोह ॥१९॥

अर्थ—वेदनी कर्म भी घातिया कर्मों के समान है कारण यह मोहकर्म के वल से पर वस्तु मे सुख अथवा दुःख का अनुभव करा कर जीव के गुणो का घात करता है इस लिए घातिया कर्मो के मध्य और मोह कर्म के पूर्व रक्खा गया है ॥१९॥

आगे आठ कर्मो का क्रम पुन. स्पष्ट दिखाते है।

णाणस्स दंसणस्स य आवरणं वेयणीयमोहणियं।
आउगणामं गोदंतरायमिदि पढिदमिदि सिद्धं ॥२०॥

ज्ञान दर्शनावरणि अरु, वेदनीय अरु मोह।
आयु नाम अरु गोत्र अरु, अंतराय क्रम सोह ॥२०॥

अर्थ—ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, वेदनी, मोहनी, आयु, नाम, गोत्र और अतराय इस प्रकार इन आठ कर्मो का क्रम है ॥२०॥

आगे दृष्टान्त से कर्मों का स्वभाव दिखाते है।

पडपडिहारसिमज्जाहलिचित्तकुलालभंडयारीणं।
जह एदेसिं भावा तहवि य कम्मा मुणेयव्वा ॥२१॥

पट रक्षक असि मद्य अरु, काठ चित्र कुम्हार।
भंडारी जस कार्य है, तैसा भाव सँभार ॥२१॥

अर्थ—देव के मुख पर वस्त्र, राज द्वार पर रक्षक, मधु से सना हुआ खड़ग, मद्य, काठ का यत्र, चित्र कार, कुभकार और भंडारी

इन आठो का जैसा स्वभाव है तैसा आठ कर्मों का स्वभाव है ॥२१॥

आगे कर्मो के उत्तर भेद दिखाते है।

पच णव दोण्णि अट्ठावीसं चउरो कमेण तेणउदी।
तेउत्तरं सयं वा दुगपणग उत्तरा होंति ॥२२॥

पन नव दो अठ बीस अरु, चार तानवे मान।
इकसौ त्रय दो पांच ये, उत्तर भेद पिछान ॥२२॥

अर्थ—पाँच, नव, दो, अट्ठाईस, चार, तिरानवे अथवा एकसौ तीन दो और पाँच ये क्रम से आठ कर्मो की प्रकृतियाँ है ॥२२॥

आगे पाँच प्रकार की निद्राओ का कार्य दिखाते है।

थीणुदयेणुट्ठविदे सोवदि कम्मं करेदि जप्पदि य।
णिद्दाणिद्दुदयेण य ण दिट्ठिमुग्घादिदूं सक्को ॥२३॥

पयलापयलुदयेण य वहेदि लाला चलंति अंगाइं।
णिद्दुदये गच्छंतो ठाइ पुणो वइसइ पडेई ॥२४॥

पयलुदयेण य जीवो ईसुम्मीलिय सुवेइ सुत्तोवि।
ईसं ईस जाणदि मुहु मुहुं सोवदे मंदं ॥२५॥

शयन गृद्धि के उदय से, सोता बैठा बोल।
निद्रानिद्रा उदय से, जगे न आखें खोल ॥२३॥

प्रचला प्रचला उदय से, अंग चले मुख वाय।
बैठे निद्रा उदय से, उठे चले गिर जाय ॥२४॥

अंतिम प्रचला उदय से, खुले नेत्र से पाय।
जाने सोता हुआ भी, बार बार सो जाय ॥२५॥

अर्थ— **शयनगृद्धि :**—जिस कर्म के उदय से जीव जगाने पर भी नही जागता और उसकी असावधानी से कुछ का कुछ वोल देता है उसको शयनगृद्धि (स्त्यानगृद्धि) कर्म कहते है।

निद्रानिद्रा :—जिस कर्म के उदय से जीव जग जाता है किन्तु नेत्र नही खोलता उसको निद्रानिद्रा कर्म कहते है।

प्रचलाप्रचला :–जिस कर्म के उदय से मुख मे लार बहती है हाथ पैर चलते रहते है तो भी सावधान नही होता उसको प्रचलाप्रचला कर्म कहते है।

निद्रा :—जिस कर्म के उदय से अपने आप उठता है चलता है और गिर जाता है अर्थात पूर्ण रूप से सावधान नही हो पाता उसको निद्राकर्म कहते है।

प्रचला :–जिस कर्म के उदय से कुछ खुले नेत्र रहते है सोता हुआ भी जानता है मद निद्रा के कारण वार वार सो जाता है उसको प्रचलाकर्म कहते है ॥२३–२५॥

आगे मिथ्यात्व के तीन भेदो की उत्पति दिखाते है।

जंतेण कोद्दव वा पढमुवसमसम्मभावजंतेण।
मिच्छं दव्वं तु तिधा असंखगुणहीणदव्वकमा ॥२६॥

प्रथम जु उपशम यंत्र से, अगणित गुणक्रमदर्व।
कम होकर त्रय खंड हों, यंत्र धान्य त्रय पर्व॥२६॥

अर्थ—जैसे यत्र से दल कर धान्य तीन प्रकार की हो जाती है चावल, कण और भुसी। तैसे सादि मिथ्यादृष्टि के प्रथमोपशमसम्य-क्त्व रूपी यत्र से मिथ्यात्व का द्रव्य परिमाण असख्यात गुणा कम होकर तीन प्रकार का हो जाता है मिथ्यात्त्व, सम्यक्मिथ्यात्व (मिश्र) और सम्यक्प्रकृतिमिथ्यात्त्व ॥२६॥

आगे शरीरो के संयोगी भेदो से नाम के १०३ भेद दिखाते है।

तेजाकम्मेहिं तिए तेजा कम्मेण कम्मणा कम्मं ।
कयसंजोगे चदुचदुचदुदुग एक्कं य पयडीओ ॥२७॥

तैज कर्म से तीन तन, जोड़े हों चउ चार ।
तैज तैज तैजस करम, कर्म भेद विस्तार ॥२७॥

अर्थ—तैजस और कार्माणशरीर के साथ २ औंदारिक, विक्रियक और आहारकशरीर का परस्पर मे सम्बन्ध करने से चार चार भेद होते हं कार्माणशरीर के साथ तैजसशरीर को जोडने से तैजसशरीर के दो भेद होते हैं और केवल कार्माणशरीर का एक भेद होता है इस प्रकार १५ सयोगी भेद करने मे नामकर्म के १०३ भेद होते है यदि इन सयोगियो मे से १० भेद छोड दिये जावें तो नाम कर्म के ९३ भेद रहते हैं जो कि प्रसिद्ध हैं ॥२७॥

औदारिक-औदारिक १ औदारिक-तैजस २ औदारिक-कार्माण ३ औदारिक-तैजस-कार्माण ४ विक्रियक-विक्रियक ५ विक्रियक-तैजस ६ विक्रिय-कार्माण ७ विक्रियक-तेजस-कार्माण ८ आहरक-आहारक ९ आहारक-तैजस १० आहारक-कार्माण ११ आहारक-तैजस-कार्माण १२ तैजस-तैजस १३ तैजस-कार्माण १४ कार्माण-कार्माण १५ ।

आगे शरीर के आठ अग दिखाते है ।

णलया बाहू य तहा णियंबपुट्ठी उरो य सीसो य ।
अट्ठेव दु अंगाइं देहे सेसा उवंगाइं ॥२८॥

दो कर दो पग कमर अरु, पीठि हृदय सिर मान ।
आठ अंग ये देह के, शेष उपांग पिछान ॥२८॥

अर्थ—दो हाथ, दो पैर, कमर, पीठि, हृदय और शीश ये शरीर के आठ अग हैं शेष सब शरीर के उपाग हैं ॥२८॥

आगे सहननधारी जीवो के उपज स्थान दिखाते हैं ।

सेवट्टेण य गम्मइ आदीदो चदुसु कप्पजुगलोत्ति ।
तत्तो दुजुगलजुगले खीलियणारायणद्धोत्ति ॥२९॥
णवगेविज्जाणुद्दिसणुत्तरवासीसु जांति ते णियमा ।
तिदुगेगे संघडणे णारायणमादिगे कमसो ॥३०॥
सण्णी छस्संहडणो वज्जदि मेघं तदो परं चापि ।
सेवट्टादीरहिदो पण पणचदुरेगसंहडणो ॥३१॥

फाटक मरकर उपजता, आठ स्वर्ग तक जाच ।
कीलक बारह स्वर्ग तक, सोलम अर्धनराच ॥२६॥
ग्रीवक तक नाराच अरु, अनुदिश वज्रनराच ।
अनुत्तरों तक उपजता, वज्र-वृषभ-नाराच ॥३०॥
सैनी फाटक तृतिय भू, कीलक पन भू मान ।
शेष तीन छट्टी तलक, आदि सात तक जान ॥३१॥

अर्थ—स्फाटिकसहननवाला सैनी जीव मरकर कापिष्टस्वर्ग और तृतीयनरक तक जन्म लेता है कीलकसहननवाला जीव मरकर सहस्रार-स्वर्ग और पाचवे नरक तक जन्म लेता है अर्धनाराचवाला जीव मर कर अच्युतस्वर्ग और छट्ठेनरक तक जन्म लेता है नाराचसंहनन वाला जीव अंतिम ग्रीवक और छट्ठे नरक तक जन्म लेता है वज्रनाराचवाला जीव मरकर सब अनुदिशविमानो तक और छट्ठे नरक तक जन्म लेता है वज्रवृषभनाराचसहननवाला जीव मरकर पाचअनुत्तरविमानो तक और सातवे नरक तक जन्म लेता है ॥२९-३१॥

आगे कर्मभूमि की स्त्रियों के सहनन दिखाते है ।

अंतिमतियसंहणणस्सुदओ पुण कम्मभूमिमहिलाणं ।
आदिमतिगसंहडण णत्थित्ति जिणेहिंणिद्दिट्ठं ॥३२॥

अंत तीन सँहनन उदय, कर्म भूमि तिय मान।
आदि तीन सँहनन न हों, कर्म भूमि तिय जान ॥३२॥

अर्थ—कर्मभूमि की स्त्रियो के अत के तीन सहननो का ही उदय होता है और आदि के तीन सहननो का उदय नही होता अर्थात् वज्रवृषभनाराचादि तीन सहनन नही होते ॥३२॥

आगे आताप और उद्योत के स्वामियो को दिखाते हैं।

मुलुगहपहा अग्गी आदावो होदि उगहसहियपहा।
आइच्चे तेरिच्छे उगहूणपहा हु उज्जोओ ॥३३॥

अग्नि उष्ण ज्योती उषण, ज्योति उष्ण रवि मांहि।
आतापं उद्योत जहँ. ज्योति उष्ण भी नांहि॥३३॥

अर्थ—अग्नि उष्ण है और उसकी ज्योति भी उष्ण है इस कारण अग्निकाय के जीवो के उष्ण नामकर्म का उदय है सूर्य उष्ण नही है उसकी ज्योति उष्ण है इस कारण सूर्य के विंव मे उपजे वादरपर्याप्त पृथ्वीकाय के जीवो मे ही आतापनामकर्म का उदय होता है तथा जिसकी ज्योति भी उष्णता से रहित हो उसके उद्योत-नामकर्म का उदय होता है ॥३३॥

आगे वध और उदय मे समावेश प्रकृतियो को दिखाते हैं।

देहे अविणाभावी बंधणसंघाद इदि अवधुदया।
वण्णचउक्केऽभिण्णे गहिदे चत्तारि बंधुदये ॥३४॥

बंध उदय में देह ढिंग, हैं वन्धन संघात।
उसी तरह चउ वर्ण में, बीस भेद आजात॥३४॥

अर्थ—वध और उदय प्रकृतियो की सख्या मे ५ वधन और ५ सघात नही गिने जाते कारण ये पाँच शरीरो मे गर्भित माने

जाते है इसी तरह २० वर्ण चार वर्णो में ही माने जाते है ।।३४।।

आगे बध योग्य प्रकृतियो की सख्या दिखाते है ।

पंच णव दोण्णि छब्बीसमवि य चउरो कमेण सत्तट्ठी ।
दोण्णि य पंच य भणिया एदाओ बंधपयडीओ ।। ३५।।

पन नव दो छब्बीस चउ, सरसठ दो पन मान ।
बंधयोग्य ये प्रकृतियाँ, क्रम से लेउ पिछान ।।३५।।

अर्थ—ज्ञानावरणी की ५ दर्शनावरणी की ९ वेदनी की २ मोहनी की २६ आयु की ४२ नाम की ६७ गोत्र की २ और अतराय की ५ प्रकृतिया बधयोग्य है मोहनी मे सम्यक्मिथ्यात्व और सम्यक्प्रकृति बध योग्य नही है और नामकर्म मे वन्धन ५ सघात ५ और वर्ण १६ बध अवस्था मे नही गिने जाते है कारण दोहा न० ३४ मे देखो ।।३५।।

आगे उदय योग्य प्रकृतियो को दिखाते है ।

पंच णव दोण्णि अट्ठवीस चउरो कमेण सत्तट्ठी ।
दोण्णि य पंच य भणिया एदाओ उदयपयडीओ ।।३६।।

पन नव दो अठबीस चउ, सरसठ दो पन मान ।
उदययोग्य ये प्रकृतियां, क्रम से लेउपिछान ।।३६।।

अर्थ—ज्ञानावरणी की ५ दर्शनावरणी की ९ वेदनी की २ मोहनी की २८ आयु की ४ नाम की ६७ गोत्र की २ और अतराय की ५ प्रकृतिया उदययोग्य है नामकर्म मे बधन ५ सघात ५ और १६ वर्ण उदय अवस्था मे भी नही है कारण दोहा न० ३४ मे देखो ।।३६।।

आगे भेदाभेद से बध और उदय प्रकृतियो की सख्या दिखाते है ।

भेदे छादालसयं इदरे बंधे हवंति वीससयं ।
भेदे सव्वे उदये वावीससयं अभेदम्हि ।।३७।।

बंध भेद से दोय कम, अभेद से सौबीस।
उदय भेद से प्रकृति सब, अभेद सौ वाईस ॥३७॥

अर्थ—भेद दृष्टि से १४६ प्रकृतिया वध योग्य है और अभेद दृष्टि से १२० प्रकृतिया वध योग्य है तथा भेद दृष्टि से १४८ प्रकृतिया उदय योग्य है और अभेददृष्टि से १२२ प्रकृतियाँ उदय योग्य है ॥३७॥

आगे सत्तायोग्य प्रकृतियो को दिखाते है।

पंच णव दोण्णि अट्ठावीसं चउरो कमेण तेणउदी।
दोण्णि य पच य भणिया एदाओ सत्तपयडीओ ॥३८॥

पन नव दो अठवीस अरु, चार त्रानवे मान।
दोय पांच ये प्रकृतियां, सत्ता योग्य पिछान ॥३८॥

अर्थ—ज्ञानावरणी की ५ दर्शनावरणी की ९ वेदनी की २ मोहनी की २८ आयु की ४ नाम की ९३ गोत्र की २ और अतराय की ५ प्रकृतिया सत्तायोग्य है ॥३८॥

आगे सर्वघाती प्रकृतियो को दिखाते है।

केवलणाणावरणं दंसणछक्कं कसायवारसयं।
मिच्छं च सव्वघादी सम्मामिच्छं अवंधम्हि ॥३९॥

केवलज्ञानावरण अरु, दर्शन की छै मान।
चौदह प्रकृती मोह की, सर्व घातिनी जान ॥३९॥

अर्थ—केवलज्ञानावरणी १ केवलदर्शनावरणी १ निद्रा ५ अनतानुवधी ४ अप्रत्याख्यान ४ प्रत्याख्यान ४ मिथ्यात्व १ और सम्यक्-मिथ्यात्व १ इस तरह ये २१ प्रकृतिया सर्वघातिनी है ॥३९॥

आगे देशघाती प्रकृतियो को दिखाते है।

णाणावरणचउक्कं तिदंसणं सम्मगं य संजलणं।
णव णोकसाय विग्घं छब्बीसा देसघादीओ ॥४०॥

ज्ञानावरणी चार अरु, दर्शनवरणी तीन।
चौदह मोह रु विघ्नपन, देशघातिनी चीन ॥४०॥

अर्थ—ज्ञानावरणी की ४ दर्शनावरणी की ३ मोह की १४ और अंतराय की ५ इस तरह ये २६ प्रकृतियाँ देशघातिनी है ॥४०॥

आगे पुण्य प्रकृतियो को दिखाते है।

सादं तिण्णेवाऊ उच्चं णरसुरदुगं य पंचिंदी।
देहा बंधणसंघादंगोवंगाइं वण्णचओ ॥४१॥
समचउरवज्जरिसहं उवघादूणगुरुछक्क सग्गमणं।
तसवारसट्ठसट्ठी वादालमभेददो सत्था ॥४२॥

साता ऊंचरु आयु त्रय, तन बंधन संघात।
पंचेन्द्रिय नर सुर युगल, अंग वर्ण विख्यात ॥४१॥
समचतुरस वज्रा वृषभ, त्रस बारह शुभ चाल।
उपघाता तज अगुरु छै, अरसठि पुण्य सँभार ॥४२॥

अर्थ—सातावेदनी १ ऊचगोत्र १ तिर्यचायु १ मनुष्यायु १ देवायु १ शरीर ५ वधन ५ सघात ५ पचेन्द्रिय १ मनुष्यगति १ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ देवगति १ देवगत्यानुपूर्वी १ अगोपाग ३ शुभवर्ण २० समचतुरस्रसस्थान १ वज्रवृषभनाराचसहनन १ त्रस १ बादर १ पर्याप्त १ आदेय १ यश १ शुभ १ शुभग १ सुस्वर १ स्थिर १ प्रत्येक १ निर्माण १ तीर्थकर १ अगुरुलघु १ परघात १ उश्वास १ आताप १ उद्योत १ और शुभचाल १ इस प्रकार भेद दृष्टि से ६८ पुण्य प्रकृतियाँ है और अभेद दृष्टि से ४२ पुण्य प्रकृतियां है कारण पूर्व रीति के अनुसार २६ प्रकृतियाँ कम हो जाती है ॥४१-४२॥

आगे पाप प्रकृतियो को दिखाते है ।

घादी णीचमसादं णिरयाऊ णिरयतिरियदुग जादी ।
सठाणसंहदीण चदुपणपणगं य वण्णचओ ॥४३॥
उवघादमसग्गमणं थावरदसयं य अप्पसत्था हु ।
बंधुदयं पडि भेदे अडणउदि सयं दुचदुरसीदिदरे ॥४४॥

नीच असाता घाति सव, नारक पशु दुक भर्ण ।
सँहनन पन संस्थान पन, चउइन्द्रियसब वर्ण ॥४३॥
अशुभ चाल उपघात अरु, अरु थावर दश मान ।
नरक आयु मिल एकसो, पाप प्रकृतियां जान ॥४४॥

अर्थ—नीच गोत्र १ असातावेदनी १ घातिया कर्मों की ४७ नरकगति १ नरकगत्यानुपूर्वी १ तिर्यंचगति १ तिर्यचगत्यानुपूर्वी १ सहनन ५ सस्थान ५ आदि की इन्द्रिय ४ अशुभवर्ण २० अशुभचाल १ उपघात १ नरकायु १ स्थावर १ सूक्ष्म १ अपर्याप्त १ अनादेय १ अयश १ अशुभ १ दुर्भग १ दुस्वर १ अस्थिर १ और साधारण १ इस प्रकार १०० पाप प्रकृतियाँ है इनमे भेद दृष्टि से वध योग्य ९८ प्रकृतियॉ है और उदय योग्य १०० प्रकृतियाँ है और अभेद दृष्टि से वधयोग्य ८२ प्रकृतियाँ है और उदययोग्य ८४ प्रकृतिया है ॥४३-४४॥

आगे अनतानुवधी आदि कपायो का कार्य दिखाते है ।

पढमादिया कसाया सम्मत्तं देससयलचारित्तं ।
जहखादं घादंति य गुणणामा होंति सेसावि ॥४५॥

प्रथमादिका कषाय ये, दृष्टि देश मुनि भेष ।
यथाख्यात को घाततीं, यथा नाम तस शेष ॥४५॥

अर्थ—अनतानुबधीकषाय सम्यक्दर्शन को, अप्रत्याख्यान-कषाय देशविरत को, प्रत्याख्यानकषाय महाव्रत को और सज्वलनकषाय यथाख्यातचारित्र को घात करती है और शेष प्रकृतियों का जैसा नाम है तैसा उनमे गुण है ॥४५॥

आगे कषायो का वासना काल दिखाते है ।

अंतोमुहुत्त पक्खं छम्मासं संखऽसंखणंतभवं ।
संजलणमादियाणं वासणकालो दु णियमेण ॥४६॥

अंतर्मुहूर्त्त पक्ष अरु, छै महिना बहु काल ।
सँज्वलनादि कषाय का, वासन काल सँभाल ॥४६॥

अर्थ—सज्वलनादि कषायों का अधिक से अधिक काल क्रम से अंतर्मुहूर्त्त, १५ दिन, छै महीना और सख्यात, असख्यात तथा अनत भव है ॥४६॥

आगे पुद्गल विपाकी प्रकृतियो को दिखाते है ।

देहादी फासंता पण्णासा णिमिणतावजुगलं य ।
थिरसुहपत्तेयदुगं अगुरुतियं पोग्गलविवाई ॥४७॥

निर्माण आताप दुक, तन से फर्स पचास ।
थिरशुभ अरु प्रत्येक दुक, अगुरु त्रयी जड़वास ॥४७॥

अर्थ—निर्माण १ आताप १ उद्योत ' शरीर ५ बधन ५ सघात ५ अग ३ सहनन ६ सस्थान ६ वर्ण २० स्थिर १ अस्थिर १ शुभ १ अशुभ १ प्रत्येक १ साधारण १ अगुरुलघु १ उपघात १ और परघात १ ये ६२ प्रकृतिया पुद्गलविपाकी है ॥४७॥

आगे क्षेत्र, भव और जीवविपाकी प्रकृतियो को दिखाते है ।

आऊणि भवविवाई खेत्तविवाई य आणुपुव्वीओ ।
अट्ठत्तरि अवसेसा जीवविवाई मुणेयव्वा ॥४८॥

आयू भव जु विपाक हैं, पूर्वी क्षेत्र विपाक।
जीव विपाकी अठत्तर, विवरण जिनवर भाक ॥४८॥

अर्थ—नरकादिक चार आयु भवविपाकी प्रकृतिया है नरकगत्यानुपूर्वी आदि चार क्षेत्रविपाकी प्रकृतिया है और शेष ७८ जीव विपाकी प्रकृतियाँ है अर्थात् इनका फल जीव के भाव मे होता है।४८॥

आगे जीव विपाकी प्रकृतियो के नाम दिखाते है।

वेदणियगोदघादीणेकावण्णं तु णामपयडीणं।
सत्तावीस चेदे अट्ठत्तरि जीवविवाई ॥४९॥

घाती सेतालीस अरु, दो वेदनि दो गोत।
अरु सत्ताइस नाम की, मिले अठत्तर होत ॥४९॥

अर्थ–चार घातिया कर्मों की ४७ वेदनी की २ गोत्र की २ और नाम कर्म की २७ ये ७८ जीवविपाकी प्रकृतिया है ॥४९॥

आगे नाम कर्म की उन २७ प्रकृतियो को दिखाते है।

तित्थयरं उस्सासं वादरपज्जत्तसुस्सरादेज्जं।
जसतसविहायसुभगदु चउगइ पणजाइ सगवीसं ॥५०॥

तीर्थंकर उश्वास गति, इन्द्रिय यश स्वर चाल।
सुभग देय पर्याप्त त्रस, बादर युगल सँभाल ॥५०॥

अर्थ—तीर्थंकर १ उश्वास १ गति ४ इन्द्रिय ५ यश २ स्वर २ चाल २ सुभग १ दुर्भग १ आदेय १ अनादेय १ पर्याप्त १ अपर्याप्त १ त्रस १ स्थावर १ वादर १ और सूक्ष्म १ ये २७ नाम कर्म की जीव विपाकी प्रकृतियाँ है नीचे भी यही आशय है ॥५०॥

आगे और रीति से उन २७ प्रकृतियो को दिखाते है।

गदि जादी उस्सासं विहायगदि तसतियाण जुगलं य।
सुभगादिचउज्जुगल तित्थयरं चेदि सगवीसं ॥५१॥

गति इन्द्रिय उश्वास अरु, त्रस त्रय युगलरु चाल।
सुभगादिक चउ युगल अरु, जिन सत्ताइस साल।५१

अर्थ—गति ४ इन्द्रिय ५ उश्वास १ चाल २ त्रस १ स्थावर १ बादर १ सूक्ष्म १ पर्याप्त १ अपर्याप्त १ सुभग १ दुर्भग १ स्वर २ आदेय १ अनादेय १ यश १ अयश १ और तीर्थकरप्रकृति १ ये २७ नामकर्म की जीवविपाकी प्रकृतियाँ है ॥५१॥

आगे निक्षेप के भेद और नाम का स्वरूप दिखाते है।

णामं ठवणा दवियं भावोत्ति चउव्विहं हवे कम्मं।
पयडी पावं कम्मं मलंति सण्णा हु णाममलं ॥५२॥

नाम, थापना द्रव्य अरु, भाव चार विधि कर्म।
प्रकृति पाप मल कर्म चउ, संज्ञा नामहिं पर्म ॥५२॥

अर्थ—नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव के भेद से कर्म चार प्रकार का होता है प्रकृति, पाप, कर्म और मल ये उसके चार नाम है इनको ही नाम निक्षेप से कर्म कहते है ॥५२॥

आगे स्थापना निक्षेप रूप कर्म को दिखाते है।

सरिसासरिसे दव्वे मदिणा जीवट्ठियं खु जं कम्मं।
तं एदंत्ति पदिट्ठा ठवणा तं ठावणाकम्मं ॥५३॥

तुल्यातुल्यहि द्रव्य में, मति से खोजे कर्म।
जीव मिले वे येहि हैं, थापे थापन कर्म ॥५३॥

अर्थ—जो कर्म के समान हो अथवा कर्म के समान न हो उस किसी भी द्रव्य मे अपनी बुद्धि से स्थापना करना कि जीव मे मिले हुये कर्म ये ही है उसको स्थापना निक्षेप कहते है ॥५३॥

आगे द्रव्यनिक्षेप के प्रथम भेद को दिखाते है।

दव्वे कम्मं दुविहं आगमणोआगमंति तप्पढमं ।
कम्मागमपरिजाणुगजीवो उवजोगपरिहीणो ॥५४॥

आगम नो आगम कहे, द्रव्य कर्म के भाग ।
कर्मागम ज्ञायक प्रथम, परि उपयोग न जाग ॥५४॥

अर्थ—द्रव्यकर्म दो प्रकार का होता है आगमद्रव्यकर्म और नो-आगमद्रव्यकर्म । जो पुरुष कर्मशास्त्र का जानने वाला है किन्तु वर्तमान मे उसका उपयोग नही रखता है वह आगमद्रव्यकर्म वाला है और उसके परिणाम को प्रथम आगमद्रव्यकर्म कहते है ॥५४॥

आगे द्रव्यनिक्षेप के द्वितीय भेद को दिखाते है ।

जाणुगसरीर भवियं तव्वदिरित्तं तु होदि जं विदियं ।
तत्थ सरीरं तिविहं तियकालगयंति दो सुगमा ॥५५॥

दुतिया के ज्ञायक जु तन, भावी अरु व्यतिरिक्त ।
प्रथमा के त्रैकाल से, भेद तीन दो मित्त ॥५५॥

अर्थ—जो द्रव्यनिक्षेप रूपकर्म का भेद नोआगमद्रव्य है वह तीन प्रकार का है ज्ञायकशरीर, भावी और व्यतिरिक्त । जिसमे ज्ञायक शरीर, काल भेद से तीन प्रकार का है भूत, भविष्य और वर्तमान । जिसमे वर्तमान और भविष्य का अर्थ समझना कठिन नही है अपितु सुगम है कारण वर्तमान शरीर वह है जिसको धारण किये है और भविष्य शरीर वह है जिसको आगामीकाल धारण करेगा ॥५५॥

आगे भूतकाल सम्बन्धी शरीर के भेद दिखाते है ।

भूदं तु चुदं चइदं चदंति तेधा चुदं सपाकेण ।
पडिदं कदलीघादपरिच्चागेणूणयं होदि ॥५६॥

च्युत, चावित अरु त्यक्त से, भेद भूत तन तीन ।
कदलीघात समाधि बिन, त्यक्त भेद को चीन ॥५६॥

अर्थ—उपरोक्त भूतज्ञायकशरीर (पूर्वभवकाशरीर) तीन प्रकार का होता है च्युत, चावित और त्यक्त। जिसका कदलीघात अथवा समाधिमरण के बिना स्वतः स्वभाव आयु के क्षय से मरण हुआ हो उसको च्युतभूतज्ञायकशरीर कहते है ॥५६॥

आगे कदलीघात का स्वरूप दिखाते है।

विसवेयणरत्तक्खयभयसत्थग्गहणसकिलेसेहिं।
उस्सासाहाराणं णिरोहदो छिज्जदे आऊ ॥५७॥

विष वेदन भय रक्त क्षय, शस्त्रघात संक्लेश।
श्वासाहार निरोध से, आयु छिदे अवशेष ॥५७॥

अर्थ—जिसका विषभक्षण से, रोगादि की वेदना से, सिंहादिक की भय से, रक्त रुकने से, शस्त्रघात से, सक्लेशभाव से श्वासोश्वास रुक जाने से अथवा आहार न मिलने से आयु का क्षय हुआ हो उसको कदलीघात मरण (अकालमृत्यु) कहते है ॥५७॥

आगे च्यावित और त्यक्तभूत शरीर को दिखाते है।

कदलीघातसमेदं चागविहीणं तु चइदमिदि होदि।
घादेण अघादेण व पडिदं चागेण चत्तमिदि ॥५८॥

चावित कदली घात युत, परि समाधि से रिक्त।
घात सहित या रहित हो, परि समाधि युत त्यक्त।५८।

अर्थ—जिसका समाधिमरण के विना केवल कदलीघात से मरण हुआ हो उसको च्यावित शरीर कहते है और जिसका कदलीघात सहित अथवा कदलीघात रहित समाधिमरण पूर्वक मरण हुआ हो उसको त्यक्तभूतज्ञायकशरीर कहते है ॥५८॥

आगे त्यक्त शरीर के भेद दिखाते है।

भत्तपइण्णाइंगिणिपाउग्गविधीहिं चत्तमिदि तिविहं।
भत्तपइण्णा तिविहा जहण्णमज्झिमवरा य तहा॥५९॥

भोजन सेवक सर्वतज, त्यक्त भेद ये तीन।
भोजन तज में बराबर, मध्य भेद त्रय चीन॥५६॥

अर्थ—त्यक्तभूतज्ञायकशरीर तीन प्रकार का होता है आहारत्याग, सेवकत्याग और सर्वत्याग जिसमे आहार त्याग तीन प्रकार का होता है उत्तम, मध्य और जघन्य ॥५६॥

आगे आहारत्याग का काल दिखाते है।

भत्तपइण्णाइविहि जहण्णमंतोमुहुत्तयं होदि।
वारसवरिसा जेट्ठा तम्मज्झे होदिमज्झिमया ॥६०॥

अशन त्याग का काल लघु, अंतर्मूहूर्त्त मान।
उत्तम बारह वर्ष का, मध्य मध्य उन जान ॥६०॥

अर्थ—आहारत्याग समाधिमरण का जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त्त है उत्कृष्ट काल वारह वर्ष है और मध्य का काल जघन्य और उत्कृष्ट काल के मध्य मे जितने काल के भेद है उतना है क्रम २ से आहार घटाने की अपेक्षा अधिक से अधिक १२ वर्ष है ॥६०॥

आगे सेवक और सर्वत्याग का स्वरूप दिखाते हैं।

अप्पोवयारवेक्खं परोवयारूणमिंगिणीमरण।
सपरोवयारहीणं मरणं पाओवगमणमिदि ॥६१॥

सेवक त्याग समाधि में, तन सेवा निज हाथ।
सर्व जु त्याग समाधि में, सेवा स्वपर न हाथ ॥६१॥

अर्थ—जिस समाधिमरण मे शरीर की सेवा अन्य किसी से नही कराई जाती उसको सेवकत्यागसमाधिमरण कहते हैं और जिस समाधि-मरण मे शरीर की सेवा अपने और पर किसी के भी हाथ से नही कराई जाती उसको सर्वत्यागसमाधिमरण कहते है ॥६१॥

आगे भावीनोआगमद्रव्य का स्वरूप दिखाते है।

भवियंति भवियकाले कम्मागमजाणगो स जो जीवो ।
जाणुगसरीरभवियं एव होदित्ति णिद्दिट्ठं ॥६२॥

कर्मागम भावी जिया, बने अगाड़ी काल ।
भावी ज्ञायक तन कहा, यह जिन वैन सँभाल ॥६२॥

अर्थ—जो कर्म सम्बन्धी शास्त्र का जानने वाला आगे होगा वह ज्ञायकशरीर वाला भावी जीव है ॥६२॥

आगे व्यतिरिक्तनोआगमद्रव्यकर्म को दिखाते है ।

तव्वदिरित्तं दुविहं कम्मं णोकम्ममिदि तहिं कम्मं ।
कम्मसरूवेणागय कम्मं दव्वं हवे णियया ॥६३॥

दो प्रकार व्यतिरिक्त है, कर्म और नोकर्म ।
कर्म रूप जो परिणवे, द्रव्य कर्म है पर्म ॥६३॥

अर्थ—व्यतिरिक्तनोआगमद्रव्यकर्म दो प्रकार का होता है कर्म और नोकर्म । जिसमे जो पुद्गलद्रव्य ज्ञानावरणादि मूल प्रकृति रूप अथवा मतिज्ञानावरणादि उत्तर प्रकृति रूप परणवता है उसको कर्मव्यतिरिक्तनोआगमद्रव्यकर्म कहते हैं ॥६३॥

आगे व्यतिरिक्त नोकर्म और भावनिक्षेप को दिखाते है ।

कम्मदव्वादण्णं दव्वं णोकम्मदव्वमिदि होदि ।
भावे कम्मं दुविहं आगमणोआगमंति हवे ॥६४॥

कर्म द्रव्य से भिन्न जो, वही नोकर्म मान ।
अरु आगम नो आगमा, भाव कर्म दो जान ॥६४॥

अर्थ—जो कर्म रूप द्रव्य से भिन्न है वह नोकर्म व्यतिरिक्तनोआगमद्रव्यकर्म है और भावनिक्षेपकर्म दो प्रकार का होता है आगम और नोआगम ॥६४॥

आगे भावनिक्षेपकर्म का स्वरूप दिखाते है ।

कम्मागमपरिजाणगजीवो कम्मागमम्हि उवजुत्तो ।
भावागमकम्मोत्ति य तस्स य सण्णा हवे णियमा ॥६५॥

कर्मागम ज्ञायक जिया, कर्मागम से युक्त ।
भावागम के कर्म से, उसका नाम नियुक्त ॥६५॥

अर्थ—जो जीव कर्मस्वरूप शास्त्र का जानने वाला है और वर्तमान मे उसका विचार कर रहा हो उसको आगमभावकर्म कहते है ॥६५॥

आगे भावनोकर्म का स्वरूप कहते है ।

णोआगमभावो पुण कम्मफलं भुंजमाणगो जीवो ।
इदि सामण्णं कम्मं चउव्विहं होदि णियमेण ॥६६॥

जो भोगे जिस कर्मफल, भाव नोकर्म मान ।
इस प्रकार सामान्य से, कर्म चार विधि जान ॥६६॥

अर्थ—जो जीव कर्म के फल को भोग रहा हो उसको नोआगमभावकर्म कहते है । इस प्रकार निक्षेपो की अपेक्षा कर्म चार प्रकार का है ॥६६॥

आगे जिस कर्म का जैसा नाम है वैसा निक्षेपादि दिखाते है ।

मूलुत्तरपयडीणं णामादी एवमेव णवरिं तु ।
सगणामेण य णामं ठवणा दवियं हवे भावो ॥६७॥

मूलोत्तर प्रकृतियों के, नाम आदि से ठाम ।
नाम थापना द्रव्य अरु, भावहिं जस तस नाम ॥६७॥

अर्थ—जो मूल कर्म के और उत्तर प्रकृतियो के नामादि चार निक्षेप हैं उनका स्वरूप उपरोक्त सामान्यकर्म की तरह है किन्तु इतना विशेष अवश्य है कि जिस प्रकृति का जैसा नाम है वैसा नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव निक्षेप है ॥६७॥

आगे नोकर्म और नोआगमभावकर्म को दिखाते है।

मूलुत्तरपयडीणं णमादि चउव्विहं हवे सुगमं ।
वज्जित्ता णोकम्मं णोआगमभावकम्मं य ॥६८॥

मूलोत्तर प्रकृतियों के, नामादिक स्पष्ट ।
नोकर्म रु नोआगमा, भावकर्म में कष्ट ॥६८॥

अर्थ--मूलकर्मों का और उत्तरप्रकृतियो के नामादिक चार निक्षेपों का स्वरूप समझना कठिन नही है अपितु सरल है किन्तु उनके द्रव्य और भाव निक्षेपो के भेदो मे से नोकर्म और नोआगमभावकर्म का स्वरूप समझना कठिन है इस कारण अब उन दोनो को मूल और उत्तर प्रकृतियो पर क्रम से घटित करके दिखाते है ॥६८॥

आगे आठ कर्मों के नोकर्म का स्वरूप दिखाते है।

पडपडिहारसिमज्जा आहारं देह उच्चणीचंगं ।
भंडारी मूलाणं णोकम्म दवियकम्मं तु ॥६९॥

पट रक्षक असि मद अशन, तन अरु कुल लघुपर्म ।
भंडारी अठकर्म के, द्रव्य कर्म नोकर्म ॥६९॥

अर्थ—ज्ञानावरणी कर्म का नोकर्म (सहायक) वस्त्र है कारण किसी वस्तु के बीच मे वस्त्र होजाता है तो उस वस्तु का ज्ञान स्पष्ट नही होता। दर्शनावरणीकर्म का नोकर्म द्वारपाल है कारण वह राजादिक के दर्शन नही होने देता। वेदनीकर्म का नोकर्म मिठास लगा हुआ खडग है कारण उसको चाटने से सुख और दु ख दोनों एक काल मे होते है। मोहनीकर्म का नोकर्म मद्य है कारण मद्य पान से अपना और पर का ज्ञान नही होता। आयुकर्म का नोकर्म आहार है कारण आहार को एक स्थान ठहरना होता है नाम कर्म का नोकर्म शरीर है कारण जैसा शरीर होता है वैसा ही भाव होता है। गोत्रकर्म का नोकर्म शुभाशुभ अग है कारण जैसा अग होता है

वैसा ही भाव बनता है अतराय का नोकर्म भडारी है कारण जितना लिखा आता है उतना ही भडारी देता है ।।६९।।

आगे मति और श्रुत ज्ञानावरणी का नोकर्म दिखाते है ।

पडविसयपहुदि दव्व मदिसुदवाघादकरणसंजुत्त ।
मदिसुदबोहाणं पुण णोकम्मं दवियकम्मं तु ।।७०।।

वस्त्रआदि अरु विषय पन, रोके मति श्रुत ज्ञान ।
मति श्रुत ज्ञानावरण के, इन्हें नोकर्म जान ।।७०।।

अर्थ—वस्त्रादि पदार्थों को किसी पदार्थ पर ढक दो तो वे उसका यथार्थ ज्ञान नही होने देते इस कारण वस्त्रादि मतिज्ञानावरणीकर्म के नोकर्म है और इन्द्रिय विषय भोग मे लीन जीव श्रुतज्ञान से रुचि नही रखता इस कारण इन्द्रिय विषय भोग श्रुत ज्ञान वरणी के नो-कर्म है ।।७०।।

आगे अवधि ज्ञानादि के नोकर्मो को दिखाते है ।

ओहिमणपज्जवाण पडिघातणिमित्तसंकिलेसयरं ।
जं वज्झट्ठं तं खलु णोकम्मं केवले णत्थि ।।७१।।

अवधिरु मन पर्याय के, घातक मन संक्लेश ।
बाह्य वस्तु नोकर्म नहिं, केवल का इक लेश ।।७१।।

अर्थ—अवधिज्ञान और मनपर्यायज्ञान के घातक सक्लेश भाव है इस कारण सक्लेशभाव अवधि और मनपर्ययज्ञानावरणी कर्म के नोकर्म है और केवल ज्ञान का घातक वाह्य कारण कोई भी नही है इस कारण केवल ज्ञानावरणी का नोकर्म कोई नही है ।।७१।।

आगे दर्शनावरणी और वेदनी के नोकर्म दिखाते हैं ।

पंचण्हं णिद्दाणं माहिसदहिपहुदि होदि णोकम्मं ।
वाघादकरपडादी चक्खुअचक्खूण नोकम्मं ।।७२।।

ओहीकेवलदंसणणोकम्म ताण णाणभंगो व।
सादेदरणोकम्मं इट्ठाणिट्ठण्णपाणादी ॥७३॥

पन निद्रा का नोकर्म, भेंस दही इत्यादि।
चक्षु अचक्षु नोकर्म, रोकक पट इत्यादि ॥७२॥
अवधिरु केवल दर्श के, त्रयपन ज्ञान समान।
सात असाता नोकरम, अशन इष्ट अपरान ॥७३॥

अर्थ—पाँच निद्राओ का नोकर्म भेस का दही आदि है कारण ये पदार्थ निद्रा अधिक लाते है। चक्षुदर्शन और अचक्षुदर्शन को रोकने वाले वस्त्रादि पदार्थ है कारण ये पदार्थ आडे हो जाते है तो चक्षु और अचक्षु दर्शन नही होता इस कारण वस्त्रादि चक्षु और अचक्षु दर्शनावरणी कर्म के नोकर्म है। अवधि और केवलदर्शनावरणीकर्म का नोकर्म अवधि और केवलज्ञानावरणी कर्म की तरह है और साता असाता वेदनी कर्म का नोकर्म इष्ट और अनिष्ट पदार्थ है।।७२-७३।।

आगे मोहनी के नोकर्म दिखाते है।

आयदणाणायदणं सम्मे मिच्छे य होदि णोकम्मं।
उभयं सम्मामिच्छे णोकम्मं होदि णियमेण ॥७४॥
अणणोकम्मं मिच्छत्तायदणादी हु होदि सेसाणं।
सगसगजोग्गं सत्थं सहायपहुदी हवे णियमा ॥७५॥
थीपुंसंढसरीरं ताणं णोकम्म दव्वकम्म तु।
वेलंचको सुपुत्तो हस्सरदीणं य णोकम्म ॥७६॥
इट्ठाणिट्ठविजोगजोगं अरदिस्स मुदसुपुत्तादी।
सोगस्स य सिंहादी णिंदिददव्वं य भयजुगले ॥७७॥

समकित के छै आयतन, अनायतन मिथ्यात ।
मिश्र प्रकृति का नोकरम, उभय रूप विख्यात ॥७४॥
नादि बंधनी नोकरम, मृषा आयतन रंग ।
शेषों का निजनिज कहा, योग्य शास्त्र अरु संग ॥७५॥
नर तिय षंड शरीर ही, वेदों का नोकर्म ।
बहुरुपिया है हास्य का, रति सुपुत्र नोकर्म ॥७६॥
इष्ट वियोग अनिष्ट सँग, मिलें अरति भय शेर ।
पुत्रमरण है शोक का, ग्लानि जु घिन को हेर ॥७७॥

अर्थ —सम्यक्त्व प्रकृति का नोकर्म छै आयतन (जिनेद्र, मुनीद्र, जिनवानी और इन तीनो के पूजक) हैं मिथ्यात्व का नोकर्म छै अनायतन (कुगुरु, कुदेव, कुशास्त्र और इन तीनो के पूजक') हैं सम्यक्‌मिथ्यात्व प्रकृति का नोकर्म आयतन और अनायतन दोनो मिले हुए है अनतानुवधीकपाय का नोकर्म छै अनायतन हैं अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान और सज्वलन कपाय के नोकर्म कुशास्त्र और कुसग है स्त्रीवेद का नोकर्म स्त्री का शरीर है पुरुषवेद का नोकर्म पुरुष का शरीर है नपुसकवेद का नोकर्म नपुसक का शरीर है हास्य का नोकर्म वहुरूपिया है रति का नोकर्म सुपुत्र है अरति का नोकर्म इष्ट का वियोग और अनिष्ट का सयोग है शोक का नोकर्म सुपुत्र का मरण है भय का नोकर्म सिंहादिक है और ग्लानि का नोकर्म घिनकार वस्तु है ॥७४–७७॥

आगे आयु और नामकर्म का नोकर्म दिखाते हैं ।

णिरयायुस्स अणिट्ठाहारो सेसाणमिट्ठमण्णादी ।
गदिणोकम्मं दव्व चउग्गदीणं हवे खेत्तं ॥७८॥

णिरयादीण गदीणं णिरयादी खेत्तयं हवे णियमा ।
जाईए णोकम्मं दव्विंदियपोग्गलं होदि ॥७९॥

एइंदियमादीणं सगसगदव्विंदियाणि णोकम्मं ।
देहस्स य णोकम्मं देहुदयजदेहखंधाणि ॥८०॥

ओरालियवेगुव्वियआहारयतेजकम्मणोकम्मं ।
ताणुदयजचउदेहा कम्मे विस्संचयं णियमा ॥८१॥

बंधणपहुदिसमण्णियसेसाणं देहमेव णोकम्मं ।
णवरि विसेसं जाणे सगखेत्तं आणुपुव्वीणं ॥८२॥

थिरजुम्मस्स थिरा थिररसरुहिरादीणि सुहजुगस्स सुहं ।
असुहं देहावयवं सरपरिणदपोग्गलाणि सरे ॥८३॥

अशन अनिष्टा नरक वय, शेष इष्ट आहार ।
चहुँगति के नोकर्म का, चहुँगति क्षेत्र निहार ॥७८॥

नरकादिक गति चार का, नरकादिक स्थान ।
इन्द्रिय का नोकर्म है, द्रव्येन्द्रिय का थान ॥७९॥

कहा इकेन्द्रिय आदि का, निज निज इन्द्रिय थान ।
अरु तन का नो कर्म है, देह उदय खंदान ॥८०॥

औदा विक्रिय हार अरु, तैज कर्म नोकर्म ।
चउ का उदय शरीर है, विस्रस उपचयकर्म ॥८१॥

बंधन आदिक शेष का, देह नोकर्म मान ।
आनुजु पूर्वी चार का, निज निज क्षेत्र पिछान ॥८२॥

थिरजोडा का थिराथिर, रस लोहू शुभ जोड़।
देह शुभाशुभ अवयवा, जस स्वर तस स्वर छोड़।८३।

अर्थ—नरक आयु का नोकर्म (सहायक) अनिष्ट आहार है शेप आयुओ का नोकर्म इष्ट आहार है। सामान्य से गतिनामकर्म का नोकर्म अपना २ नरकादिकगतियो का क्षेत्र है सामान्य से इन्द्रियो का नोकर्म द्रव्येन्द्रिय रूप पुद्गल रचना है। एकेन्द्रियादि पांच इन्द्रियो के नोकर्म अपनी-अपनी द्रव्येन्द्रिया है सामन्य से शरीर नामकर्म का नोकर्म शरीर नामकर्म के उदय से उत्पन्न अपने-अपने शरीर के स्कध रूप पुद्गल है औदारिक, विक्रियक, आहारक और तैजसशरीर का नोकर्म अपने-अपने उदय से प्राप्त हुई शरीरवर्गणा हैं कारण उन वर्गणाओ से ही शरीर वनता है कर्माण शरीर का नोकर्म विस्रसोपचय (कर्मरूप होने योग्य वर्गणा) परमाणु हैं। शरीर बन्धन-नामकर्म से लेकर जितनी पुद्गलविपाकी प्रकृति है और पूर्व कही हुई जीवविपा की प्रकृतियो मे से शेप जितनी जीवविपाकी प्रकृतिया है उनका का नोकर्म शरीर ही है और क्षेत्रविपाकी प्रकृतियो का नोकर्म अपना अपना क्षेत्र है किन्तु स्थिर नाम कर्म का नोकर्म अपने-अपने स्थान पर स्थिर रहने वाला रस रक्तादि है अस्थिर नामकर्म का नोकर्म अपने-अपने स्थान से जलायमान रस रक्तादि है शुभप्रकृति का नोकर्म शरीर के शुभ (सुन्दर) यवयव है अशुभ प्रकृति का नोकर्म शरीर के अशुभ (असुन्दर) यवयव है सुस्वरनामकर्म का नोकर्म सुस्वर रूप परणये पुद्गल परमाणु है और दु स्वरनामकर्म का नोकर्म दु स्वरूप परणये पुद्गल परमाणु है ॥७८-८३॥

आगे गोत्र और अतराय के नोकर्म दिखाते है।

उच्चस्सुच्चं देहं णीच णीचस्स होदि णोकम्मं।
दाणादिचउक्काणं विग्घगणगपुरिसपहुदी हु ॥८४॥

विरियस्स य णोकम्मं रुक्खाहारादिवलहरं दव्वं ।
इदि उत्तरपयडीणं णोकम्मं दव्वकम्मं तु ॥८५॥
णोआगमभावो पुण सगसगकम्मफलसंजुदो जीवो ।
पोग्गलविवाइयाणं णत्थि खु णोआगमो भावो ॥८६॥

ऊंच नोकर्म ऊंच तन, नीच नीच आधार ।
चउदानादिक नोकरम, गिर सरिता नर नार ॥८४॥
वीर्य नोकर्म वलहरा, सूखा भोजन मान ।
इमि उत्तर प्रकृतियों का, कहा नोकर्म जान ॥८५॥
जो जो फल जिस कर्म का, जीव भाव नोकर्म ।
मूर्त विपाकिन का नहीं, जीवभाव नोकर्म ॥८६॥

अर्थ—ऊचगोत्र का नोकर्म (सहायक) ऊंचकुल से उत्पन्न शरीर है नीचगोत्र का नोकर्म नीचकुल से उत्पन्न शरीर है तथा दान, लाभ, भोग और उपभोग अतराम का नोकर्म उन दानादिक के रोकनेवाले पर्वत, नदी, पुरुष और स्त्री आदि है । वीर्य अतराय कर्म का नोकर्म वलनाशक सूखा भोजन आदि है । इस प्रकार सब उत्तर प्रकृतियो का नोकर्म कहा है । जिस-जिस कर्म का जो-जो फल है उसका नोआगम-भावकर्म, (सहायक भाव) उस फल का भोगने वाला जीव का ही भाव है और पुद्गलविपाकी प्रकृतियो का भाव कर्म नही होता कारण उनके उदय होने पर भी जीवविपाकी प्रकृतियो की सहायता के विना साता जन्म सुखादिक की उत्पत्ति नही होती । इस प्रकार मूल और उत्तर प्रकृतियो के चार निक्षेप है ॥८४-८६॥

प्रकृतिकथन-अधिकार समाप्त



आगे पुनः मंगलाचरण दिखाते है ।

णमिऊण णेमिचंदं असहायपरक्कमं महावीरं ।
बंधुदयसत्तजुत्तं ओघादेसे थवं वोच्छं ॥८७॥

महावीर स्वाधीन वल, नेमिचन्द्र नमि पांहि ।
बंधादिक अधिकार को, वरणू गुणमग मांहि॥८७॥

अर्थ—जो पराधीनता से रहित पराक्रम के धारी हैं और महावीर है ऐसे श्री नेमिचन्द्र भगवान को मैं नमस्कार करके गुणस्थान और मार्गणास्थानो मे कर्मो का वध, उदय और सत्व को वतलाने वाले सामान्य और विशेष कथन को लिखता हूँ ॥८७॥

आगे कथन के प्रकार दिखाते है ।

सयलंगेक्कंगेक्कंगहियार सवित्थरं ससंखेवं ।
वण्णणसत्थं थयथुइधम्मकहा होइ णियमेण ॥८८॥

सर्व अंग इक अंग अरु, एक अंग अध्याय ।
लघु बहुवर्णन शास्त्र को, थव थुति धर्मकथाय॥८८

अर्थ—जिसमे सर्वांग का अर्थ विस्तार से अथवा सक्षेप से लिखा जाता है उस शास्त्र को स्तव कहते है । जिसमे एक अग का अर्थ विस्तार से अथवा सक्षेप से लिखा जाता है उस शास्त्र को स्तुति कहते है । जिसमे एक अग के एक ही अध्याय का अर्थ लिखा जाता है उस शास्त्र को वस्तु कहते है और जिसमे पुण्य पुरुषो का जीवनचरित्र लिखा जाता है उसको धर्मकथा कहते है ॥८८॥

आगे वध के भेद दिखाते है ।

पयडिट्ठिदिअणुभागप्पदेसबंधोत्ति चदुविहो बंधो ।
उक्कस्समणुक्कस्सं जहण्णमजहण्णगंति पुधं ॥८९॥

प्रकृति देश अनुभाग थिति, बंध भेद ये चार ।
वर अनवर लघु अनलघू, उनमें और विचार॥८९॥

अर्थ—वध चार प्रकार का होता है प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश। इनमे भी प्रत्येक के उत्कृष्ट (सबसे अधिक) अनुत्कृष्ट (उत्कृष्ट से कम) जघन्य (सबसे कम) और अजघन्य (जघन्य से अधिक) के भेद से चार-चार भेद है ॥८९॥

आगे उत्कृष्टादि मे भी भेद दिखाते है।

सादि अणादी धुव अद्धुवो य बंधो दु जेट्ठमादीसु।
णाणेगं जीवं पडि ओघादेसे जहाजोग्गं ॥९०॥

सादि नादि ध्रुव अध्रुवा, वर आदिक के भेष।
नाना या इक जीव में, लख सामान्य विशेष ॥९०॥

अर्थ—सादिवध (नवीन बंध) अनादिबध (प्राचीन बंध) ध्रुव-वंध (अतररहित वध) और अध्रुववध (अतरसहित वध) इन चारों वधों को नानाजीवो की अपेक्षा अथवा एक जीव की अपेक्षा से गुण-स्थान और मार्गणाओ मे यथास्थान लगाना योग्य है ॥९०॥

आगे गुणस्थानवालों के उत्कृष्टादि वध दिखाते है।

ठिदिअनुभागपदेसा गुणपडिवण्णेसु जेसिमुक्कस्सा।
तेसिमणुक्कस्सो चउव्विहोऽजहण्णेवि एसेव ॥९१॥

थिति अनुभाग प्रदेश वर, गुणवालों के होय।
उनके अन उत्कृष्ट हों, त्यों अनुलघु भी जोय ॥९१॥

अर्थ—मिथ्यादृष्टि आदि ऊपर-ऊपर के गुणस्थान वाले जीवो के जिन कर्मो का स्थिति, अनुभाग और प्रदेश वंध उत्कृष्ट होता है उनके उन ही कर्मो का स्थिति, अनुभाग और प्रदेश वंध अनुत्कृष्ट भी होता है वह सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुव के भेद से चार प्रकार का होता है। इसी तरह जिन कर्मो का स्थिति, अनुभाग और प्रदेश वध ऊपर-ऊपर के गुणस्थान वालो के जघन्य होता है उनके उन ही कर्मो का स्थिति, अनुभाग और प्रदेशवंध अजघन्य भी होता है वह सादि,

अनादि, ध्रुव और अध्रुव के भेद चार प्रकार का होता है ॥६१॥

आगे गुणस्थानो मे प्रकृति वध का नियम दिखाते है।

सम्मेव तित्थवधो आहारदुगं पमादरहिदेसु ।
मिस्सूणे आउस्स य मिच्छादिसु सेसवधोदु ॥९२॥

चउ से अठ तक तीर्थ अरु, आहारक दुक सात।
मिश्र न आयु बंध है, शेष वंध मिथ्यात ॥६२॥

अर्थ—तीर्थंकरप्रकृति का वध अविरत से लेकर अपूर्वकरण-गुणस्थान के छट्ठे भाग तक होता है आहारकशरीर और आहारक-आगोपाग का वंध अप्रमत्त से लेकर अपूर्वकरणगुणस्थान के छट्ठे भाग तक होत है मिश्रगुणस्थान मे और निर्वृत्तिअपर्याप्तअवस्था मे किसी आयु का वध नही होता और मिथ्यात्व आदि गुणस्थानो मे शेप सव प्रकृतियो का वध अपनी २ वधविछुत्ति तक होता है ॥६२॥

आगे तीर्थंकरप्रकृति के वध का नियम दिखाते है।

पढमुवसमिये सम्मे सेसतिये अविरदादिचत्तारि ।
तित्थयरवधपारभया णरा केवलिदुगंते ॥९३॥

प्रथम साम्य दृग शेष त्रय, अविरत से गुण सात।
तीर्थ बंध प्रारंभ नर, जिन श्रुतधर निकटात ॥६३॥

अर्थ—तीर्थंकरप्रकृति के वध का प्रारम्भ प्रथमोपशमसम्यकत्व, द्वितीयोपशमसम्यकत्व, क्षयोपशमसम्यक्त्व अथवा क्षायिकसम्यकत्व होने के पश्चात् अविरत से लेकर अप्रमत्तगुणस्थान वाले मनुष्य के केवली अथवा श्रुतकेवली के चरणकमलो के निकट होता है ॥६३॥

आगे गुणस्थानो मे अवधादि प्रकृतियो को दिखाते है।

तिय उणवीसं छत्तियतालं तेवण्ण सत्तवण्णं य ।
इगिदुगसट्ठी विरहिय सय तियउणवीससहिय वीससय ।९४

सत्तरसेक्कग्गसयं चउसत्तत्तरि सगट्ठि तेवट्ठी ।
बंधा णवट्ठवण्णा दुवीस सत्तारसेकोघे ॥९५॥
सोलस पणवीस णभं दस चउ छक्केक्क बंधवोछिण्णा ।
दुग तीस चदुरपुव्वे पण सोलस जोगिणो एक्को॥९६॥

त्रय उन्निस छालीस अरु, तेतालीस पिछान ।
त्रेपन सत्तावन तथा, इकसठि बासठि जान॥९४-१
अट्ठानव त्रय एकसौ, अरु इकसौ उन्निस ।
इकसौ उन्निस एकसौ, उन्निस इकसौबीस ।९४-२
इकसौ सत्रह एक सौ, इक रु चुहत्तर मान ।
सतहत्तर सरसठि तथा, त्रेसठि उनसठि जान।९५-१
अट्ठावन बाईस अरु, सत्रह इक इक एक ।
इस प्रकार से बंध क्रम, तेरहवें तक देख॥९५-२॥
सोल पचिस नभ दश चऊ, छै इक बंध विछेक ।
दो तिस चार अपूर्व में, पन सोलह जिन एक ॥९६॥

अर्थ—मिथ्यादृष्टि आदि १४ गुणस्थान मे क्रम से ३, १९, ४६, ४३, ५३, ५७, ६१, ६२, ९८, १०३, ११९, ११९, ११९ और १२० प्रकृतियों का बध नही होता ११७, १०१, ७४, ७७, ६७, ६३, ५९, ५८, २२, १७, १, १, १ और ० प्रकृतियो का बंध होता है तथा १६, २५, ०, १०, ४, ६, १ अपूर्वकरणगुणस्थान के सात भागों मे से प्रथम भाग मे २ द्वितीय भाग से पाचवे भाग तक ० छट्ठे भाग मे ३० सातवे भाग मे ४ अनिवृत्तिकरणगुणस्थान के पाच भागो मे क्रम से १-१ सूक्ष्मसापरायगुणस्थान मे १६, उपशांत और क्षीणमोहगुणस्थान मे ० सयोगगुणस्थान में १ और अयोगगुणस्थान के अत मे ० प्रकृ-

तियो की बधविछुत्ति होती है ॥९४-९६॥

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे आहारक २ तीर्थंकर प्रकृति १ इन ३ का वध न होने से शेष ११७ प्रकृतियो का वध होता है और १६ प्रकृतियो की वधविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त १९ प्रकृतियो का वध न होने से शेप १०१ प्रकृतियो का वध होता है और २५ प्रकृतियो की वधविछुत्ति होती है मिश्र-गुणस्थान मे उपरोक्त ४४ मनुष्यायु १ देवायु १ इन ४६ प्रकृतियो का वध न होने से शेष ७४ प्रकृतियो का बध होता है और वधविछुत्ति किसी प्रकृति की नही होती अविरतगुणस्थान मे उपरोक्त ४६ मे से तीर्थंकर १ मनुष्यायु १ देवायु १ के बिना ४३ प्रकृतियो का वध न होने से शेप ७७ प्रकृतियो का वध होता है और १० प्रकृतियो की वधविछुति होती है देशविरतगुणस्थान में उपरोक्त ५३ प्रकृतियो का वध न होने से शेष ६७ प्रकृतियो का वध होता है और ४ प्रकृतियो की वधविछुत्ति होती है प्रमत्तगुणस्थान मे उपरोक्त ५७ प्रकृतियो का वध न होने से ६३ प्रकृतियो का वघ होता है और ६ प्रकृतियो की वधविछुत्ति होती है अप्रमत्तगुणस्थान मे आहारक २ विना उपरोक्त ६१ प्रकृतियो का बध न होने से शेप ५९ प्रकृतियो का बध होता है और १ प्रकृति की बधविछुत्ति होती है अपूर्वकरणगुणस्थान के प्रथम भाग मे उपरोक्त ६२ प्रकृतियो का बध न होने से शेष ५८ प्रकृतियो का वध होता है और २ प्रकृतियो की बधविछुत्ति होती है छट्ठे भाग मे उपरोक्त ६४ प्रकृतियो का बध न होने से शेष ५६ प्रकृतियो का वध होता है और ३० प्रकृतियो की बधविछुत्ति होती है सातवे भाग मे उपरोक्त ९४ प्रकृतियो का बध न होने से शेष २६ प्रकृतियो का वंध होता है और ४ प्रकृतियो की वधविछुत्ति होती है अनिवृत्तिकरणगुणस्थान के प्रथम भाग मे उपरोक्त ९८ प्रकृतियो का वध न होने से शेष २२ प्रकृतियो का बध होता है और १ प्रकृति की वधविछुत्ति होती है द्वितीय भाग मे ९९ का बध न होने से शेष २१ का बध होता है और १ प्रकृति की बधविछुत्ति होती है तृतीय भाग मे १०० का बध न होने से शेष २० का बध होता है और १ प्रकृति की बधविछुत्ति होती है चतुर्थ

भाग मे १०१ प्रकृतियों का वध न होने से शेष १९ का वंध होता है और १ प्रकृति की बधविछुत्ति होती है पाचवे भाग में १०२ का वंध न होने से शेष १८ का बंध होता है और १ प्रकृति की बधविछुत्ति होती है सूक्ष्मसापरायगुणस्थान मे उपरोक्त १०३ प्रकृतियो का बंध न होने से शेष १७ प्रकृतियो का बध होता है और १६ प्रकृतियो की बंधविछुत्ति होती है उपशांतकपाय, क्षीणमोह और सयोगगुणस्थान मे उपरोक्त ११९ प्रकृतियों का वध न होने से शेप १ प्रकृति का वंध होता है और सयोगगुणस्थान के अंत मे एक साता प्रकृति की वधविछुत्ति होती है तथा अयोगगुणस्थान मे किसी प्रकृति का वध नही होता और न किसी प्रकृति की बधविछुत्ति होती है ॥९४-९६॥

अपूर्वकरण गुणस्थान तक की रचना :—

	मि०	सा०	मि०	अ०	दे०	प्र०	अ०	अ० १	६,	७
अ०	३	१९	४६	४३	५३	५७	६१	६२	६४	९४
व०	११७	१०१	७४	७७	६७	६३	५९	५८	५६	२६
वि०	१६	२५	०	१०	४	६	१	२	३०	४

अनिवृत्तिकरण से अंत तक की रचना :—

	अ०१	२,	३,	४,	५	सू०	उ०	क्षी०	स०	अ०
अ०	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	११९	११९	११९	१२०
व०	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१	१	१	०
वि०	१	१	१	१	१	१६	०	०	१	०

आगे मिथ्यात्व गुणस्थान की वधविच्छुत्ति दिखाते है ।

मिच्छत्तहुंडसंढाऽसंपत्तेयक्खथावरादावं ।
सुहमतियं वियलिंदिय णिरयदुणिरयाउग मिच्छे ।।९७।।

हुंड षंड अम नरक वय, फाटक थवरातप ।
इन्द्रिय चउ सूक्ष्म त्रयी, नरकदु अम में थाप ।।९७।।

अर्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान अत मे मिथ्यात्व १ हुन्डकसस्थान १ नपुसकवेद १ असप्राप्तासृपाटिकसहनन १ एकेन्द्रिय १ स्थावर १ आतप १ सूक्ष्म १ अपर्याप्त १ साधारण १ विकलेन्द्रिय ३ नरकगति २ और नरकायु १ इन १६ प्रकृतियो की वधविच्छुत्ति होती है ।।९७।।

आगे सासादन और मिश्रगुणस्थान की वधविच्छुत्ति दिखाते हैं ।

विदियगुणे अणथीणतिदुभगतिसंठाणसंहदिचउक्कं ।
दुग्गमणित्थीणीचं तिरियदुगुज्जोवतिरियाऊ ।।९८।।

अनचउ दुर्भग नींद त्रय, तिय कुचाल निचगोत ।
सँहननचउ संस्थान चउ, पशुदुक वय उद्योत।९८।

अर्थ—सासादनगुणस्थान के अत मे अनतानुबंधी ४ शयनगृद्धि ३ दुर्भग १ दुस्वर १ अनादेय १ न्यग्रोधादिसस्थान ४ वज्रनाराचादि-सहनन ४ अशुभचाल १ स्त्रीवेद १ नीचगोत्र १ तिर्यंचगति १ तिर्यंचगत्यानुपूर्वी १ उद्योत १ तिर्यंचायु १ इन २५ प्रकृतियो की बध विच्छुत्ति होती है तथा मिश्रगुणस्थान मे किसी भी प्रकृति की वधविच्छुत्ति नही होती है ।।९८।।

आगे अविरत और देशविरत की बधविच्छुति दिखाते हैं ।

अयदे विदियकसाया वज्जं ओरालमणुदुमणुवाऊ ।
देसे तदियकसाया णियमेणिह बधवोच्छिण्णा ।।९९।।

औदारिक दुक मनुष दुक, नरवय द्वितिय कषाय।
वज्रवृषभ चौथे विषें, पंचम तृतिय कषाय।९९।

अर्थ—अविरतगुणस्थान के अत मे अप्रत्याख्यान ४ वज्रवृषभ-नाराचसहनन १ औदारिकशरीर २ मनुष्यगति २ और मनुष्यायु १ इन १० प्रकृतियो की वधविछुत्ति होती है तथा देशविरतगुणस्थान मे प्रत्याख्यान ४ की बधविछुत्ति होती है ।।९९।।

आगे प्रमत्त और अप्रमत्त की वधविछुत्ति दिखाते है।

छट्ठे अथिरं असुहं असादमजसं य अरदिसोगं य।
अपमत्ते देवाऊणिट्ठवणं चेव अत्थित्ति ।।१००।।

अथिर अशुभ साता अयश, अरति शोक छै थान।
देव आयु इक विछुरती, प्रमतरहित गुण थान ।।१००

अर्थ—प्रमत्तगुणस्थान के अत मे अस्थिर १ अशुभ १ असाता-वेदनी १ अयश १ अरति १ और शोक १ इन ६ प्रकृतियां की बंध-विछुत्ति होती है तथा अप्रमत्तगुणस्थान के अत मे देवायु १ की वध-विछुत्ति होती है ।।१००।।

आगे अपूर्वकरण की वधविछुत्ति दिखाते है।

मरणूणम्हि णियट्टीपढमे णिद्दा तहेव पयला य।
छट्ठे भागे तित्थं णिमिणं सग्गमणपंचिंदी ।।१०१।।
तेजदुहारदुसमचउसुरवण्णागुरुचउक्कतसणवयं।
चरमे हस्सं य रदी भयं जुगुच्छा य बंधवोच्छिण्णा ।।१०२।।

निद्रा प्रचला प्रथम में, छटे, भाग निर्माण।
तैजस दुक आहार दुक, तीर्थ आदि संठान ।।१०१।।

वर्ण अगुरु सुर चार चउ, पंचेन्द्रिय शुभ चाल।
त्रस नव सप्तम हास्य रति, भय अरु ग्लानि सँभाल।१०२

अर्थ—अपूर्वकरणगुणस्थान के मरणअवस्था रहित प्रथम भाग मे निद्र १ और प्रचला १ की वधविछुत्ति होती है छट्ठे भाग मे तीर्थकरप्रकृति १ निर्माण १ शुभचाल १ पचेन्द्रिय १ तैजस २ आहारक २ समचतुरससस्थान १ देवगति ४ वर्ण ४ अगुरुलघु १ उपघात १ परघात १ उश्वास १ और त्रस ६ इन ३० प्रकृतियो की वधविछुत्ति होती है और सातवे भाग मे हास्य १ रति १ भय १ और ग्लान १ इन ४ प्रकृतियो की वधविछुत्ति होती है ॥१०१-१०२॥

आगे अनिवृत्तिकरणो मे विछुति दिखाते है।

पुरिसं चदुसंजलणं कमेण अणियट्टिपचभागेसु ।
पढम विग्घं दंसणचउजसउच्चं य सुहुमते ॥१०३॥

क्रम से नर संज्वलन चउ, अनिवृति के पन भाग।
दर्शन चउमति विघ्न यश, ऊंच सूक्ष्म क्रम भाग।१०३

अर्थ—अनिवृत्तिकरणगुणस्थान के पाच भागो मे क्रम से पुरुषवेद १ सज्वलन क्रोध १ मान १ माया १ और लोभ १ इन ५ प्रकृतियो की बधबिछुत्ति होती है और सूक्ष्मसापरायगुणस्थान के अत मे ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अतराय ५ यश १ और ऊचगोत्र १ इन १६ प्रकृतियो की बधविछुत्ति होती है ॥१०३॥

आगे सयोगगुणस्थान तक की वधविछुत्ति दिखाते है।

उवसंतखीणमोहे जोगिम्हि य समयियट्ठिदी सादं ।
णायव्वो पयडीणं वंधस्संतो अणंतो य ॥१०४॥

ग्यारम से तेरम तलक, साता थिति क्षण एक।
छूटे तेरम अंत में, चौदम बंध न देख ॥१०४॥

अर्थ–उपशातमोह, क्षीणमोह और सयोगगुणस्थान में एक समय की स्थिति वाले एक सातावेदनीकर्म का ही बध होता है और उसकी सयोगगुणस्थान के अत मे बधविच्छुत्ति होती है ॥१०४॥

आगे नरकगति मे अबधादि प्रकृतियो को दिखाते है।

ओघे वा आदेसे णारयमिच्छम्हि चारि वोच्छिण्णा।
उपरिम बारस सुरचउ सुराउ आहारयमबंधा ॥१०५॥
धम्मे तित्थं बंधदि वंसामेघाण पुण्णगो चेव।
छट्ठोत्ति य मणुवाऊ चरिमे मिच्छेव तिरियाऊ॥१०६॥
मिस्साविरदे उच्चं मणुवदुगं सत्तमे हवे बंधो।
मिच्छा सासणसम्मा मणुवदुगुच्चं ण वंधंत्ति॥१०७॥

नारकगुणवत् वहां पर, भ्रम में छूटें चार।
शेष जु बारह सुरचऊ, आयु न बंधाहार॥१०५॥
बँधे तीर्थ प्रथमा नरक, दो त्रय पूर्ण बंधाउ।
छट्ठे तक नर आयु अरु, सप्तम पशु की आयु॥१०६॥
सप्तम अविरत मिश्र में, बँधे मनुष दुक ऊंच।
मिथ्या अरु सासा विषें, बँधे न नर दुक ऊंच॥१०७॥

अर्थ–नरकगति मे अवधादि का सब कथन गुणस्थान समान है अतर केवल इतना है कि इन्द्रिय ४ स्थावर १ आताप १ सूक्ष्म १ अपर्याप्त १ साधारण १ नरकगति २ नरकायु १ देवगति ४ देवायु १ और आहारक २ इन १९ प्रकृतियो का बध न होने से शेष १०१ प्रकृतियो का बध होता है और मिथ्यात्वगुणस्थान मे मिथ्यात्व १ हुंडकसस्थान १ नपुंसकवेद १ और सृपाटिकसहनन १ इन ४ प्रकृतियों की वधविच्छुत्ति होती है ॥१०५॥

भावार्थ—नरकगयि के मिथ्यात्वगुणस्थान मे तीर्थंकरप्रकृति का

बंध न होने से शेप १०० प्रकृतियों का बंध होता है और उपरोक्त ४ प्रकृतियों की बंधविच्छुत्ति होती है सासादनगुणस्थान में उपरोक्त ५ प्रकृतियों का बंध न होने से शेप ९६ प्रकृतियों का बंध होता है और गुणस्थानसमान २५ प्रकृतियों की बंधविच्छुत्ति होती है मिश्र-गुणस्थान में उपरोक्त ३० और मनुष्यायु १ इन ३१ प्रकृतियों का बंध न होने से शेप ७० प्रकृतियों का बंध होता है और बंधविच्छुत्ति शून्य और अविरतगुणस्थान में मनुष्यायु और तीर्थंकर प्रकृति बिना उपरोक्त २९ प्रकृतियों का बंध न होने से शेप ७२ प्रकृतियों का बंध होता है और गुणस्थानसमान १० प्रकृतियों की बंधविच्छुत्ति होती है ॥१०५॥

अर्थ—प्रथमनरक की पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्था में तीर्थंकर प्रकृति का बंध होता है द्वितीय और तृतीयनरक की पर्याप्त अवस्था में तीर्थंकरप्रकृति का बंध होता है छट्ठेनरक तक मनुष्यायु का बंधहोता है और सातवेंनरक तक तिर्यंचायु का बन्ध होता है ॥१०६॥

भावार्थ—प्रथम नरक की पर्याप्तअवस्था का कथन नरकगति के समान है। और इसकी निर्वृत्तिअपर्याप्तअवस्था में मनुष्य और तिर्यं-चायु के बिना नरकगतिसमान ९९ प्रकृतियों का बंध होता है। उप-रोक्त ९९ में से मिथ्यात्वगुणस्थान में तीर्थंकर प्रकृति के बन्ध न होने से शेप ९८ प्रकृतियों का बन्ध होता है और मिथ्यात्वगुणस्थान में बन्धविच्छुत्ति होने वाली आदि की ४ और तिर्यंचायु बिना सासा-दनगुणस्थान की २४ इस प्रकार २८ प्रकृतियों की बंधविच्छुत्ति होती है और अविरतगुणस्थान में तीर्थंकर प्रकृति बिना उपरोक्त २८ प्रकृ-तियों का बन्ध न होने से शेप ७१ प्रकृतियों का बन्ध होता है और मनुष्यायु के बिना गुणस्थानसमान ९ प्रकृतियों की बंधविच्छुत्ति होती है, शेप गुणस्थान इस नरक की इस अवस्था में नहीं होते।

द्वितीय और तृतीयनरक की पर्याप्तअवस्था का कथन नरकगति-समान (१०१ प्रकृतियों का बंध) है।

नरकगति की रचना

	मि०	सा०	मि०	अ०
व्यु०	१	५	३१	२६
बं०	१००	९६	७०	७२
वि	४	२५	०	१०

प्रथम नरक की अपर्याप्त रचना

	मि.	अ.
अ०	१	२८
बं०	९८	७१
वि.	२८	९

चतुर्थ, पचम और छट्ठेनरक तक की पर्याप्त अवस्था का कथन तीर्थंकरप्रकृति के विना नरकगति समान (१०० प्रकृतियों का बंध) है और सातवेंनरक मे मनुष्यायु के विना ९९ प्रकृतियों का बंध होता है।

द्वितीय से लेकर छट्ठेनरक तक की निर्वृत्ति अपर्याप्त अवस्था में केवल मिथ्यात्वगुणस्थान होता है उसमे प्रथमनरक के निर्वृत्तिअपर्याप्तअवस्था के मिथ्यात्वगुणस्थान समान ९८ प्रकृतियो का बन्ध होता है।

अर्थ—सातवे नरक के मिथ्यात्व और सासादनगुणस्थान में मनुष्यगति आदि २ और ऊचगोत्र १ इन ३ का बंध नही होता किन्तु मिश्र और अविरतगुणस्थान मे उपरोक्त ३ प्रकृतियो का भी बन्ध होता है ॥१०७॥

भावार्थ—सातवें नरक के मिथ्यात्वगुणस्थान मे उपरोक्त ३ प्रकृतियों का बंध न होने से शेष ९६ प्रकृतियो का बंध होता है और गुणस्थान समान आदि की ४ और तिर्यचायु १ इसप्रकार ५ प्रकृतियों की बंधविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ५ प्रकृतियों का बंध न होने से ९१ प्रकृतियों का बन्ध होता है और तिर्यंचायु के विना गुणस्थान समान २४ प्रकृतियो की बंधविछुत्ति होती है मिश्रगुणस्थान मे मनुष्यगति २ और ऊंचगोत्र १ इन ३ के विना उपरोक्त २८ प्रकृतियो का बन्ध न होने से शेष ७० प्रकृतियों

तिरिये ओघो तित्थाहारूणो अविरदे छिदी चउरो।
उवरिमछण्हं च छिदी सासणसम्मे हवे णियमा ॥१०८॥
सामण्णतिरियपंचिंदियपुण्णगजोणिणीसु एमेव।
सुरणिरयाउ अपुण्णे वेगुव्वियछक्कमवि णत्थि ॥१०९॥

तिर्यग गति गुणथानवत्, अविरत छूटें चार।
सासा छूटे शेष छै, बन्ध न तीर्थाहार ॥१०८॥

पशु साधारण पचेन्द्रिय, पूर्ण पशुनि उस रीति
विक्रिय छै सुरनरक वय, अपर्याप्त नहिं प्रीति ॥१०८

अर्थ–तिर्यंचगति में अवधादि का सब कथन गुणस्थान समान है अतर केवल इतना है कि तीर्थंकरप्रकृति १ आहारक आदि २ इन ३ प्रकृतियो का वंध न होने से शेष ११७ प्रकृतियो का बन्ध होता है। और अविरतगुणस्थान मे वंधविछुत्ति होने वाली १० प्रकृतियों मे से आदि की ४ प्रकृतियों की वन्धविछुत्ति होतीहै और शेष ६ प्रकृतियो की वन्धविछुत्ति सासादनगुणस्थान मे ही हो जाती है ।।१०८।।

भावार्थ–तिर्यंचगति के मिथ्यात्वगुणस्थान मे अवन्धशून्य ११७ प्रकृतियो का बन्ध होता है और गुणस्थानसमान १६ प्रकृतियो की वन्ध विछुत्ति होती है, सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त १६ का वन्ध न होने से शेष १०१ प्रकृतियों का वन्ध होता है और गुणस्थान समान २५ तथा अविरतगुणस्थान मे वन्धविछुत्ति होने वाली अन्त की ६ इस तरह ३१ प्रकृतियो की वन्धविछुत्ति होती है मिश्रगुण-स्थान मे उपरोक्त ४७ देवायु १ इन ४८ का वन्ध न होने से शेष ६९ प्रकृतियो का वन्ध होता है और वन्धविछुत्ति शून्य अविरतगुणस्थान मे देवायु विना उपरोक्त ४७ प्रकृतियो का वन्ध न होने से शेष ७० प्रकृतियो का वन्ध होता है और अप्रत्याख्यान ४ की वन्धविछुत्ति होती है और देशविरतगुणस्थान मे उपरोक्त ५१ प्रकृतियो का वन्ध न होने से शेप ६६ प्रकृतियो का वन्ध होता है और प्रत्याख्यान ४ की वन्धविछुत्ति होती है।

इसी प्रकार अवंधादि का कथन समान्यतिर्यंच, पचेन्द्रिय तिर्यंच, पर्याप्तपचेन्द्रियतिर्यंच और तिर्यंचानी का है।

उपरोक्त चारो तिर्यंचो की निर्वृ त्तिअपर्याप्तअवस्था मे आयु ४ और नरकगति २ इस तरह ६ प्रकृतियो का वध न होने से शेप १११ प्रकृतियो का वन्ध होता है।

उपरोक्त १११ में से मिथ्यात्वगुणस्थान में देवगति की ४ प्रकृतियों का बन्ध न होने से शेष १०७ प्रकृतियों का बन्ध होता है, और नरकगति २ और नरकायु १ एवं उन ३ बिना गुणस्थानवत् १३ प्रकृतियों की बन्धव्युच्छित्ति होती है, सासादनगुणस्थान में उपरोक्त १७ प्रकृतियों का बन्ध न होने से शेष ९४ प्रकृतियों का बन्ध होता है और तिर्यंचायु के बिना गुणस्थानवत् २४ मनुष्यगति ४ और वज्रवृषभनाराचसंहनन १ इस तरह २९ प्रकृतियों की बन्धव्युच्छित्ति होती है और अविरत गुणस्थान में देवगति आदि ४ के बिना उपरोक्त ४२ प्रकृतियों का बन्ध न होने से शेष ६९ प्रकृतियों का बन्ध होता है और प्रत्याख्यान ४ की बन्धव्युच्छित्ति होती है।

तिर्यंचगति की रचना

	मि०	सा०	मि०	अ०	दे०
अ०	०	१६	४८	४७	५१
ब०	११७	१०१	६९	७०	६६
वि०	१६	३१	०	४	४

निर्वृत्यपर्याप्तमिश्रयोग की रचना

	मि०	सा०	अ०
अ०	४	१७	४२
ब०	१०७	९४	६९
वि०	१३	२९	४

लब्ध्यपर्याप्ततिर्यंच के उपरोक्त ११७ में से वैक्रियिक ६ देवायु १ और नरकायु १ इन ८ प्रकृतियों का बन्ध नहीं होने से १०९ प्रकृतियों का ही बन्ध होता है ॥१०८-१०९॥

आगे मनुष्यगति में बन्धादि प्रकृतियों को दिखाते हैं।

णिरियेव णरे णवरि हु तित्थाहारं च अत्थि एमेव ।
सामण्णपुण्णमणुसिणिणरे अपुण्णे अपुण्णेव ॥११०॥

नरगति तिर्यग तुल्य परि, बँधे तीर्थ आहार ।
नरवत् साधा पूर्ण तिय, ऊन ऊन निरधार॥११०॥

अर्थ—मनुष्यगति मे अबन्धादि का कथन तिर्यचगति के समान है अतर केवल इतना है कि यहाँ आहारक २ और तीर्थंकरप्रकृति १ इन ३ का भी बन्ध होने से १२० प्रकृतियो का बन्ध होता है।११०।

भावार्थ—मनुष्यगति के मिथ्यात्वगुणस्थान मे उपरोक्त ३ प्रकृतियो का बन्ध न होने से शेष ११७ प्रकृतियो का बन्ध होता है और गुणस्थानसमान १६ प्रकृतियो की बन्धविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त १९ प्रकृतियो का बन्ध न होने से शेष १०१ प्रकृतियों का बन्ध होता है और तिर्यंचगतिसमान ३१ प्रकृतियो की बन्धविछुत्ति होती है मिश्र गुणस्थान मे उपरोक्त ५० देवायु १ इन ५१ का बन्ध न होने से शेष ६९ प्रकृतियो का बन्ध होता है और बन्धविछुत्ति सून्य अविरतगुणस्थान मे देवायु १ और तीर्थंकर-प्रकृति १ विना उपरोक्त ४९ प्रकृतियो का वन्ध न होने से शेष ७१ प्रकृतियो का वन्ध होता है और अप्रत्याख्यान ४ की बन्धविछुत्ति होती है देशविरतगुणस्थान मे उपरोक्त ५३ प्रकृतियो का बन्ध न होने से शेष ६७ प्रकृतियो का बन्ध होता है और प्रत्याख्यान ४ की वन्धविछुत्ति होती है और प्रमत्तादिगुणस्थानों का कथन गुणस्थान समान है ॥११०॥

मनुष्यगति की रचना

	मि०	सा०	मि०	अ०	दे०	प्रमत्तादि
अ०	३	१९	५१	४९	५३	गु० स०
व०	११७	१०१	६९	७१	६७	गु० स०
वि०	१६	३१	०	४	४	गु० स०

इसी प्रकार सव कथन सामान्यमनुष्य, पर्याप्तमनुष्य और भाव-मनुष्यस्त्री का है ।

लब्धिअपर्याप्तमनुष्य का सब कथन तिर्यंच-लब्धि-अपर्याप्त के समान है ॥११०॥

आगे देवगति मे अबधादि प्रकृतियो को दिखाते है ।

णिरयेव होदि देवे आईसाणोत्ति सत्त वाम छिदी ।
सोलस चेव अबंधा भवणतिए णत्थि तित्थयरं ॥१११॥
कप्पित्थीसु ण तित्थं सदरसहस्सारगोत्ति तिरियदुगं ।
तिरियाऊ उज्जोवो अत्थि तदो णत्थि सदरचऊ ॥११२॥

सुरगति नारक वत् तदपि, छुटे सप्त ईसान ।
सोलह प्रकृति अबंध हैं, तीर्थ भवन त्रक हान ।१११।
कल्पवासिनी तीर्थ बिन, सहस्रार तक मान ।
पशु आयू उद्योत अरु, पशु दुक बंध पिछान ॥११२॥

अर्थ—देवगति मे अवधादि का कथन नरकगति के समान है अन्तर केवल इतना है कि सूक्ष्म १ अपर्याप्त १ साधारण १ विकलत्रय ३ विक्रियक ६ नरकायु १ देवायु १ और आहारक २ इन १६ का बध न होने से शेष १०४ प्रकृतियो का वन्ध होता है और मिथ्यात्व-गुणस्थान मे मिथ्यात्व १ हुँडकसस्थान १ नपुन्सकवेद १ असप्राप्तसृ-पाटिक-सहनन १ एकेन्द्रिय १ स्थावर १ और आताप १ इन ७ प्रकृतियो की बधविछुत्ति होती है ।१११-११२॥

भावार्थ—देवगति के मिथ्यात्वगुणस्थान मे तीर्थंकरप्रकृति १ का वध न होने से शेप १०३ का वध होता है और उपरोक्त ७ प्रकृतियो की वधविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ८ प्रकृतियो का वध न होने से शेप ९६ प्रकृतियो का वध होता है और गुणस्थान समान २५ प्रकृतियो की बधविछुत्ति होती है मिश्रगुणस्थान मे उपरोक्त ३३ और मनुष्यायु १ इसप्रकार ३४ प्रकृतियो का वध

अर्थ—आनत से लेकर नवग्रीवक तक का सब कथन प्रथम नरक के समान है अन्तर केवल इतना है कि यहाँ तिर्यचगति २ तिर्यचायु १ उद्योत १ इस तरह ४ प्रकृतियो का वध न होने से शेप ९७ प्रकृतियो का होता है।

इनकी निर्वृ त्तिअपर्याप्तअवस्था का सब कथन मनुष्यायु के बिना उपरोक्त समान है।

आनत से नवग्रीवक तक की रचना।

	मि०	सा०	मि०	अ०
अ०	१	५	२७	२५
व०	९६	९२	७०	७२
वि०	४	२१	०	१०

उनकी निर्वृ त्तिअवस्था की रचना

	अ०	सा०	अ०
अ०	१	५	२५
व०	९५	९१	७१
वि०	४	२१	९

अर्थ—नव अनुदिश से लेकर सर्वार्थसिद्धविमान तक मे एक अविरतगुणस्थान समान ७२ प्रकृतियो का वन्ध होता है और इनकी निर्वृ त्ति अपर्याप्त अवस्था मे मनुष्यायु विना उपरोक्त समान ७१ प्रकृतियो का वध होता है।

अनुदिशादि

	अ०	अ०
अ०	०	०
व०	७२	७१
वि०	०	०

भवनवासी आदि की रचना

	मि०	सा०	मि०	अ०
अ०	०	७	३३	३२
व०	१०३	९६	७०	७१
वि०	७	२५	०	१०

उनकी अपर्याप्त अवस्था

	मि०	स०
अ०	०	७
व०	१०१	९४
वि०	७	२४

कैसे हो सकता है इस कारण मिथ्यात्वगुणस्थान मे आयु का बध और बधविछुत्ति होती है ।।११३।।

एकेन्द्रिय की रचना

	मि	सा.
अ०	०	१५
ब०	१०६	६४
वि	१५	२६

दोइ०र०

मि०	सा०
०	१५
१०६	६४
१५	२६

ते०इ०र०

मि०	सा०
०	१५
१०६	६४
१५	२६

चौइ०र०

मि०	सा०
०	१५
१०६	६४
१५	२६

आगे पचेन्द्रिय आदि मे अबधादि प्रकृतियो को दिखाते है ।

पंचेंदियेसु ओघं एयक्खे वा वणप्फदीयंते ।
मणुवदुगं मणुवाऊ उच्चं ण हि तेउवाउम्हि ।।११४।।

सकला गुणवत् थावरा, एकेन्द्रियवत् पांहि ।
नरदुक नर वय ऊंच ये, अग्नि वाउ के नांहि ।।११४।।

अर्थ––पचेन्द्रिय मे अबधादि का कथन गुणस्थान समान है । पचेन्द्रियनिर्वृत्तिअपर्याप्त का कथन मनुष्यनिर्वृत्ति अपर्याप्त के समान है अन्तर केवल इतना है कि औदारिक २ मनुष्यगति २ और वज्र-वृषभनाराचसंहनन १ इन ५ प्रकृतियो की बधविछुत्ति वहाँ ‹ ासादन गुणस्थान मे कही थी यहाँ अविरतगुणस्थान मे उनकी बंध विछुत्ति है ।।११४।।

पचेन्द्रियलब्धिअपर्याप्त का सब कथन मनुष्य-लब्धिअपर्याप्त के समान है ।

पृथ्वी, जल, साधारण और प्रत्येक वनस्पतिकाय का सब कथन एकेन्द्रिय के समान है और अग्निकाय और पवनकाय के जीवो का का कथन पृथ्वीकाय के समान है अन्तर केवल इतना है कि इनके

पचेन्द्रिय की रचना

	मि०	सा०	मिश्रादि
अ०	३	१६	गु० स०
ब	११७	१०१	,,
वि०	१६	२५	,,

निर्वृत्तिअपर्याप्तपंचेन्द्रिय की रचना

	मि०	सा०	अ०	प्र०	स०
अ०	५	१८	३७	५०	१११
ब०	१०७	९४	७५	६२	१
व्यु०	१३	२४	१३	६१	१

मनुष्यगति २ मनुष्यायु १ और ऊँचगोत्र १ इन ४ प्रकृतियों का बंध न होने से १०५ प्रकृतियों का बंध होता है। और गुणस्थान १ मिथ्यात्व ही है।

आगे अग्नि, पवनादि के सासादन का अभाव दिखाते हैं।

ण हि सासणो अपुण्णे साहारणसुहुमगे य तेउदुगे।
ओघं तस मणवयणे ओराले मणुवगइभंगो ॥११५॥

ऊन सूक्ष्म साधारणा, अग्नि पवन नहिं सास।
त्रस मनवच गुण थान वत्, औदा नरवत् खास॥११५॥

अर्थ—लब्धिअपर्याप्त, साधारणवनस्पति, अग्नि, पवनकाय और सब सूक्ष्म जीवों के सासादन गुणस्थान नहीं होता।

त्रसकाय, मन और वचनयोग वाले जीवों का कथन गुणस्थान समान है और औदारिककाययोग का कथन मनुष्यगति के समान है।

आगे औदारिक मिश्र में अबंधादि प्रकृतियों को दिखाते हैं।

ओराले वा मिस्से ण सुरणिरयाउहारणिरयदुगं।
मिच्छदुगे देवचओ तित्थं ण हि अविरदे अत्थि ॥११६॥

पण्णारसमुनतीसं मिच्छदुगे अविरदे छिदी चउरो।
उवरिमपणसट्ठीवि य एक्कं सादं सजोगिम्हि ॥११७॥

मिश्र औद वत् नरक दुक, सुख दुख वय आहार ।
आदि दु में सुर चउ न जिन, चौथे बँधे विचार ॥११६॥
पन्द्रह उनतिस अम ससा, अविरत छूटे चार ।
आगे की पेंसठि छुटें, साता जिन में टार ॥११७॥

अर्थ—औदारिकमिश्रकाययोग का कथन औदारिककाययोग के समान है अन्तर केवल इतना है कि देवायु १ नरकायु १ आहारक २ नरकगति २ इन ६ प्रकृतियो का बध न होने से ११४ प्रकृतियो का बध होता है आदि के २ गुणस्थानो मे देव ४ और तीर्थकर १ का बध नही होता अविरत गुणस्थान मे होता है ।

११४ मे से मिथ्यात्वगुणस्थान मे देवगति ४ तीर्थकर १ इन ५ प्रकृतियो का बध न होने से शेष १०९ प्रकृतियों का बध होता है और एकेन्द्रिय जीव के समान १५ प्रकृतियो की बधविछुत्ति होती है तथा सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त २० प्रकृतियो का बध न होने से शेष ९४ प्रकृतियों का बध होता है और निर्वृ तिअपर्याप्ततिर्यंच के समान २९ प्रकृतियों की बधविछुत्ति होती है अविरतगुणस्थान मे देवगति ४ और तीर्थंकरप्रकृति १ बिना उपरोक्त ४४ प्रकृतियो का बध न होने से शेष ७० प्रकृतियों का बध होता है और अप्रत्याख्यान ४ प्रत्याख्यान ४ प्रमत्त की ६ आहारक २ विना अपूर्वकरण की ३४ अनिवृत्तिकरण की ५ सूक्ष्मसांपराय की १६ इस तरह ६९ प्रकृतियो की बधविछुति होती है और सयोगगुणस्थान मे उपरोक्त ११३ का बध न होने से एक साता का बध होता है और उसी साता की बधविछुत्ति होती है ।

औदारिकमिश्रकाययोग दो प्रकार का होता है ।

निर्वृ त्ति और लब्धि जिसमे निर्वृ त्तिअपर्याप्तऔदारिकमिश्र काययोग का सब कथन मनुष्य और तिर्यंचायु के बिना उपरोक्त कथन समान है और लब्धिअपर्याप्तऔदारिकमिश्रकाययोग का कथनएकेन्द्रिय के समान है ॥११६–११७॥

औदारिक की रचना

	मि०	सा०	मिश्रादि
अ०	३	१९	म० व०
ब०	११७	१०१	म० व०
वि०	१६	३१	म० व०

औदारिक मिश्र योग की रचना

	मि	सा०	अ०	स०
अ	५	२०	४४	११३
ब०	१०९	९४	७०	१
वि.	१५	२९	६९	१

आगे वैक्रियक और आहारक में बन्धादि दिखाते हैं।

देवे वा वेगुव्वे मिस्से णरतिरियआउगं णत्थि ।
छट्ठगुणंवाहारे तम्मिस्से णत्थि देवाऊ ॥११८॥

विक्रिय सुर वत् मिश्र में, बँधे न नर पशु आयु ।
छट्ठेवत् आहार है, मिश्र न सुर की आयु ॥११८॥

णवरि य सव्वुवसम्मे णरसुरआऊणि णत्थि णियमेण ।
मिच्छस्संतिम णवयं बारं ण हि तेउपम्मेसु ॥१२०॥

सुक्के सदरचउक्कं वामंतिमबारसं य ण व अत्थि ।
कम्मेव अणाहारे बंधस्संतो अणंतो य ॥१२१॥

कर्माण औदा मिश्रवत्, बंध दु न छिति नव दृष्टि ।
वेदा से आहार तक, गुणस्थान वत् इष्ट ॥११९॥
अंतर उपशम दोय में, नर सुर आयु न मान ।
पीत पद्म भ्रम अंतिमा, नव बारह मत जान ॥१२०॥
शुक्ल विषें सत्तार चउ, बारह भ्रम की अंत ।
अनाहार में कर्म वत्, बंध विछुत्ती संत ॥१२१॥

अर्थ—कार्माणकाययोग का कथन औदारिकमिश्रकाययोग के समान है अतर केवल इतना है कि मनुष्य और तिर्यंचायु के विना ११२ प्रकृतियो का बंध होता है और अविरतगुणस्थान मे मनुष्यायु के विना गुणस्थान समान ९ प्रकृतियो की बंधविछुत्ति होती है ।

११२ मे से मिथ्यात्वगुणस्थान मे देवगति ४ और तीर्थंकर-प्रकति १ का बंध न होने से शेष १०७ प्रकृतियों का बंध होता है और नरकगति २ और नरकायु १ के विना गुणस्थान समान १३ प्रकृतियो की बंधविछुत्ति होती है, सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त १८ प्रकृतियो का बंध न होने से शेष ९४ प्रकृतियो का बंध होता है और तिर्यंचायु के विना गुणस्थान समान २४ प्रकृतियो की बंधविछुत्ति होती है अविरतगुणस्थान मे देवगति ४ देवायु १ विना उपरोक्त ३७ प्रकृतियों का बंध न होने से शेष ७५ प्रकृतियो का बंध होता है और मनुष्यायु के विना गुणस्थान समान ९ देशविरत की ४ प्रमत्त की ६ आहारक २ विना अपूर्वकरण की ३४ अनिवृत्तिकरण की ५ सूक्ष्मसांपरायगुणस्थान की १६ इस तरह ७४ प्रकृतियो की बंध-

सादि अणादी ध्रुव अद्धुवो य बंधो दु कम्मछक्कस्स ।
तदियो सादियसेसो अणादिधुवसेसगो आऊ ॥१२२॥

सादि नादि ध्रुव अध्रुवा, बंध कर्म छै लादि ।
सादि बंध नहिं वेदनी, आयु नादि ध्रुव वादि ॥१२२॥

अर्थ—छै कर्मो का प्रकृतिवध चार प्रकार का होता है सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुव। वेदनीकर्म का प्रकृतिवध तीन प्रकार का होता है अनादि, ध्रुव और अध्रुव तथा आयुकर्म का प्रकृतिवध दो प्रकार का होता है सादि और अध्रुव ॥१२२॥

आगे उपरोक्त वधो का स्थान दिखाते है।

सादी अबंधबंधे सेढिअणारूढगे अणादी हु ।
अभव्यसिद्धम्हि धुवो भवसिद्धे अद्धुवो बंधो ॥१२३॥

सादि वही रुक कर बँधे, बँधता रहे अनादि ।
अभवि जीव के ध्रुव बँधे, भवि अध्रुव ही लादि ।१२३॥

सादिवध—जिस कर्म का बध रुक कर फिर उसका वध होना प्रारम्भ हो जावे उसको सादि वध कहते है जैसे सूक्ष्मसापरायगुणस्थान में ज्ञानावरणीकर्म का वध होता था वह उपशातमोह गुणस्थान मे रुक जाता है और फिर सूक्ष्मसापरायगुणस्थान मे लोटने से वँधने लगता है।

अनादिवध—जिस कर्म का वध रुका नही हो और होता ही आ रहा हो उसको अनादि वध कहते है जैसे सूक्ष्मसापराय गुणस्थान तक ज्ञानावरणी का वध होता ही रहता है।

ध्रुववध—जिस वध का आदि और अन्त न हो उसको ध्रुववंध कहते है जैसे अभव्य का वध,

अध्रुववन्ध—जिस बध का आदि और अत हो उसको अध्रुव-बध कहते है जैसे भव्य जीव का बध ।।१२३।।

आगे ध्रुव, अध्रुव प्रकृतियो मे सादि अनादि बध दिखाते है।

घादितिमिच्छकसाया भयतेजगुरुदुगणिमिणवण्णचओ।
सत्तेतालधुवाणं चदुधा सेसाणय तु दुधा ।।१२४।।

तैज अगुरु भय दुक वरण, अम कषाय निर्माण।
घातीत्रय ध्रुव चार विधि, शेष दु विधि पहिचान १२४।

अर्थ—ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ६ अतराय ५ मिथ्यात्व १ कपाय १६ भय १ ग्लान १ तैजसशरीर १ कार्माणशरीर १ अगुरुलघु १ उपघात १ वर्णादि ४ और निर्माण १ ये ४७ प्रकृतियाँ ध्रुव है कारण इनकी बधविछुत्ति न हो तवतक चारो प्रकार का बध सदा होता रहता है और शेप ७३ प्रकृतिया अध्रुव है इन का सादि और अध्रुव दो प्रकार का ही बध होता है ।।१२४।।

आगे विरोधी और अविरोधी प्रकृतियो को दिखाते है।

सेसे तित्थाहारं परघादचउक्क सव्वआऊणि।
अप्पडिवक्खा सेसा सप्पडिवक्खा हु वासट्ठी ।।१२५।।

शेषों में परघात चउ, सब वय तीर्थाहार।
अविरोधी बासठि वचीं, सर्व विरोधी भार ।।१२५।।

अर्थ—उपरोक्त ४७ प्रकृतियो मे से जो ७३ प्रकृतिया शेष रहती है उनमे से तीर्थकर १ आहारकशरीर १ आहारकओगोपाग १ पर-घात १ आताप १ उद्योत १ श्वासोश्वास १ और आयु ४ ये ११ प्रकृतियाँ अविरोधी है शेष ६२ प्रकृतिया विरोधी हैं ।।१२५।।

विरोधीप्रकृति—जिस उत्तर प्रकृति के बध के समय जिस अन्य

प्रकृति का वध न हो वह प्रकृति उस प्रकृति की विरोधी है जैसे साता को असाता और असाता को साता विरोधी है।

अविरोधीप्रकृति— जिस उत्तरप्रकृति के बध के समय अन्य किसी प्रकृति का वध न रुके उस प्रकृति को अविरोधी प्रकृति कहते है जैसे तीर्थकर-प्रकृति की विरोधी कोई प्रकृति नही है।

आगे प्रकृतियो का निरतर बँधने का काल दिखाते है।

अवरो भिण्णमुहुत्तो तित्थाहाराण सव्वआऊणं।
समओ छावट्ठीणं बंधो तम्हा दुधा सेसा ॥१२६॥

लघु थिति भिन्न मुहुर्त्त है, आयु तीर्थाहार।
छासठि का इक समय है, दोविधि बंध सँभार ॥१२६॥

अर्थ—तीर्थकर १ आहारकशरीर १ आहारकआगोपाग १ और आयु ४ इन ७ अध्रुव प्रकृतियो का निरतर वध होने का काल अन्तर्मुहुर्त्त है और शेष ६६ अध्रुव प्रकृतियो का एक समय है इसकारण इन ७३ प्रकृतियो का प्रकृत्तिबध सादि और अध्रुव के भेद से दो प्रकार का है सो सिद्ध हुआ ॥१२६॥

आगे मूल प्रकृतियो का उत्कृष्ट स्थिति बध दिखाते है।

तीसं कोडाकोडी तिघादितदियेसु वीस णामदुगे।
सत्तरि मोहे सुद्धं उवही आयुस्स तेतीसं ॥१२७॥

कोडा कोडी तीस दधि, विघ्न आदि त्रय दीस।
बीस शेष सत्तर सुरा, आयू दधि तेतीस ॥१२७॥

अर्थ—ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, वेदनी और अतरायकर्म का उत्कृष्टस्थितिवध ३० कोडाकोडीसागर का है नाम और गोत्रकर्म का उत्कृष्टस्थितिवध २० कोडाकोडीसागर का है मोह कर्म का

उत्कृष्टस्थितिवध ७० कोडाकोड़ीसागर का है और आयुकर्म का उत्कृष्टस्थितिवध ३३ सागर का है ॥१२७॥

आगे उत्तर प्रकृतियो की उत्कृष्ट स्थिति दिखाते हैं।

दुक्खतिघादीणोघ सादिच्छीमणुदुगे तदद्धं तु ।
सत्तरि दंसणमोहे चरित्तमोहे य चत्तालं ॥१२८॥
संठाणसंहदीणं चरिमस्सोघं दुहीणमादित्ति ।
अट्ठरसकोडाकोडी वियलाणं सुहुमतिण्ह य ॥१२९॥
अरदीसोगे संढे तिरिक्खभयणिरयतेजुरालदुगे ।
वेगुव्वादावदुगे णीचे तसवण्णअगुरुतिचउक्के ॥१३०॥
इगिपंचेंदियथावरणिमिणासग्गमणअथिरछक्काण ।
वीसं कोडाकोडीसागरणामाणमुक्कस्सं ॥१३१॥
हस्सरदिउच्चपुरिसे थिरछक्के सत्थगमणदेवदुगे ।
तस्सद्धमंतकोडाकोडी आहारतित्थयरे ॥१३२॥
सुरणिरयाऊणोघं णरतिरियाऊण तिण्णि पल्लाणि ।
उक्कस्सट्ठिदिबंधो सण्णीपज्जत्तगे जोगे १३३॥

दुख त्रय घाती मूलवत्, नर दुक सुख तिय आध।
सत्तर दर्शन मोह की, चालिस चारित साध॥१२८॥
हुंडक फाटक मूलवत्, शेष दोय दो हीन।
विकल सूक्ष्म त्रय अठारह, कोडा कोडी चीन। १२९।
तैज औद विक्रिय नरक, ताप अरति भय जोट।
वर्ण अगुरु त्रय चौकडी, षंड नीच पशु जोट॥१३०॥

इकपंचेन्द्रिय थावरा, अरु कुचाल निर्माण ।
अथिर छहो थिति सागरा, वीस कोटि कोटान ॥१२१॥
थिर छै पुरुष सुचालरति, हास्य ऊंच सुरजोट ।
आधी तीर्थाहार की, अंतः कोटा कोट ॥१२२॥
सुर नारक वय मूलवत्, नर पशु वय त्रय पल्य ।
थिती बंध उत्कृष्ट यह, समन पूर्ण के चल्य ॥१२३॥

अर्थ—असातावेदनी १ ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ९ और अंतराय ५ इन २० प्रकृतियों का उत्कृष्टस्थितिबंध ३० कोडाकोडीसागर का है सातावेदनी १ स्त्रीवेद १ मनुष्यगति १ मनुष्य-गत्यानुपूर्वी १ इन ४ प्रकृतियों का उत्कृष्टस्थितिबंध १५ कोडाकोडीसागर का है मिथ्यात्व १ का उत्कृष्टस्थितिबंध ७० कोडाकोडीसागर का है १६ कषायों का उत्कृष्टस्थितिबंध ४० कोडाकोडीसागर का है हुंडकसंस्थान १ स्फाटिकसंहनन १ का उत्कृष्टस्थितिबंध २० कोडाकोडीसागर का है वामनसंस्थान १ और कीलकसंहनन का १ उत्कृष्टस्थितिबंध १८ कोडाकोडीसागर का है कुब्जकसंस्थान १ और अर्धनाराचसंहनन १ का उत्कृष्टस्थितिबंध १६ कोडाकोडीसागर का है स्वातिसंस्थान १ और नाराचसंहनन का उत्कृष्टस्थितिबंध १४ कोडाकोडीसागर का है न्यग्रोधपरि-मंडलसंस्थान १ और वज्रनाराचसंहनन १ का उत्कृष्ट-स्थितिबंध १२ कोडाकोडीसागर का है समचतुरस्रसंस्थान १ और वज्र-वृषभनाराचसंहनन १ का उत्कृष्टस्थितिबंध १० कोडाकोडीसागर का है दोइन्द्रिय १ तीनइन्द्रिय १ चारइन्द्रिय १ सूक्ष्म १ अपर्याप्त १ और साधारण १ इन छै प्रकृतियों का उत्कृष्टस्थितिबंध १८ कोडाकोडी-सागर का है अरति १ शोक १ नपुंसकवेद १ तिर्यंचगति १ तिर्यंच-गत्यानुपूर्वी १ भय १ ग्लानि १ नरकगति १ नरकगत्यानुपूर्वी १ तैजसशरीर १ कार्माणशरीर १ औदारिकशरीर १ औदारिक-

आगोपाग १ विक्रियकशरीर १ विक्रियकआगोपाग १ आताप १ उद्योत १ नीचगोत्र १ त्रस १ बादर १ पर्याप्त १ प्रत्येक १ वर्ण ४ अगुरुलघु १ उपघात १ परघात १ श्वासोश्वास १ एकेन्द्रिय १ पचेन्द्रिय १ स्थावर १ निर्माण १ कुचाल १ अस्थिर १ अशुभ १ दुर्भग १ दुस्वर १ अनादेय १ और अयश १ इन ४१ प्रकृतियो का उत्कृष्टस्थितिबध २० कोडाकोडीसागर का है हास्य १ रति १ ऊचगोत्र १ पुरुपवेद १ स्थिर १ शुभ १ सुभग १ सुस्वर १ आदेय १ यश १ शुभचाल १ देवगति १ और देवगत्यानुपूर्वी १ इन १३ प्रकृतियो का उत्कृष्टस्थितिबध १० कोडा कोडी सागर का है आहारकशरीर १ आहारकआगोपाग १ और तीर्थंकर १ इन ३ प्रकृतियो का उत्कृष्टस्थितिबध अत कोडाकोडीसागर का है नरक और देवायु का उत्कृष्ट स्थिति बध ३३ सागर का है मनुष्य और तिर्यंचायु का उत्कृष्ट स्थिति वध ३ पल्य का है यह सैनी पर्याप्त के ही हो सकता है ॥१२८–१३३॥

आगे उत्कृष्ट बध का कारण दिखाते है।

सव्वट्ठिदीणमुक्कस्सओ दु उक्कस्ससंकिलेसेण।
विवरीदेण जहण्णो आउगतियवज्जियाणं तु ॥१३४॥

सर्व विषें उत्कृष्ट थिति, वर कषाय से होय।
अरु जघन्य विपरीत से, त्रय वय उलटी जोय ॥१३४॥

अर्थ—तिर्यंच, मनुष्य और देवायु को छोडकर शेष ११७ प्रकृतियो का उत्कृष्टस्थितिबध तीव्रकषाय से होता है और इनका जघन्यस्थितिबध मदकषाय से होता हैं किन्तु उपरोक्त तीन आयुओ का नियम उनसे विपरीत है यह कि तीव्रकषाय से जघन्यस्थितिबध होता है और मद कषाय से उत्कृष्टस्थितिबध होता है ॥१३४॥

आगे उत्कृष्टस्थितिबध के पात्र दिखाते हैं।

सव्वुक्कस्सठिदीणं मिच्छाइट्ठी दु बंधगो भणिदो ।
आहारं तित्थयरं देवाउं वा विमोत्तूण ।।१३५।।

सर्व विषैं उत्कृष्ट थिति, बाँधे मिथ्या दृष्टि ।
सुर त्रय तीर्थाहार को, बाँधे सम्यक् दृष्टि ।।१३५।।

अर्थ—देवायु १ आहारक शरीर १ आहारक अगोपाग १ और तीर्थकरप्रकृति १ को छोडकर शेष ११६ प्रकृतियो का उत्कृष्टस्थिति-बंध मिथ्यादृष्टि जीव करता है और उपरोक्त चार प्रकृतियो का उत्कृष्टस्थितिबध सम्यक्दृष्टि जीव करता है ।।१३५।।

आगे उपरोक्त आशय को स्पष्ट दिखाते है ।

देवाउगं पमत्तो आहारयमप्पमत्तविरदो दु ।
तित्थयरं य मणुस्सो अविरदसम्मो समज्जेइ ।।१३६।।
णरतिरिया सेसाउं वेगुव्वियछक्कवियलसुहुमतियं ।
सुरणिरया ओरालियतिरियदुगुज्जोवसंपत्तं ।।१३७।।
देवा पुण एइंदियआदावं थावरं य सेसाणं ।
उक्कस्ससंकिलिट्ठा चदुगदिया ईसिमज्झिमया ।।१३८।।

देव आयु को प्रमत धर, आहारक गुण सात ।
तीर्थंकर बांधे पुरुष, अविरत दृष्टी ख्यात ।।१३६।।
विकल सूक्ष्म त्रय शेष त्रय, विक्रिय छै नर ढोर ।
औदा पशु दुक फाटका, उद्योतहि सुर और ।।१३७।।
एकेन्द्रिय आताप अरु, थावर को सुर जीव ।
शेषों को संक्लेश वर, मध्यम चहुँगति जीव ।।१३८।।

अर्थ—देवायु का उत्कृष्टस्थितिवध प्रमत्तगुणस्थान वाला मुनि करता है आहारकशरीर और आहारकआगोपाग का उत्कृष्ट-स्थितिवध अप्रमतगुणस्थान वाला मुनि करता है तीर्थकरप्रकृति का उत्कृष्टस्थितिवध अविरतगुणस्थान वाला मनुष्य करता है नर-कायु १ तिर्यंचायु १ मनुष्यायु १ नरकगति १ नरक-गत्यानुपूर्वी १ देवगति १ देवगत्यानुपूर्वी १ विक्रियक-शरीर १ विक्रियकआगो-पाग १ दो इन्द्रिय १ तीनइन्द्रिय १ चारइन्द्रिय १ सूक्ष्म १ अपर्याप्त १ साधारण १ इन १५ प्रकृतियो का उत्कृष्टस्थितिबध मनुष्य और तिर्यच करते हैं औदारिकशरीर १ औदारिकअगोपाग १ तिर्यंच-गति १ तिर्यंचगत्त्यानुपूर्वी १ उद्योत १ और स्फाटिकसहनन १ इन छै प्रकृतियो का उत्कृप्टस्थितिवध देव और नारकी मिथ्याहप्टि करते है एकेन्द्रिय १ आताप १ स्थावर १ इन ३ प्रकृतियो का उत्कृष्टस्थिति-वध मिथ्याहृष्टि देव करते है और शेष ६२ प्रकृतियो का उत्कृष्ट-स्थितिबध तीव्र और मध्यकषाय वाले चारो गति के जीव करते हैं ॥१३६-१३८॥

आगे मूल प्रकृतियो का जघन्यस्थितिवध दिखाते हैं ।

वारस य वेयणीये णामे गोदे य अट्ठ य मुहुत्ता ।
भिण्णमुहुत्तं तु ठिदी जहण्णयं सेसपचण्हं ॥१३९॥

बारह मुहूर्त वेदनी, नाम गोत्र की आठ ।
शेष कर्म की जघन थिति, अन्तर्मुहुर्त वाठ ॥१३९॥

अर्थ—वेदनी कर्म का जघन्यस्थितिवध १२ मुहुर्त्त का है और शेष कर्मों का जघन्यस्थितिबध अन्तर्मुहुर्त्त का होता है ॥१३९॥

आगे उत्तर प्रकृतियो की जघन्य स्थिति वध दिखाते है ।

लोहस्स सुहुमसत्तरसाणं ओघं दुगेकदलमासं ।
कोहतिये पुरिसस्स य अट्ठ य वस्सा जहण्णठिदी ॥१४०॥

तित्थाहाराणंतोकोडाकोडी जहण्णठिदि बंधो ।
खवगे सगसगबंधच्छेदणकाले हवे णियमा ॥१४१॥
भिण्णमुहुत्तो णरतिरियाऊणं वासदससहस्साणि ।
सुरणिरयआउगाणं जहण्णओ होदि ठिदिबंधो ॥१४२॥

लोभ रु सत्रह सूक्ष्म की, गुणवत् क्रोध जु तीन ।
दो इक आधे मास की, पुरुष वर्ष अठ चीन ॥१४०॥
अंतः कोडा कोडिया, लघु थिति तीर्थाहार ।
निज निज बंध विछुत्ति में, क्षपक श्रेणि धर धार ।१४१।
नर पशु वय की जघन थिति, अंतर्मुहुर्त्त मान ।
सुर नारकी जघन थिति, वर्ष सहस दश जान ।१४२॥

अर्थ—लोभकषाय १ ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ साता वेदनी १ यश १ ऊँचगोत्र १ और अंतराय ५ इन १८का जघन्यस्थिति-बंध मूल कर्म के समान है क्रोध १ मान १ माय १ और पुरुषवेद १ का जघन्यस्थितिबंध क्रम से दो मास, एक मास, १५ दिन और आठ वर्ष है। आहारकशरीर १ आहारकआंगोपांग १ और तीर्थंकर १ इन ३ का उत्कृष्टस्थितिबंध अंत कोडाकोडीसागर का है यह बंध क्षपक-श्रेणी वाले के अपनी २ बंधविछुत्ति के समय में होता है। मनुष्य और तिर्यंचायु का जघन्यस्थितिबंध अन्तर्मुहूर्त्त का है देव और नरकायु का जघन्यस्थितिबंध दशहजार वर्ष का है ॥१४०-१४२ ॥

आगे शेषों का बंध और उनके पात्रों को दिखाते हैं।

सेसाणं पज्जत्तो बादरएइंदियो विसुद्धो य ।
बंधदि सव्वजहण्णं सगसग उक्कस्सपडिभागे ॥१४३॥

शेषों की एकेन्द्रिया, थूल पूर्ण शुद्धाय।
बांधे सर्व जघन्य को, निज जिन वरहि घटाय ॥१४३॥

अर्थ—शेष ९१वे प्रकृतियो मे से विक्रियकशरीर १ विक्रियक-अगोपॉग १ देवगति १ देवगत्यानु पूर्वी १ नरकगति १ नरकत्यानु पुर्वी १ और मिथ्यात्व १ इन ७ प्रकृतियो के बिना शेप ८४ प्रकृतियो का जघन्यस्थितिबध मदकषाय वाला बादरपर्याप्तएकेन्द्रिय जीव करता है उसका परिमाण गणित द्वारा अपनी २ उत्कृष्टिस्थितिबध सम्बन्धी परिमाण के प्रतिभाग करने से अपनी २ जघन्यस्थितिबध का परिमाण आता है ॥१४३॥

आगे जघन्यस्थिति निकालने की विधि दिखाते हैं।

एयं पणकदि पण्णं सयं सहस्सं य मिच्छवरबंधो।
इगिविगलाणं अवरं पल्लासखूणसंखूणं ॥१४४॥

इक पच्चिस पंचास शत, सहस बंध मिथ्यात।
वर इक विकलादिक अवर, पल असंख्य संख्यात १४४।

अर्थ—मिथ्यात्व का उत्कृष्ट स्थितिबध एकेन्द्रिय के १ सागर का होता है इसमे पल्य का असख्यातवा भाग कम करने से जो परिमाण शेष रहे उतना उसकी जघन्यस्थिति बध का परिमाण है मिथ्यात्व का उत्कृष्टस्थिति दोइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय और असैनी पचेन्द्रिय के क्रमसे २५, ५०, १००, १००० सागर का होता है इनमे पल्य का सख्यातवा भाग कम करने से जो परिमाण शेष रहे उतना-उतना उनकी जघन्यस्थितिबध का परिमाण है ॥१४४॥

आगे अन्य प्रकृतियो की स्थिति निका० विधि दिखाते है।

जदि सत्तरिस्स एत्तियमेत्तं किं होदि तीसयादीण।
इदि संपातें सेसाण इगिविगलेसु उभयठिदी ॥१४५॥

अर्थ—उपरोक्त एकेन्द्रिय से लेकर असैनी पचेन्द्रिय जीव तक अपनी-अपनी उत्कृष्ट आबाधा के परिमाण का अपनी-अपनी उत्कृष्ट स्थितिबध के परिमाण मे भाग देने से जो लव्ध आवे वह-वह अपना अपना आवाधाकांडक का परिमाण है। जिन स्थितियो की आबाधा का परिमाण एक वरावर होता है उसको आवाधाकाड कहते है। अपने-अपने आवाधाकांड के परिमाण का अपने-अपने आबाधा के भेदो के परिमाण से गुणा करने पर जो-जो परिमाण आवे उस उसमें १–१ समय कम करने पर जो-जो परिमाण शेष रहे वह-वह अपनी-अपनी उत्कृष्ट स्थिति के परिमाण मे कम करने पर जो-जो परिमाण शेप रहे वह-वह अपने-अपने जघन्यस्थितिबध का परिमाण है। एकेन्द्रिय की उत्कृष्ट स्थिति मे पल्य का असख्यातवां भाग कम करने पर उसकी जघन्यस्थिति का परिमाण होता है और दोइन्द्रियादि की उत्कृष्टस्थिति मे पल्य का सख्यातवां भाग कम करने पर उनकी जघन्यस्थिति का परिमाण होता है। दे० दोहा न० १४४

यहाँ कल्पना करिये कि एकेन्द्रिय से लेकर असैनी पचेन्द्रिय तक उत्कृष्टस्थिति का परिमाण ६४ समय है, मध्यस्थितिबध का परिमाण ४६ से लेकर ६३ समय तक है। जघन्यस्थिति का परिमाण ४५ समय है और जघन्यआबाधा का परिमाण १२ समय है और उत्कृष्ट आबाधा का परिमाण १६ समय है। इस (१६) का भाग ६४ में देने से लब्ध ४ आता है जो कि आबाधाकांड का परिमाण है। आवाधाकाड क्या ? जिन स्थितियो की आबाधा का परिमाण एक वरावर होता है उसको आबाधाकांड कहते हैं। जैसे ४५ से लेकर ६४ तक की ४-४ स्थितियों की आबाधा क्रमसे १२, १३, १४, १५, १६ समय है इस तरह ५ आबाधा के भेद होते है। इस (५) को आबाधा कांड (४) से गुणा करने पर २० होते है। इसमे १ कम करने से १९ रहते है। इस (१९) को उत्कृष्टस्थिति ६४ मे कम करने पर ४५ समय रहते है, जो कि जघन्यस्थितिबध का

परिमाण है। इसमे १६ मिलाने से ६४ होते है जो कि उत्कृष्ट-स्थितिबध का परिमाण है ॥१४७॥

आगे जघन्य और उत्कृष्टस्थिति के २८ भेद दिखाते है।

बासूप-बासूअ-वरट्ठिदीओ सूबाअ-सूबाप जहण्णकालो।
बीबीवरो बीबिजहण्णकालो सेसाणमेवं वयणीयमेदं ॥१४८

बासुप बासुअ ज्येष्ठ-थिति, इन चउ का लघुकाल।
दो दो वर अरु अवर क्षण, शेषनि और सँभाल ॥१४८

अर्थ—बादरपर्याप्त, सूक्ष्मपर्याप्त, बादरअपर्याप्त और सूक्ष्मअपर्याप्त की उत्कृष्टस्थिति तथा सूक्ष्मअपर्याप्त, बादर-अपर्याप्त, सूक्ष्मपर्याप्त और बादरपर्याप्त की जघन्यस्थिति, इस तरह एकेन्द्रिय जीव को कर्म स्थिति के ८ भेद है। दोइन्द्रिय-पर्याप्त और दोइन्द्रियअपर्याप्त की उत्कृष्टस्थिति तथा दोइन्द्रिय-अपर्याप्त और दोइन्द्रियपर्याप्त की जघन्यस्थिति, इस प्रकार दो-इन्द्रिय जीव की कर्मस्थिति के ४ भेद है। इसी तरह तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय, असैनी पचेन्द्रिय और सैनीजीव की कर्मस्थिति के ४–४ भेद हैं। सब मिल कर ८+४+४+४+४+४=२८ भेद हैं ॥१४८॥

आगे असैनियो की स्थिति मे शलाका दिखाते है।

मज्झे थोवसलागा हेट्ठा उवरिं य संखगुणिदकमा।
सव्वजुदी संखगुणा हेट्ठुवरिं संखगुणमसण्णित्ति ॥१४९॥

मध्य भाग में अल्प हैं, संख गुणी अध ऊप।
सर्व संख्यगुणि अमन तक, संख्यगुणी अध ऊप ॥१४९

अर्थ—सैनीजीव की ४ स्थितियो को छोडकर शेष जीवो की

जो सत्तरि में इक बँधे, तीसादिक में कित्त ।
त्रैराशिक से निकलती, इक विकला की वित्त ।१४५।

अर्थ—जिस कर्म का उत्कृष्टस्थितिबध सैनी जीव के ७० कोडाकोडीसागर का होता है उस कर्म का उत्कृष्टस्थितिबध एकेन्द्रिय जीव के १ सागर का होता है तथा जिस कर्म का उत्कृष्ट-स्थितिबध सैनी जीव के ३०, ४०, ५०, ६० कोडाकोडीसागर का होता है उस कर्म का उत्कृष्टस्थितिबध एकेन्द्रिय जीव के क्रमसे १ सागर के ७ भागो मे से ३ भाग, १ सागर के ७ भागो मे से ४ भाग, १ सागर के ७ भागो मे से ५ भाग और १ सागर के ७ भागो मे से ६ भाग बराबर होता है इसी प्रकार इस एकेन्द्रिय जीव के अन्य स्थितिबध का परिणाम निकलता है इसी प्रकार दो इन्द्रियादि जीवो के उत्कृष्टस्थितिबध का परिमाण निकलता है और इसी प्रकार इनके जघन्यस्थितिबध का परिमाण जघन्य-स्थितिबध के परिमाण से निकलता है । कुछ विशेपता है वह आगे दिखाते है ।।१४५।।

आगे स्थितिबध की आबाधा का परिमाण दिखाते है ।

सण्णि असण्णिचउक्के एगे अंतोमुहुत्तमाबाधा ।
जेट्ठे संखेज्जगुणा आवलिसंखं असंखभागहियं ।।१४६।।

क्रम मुहुरत आबाध लघु, समन अमन पन भाग ।
जेष्ठसंख गुणि आवली, संख्य असंख्ये भाग ।१४६

अर्थ—सैनी, चार त्रस असैनी और एकेन्द्रिय के जघन्यस्थिति-बध की जघन्यआबाधा अन्तमुहूर्त्त है और इनके उत्कृष्टस्थिति बध की उत्कृष्ट आवाधा क्रमसे जघन्य आबाधा से सख्यातगुणी

अधिक, आवली के सख्यातवें भाग से अधिक और आवली के असख्यातवे भाग से अधिक है ॥१४६॥

भावार्थ—सैनी जीव के जघन्यस्थितिबध की आबाधा का परिमाण अन्तर्मुहूर्त्त है इससे असैनी पचेद्रिय, चौइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, दोइन्द्रिय और एकेन्द्रिय जीव की जघन्य आबाधा का परिमाण क्रम से सख्यातगुणा कम है किन्तु सबका परिमाण अन्तर्मुहूर्त्त ही है।

एकेन्द्रिय की जघन्य आबाधा अन्तर्मुहूर्त्त है इससे दोइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय और असैनी पचोन्द्रिय की जघन्य आवाधा का परिमाण क्रम से २५, ५०, १००, १००० गुणा अधिक है किन्तु सबका परिमाण अन्तर्मुहूर्त्त ही है, कारण अन्तमुहूर्त्त के भेद अनेक है।

सैनी जीव की जघन्य आवाधा से, उत्कृष्ट आवाधा का परिमाण सख्यातगुणा अधिक है असैनी पचेन्द्रिय से लेकर दो इन्द्रिय जीव तक अपनी-अपनी जघन्य आवाधा से उत्कृष्ट आबाधा का परिमाण आवली के सख्यातवे सख्यातवे भाग अधिक है और एकेन्द्रिय जीव की जघन्य आबाधा से उत्कृष्ट आवाधा का परिमाण आवली के असख्यातवे भाग अधिक है। अपनी-अपनी जघन्य आबाधा का परिमाण अपनी-अपनी उत्कृष्ट आबाधा के परिमाण मे कम करने पर जो-जो परिमाण शेष रहे उस-उस मे एक-एक मिलाने से अपनी-अपनी आबाधा के भेदो का परिमाण आता है।१४६

आगे जघन्यस्थिति निकालने की विधि दिखाते है।

जेट्ठाबाहोवट्टियजेट्ठं आबाह कंडयं तेण।
आबाहवियप्पहदेणेगूणेणूणजेट्ठमवरठिदी ॥१४७॥

वर आबाधा भाज्य वर, सो आबाधा गुच्छ।
उन आबाधा भेद गुणि, इक कम वरथिति तुच्छ ॥१४७

भावार्थ— सैनी जीव के मिथ्यात्व कर्म की उत्कृष्टस्थिति (७० कोडाकोडीसागर) में जघन्यस्थिति (अन्त कोडाकोडी-सागर) को कम कर उसमे १ समय मिलाने से जो परिमाण आवे वह मिथ्यात्वकर्म की उत्कृष्टस्थिति के भेद है। इसमें संख्यात का भाग देने से जो लब्ध आवे उसके बिना शेष परिमाण के बराबर सैनीपर्याप्त की उत्कृष्टस्थिति से लेकर सैनीअपर्याप्त की उत्कृष्ट स्थिति तक स्थिति के भेद है। इसमे १ समय कम करने पर जो परिमाण शेष रहे वह सैनीपर्याप्त की उत्कृष्टस्थिति में कम करने से जो परिमाण शेष रहे वह सैनीअपर्याप्त की उत्कृष्ट-स्थिति का परिमाण है।

फिर उपरोक्त लब्ध में संख्यात का भाग देने से जो लब्ध आवे उसके बिना शेष परिमाण बराबर सैनीअपर्याप्त की १ समय कम उत्कृष्टस्थिति से लेकर सैनीअपर्याप्त की जघन्यस्थिति तक भेद है। इसको सैनीअपर्याप्त की उत्कृष्टस्थिति मे कम करने से सैनीअपर्याप्त की जघन्यस्थिति का परिमाण है।

फिर उपरोक्त लब्ध बराबर सैनीअपर्याप्त की १ समय कम जघन्यस्थिति से लेकर सैनीपर्याप्त की जघन्यस्थिति तक स्थिति के भेद हे जो कि अन्त कोडाकोडी के बराबर है।

मिथ्यात्व की उत्कृष्ट आबाधा (७ हजार वर्ष) में से जघन्य आबाधा (अन्तर्मुहूर्त) कम कर उसमे एक समय और मिलाने से जो परिमाण हो, उतने सैनीजीव की आबाधा के भेद है। इनमे उपरोक्त प्रकार सख्यात २ का भाग देने से सैनीजीव के ३ अन्तरों की आबाधा का परिमाण निकलता है।

उपरोक्त एकेन्द्रिय से लेकर असैनीपचेन्द्रिय तक अपनी-अपनी आबाधा के भेदो मे अपनी-अपनी उपरोक्त सब शलाकाओ के परिमाण का भाग देने से जो-जो लब्ध आवे वह-वह अपनी-अपनी १ शलाका की आबाधा के भेदो का परिमाण है। अपनी-अपनी

आबाधा के भेदो के परिमाण का अपनी-अपनी जिस अंतर की शलाकाओ के साथ गुणा करने से जो-जो परिमाण आवे वह-वह अपनी-अपनी उस-उस अतर की आबाधा के भेदो का परिमाण है। इस प्रकार स्थिति और आबाधा के भेदो का कथन समाप्त हुआ ॥१५०॥

आगे जघन्यस्थितिबध के करने वालो को दिखाते है।

सत्तरसपंचतित्थाहाराणं सुहुमबादरापुव्वो।
छव्वेगुव्वमसण्णी जहण्णमाऊण सण्णी वा ॥१५१॥

दशमें सत्रह नवम पन, अष्टम तीर्थाहार।
विक्रिय छै को समन जिय, लघु वय दोनों धार ॥१५१

अर्थ—ज्ञानावरणी ५, दर्शनावरणी ४, अतराय ५, यश १, ऊचगोत्र १, सातावेदनी १, इन १७ प्रकृतियो की जघन्यस्थिति सूक्ष्मसापराय गुणस्थान वाला बाधता है। पुरुष वेद १, सज्वलन ४, इन ५ प्रकृतियो की जघन्यस्थिति अनिवृत्तिकरण गुणस्थान वाला बाधता है। तीर्थ कर प्रकृति १, आहारक शरीर १, आहारक आगोपाग १, इन ३ प्रकृतियो की जघन्यस्थिति अपूर्वकरणगुणस्थान वाला बाधता है। विक्रियक ६ की जघन्यस्थिति असैनीपचेन्द्रिय जीव बाधता है और ४ आयुओ की जघन्यस्थिति सैनी और असैनी दोनो बाधते हैं ॥१५१॥

आगे अजघन्यादिस्थिति मे सादि अनादि भेद दिखाते है।

अजहण्णट्ठिदिबंधो चउव्विहो सत्तमूलपयडीणं।
सेसतिये दुवियप्पो आउचउक्केवि दुवियप्पो ॥१५२॥

अजघन स्थिति बंध हो, चउविधि कर्म जु सात।
शेष तीन में दोय विधि, वय चउविधि दो ख्यात ॥१५२

कर्मस्थितियो के भेदों के मध्य के अन्तर की शलाकाये (विभाग) थोडी है। नीचे और ऊपर की क्रम से सख्यातगुणी अधिक हैं, सब का जोड़ भी सख्यातगुणा अधिक है ॥१४९॥

भावार्थ—एकेन्द्रिय की कर्मस्थिति के ८ भेदो में अन्तर ७ है। इनमें सबके मध्य के अतर में शलाकाये (विभाग) थोडी है, इससे नीचे के अतर मे सख्यात गुणी अधिक है इससे ऊपर के अतर मे संख्यातगुणी अधिक है, इन तीनो से नीचे के अंतर मे सख्यातगुणी अधिक है। इससे ऊपर के अतर मे सख्यातगुणी अधिक है। इन पाँचो से नीचे के अतर मे संख्यातगुणी अधिक है। और इससे ऊपर के अतर मे सख्यातगुणी अधिक है। इस आशय को नीचे कल्पना से समझिये।

दोइन्द्रिय से लेकर असैनीपचेन्द्रिय तक की कर्मस्थिति के ४-४ भेदो मे ३-३ अतर है। इनमे सबके मध्य के अतर मे शलाकाये थोडी है, इससे नीचे के अतर मे सख्यातगुणी अधिक है और इससे ऊपर के अतर मे सख्यातगुणी अधिक है।

एकेन्द्रिय से लेकर असैनीपचेन्द्रिय तक की उत्कृष्ट स्थिति के परिमाण मे से १–१ समय कम जघन्य स्थिति के परिमाण को कम करके जो-जो परिमाण शेष रहे उसमे १–१ समय और मिलाने से उनकी कर्मस्थिति के भेदो का परिमाण क्रमसे पल्य का असख्यातवा भाग, पल्य का सोलहवा भाग, पल्य का आठवा भाग, पल्य का चतुर्थ भाग और पल्य का अर्धभाग आता है।

उपरोक्त जिस जीव की कर्मस्थिति के परिमाग मे उसकी सब शलाकाओ के परिमाण का भाग देने से जो लब्ध आवे वह उस जीव की १ शलाका की कर्मस्थिति का परिमाण है। इससे उस जीव के, जिस अतर मे जितनी शलाकाये है, उनका गुणा करने से जो परिमाण आवे वह उस जीव के उस अतर की कर्मस्थिति के भेदो का परिमाण होता है।

उपरोक्त आशय को समझने के लिये कल्पना करिये कि एकेन्द्रिय के ७ अतरो मे क्रम से १६६–२८–४–१–२–१४–६८, इस प्रकार ३४३ शलाकाये है और दोइन्द्रिय से लेकर असैनी पचेन्द्रिय तक ३—३ अतरो मे क्रमसे ४–१–२, इस तरह ७–७ शलाकाये है।

एकेन्द्रिय से लेकर असैनीपचेद्रिय तक की कर्मस्थिति के भेदो का परिमाण क्रम से १७१५, ४०६५, ८१६०–१६३८०–३२७६० है।

एकेन्द्रिय की कर्मस्थिति के भेदो के परिमाण १७१५ मै इस की ३४३ शलाकाओ का भाग देने से लब्ध ५ आता है, यह इसकी एक शलाका की कर्मस्थिति के भेदो का परिमाण है। इससे १६६, २८, ४, १, २, १४ ६८ शलाकाओ से गुणा करने पर क्रम से ६८०, १४०, २०, ५, १०, ७०, ४६० परिमाण होता है जो कि इसके ७ अतरो की कर्मस्थिति का परिमाण है। इसी प्रकार दो-इन्द्रिय से लेकर असैनीपचेन्द्रिय तक के अतरो की शलाकाओ की कर्मस्थिति का परिमाण निकलता है ॥१४६॥

आगे सैनी की कर्मस्थिति और आबाधा के भेद दिखाते है।

सण्णिस्स हु हेट्ठादो ठिदिठाणं संखगुणिदमुवरुवरिं।
ठिदिआयामोवि तहा सगठिदिठाणं व आबाहा ॥१५०॥

नीचे से सब समन थल, संख्यगुणा क्रम ऊप।
थिति का काल समान है, आबाधा उस रूप ॥१५०

अर्थ—सैनी जीव की कर्मस्थिति के भेद नीचे से ऊपर तक सख्यात गुणे अधिक है कर्मस्थिति का काल भी समान है और आबाधा के काल का परिमाण कर्मस्थिति के भेद की तरह संख्यात गुणा अधिक है ॥१५०॥

अर्थ—अन्त: कोडाकोडी सागर स्थिति की आबाधा अन्तर्मुहूर्त होती है और सब जघन्यस्थितियों की आबाधा उससे भी संख्यात गुणी (संख्यातवें भाग) कम होती है ।।१५७।।

आगे आयु कर्म की आबाधा का परिमाण दिखाते है ।

पुव्वाणं कोडितिभागादासंखेपअद्ध वोत्ति हवे ।
आउस्स य आबाहा ण ट्ठिदिपडिभागमाउस्स ।।१५८।।

कोडि पूर्व त्रय भाग से, आवलि असंख्य भाग ।
आबाधा अरु आयु में, थिति प्रति भाग न लाग ।।१५८।।

अर्थ—कर्मभूमि की अपेक्षा आयु कर्म की जघन्य आबाधा आवली के असंख्यातवे भाग बराबर है उत्कृष्ट आबाधा कोडि पूर्व के तृतीय भाग बराबर है, भोगभूमि की अपेक्षा जघन्य आबाधा आवली के असंख्यातवे भाग बराबर हैं उत्कृष्ट आबाधा ६ मास बराबर है देव और नारकियो की जघन्य आबाधा आवली के असंख्यातवे भाग बराबर हैं और उत्कृष्ट आबाधा ६ मास बराबर है अन्य कर्मों की तरह आबाधा आयुकर्म मे नही होती ।।१५८

आगे उदीरणा की अपेक्षा आबाधा का परिमाण दिखाते है ।

आवलियं आबाहा उदीरणमासिज्ज सत्तकम्माणं ।
परभवियआउगस्स य उदीरणा णत्थि णियमेण ।।१५९।।

उदीरणा से सात की, इक आवलि आबाध ।
पर भव गति या आयु की, उदीरणा मत साध ।।१५९

अर्थ—उदीरणा की अपेक्षा सात कर्मों की आबाधा १ आवली मात्र है अर्थात् सात कर्मों का बंध होने के पश्चात् १ आवली काल के पश्चात् उदीरणा (बंध से पृथक) हो सकती है किन्तु जो आयु

कर्म बध चुका है उसकी उदीरणा नही हो सकती वह तो उदय मे अवश्य आवेगी उदय होने पर उदीरणा हो तो हो सकती है इसलिये आयु में उदीरण की अपेक्षा आबाधा का प्रश्न ही नही उठता ।१५६

आगे आठो कर्मों के निषेको का परिमाण दिखाते है ।

आबाहूणियकम्मट्ठिदी णिसेगो दु सत्तकम्माणं ।
आउस्स णिसेगो पुण सगट्ठिदी होदि णियमेण ॥१६०॥

थिति में आबाधा घटें, सप्तहिं शेष निषेक ।
जितने वय में समय हैं, उतने आयु निषेक ॥१६०॥

अर्थ—आयुकर्म को छोडकर जिस कर्म की जितनी स्थिति है उसमे आबाधा का समय कम करने पर जितना समय शेष रहे उतने निषेक उस कर्म के है और आयु कर्म की जितनी स्थिति है उतने ही उसके निषेक है आयु कर्म की स्थिति उदय से कम होती जाती है और शेप कर्मों की स्थिति बध से ही कम होती जाती है इसलिये आयु कर्म मे स्थिति के वरावर निषेक होते है शेपो मे स्थिति के वरावर निषेक नही होते ॥१६०॥

आगे निषेक झडने की रीति दिखाते है ।

आवाहं वोलाविय पढमणिसेगम्मि देय वहुगं तु ।
तत्तो विसेसहीणं विदियस्सादिमणिसेओत्ति ॥१६१॥
विदिये विदियणिसेगे हाणो पुव्विल्लहाणिअद्ध तु ।
एवं गुणहाणिं पडि हाणी अद्धद्धयं होदि ॥१६२॥

आबाधा तज प्रथम क्षण, झड़ते बहुत निषेक ।
द्वितिय द्वितिय के प्रथम तक, झडते हीन निषेक ॥१६१

अर्थ—आयु बिना सात कर्मो का अजघन्यस्थितिबध चार प्रकार का होता है सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुव तथा इनका जघन्य, अनुत्कृष्ट और उत्कृष्टस्थितिबध दो प्रकार का होता है सादि और अध्रुव तथा आयुकर्म के उत्कृष्टादिक ४ भेदो का स्थिति-बध दो प्रकार का होता है. सादि और अध्रुव ।।१५२।।

आगे उत्तर प्रकृतियो में सादि आदि भेद दिखाते है ।

संजलणसुहुमचोद्दसाघादीणं चदुविधो दु अजहण्णो ।
सेसतिया पुण दुविहा सेसाणं चदुविधावि दुधा ।।१५३।।

अजघन चउविधि संज्वलन, दशवें चौदह घाति ।
शेष तीन युत दोयविधि, चउविधि शेष दु जाति ।।१५३

अर्थ—सज्वलन ४ ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अंतराय ५ इन १८ प्रकृतियो का अजघन्यस्थितिबध ४ प्रकार का होता है सादि, अनादि, ध्रुव, और अध्रुव और इन १८ प्रकृतियो का उत्कृष्ट अनुत्कृष्ट और जघन्यस्थितिबध दो प्रकार का होता है ध्रुव और अध्रुव तथा शेष उत्तर प्रकृतियो के उत्कृष्टादि चारो स्थितिबध दो प्रकार के होते है ध्रुव और अध्रुव ।।१५३।।

आगे उत्कृष्टस्थितिवध करने वालो को दिखाते है ।

सव्वाओ दु ठिदीओ सुहासुहाणंपि होंति असुहाओ ।
माणुसतिरिक्खदेवाउगं य मोत्तूण सेसाणं ।।१५४।।

तीन आयु तज शुभाशुभ, सर्व अशुभ थिति मान ।
तीव्र कषायी जीव हो, बांधे वर थिति जान ।।१५४।।

अर्थ—तिर्यच, मनुष्य और देवायु को छोडकर शेष शुभ और अशुभ प्रकृतियो की स्थितियॉ अशुभ हैं इसलिये इनका तीव्र कषायी

जीव ही उत्कृष्टस्थितिबध करते है ॥१५४॥

आगे आवाधा का स्वरूप दिखाते है ।

कम्मसरूवेणागय दव्वं ण य एदि उदयरूवेण ।
रूवेणुदीरणस्सं व आबाहा जाव ताव हवे ॥१५५॥

उदय भया न उदीरणा, कर्म वंध में आय ।
जव तक का सब काल वह, आबाधा कहलाय ॥१५५॥

अर्थ—कर्मबध होने के पश्चात् जबतक उसका उदय अथवा उदीरणा न हो तबतक के काल को आवाधा कहते है ॥१५५॥

आगे उदय की अपेक्षा आबाधा का परिमाण दिखाते है ।

उदयं पडि सत्तण्हं आबाहा कोडकोडि उवहीणं ।
वाससयं तप्पडिभागेण य सेसट्ठिदीणं य ॥१५६॥

उदय अवाधा शत वरष, इक दधि कोडाकोड ।
इसी रीति से शेष थिति, सात कर्म प्रति जोड ॥१५६॥

अर्थ—उदय की अपेक्षा एक कोडाकोडी सागर स्थिति की आबाधा आयु कर्म को छोड कर शेष कर्म की १०० वर्ष बराबर होती है इसी प्रकार अन्य स्थितियो की आवाधा गणित द्वारा निकाल लेना चाहिये ॥१५६॥

आगे अन्त कोडाकोडी स्थिति की आबाधा दिखाते हैं ।

अंतोकोडाकोडिट्ठिदिस्स अंतोमुहुत्तमाबाहा ।
संखेज्जगुणविहीणं सव्वजहण्णट्ठिदिस्स हवे ॥१५७॥

अंतः कोडाकोडि दधि, थिति की भिन्न मुहूर्त्त ।
संख्य गुणी कम लघु थिती, आबाधा इस सूर्त ॥१५७॥

५. दो गुणहानि—एक गुण हानि के काल को दूना करने पर जो परिमाण आवे उसको दो गुणहानि कहते हैं।

६. परस्परगुणितराशि—जितना नाना गुणहानि का परिमाण हो उतने दो के अंकों को परस्पर गुणा करने पर जो परिमाण आवे उस संख्या को परस्पर गुणित राशि कहते हैं ॥१६३॥

आगे कल्पना से उपरोक्त राशियों का परिमाण दिखाते हैं।

तेवट्ठि य समाइं अडदाला अट्ठ छक्क सोलसयं।
चउसट्ठि य विजाणे दव्वादीणं य संदिट्ठी ॥१६४॥

तेसठि सौ अडतालिसा, अठ छै सोलह मान।
चौंसठि युत द्रव्यादि के, क्रम से चिन्ह पिछान ॥१६४॥

अर्थ—कल्पना करिये कि उपरोक्त द्रव्य का परिमाण ६३०० है स्थिति के काल का परिमाण ४८ है गुणहानि के काल का परिमाण ८ है नाना गुणहानि का परिमाण ६ है दो गुणहानि का परिमाण १६ है और परस्परगुणितराशि का परिमाण ६४ है ॥१६४॥

आगे यथार्थ रूप से द्रव्य और स्थिति का परिमाण दिखाते हैं।

दव्वं समयपबद्धं उत्तपमाणं तु होदि तस्सेव।
जीवसहुत्थणकालो ठिदिअद्धा संखपल्लमिदा ॥१६५॥

एक जु समय प्रबद्ध वत्, कहा द्रव्य परिमाण।
उसकी स्थिति का समय, संख्य पल्य वत् जान ॥१६५॥

अर्थ—यथार्थ में द्रव्य का परिमाण १ समय प्रबद्ध बराबर है और उस द्रव्य का झड़ने का काल संख्यात पल्य बराबर है ॥१६५॥

आगे नानागुणहानि और परस्पर गुणित का परिमाण दिखाते हैं

मिच्छे वग्गसलायप्पहुदिं पल्लस्स पढममूलोत्ति ।
वग्गहदी चरिमो तच्छिदिसंकलिदं चउत्थो य ॥१६६॥

वर्ग शला से पल्य के, प्रथम मूल तक खास ।
वर्ग गुणे भ्रम अंतिमा, छेद जोड़ चउ राश ॥१६६॥

अर्थ—पल्य की वर्गशलाका (पल्य के द्वितीय मूल) से लेकर पल्य के प्रथम मूल तक जितने वर्गमूल हैं, उनका परस्पर गुणा करने से जो परिमाण आवे वह मिथ्यात्वकर्म की परस्पर गुणित राशि का परिमाण है और उपरोक्त वर्गमूलो के अर्धच्छेदो को जोडने से जो परिमाण आवे वह मिथ्यात्वकर्म की नाना गुणहानि का परिमाण है ।

यहा कल्पना करिये कि पल्य का परिमाण ६५५३६ है पल्य के प्रथम वर्गमूल का परिमाण २५६ है पल्य के द्वितीय वर्गमुल का परिमाण १६ है पल्य के तृतीय वर्गमूल का परिमाण ४ है इन २५६ १६, ४ का परस्पर गुणा करने से १६३८४ आता है वह उपरोक्त परस्पर गुणित राशि का परिमाण है और इनके अर्ध-छेद क्रम से ८–४–२ होते है इनको जोडने से १४ होते है जोकि उपरोक्त नाना गुण हानि का परिमाण है ॥१६६॥

आगे उपरोक्त आशय को अन्य प्रकार दिखाते है ।

वग्गसलायेणवहिदपल्लं अण्णोण्णगुणिदरासी हु ।
णाणागुणहाणिसला वग्गसलच्छेदणूण पल्लछिदी ॥१६७॥

वर्ग शला का पल्य में, भाग दिये छै राशि ।
पल्य छेद में शला के, छेद घटे चउ राशि ॥१६७

अर्थ—पल्य के परिमाण मे वर्गशलाका (पल्य का तृतीय वर्ग-मूल) के परिमाण का भाग देने से जो लब्ध आवे वह मिथ्यात्व की परस्पर गुणत राशि का परिमाण है और पल्य के अर्धच्छेदो के

द्वितिया द्वितिय निषेक में, पूर्व हानि चय हान।
अध कम यों गुणहानि प्रति, हानि अर्ध अधहान ॥१६२

अर्थ—सात कर्मो मे आबाधा काल को छोडकर उदयकाल के प्रथम समय मे प्रथम गुणहानि का सबसे अधिक परमाणु वाला प्रथम निपेक फल देकर झड जाता है इस प्रथम गुणहानि के द्वितीय निपेक से लेकर द्वितीय गुण हानि के प्रथम निषेक तक चय कर हीन परमाणु वाले निपेक फल देकर झड जाते है द्वितीय गुण हानि के द्वितीय निपक से लेकर तृतीय गुण हानि के प्रथम निपेक तक उपरोक्त चय से आधे-आधे हीन परमाणु वाले निपेक फल देकर झड जाते है इस तृतीय गुणहानि के द्वितीय निषेक से लेकर चतुर्थ गुण हानि के प्रथम निषेक तक उपरोक्त चय से आधे-आधे हीन परमाणु वाले निषेक फल देकर झड जाते है इस चतुर्थ गुणहानि के द्वितीय निषेक से लेकर पचम गुण हानि के प्रथम निषेक तक उपरोक्त चय से आधे-आधे हीन परमाणु वाले निषेक फल देकर झड जाते है इस पचम गुण हानि के द्वितीय निषेध से लेकर छट्टम गुणहानि के प्रथम निपेक तक उपरोक्त चय से आधे-आधे हीन परमाणु वाले निपेक फल देकर झड जाते है इससे छट्टम गुण हानि के अत निषेक तक उपरोक्त चय से आधे-आधे हीन परमाणु वाले निषेक फल देकर झड जाते है।

यहा कल्पना करिये कि प्रथ गुणहानि का प्रथम निपेक ५१२ परमाणु का होता है इससे ३२–३२ परमाणु कम वाले निषेक द्वितीय गुणहानि के प्रथम निषेक तक (४८०, ४४८, ४१६, ३८४, ३५२, ३२०, २८८, २५६) होते है इससे १६–१६ परमाणु कम वाले निषेक तृतीय गुणहानि के प्रथम निपेक तक (२४०, २२४, २०८, १९२, १७६, १६० १४४, १२८) होते है इससे ८–८ परमाणु कम वाले निषेक चतुर्थ गुण हानि के प्रथम निपेक तक

(१२०, ११२, १०४, ९६, ८८, ८०, ७२, ६४) होते हैं इससे ४-४ परमाणु कम वाले निषेक पचम गुणहानि के प्रथम निषेक तक (६०, ५६, ५२, ४८, ४४, ४०, ३६, ३२) होते है इससे २-२ परमाणु कम वाले निषेक छट्ठम गुणहानि के प्रथम निषेक तक (३०, २८, २६, २४, २२, २०, १८, १६) होते हैं इससे १-१ परमाणु कम वाले निषेक छट्ठम गुणहानि के अष्टम निषेक तक (१५, १४, १३, १२, ११, १०, ९) होते है ॥१६१-१६२॥

आगे उपरोक्त आशय को स्पष्ट करने के लिये छैराशिया दिखाते है ।

दव्वं ठिदिगुणहाणीणद्धाणं दलसला णिसेयछिदी ।

अण्णोण्णगुण सलावि य जाणेज्जो सव्वठिदिरयणे ॥१६३॥

द्रव्य थिती गुण हाणि क्षण, नाना दो गुण हान ।

गुणित परस्पर राशि युत, सब थिति रचना जान ।१६३

अर्थ—द्रव्य, स्थितिकाल, गुणहानि काल, नानागुणहानि, दो गुणहानि, (निषेकहार) और परस्पर गुणित राशि ये ६ राशिया उपरोक्त आशय (कर्मस्थिति की रचना) को जानने के लिये स्मरण रखना चाहिये ॥१६३॥

१ **द्रव्य**—झडने वाले परमाणुओ के समूह को द्रव्य कहते है ।

२. **स्थितिकाल**—जितना उपरोक्त परमाणु के समूह का झडने का काल है उसको स्थितिकाल कहते हैं ।

३. **गुणहानिकाल**—१ गुण हानि मे जितने निषेक होते है उन निषेको के झडने मे जितना काल व्यतीत होता है उसको गुणहानि काल कहते है एक समय मे एक निषेक झरता है ।

४. **नानागुणहानि**—जितनी उपरोक्त द्रव्य मे गुण हानिया होती हैं उनके समूह को नानागुणहानि कहते हैं ।

परिमाण में वर्ग शलाका (पल्य का तृतीय वर्गमूल) के अर्धच्छेदो के परिमाण को कम करने से जो परिमाण शेष रहे वह मिथ्यात्व की नाना गुणहानि का परिमाण है।

यहाँ कल्पना करिये कि पल्य का परिमाण ६५५३६ है, वर्गशलाका (वर्गराख्या) का परिमाण ४ है इन ६५५३६—४= १६३८४ आते है जो कि उपरोक्त परस्पर गुणित राशि का परिमाण है और पल्य के अर्धच्छेदो का परिमाण १६ है तथा पल्य की वर्गशलाका के अर्धच्छेदो का परिमाण २ है इन १६—२=१४ रहते है जो कि उपरोक्त नाना गुणहानि का परिमाण है ।।१६७।।

आगे एक गुणहानि के काल और निषेको का परिमाण दिखाते है।

सव्वसलायाणं जदि पयदणिसेये लहेज्ज एक्कस्स ।
किं होदित्ति णिसेये सलाहिदे होदि गुणहाणी ।।१६८।।

सब गुणहानि निषेक का, पूर्णथिती वर्त्त मान ।
थिति में उनका भाग दे, इक गुणहानी मान ।।१६८।।

अर्थ—सब गुणहानियों के निषेक द्रव्य की स्थिति का जितना परिमाण है इसमे सब (नाना) गुणहानियो के परिमाण का भाग देने से जो लब्ध आवे उतना एक गुणहानि के निपेको का परिमाण है।

यहाँ कल्पना दो० न० १६४ के अनुसार है कि सव गुणहानि का परिमाण ६ है, उनके सव निपेको का परिमाण ४८ है। ४८ मे ६ का भाग देने से ८ आता है जो कि एक गुणहानि के निषेको का परिमाण है जितना निषेको का परिमाण है उतना ही उनके झड़ने का समय है ।।१६८।।

आगे दो गुणहानि का परिमाण और उसकी आवश्यकता दिखाते है।

दोगुणहाणिपमाणं णिसेयहारो दु होइ तेण हिदे।
इट्ठे पढमणिसेये विसेसमागच्छदे तत्थ ॥१६९॥

गुणहाणी से द्विगुण है, संख्य निषेकाहार।
जिसके प्रथम निषेक में, भाग दिये चय लार ॥१६९॥

अर्थ—जितना एक गुणहानि का परिमाण है उससे दूना परिमाण दो गुणहानि (निषेकहार) का है इससे यह प्रयोजन निकलता है कि इसका भाग किसी भी गुणहानि के प्रथम निपेक मे देने से उस गुणहानि के चय का परिमाण निकल आता है।

यहाँ कल्पना करिये कि दो गुणहानि का परिमाण १६ है और प्रथम गुणहानि के प्रथम निषेक का परिमाण ५१२ है। ५१२ मे १६ का भाग देने से लब्ध ३२ आता है जो कि प्रथम गुणहानि के चय का परिमाण है। इस प्रकार अन्य गुणहानियो के चय का परिमाण निकलता है ॥१६९॥

आगे किसी भी गुणहानि के चय का परिमाण विधि दिखाते हैं।

रुऊणद्धाणद्धेणूणेण णिसेयभागहारेण।
हदगुणहाणिविभजिदे सगसगदव्वे विसेसा हु ॥१७०॥

इक कम गुणक्षण अर्ध कर, निषेक भागहिं घाट।
गुणहानी गुणि भाग दे, स्वस्व द्रव्यहिं चय वाट ॥१७०

अर्थ—एक कम एक गुणहानि के परिमाण को आधा करके दो गुणहानि के परिमाण मे कम करने से जो परिमाण शेष रहे

उसका एक गुणहानि के परिमाण के साथ गुणा करने से जो परिमाण आवे उसका भाग जिस गुणहानि के द्रव्य मे देने से जो लब्ध आवे वह उस गुणहानि के चय का परिमाण है ।

यहाँ कल्पना करिये कि एक गुणहानि का परिमाण ८ है इसमें १ कम करने से ७ रहते है, ७ को आधा करने से ३॥ रहते है, ३॥ को दो गुणहानि के परिमाण १६ में कम करने से १२॥ रहते है, १२॥ का एक गुणहानि के परिमाण ८ से गुणा करने पर १०० होते है, १०० का भाग प्रथम गुणहानि के द्रव्य ३२०० में देने से लब्ध ३२ आता है जो कि प्रथम गुणहानि के चय का परिमाण है । इसी प्रकार अन्य गुणहानियों के चय का परिमाण निकलता है ॥१७०॥

आगे सब गुणहानियो के द्रव्य का परिमाण दिखाते है ।

रूऊणण्णोण्णब्भत्थवहिददव्वं य चरिमगुणदव्वं ।
होदि तदो दुगुणकमो आदिमगुणहाणि दव्वोत्ति ॥१७१॥

इककमांत का द्रव्य में, भाग अंत गुण दर्व ।
इससे द्विगुणा द्विगुण है, प्रथम हानि तक दर्व ॥१७१॥

अर्थ—एक कम परस्पर गुणित राशि का भाग सब द्रव्य परिमाण मे देने से जो लब्ध आवे उतना अत की गुणहानि के द्रव्य का परिमाण होता है और इससे दूना दूना परिमाण क्रम से प्रथम गुणहानि तक होता है ।

यहाँ कल्पना करिये कि परस्पर गुणित राशि का परिमाण ६४ है, ६४ मे १ कम करने से ६३ रहते है, ६३ का सब द्रव्य के परिमाण (६३००) मे भाग देने से लब्ध १०० आते है जो कि अत की गुणहानि के द्रव्य का परिमाण है इससे दूना दूना परिमाण क्रम से २००, ४००, ८००, १६००, ३२०० प्रथम गुणहानि तक होता है ।१७१।

आगे गुणहानियो के निषेक निकालने की विधि दिखाते है ।

पचयस्स य संकलणं सगसगगुणहाणिदव्वमज्झम्हि ।
अवणियगुणहाणिहिदे आदिपमाणं तु सव्वस्य ।।१७२।।

स्व स्व गुणहानी द्रव्य में, सब चय का कर हान ।
उसमें गुणहानी हले, आदि राशि सब जान ।।१७२।।

अर्थ—अपनी-अपनी गुणहानि के सव चय परिमाण को अपनी अपनी गुणहानि के द्रव्य मे कम करने से जो परिमाण शेष रहे उसमे एक गुणहानि के परिमाण का भाग देने से जो लब्ध आवे वह अपनी अपनी गुणहानि के अत के निपेक का परिमाण है इसमे क्रम से अपने अपने चय का परिमाण जोडने से अपनी अपनी गुणहानि के सव निषेको का परिमाण निकल आता है ।

कल्पना करिये कि प्रथम गुणहानि के सव चय का परिमाण ८९६ है और द्रव्य का परिमाण ३२०० है ३२०० मे ८९६ कम करने से २३०४ रहते है इसमे १ गुणहानि के परिमाण ८ का भाग देने से लब्ध २८८ आते है जो कि इसके अतिम निषेक का परिमाण है इसमे क्रम से ३२—३२ चय परिमाण जोडने से शेष निषेको का परिमाण ३२०, ३५२, ३८४, ४१६, ४४८, ४८०, ५१२ आता है इसी प्रकार अन्य गुणहानियो के निषेक निकलते है ।

गुणहानियो के सव चय धन निकालने की विधि इस प्रकार है कि जिस गुणहानि के अतिम निषेक के परिमाण को एक गुणहानि के परिमाण से गुणा करने पर जो परिमाण आवे उसको उस द्रव्य के परिमाण मे कम करने से जो परिमाण आवे वह उस गुणहानि के सब चय धन का परिमाण है ।

उपरोक्त कल्पना से प्रथमगुणहानि के अतिम निषेक का परिमाण २८८ है और एक गुणहानि का परिमाण ८ है, २८८ मे ८ का गुणा करने से २३०४ निकलते है इसको द्रव्य के परिमाण

३२०० मे कम करने ८६६ शेप रहते है जो कि इस गुणहानि के सव चय धन का परिमाण है इस प्रकार अन्यगुणहानियो के सब चय धन का परिमाण निकलता है ।।१७२।।

आगे दो गुणहानि और एक गुणानि को सब जगह समान दिखाते है ।

सव्वासिं पयडीणं णिसेयहारो य एयगुणहाणी ।
सरिसा हवंति णाणागुणहाणिसलाउ वोच्छामि ।।१७३।।

इकगुणहानि निषेक हर, सब प्रकृतिनि में तुल्य ।
नाना गुणहानी शला, इसका कथन अतुल्य ।।१७३।।

अर्थ—सव मूल और उत्तर प्रकृतियो मे दो गुणहानि (निपेक-हार) और एक गुणहानि का काल तथा निषेको का परिमाण समान होता है किन्तु नानागुणहानि का परिमाण समान नही होता इस-लिये उसके परिमाण को दिखाता हूँ ।।१७३।।

आगे ७० कोडाकोडी की नानागुणहानि का परिमाण दिखाते है

मिच्छत्तस्स य उत्ता उवरीदो तिण्णि तिण्णि संमिलिदा ।
अट्ठगुणेणूणकमा सत्तसु रइदा तिरिच्छेण ।।१७४।।

कहे गये मिथ्यात्व के, त्रय त्रय परें मिलाय ।
क्रमसे अठ अठ गुणे कम, सप्तहिं तिरछ रचाय।१७४

अर्थ—जो मिथ्यात्व की उत्कृष्ट स्थिति सम्वन्धी नानागुणहानि का परिमाण दोहा न० १६६ मे वतलाया है उसका परिमाण ऊपर के ३-३ वर्गस्थानो के अर्धछेदो के परिमाण से ८—८ गुणा कम है उसकी ७ पक्तियाँ वनाना चाहिये ।

दोहा न० १६६ मे कल्पना से पल्य के प्रथम मूल का परिमाण २५६ पल्य के द्वितीय वर्गमूल का परिमाण १६ और पल्य के तृतीय वर्गमूल का परिमाण ४ बतलाया है तथा इनके अर्धच्छेदो का परिमाण ८+४+२=१४ बतलाया है जो कि मिथ्यात्व कर्म की उत्कृष्ट स्थिति सम्बन्धी नानागुणहानि का परिमाण है प्रथम वर्गमूल (२५६) के ऊपर ३ वर्ग स्थानो के अर्धच्छेद १६+३२+६४=११२ होते है इनसे वे (१४) आठ गुणे कम है इस तरह आगे २ के ३–३ वर्ग स्थानो से पीछे २ के ३–३ वर्ग स्थान आठ आठ गुणे कम होते जाते है यहाँ कम-बढ से कुछ प्रयोजन नही है प्रयोजन पल्य के प्रथममूल से लेकर पल्य के तृतीय मूल के परिमाण से और इनके अर्धच्छेदो के परिमाण से है इसलिये इनकी ७ पक्तियाँ बनाना चाहिये जिससे १० कोडाकोडी सागर से लेकर ७० कोडाकोडी सागर की स्थिति की नानागुणहानि के परिमाण का बोध हो ॥१७४॥

वर्गमूलो का परिमाण और उनके अर्धच्छेदो का परिमाण

(१)	२५६, १६, ४ ।	८+४+२=१४
(२)	२५६, १६, ४ ।	८+४+२=१४
(३)	२५६, १६, ४ ।	८+४+२=१४
(४)	२५६, १६, ४ ।	८+४+२=१४
(५)	२५६, १६, ४ ।	८+४+२=१४
(६)	२५६, १६, ४ ।	८+४+२=१४
(७)	२५६, १६, ४ ।	८+४+२=१४

आगे १० कोडाकोडी की नानागुणहानि का परिमाण दिखाते है

तत्थंतिमच्छिदिस्स य अट्ठमभागो सलायछेदा हु ।
आदिमरासिपमाणं दसकोडाकोडिपडिबद्धे ॥१७५॥

अंत छेद् अठ भाग सम, शला छेद् यहँ जान।
आदि राशि के बराबर, दश को कोडी मान ॥१७५॥

अर्थ—यहाँ अंत (पल्य) के अर्धच्छेदो के आठ मे भाग शलाका के अर्धच्छेद होते है शलाका के अर्धच्छेदो के बराबर आदिराशि का परिमाण है और आदिराशि के बरावर १० कोडाकोडी की नाना गुणहानि का परिमाण है ॥१७५॥

शलाका—जितने वर्ग करने पर पल्यराशि उत्पन्न हो उतने वर्गो को शलाका कहते है यहाँ कल्पना करिये कि पल्य का परिमाण ६५५३६ है यह राशि २ के वर्ग से लेकर ४ बार वर्ग करने पर उत्पन्न होती है इसलिये इस राशि की ४ वर्गशलाका होती है इस परिमाण को शलाका कहते है।

आदिराशि—प्रथम वर्गशलाका के वर्गमूल को आदिराशि कहते है कल्पना करिये कि प्रथमवर्ग शलाका का परिमाण ४ है इसका वर्गमूल २ है इस (२) को आदिराशि कहते है ॥१७५॥

आगे १०,२० आदि की नानागुणहानि का परिमाण दिखाते है।

इगिपंतिगदं पुध पुध अप्पिट्ठेण य हदे हवे णियमा।
अप्पिट्ठस्स य पंती णाणागुणहाणिपडिबद्धा ॥१७६॥

इक इक पंक्तिहिं भिन्न भिन, आप इष्ट हत ठान।
आप इष्ट की पंक्तियां, सो नाना गुणहानि ॥१७६॥

अर्थ—उपरोक्त पक्तियो में से १–१ पक्ति के परिमाण को अलग-अलग रखकर इन फलराशियो मे अपने २ इष्ट का गुणा देकर अपने २ परिमाण का भाग देने से अपनी २ नाना गुणहानि का परिमाण आता है ॥१७६॥

कल्पना से उपरोक्त ७ पक्तियो का परिमाण दोहा न० १७४ मे १४–१४ बतलाया है उनमे १०, २०, ३०, ४०, ५०, ६०, ७० का गुणा करने से १४०, २८०, ४२०, ५६०, ७००, ८८०, ९८० आते है इन प्रत्येक मे ७० का भाग देने से लब्ध क्रमसे २, ४, ६, ८, १०, १२, १४ आते है जो कि १० कोडाकोडी सागरादि की स्थिति सम्बन्धी नाना गुणहानि का परिमाण है ॥१७६॥

आगे उपरोक्त आशय को दूसरी रीति से दिखाते है ।

अप्पिदपंतिचरिमो जेत्तियमेत्ताण वग्गमूलाणं ।
छिदिणिवहोत्ति णिहाणिय सेसं य य मेलिदे इट्ठा ॥१७७॥

निज निज इष्ट जु पंक्ति में, जिते अंत थल मान ।
वर्गमूल के छेद उन, मिलें इष्ट स्वस्व जान ॥१७७॥

अर्थ—अपनी २ इष्ट पक्तियो मे जितने अतस्थान हो उतने वर्गमूलो के अर्धच्छेदो को आगे-आगे मिलाने से अपनी २ नाना गुण-हानि का परिमाण आता है ॥१७७॥

कल्पना से अपनी २ पक्तियो के अतस्थान का परिमाण दोहा न० १७४ मे ४ बतलाया है इसके अर्धच्छेदो का परिमाण २ होता है इसको ७ जगह रखकर आगे २ जोडने से क्रमसे परिमाण २, ४, ६, ८, १०, १२, १४ आता है जो कि १० कोडाकोडी सागर से लेकर ७० कोडाकोडी सागर की नाना गुणहानि का परिमाण है।१७७

आगे परस्पर गुणित राशि का परिमाण दिखाते है ।

इट्ठसलायपमाणे दुगसंवग्गे कदे दु इट्ठस्स ।
पयडिस्स य अण्णोण्णभत्थपमाणं हवे णियमा ॥१७८॥

इष्ट शला के बराबर, दो दो अंक गुणाय।
इष्ट प्रकृति की परस्पर, गुणित राशि प्रकटाय ॥१७८॥

अर्थ—अपनी २ नाना गुणहानि के परिमाण बराबर २–२ के अंक लिखकर उनको परस्पर गुणने से जो परिमाण आवे वह अपनी अपनी परस्परगुणितराशि का परिमाण है ॥१७८॥

जो कल्पना से १० कोडाकोडी सागर से लेकर ७० कोडाकोडी सागर की नाना गुणहानि का परिमाण (२, ४, ६, ८, १०, १२, १४) दोहा न० १७६ मे बतलाया है उतने २ परिमाण के बराबर २–२ के अक रखकर उनको परस्पर गुणा करने से जो परिमाण आवे वह उस परस्परगुणितराशि का परिमाण है जैसे—

१० कोडाकोडी सागर २×२=४
२० ,, ,, २×२×२×२=१६
३० ,, ,, २×२×२×२×२×२=६४
४० ,, ,, २×२×२×२×२×२×२×२=२५६
५० ,, ,, २×२×२×२×२×२×२×२×२×२
=१०२४
६० ,, ,, २×२×२×२×२×२×२×२×२×२
२×२=४०९६
७० ,, ,, २×२×२×२×२×२×२×२×२×२
×२×२×२×२=१६३८४

आगे मोह और आयु के विना शेषो की परस्पर गुणित को दिखाते है।

आवरणवेदणीये विग्घे पल्लस्स विदियतदियपदं ।
णामागोदे विदियं संखातीदं हवंतित्ति ॥१७९॥

विघ्न ज्ञान दृग तृतीय में, पल्य दोय त्रय मूल।
नाम गोत्र में द्वितीय गुणि, अगणित गुणा न भूल॥१७९

अर्थ—ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, वेदनी और अतराय कर्म की परस्पर गुणित राशि का परिमाण पल्य के द्वितीय वर्गमूल के परिमाण को पल्य के तृतीय वर्गमूल के परिमाण से गुणा करने पर जो परिमाण आवे उतना (असख्यात) है कल्पना करिये कि द्वितीय वर्गमूल का परिमाण १६ और तृतीय वर्गमूल का परिमाण ४ है इनका परस्पर गुणें ६४ होते है जो कि उपरोक्त कर्मों की परस्पर गुणित राशि का परिमाण है नाम और गोत्रकर्म की परस्पर गुणित राशि का परिमाण पल्य के द्वितीय वर्गमूल से गुणित (असख्यात) है कल्पना करिये कि पल्य के द्वितीय वर्गमूल का परिमाण ४ है इस चार का चार से गुणा करने पर १६ होते है जो कि उपरोक्त कर्मों की परस्परगुणितराशि का परिमाण है॥१७९॥

आगे आयु की नानागुणिहानि निकालने की विधि दिखाते है।

आउस्स य संखेज्जा तप्पडिभागा हवंति णियमेण।
इदि अत्थपदं जाणिय इट्ठठिदिस्साणएमदिमं॥१८०॥

आयू के प्रतिभाग सब, संख्याते ही मान।
इष्ट थान लख इष्ट थिति, सब जाने बुधिमान॥१८०॥

अर्थ—आयु कर्म के प्रतिभाग (स्थिति) सख्यात हैं इसलिये इसकी नानागुणहानि और परस्परगुणित राशि का परिमाण गणित द्वारा किसी अन्य स्थिति की नानागुणहानि और परस्पर गुणित राशि का परिमाण से बुद्धिमानो को निकाल लेना चाहिये॥१८०॥

आगे १—१ समय कम निषेको की स्थिति दिखाते है।

उक्कस्सट्ठिदिबंधे सयलाबाहा हु सव्वट्ठिदिरयणा ।
तक्काले दीसदि तो धोधो बंधट्ठिदीणं य ॥१८१॥

वर थिति बंधहिं उस क्षणहिं, आबाधाथिति उच्च ।
सब थिति की रचना निरख, बंध थिती निचनिच्च ।१८१

अर्थ—किसी प्रकृति का उत्कृष्टस्थितिबध होने पर उसी समय उस स्थिति की आबाधाकाल और निपेक रचना (झडने का क्रम) निश्चित होती है इसलिये उस स्थिति के अत के निषेक से नीचे २ प्रथम निषेक तक १–१ समय कम स्थिति होती है ॥१८१॥

आगे उपरोक्त आशय को और दिखाते है ।

आबाधाणं विदियो तदियो कमसो हि चरमसमयो दु ।
पढमो बिदियो तदियो कमसो चरिमो णिसेओ दु ॥१८२॥

आबाधा के दोय त्रय, क्रम से अंतिम काल ।
प्रथम द्वितिय त्रय धार क्रम, अंत निषेक सँभाल ॥१८२

अर्थ—उस प्रकृति बध होने के पश्चात् आबाधाकाल का द्वितीय समय, तृतीय समय प्रारभ होकर क्रम से उस आबाधा का अत समय आता है इसके पश्चात् प्रथम समय में प्रथम निषेक, द्वितीय समय मे द्वितीय निपेक और तृतीय समय मे तृतीय निषेक उदय मे आकर खिर जाता है इसी क्रम से खिरते २ अत के समय में अत का निपेक उदय मे आकर खिर जाता है ॥१८२॥

आगे वध, उदय और सत्व द्रव्य का परिमाण दिखाते है ।

समयपवद्धपमाणं होदि तिरिच्छेण वट्टमाणम्मि ।
पडिसमयं बंधुदओ एक्को समयप्पवद्धो दु ॥१८३॥

सत्तं समयपबद्धं दिवड्ढगुणहाणिताडियं ऊणं ।
तियकोणसरूवट्ठिददव्वे मिलिदे हवे णियमा ॥१८४॥

संख्या समयप्र-बद्ध की, तिरछी वर्त जुमान।
बंध उदय प्रति समय में, क्षण प्रबद्ध इक जान ॥१८३
सत्ता कुछ कम डेड गुण, हानि समय बध गुण्य ।
द्रव्य तिकोण स्वरूप का, जोड़ उताही चुण्य ॥१८४॥

अर्थ—जैसी एक समयप्रवद्ध के परिमाण की तिरछी निषेक रचना वर्तमान समय मे होती है वैसी रचना रूप प्रतिसमय १ समयप्रबद्ध का बध और उदय होता है किन्तु कुछ कम डेढ गुणहानि के परिमाण से एक समयप्रबद्ध के परिमाण को गुणा करने से जो परिमाण आवे उतना सत्ता द्रव्य का परिमाण सदा विद्यमान रहता है उसका परिमाण त्रिकोण रचना के सब द्रव्य को जोड देने से जो परिमाण आवे उतना है ॥१८४॥

आगे त्रिकोण यत्र के जोडने की विधि दिखाते है ।

उवरिमगुणहाणीणं धणमंतिमहीणपढमदलमेत्तं ।
पढमे समयप्रबद्धं ऊणकमेणट्ठिया तिरिया ॥१८५॥

धण अंतिम कम प्रथम अध, ऊपर भी गुण हान ।
प्रथम जु समय प्रबद्ध कम, क्रमसे थिति तिरछान॥१८५

भावार्थ—जिस समयप्रवद्ध का एक भी निषेक न गला हो उसकी अत की गुणहानि के अत निषेक से लेकर प्रथमगुणहानि के प्रथमनिषेक तक जितने निषेक हो उनको तिरछी रचना रूप लिखकर इसके प्रारभ के निपेक को छोडकर शेप निषेको के ऊपर

जिस समयप्रवद्ध का एक निपेक गल गया हो उस निषेक को छोडकर शेप निपेको को लिखना चाहिये इसी प्रकार जिन समय-प्रवद्धो के दो आदि निषेक गल गये हो उनको लिखना चाहिये ऐसा लिखने से तीन कोन का एक यत्न वन जाता है इस यत्न का जितना जोड है उतना सब सत्ता द्रव्य का परिमाण है जो कि कुछ कम डेढ गुणहानि से एक समयप्रवद्ध को गुणे जो परिमाण आवे उतना है ॥१८५॥

यहा कल्पना करिये कि एक समयप्रबद्ध का परिमाण ६३०० है उसमे छै गुणहानि है प्रत्येक गुणहानि मे ८–८ निपेक है उन निषेको का परिमाण क्रमसे ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १८, २०, २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ४०, ४४, ४८, ५२, ५६, ६० ६४, ७२, ८०, ८८, ९६, १०४, ११२, १२०, १२८, १४४, १६०, १७६, १९२, २०८, २२४, २४०, २५६, २८८, ३२०, ३५२, ३८४, ४१६, ४४८, ४८०, ५१२ है इन ४८ अको को तिरछी रचना रूप लिखकर इनमे ९ के अक छोड कर शेष अंको पर ५१२ के निषेक को छोड़कर लिखना चाहिये इसी प्रकार ९–१० आदि के अको को छोडकर शेप अंको पर ५१२, ४८० आदि के अको को छोड-छोड कर लिखने से एक तीन कोन का ४८ पक्ति वाला यत्र वन जाता है जिस के जोड का परिमाण क्रम से ९, १९, ३०, ४२, ५५, ६९, ८४, १००, ११८, १३८, १६०, १८४, २१०, २३२, २३८ ३००, ३३६, ३७६, ४२०, ४६८, ५२०, ५७६ ६३६, ७०० ७७२, ८५२, ९४०, १०३६, ११४०, १२५२, १३७२, १५००, १६४४, १८०४, १९८०, २१७२, २३८०, २६०४, २८४४, ३१००, ३३८८, ३७०८, ४०६०, ४४४४, ४८६०, ५३०८, ५७८८, ६३०० है इन सवका जोड ७१३०४ है जो कि सत्ता द्रव्य का परिमाण है गुणहानि का परिमाण ८ है इसका ड्योढा किये १२ होते है समयप्रवद्ध का परि-माण ६३०० है ६३००×१२=७५६०० होते है, सत्ता द्रव्य का

परिमाण ७१३०४ है इससे कुछ कम डेढगुणहानि से एक समय प्रवद्ध को गुणे जो परिमाण आवे उतना है ॥१८५॥

आगे सैनी के सात कर्मो की निरतर स्थिति के भेद दिखाते है ।

अंतोकोडाकोडिट्ठिदित्ति सव्वे णिरंतरट्ठाणा ।
उक्कस्सट्ठाणादो सण्णिस्स य होंति णियमेण ॥१८६॥

अंतः कोडा कोडि तक, जेष्ठ थान से मान ।
अंतर बिन थल समन के,इक इक क्षण कम जान॥१८६

अर्थ—सैनी जीव की उत्कृष्ट स्थिति (७० कोडाकोडी सागर) से लेकर जघन्य स्थिति (अत कोडा कोडी सागर) तक १-१ समय कम का क्रम लिये हुये जो निरतर स्थिति के भेद है वे सख्यात पल्य के परिमाण बरावर हैं ॥१८६॥

आगे सैनी के अतर सहित असैनी के अतररहित भेद दिखाते है

संखेज्जसहस्साणिवि सेढीरूढम्मि सांतरा होंति ।
सगसगअवरोत्ति हवे उक्कस्सादोदु सेसाणं ॥१८७

संख्य सहस अंतर सहित, श्रेणिरूढ थिति थान ।
निज निज वरसे जघन तक,अंतर विन क्रम जान॥१८७

अर्थ—सम्यक्त्व के सन्मुख मिथ्यादृष्टि, देशविरत के सन्मुख सम्यक्दृष्टि, सकल सयम के सन्मुख देशव्रती और उपशम अथवा क्षपकश्रेणी के सन्मुख अप्रमत्तादि ४ गुणस्थान वाले अतर सहित (१–१ समय कम के नियम रहित) स्थिति के भेद सख्यात हजार है और सैनी को छोड कर शेप १२ जीव समासो मे अपनी २

उत्कृष्ट स्थिति से लेकर अपनी २ जघन्य स्थिति तक १-१ समय कम का क्रम लिये हुये अतर रहित स्थिति के भेद होते है ।।१८७।।

आगे मूल प्रकृतियो के स्थितिबधक भावो के स्थान दिखाते है

आउट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणा असंखलोगमिदा ।
णामागोदे सरिसं आवरणदु तदियविग्घे य ।।१८८

सव्वुवरि मोहणीये असंखगुणिदक्कमा हु गुणगारो ।
पल्लासंखेज्जदिमो पयडिसमाहारमासेज्जा ।।१८९।।

वयथिति बंधजु भाव थल, जग असंख्य परिमाण।
नाम गोत्र सम ज्ञान दृग, तृतिय विघ्न के जान।।१८८।।

सब में बहु हैं मोह के, अगणित गुणि क्रम धार ।
पल्य असंख्ये गुणाकर, प्रकृति ढेर उरधार ।।१८९।।

अर्थ—आयुकर्म के स्थितिबधक परिणाम स्थान सबसे कम है तो भी यथायोग्य असख्यात लोक बराबर है उनसे पल्य के असख्यातवे भाग गुणे नाम और गोत्रकर्म के है किन्तु इन दोनो के परस्पर समान हैं इनसे भी पल्य के असख्यातवे भाग गुणे ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, वेदनी और अतराय कर्म के है किन्तु इन चारो के परस्पर समान है इनसे पल्य के असख्यातवे भाग गुणे मोह कर्म के है इस प्रकार मूल प्रकृति सम्बन्धी स्थिति के भेदो की अपेक्षा तीनो जगह क्रम से असख्यात गुणे स्थितिवध के परिणाम स्थान है यहाँ तीन जगह गुणाकार का परिणाम पल्य का असख्यातवाँ भाग है ।।१८८-१८९।।

आगे उत्कृष्ट तक परिणाम स्थानो को परिमाण दिखाते है ।

अवरट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणा असंखलोगमिदा ।
अहियकमा उक्कस्सट्ठिदिपरिणामोत्ति णियमेण ॥१९०॥

लघु थिति बंधक भाव थल, जग असंख्य परिमाण।
इससे वरथिति तक क्रमा, इक इक चय अधिकान।। १९०

अर्थ—मोहकर्म की जघन्य स्थिति अत कोडाकोडी सागर (सख्यातपल्य) है और उत्कृष्ट स्थिति ७० कोडाकोडी सागर है सो जघन्य से उत्कृष्ट सख्यात गुणी है इस उत्कृष्ट मे से जघन्य कम करने पर जो परिमाण शेष रहे उसमे १ समय मिलाने से जो परिमाण हो उतने स्थिति के भेद है इन भेदो मे सब से जघन्य स्थिति के बधक जो परिणाम है वे असख्यातलोक बराबर है इससे आगे उत्कृष्ट स्थिति तक क्रम से १–१ चय (वृद्धि) अधिक२ है।१९०।

आगे उस चय के परिमाण निकालने की विधि दिखाते हैं ।

अहियागमणणिमित्तं गुणहाणी होदि भागहारो दु ।
दुगुणं दुगुणं वड्ढी गुणहाणिं पडि कमेण हवे ॥१९१॥

गुणहानी में चय अरथ, दो का भाग कराय ।
क्रमसे प्रति गुणहानी में, द्विगुणद्विगुण चय आय।। १९१

अर्थ—अत गुणहानि के चय का परिमाण निकालना हो तो उस गुणहानि के प्रथम निषेक के परिमाण मे दो गुणहानि के परिमाण का भाग देने से जो लब्ध आवे वह उस गुणहानि के चय का परिमाण है उससे अन्य गुणहानियो के चय का परिमाण दूना २ है यहा कल्पना करिये की अत की गुणहानि के प्रथम निषेक का परिमाण १६ है और दो गुणहानि का परिमाण १६ है १६ मे १६

का भाग देने से लब्ध १ आता है इससे शेष गुणहानि के चय का परिमाण दूना २ (२, ४, ८, १६, ३२) है अथवा किसी भी गुण-हानि के प्रथम निषेक में दो गुणहानि का भाग देने से उस गुणहानि की चय का परिमाण निकल आता है ।।१८१।।

आगे गुणहानि और नानागुणहानि का परिमाण दिखाते है ।

ठिदिगुणहाणिपमाणं अज्झवसाणम्मि होदि गुणहाणी ।

णाणागुणहाणिसला असंखभागो ठिदिस्स हवे ।।१८२।।

थिति गुणहानी बराबर, यहँ भी लख गुणहानि ।

थिति से अगणित भाग कम, यहँ नाना गुणहानि ।।१८२

अर्थ—पूर्व स्थितिबध के कथन करते समय जो गुणहानि का परिमाण बतलाया था उतना ही इस स्थितिबधकपरिणामस्थान मे गुणहानि का परिमाण जानना चाहिये और नानागुणहानि का परिमाण जो पूर्व स्थितिबध के कथन करते समय बतलाया है उस के असख्यातवे भाग कम इस स्थितिबधकपरिणामस्थान मे जानना चाहिये ।।१८२।।

आगे जघन्य चय का महत्व दिखाते हैं ।

लोगाणमसंखपमा जहण्णउड्ढिम्मि तम्हि छट्ठाणा ।

ठिदिबंधऽज्झवसाणट्ठाणाणं होंति सत्तण्हं ।।१८३।।

सातां के थिति बंध के, भाव थलों का मान ।

जघन वृद्धि से असंख्ये, लोक तुल्य षट थान ।।१८३।।

अर्थ—आयु कर्म के विना शेष सात कर्मो के जो स्थितिबधक-परिणामस्थानो का परिमाण जघन्य वृद्धि मे अविभागी अशो की अपेक्षा असख्यातलोक बराबर बताया है उसमें अनतभागवृद्धि आदि छ हानि. वृद्धि, रूप, स्थान पाये जाते है ।।१८३।।

आगे आयुकर्म के स्थितिबधकपरिणामो मे विशेषता दिखाते हैं

आउस्स जहण्णट्ठिदिबंधणजोग्गा असंखलोगमिदा ।
आवलिअसंखभागेणुवरुवरिं होंति गुणिदकमा ॥१९४॥

वय के लघु थिति बंध का, जग असंख्य परिमाण ।
आवलि असंख्य भाग वत्, परें गुणित क्रम जान ॥१९४

अर्थ—आयुकर्म के सब जघन्यस्थितिबध के योग्य परिणाम-स्थान असंख्यातलोक बराबर हैं उससे आगे २ उत्कृष्ट स्थितिबध तक क्रम से आवली के असख्यातवे भाग कर गुणे हुये परिणाम स्थान जानना चाहिये ।

यहाँ पर प्रत्येक स्थिति भेद सम्बन्धी परिमाणो मे नाना जीवो की अपेक्षा जैसे जीवकाड मे अध करण के स्वरूप मे वर्णन किया है वैसे खड पाये जाते है उनको ७ दोहो मे दिखाते हैं ॥१९४॥

आगे जघन्य से उत्कृष्ट खड का परिमाण दिखाते हैं ।

पल्लासंखेज्जदिमा अणुकट्ठी तत्तियाणि खंडाणि ।
अहियकमाणि तिरिच्छे चरिमं खंडं य अहियं तु ॥१९५॥

पल्य असंख्ये भागवत्, कृष्टि पदों का मान ।
क्रमसे तिरछे चय अधिक, अंत खंड अधि कान ॥१९५॥

अर्थ—स्थितिबधकपरिणामस्थानो की अनुकृष्टि (समाना-समान) रचना मे पल्य के असख्यातवे भाग अनुकृष्टि भेदो का परिमाण है और उतने ही अनुकृष्टि खड होते है वे खंड तिरछी रचना किये गये क्रमसे अनुकृष्टि चय से अधिक २ है किन्तु जघन्य खड से अत के खड का परिमाण दूना तिगुना आदि नही है ॥१९५॥

आगे अनुकृष्टि की भेदो मे गुणहानि की रचना का अभाव दिखाते है ।

लोगाणमसंखमिदा अहियपमाणा हवंति पत्तेयं ।
समुदायेणवि तच्चिय ण हि अणुकिट्टिम्मि गुणहाणी ।।१६६।।

जग असंख्य परिमाण है, प्रति इक चय का मान ।
उतने ही समुदाय का, कृष्टि हिं नहिं गुणहान ।।१६६।।

अर्थ—प्रत्येक गुणहानि के प्रति अनुकृष्टि के चय का परिमाण दूना-दूना है तो भी सामान्य से असख्यात लोक बराबर ही है और सब चय समूह के परिमाण को जोडने से भी असख्यातलोक बराबर ही होता है किन्तु अनुकृष्टि भेदो मे गुणहानि की रचना नही है ।।१६६।।

आगे गुणहानियो मे प्रथम २ खड परस्पर असमान दिखाते है।

पढमं पढमं खंडं अण्णोण्णं पेक्खिऊण विसरित्थं ।
हेट्ठिल्लुक्कस्सादोऽणंतगुणादुवरिमजहण्णं ।।१६७।।

पहिले पहिले खंड भी, सम न परस्पर मान ।
नीचे के वर से अमित, गुणे परें लघु थान ।।१६७।।

अर्थ—इसप्रकार अनुकृष्टि रचना रूप किये गये प्रथमादि गुणहानियो मे अनुकृष्टि का पहिला२ खड भी परस्पर समान नही है, कारण तिरछी रचना मे ऊपर २ पहिला २ का खड १—१ चय अधिक है और शक्ति की अपेक्षा से भी अपने २ प्रथमखड के उत्कृष्ट स्थान से ऊपर के प्रथम खड का जघन्य स्थान अनत गुणा है इस कारण पहिले २ खड परस्पर समान नही है शेष समाना-समान है ।।१६७।।

आगे गुणहानियो के द्वितीयादि खडो को असमान दिखाते है।

विदियं विदियं खंडं अण्णोण्णं पोक्खिऊण विसरित्थं ।
हेट्ठिल्लुक्कस्सादोऽणंतगुणादुवरिमजहण्णं ॥१९८॥

दुतिया-दुतिया खंड भी, सम न परस्पर मान ।
नीचे के वर से अमित, गुणे परें लघु थान ॥१९८॥

अर्थ—गुणहानियो के प्रथमादि निषेको का द्वितीय-द्वितीय खड भी परस्पर मे समान नही है कारण नीचले द्वितीय खड के उत्कृष्ट स्थान से ऊपरले द्वितीय खड का जघन्य स्थान १-१ चय से अधिक है और शक्ति की अपेक्षा भी अनत गुणा है इसी प्रकार तृतीय-तृतीय इत्यादि खडो मे समानता नही है ॥१९८॥

आगे गुणहानियो के खडो मे असमानता का कारण दिखाते है ।

चरिमं चरिमं खंडं अण्णोण्णं पेक्खिऊण विसरित्थं ।
हेट्ठिल्लुक्कस्सादोऽणंतगुणादुवरिमजहण्णं ॥१९९॥

अंत अंत का खंड भी, सम न परस्पर मान ।
नीचे के वर से अमित, गुणे परें लघु थान ॥१९९॥

अर्थ—गुणहानि के प्रथमादि निषेको का अन्त-अन्त का खड और गुणहानि के अन्त के निषेको के अत के खड तक १–१ चय अधिक है इस कारण समानता नही है और शक्ति की अपेक्षा नीचे के अत के खड के उत्कृष्ट स्थान से ऊपर के अत के खड का जघन्य स्थान अनतगुणा है इस कारण समानता नही है ॥१९९॥

आगे गुणहानियो मे और भी असमानताका कारण दिखाते हैं ।

हेट्ठिमखंडुक्कस्सं उव्वंकं होदि उवरिमजहण्णं ।
अट्ठंकं होदि तदोऽणंतगुणं उवरिमजहण्णं ॥२००॥

अधः खंड वर उर्वकं, परें जघन अष्टांक।
इस कारण अध खंड से, अमितगुणा अग फंक ॥२००॥

अर्थ—जिसकारण तिरछी रचना मे ऊपर-ऊपर लिखे हुये खडो के अपने-अपने नीचे लिखे हुये खडो के उत्कृष्ट परिणाम-स्थान पूर्व स्थान से अनन्तभागवृद्धि को लिये हुये है इस कारण से नीचले खड के उत्कृष्ट स्थान से ऊपरले जघन्यस्थान अनन्त गुणा कहा है ॥२००॥

आगे नीचे और ऊपर के खडो को छोड कर शेष समान भी दिखाते है।

अवरुक्कस्सठिदीणं जहण्णमुक्कस्सयं य णिव्वग्गं।
सेसा सव्वे खंडा सरिसा खलु होंति उड्ढेण ॥२०१॥

जघन और वर थिती के, लघु वर तुल्य न स्थान।
शेष खंड सव उर्ध के, इक से द्वितिय समान ॥२०१॥

अर्थ—जघन्यस्थिति का कारण जो प्रथम निपेक का जघन्य (प्रथम) खड और उत्कृष्ट स्थिति का कारण जो अत के निपेक का अत का खड ये दोनो किसी भी खड के समान नही है और शेष ऊर्ध खड अन्य खडो के समान है अर्थात् ऊपर २ समानता पाई जाती है इन उपरोक्त, ७ दोहो का कथन वैसा ही है जैसा कि जीवकाड मे अध कारण के स्वरूप का वर्णन करते समय लिखा है अतर केवल शब्दो का है इसके समझने के लिए पहिले इस ग्रन्थ की आदि मे अध करण का नकशा लगा है उसको देख लेना चाहिये ॥२०१॥

आगे आठो कर्मो की रचना लगभग समान दिखाते है।

अट्ठण्हंपि य एवं आउजहण्णट्ठिदिस्स वरखंडं।
जावय तावय खंडा अणुकट्टिपदे विसेसहिया ॥२०२॥

तत्तो उवरिमखंडा सग-सग उक्कस्सगोत्ति सेसाणं ।
सव्वे ठिदियणखंडाऽसंखेज्जगुणक्कमा तिरिये ॥२०३॥

अठ का कथन समान परि, आयु कृष्टि भेदान ।
लघु थिति से वर खंड तक, है विशेष अधिकान ॥२०२
उसके ऊपर खंड से, निज-निज वर तक शेष ।
सब रचना वर खंड की, अगणित गुणि क्रम भेष ॥२०३

अर्थ—आठो कर्मों की रचना जैसी ऊपर कही वैसी ही है किन्तु आयु कर्म के खड अनुकृष्टि भेद मे जघन्य स्थिति के खड से अपने उत्कृष्ट खड तक १–१ चय से अधिक है इससे ऊपर स्थिति खड से अपने २ उत्कृष्ट खड तक तथा शेष स्थितियो के अपने २ जघन्यखड से अपने २ उत्कृष्टखड तक सब बराबर रचना क्रमसे असख्यातगुणी अधिक २ है ॥२०२–२०३॥

आगे जघन्यस्थिति के अनुभाग परिणामस्थानो को दिखाते हैं।

रसबंधऽज्झवसाणट्ठाणाणि असंखलोगमेत्ताणि ।
अवरट्ठिदिस्स अवरट्ठिदिपरिणामम्हि थोवाणि ॥२०४॥

रस वंधक परिणाम थल, अगणित लोक समान ।
लघु थिति में लघु थिती के, भावों से कम जान ॥२०४॥

अनुभानवध के परिणामस्थानो का परिमाण असख्यातलोक को असख्यातलोक से गुणे जो परिमाण (असख्यातलोक) आवे उतना है इसमे जघन्यस्थिति सम्बन्धी स्थितिबध के परिणाम स्थानो मे जघन्यस्थितिवध योग्य परिणामो से असख्यातलोक गुणे अनुभागवध के परिणाम स्थान है तो भी अन्य स्थिति वध के परिणाम सम्वन्धी परिमाणो की अपेक्षा थोडे है ॥२०४॥

आगे जघन्य से बढ़ते २ अनुभाग स्थान दिखाते है।

तत्तो कमेण वड्ढदि पडिभागेण य असंखलोगेण।
अवरट्ठिदिस्स जेट्ठट्ठिदिपरिणामोत्ति णियमेणा ॥२०५॥

पीछे क्रमसे बढत हैं, जग असंख्य प्रति भाग।
लघु थिती से वर थिती के, परिणामा अनुभाग ॥२०५॥

अर्थ—उसके पश्चात् क्रमसे जघन्य स्थिति के जघन्यपरिणाम सम्बन्धी प्रथमनिषेक रूप अनुभागपरिणामस्थानों से लेकर उत्कृष्टस्थिति के उत्कृष्टपरिणाम सम्बन्धी अनुभागपरिणाम-स्थान तक असंख्यातलोक रूप प्रतिभाग हार कर बढते २ अनुभाग-परिणामस्थान जानने चाहिये ॥२०५॥

आगे सामान्य से अनुभागबध का स्वरूप दिखाते है।

सुहपयडीण विसोही तिव्वो असुहाण संकिलेसेण।
विवरीदेण जहण्णो अणुभागो सव्वपयडीणं ॥२०६॥

शुभ का मंद कषाय से, अशुभा तीव्र कषाय।
जघन बंध विपरीत से, सर्व प्रकृति का आय ॥२०६॥

अर्थ—सातावेदनी आदि सब शुभ प्रकृतियो का उत्कृष्टअनु-भागवध मदकपाय से होता है और इनका जघन्यअनुभागवध तीव्र-कपाय से होता है तथा मतिज्ञानावरणी आदि सव अशुभ प्रकृतियों का उत्कृष्ट अनुभागवध तीव्रकपाय से होता है और इनका जघन्य अनुभागवध मद कपाय से होता है ॥२०६॥

आगे उत्कृष्ट अनुभागवध के योग्य जीवो को दिखाते है।

बादालं तु पसत्था विसोहिगुणमुक्कडस्स तिव्वाओ।
वासीदि अप्पसत्था सिच्छुक्कडसंकिलिट्ठस्स ॥२०७॥

ब्यालिस शुभ का बंध वर, पुण्य पुरुष के होय।
ब्यासी अघ का बंध वर, मिथ्यात्वी के जोय ॥२०७॥

अर्थ—दोहा न० ४१–४२ मे कही हुई ४२ पुण्यप्रकृतियो का उत्कृष्ट अनुभागबध विशेष पुण्यवान जीव के होता है और दोहा न० ४३–४४ मे कही हुई ८२ अशुभ प्रकृतियो का उत्कृष्ट अनुभाग वध विशेष मिथ्यादृष्टि जीव के होता है ॥२०७॥

आगे ४२ मे से ४ प्रकृतियो के योग्य पात्र दिखाते हैं।

आदाओ उज्जोओ मणुवतिरिक्खाउगं पसत्थासु।
मिच्छस्स होंति तिव्वा सम्माइट्ठिस्स सेसाओ ॥२०८॥

नर पशु वय आताप अरु, उद्योता चउ भेष।
शुभ मिथ्याधर बंधवर, सम्यक् दृष्टी शेष ॥२०८॥

अर्थ—उपरोक्त ४२ प्रकृतियो मे से आताप १ उद्योत १ मनुष्यायु १ और तिर्यंचायु १ इन ४ प्रकृतियो का उत्कृष्ट अनुभाग-बध मदकषायवाला मिथ्यादृष्टि जीव करता है और शेष ३८ प्रकृतियो का उत्कृष्ट अनुभागबध सम्यक्दृष्टि जीव करता है ॥२०८

आगे उपरोक्त ३८ मे से ६ प्रकृतियो के योग्य पात्र दिखाते हैं

मणुऔरालदुवज्जं विसुद्धसुरणिरयअविरदे तिव्वा।
देवाउ अप्पमत्ते खवगे अवसेसवत्तीसा ॥२०९॥

नर औदा दुक वज्र को, सुर नारक दृग धार।
देव आयु को प्रमत धर, शेष क्षपक नर लार ॥२०९॥

अर्थ–उपरोक्त ३८ प्रकृतियो मे से मनुष्यगति १ मनुष्यगत्यानु-पूर्वी १ औदारिकशरीर १ औदारिकआंगोपाग १ और वज्रवृपभ-

नाराचसंहनन १ इन पाँच प्रकृतियो का उत्कृष्टअनुभागबंध अनंतानुबंधी ४ कषाय का विसंयोजन (अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान और सज्वलनरूप) करने वाला देव अथवा नारकी जीव करता है, देवायु का उत्कृष्ट अनुभागबंध अप्रमत्तगुणस्थान वाला मुनि करता है और शेष ३२ प्रकृतियो का उत्कृष्टअनुभागबंध क्षपकश्रेणीवाला मुनि करता है ।।२०९।।

आगे ३२ प्रकृतियो के नाम दिखाते है ।

उवघादहीणतीसे अपुव्वकरणस्स उच्चजससादे ।

संमेलिदे हवंति हु खवगस्सऽवसेसवत्तीसा ।।२१०।।

कर अपूर्व की तीस में, उपघाता को हीन ।

साता यश अरु उंच मिल, क्षपक बतीसा चीन ।।२१०।।

अर्थ—अपूर्वकरण के छट्ठे भाग मे बंध से छूटी हुई ३० प्रकृतियो में से उपघात को छोडकर शेष २९ प्रकृतियो मे साता, यश और ऊँचगोत्र को मिलाने से ३२ प्रकृतियाँ होती है इनका उत्कृष्ट अनुभागबंध क्षपकश्रेणीवाला मुनि करता है इसकारण इन प्रकृतियो को क्षपकवत्तीसी कहते है ।।२१०।।

आगे ८६ में से १४ प्रकृतियो के योग्य पात्र दिखाते हैं ।

मिच्छस्संतिमणवयं णरतिरियाऊणि वामणरतिरिये ।

एइंदियआदावं थावरणामं य सुरमिच्छे ।।२११।।

नर सुर वय भ्रम अंत नव, बांधे नर पशु वाम ।

थावर ताप रु इकेन्द्रिय, बांधे सुर भ्रम धाम ।।२११।।

अर्थ—अशुभ ८२ शुभ(मनुष्यायु १ तिर्यंचायु १ आताप १ उद्योत) ४ इसप्रकार ८६ प्रकृतियो मे से मिथ्यात्व गुणस्थान मे बंध-

विछुत्ति होने वाली सूक्ष्मादि ९ प्रकृतियो का उत्कृष्ट अनुभागबध तीव्रकषाय वाला मनुष्य और तिर्यंचजीव करता है मनुष्यायु और तिर्यंचायु का उत्कृष्ट अनुभागबध मदकषाय वाला मनुष्य और तिर्यंच-जीव करता है एकेन्द्रिय और स्थावर प्रकृति का उत्कृष्टअनुभागबध तीव्रकषायवाला मिथ्यादृष्टिदेव करता है और आताप प्रकृति का उत्कृष्ट अनुभागबध मद कषाय वाला मिथ्यादृष्टि देव आयु के छ मास शेष रहने पर करता है ॥२११॥

आगे ४ और शेष ६८ प्रकृतियो के योग्य पात्र दिखाते है ।

उज्जोवो तमतमगे सुरणारयमिच्छगे असंपत्तं ।
तिरियदुगं सेसा पुण चदुगदिमिच्छे किलिट्ठे य ॥२१२॥

उद्योता भू सात धर, भ्रम धर नारक देव ।
पशु दुक फाटक बंध वर, शेष सर्व जिय सेव ॥२१२॥

अर्थ—उद्योत प्रकृति का उत्कृष्ट अनुभागबध उपशम सम्यक्त्व के सन्मुख हुआ सातवें नरक का नारकी करता है तिर्यंचगति १ तिर्यंचगत्यानुपूर्वी १ असप्राप्तसृपाटिक सहनन १ इन ३ प्रकृतियों का उत्कृष्ट अनुभागबध मिथ्यादृष्टि देव और नारकीजीव करता है और शेष ६८ प्रकृतियो का उत्कृष्ट अनुभागबध चारोगति के तीव्र कषायवाले मिथ्यादृष्टि जीव करते है ॥२१२॥

आगे ३० मे जघन्य अनुभागबध के योग्य पात्र दिखाते है ।

वण्णचउक्कमसत्थ उवघादो खवगघादि पणवीसं ।
तीसाणमवरबंधो सगसगवोच्छेदठाणम्हि ॥२१३॥

अशुभ वर्ण उपघात अरु, क्षपक घाति पच्चीस ।
जघन बंध इन तीस का, निज २ विछुत्ति शीश ॥२१३॥

अर्थ—अशुभवर्ण ४ उपघात १ ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अंतराय ५ निद्रा १ प्रचला १ हास्य १ रति १ भय १ ग्लानि १ पुरुषवेद १ संज्वलन ४ इन ३० प्रकृतियों का जघन्य अनुभागबंध अपनी-अपनी बंधविच्छुत्ति के समय होता है ॥२१३॥

आगे १६ में जघन्य अनुभागबंध के योग्य पात्र दिखाते है ।

अणथीणतियं मिच्छं मिच्छे अयदे हु विदियकोधादी ।
देसे तदियकसाया संजमगुणपच्छिदे सोलं ॥२१४॥

भ्रम थल भ्रम अन-नीद त्रय, अविरत द्वितिय कषाय ।
देशहिं तृतिय कषाय का, संयम सन्मुख पाय ॥२१४॥

अर्थ—अनंतानुबंधी ४ शयनगृद्धि १ निद्रानिद्रा १ प्रचलाप्रचला १ मिथ्यात्व १ इन ८ प्रकृतियों का जघन्य अनुभागबंध अप्रमत्त-गुणस्थान के सन्मुख हुआ मिथ्यादृष्टि जीव करता है अप्रत्याख्यान की ४ कषायों का जघन्य अनुभागबंध अप्रमत्तगुणस्थान के सन्मुख हुआ सम्यक्दृष्टि जीव करता है और प्रत्याख्यान की ४ कषायों का जघन्य अनुभागबंध अप्रमत्तगुणस्थान के सन्मुख हुआ देशविरत गुणस्थान वाला करता है ॥२१४॥

आगे ३० मे जघन्य अनुभागबंध के योग्य पात्र दिखाते है ।

आहारमप्पमत्तो पमत्तसुद्धे य अरदिसोगाणं ।
णरतिरिये सुहुमतियं वियलं वेगुव्वछक्काओ ॥२१५॥

अरति शोक का प्रमत शुभ, सप्तम में आहार ।
नर पशु के त्रय सू विकल, विक्रिय छै वय चार ॥२१५॥

अर्थ—आहारशरीर और आहारआंगोपांग का जघन्य अनुभाग-बंध प्रमत्तगुणस्थान के सन्मुख हुआ अप्रमत्त-गुणस्थानवाला मुनि

तीव्रकषाय से करता है अरति और शोकप्रकृति का जघन्य अनुभागबध अप्रमत्तगुणस्थान के सम्मुख हुआ प्रमत्तगुणस्थानवाला मुनि मदकषाय से करता है और सूक्ष्म १ अपर्याप्त १ साधारण १ विकलत्रय ३ विक्रियक ६ आयु ४ इन १६ प्रकृतियो का जघन्य-अनुभागबध मनुष्य अथवा तिर्यचजीव करता है ।।२१५।।

आगे उद्योतादि ८ का जघन्य अनुभागबध के पात्र दिखाते है।

सुरणिरये उज्जोवोरालदुगं तमतमम्हि तिरियदुगं।
णीचं य तिगदिमज्झिमपरिणामे थावरेयक्खं ।।२१६।।

द्योत औद दुक सुर नरक, तम-तम पशु दुक नीच।
एकेन्द्रिय अरु थावरा, त्रय गति भाव जु बीच।।२१६।।

अर्थ—औदारिकशरीर १ औदारिकआगोपाग १ उद्योत १ इन तीन प्रकृतियों का जघन्यअनुभागबध देव और नारकीजीव करता है तिर्यचगति १ तिर्यंचगत्यानुपूर्वी १ नीचगोत्र १ इन तीन प्रकृतियो का जघन्यअनुभागबध मदकषायवाला सातवे नरक का नारकी करता है और एकेन्द्रिय १ स्थावर १ इन दो प्रकृतियो का जघन्य-अनुभागबध मध्य भाव वाला तिर्यंच, मनुष्य अथवा देव करता है ।।२१६।।

आगे १९ का जघन्य अनुभागबध योग्य पात्र दिखाते है।

सोहम्मोत्ति य तावं तित्थयरं अविरदे मणुस्सम्हि।
चदुगदिवामकिलिट्ठे पण्णरस दुवे विसोहीये ।।२१७।।

आतप का सौधर्म तक, तीर्थ मनुष सम दृष्टि।
पन्द्रह चहुँ गति वाम धर, तीव्र मंद दो इष्ट ।।२१७

अर्थ—आताप प्रकृति का जघन्यअनुभागबध भवनवासी से लेकर सौधर्मस्वर्ग तक का देव करता है तीर्थंकर प्रकृति का जघन्य-

अनुभागबंध नरक के सन्मुख भया अविरतसम्यक्दृष्टि मनुष्य करता है नीचे लिखी पन्द्रह प्रकृतियों का जघन्यअनुभागबंध तीव्र-कषाय वाले चारोंगति के जीव करते है और दो प्रकृतियों का जघन्यअनुभागबंध मंदकषाय वाले चारों गति के जीव करते है ॥२१७॥

आगे उपरोक्त १५ और दो प्रकृतियों के नाम दिखाते है ।

परघातदुगं तेजदु तसवण्णचउक्क णिमिणपंचिंदी ।
अगुरुलहुं य किलिट्ठे इत्थिणउंसं विसोहीये ॥२१८॥

तिरस वर्ण चउ अगुरुलघु, पंचेन्द्रिय निर्माण ।
परवंध तैजदु तीव्र कीं, मंद षंड तिय जान ॥२१८

अर्थ—त्रस १ वादर १ पर्याप्त १ प्रत्येक १ वर्ण ४ तैजस १ कार्माण १ परघात १ उश्वास १ निर्माण १ पचेन्द्रिय १ अगुरुलघु १ ये पन्द्रह तीव्रकषाय वाले की है और स्त्रीवेद १ नपुसकवेद १ ये दो मदकषाय वाले की है ॥२१८॥

आगे ३१ का जघन्यअनुभागबंध योग्य पात्र दिखाते है ।

सम्मो वा मिच्छो वा अट्ठ अपरियत्तमज्झिमो य जदि ।
परियत्तमाणमज्झिममिच्छाइट्ठी दु तेवीसं ॥२१९॥

अठ का चलमल मध्य चित, सत दृग या भ्रम दृष्टि ।
अरु तेइस का अचल चित, मध्यम मिथ्या दृष्टि ॥२१९

अर्थ—नीचे लिखी हुई ३१ प्रकृतियों मे से प्रथम आठ प्रकृतियों का जघन्यअनुभागबंध अदृढ मध्यम परिणाम वाला सम्यक्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि करता है और शेष २३ प्रकृतियो का जघन्यअनुभाग-बंध दृढ मध्यम परिणाम वाला मिथ्यादृष्टि करता है ॥२१९॥

आगे उपरोक्त ३१ प्रकृतियो के नाम दिखाते है ।

थिरसुहजससाददुगं उभये मिच्छेव उच्चसंठाणं ।
संहदिगमणं णरसुरसुभगादेज्जाण जुम्मं य ॥२२०॥

थिर शुभ यश साता दुका, अठ अरु तेइस मान ।
सुर नर सुभगादेय दुक, उच सँहनन संस्थान ॥२२०

अर्थ—स्थिर १ अस्थिर १ शुभ १ अशुभ १ यश १ अयश १ साता १ असाता १ ये उपरोक्त आठ प्रकृतिया हैं और उचगोत्र १ सहनन ६ सस्थान ६ मनुष्यगति १ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ देवगति १ देवगत्यानुपूर्वी १ सुभग १ दुर्भग १ आदेय १ अनादेय १ चाल २ ये उपरोक्त २३ प्रकृतिया है ॥२२०॥

आगे मूल कर्मो के उत्कृष्टादि भेदो मे भद दिखाते हैं ।

घादीणं अजहण्णोऽणुक्कस्सो वेयणीयणामाणं ।
अजहण्णमणुक्कस्सो गोदे चउधा दुधा सेसा ॥२२१॥

अनवर नाम रु वेदनी, अजघन घाति अशेष ।
अजघन अनवर गोत्र का, चउविधि दो विधि शेष ॥२२१

अर्थ—चारो घातियाकर्मो का अजघन्यअनुभागवध चार प्रकार का होता है सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुव और इनका जघन्य, अनुकृष्ट और उत्कृष्ट अनुभागवध दो प्रकार का होता है सादि और अध्रुव । वेदनी और नामकर्म का अनुत्कृष्ट अनुभागवध चार प्रकार का होता है सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुव तथा इनका जघन्य, अजघन्य, और उत्कृष्टअनुभागवध दो प्रकार का होता है सादि और अध्रुव । गोत्रकर्म का अजघन्य और अनुत्कृष्ट अनुभाग-वध चार प्रकार का होता है सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुव तथा

इसका जघन्य और उत्कृष्टअनुभागबध दो प्रकार का होता है सादि और अध्रुव। आयुकर्म का जघन्य आदि चारों प्रकार का अनुभागबध दो प्रकार का होता है सादि और अध्रुव ॥२२१॥

आगे उत्तर प्रकृतियो के जघन्यादि भेदो मे भेद दिखाते है।

सत्थाणं धुवियाणमणुक्कस्समसत्थगाण धुवियाणं।
अजहण्णं य य चउधा सेसा सेसाणयं य दुधा ॥२२२

शुभ ध्रुव का अनवर तथा, अजघन ध्रुव अशुभान।
चउ प्रकार अरु शेष में, शेषा दो विधि जान ॥२२२

अर्थ—ध्रुवबधी प्रकृतियो मे से तैजस २ अगुरुलघु १ निर्माण १ शुभवर्ण ४ इन आठ शुभप्रकृतियो का अनुत्कृष्टअनुभागबध चार प्रकार का होता है सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुव तथा इनका जघन्य, अजघन्य और उत्कृष्ट अनुभागबध दो प्रकार का होता है सादि और अध्रुव। ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ९ अतराय ५ मिथ्यात्व १ कषाय १६ भय १ ग्लानि १ अशुभवर्ण ४ उपघात १ इन ४३ ध्रुवबधी अशुभ प्रकृतियो का अजघन्य अनुभागबध चार प्रकार का होता है। सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुव इनका जघन्य, अनुत्कृष्ट और उत्कृष्ट अनुभागबध दो प्रकार का होता है। सादि और अध्रुव तथा शेप ७३ अध्रुव प्रकृतियो का जघन्यादि चारो प्रकार का अनुभागबध दो प्रकार का होता है सादि और अध्रुव ॥२२२॥

आगे दृष्टान्त से घातियाकर्मो की शक्ति के भेद दिखाते हैं।

सत्ती य लदादारूअट्ठीसेलोवमाहु घादीणं।
दारु अणंतिमभागोत्ति देसघादी तदो सव्वं ॥२२३॥

लता काठ हड्डी उपल, तुल्य घातिया शक्ति।
काठ अनंतवें भाग तक, देश घाति की शक्ति ॥२२३

अर्थ—घातिया कर्मों की फल देने की शक्ति चार प्रकार की होती है। लता, काठ, हड्डी और पत्थर के समान जैसा २ इनमे क्रमसे कठोरपना अधिक २ है वैसा २ अनुभाग कठोर २ समझना चाहिये। लता समानशक्ति से काठ समान शक्ति के अनतवे भाग तक शक्ति देशघातिनी है और काठ समान शक्ति के अनतवे भाग से लेकर पत्थर भाग तक शक्ति सर्वघातिनी है इसलिये इसके उदय होने पर आत्मा के गुण प्रकट नही होते ॥२२३॥

आगे दृष्टान्त से मिथ्यात्व की शक्ति के भेद दिखाते है।

देसोत्ति हवे सम्मं तत्तो दारूअणंतिमे मिस्सं।
सेसा अणंतभागा अट्ठिसिलाफड्डया मिच्छे ॥२२४॥

देश शक्ति सब साम्य अग, काठ अमित तक मिश्र।
काठ अमित से उपल तक, मिथ्यातम की जिश्र ॥२२४

अर्थ—जितनी मिथ्यात्व कर्म की लता भाग से लेकर काठ भाग के अनतवें भाग तक देशघातिनीशक्ति (स्पर्धक) है वह सम्यक्प्रकृति की है इससे आगे काठ भाग के अनतवे वहुभाग के अनतवे भाग तक मिश्ररूपसर्वघातिनीशक्ति मिश्रप्रकृति की है और इससे आगे शेष पत्थर भाग के अत तक सर्वघातिनी शक्ति मिथ्यात्वप्रकृति की है ॥२२४॥

आगे दृष्टान्त से शेष घातियो के शक्ति भेद दिखाते हैं।

आवरणदेसघादंतरायसंजलणपुरिससत्तरसं।
चदुविधभावपरिणदा तिविधा भावा हु सेसाणं ॥२२५॥

त्रय दर्शन संज्वलन नर, पांच विघ्न चउ ज्ञान।
चार भाव से परणवें, तीन भाव शेषान ॥२२५

अर्थ—ज्ञानावरणी ४ दर्शनावरणी ३ अतराय ५ सज्वलन ४ पुरुषवेद १ ये १७ देशघातिनी प्रकृतियाँ है इसलिये लतादि चारों भाव रूप परिणवन करती है और इनके अतिरिक्त शेष सर्वघातिनी प्रकृतियाँ है इसलिये लता भागके भाग को छोडकर शेष तीन भाव (काठादि) रूप परिणमन करती है ॥२२५॥

आगे अघातियों को पुण्य और पाप रूप दिखाते है ।

अवसेसा पयडीओ अघादिया घादियाण पडिभागा ।

ता एव पुण्णपावा सेसा पावा मुणेयव्वा ॥२२६॥

अघातिया की प्रकृति सब, घाती वत् परिणाय ।

पुण्य पाप के रूप वे, घाती पाप कहाय ॥२२६

अर्थ—शेष अघातिया कर्मो की प्रकृतियां है वे भी घातियाकर्मों की तरह परिणमन करती है ये सब पुण्य अथवा पाप रूप फल देती है किन्तु घातिया कर्मो की सब प्रकृतिया पापरूप फल देती है ॥२२६

आगे दृष्टान्त से पाप और पुण्य के शक्ति भेद दिखाते है ।

गुडखंडसक्करामियसरिसा सत्था हु णिंवकंजीरा ।

विसहालाहलसरिसा ऽसत्थ हु अघादिपडिभागा ॥२२७॥

गुड शक्कर मिश्री तथा, अमृत वत् शुभ मान ।

अशुभ नीम काजी जहर, हालाहल वत् जान ॥२२७

अर्थ—अघातियाकर्मो में जो पुण्य प्रकृतिया है उनकी शक्ति (स्पर्धक) गुड, शक्कर, मिश्री अथवा अमृत के समान होती है और जो अशुभ प्रकृतियां है उनकी शक्ति नीम, काजी, विष अथवा हलाहल के समान होती है ॥२२७॥

आगे प्रदेशबध का स्वरूप दिखाते है ।

एयाक्खेत्तोगाढं सव्वपदेसेहिं कम्मणो जोग्गं ।
बंधदि सगहेदूहिं य अणादियं सादियं उभयं ॥२२८॥

कर्म योग्य इक क्षेत्र थिति, सब प्रदेश से जोय ।
निज कारण से बांधता, नादि सादि या दोय ॥२२८

अर्थ—मिथ्यात्व, अविरत, कषाय और योग के द्वारा अपने सब आत्मप्रदेशो से एक क्षेत्र मे स्थिति कर्मरूप परिणमन के योग्य अनादिरूप, सादिरूप अथवा दोनो रूप पुद्गलो को ग्रहण (बाधता) करता है उसको प्रदेशबध कहते है ॥२२८॥

आगे उपरोक्त एक क्षेत्र का परिमाण दिखाते है ।

एयसरीरोगाहियमेयक्खत्तं अणेयखेत्तं तु ।
अवसेसलोयखेत्तं खेत्तणुसारिट्ठियं रूवी ॥२२९॥

जो इक तन से रुके थल, एक क्षेत्र वह मान ।
शेष जु जगत अनेक थल, थल वत् थिति खंदान ॥२२९

अर्थ—जितना क्षेत्र एक जीव की जघन्य अवगाहना से रुकता है उतने क्षेत्र को एक क्षेत्र कहते हैं शेप सब लोक के क्षेत्र को अनेक क्षेत्र कहते हैं उस एक क्षेत्र मे ठहरे हुये पुद्गलद्रव्य के परिमाण को सब लोक मे ठहरे हुये पुद्गल के परिमाण मे कम करने मे जो परिमाण शेप रहे वह एक क्षेत्र मे ठहरे हुये पुद्गल का परिमाण है यहा घनागुल के असख्यातवे भाग क्षेत्र मे प्रयोजन है ॥२२९॥

आगे योग्यायोग्य पुद्गल और उसके भेद दिखाते है ॥

एयाणेयक्खेत्तट्ठियरूविअणंतिमं हवे जोग्गं ।
अवसेसं तु अजोग्गं सादि अणादी हवे तत्थ ॥२३०॥

इक अनेक थल खंद थिति, कर अनंतवां भाग ।
योग्य रु शेष अयोग्य है, सादि नादि से लाग ।।२३०

अर्थ—एक अथवा अनेक क्षेत्रो मे ठहरा हुआ जो पुद्गल द्रव्य है उस उसके अनतवे भाग पुद्गल परमाणुओ का समूह कर्म रूप होने योग्य है और शेष (अनत बहुभाग बराबर) पुद्गल परमाणुओ का समूह कर्म रूप होने के अयोग्य है इस प्रकार उसके चार भेद होते हैं ।

१ एक क्षेत्र स्थिति कर्मयोग्य पुद्गल परमाणु ।
२ एक क्षेत्र स्थिति कर्म अयोग्य पुद्गल परमाणु ।
३. अनेक क्षेत्र स्थिति कर्म योग्य पुद्गल परमाणु ।
४ अनेक क्षेत्र स्थिति कर्म अयोग्य पुद्गल परमाणु ।

नोट–इन चारो में भी १–१ के सादि और अनादि भेद है ।।२३०।।

आगे एकानेक क्षेत्र स्थिति सादिद्रव्य का परिमाण दिखाते है ।

जेट्ठे समयपवद्धे अतीदकाले हदेण सव्वेण ।
जीवेण हदे सव्वं सादी होदित्ति णिद्दिट्ठं ।।२३१।।

इक वर समय-प्रबद्ध को, गत क्षण से जु गुणाय ।
उसे जीव से फिर गुणे, सादि द्रव्य सब आय ।।२३१

अर्थ—एक समय में उत्कृष्टयोगो के परिणमन से उत्पन्न उत्कृष्टसमयप्रबद्ध के परिमाण को भूतकाल के सब समयो के परिमाण से गुणा करने पर जो परिमाण आवे उसको सब जीवराशि के परिमाण से गुणा करने पर जो परिमाण आवे उतना सब जीव राशि के एक और अनेक क्षेत्र स्थिति योग्य सादिद्रव्य का परिमाण है ।।२३१।।

आगे एकानेक मे योग्यायोग्य सादि द्रव्य का परिमाण दिखाते हैं।

सगसगखेत्तगयस्स य अणंतिमं जोग्गदव्वगयसादी ।
सेसं अजोग्गसंगयसादी होदित्ति णिद्दिट्ठं ॥२३२॥

अमित भाग स्व स्व क्षेत्र के, योग्य सादि है दर्व ।
शेष अनंते भाग है, अयोग्य सादी दर्व ॥ २३२॥

अर्थ—अपने २ एक अथवा अनेक क्षेत्र मे रहने वाले पुद्गलद्रव्य के अनतवे भाग योग्यसादिद्रव्य है और इससे शेष अनतबहुभाग अयोग्यसादि द्रव्य है ॥२३२॥

आगे एकानेक क्षेत्र मे स्थिति योग्यायोग्य अनादिद्रव्य का परिमाण दिखाते है ।

सगसगसादिविहीणे जोग्गाजोग्गे य होदि णियमेण ।
जोग्गा जोग्गाणं पुण अणादिदव्वाण परिमाणं ॥२३३॥

निज निज सादि घटाइये, योग्यायोग्य मँझार ।
योग्यायोग्य अनादि का, फिर परिमाण सँभार ॥ २३३॥

अर्थ—एक क्षेत्र मे ठहरे हुये सब योग्यपुद्गलद्रव्य के परिमाण मे योग्यसादिपुद्गलद्रव्य के परिमाण को कम करने से जो परिमाण शेष रहे उतना योग्यअनादिपुद्गलद्रव्य का परिमाण है ।

एक क्षेत्र मे ठहरे हुये सब अयोग्यपुद्गलद्रव्य के परिमाण मे अयोग्यसादिपुद्गलद्रव्य के परिमाण को कम करने पर जो परिमाण शेष रहे उतना अयोग्यअनादिपुद्गलद्रव्य का परिमाण है ।

अनेक क्षेत्र मे ठहरे हुये सब योग्यपुद्गलद्रव्य के परिमाण मे योग्यसादिपुद्गलद्रव्य के परिमाण को कम करने पर जो परिमाण शेष रहे उतना योग्यअनादिपुद्गलद्रव्य का परिमाण है ।

अनेक क्षेत्र मे ठहरे हुये सब अयोग्यपुद्गलद्रव्य के परिमाण मे अयोग्यसादिपुद्गलद्रव्य के परिमाण को कम करने पर जो परिमाण शेष रहे उतना अयोग्यअनादिपुद्गलद्रव्य का परिमाण है ।।२३३।।

सादि द्रव्य—पूर्व कभी ग्रहण किये हुये हो ऐसे पुद्गलपरमाणुओ के ग्रहण को सादि द्रव्य कहते हैं ।

अनादि द्रव्य—पूर्व कभी ग्रहण नही किये हो ऐसे पुद्गलपरमाणुओ के ग्रहण को अनादिद्रव्य कहते है ।

आगे वध योग्य समयप्रवद्ध का परिमाण दिखाते है ।

सयलरसरूवगंधेहिं परिणदं चरमचदुहिं फासेहिं ।
सिद्धादोऽभव्वादोऽणंतिमभागं गुणं दव्वं ।।२३४।।

फर्श अंत चउ वदल कर, रूप गंध रस सर्व ।
सिद्ध अनंते भाग अरु, अभवि अमित गुण दर्व ।।२३४।।

अर्थ—जो समय प्रवद्ध जीव के साथ वध को प्राप्त होता है वह स्पर्श (शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष) ४ रस ५ गध २ और वर्ण ५ वाला है उसके कर्म परमाणुओ का परिमाण सिद्धराशि के अनतवे भाग है अथवा अभव्यराशि से अनतगुणा है ।।२३४।।

आगे उस समयप्रवद्ध का कर्मो मे वटवारा दिखाते है ।

आउगभागो थोवो णामागोदे समो तदो अहियो ।
घादितियेवि य तत्तो मोहे तत्तो तदो तदिये ।।२३५।।

नाम गोत्र सम घाति त्रय, मोह वेदनी मान ।
क्रम से वहु वहु भाग है, सवसे कम वय जान ।।२३५।।

अर्थ—सव कर्मो मे आयुकर्म का भाग थोडा है इसमे नामकर्म का अधिक है गोत्र कर्म का नाम कर्म के वरावर है इन दोनो से

ज्ञानावरणी कर्म का अधिक है दर्शनावरणी और अतराय का ज्ञानावरणी के बराबर है इन तीनो से मोहकर्म का अधिक है और इससे वेदनी कर्म का अधिक है किन्तु जहाँ जितने कर्मो का बध होता है वहाँ उतने ही कर्मों का भाग होता है जिनका बध नही हुआ है उनका भाग नही होता ।।२३५।।

आगे वेदनीकर्म के अधिक भाग का कारण दिखाते है ।

सुहदुक्खणिमित्तादो बहुणिज्जरगोत्ति वेयणीयस्स ।
सव्वेहिंतो बहुगं दव्वं होदित्ति णिद्दिट्ठं ।।२३६।।

वेदनि सुख दुख हेतु से, बहुत निर्जरा मान ।
इस कारण सब कर्म में, अधिक भाग पहिचान ।।२३६

अर्थ—वेदनीकर्म सुख अथवा दुक्ख का कारण है उस सुख अथवा दुक्ख के उदय मे निर्जरा अधिक होती है इसलिये इसका भाग अधिक है ।।२३६।।

आगे अन्य कर्मो का भाग स्थिति के अनुसार दिखाते हैं ।

सेसाणं पयडीणं ठिदिपडिभागेण होदि दव्वं तु ।
आवलिअसंखभागो पडिभागो होदि णियमेण ।।२३७।।

शेष कर्म के द्रव्य का, थिति से भाग कराय ।
आवलि असंख्य भाग से, सब ही भाग सँभार ।।२३७

अर्थ—वेदनीकर्म को छोडकर शेष सब कर्मो का विभाग स्थिति के अनुसार किया जाता है अर्थात् जिस कर्म की स्थिति अधिक होती है उसको अधिक भाग दिया जाता है जिस कर्म की स्थिति कम होती है उसको कम दिया जाता है और जिस कर्म की स्थिति बराबर होती है उसको बराबर दिया जाता है इसका प्रतिभाग का परिमाण आवली के असख्यातवे भाग बराबर है ।।२३७।।

आगे विभाग करने की रीति दिखाते है ।

बहुभागे समभागो अट्ठण्हं होदि एक्कभागम्हि ।
उत्तकमो तत्थवि बहुभागो बहुगस्स देओ दु ॥२३८॥

वहु भाग हि समभाग कर, दे अठ को इक भाग ।
उसी रीति से फेर भी, वहु को दे वहु भाग ॥२३८॥

अर्थ—कार्माण सम्वन्धी एक समयप्रवद्ध के परिमाण में आवली के असख्यातवे भाग का भाग देकर जो लव्ध आवे उसको अलग रखकर शेष समयप्रवद्ध के परिमाण को आठो कर्मों को समान रूप देकर फिर उस लव्ध में आवली के असख्यातवे भाग का भाग देकर जो लव्ध आवे उसको अलग रखकर शेप द्रव्य को वेदनीकर्म को देकर फिर उस लव्ध मे आवली के असख्यातवे भाग का भाग देकर जो लव्ध आवे उसको अलग रखकर शेप द्रव्य को मोह कर्म को देकर फिर उस लव्ध मे आवली के असख्यातवे भाग का भाग देकर जो लव्ध आवे उसको अलग रखकर शेप द्रव्य के तीन समान भाग कर ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी और अंतराय कर्म को देकर फिर उस लव्ध मे आवली के असख्यातवे भाग का भाग देकर जो लव्ध आवे उसको अलग रखकर शेष द्रव्य के दो समान भाग कर नाम और गोत्र कर्म को देदिया जाता है और उस लव्ध को आयुकर्म को दे देने से जितना जिस पर आता है उतना उसके द्रव्य का परिमाण है । यह परिमाण रूप द्रव्य जिस कर्म पर आता है वह उसी रूप परिणवि जाता है ॥२३८॥

आगे उत्तर प्रकृतियो के विभाग का क्रम दिखाते है ।

उत्तरपयडीसु पुणो मोहांवरणा हवंति हीणकमा ।
अहियकमा पुण णामाविग्घा य ण भंजणं से से ॥२३९॥

मोह ज्ञान दृग भेद में, हीन हीन क्रम मान ।
नाम विघ्न में अधिक क्रम, शेष विभाग न जान ॥२३९॥

अर्थ—ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी और मोहकर्मकी प्रकृतियो मे क्रमसे हीन हीन द्रव्य दिया जाता है। अर्थात् मतिज्ञानावरणी से श्रुतज्ञानावरणी को कम दिया जाता है इत्यादि। नाम और अंतराय कर्म की प्रकृतियो मे क्रमसे अधिक अधिक द्रव्य दिया जाता है। अर्थात् दान-अतराय से लाभ अतराय कर्म को अधिक दिया जाता है इत्यादि और शेष (वेदनी, आयु, गोत्र) कर्मों के भेदो का विभाग नही होता। कारण इनकी प्रकृतियो का वध एक साथ नही होता ॥२३९॥

आगे सर्वघाती और देशघाती द्रव्य का विभाग दिखाते है।

सव्वावरणं दव्वं अणंतभागो दु मूलपयडीणं ।
सेसा अणंतभागा देसावरणं हवे दव्वं ॥२४०॥

मोह ज्ञान दृग भाव में, अमित भाग सब घात ।
शेष अनंते भाग है, देशघाति का ख्यात ॥२४०॥

अर्थ—ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी और मोहकर्म के अपने अपने भाग मे यथायोग्य अनत का भाग देने से जो लब्ध आवे उतना मात्र सर्वघाती द्रव्य है और शेष सब देशघाती द्रव्य है ॥२४०॥

आगे सर्वघातीद्रव्य के परिणाम निकालने का प्रतिभाग दिखाते हैं।

देसावरणण्णोण्णब्भत्थं तु अणंतसंखमेत्तं खु ।
सव्वावरणधणट्ठं पडिभागो होदि घादीणं ॥२४१॥

देश घाति की चर्म का, अनंत संख्या लाग ।
सर्व घातिनी के लिये, घाती का प्रति भाग ॥२४१॥

अर्थ—मतिज्ञानावरणादि ४ देशघाती प्रकृतियो की परस्पर-गुणितराशि का परिमाण अनत सख्या बरावर है। वह सर्वघाती द्रव्य के परिमाण निकालने के लिये घातियाकर्मो का प्रतिभाग है ॥२४१॥

आगे सर्वघाती और देशघाती का विभाग दिखाते है।

सव्वावरणं दव्वं विभंजणिज्जं तु उभयपयडीसु।
देसावरणं दव्वं देसावरणेसु णेविदरे ॥२४२॥

सर्व घातिया द्रव्य का, उभय भाग कर देय।
देश द्रव्य को देश दे, सर्व घाति नहिं लेय ॥२४२॥

अर्थ—सर्वघातीकी प्रकृतियों का द्रव्य सर्वघाती और देशघाती दोनो प्रकृतियो को दिया जाता है और देशघाती प्रकृतियो का द्रव्य देशघाती प्रकृतियों को ही दिया जाता है सर्वघाती की प्रकृतियो को नही दिया जाता है ॥२४२॥

आगे उन प्रकृतियो मे विभाग करने की रीति दिखाते है।

बहुभागे समभागो बंधाणं होदि एक्कभागम्हि।
उत्तकमो तत्थवि बहुभागो बहुगस्स देओ दु ॥२४३ ॥

वहुभाग हिं सम भाग कर, दे सवंध वहुभाग।
इसी रीति से फेरि भी, वहु को दे वहु भाग ॥२४३॥

अर्थ—जिन प्रकृतियों का एक साथ वध हुआ हो उन प्रकृतियों के अपने अपने पिंड द्रव्य को आवली के असख्यातवे भाग का भाग देकर जो लव्ध आवे उसको अलग रखकर शेप द्रव्य को अपनी-अपनी उत्तरप्रकृतियो को समान भागकरके फिर उस लव्ध मे आवली के असख्यातवे भाग का भाग देकर जो लव्ध आवे उसको

अलग रख कर शेप भाग को जिसका अधिक भाग हो उसको देदिया जाता है । इसी तरह से करते करते अन्त लब्ध को जिसको कम देना है उसको दे दिया जाता है ॥२४३॥

आगे उपरोक्त आशय को स्पष्ट दिखाते है ।

घादितियाणं सगसगसव्वावरणीयसव्वदव्वं तु ।
उत्तकमेण य देयं विवरीयं णामविग्घाणं ॥२४४॥

त्रय घाती का निज निजा, सर्व घाति धन रीति ।
क्रम से कम कम देय कर, नाम विघ्न विपरीति ॥२४४

अर्थ—ज्ञानावरणीकर्म का सर्वघाती द्रव्य मतिज्ञानावरणी से लेकर केवलज्ञानावरणी तक क्रमसे कम कम दिया जाता है। इसी रीति से दर्शनावरणी और मोहकर्म का सर्वघाती द्रव्य अपनी अपनी प्रकृतियो को कम कम दिया जाता है। नामकर्म का द्रव्य गति से लेकर निर्माण प्रकृति तक और अतराय कर्म का द्रव्य दान से लेकर वीर्यअतराय तक अधिक अधिक दिया जाता है किन्तु विभाग करने का नियम उपरोक्त प्रकार ही है ॥२४४॥

आगे मोहकर्म के सर्वघाती द्रव्य का विभाग दिखाते है ।

मोहे मिच्छत्तादीसत्तरसण्हं तु दिज्जदे हीणं ।
संजलणाणं भागेव होदि पणणोकसायाणं ॥२४५॥

सत्रह मिथ्या आदि को, हीन हीन धन देय ।
और भाग संज्वलन वत्, नोकषाय पन लेय ॥२४५

अर्थ—मोहकर्म का सर्वघाती द्रव्य मिथ्यात्व १ और अनतानुबधी आदि १६ कषाय इस तरह १७ प्रकृतियो को क्रम से हीन-हीन द्रव्य पूर्व रीति के अनुसार दिया जाता है और देशघाती द्रव्य सज्वलन ४ के समान नोकषाय ५ को दिया जाता है ॥२४५॥

आगे देशद्रव्य का सज्वलन और नोकषाय मे विभाग दिखाते है

संजलणभागबहुभागद्धं अकसायसंगयं दव्वं ।
इगिभागसहियबहुभागद्धं संजलणपडिबद्धं ॥२४६॥

देश द्रव्य में संज्वलन, नोकषाय अध भाग ।
एक भाग वहु भाग अध, सहित संज्वलन भाग ॥२४६

अर्थ—मोहकर्म के देशघाती द्रव्य मे आवली के असख्यातवे भाग का भाग देकर जो लब्ध आवे उसको छोड कर शेष मे आधा भाग ५ नोकषाय का है और उस लब्ध सहित आधा भाग सज्वलन का है ॥२४६॥

आगे उपरोक्त विभाग का भी विभाग दिखाते है।

तण्णोकसायभागो सबंधपणणोकसायपयडीसु ।
हीणकमो होदि तहा देसे देसावरणदव्वं ॥२४७॥

नोकसाय के भाग को, नोकषाय पन लेय ।
क्रम से कम कम देश धन, देश घाति को देय ॥२४७

अर्थ—जो द्रव्य नोकषाय के विभाग मे आया है उसको एक साथ बँधने वाले हास्यादि ५ प्रकृतियो मे क्रमसे कम कम दे दिया जाता है। इसी प्रकार संज्वलन का देशघाती द्रव्य सज्वलन को दिया जाता है किन्तु जहाँ तक जिनका बध होता है वहाँ तक ही उनको दिया जाता है ॥२४७॥

आगे नोकपाय का बध काल का परिमाण दिखाते है।

पुंबंधऽद्धा अंतोमुहुत्त इत्थिम्हि हस्सजुगले य ।
अरदिदुगे संखगुणा णपुंसकऽद्धा विसेसहिया ॥२४८॥

कम मुहूर्त नर बंध क्षण, नारि हास्य युगलान ।
अरति युगल संख्यात गुण, षंड अधिक कुछ जान ॥२४८

अर्थ—पुरुषवेद का निरतर बधकाल अतमुहूर्त (२ आवली) है। स्त्रीवेद का उससे सख्यात गुणा (४ आवली) है। हास्य अथवा रति का उससे सख्यात गुणा (१६ आवली) है। अरति अथवा शोक का उससे सख्यात गुणा (३२ आवली) और नपुसकवेद का उससे कुछ अधिक (४२ आवली) है किन्तु सबका काल अन्तर्मुहूर्त ही है। इनमे वेदो के काल का परिमाण ४८ आता है और शेष नोकषायो के काल का परिमाण भी ४८ आता है। जितना इनके काल मे अतर है उतना ही इनके द्रव्य के परिमाण मे अतर है जो कि अनत है ॥२४८॥

आगे नाम और अतराय कर्म का विभाग दिखाते है।

पणविग्घे विवरीयं संबंधपिडिदरणामठाणेवि ।
पिडं दव्वं य पुणो सबंधसगपिडपयडीसु ॥२४६॥

पंच विघ्न विपरीत अरु, पिंड इतर का बंध ।
नाम थान इक काल में. उलटा भाग प्रबंध ॥२४६॥

अर्थ—जो अतराय कर्म के विभाग मे द्रव्य आता है वह उसकी दान से लेकर वीर्य प्रकृति तक को पूर्व रीति के अनुसार अधिक २ दिया जाता है और जो नाम कर्म के विभाग मे द्रव्य आता है वह उसकी गति से लेकर निर्माण प्रकृति तक को पूर्व रीति के अनुसार अधिक २ द्रव्य दिया जाता है। जैसे २३ के बधस्थान मे तिर्यंचगति १ एकेन्द्रिय १ तीन शरीरो मे १ हुडकसस्थान १ वर्ण १ गध १ रस १ स्पर्श १ तिर्यंचगत्यानुपूर्वी १ अगुरुलघु १ उपघात १ स्थावर १ सूक्ष्म १ अपर्याप्त १ साधारण १ अस्थिर १ अशुभ १ दुर्भग १ अनादेय १ अयश १ निर्माण १ इस तरह २१ विभाग होते है।

इनके विभाग की रीति इस प्रकार है कि आठ कर्मो के विभाग में जो नामकर्म को द्रव्य मिला उसमें आवली के असख्यातवे भाग का भाग देकर जो लब्ध आवे उसको अलग रखकर शेष भाग के २१ भाग कर उपरोक्त २१ प्रकृतियो को १–१ भाग दे दिया जाता है फिर उस लब्ध मे आवली के असख्यातवें भाग का भाग देकर जो लब्ध आवे उसको अलग रख कर शेष भाग को निर्माण प्रकृति को देकर फिर उस लब्ध मे उसी प्रकार भाग देकर अयश को दे दिया जाता है। इसी तरह करते करते अत लब्ध को तिर्यचगति को दे दिया जाता है इसी प्रकार शेष बधस्थानो मे समझना चाहिये और ऊपर १ यश प्रकृति का ही बध होता है वहाँ नाम कर्म का सबद्रव्य १ यशप्रकृति का ही जानना पिडप्रकृति को मिला द्रव्य उसके भेदो में उपरोक्त रीति के अनुसार विभाग कर दिया जाता है। जैसे तीन शरीरो को १ भाग मिला उसमे आवली के असंख्यातवे भाग का भाग देकर जो लब्ध आवे उसको अलग रख कर शेष भाग के ३ भाग कर तीनों को १–१ भाग देकर फिर उस लब्ध में आवली के असख्यातवें भाग का भाग कर जो लब्ध आवे उसको अलग रख कर शेष भाग को कार्माणशरीर को देकर फिर उस लब्ध मे आवली के असख्यातवें भाग का भाग देकर जो लब्ध आवे उसको तैजसशरीर को देदिया जाता है और शेष भागको औदारिक-शरीर को देदिया जाता है। इसी रीति से शेष पिडप्रकृतियो का भाग किया जाता है इस तरह प्रदेशबध द्वारा आये हुये १ समयप्रबद्ध के द्रव्य का विभाग की रीति जानना ।।२४९।।

आगे मूल कर्मो मे उत्कृष्टादि प्रदेशबध के भेद दिखाते है।

छण्हंपि अणुक्कस्सो पदेसबंधो दु चदुवियप्पो दु।
सेसतिये दुवियप्पो मोहाऊणं य दुवियप्पो ।।२५०।।

छै का अन उत्कृष्ट है, चउ विधि प्रदेश बंध।
शेष तीन में दोय विधि, मोह आयु दो गंध ।।२५०।।

अर्थ—मोह और आयु कर्म का जघन्य, अजघन्य, उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशवध दो प्रकार का होता है—सादि और अध्रुव। ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, वेदनी, नाम, गोत्र और अतराय कर्म का अनुत्कृष्ट प्रदेशवध चार प्रकार का होता है—सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुव और इनका जघन्य, अजघन्य और उत्कृष्ट प्रदेशवध दो प्रकार का होता है, सादि और अध्रुव ॥२५०॥

आगे उत्तर प्रकृतियो मे उत्कृष्टादि के भेद दिखाते है।

तीसण्हमणुक्कस्सो उत्तरपयडीसु चउविहो बंधो।
सेसतिये दुवियप्पो सेसचउक्केवि दुवियप्पो ॥२५१॥

उत्तर प्रकृती तीस का, अनुत्कृष्ट विधि चार।
शेष तीन में भेद द्वय, शेष चार दो धार ॥२५१॥

अर्थ—३० उत्तर प्रकृतियो अनुत्कृष्ट प्रदेशवध चार प्रकार का होता है—सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुव, और इनका जघन्य, अजघन्य और उत्कृष्ट प्रदेशवध दो प्रकार का होता है सादि और अध्रुव, तथा शेप ९० प्रकृतियो का जघन्य, अजघन्य, उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशवध दो प्रकार का होता है—सादि और अध्रुव ॥२५१॥

आगे उपरोक्त ३० प्रकृतियो के नाम दिखाते है।

णाणंतरायदसयं दंसणछक्कं य मोहचोद्दसयं।
तीसण्हमणुक्कस्सो पदेसबंधो चदुवियप्पो ॥२५२॥

ज्ञान विघ्न दश दर्श छै, मोह चतुर्दश गंध।
अनुत्कृष्ट इन तीस का, चउविधि प्रदेशबंध ॥२५२

अर्थ—ज्ञानावरणी ५, निद्रा १, प्रचला १, चक्षु १, अचक्षु १, अवधि दर्शनावरणी १, केवलदर्शनावरणी १, अप्रत्याख्यान ४,

प्रत्याख्यान ४, सज्वलन ४, भय १, ग्लानि १, अतराय ५, इन ३० प्रकृतियो का अनुत्कृष्ट प्रदेशवध चार प्रकार का होता है जो ऊपर बतलाया जा चुका है ।।२५२।।

आगे उत्कृष्ट प्रदेशबध के कारण दिखाते है ।

उक्कडजोगो सण्णी पज्जत्तो पयडिबंधोमप्पदरो ।

कुणदि पदेसुक्कस्सं जहण्णये जाण विवरीयं ।।२५३।।

समन पूर्ण वर योग अरु, करे प्रकृति कुछ बंध ।

करता वही प्रदेश वर, लघु उलटा संबंध ।।२५३।।

अर्थ—जो उत्कृष्ट योगो कर सहित हो, सैनी हो, पर्याप्त हो और थोड़ी प्रकृतियो का बध करने वाला हो, वह उत्कृष्ट प्रदेशबध वाला है और इससे विपरीत जघन्य प्रदेशबध वाला है ।।२५३।।

आगे आठो कर्मो मे उत्कृष्ट प्रदेशबध के योग्य पात्र दिखाते है ।

आउक्कस्स पदेसं छक्कं मोहस्स णव दु ठाणाणि ।

सेसाण तणुकसाओ बंधदि उक्कस्स जोगेण ।।२५४।।

आयू का सप्तम विषें, मोह नवम् गुण थान ।

शेषों का गुण सूक्ष्म में, बांधे वर योगान ।।२५४।।

अर्थ—आयु कर्म का उत्कृष्ट प्रदेशबध अप्रमत्त गुणस्थान वाला करता है । मोहकर्म का उत्कृष्ट प्रदेशबध अनिवृत्तिकरण गुणस्थान वाला करता है शेष कर्मो का उत्कृष्ट प्रदेशबध सूक्ष्मसापराय गुणस्थान वाला करता है । इन तीनो स्थानो मे उत्कृष्ट योगो का धारी थोडी प्रकृतियों का बंध करता है ।।२५४।।

आगे प्रकृतियो में उत्कृष्ट प्रदेशबध के योग्य पात्र दिखाते है ।

सत्तर सुहुमसरागे पंचऽणियट्टिम्हि देसगे तदियं ।

अयदे विदियकसायं होदि हु उक्कस्स दव्वं तु ।।२५५।।

छण्णोकसायणिद्दापयलातित्थं य सम्मगो य जदी ।
सम्मो वामो तेरं णरसुरआऊ असादं तु ॥२५६॥
देवचउक्कं वज्जं समचउरं सत्थगमणसुभगतियं ।
आहारमप्पमत्तो सेसपदेसुक्कडो मिच्छो ॥२५७॥

सत्रह सूक्ष्म पांच अनि, प्रत्याख्यान सु देश ।
अविरत तृतीय कषाय का, ज्येष्ठ बंध उपदेश ॥२५५
नोकषाय छै तीर्थ अरु, निद्रा प्रचला दृष्टि ।
सुर नर आयु असात अरु, सम चतुरस इक इष्ट ॥२५६
वज्र चाल शुभ सुभग त्रय, सुर चउ भ्रम अरु दृष्टि ।
सप्तम गुण आहार द्वय, शेषनि मिथ्या दृष्टि ॥२५७

अर्थ—ज्ञानावरणी ५, दर्शनावरणी ४, अतराय ५, यश १, ऊँचगोत्र १, सातावेदनी १ । इन १७ प्रकृतियो का उत्कृष्ट प्रदेशबध सूक्ष्मसापरायगुणस्थान वाला करता है । संज्वलन ४, पुरुष वेद १, इन ५ प्रकृतियो का उत्कृष्ट प्रदेशबध अनिवृत्तिकरण-गुणस्थान वाला करता है । प्रत्याख्यान ४ का उत्कृष्ट प्रदेशबध देशविरत गुणस्थान वाला करता है । अप्रत्याख्यान ४ का उत्कृष्ट प्रदेशबध अविरतगुणस्थान वाला करता है । हास्यादि ६, तीर्थ-कर १, निद्रा १, प्रचला १, इन ९ प्रकृतियो का उत्कृष्ट प्रदेशबध सम्यक्दृष्टि करता है । देवायु १, मनुष्यायु १, वज्रवृषभनाराच-सहनन १, समचतुरस-सस्थान १, देवगति १, देवगत्यानुपूर्वी १, विक्रियशरीर १, विक्रियकआगोपाग १, शुभ चाल १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १, इन १३ प्रकृतियो का उत्कृष्ट प्रदेशवध मिथ्यादृष्टि और सम्यक् दृष्टि दोनो करते है । आहारक शरीर १,

आहारकआगोपाग १ इन दो प्रकृतियों का उत्कृष्ट-प्रदेशबंध अप्रमत्तगुणस्थान वाला करता है और शेष ६६ प्रकृतियो का उत्कृष्ट प्रदेशबध केवल मिथ्यादृष्टि ही करता है। उपरोक्त सब स्थानो मे उत्कृष्ट योगो का ही कार्य जानना ॥२५५–२५७॥

आगे कर्मों में जघन्य प्रदेशबध के योग्य पात्र दिखाते है।

सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स पढमे जहण्णये जोगे।
सत्तण्हं तु जहण्णं आउगबंधेवि आउस्स ॥२५८॥

सूक्षम निगो अपूर्ण के, प्रथम विषें लघु योग।
जघन बंध हो सात का, फिर वय युत भी भोग ॥२५८

अर्थ—सूक्ष्मलब्धिअपर्याप्तिनिगोदिया जीव के अपनी पर्याय के प्रथमसमय मे जघन्ययोग से आयु को छोड़ कर शेष सात कर्मो का जघन्य प्रदेशबध होता है और उस समय आयु का भी बंध होने पर उस जीव के आयु सहित आठो कर्मों का जघन्य प्रदेश-बध होता है ॥२५८॥

आगे प्रकृतियों मे जघन्य प्रदेशबध के योग्य पात्र दिखाते हैं।

घोडणजोगोऽसण्णी णिरयदुसुरणिरयआउगजहण्णं।
अपमत्तो आहारं अयदो तित्थं य देवचऊ ॥२५६॥
चरिमअपुण्णभवत्थो तिविग्गहे पढमविग्गहम्मि ठिओ।
सुहुमणिगोदो बंधदि सेसाणं अवरबंधं तु ॥२६०॥

वय नारक सुर नरक दुक, अमन भाव को धार।
अविरत सुर चउ तीर्थ का, सप्तम में आहार ॥२५६॥

जो थिर अंत अपूर्ण भव, त्रय की पहिली मोड।
बांधे सूक्ष्म निगोद सब, ग्यारह प्रकृती छोड ॥२६०॥

अर्थ—नरकगति २ देवायु १ नरकायु १ इन ४ प्रकृतियो का जघन्यप्रदेशवध परिमाणयोग (घटे, बढे और सम भी रहे) का धारी असैनीपचेन्द्रिय जीव करता है आहारक शरीर २ का जघन्य प्रदेशवध अप्रमत्तगुणस्थान वाला करता है देवगति२ विक्रियकशरीर२ तीर्थकर १ इन ५ प्रकृतियो का जघन्यप्रदेशबध अविरतगुणस्थान वाला करता है और शेप प्रकृतियो का जघन्यप्रदेशवध जो ६०१२ अपर्याप्त भवो मे से अत के भव सम्वन्धी परभवगति की तीन मोडा वाली गति मे से प्रथम मोडा मे ठहरा हुआ जीव करता है। २५६–२६०॥

आगे प्रदेशबध के कारण योग स्थानो के भेद दिखाते है।

योगट्ठाणा तिविहा उपवादेयंतवड्ढिपरिणामा।
भेदा एक्केक्कंपि चोद्दसभेदा पुणो तिविहा ॥२६१॥

योग थान उत्पाद अरु, एकान्ता परिणाम।
इनमें चौदह भेद हैं, उनमें त्रय त्रय ठाम ॥२६१॥

अर्थ—योगस्थान तीन प्रकार का होता है उत्पाद, ऐकान्त और परिणाम। इन तीनो भेदो मे १४ जीव समास की अपेक्षा १४-१४ भेद हैं और इन प्रत्येक १४ भेदो मे भी सामान्य, जघन्य और उत्कृष्ट भेद से ३–३ भेद है ॥२६१॥

आगे उत्पाद योगस्थान का स्वरूप दिखाते है।

उववादजोगठाणा भवादिसमयट्ठियस्स अवरवरा।
विग्गहइजुगइगमणे जीवसमासे मुणेयव्वा ॥२६२॥

योग थान उत्पाद हो, भव थिति पहिले काल।
मोड सरल गति अवर वर, जीव समास सँभाल ॥२६२

अर्थ—सब जीवो के अपनी २ पर्याय धारण करने के प्रथमसमय मे उत्पादयोगस्थान होता है जिसमे जो जीव मोडागति से नवीन-पर्याय धारण करता है उसके जघन्यउत्पादयोगस्थान होता है और जो जीव सीधीगति से नवीनपर्याय धारण करता है उसके उत्कृष्टउत्पादयोगस्थान होता है ॥२६२॥

आगे परिणाम योगस्थान का स्वरूप दिखाते है।

परिणामजोगठाणा सरीरपज्जत्तगादु चरिमोत्ति।
लद्धिअपज्जत्ताणं चरिमतिभागम्हि बोधव्वा ॥२६३॥

देह पूर्ण से अंत तक, भाव योग थल मान।
लब्ध्यपर्याप्त जीव के, अंत त्रिभाग हिं जान ॥२६३॥

अर्थ—सब जीवों के अपनी२ शरीरपर्याप्त पूर्ण हो जाने के समय से लेकर अपनी २ आयु के अत तक परिणामयोगस्थान होता है लब्धि-अपर्याप्त जीव के इसकी आयु मे जो अत का त्रिभाग हो उसके प्रथमसमय से लेकर अतसमय तक स्थिति के सब भेदो मे जघन्य और उत्कृष्टपरिणामयोगस्थान होते है ॥२६३॥

आगे उपरोक्त आशय को और भी स्पष्ट दिखाते है।

सगपज्जत्तीपुण्णे उवरिं सव्वत्थ जोगमुक्कस्सं।
सव्वत्थ होदि अवरं लद्धिअपुण्णस्स जेट्ठं पि ॥२६४॥

निज निज पर्यय पूर्ण से, परें वरावर योग।
लब्ध्यपर्याप्त जीव के, सर्वथिति वरावर योग ॥२६४॥

अर्थ—सब जीवो के अपनी २ शरीरपर्याप्ति पूर्ण होने के समय से लेकर आयु के अंत तक परिणामयोगस्थान उत्कृष्ट भी होते हैं और जघन्य भी संभवते है और उसी तरह लब्धिअपर्याप्त जीवों के अपनी २ स्थिति के सब भेदों मे दोनों प्रकार के परिणाम योग-स्थान होते हैं वे सब बढते भी हैं घटते भी हैं और जैसे के तैसे भी रहते है ॥२६४॥

आगे एकान्तवृद्धियोगस्थान का स्वरूप दिखाते है ।

एयंतवड्ढिठाणा उभयट्ठाणाणमंतरे होंति ।
अवरवरट्ठाणाओ सगकालादिम्हि अतम्हि ॥२६५॥

योग थान एकान्त ह्वै, उभय थान के बीच ।
जघन थान निज काल में, अंत काल वर सीच ॥२६५॥

अर्थ—सब जीवो के उत्पादयोग और परिणामयोगस्थान के बीच (पर्याय धारण करने के दूसरे समय से लेकर शरीरपर्याप्ति के अंत समय तक) मे एकान्तवृद्धियोगस्थान होते हैं इनमे अपने काल के प्रथमसमय मे जघन्यएकान्तवृद्धियोगस्थान होता है और शरीर-पर्याप्ति के अंत के समय मे उत्कृष्टएकान्तवृद्धियोगस्थान होता है उनमे प्रतिसमय असंख्यातगुणी अविभाग प्रतिच्छेदो (जिसके अन्य अंश न हो ऐसे अंशो) की वृद्धि होती है ॥२६५॥

आगे योगस्थानो का परिमाण दिखाते है ।

अविभागपडिच्छेदो वग्गो पुण वग्गणा य फड्डयगं ।
गुणहाणीवि य जाणे ठाणं पडि होदि णियमेण ॥२६६॥

भाग रहित प्रतिछेद अरु, वर्ग वर्गणा मान ।
स्पर्धक गुण हानियुत, थान भेद पन जान ॥२६६॥

अर्थ—सब योगस्थान जगत्श्रेणी के असख्यातवे भाग बराबर है प्रत्येक योगस्थान मे गुणहानिया है प्रत्येक गुणहानि मे स्पर्धक है प्रत्येक स्पर्धक मे वर्गणा है प्रत्येक वर्गणा मे वर्ग है प्रत्येक वर्ग मे अभेद अश है ॥२६६॥

आगे एक स्थान मे गुणहानि गुणहानि मे स्पर्धक दिखाते है।

पल्लासंखेज्जदिमा गुणहाणिसला हवंति इगठाणे ।
गुणहाणिफड्ढयाओ असंखभागं तु सेढीये ॥२६७॥

इक थल में गुणहानि हैं, पल्य असंख्ये भाग ।
स्पर्धक गुणहानि में, श्रेणी अगणित भाग ॥२६७॥

अर्थ—एक योगस्थान में पल्य के असख्यातवे भाग बराबर गुणहानियाँ है और एक गुणहानि मे जगत्श्रेणी के असख्यातवे भाग बराबर स्पर्धक है ॥२६७॥

आगे स्पर्धक मे वर्गणा वर्गणा मे वर्गो का परिमाण दिखाते है।

फड्ढयगे एक्केक्के वग्गणसंखा हु तत्तियालावा ।
एक्केक्कवग्गणाए असंखपदरा हु वग्गाओ ॥२६८॥

अगणित श्रेणी वर्गणा, इक परधक के मांहि ।
अगणित प्रतरा वर्ग हैं, एक वर्गणा मांहि ॥२६८॥

अर्थ—प्रत्येक स्पर्धक मे जगत्श्रेणी मे असख्यातवे भाग बराबर वर्गणा है और प्रत्येक वर्गणा मे असख्यात जगत्प्रदर बराबर वर्ग है ॥२६८॥

आगे प्रत्येक वर्ग मे अभेद अश दिखाते है।

एक्केक्के पुण वग्गे असंखलोगा हवंति अविभागा ।
अविभागस्स पमाणं जहण्णउड्ढी पदेसाणं ॥२६९॥

और एक इक वर्ग में, जग असंख्य अविभाग।
जिसका द्वितिय न भेद है, ताहि कहें अविभाग।। २६९

अर्थ—प्रत्येक वर्ग मे असख्यातलोक वरावर अभेद अश है जिसका द्वितीय भेद न हो सकता हो उसको अभेद अश (अविभाग-प्रतिच्छेद) कहते है ।।२६९।।

आगे एकयोगस्थान मे स्पर्धकादि का परिमाण दिखाते है।

इगिठाणफड्डयाओ वग्गणसंखा पदेशगुणहाणी।
सेढिअसंखेज्जदिमा असंखलोगा हु अविभागा ।।२७०।।

इक थल परधक वर्गणा, अरु प्रदेश गुणहान।
अगणित श्रेणी भाग वत्, जग असंख्य अणुजान ।।२७०

अर्थ—सामान्य से एकयोगस्थान मे सव स्पर्धको का परिमाण, सव वर्गणाओ का परिणाम और सव जीवप्रदेशो मे गुणहानि के काल का परिमाण जगत्श्रेणी के असख्यातवे भाग वरावर है कारण असख्यात के वहुतभेद है विशेप दृष्टि से अतर है वह भावार्थ मे दिखाते है।

भावार्थ—एक गुणहानि के काल मे जितना स्पर्धको का परिमाण है उसको एक योगस्थान मे जितनी गुणहानियो का परिमाण है उससे गुणा करने पर जो परिमाण आवे उतने एक योगस्थान मे स्पर्धक है।

एक स्पर्धक मे जितनी वर्गणाओ का परिमाण है उसको एक योगस्थान मे जितने स्पर्धको का परिमाण है उससे गुणा करने पर जो परिमाण आवे उतनी एक योगस्थान मे वर्गणाओ का परिमाण है।

जगत्श्रेणी के भाग हार के परिमाण से असख्यात गुणा कम एक गुणहानि के काल का परिमाण है इन सव को सामान्य से

जगत्श्रेणी के असख्यातवे भाग बराबर ही कहते है और एक योग-स्थान मे असख्यातलोक बराबर अविभागप्रतिच्छेद होते है ॥२७०॥

आगे उपरोक्त विषय को गुणहानियो द्वारा दिखाते है ।

सव्वे जीवपदेसे दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा ।
उर्पारि उत्तरहीणं गुणहाणिं पडि पदद्धकमं ॥२७१॥

सबही जीव प्रदेश में, डेढ हानि का भाग।
प्रथमा आगे हीन है, हानी अध अध लाग ॥२७१

अर्थ—एक जीव के प्रदेशो (असख्यात) मे कुछ अधिक डेढ गुणहानि का भाग देने पर जो लब्ध आवे उतनी प्रथम गुणहानि की प्रथम वर्गणा (निषेक) का परिमाण है इसमें १–१ चय कम करने पर शेष वर्गणाओं का परिमाण आता है इस प्रथम गुणहानि की वर्गणाओ के परिमाण से आगे २ की गुणहानियो की वर्गणा का परिमाण आधा २ है और उनकी चय का परिमाण आधा-आधा है ॥२७१॥

यहाँ कल्पना की जाती है कि एक जीव के प्रदेशो का परिमाण ३१०० है इसमे कुछ अधिक डेढ गुणहानि का परिमाण (१२ $\frac{७}{६४}$) का भाग देने से लब्ध २५६ आता है जो कि प्रथम गुणहानि की प्रथम वर्गणा का परिमाण है इसमें एक एक चय (१६) कम करने पर प्रथम गुणहानि की द्वितीयादि वर्गणाओं का परिमाण क्रम से २४०, २२४, २०८, १९२, १७६, १६०. १४४ आता है इनसे आधा-आधा परिमाण द्वितीयादिगुणहानियों की वर्गणा और चय का है जो कि नीचे लिखे हुये यत्र से स्पष्ट है इस कथन को जीव के भाव पर लगाना चाहिये कारण यह कथन योग का है पूर्व कहे हुये निषेक झडने का नही है ॥२७१॥

गुणहानि में वर्गणा दर्शक यंत्र

प्र०गु०	द्वि०गु०	तृ०गु०	च०गु०	अ०गु०
२५६	१२८	६४	३२	१६
२४०	१२०	६०	३०	१५
२२४	११२	५६	२८	१४
२०८	१०४	५२	२६	१३
१९२	९६	४८	२४	१२
१७६	८८	४४	२२	११
१६०	८०	४०	२०	१०
१४४	७२	३६	१८	९
१६००	८००	४००	२००	१००

३१००

आगे उपरोक्त आशय को और रीति से दिखाते है ।

फड्ढयसंखाहि गुणं जहण्णवग्गं तु तत्थ तत्थादी ।
विदियादिवग्गणाणं वग्गा अविभागअहियकमा ॥२७२॥

परधक से लघु वर्ग को, गुणे वर्गणा आदि ।
अरु द्वितियादिक वर्गणा, वर्ग अणु क्रम लादि ॥२७२

अर्थ—जघन्यवर्ग का अपने २ स्पर्धक के परिमाण से गुणा करने पर उस २ गुणहानि की प्रथमवर्गणा का परिमाण आता है और द्वितीयादि वर्गणा का परिमाण क्रमसे एक एक अविभाग प्रतिच्छेद (चय) वढने पर होता है ॥२७२॥

इस विपय को कल्पना द्वारा समझाते है कि जघन्य वर्ग का परिमाण ९ है और प्रथमगुणहानि से लेकर अतिमगुणहानि के स्पर्धको का परिमाण क्रम से १६, ८, ४, २, १ है उपरोक्त जघन्य वर्ग ९ के परिमाण को अपनी २ गुणहानि के स्पर्धक के परिमाण से

गुणा करने पर अपनी २ गुणहानि की प्रथम २ वर्गणा का परिमाण क्रमसे १४४, ७२, ३६, १८, ९ आता है और इनकी द्वितीयादि वर्गणाओ का परिमाण एक एक चय (१६, ८, ४, २, १) बढाने से आता है जिसका उपरोक्त यत्र से उलटा होता है यह केवल समझाने की रीति अन्य है आशय ऊपर कह आये वही है ॥२७२॥

गुणहानि में वर्गणा दर्शक यंत्र

प्र०गु०	द्वि०गु०	तृ०गु०	च०गु०	अं०गु०
१४४	७२	३६	१८	९
१६०	८०	४०	२०	१०
१७६	८८	४४	२२	११
१९२	९६	४८	२४	१२
२०८	१०४	५२	२६	१३
२२४	११२	५६	२८	१४
२४०	१२०	६०	३०	१५
२५६	१२८	६४	३२	१६
१६००	८००	४००	२००	१००

३१००

आगे जघन्य से उत्कृष्ट योगस्थान तक वृद्धि दिखाते है।

अंगुलअसंखभागप्पमाणमेत्तऽवरफड्डयावड्ढी ।
अंतरछक्कं सुच्चा अवरट्ठाणादु उक्कस्सं ॥२७३॥

अंगुलभाग असंख्य वत्, लघु स्पर्धक वाढ ।
लघु से लेकर थल तलक, छै अंतर थल काढ ॥२७३॥

अर्थ—छै अतर योगस्थानों को छोड़कर सूक्ष्मलब्धिअपर्याप्त निगोदजीव के होने योग्य जघन्य योगस्थान से लेकर उत्कृष्ट योग स्थान तक सूच्यगुल (चौडागुल) के असख्यातवे भाग बराबर

जघन्यस्पर्धको (शक्तियो) की वृद्धि अर्थात् एक योगस्थान से लेकर द्वितीयादि योगस्थानो मे उपरोक्त रीति से स्पर्धको की बढती होती है ॥२७३॥

आगे बढते २ सैनीपर्याप्त के उत्कृष्ट स्थान दिखाते है ।

सरिसायामेणुवरिं सेढिअसंखेज्जभागठाणाणि ।
चडिदेक्केक्कमपुव्वं फड्डयमिह जायदे चयदो ॥२७४॥

तुल्य काल धारक परें, अगणित श्रेणी थान ।
इक अपूर्व परधक बने, तुल्य वृद्धि को ठान ॥२७४॥

अर्थ—समान काल के धारन करने वाले सब जघन्ययोगस्थानो के ऊपर क्रमसे जगत्श्रेणी के असख्यातवे भाग बराबर स्थानो तक समान वृद्धि होते २ एक अपूर्वस्पर्धक उत्पन्न होता है इसी क्रम से जितना एक गुणहानि के स्पर्धको का परिमाण होता है उतने अपूर्वस्पर्धक उत्पन्न होने पर जघन्ययोगस्थान का परिमाण दूना हो जाता है इसी क्रमसे योगस्थानो का परिमाण भी दूना हो जाता है और अत मे बढते २ सैनी पर्याप्त जीव का सबसे उत्कृष्टयोगस्थान हो जाता है ॥२७४॥

आगे योगस्थानो मे अल्प बहुत्व दिखाते है ।

एदेसिं ठाणाणं जीवसमासाण अवरवरविसयं ।
चउरासीदिपदेहिं अप्पाबहुगं परूवेमो ॥२७५॥

इनमें जीव समास के, थान बराबर मान ।
चौरासी पद का करूँ, अल्प बहुत्व बखान ॥२७५॥

अर्थ—उपरोक्त योगस्थान चौदह जीव समासो की अपेक्षा ४२ होते है ये जघन्य और उत्कृष्ट की अपेक्षा ८४ भेद होते है उनको आगे स्पष्ट दिखाते हैं ॥२७५॥

आगे उपरोक्त ८४ योगस्थान १४ जीवसमास मे दिखाते है।

सुहुमगलद्धिजहण्णं तण्णिव्वत्तीजहण्णयं तत्तो।
लद्धिअपुण्णुक्कस्सं बादरलद्धिस्स अवरमदो ॥२७६॥
णिव्वत्तिसुहुमजेट्ठं बादरणिव्वत्तियस्स अवरं तु।
बादरलद्धिस्स वरं बीइंदियलद्धिगजहण्णं ॥२७७॥
बादरणिव्वत्तिवरं णिव्वत्तिबिइंदियस्स अवरमदो।
एवंबितिबितितिचतिच चउविमणो होदि चउविमणो॥२७८॥
तह य असण्णीसण्णी असण्णिसण्णिस्स सण्णिउववादं।
सुहुमेइंदियलद्धिगअवरं एयंतवड्ढिस्स ॥२७९॥
सण्णिस्सुववादवरं णिव्वत्तिगदस्स सुहुमजीवस्स।
एयंतवड्ढिअवरं लद्धिदरं थूलथूले य ॥२८०॥
तह सुहुमसुहुमजेट्ठं तो बादरबादरे वरं होदि।
अंतरमवरं लद्धिगसुहुमिदरवरंपि परिणामे ॥२८१॥
अंतरमुवरीवि पुणो तप्पुण्णाणं य उवरि अंतरियं।
एयंतवड्ढिठाणा तसपणलद्धिस्स अवरवरा ॥२८२॥
लद्धीणिव्वत्तीणं परिणामेयंतवड्ढिठाणाओ।
परिणामट्ठाणाओ अंतरअंतरिय उवरुवरिं ॥२८३॥

सूक्ष्म लब्धि जघन्य है, परें निवृति लघु मान।
सूक्ष्म लब्धि उत्कृष्ट अरु, थूल लब्धि वर जान ॥२७६
निवृति सूक्ष्म उत्कृष्ट है, थूल सूक्ष्म लघु मान।
थूल लब्धि उत्कृष्ट है, लट अपूर्ण लघु जान॥२७७॥

थूल निवृति उत्कृष्ट है, लट निवृति लघु चीन ।
यों दुतिदुतितिचतिच चतुर,अमन चतुरमनहीन।।२७८
तथा अमन समना अमन, समन समन उत्पाद ।
सूक्ष्म लब्धि का जघन है, एकान्ता का पाद ।।२७९।।
सैनी का उत्पाद वर, निवृति सूक्ष्म एकान्त ।
लघु अरु बादर लब्धि लघु,थूल निवृतिलघु मांत ।।२८०
सूक्ष्म सूक्ष्म वर उसी ढँग, थूल थूल वर ठाम ।
सून्य लब्धि सूक्षम इतर, लघु दीरघ परिणाम ।।२८१।।
सून्य थान फिर पूर्ण वे, सून्य थान फिर और ।
त्रस अपूर्ण पन बराबर, ऐकान्ता का ठौर ।।२८२।।
सून्य लब्धि अरु निवृति के, परिणाम रु ऐकान्त ।
परिणामा थल बीच बिच, सून्य थान दो मान्त ।।२८३

अर्थ—सूक्ष्मलब्धिअपर्याप्त जीव का जघन्यउत्पादयोगस्थान सब से कम है १ इससे सूक्ष्मनिवृत्तिअपर्याप्त का जघन्यउत्पादयोगस्थान अधिक है २ इससे सूक्ष्मलब्धिअपर्याप्त जीव का उत्कृष्टउत्पादयोगस्थान अधिक है ३ इससे आगे बादरलब्धिअपर्याप्तएकेन्द्रिय जी वका जघन्यउत्पादयोगस्थान अधिक है ४ इससे सूक्ष्मनिवृत्तिअपर्याप्त का उत्कृष्टउत्पादयोगस्थान अधिक है ५ इससे आगे बादरनिवृत्तिअपर्याप्तएकेन्द्रिय जीव का जघन्यउत्पादयोगस्थान अधिक है ६ इससे बादरलब्धिअपर्याप्तएकेन्द्रिय जीव का उत्कृष्टउत्पादयोगस्थान अधिक है ७ इससे दोइन्द्रियलब्धिअपर्याप्तजीव

का जघन्यउत्पादयोगस्थान अधिक है ८ इससे बादरनिवृत्ति-अपर्याप्तएकेन्द्रिय का उत्कृष्ट उत्पादयोगस्थान अधिक है ९ इससे दोइन्द्रियनिवृत्तिअपर्याप्त जीव का जघन्यउत्पादयोगस्थान अधिक है १० इससे आगे दोइन्द्रियलब्धिअपर्याप्त का उत्कृष्टउत्पादयोगस्थान अधिक है ११ इससे तेइन्द्रियलब्धि—अपर्याप्त का जघन्य उत्पादयोगस्थान अधिक है १२ इससे आगे दोइन्द्रियनिवृत्तिअपर्याप्त का उत्कृष्टउत्पादयोगस्थान अधिक है १३ इससे आगे तेइन्द्रिय निवृत्तिअपर्याप्त का जघन्यउत्पादयोगस्थान अधिक है १४ इससे तेइन्द्रियलब्धिअपर्याप्त जीव का उत्कृष्टउत्पादयोगस्थान अधिक है १५ इससे आगे चौइन्द्रियलब्धिअपर्याप्त का जघन्यउत्पादयोगस्थान अधिक है १६ इससे तेइन्द्रियनिवृत्तिअपर्याप्त जीव का उत्कृष्ट उत्पादयोगस्थान अधिक है १७ इससे आगे चौइन्द्रियनिवृत्तिअपर्याप्त का जघन्यउत्पादयोगस्थान अधिक है १८ इससे चौइन्द्रियलब्धि-अपर्याप्त जीव का उत्कृष्टउत्पादयोगस्थान अधिक है १९ इससे आगे असैनीपचेन्द्रियलब्धिअपर्याप्त जीव का जघन्यउत्पादयोगस्थान अधिक है २० इससे चौइन्द्रियनिवृत्तिअपर्याप्त का उत्कृष्टउत्पाद-योगस्थान अधिक है २१ इससे असैनीपचेन्द्रियनिवृत्तिअपर्याप्त का जघन्यउत्पादयोगस्थान अधिक है २२ इससे असैनीपचेन्द्रिय-लब्धिअपर्याप्त का उत्कृष्ट उत्पाद योग स्थान अधिक है २३ इससे सैनीलब्धिअपर्याप्त जीव का जघन्यउत्पादयोगस्थान अधिक है २४ इससे असैनीपचेन्द्रियनिवृत्तिअपर्याप्त जीव का उत्कृष्टउत्पाद-योगस्थान अधिक है २५ इससे सैनीनिवृत्तिअपर्याप्त जीव का जघन्य-उत्पादयोगस्थान अधिक है २६ इससे सैनीलब्धिअपर्याप्त का उत्कृष्टउत्पादयोगस्थान अधिक है २७ इससे आगे सूक्ष्मलब्धि-अपर्याप्त का जघन्यएकान्तवृद्धियोगस्थान अधिक है २८ इससे सैनीनिवृत्तिअपर्याप्त जीव का उत्कृष्टउत्पादयोगस्थान अधिक है २९ इससे सूक्ष्मनिवृत्तिअपर्याप्त का जघन्यएकान्तवृद्धियोगस्थान अधिक है ३० इससे बादरएकेन्द्रियलब्धिअपर्याप्त का जघन्य-

ऐकान्तवृद्धियोगस्थान अधिक है ३१ इससे बादरएकेन्द्रियनिवृत्ति-अपर्याप्त का जघन्यऐकान्तवृद्धियोगस्थान अधिक है ३२ इससे सूक्ष्मलब्धिअपर्याप्त का उत्कृष्टऐकान्तवृद्धियोगस्थान अधिक है ३३ इससे सूक्ष्मनिवृत्तिअपर्याप्त का उत्कृष्टऐकान्तवृद्धियोगस्थान अधिक है ३४ इससे बादरएकेन्द्रियलब्धिअपर्याप्त का उत्कृष्ट-ऐकान्तवृद्धियोगस्थान अधिक है ३५ इससे बादरएकेन्द्रियनिवृत्ति-अपर्याप्तजीव का उत्कृष्टएकान्तवृद्धियोगस्थान अधिक है ३६ इससे आगे जगत्श्रेणी के असख्यातवे भाग बराबर प्रथम अतर है जिसमे ऐसे स्थान हैं जिनका कोई स्वामी नही है इससे आगे सूक्ष्मलब्धि-अपर्याप्त का जघन्यपरिणामयोगस्थान अधिक है ३७ इससे बादर एकेन्द्रियलब्धिअपर्याप्त का जघन्यपरिणामयोगस्थान अधिक है ३८ इससे आगे सूक्ष्मलब्धिअपर्याप्त का उत्कृष्टपरिणामयोगस्थान अधिक है ३९ इससे बादरएकेन्द्रियलब्धिअपर्याप्त जीव का उत्कृष्ट-परिणामयोगस्थान अधिक है ४० इससे आगे जगत्श्रेणी के अस-ख्यातवे भाग बराबर द्वितीयअतर है जिसमे ऐसे योगस्थान हैं जिनका कि कोई स्वामी नही है इसके आगे सूक्ष्मपर्याप्त का जघन्यपरिणामयोगस्थान अधिक है ४१ इससे बादरएकेद्रियपर्याप्त का जघन्यपरिणामयोगस्थान अधिक है ४२ इससे सूक्ष्मपर्याप्त का उत्कृष्टपरिणामयोगस्थान अधिक है ४३ इससे बादरएकेन्द्रिय-पर्याप्त का उत्कृष्टपरिणामयोगस्थान अधिक है ४४ इसके आगे जगत्श्रेणी के असख्यातवें भाग बराबर तृतीय अतर है जिसमे ऐसे योगस्थान है कि जिनका कि कोई स्वामी नही है इसके आगे दोइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय, असैनीपचेन्द्रिय और सैनी लब्धि-अपर्याप्त के जघन्य और उत्कृष्ट ऐकान्तवृद्धियोगस्थान क्रमसे अधिक २ है ४५–५४ इसके आगे जगत्श्रेणी के असख्यातवे भाग बराबर चौथा अतर है इसके आगे दोइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय, असैनीपचेन्द्रिय और सैनीलब्धिअपर्याप्त के जघन्य और उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान क्रमसे अधिक २ है ५५–६४ इसके आगे

जगत्श्रेणी के असख्यातवे भाग बराबर पाचवा अतर है इसके आगे दोइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय, असैनीपचेन्द्रिय और सैनीनिवृत्ति-अपर्याप्त के जघन्य और उत्कृष्ट ऐकान्तवृद्धि योगस्थान क्रमसे अधिक २ है ६५–७४ इसके आगे जगत्श्रेणी के असख्यातवे भाग बराबर छटवॉ अतर है इसके आगे दोइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय, असैनीपचेन्द्रिय और सैनीपर्याप्त के जघन्य और उत्कृष्ट परिणाम-योगस्थान क्रमसे अधिक २ है ७५–८४ ॥२७६–२८३॥

आगे उपरोक्त ८४ स्थानों की अधिकता का परिमाण दिखाते है

एदेसिं ठाणाओ पल्लासंखेज्जभागगुणिदकमा ।
हेट्ठिमगुणहाणिसला अण्णोण्णब्भत्थमेत्तं तु ॥२८४॥

ये थल क्रम से पल्य के, अगणित भाग गुणाय ।
सध्य भेद गुणहानि को, अंतिम राशि कहाय ॥२८४॥

अर्थ—उपरोक्त ८४ योगस्थान क्रमसे पल्य के असख्यातवे भाग गुणे अधिक २ है तोभी सवके जघन्यस्थान से सवका उत्कृष्टयोगस्थान पल्य के अर्धच्छेदो से असख्यातवॉ भाग गुणा अधिक है इन जघन्य और उत्कृष्टयोगस्थान के बीच मे जो नीचे की गुणहानि के भेद है वे असख्यातरूप कम पल्य की वर्गशलाका के वरावर है इस परिमाण को परस्परगुणितराशि के गुणकार का भेद कहते है॥२८४॥

आगे उत्पादादिकयोगे के वर्तने का परिमाण दिखाते है ।

अवरुक्कस्सेण हवे उववादेयंतवड्ढिठाणाणं ।
एक्कसमयं हवे पुण इदरेसिं जाव अट्ठोत्ति ॥२८५॥

लघु दीरघ उत्पाद अरु, एकान्ता का काल ।
एक समय अरु शेष का, दो से अठ तक काल ॥२८५॥

अर्थ—उत्पादयोगस्थान और ऐकान्त वृद्धि योगस्थान के वर्तने का काल जघन्य और उत्कृष्ट एक समय ही है परिणामयोगस्थात के वर्तने का काल, जघन्य दो समय और उत्कृष्ट ८ समय है।२८५

आगे २ से ८ समयवर्तने वाले परिणामयोगस्थानो का परिमाण दिखाते है।

अट्ठसमयस्स थोवा उभयदिसासुवि असंखसंगुणिदा ।
चउसमयोत्ति तहेव य उवरिं तिदुसमयजोग्गाओ ।।२८६।।

आठ समय का अल्प है, अगणित गुणि दो पक्ष ।
च्यार समय तक उपरि त्यो, त्रय दो समया स्वच्छ।।२८६

अर्थ—दोइन्द्रियपर्याप्त के जघन्यपरिणामयोगस्थान (७५ वा योगस्थान) से लेकर पचोन्द्रियपर्याप्त के उत्कृष्टपरिणामयोगस्थान (८४वायोगस्थान) तक मे जो निरतर ८ समय वर्तनेवाले योगस्थान है उनको लिखकर फिर जो योगस्थान निरतर ७ समय वर्तने वाले है उनको ८ समय वर्तने वालो के आधे ऊपर और आधे नीचे लिख कर फिर जो योगस्थान ६ समयनिरतर वर्तनेवाले है उनको ७ समय वर्तने वालो के आधे ऊपर और आधे नीचे लिखकर फिर जो योगस्थान निरतर ५ समय वर्तने वाले है उनको ६ समय वर्तने वालो के आधे ऊपर और आधे नीचे लिखकर फिर जो योगस्थान ४ समय निरतर वर्तने वाले है उनको ५ समय वर्तने वालो के आधे ऊपर और आधे नीचे लिखकर फिर जो योगस्थान ३ समय निरतर वर्तने वाले है उनको ४ समय वर्तने वालो के ऊपर लिखकर फिर जो योगस्थान निरतर दो समय वर्तने वाले है उनको ३ समय वर्तने वालो के ऊपर लिखने से यह रचना जौअन्न के आकार जैसी बन जाती है इसमे ८ समय वर्तने वाले योगस्थान सब से थोडे (असख्यात) हैं इनसे ऊपर और नीचे के योगस्थान क्रमसे असख्यात २ गुणे अधिक है इस प्रकार काल की अपेक्षा योगस्थानो

का परिमाण है इस आशय को समझने के लिये पहिले इस ग्रन्थ की आदि में लगे हुये योगपरिमाणदर्पण को भलीभांति देख लेना चाहिये ॥२८६॥

आगे उपरोक्त स्थानों में जीवों का परिमाण दिखाते है।

मज्झे जीवा बहुगा उभयत्थ विसेसहीणकमजुत्ता।
हेट्ठिमगुणहाणिसलादुवरि सलागा विसेसऽहिया ॥२८७॥

जीव मध्य में बहुत हैं, उभय यथा क्रम हीन।
अधः भेद गुणहानि से, परें भेद बहु चीन ॥२८७॥

अर्थ—उपरोक्त जौ की रचना के मध्यभाग में त्रसपर्याप्त जीवों का परिमाण सवसे अधिक है ऊपर और नीचे के योगस्थानों में जीवो का परिमाण यथायोग्य कम-कम है किन्तु नीचे की गुणहानि से ऊपर की गुणहानि का परिमाण कुछ अधिक है ॥२८७॥

आगे दृष्टान्त से जौ रचना में जीवो का परिमाण दिखाते है।

दव्वतियं हेट्ठुवरिमदलवारा दुगुणमुभयमण्णोण्णं।
जीवजवे चोद्दससयबावीसं होदि बत्तीसं ॥२८८॥
चत्तारि तिण्णि कमसो पण अड अट्ठं तदो य बत्तीसं।
किंचूणतिगुणहाणिविभजिदे दव्वे दु जवमज्झं ॥२८९॥

द्रव्यति नख शिख अदलवर, द्विगुण उभय अंताय।
जीवयवे चौदस शतक, वाइस वत्तिस आय ॥२८८॥
चार तीन क्रम पांच अठ, अठ अरु वत्तिस सीच।
कुछ कम तिगुणीहानि का, भाग दियें यव वीच ॥२८९

अर्थ—यहाँ कल्पना करिये कि द्रव्य (त्रसपर्याप्त) का परिणाम १४२२ है स्थिति (त्रसपर्याप्त के परिमाणयोगस्थान) का परिमाण ३२ है और एक गुणहानि का परिमाण ४ है वे जो रचना मे नीचे की ओर सब गुणहानि ३ हैं और ऊपर की ओर सब गुणहानि ५ (नानागुणहानि) है नीचे की नाना गुणहानि के बरावर २-२ के अक लिखकर परस्पर (२×२×२=८) गुणा करने से ८ का परिमाण आता है और ऊपर की गुणहानि के बराबर २-२ के अक लिख कर परस्पर (२×२×२×२×२=३२) गुणा करने से ३२ का परिमाण आता है दोनो परस्पर गुणितराशि का परिमाण ४० होता है। यहाँ पर कुछ कम तिगुणीगुणहानि (एक भाग के ६४ भाग मे से ५७ भाग कम १२) का भाग द्रव्य (१४२२) मे देने से लव्ध १२८ आता है जो कि जौ आकार रचना के मध्य जीवो का परिमाण है इस (१२८) मे अपनी २ गुणहानि के चय को कम करने से अपनी अपनी गुणहानि के जीवो का परिमाण आता है इसके लिये इस ग्रन्थ की आदि मे लगे हुये गुणहानि दर्पण को देखिये।२८८—२८९॥

आगे उपरोक्त दृष्टान्त का यथार्थ परिमाण दिखाते है।

पुण्णतसजोगठाणं छेदाऽसंखस्सऽसंख बहुभागे।
दलिम्हिगिभागं य दलं दव्वदुगं उभयदलवारा ॥२९०॥
णाणागुणहाणिसला छेदासंखेज्जभागमेत्ताओ।
गुणहाणीणद्धाणं सव्वत्थवि होदि सरिसं तु ॥२९१॥
अण्णोण्णगुणिदरासी पल्लासंखेज्जभागमेत्तं तु।
हेट्ठिमरासीदो पुण उवरिल्लमसंखसंगुणिदं ॥२९२॥

पूरण त्रस थल योग छिदि, अगिन अगिन बहुभाग।
अर्ध अधः का लब्ध युत, अर्ध ऊप का भाग ॥२९०॥

सब गुणहानी भेद हैं, छेद असंख्ये भाग ।
गुणहानी के काल का, सब थल तुल्यविभाग ।।२६१।।
गुणितपरस्पर राशि के, पल्य असंख्ये भाग ।
अधः राशि से परें की, अगणित गुणी जु जाग ।।२६२

अर्थ—द्रव्य का परिमाण त्रस—पर्याप्तजीवराशि के बराबर है स्थिति का परिमाण त्रसपर्याप्त सम्बन्धी जो परिणाम योगस्थान है उनकी बराबर है और पल्य के अर्धच्छेदो के असख्यातवे भाग बराबर सब (नाना) गुणहानियाँ है उनमे असख्यात का भाग देने से जो लब्ध आवे उसको छोडकर शेप भाग का आधा नीचे की सब गुणहानियो का परिमाण है और उपरोक्त लब्ध सहित आधा भाग ऊपर की सब गुणहानियो का परिमाण है। ऊपर और नीचे की सब गुणहानियो का परिमाण मिलाने से उनका परिमाण पल्य के अर्धच्छेदो के असख्यातवे भाग बराबर होता है उपरोक्त स्थिति के परिमाण मे सब गुणहानियो का भाग देने से जो लब्ध आवे वह एक गुणहानि के काल का परिमाण आता है वह ऊपर तथा नीचे की सब गुणहानियो मे समान है। परस्परगुणितराशि का परिमाण पल्य के असख्यातवे भाग बराबर है किन्तु नीचे की परस्परगुणित-राशि से ऊपर की परस्परगुणितराशि का परिमाण असख्यातगुणा अधिक है ।।२६०–२६२।।

आगे स्पर्धकादि की वृद्धि के परिमाण लाने के लिये गणित दिखाते है।

इगिठाणफड्डयाओ सम्वपदद्धं च जोगवड्ढी य ।
समयपवद्धचयट्ठं एदे हु पमाणफलइच्छा ।।२६३।।

परधक समय प्रबद्ध अरु, योग वृद्धि लय चुन्य ।
समय प्रबद्ध वढ़ान को, भाग गुणक अरु गुण्य ।।२६३

अर्थ—दो इन्द्रिय पर्याप्त जीव के जघन्यसमयप्रवद्ध के परिमाण (जगत्श्रेणी के असख्यातवे भागस्पर्धक) का दोइन्द्रियपर्याप्त के जघन्य परिणामयोग द्वारा ग्राह्य स्पर्धको के परिणाम (सूच्यगुल के असख्यातवे भाग) से गुणा करके दोइन्द्रियपर्याप्त के जघन्ययोग-स्थान के स्पर्धको के परिमाण (जगत्श्रेणी के असख्यातवे भाग) का भाग देने से जो परिमाण आवे उतने-उतने स्पर्धको की अधिकता को लिये हुये १–१ योगस्थान मे समयप्रबद्ध बढते है ।।२६३।।

आगे उपरोक्त आशय को स्पष्ट दिखाते है ।

बीइंदियपज्जत्तजहण्णट्ठाणादु सण्णिपुण्णस्स ।
उक्कस्सट्ठाणोत्ति य जोगट्ठाणा कमे उड्ढा ।।२६४।।

सेढियसंखेज्जदिमा तस्स जहण्णस्स फड्ढया होंति ।
अगुलअसंखभागा ठाणं पडि फड्ढया उड्ढा ।।२६५।।

धुववड्ढीवड्ढंतो दुगुणं दुगुणं कमेण जायते ।
चरिमे पल्लच्छेदाऽसंखेज्जदिमो गुणो होदि ।।२६६।।

आदी अंते सुद्धे वड्ढिहिदे रूवसंजुदे ठाणा ।
सेढिअसंखेज्जदिमा जोगट्ठाणा णिरंतरगा ।।२६७।।

अंतरगा तदसंखेज्जदिमा सेढीअसंखभागा हु ।
सांतरणिरंतराणिवि सव्वाणिवि जोगठाणाणि ।।२६८।।

दो इन्द्रिय पर्याप्त के, जघन थान से मान ।
समन पूर्ण वर थान तक, योग थान वृद्धान ॥२९४
श्रेणी असंख्य भाग वत्, लघु थल पर्धक सिद्धि ।
अंगुल असंख्य भाग वत्, थल-थल पर्धक वृद्धि ॥२९५
ध्रुव वृद्धि हिं बढ़ता हुआ, द्विगुण-द्विगुण हो जाय ।
पल्य छेद अगणित तना, अंत गुणाकर आय ॥२९६
घटा आदि को अंत में, उसे भाज्य सुध वृद्धि ।
एक मिला तव योगथल, श्रेणि असंख्य प्रसिद्धि ॥२९७
अंतर उसमें अगणिते, श्रेणि असंख्ये भाग ।
अंतर युत अंतर रहित, सर्व योग थल जाग ॥२९८॥

अर्थ—दो इन्द्रियपर्याप्त के जघन्यपरिणाम योगस्थान से लेकर सैनीपर्याप्त के उत्कृष्टपरिणामयोगस्थान तक परिणामयोगस्थान क्रमसे एक-एक स्थान मे समान रूप से बढते है। दोइन्द्रियपर्याप्त का जघन्यपरिणामयोगस्थान के स्पर्धको का समूह जगत्श्रेणी के असख्यातवे भाग बरावर है। इसके आगे एक-एक स्थान में सूच्यगुल (चौडागुल) के असख्यातवे भाग वरावर जघन्यस्पर्धक वढते है। अविभागप्रतिच्छेदो की दृष्टि से देखा जावे तो उपरोक्त जघन्य स्पर्धक के जितने अविभाग प्रतिच्छेद है उनको सूच्यगुल के असख्यातवें भाग के परिमाण से गुणा करने पर जो परिमाण हो उतने २ अविभाग प्रतिच्छेद एक-एक योगस्थान मे वढते है। इस तरह स्थान २ मे समान रूप से वढता हुआ जघन्ययोग स्थान क्रमसे

दूना २ होता जाता है और अत मे वह सैनीपर्याप्त के उत्कृष्ट-परिणामयोगस्थान मे गुणाकार का परिमाण पल्य के अर्धच्छेदो के असख्यातवे भाग बराबर हो जाता है अर्थात् जघन्य योगस्थान के अविभागप्रतिच्छेद के परिमाण का पल्य के अर्धच्छेदो के असख्यातवे भाग से गुणा करने पर जो परिमाण हो उतने सबसे उत्कृष्टपरिणाम योगस्थान के अविभाग प्रतिच्छेद होते है। जघन्य स्थान को उत्कृष्टस्थान मे से कम करने पर जो शेष परिमाण हो उसका वढती (सूच्यगुल के असख्यातवे भाग बरावर जघन्य-स्पर्धको के अविभागप्रतिच्छेदो) मे भाग देने से जो लब्ध आवे उसमे एक स्थान मिलाने से जो परिमाण हो उतने अतर रहित योगस्थान हैं सो ये जगत्श्रेणी के असख्यात भाग बराबर है। अतर वाले योगस्थान अतररहित योगस्थान से असख्यातवे भाग कम है। ये भी जगत्श्रेणी के असख्यातवे भाग है और जो मिले हुये (अतर सहित अतर रहित) योगस्थान है वे भी अतर सहित योगस्थानो से असख्यातवे भाग कम है तो भी जगत्श्रेणी के असख्यातवे भाग बरावर हैं तथा सब योगस्थान मिलकर भी जगत्श्रेणी के असख्यातवे भाग बराबर ही है ॥२६४–२६८॥

आगे इन योगस्थानो मे आदि और अत का स्थान दिखाते है।

सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स पढमे जहण्णओ जोगो ।
पज्जत्तसण्णिपंचिंदियस्स उक्कस्सओ होदि ॥२६६॥

सूक्ष्म अपूर्ण निगोद के, प्रथमहिं लघु का योग ।
सैनी पूरण जीव के, योग थान वर योग ॥२६६॥

अर्थ—उपरोक्त ८४ योगस्थानो मे सूक्ष्मलब्धिअपर्याप्तनिगोदिया के अत के क्षुद्रभव के प्रथम समय मे जो जघन्यउत्पादयोगस्थान होता है वह योग का आदि स्थान है और जो सैनीपर्याप्त के

उत्कृष्टपरिणामयोगस्थान होता है वह सब योगों का अंतस्थान है ॥२९९॥

आगे उपरोक्त ८४ योगों को कर्मबंध का कारण दिखाते है।

जोगा पयडिपदेसा ठिदिअणुभागा कसायदो होंति ।

अपरिणदुच्छिण्णेसु य बंधट्ठिदिकारणं णत्थि ॥३००॥

प्रकृति देश हो योग से, थिति अनुभाग कषाय ।

उपशांतक अरु क्षीण में, थिति अनु-कारण ढाय ॥३००

अर्थ—उपरोक्त ८४ योगो से प्रकृति और प्रदेशबंध होता है। यदि इनके साथ कषाय का सद्भाव होता है तो स्थिति और अनुभागबंध भी होता है वह कषाय का सद्भाव उपशमश्रेणी की अपेक्षा उपशातमोहगुणस्थान में नही रहता और क्षायिक श्रेणी की अपेक्षा क्षीणमोहगुणस्थान में नही रहता ॥३००॥

आगे योगस्थान से प्रकृतियो के समूह का परिमाण अधिक दिखाते है।

सेढिअसंखेज्जदिमा जोगट्ठाणाणि होंति सव्वाणि ।

तेहिं असंखेज्जगुणो पयडीणं संगहो सव्वो ॥३०१॥

श्रेणी असंख्य भाग वत्, योग थान सब गाय ।

उनसे अगणित जग गुणे, प्रकृतिनि का समुदाय ॥३०१

अर्थ—अंतर सहित, अंतर रहित और मिश्र (दोनो मिले) योगस्थानो का परिमाण जगत्श्रेणी के असंख्यातवे भाग बराबर है और इनके द्वारा बंध मे आने वाली प्रकृतियो के समुदाय का परिमाण उपरोक्त योगो के परिमाण से असख्यातलोक गुणा है ॥३०१॥

आगे स्थिति भेदो से भावो का परिमाण अधिक दिखाते है।

तेहिं असंखेज्जगुणा ठिदिअवसेसा हवंति पयडीणं ।
ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणा तत्तो असंखगुणा ॥३०२॥

उनसे अगणित गुणे हैं, भेद प्रकृति थिति मान ।
उनसे अगणित गुणे हैं, भाव बंध थिति थान ॥३०२

अर्थ—उन प्रकृतियो के समुदाय से प्रकृतियो की स्थिति के भेद असख्यात गुणे है इनसे असख्यात गुणे प्रकृतियो की स्थिति के बध करने वाले परिणामस्थान हैं ॥३०२॥

आगे उनसे अनुभाग अनुभाग से कर्मपरमाणु अधिक दिखाते हैं ।

अणुभागाणं बंधज्झवसाणमसंखलोगगुणिदमदो ।
एत्तो अणंतगुणिदा कम्मपदेसा मुणेयव्वा ॥३०३॥

अगणित जग उनसे गुणे, रस बंधक परिणाम ।
कर्म अणू उनसे कहे, अमित गुणे श्रुत ठाम ॥३०३

अर्थ—उपरोक्त स्थितिबध करने वाले परिणामस्थानो से असख्यातलोक गुणे अनुभागबध के परिणामस्थान हैं। इनसे अनत गुणे कर्मों के परमाणु है जो कि बध समय आते हैं। इस प्रकार प्रदेशबध समाप्त हुआ ॥३०३॥

॥ बंध—अधिकार समाप्त ॥



आगे कर्म उदय के नियम दिखाते है ।

आहारं तु पमत्तो तित्थं केवलिणि मिस्सयं मिस्से ।
सम्मं वेदगसम्मे मिच्छदुगयदेव आणुदओ ॥३०४॥
णिरयं सासणसम्मो ण गच्छदित्ति य ण तस्स णिरयाणू ।
मिच्छादिसु सेसुदओ सगसग चरिमोत्ति णायव्वो ॥३०५॥

अशन प्रमत तीर्थेंस जिन, मिश्र-मिश्र गुण इष्ट।
सम्यक वेदक चार में, पूर्वी भ्रम दुक दृष्टि ॥३०४
सासा जाय न नरक में, पूर्वी नरक न सान ।
शेष उदय भ्रम आदि में, निज-निज अंतहिं थान ॥ ३०५

अर्थ—आहारकशरीर और आहारकआंगोपाग का उदयप्रमत्त-गुणस्थान में होता है । तीर्थकर प्रकृति का उदय सयोग और अयोग गुणस्थान में होता है। मिश्रप्रकृति का उदय मिश्रगुणस्थान में होता है । सम्यक्प्रकृति का उदय अविरतादि ४ गुणस्थानों में होता है चारों आनुपूर्वियो का उदय मिथ्यात्व, सासादन और अविरतगुणस्थान में होता है किन्तु सासादनगुणस्थान में नरक-गत्यानुपूर्वी का उदय नही होता ॥३०४-३०५॥

आगे उदयविछुत्ति यतिवृषभाचार्य की पक्ष से दिखाते है ।

दस चउरिगि सत्तारसं अट्ठ य तह पंच चेव चउरो य ।
छच्छक्कएक्कदुगदुग चोद्दस उगुतीस तेरसुदयविधि ॥३०६॥

दश चउ इक सत्तहअठा, पन चउ छै-छै एक ।
दो दो-चौदह उनतिसा, तेरह उदय विधेक ॥३०६

अर्थ—मिथ्यात्वादि १४ गुणस्थानों में प्रकृतियो की उदय-विछुत्ति क्रम से १०, ४, १, १७, ८, ५, ४, ६, ६, १, २ १६, २९ और १३ की होती है ॥३०६॥

नोट.—श्री यतिवृषभाचार्य की स्पष्ट मान्यता है कि स्थावर १ एकेन्द्रिय १ विकलत्रय ३ इन ५ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति मिथ्यात्व-गुणस्थान मे होती है और श्रीभूतवली आचार्य की भी स्पष्ट मान्यता है कि सासादनगुणस्थान मे होती है। इसी तरह वेदनी की दोनों

प्रकृति की उदयविछुत्ति अयोग गुणस्थान मे होती है और भूतवली आचार्य की मान्यता से कोई एकवेदनी की सयोग गुणस्थान मे होती है। इस तरह इन दो गुणस्थानो मे मतभेद है शेष गुणस्थान मे एकता है। इसी तरह उदीरणा प्रकृतियो मे जानना ॥३०६॥

आगे उदयविछुत्ति भूतवलि आचार्य की पक्ष से दिखाते है।

पंचेक्कारसबावीसट्ठारसपंचतीस इगिछादालं।
पण्णं छप्पण्णं बितिपणसट्ठि असीदि दुगुणपणवण्णं॥३०७॥
सत्तरसेक्कारखचदुसहियसयं सगिगिसीदि छदुसदरी।
छावट्ठि सट्ठि णवसगवण्णास दुदालबारुदया ॥३०८॥
पण णव इगि सत्तरसं अड पंच य चउर छक्क छच्चेव।
इगिदुग सोलस तीसं बारस उदये अजोगंता ॥३०९॥

पन ग्यारह वाईस अरु, अष्टादश पेंतीस।
इकतालिस छालीस अरु, पंचस छप्पन दीस।३०७-१
वासठि त्रेसठि पेंसठा, अरसी इकसौ दस्स।
गुणथानों में अन उदय, क्रम से लेवो कस्स।३०७-२
इकसौ सत्रह एकसौ, ग्यारह अरु सौ मान।
इकसौ चउ अरु सतासी, इक्यासी पहिचान।३०८-१
छहतर वहतर छासठा, साठि रु उनसठि मान।
सत्तावन व्यालीस अरु, वारह उदय पिछान।३०८-२

पन नव इक सत्रहअठा, पन चउ छै छै एक।
दो अरु सोलह तीस अरु, बारह उदयविधेक ॥३०६

अर्थ—मिथ्यात्वादि गुणस्थानो मे क्रमसे ५, ११, २२, १८, ३५ ४१, ४६, ५०, ५६, ६२, ६३, ६५, ८०, ११० प्रकृतियो का उदय नही होता ११७, १११, १००, १०४, ८७, ८१, ७६, ७२, ६६, ६०, ५६, ५७, ४२, १२ प्रकृतियो का उदय होता है और ५, ६, १, १७, ८, ५, ४, ६, ६, १, २, १६, ३०, १२ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है ॥३०७–३०६॥

भावार्थ—मिथ्यात्व गुणस्थान मे मिश्रप्रकृति १ सम्यकत्वप्रकृति १ आहारक २ तीर्थकरप्रकृति १ इस तरह ५ प्रकृतियों का उदय न होने से शेप ११७ प्रकृतियो का उदय होता है और ५ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान में उपरोक्त १० नरक-गत्यानुपूर्वी १ इस तरह ११ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप १११ प्रकृतियो का उदय होता है और ६ प्रकृतियो की उदय-विछुत्ति होती है। मिश्रगुणस्थान मे मिश्रप्रकृति विना उपरोक्त १६ आनुपूर्वी ३ इन २२ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप १०० प्रकृतियो का उदय होता है और मिश्रप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है। अविरतगुणस्थान मे आनुपूर्वी ४ सम्यक्प्रकृति १ इन ५ प्रकृतियो के बिना उपरोक्त १८ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप १०४ प्रकृतियो का उदय होता है और १७ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है। देशविरतगुणस्थान मे उपरोक्त ३५ प्रकृ-तियो का उदय न होने से शेप ८७ प्रकृतियो का उदय होता है और ८ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है। प्रमत्तगुणस्थान मे आहारक २ के विना उपरोक्त ४१ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप ८१ प्रकृतियो का उदय होता है और ५ प्रकृतियो की उदय-विछुति होती है। अप्रमत्तगुणस्थान मे उपरोक्त ४६ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७६ प्रकृतियो का उदय होता है और ४

प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है। अपूर्वकरणगुणस्थान मे उपरोक्त ५० प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७२ प्रकृतियो का उदय होता है और ६ प्रकृतियो की उदयविछुति होती है। अनिवृत्तिकरणगुणस्थान मे उपरोक्त ५६ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप ६६ प्रकृतियो का उदय होता है और सवेदभाग मे ३ तथा अवेदभाग मे ३ इस तरह ६ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है। सूक्ष्मसापरायगुणस्थान मे उपरोक्त ६२ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ६० प्रकृतियो का उदय होता है और १ प्रकृति की उदय-विछुत्ति होती है। उपशातमोह गुणस्थान मे उपरोक्त ६३ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ५९ प्रकृतियो का उदय होता है और २ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है। क्षीणमोहगुणस्थान मे उपरोक्त ६५ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप ५७ प्रकृतियो का उदय होता है और १६ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है। सयोगगुणस्थान मे तीर्थंकरप्रकृति के बिना उपरोक्त ८० प्रकृनियो का उदय न होने से शेष ४२ प्रकृतियो का उदय होता है और ३० प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है और अयोगगुणस्थान मे उपरोक्त ११० प्रकृतियो का उदय न होने से शेष १२ प्रकृतियो का उदय होता है और उन्ही १२ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है ॥३०७–३०९॥

गुणस्थानो में अनुदयादि रचना

	मि.	सा	मि	अ	दे.	प्र.	अ.	अ
अ	५	११	२२	१८	३५	४१	४६	५०
उ	११७	१११	१००	१०४	८७	८१	७६	७२
वि	५	९	१	१७	८	५	४	६

	अ	सू	उ	क्षी	स	अ
अ	५६	६२	६३	६५	८०	११०
उ	६६	६०	५९	५७	४२	१२
वि	६	१	२	१६	३०	१२

आगे मिथ्यात्व से मिश्र तक की उदयविछुत्ति दिखाते है ।

मिच्छे मिच्छादावं सुहुमतियं सासणे अणेइंदी ।
थावरवियलं मिस्से मिस्सं य य उदयवोच्छिण्णा ॥३१०॥

भ्रम-भ्रम आतप सूक्ष्म त्रय, सासा इन्द्रिय चार ।
अन चउ थावर मिश्र में, मिश्र छुटे निरधार ॥३१०

अर्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे मिथ्यात्व १ आताप १ सूक्ष्म १ साधारण १ अपर्याप्त १ इस तरह ५ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है। सासादनगुणस्थान में अनतानुबधी ४ स्थावर १ आदिकीइन्द्रिय ४ इस तरह ९ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है और मिश्रगुण-स्थान में मिश्रप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है ॥३१०॥

आगे अविरतगुणस्थान की उदयविछुत्ति दिखाते है ।

अयदे बिदियकसाया वेगुव्वियछक्क णिरयदेवाऊ ।
मणुयतिरियाणुपुव्वी दुब्भगणादेज्ज अज्जसयं ॥३११॥

अविरत में वय सुर नरक, दुर्भग द्वितिय कषाय।
विक्रिय छै अनदे अयश, नर पशु पूर्वी ढाय ॥३११

अर्थ—अविरतगुणस्थान में अप्रत्याख्यान ४ विक्रियक ६ नर-कायु १ देवायु १ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ तिर्यंचगत्यानुपूर्वी १ दुर्भग १ अनादेय १ अयश १ इस तरह १७ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है ॥३११॥

आगे देशविरत और प्रमत्त की उदयविछुत्ति दिखाते है ।

देसे तदियकसाया तिरियाउज्जोवणीचतिरियगदी ।
छट्ठे आहारदुगं थीणतियं उदयवोच्छिण्णा ॥३१२॥

देशहिं पशुगति आयु पशु, उद्यो तृतिय कषाय।
नीच षटहिं आहार दुक, शयन गृद्धि त्रय ढाय ॥३१२

अर्थ—देशविरतगुणस्थान मे प्रत्याख्यान ४ तिर्यचायु १ उद्योत १ नीचगोत्र १ तिर्यचगति १ इस तरह ८ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है और पमत्तगुणस्थान मे आहारक २ शयनवृद्धि ३ इस तरह ५ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती हे ॥३१२॥

आगे अप्रमत्त से उपशात तक की उदयविछुत्ति दिखाते हैं।

अपमत्ते सम्मत्तं अंतिमतियसंहदी यऽपुव्वम्हि।
छच्चेव णोकसाया अणियट्टीभागभागेसु ॥३१३॥
वेदतिय कोहमाणं मायासजलणमेव सुहुमते।
सुहुमो लोहो संते वज्जंणारायणारायं ॥३१४॥

सप्तहिं समकित अंत के, तीनसँहनन थाग।
अरु अठ में हास्यादि छै, नय में भागविभाग ॥३१३
वेद तीन क्रोधादि त्रय, दश में सूक्ष्म लोभ।
दृढनराच नाराच द्वय, उपशांता में खोभ ॥३१४॥

अर्थ—अप्रमत्तगुणस्थान में सम्यक्प्रकृति १ अत के सहनन ३ इस तरह ४ प्रकृतियो की उदयविछुति होती है। अपूर्वकरणगुणस्थान मे हास्यादि ६ को उदयविछुत्ति होती है। अनिवृत्तिकरण गुणस्थान के सवेदभाग में वेद ३ की उदयविछुत्ति होती है और इसके अवेदभाग मे सज्वलन क्रोधादि ३ की उदयविछुत्ति होती है। सूक्ष्मसापरायगुणस्थान मे सूक्ष्मलोभ की उदयविछुत्ति होती हे और उपशातमोहगुणस्थान मे वज्रनाराच और नाराचसहनन की उदयविछुत्ति होती हे ॥३१३-३१४॥

आगे क्षीणमोह की उदयविछुत्ति दिखाते है ।

खीणकसायदुचरिमे णिद्दा पयला य उदयवोच्छिण्णा ।
णाणंतरायदसयं दंसणचत्तारि चरिमम्हि ॥३१५॥

निद्रा प्रचला ज्ञानपन, दर्शन वरणी चार ।
अंतराय पन विछुरतौ, क्षीण विषैं निरधार ॥३१५॥

अर्थ—क्षीणमोहगुणस्थान मे अत के दो समयो मे से प्रथम समय मे निद्रा और प्रचला की उदयविछुत्ति होती है और अतके समय मे ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अतराय ५ इस तरह १४ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है ॥३१५॥

आगे सयोगगुणस्थान की उदयविछुत्ति दिखाते है ।

तदियेक्कवज्जणिमिणं थिरसुहसरगदिउरालतेजदुगं ।
संठाणं वण्णागुरुचउक्क पत्तेय जोगिम्हि ॥३१६॥

योगहिं तन थिर तैज शुभ, स्वर गति दुक निर्माण ।
वर्ण अगुरु चउ तृतिय इक, प्रत्ये छठ संस्थान ॥३१६॥

अर्थ—सयोग गुणस्थान में वेदनी की कोई १ वज्रवृषभनाराच-सहनन १ निर्माण १ स्थिर २ शुभ २ स्वर २ चाल २ औदारिक २ तैजस २ सस्थान ६ वर्ण ४ प्रत्येक १ अगुरुलघु ४ इस तरह ३० प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है ॥३१६॥

आगे अयोग की उदयविछुत्ति दिखाते है ।

तदियेक्कं मणुवगदी पंचिंदियसुभगतसतिगादेज्जं ।
जसतित्थं मणुवाऊ उच्चं य अजोगिचरिमम्हि॥३१७॥

पंचेन्द्रिय नर आयु गति, त्रस त्रिक सुभगादेय।
उच्च तीर्थ यश तृतिय इक, अंत अयोगी छेय ।। ३१७।।

अर्थ—अयोगगुणस्थान मे वेदनी की कोई १ मनुष्यगति १ पचेन्द्रिय १ सुभग १ त्रस ३ आदेय १ यश १ तीर्थंकर १ मनुष्यायु १ ऊचगोत्र १ इस तरह १२ प्रकृतियो की उदयविच्छुत्ति होती है ।। ३१७।।

आगे केवली के वेदनी के उदय होने पर भी वेदनी के कार्य का अभाव दिखाते है ।

णट्ठा य रायदोसा इंदियणाणं य केवलिम्हि जदो ।
तेण दु सादासादजसुहदुक्खं णत्थि इंदियजं ।।३१८।।
समयट्ठिदिगो बंधो सादस्सुदयप्पिगो जदो तस्स ।
तेण असादस्सुदओ सादसरूवेण परिणमदि ।।३१९।।
एदेण कारणेण दु सादस्सेव दु णिरंतरो उदओ ।
तेणासादणिमित्ता परीसहा जिणवरे णत्थि ।।३२०।।

नशा राग अरु द्वेष जिन, इन्द्रिय ज्ञान न शेष ।
सातासातज दुक्ख सुख, इन्द्रिय ज्ञान न लेश ।। ३१८
साता बंध रु बंध भी, एक समय का मान।
अशुभ उदय इस कारणे, साता रूप पिछान ।। ३१९
इस कारण साता उदय, सदा प्रभू के मान ।
अशुभ उदय से उन्हों के, परिषह कार्य न जान ।। ३२०

अर्थ—केवलीभगवान के रागद्वेष और इन्द्रियज्ञान के नाश हो जाने से साताजन्य इन्द्रियसुख और असाताजन्य इन्द्रियदुक्ख नही होता। केवलीभगवान के केवल सातावेदनी का बध होता है वह भी एकसमय की स्थिति को लिये हुये ही होता है इस कारण सदा उदय रूप है और पूर्व का बाँधा हुआ आसातावेदनी का उदय सातारूप परिणवता है जब असाता का उदय सातारूप परिणवता है तब सदा केवलीभगवान के एक साता का ही उदय रहता है जब केवलीभगवान के असाता का उदय सातारूप परिणवता है तब उनके क्षुधादि ११ परीषहो का कार्य भी नही होता ॥३१८-३२०॥

आगे प्रमत्त, सयोगायोग को छोड उदयवत् उदीरणा दिखाते हैं

उदयस्सुदीरणस्स य सामित्तादो ण विज्जदि विसेसो ।
मोत्तूण तिण्णिठाणं पमत्त जोगी अजोगी य ॥३२१॥
तीसं वारस उदयुच्छेदं केवलिणमेकदं किच्चा ।
सादमसादं य तर्हि मणुवाउगमवणिदं किच्चा ॥३२२॥
अवणिदतिप्पयडीणं पमत्तविरदे उदीरणा होदि ।
णत्थित्ति अजोगिजिणे उदीरणा उदयपयडीणं ॥३२३॥

प्रमत सयोग अयोग तज, शेष जिते गुणथान ।
उदय उदीरण के विषें, स्वामी भेद न जान ॥३२१
योगायोग मिलाय के, तीसरु वारह जोड ।
मनुष आयु साता इतर, इन तीनों को छोड ॥३२२
उदीरणा उन तीन की, प्रमत विरत में होय ।
शेष उदीरण योग में, होय अयोग न कोय ॥३२३

अर्थ—प्रमत्त, सयोग और अयोगगुणस्थान को छोडकर शेप गुणस्थानो मे जो उदययोग्यप्रकृतियाँ है वे ही उदीरणायोग्यप्रकृतिया हैं सयोगगुणस्थान की उदयविछुत्ति प्रकृति ३० अयोगगुणस्थान की उदयविछुत्ति प्रकृति १२ इन ४२ मे से साता, असाता और मनुष्यायु की उदीरणा प्रमत्तगुणस्थान तक हो सकती है शेप ३६ प्रकृतियो की उदीरणा सयोगगुणस्थान तक हो सकती है और अयोग्यगुणस्थान मे किसी प्रकृति की उदीरणा नही होती ॥३२१–३२३॥

आगे गुणस्थानो मे अनुदीरणादि प्रकृतियो को दिखाते हैं ।

पंचेक्कारसबावीसट्ठारस पंचतीस इगिणवदालं ।
तेवण्णेक्कुणसट्ठी पणछक्कडसट्ठि तेसीदी ॥३२४॥
सत्तारसेक्कारखचदुसहियसयं सगिगिसीदि तियसदरी ।
णवतिण्णिसट्ठि सगछक्कवण्ण चउवण्णमुगुदालं ॥३२५॥
पण णव इगि सत्तारसं अट्ठट्ठ य चदुर छक्क छच्चेव ।
इगि दुग सोलुगदालं उदीरणा होंति जोगंता ॥३२६॥

पन ग्यारह वाईस अरु, अष्टादश पेंतीस ।
इकतालिस उनचास अरु,त्रेपन उनसठि दीस।३२४।१
पेंसठि छासठि अरसठा, तेरासी अरु मान।
अन उदीरणाप्रकृति ये, क्रम से लेउ पिछान ॥३२४।२
इकसौ सत्रह एक सौ, ग्यारह अरु सौ मान ।
इकसौ चउ अरु सतासी, इक्यासी पहिचान ॥३२५।१
तिहत्तरा उनहत्तरा, त्रेसठि सतवन मान।
छप्पन चउवन उनतलिस, उदीरणा क्रम जान।३२५।२

पन नव इक सत्रहअठा, अठ चउ छै छै एक।
दो सोलह उनतालिसा, उदीरणा जिन देख ॥३२६

अर्थ—मिथ्यात्वादि १३ गुणस्थानो मे क्रम से ५, ११, २२, १८, ३५, ४१, ४९, ५३, ५९, ६५, ६६, ६८, ८३ प्रकृतियो की उदीरणा नही हो सकती। ११७, १११, १००, १०४, ८७, ८१, ७३, ६९, ६३, ५७, ५६, ५४, ३९ प्रकृतियो की उदीरणा हो सकती है और ५, ९, १, १७, ८, ८, ४, ६, ६, १, २, १६, ३९ प्रकृतियो की उदीरणाविछुत्ति होती है इनका भावार्थ सुगम है ॥ ३२४–३२६॥

गुणस्थानों में अनुदीरणादि रचना

	मि०	सा०	मि०	अ०	दे०	प्र०	अ०
अ०	५	११	२२	१८	३५	४१	४९
उदी०	११७	१११	१००	१०४	८७	८१	७३
वि०	५	९	१	१७	८	८	४

	अ०	अ०	सू०	उ०	क्षी०	स०
अ०	५३	५९	६५	६६	६८	८३
उदी०	६९	६३	५७	५६	५४	३९
वि०	६	६	१	२	१६	३९

आगे गुणस्थानो मे उदय कह मार्गणाओ मे उदय दिखाते है।

गदियादिसु जोग्गाणं पयडिप्पहुदीणमोघसिद्धाणं।
सामित्तं णेदव्वं कमसो उदयं समासेज्ज ॥३२७॥

प्रकृति आदि का कथन सब, सिद्ध किया गुणथान।
स्वामी पन गति आदि में, उदय घटित अब जान ॥३२७

अर्थ—गुणस्थानो मे प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश उदय कह कर अव गति आदि मार्गणाओ मे भी प्रकृति आदि उदय को यथायोग्य कहता हूँ ।।३२७।।

आगे गति आदि मार्गणाओ मे उदय के नियम दिखाते है ।

गदिआणुआउउदओ सपदे भूपुण्णवादरे ताओ ।
उच्चुदओ णरदेवे थीणतिगुदओ णरे तिरिये ।।३२८।।
संखाउगणरतिरिए इंदियपज्जत्तगादु थीणतियं ।
जोग्गमुदेदुं वज्जिय आहारविगुव्वणुट्ठवगे ।।३२९।।
अयदापुण्णे ण हि थी संढोवि य धम्मणारयं मुच्चा ।
थीसंढयदे कमसो णाणुचऊ चरिमतिण्णाण ।।३३०।।
इगिविगलथावरचऊ तिरिए अपुण्णो णरेवि संघडणं ।
ओरालदु णरतिरिए वेगुव्वदु देवणेरयिए ।।३३१।।
तेउतिगूणतिरिक्खेसुज्जोगे वादरेसु पुण्णेसु ।
सेसाणं पयडीणं ओघं वा होदि उदओ दु ।।३३२।।

गति पूर्वी वय इक्क इक, पशु नर निद्रा तीन ।
आतप पूरण थूल पशु, ऊँचहिं नर सुर चीन ।।३२८
कर्म भूमि नर पशु के, इन्द्रिय पूरण धार ।
निद्रा त्रय का उदय हो, नहिं विक्रिय आहार ।।३२९
अविरत ऊंन न नारि अरु, षंड प्रथम भू छोड ।
पूर्वी उदय न नारि चउ, षंड अंत त्रय मोड ।।३३०

पशु के इन्द्रिय थवर चउ, विक्रिय दुक सुर नर्क ।
पशु नर के औदा दुका, ऊंन संहनन अर्क ॥३३१॥
तैज तीन तज शेष पशु, बादर पूरण भेष ।
उद्योता का उदय हो, गुणस्थान वत् शेष ॥३३२॥

अर्थ—एक जीव के एक ही साथ किसी भी भव के प्रथमसमय मे उस भव के योग्य गति, आनुपूर्वी और आयुकर्म का उदय होता है। आतापप्रकृति का उदय बादरपर्याप्तपृथ्वीकाय जीव के होता है। ऊँचगोत्र का उदय ऊँचकुल वाले मनुष्य और सब देवो के होता है। शयनगृद्धि आदि ३ निद्राओ का उदय आहारक और विक्रियक ऋद्धिधारियो को छोडकर शेष कर्मभूमियामनुष्य और तिर्यचो के इन्द्रियपर्याप्तपूर्ण होने के पश्चात् होता है। निर्वृत्तिअपर्याप्त के अविरतगुणस्थान में स्त्रीवेद का उदय न होने से और नपुसकवेद का उदय न होने से क्रमसे चारो आनुपूर्वियो का उदय नही होता और नरकगत्यानुपूर्वी को छोडकर शेष आनुपूर्वियो का उदय नही होता। आदि की इन्द्रिया ४ स्थावर ४ इन ८ प्रकृतियो का उदयतिर्यचो के होता है। लब्धिअपर्याप्त १ सहनन ६ औदारिक २ इन ९ प्रकृतियो का उदय मनुष्य और तिर्यचो के होता है विक्रियक २ का उदय देव और नारकियो के होता है उद्योतप्रकृति का उदय अग्नि, पवन और साधारण वनस्पतिकाय को छोडकर शेष बादरपर्याप्त-तिर्यचो के होता है और शेष प्रकृतियो का उदय मिथ्यात्वादि गुणस्थानो के क्रमसे उदयस्थान के अतसमय तक होता है ॥३२८-३३२॥

आगे नरकगति में अनुदयादि प्रकृतियो को दिखाते है।

थीणतिथीपुरिसूणा घादी णिरयाउणीचवेयणियं ।
णामे सगवचिठाणं णिरयाणू णारयेसुदया ॥३३३॥

वेगुव्वतेजथिरसुहदुग दुग्गदिहुंडणिमिणपंचिंदी ।
णिरयगदि दुब्भगागुरुलसवण्णचऊ य वचिठाणं ॥३३४॥
मिच्छसणंतं मिस्सं मिच्छादितिए कमा छिदी अयदे ।
विदियकसाया दुब्भगणादेज्जदुगाउणिरयचऊ ॥३३५॥
बिदियादिसु छसु पुढविसु एवं, णवरि य असंजदट्ठाणे ।
णत्थि णिरयाणुपुव्वी तिस्से मिच्छेव वोच्छदो ॥३३६॥

निद्रा त्रय नर नारि तज, घाति नरक वय नीच ।
वेदनि उनतिस नाम की, पूर्वी नरक सुवीच ॥३३३
थिर शुभ विक्रिय तैज दुक, कुगति हुँड निर्माण ।
वर्ण अगुरु लसदुभगचउ, सकल गतिहिं वच थान ॥३३४
आदि तीन भ्रम अन मिसर, अविरत द्वितिय कषाय ।
अयश दुस्वर दुक नरक वय, नरक गती चउ ढाय ॥३३५
द्वितियादिक में प्रथम वत्, अंतर अविरत थान ।
छुटे न पूर्वी नरक की, छुटे वाम में जान ॥३३६॥

अर्थ—नरकगति मे शयनगृद्धि ३ स्त्रीवेद १ पुरुपवेद १ इन ५ प्रकृतियो को छोडकर घातियाकर्मो की ४२ नरकायु १ नीच-गोत्र १ वेदनी २ नरकगत्यानुपूर्वी १ भापापर्याप्त के स्थान की २६ (विक्रियक २ तैजस २ स्थिर २ शुभ २ अशुभचाल १ हुडक-सस्थान १ निर्माण १ पचेन्द्रिय १ नरकगति १ दुर्भगादि ४ अगुरु लघु ४ त्रस ४ वर्ण ४) इसतरह ७६ प्रकृतियो का उदय होता है और मिथ्यात्वादि ४ गुणस्थानो मे क्रमसे मिथ्यात्व १ अनतानु-

बधी ४ मिश्रप्रकृति १ अप्रत्याख्यान ४ दुर्भग २ अनादेय २ नरकगति ४ नरकायु १ इसतरह १९ प्रकृतियों की उदयविछुत्ति होती है। किन्तु द्वितीयादिनरकों के मिथ्यात्वगुणस्थान मे ही नरकगत्यानुपूर्वी की उदयविछुत्ति हो जाती है और शेष उदयविछुत्ति सबकी समान है ॥३३२-३३५॥

भावार्थ–मिथ्यात्वगुणस्थान में मिश्रप्रकृति और सम्यक्प्रकृति का उदय न होने से शेष १०४ प्रकृतियो का उदय होता है और मिथ्यात्वप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है। सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ३ नरकगत्यानुपूर्वी १ इन ४ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७२ प्रकृतियो का उदय होता है और अनतानुबंधी ४ की उदयविछुत्ति होती है। मिश्रगुणस्थान में मिश्रप्रकृति के बिना उपरोक्त ७ प्रकृतियों का उदय न होने से शेष ६९ प्रकृतियो का उदय होता है और मिश्रप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है और अविरतगुणस्थान में सम्यक्प्रकृति और नरकगत्यानुपूर्वी के बिना उपरोक्त ६ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७० प्रकृतियो का उदय होता है और अप्रत्याख्यान ४ दुर्भग १ अनादेय १ अशय १ नरकगति ४ नरकायु १ इसतरह १२ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है।

प्रथम नरक का सब कथन नरकगति के समान है। द्वितीयादि नरकों के मिथ्यात्वगुणस्थान में मिश्र और सम्यक्प्रकृति का उदय न होने से शेष ७४ प्रकृतियों का उदय होता है और मिथ्यात्वप्रकृति और नरकगत्यानुपूर्वी की उदयविछुत्ति होती है। सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ४ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७२ प्रकृतियो का उदय होता है और अनतानुबधी ४ की उदयविछुत्ति होती है। मिश्रगुणस्थान मे मिश्रप्रकृति के बिना उपरोक्त ७ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ६९ प्रकृतियो का उदय होता है और मिश्रप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है और अविरतगुणस्थान में सम्यक्प्रकृति के बिना उपरोक्त ७ प्रकृतियो का उदय न

होने से शेप ६९ प्रकृतियो का उदय होता है और नरकगत्यानुपूर्वी के विना उपरोक्त ११ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती ह इसप्रकार नरकगति का कथन है ॥३३३-३३६॥

प्रथम नरक की रचना

	मि०	सा०	मि०	अ०
अ०	२	४	७	६
उ०	७४	७२	६९	७०
वि०	१	४	१	१२

द्वितीयादि नरक की रचना

	मि०	सा०	मि०	अ०
अ०	२	४	७	७
उ०	७४	७२	६९	६९
वि०	२	४	१	११

आगे तिर्यचगति मे अनुदयादि प्रकृतियो को दिखाते हैं ।

तिरिये ओघो सुरणरणिरयाऊउच्च मणुदुहारदुगं ।
वेगुव्वछक्कतित्थं णत्थि हु एमेव सामण्णे ॥३३७॥
थावरदुगसाहारणताविगिविगलूण ताणि पंचक्खे ।
इत्थिअपज्जत्तूणा ते पुण्णे उदयपयडीओ ॥३३८॥
पुंसंढूणित्थिजुदा जोणिणिये अविरदे ण तिरियाणू ।
पुण्णिदरे थी थीणति परघाददु पुण्णउज्जोवं ॥३३९॥
सरगदिदु जसादेज्जं आदीसंठाणसंहदीपणगं ।
सुभगं सम्मं मिस्सं हीणा तेऽपुण्णसंढजुदा ॥३४०॥

विक्रिय छै आहार द्वय, नर सुर नारक आउ ।
ऊँच तीर्थ नर दुक तजें, पशु गुण वत् ही पाउ ॥३३७
तज थावर दुक इक विकल, साधारण आताप ।
पंचेंद्रिय के ऊंन तिय, तजें पूर्ण के छाप ॥३३८

तिय तिय युत तज षंड नर, दृग पशु पूर्वी हेय।
ऊंन विषें यश नींद क्षय, सुभग मिश्र दृग देय।।३३९
सँहनन पन संस्थान पन, दुक स्वर गति परघात।
पूर्ण नारि उद्योत तज, षंड ऊंन मिल जात।।३४०

अर्थ—तिर्यंचगति में अनुदयादि का कथन गुणस्थानसमान है किन्तु देवायु १ मनुष्यायु १ नरकायु १ ऊँचगोत्र १ मनुष्यगति २ आहारक २ विक्रियक ६ तीर्थंकर १ इस तरह १५ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष १०७ प्रकृतियों का उदय होता है इसीप्रकार सामान्य तिर्यंचों के होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान में मिश्रप्रकृति और सम्यक्प्रकृति का उदय न होने से शेष १०५ प्रकृतियों का उदय होता है और गुणस्थान समान ५ प्रकृतियों की उदयविछुत्ति होती है। सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ७ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष १०० प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थान समान ९ प्रकृतियों की उदयविछुत्ति होती है मिश्र गुणस्थान मे मिश्रप्रकृति के विना उपरोक्त १५ तिर्यंचगत्यानुपूर्वी १ इसतरह १६ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ९१ प्रकृतियो का उदय होता है और मिश्र-प्रकृति की उदय विछुत्ति होती है। अविरतगुणस्थान मे सम्यक्प्रकृति और तिर्यंचगत्यानुपूर्वी के बिना उपरोक्त १५ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ९२ प्रकृतियो का उदय होता है और अप्रत्याख्यान ४ तिर्यंचगत्यानुपूर्वी १ दुर्भग १ अनादेय १ अयश १ इसतरह ८ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है और देशविरतगुणस्थान मे उपरोक्त २३ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ८४ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ८ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है इसी प्रकार सामान्य तिर्यंचो का कथन है।

अर्थ—पचेन्द्रियतिर्यंच के अनुदयादि कथन नरकगति के समान है किन्तु स्थावर १ सूक्ष्म १ साधारण १ आताप १ इन्द्रिय ४ इस तरह ८ प्रकृतियो के उदय न होने से शेष ९९ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे मिश्रप्रकृति और सम्यक्प्रकृति का उदय न होने से शेप ९७ प्रकृतियो का उदय होता है और मिथ्यात्व-प्रकृति और अपर्याप्तप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है सासादनगुण-स्थान मे उपरोक्त ४ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ९५ प्रकृतियो का उदय होता है और अनतानुवधी ४ की उदयविछुत्ति होती है मिश्रगुणस्थान मे मिश्रप्रकृति के विना उपरोक्त ७ तिर्यंचगत्यानु-पूर्वी १ इसतरह ८ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ९१ प्रकृतियो का उदय होता है और मिश्रप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है अविरतगुणस्थान मे सम्यक्प्रकृति और तिर्यंचगत्यानुपूर्वी के विना उपरोक्त ७ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ९२ प्रकृतियो का उदय होता है और तिर्यंचगतिसमान ८ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है और देशविरतगुणस्थान मे उपरोक्त १५ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप ८४ प्रकृतियो का उदय होता है और गुण-स्थानसमान ८ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है।

अर्थ—पर्याप्तपचेन्द्रियतिर्यंच के अनुदयादि का कथन स्त्रीवेद और अपर्याप्तप्रकृति के विना पचेन्द्रियतिर्यंच के समान ९७ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे मिश्रप्रकृति और सम्यक्प्रकृति का उदय न होने से शेष ९५ प्रकृतियो का उदय होता है और मिथ्यात्व प्रकृति की उदयविछुत्ति होती है। सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ३ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप ९४ प्रकृतियो का उदय होता है और अनतानुवधी ४ की उदयविछुत्ति होती है। मिश्रगुणस्थान मे मिश्रप्रकृति के बिना उपरोक्त ६ तिर्यंचगत्यानुपूर्वी १ इसतरह ७

प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ६० प्रकृतियो का उदय होता है और मिश्रप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है अविरतगुणस्थान में सम्यक्प्रकृति और तिर्यचगत्यानुपूर्वी के बिना उपरोक्त ६ प्रकृतियों का उदय न होने से शेष ६१ प्रकृतियो का उदय होता है और तिर्यचगतिसमान ८ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है और देशविरतगुणस्थान में उपरोक्त १४ प्रकृतियों का उदय न होने से शेष ८३ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ८ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है।

अर्थ—तिर्यचस्त्री के अनुदयादि का कथन पुरुष और नपुसकवेद के बिना पर्याप्तपचेन्द्रियतिर्यच के समान ६५ और स्त्रीवेदसहित ६६ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे मिश्रप्रकृति और सम्यक्प्रकृति के बिना शेष ६४ प्रकृतियो का उदय होता है और मिथ्यात्वप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान में उपरोक्त ३ प्रकृतियों का उदय न होने से शेष ६३ प्रकृतियो का उदय होता है और अनतानुबंधी ४ तिर्यंचगत्यानुपूर्वी १ इसतरह ५ प्रकृतियों की उदयविछुत्ति होती है मिश्रगुणस्थान में मिश्रप्रकृति के बिना उपरोक्त ७ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ८६ प्रकृतियो का उदय होता है और मिश्रप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है अविरतगुणस्थान में सम्यक्प्रकृति बिना उपरोक्त ७ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ८६ प्रकृतियो का उदय होता है और तिर्यचगत्यानुपूर्वी के बिना तिर्यचगति समान ७ प्रकृतियों की उदयविछुत्ति होती है और देशविरतगुणस्थान में उपरोक्त १४ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ८२ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ८ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है।

अर्थ—लब्धिअपर्याप्तपचेन्द्रियतिर्यचो के उपरोक्त ६६ प्रकृतियो मे से स्त्रीवेद १ शयनगृद्धि ३ परघात २ पर्याप्त १ उद्योत १ स्वर २

चाल २ यश १ आदेय १ सस्थान ५ सहनन ५ सुभग १ सम्यक्-प्रकृति १ मिश्रप्रकृति १ इसतरह २७ प्रकृतियो को कम करके अपर्याप्त और नपुसकवेद मिलाने से ७१ प्रकृतियो का उदय होता है इस प्रकार तिर्यचगति का कथन है ॥३३७–३४०॥

तिर्यंगति रचना | **पंचेन्द्रिय तिर्यंच रचना**

	मि०	सा०	मि०	अ०	दे०	मि०	सा०	मि०	अ०	दे०
अ०	२	७	१६	१५	२३	२	४	८	७	१५
उ०	१०५	१००	६१	६२	८४	६७	६५	६१	६२	८४
वि०	५	६	१	८	८	२	४	१	८	८

पर्याप्त पं० तिर्यंच रचना | **तिर्यंच स्त्री रचना**

	मि०	सा०	मि०	अ०	दे०	मि०	सा०	मि०	अ०	दे०
अ०	२	३	७	६	१४	२	३	७	७	१४
उ०	६५	६४	६०	६१	८३	६४	६३	८६	८६	८२
वि०	१	४	१	८	८	१	५	१	७	८

आगे मनुष्यगति मे अनुदयादि प्रकृतियो को दिखाते हैं।

मणुवे ओघो थावरतिरियादावदुगएयवियलिंदि ।
साहरणिदराउतियं वेगुव्वियछक्क परिहीणो ॥३४१॥
मिच्छमपुण्णं छेदो अणमिस्सं मिच्छगादितिसु अयदे ।
विदियकसायणराणू , दुब्भगऽणादेज्जअज्जसयं ॥३४२॥
देसे तदियकसाया णीचं एमेव मणुससामण्णे ।
पज्जत्तेवि य इत्थीवेदाऽपज्जत्तिपरिहीणो ॥३४३॥
मणुसिणिएत्थीसहिदा तित्थयराहारपुरिससंढूणा ।
पुण्णिदरवे अपुण्णे सगाणुगदिआउगं णेयं ॥३४४॥

नर गुण वत् पर आयु त्रय, साधारण इकविकल्त।
थावर पशगति ताप दुक, विक्रिय छै विन सकल ॥३४१
अमहिं ऊंन अमसास अन, मिश्र मिश्र दृग ढाय।
नर पूर्वी अनदे अयश, दुर्भग द्वितिय कषाय ॥३४२
देशहिं तृतिय कषाय निच, इस विधि नर सामान्य।
अपर्याप्त अरु नारि विन, पूर्ण मनुष को मान्य ॥३४३
तीर्थ षंड आहार नर, तजें नारि युत नार।
गति वय पूर्वी निज पलट, ऊंन ऊंन अनुसार ॥३४४

अर्थ—मनुष्यगति मे अनुदयादि का कथन गुणस्थानसमान है, किन्तु स्थावर २ तिर्यचगति २ आताप २ इद्रिय ४ साधारण १ देवायु १ तिर्यचायु १ नरकायु १ विक्रियक ६ इसतरह २० प्रकृतियो का उदय न होने से शेष १०२ प्रकृतियों का उदय होता है और मिथ्यात्व मे मिथ्यात्व १ अपर्याप्त १ सासादन में अनतानुबधी ४ मिश्र मे मिश्र प्रकृति १ अविरत में अप्रत्याख्यान ४ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ दुर्भग १ अनादेय १ अयश १ देशविरत में प्रत्याख्यान ४ नीचगोत्र १ तथा प्रमत्तादि गुणस्थानो मे गुणस्थानसमान उदयविच्छुत्ति होती है ॥३४१-३४४॥

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे मिश्रप्रकृति १ सम्यक्प्रकृति १ आहारक २ तीर्थंकर १ इस तरह ५ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ९७ प्रकृतियों का उदय होता है और मिथ्यात्व और अपर्याप्त-प्रकृति की उदयविछुत्ति होती है। सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ७ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ९५ प्रकृतियों का उदय होता

हे और अनतानुवधी ४ की उदयविछुत्ति होती है मिश्रगुणस्थान मे मिश्रप्रकृति के विना उपरोक्त १० मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ इसतरह ११ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप ६१ प्रकृतियो का उदय होना है और मिश्र प्रकृति की उदयविछुत्ति होती है अविरतगुण-स्थान मे मनुष्यगत्यानुपूर्वी के विना उपरोक्त १० प्रकृतियो का उदय न होने से शेप ६२ प्रकृतियो का उदय होना हे और अप्रत्याख्यान ४ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ दुर्भग १ अनादेय १ अयश १ इसतरह ८ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है देशविरतगुणस्थान मे उपरोक्त १८ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप ८४ प्रकृतियो का उदय होता हे और गुणस्थान समान ५ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती हे और प्रमत्तादि गुणस्थान मे गुणस्थान समान उदय और उदय विछुत्ति है किन्तु अनुदयप्रकृतिया मूल से २०–२० कम हैं इसी प्रकार सामान्य मनुष्यो का कथन है ।

सामान्य मनुष्य रचना

	मि०	सा०	मि०	अ०	दे०	प्र०	अ०
अ०	५	७	११	१०	१८	२१	२६
उ०	९७	९५	९१	९२	८४	८१	७६
वि०	२	४	१	८	५	५	४
	अ०	अ०	सू०	उ०	क्षी०	स०	अ०
अ०	३०	३६	४२	४३	४५	६०	९०
उ०	७२	६६	६०	५९	५७	४२	१२
वि०	६	६	१	२	१६	३०	१२

अर्थ—पर्याप्तमनुष्य के सामान्यमनुष्य की १०२ प्रकृतियो मे से स्त्रीवेद और अपर्याप्तप्रकृति के बिना शेष १०० प्रकृतियो का उदय होता है ।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे मिश्रप्रकृति १ सम्यक्प्रकृति १ आहारक २ तीर्थकर १ इसतरह ५ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ९५ प्रकृतियो का उदय होता है और मिथ्यात्वप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ६ प्रकृतियो का उदय न होने से ९४ प्रकृतियो का उदय होता है और अनतानुबधी ४ की उदयविछुत्ति होती है मिश्रगुणस्थान मे मिश्रप्रकृति के विना उपरोक्त ९ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ इसतरह १० प्रकृतियो का उदय न होने से शेप ९० प्रकृतियो का उदय होता है और मिश्रप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है अविरतगुणस्थान मे सम्यक्प्रकृति और मनुष्यगत्यानुपूर्वी के बिना उपरोक्त ९ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ९१ प्रकृतियो का उदय होता है और मनुष्यगतिसमान ८ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है देशविरतगुणस्थान मे उपरोक्त १७ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ८३ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ५ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है प्रमत्तगुणस्थान मे आहारक २ के बिना उपरोक्त २० प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ८० प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थान समान ५ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है अप्रमत्तगुणस्थान में उपरोक्त २५ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७५ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थान समान ४ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है अपूर्वकरणगुणस्थान में उपरोक्त २९ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७१ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ६ प्रकृतियों की उदयविछुत्ति होती है अनिवृत्तिकरणगुणस्थान मे उपरोक्त ३५ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप ६५ प्रकृतियो का उदय होता है और स्त्रीवेद विना गुणस्थानसमान ५ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है और सूक्ष्मसापरायादि गुणस्थानो मे उदय और उदयविछुत्ति गुणस्थान समान है किन्तु अनुदय प्रकृतियाॅ सामान्य मनुष्य से २-२ कम हैं।

पर्याप्त मनुष्य रचना

	मि.	सा.	मि.	अ.	दे	प्र	अ.	अ
अ	५	६	१०	९	१७	२०	२५	२९
उ	९५	९४	९०	९१	८३	८०	७५	७१
वि.	१	४	१	८	५	५	४	६

	अ.	सू	उ	क्षी.	स	अ
अ.	३५	४०	४१	४३	५८	८८
उ	६५	६०	५९	५७	४२	१२
वि	५	१	२	१६	३०	१२

अर्थ—भावमनुष्यानी के पर्याप्त मनुष्य की १०० प्रकृतियो मे से तीर्थकर १ आहारक २ पुरुपवेद १ नपुसकवेद १ इस तरह ५ प्रकृतियो को कम करके स्त्रीवेद मिलाने से ९६ प्रकृतियो का उदय होता है ।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे मिश्रप्रकृति और सम्यक्प्रकृति का उदय न होने से शेष ९४ प्रकृतियो का उदय होता है और मिथ्यात्व-प्रकृति की उदयविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ३ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ९३ प्रकृतियो का उदय होता है और अनतानुवधी ४ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ इस तरह ५ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है मिश्रगुणस्थान मे मिश्रप्रकृति के विना उप-रोक्त ७ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ८९ प्रकृतियो का उदय होता है और मिश्रप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है अविरत गुण-स्थान मे सम्यक्प्रकृति के विना उपरोक्त ७ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ८९ प्रकृतियो का उदय होता है और मनुष्यगत्यानुपूर्वी के विना मनुष्यगतिसमान ७ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है देश-विरतगुणस्थान मे उपरोक्त १४ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ८२ प्रकृतियो का उदय होता है और मनुष्यगतिसमान ५ प्रकृतियो

की उदयविच्छुत्ति होती है प्रमत्तगुणस्थान में उपरोक्त १९ प्रकृतियों का उदय न होने से शेष ७७ प्रकृतियों का उदय होता है और शयनगृद्धि ३ की उदयविच्छुत्ति होती है अप्रमत्तगुणस्थान मे २२ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७४ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ४ प्रकृतियो की उदयविच्छुत्ति होती है अपूर्वकरणगुणस्थान मे उपरोक्त २६ प्रकृतियों का उदय न होने से शेष ७० प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ६ प्रकृतियों की उदयविच्छुत्ति होती है अनिवृत्तिकरणगुणस्थान मे उपरोक्त ३२ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ६४ प्रकृतियों का उदय होता है और स्त्रीवेद १ सज्वलनक्रोधादि ३ इसतरह ४ प्रकृतियो की उदयविच्छुत्ति होती है सूक्ष्मसांपराय से लेकर क्षीणमोहगुणस्थान तक अनुदयप्रकृतियाँ क्रमसे ३६, ३७, ३९ है और उदय और उदयविच्छुत्ति प्रकृतियां गुणस्थानसमान है सयोगगुणस्थान मे उपरोक्त ५५ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ४१ प्रकृतियों का उदय होता है और गुणस्थानसमान ३० प्रकृतियों की उदयविच्छुत्ति होती है और अयोगगुणस्थान में उपरोक्त ८५ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ११ प्रकृतियों का उदय होता है और उन्ही ११ की उदयविच्छुत्ति होती है ॥३४१-३४४॥

भावमनुष्यानि की रचना

	मि.	सा.	मि.	अ.	दे.	प्र.	अ.	अ.
अ.	२	३	७	७	१४	१९	२२	२६
उ.	९४	९३	८९	८९	८२	७७	७४	७०
वि.	१	५	१	७	५	३	४	६

	अ.	सू-	उ.	क्षी.	स.	अ.
अ.	३२	३६	३७	३९	५५	८५
उ.	६४	६०	५९	५७	४१	११
वि.	४	१	२	१६	३०	११

अर्थ—लब्धिअपर्याप्तमनुष्य के लब्धिअपर्याप्तपंचेन्द्रिय तिर्यंच के समान ७१ प्रकृतियो का उदय होता है अतर केवल इतना है कि इसके गति, आनुपूर्वी और आयु तिर्यंच सम्बन्धी छोडकर मनुष्य-सम्बन्धी है ॥३४१-३४४॥

आगे भोगभूमियो मे अनुदयादि प्रकृतियो को दिखाते है।

मणुसोघं वा भोगे दुब्भगचउणीचसंढथीणतियं ।
दुग्गदितित्थमपुण्णं संहृदिसंठाणचरिमपणं ॥३४५॥
हारदुहीणा एवं तिरिये मणुदुच्चगोदमणुवाउं ।
अवणिय पक्खिव णीचं तिरियदुतिरियाउउज्जोवं ॥३४६॥

तज सँहनन संस्थान पन, ऊंन रु दुर्भग चार ।
षंड नीच अरु नींद त्रय, कुगति तीर्थ आहार ॥३४५॥
कर्म भूमि वत् भोग भू, पशु का उदय दिखाय ।
ऊँच आयु गति दुक पलट, फिर उद्योत मिलाय ॥३४६॥

अर्थ—भोगभूमियामनुष्य के सामान्यमनुष्य की १०२ प्रकृतियो मे से दुर्भगादि ४ नीचगोत्र १ नपुसकवेद १ शयनगृद्धि ३ कुचाल १ तीर्थंकर १ अपर्याप्त १ अतके सहनन ५ अतके सस्थान ५ आहारक २ इसतरह २४ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७८ प्रकृतियो का उदय होता है। इसप्रकार भोगभूमिया मनुष्य का सामान्य अर्थ है ॥३४५-३४६॥

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान में मिश्रप्रकृति और सम्यक्प्रकृति का उदय न होने से शेष ७६ प्रकृतियो का उदय होता है और मिथ्यात्व की उदयविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ३ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७५ प्रकृतियो का उदय होता है और अनतानुवधी ४ की उदयविछुत्ति होती है मिश्रगुणस्थान मे मिश्र-

प्रकृति के विना उपरोक्त ६ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ इसतरह ७ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७१ प्रकृतियो का उदय होता है और मिश्रप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है और अविरतगुणस्थान मे सम्यक्प्रकृति और मनुष्यगत्यानुपूर्वी के बिना उपरोक्त ६ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७२ प्रकृतियो का उदय होता है और अप्रत्याख्यान ४ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ इसतरह ५ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है। इसप्रकार भोगभूमिया मनुष्य का विशेप अर्थ है ॥३४५-३४६॥

अर्थ—भोगभूमियातिर्यंच के भोगभूमि के मनुष्य की ७८ प्रकृतियो में गति, आनुपूर्वी आयु और ऊँचगोत्र पलट कर उद्योत मिलाने से ७६ प्रकृतियो का उदय होता है। इसप्रकार भोगभूमिया तिर्यंच का सामान्य अर्थ है।

भावार्थ—मिथ्यात्वादि ४ गुणस्थानो मे अनुदयादि का कथन भोगभूमि के मनुष्य समान है किन्तु केवल एक उद्योत—प्रकृति सव जगह अधिक है और गति, आनुपूर्वी-गोत्र तथा आयु तिर्यंचसम्बन्धी होती है इसप्रकार भोगभूमिया तिर्यंच का विशेष अर्थ समझने योग्य है ॥३४५-३४६॥

भोगभूमियां मनुष्य					भोगभूमियांतिर्यंच				
	मि०	सा०	मि०	अ०		मि०	सा०	मि०	अ०
अ०	२	३	७	६	अ०	२	३	७	६
उ०	७६	७५	७१	७२	उ०	७७	७६	७२	७३
वि०	१	४	१	५	वि०	१	४	१	५

आगे देवगति मे अनुदयादि प्रकृतियो को दिखाते है।

भोगं व सुरे णरचउगराउवज्जूण सुरचउसुराऊं।
खिव देवे णेवित्थी इत्थिस्सि ण पुरिसवेदो य ॥३४७॥

अविरदठाणं एक्कं अणुद्दिसादिसु सुरोघमेव हवे ।
भवणतिकप्पित्थीणं असंजदे णत्थि देवाणू ॥३४८॥

देव भोग वत् वज्र अरु, नर चउ नरवय टार ।
सुर चउ सुर वय मिलाकर, सुरी नर न सुर नार ॥३४७
सुर गुण वत् दृग थान इक, अनुदिशादि के मांहि ।
भवनत्रिक सुर नारि के, दृग हिं पूर्वि सुर नांहि ॥३४८

अर्थ—देवगति मे भोगभूमि के मनुष्य की ७८ प्रकृतियों मे से मनुष्यगति २ औदारिक २ मनुष्यायु १ वज्रवृपभनाराचसहनन १ इसप्रकार ६ प्रकृतियो को कम करके देवगति २ विक्रियक २ देवायु १ इसतरह ५ प्रकृतियो को मिलाने से ७७ प्रकृतियो का उदय होता है किन्तु देवो के स्त्रीवेद विना ७६ प्रकृतियो का उदय होता है और देवागनाओ के पुरुपवेद के विना ७६ प्रकृतियो का उदय होता है ।

भावार्थ–मिथ्यात्वगुणस्थान मे मिश्रप्रकृति और सम्यक्प्रकृति का उदय न होने से शेप ७५ प्रकृतियो का उदय होता है और मिथ्यात्व की उदयविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ३ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७४ प्रकृतियो का उदय होता है और अनतानुवधी ४ की उदयविछुत्ति होती है । मिश्रगुणस्थान मे मिश्र प्रकृति के बिना उपरोक्त ६ देवगत्यानुपूर्वी १ इसतरह ७ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७० प्रकृतियो का उदय होता है और मिश्रप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है और अविरतगुणस्थान मे सम्यक्प्रकृति और देवगत्यानुपूर्वी के विना उपरोक्त ६ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप ७१ प्रकृतियो का उदय होता है और अप्रत्याख्यान ४ देवगति २ विक्रियक २ देवायु १ इसतरह ६ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है ।

अर्थ—सौधर्म—ईसानस्वर्ग से लेकर नवग्रीवक तक के देवो मे अनुदयादि का सव कथन स्त्रीवेद के बिना देवगति समान ७६ प्रकृतियों का उदय होता है इनका भावार्थ भी सुगम है ।

देवगति की रचना

	मि०	सा०	मि०	अ०
अ०	२	३	७	६
उ०	७५	७४	७०	७१
वि०	१	४	१	९

सौधर्म से ग्रीवक तक की रचना

	मि०	सा०	मि०	अ०
अ०	२	३	७	६
उ०	७४	७३	६९	७०
वि०	१	४	१	९

अर्थ—अनुदिश से लेकर सर्वार्थसिद्धिविमान तक के देवो मे एक अविरतगुणस्थान ही होता है इसकारण सौधर्मादिक के अविरतगुणस्थानसमान ७० प्रकृतियो का उदय होता है ।

भवनत्रकदेवो में अनुदयादि का कथन स्त्रीवेद बिना देवगति समान ७६ प्रकृतियो का उदय होता है किन्तु देवगत्यानुपूर्वी का उदय अविरतगुणस्थान में नही होता । कारण भवनत्रकदेवो मे सम्यक्दृष्टि मर कर नही उपजता ।

सव देवागनाओ मे अनुदयादि का कथन पुरुषवेद विना देवगति समान है किन्तु इनके भी देवगत्यानुपूर्वी का उदय अविरतगुणस्थान मे नही होता कारण देवागनाओ मे भी सम्यक्दृष्टि मर कर नही उपजता ॥३४७–३४८॥

अनु०

अ०
०
७०
९

भवनत्रक की रचना

	मि०	सा०	मि०	अ०
अ०	२	३	७	७
उ०	७४	७३	६९	६९
वि०	१	५	१	८

देवांगनाओं की रचना

	मि०	सा०	मि०	अ०
अ०	२	३	७	७
उ०	७४	७३	६९	६९
वि०	१	५	१	८

आगे एकेन्द्रिय से पचेन्द्रिय तक मे अनुदयादि दिखाते है ।

तिरियअपुण्णं वेगे परघातचउक्कपुण्णसाहरणं ।
एइंदियजसथीणतिथावरजुगलं य मिलिदव्वं ॥३४६॥
रिणसंगोवंगतसं संहदिपंचक्खमेवमिह वियले ।
अवणिय थावरजुगलं साहरणेयक्खमादावं ॥३५०॥
खिव तसदुग्गदिदुस्सरमंगोवंगं सजादिसेवट्टं ।
ओघं सयले साहरणिगिविगलादावथावरदुगूणं ॥३५१॥

पशु अपूर्ण वत् एक में, साधा परवध चार ।
थावर दुक यश नींद त्रय, पूर्ण इकेन्द्रिय लार ॥३४९
तज फाटक सकलांग त्रस, अब लख विकला संग ।
त्रस फाटक दुर्गति दुस्वर, निज-निज इन्द्रिय अंग॥ ३५०
साधा तप बादर दुका, इक तज लख सकलान ।
गुण वत् साधातप विकल, इक थावर दुक हान ॥३५१॥

अर्थ—इन्द्रियमार्गण मे एकेन्द्रिय के लब्धिअपर्याप्तपचेन्द्रिय-तिर्यच की ७१ प्रकृतियो मे से आगोपाग १ त्रस १ सृपाटिकसहनन १ पचेन्द्रिय १ इसतरह ४ कम कर शेष ६७ प्रकृतियो मे परघातादि ४ पर्याप्त १ साधारण १ एकेन्द्रिय १ यश १ शयनगृद्धि ३ स्थावर १ सूक्ष्म १ इस तरह १३ प्रकृतियो को मिलाकर ८० प्रकृतियो का उदय होता है ।

भावार्थ—एकेद्रिय के मिथ्यात्वगुणस्थान मे अनुदय सून्य होने से ८० प्रकृतियो का उदय होता है और मिथ्यात्व १ आताप १ सूक्ष्म ३ शयनगद्धि ३ परघात १ उद्योत १ उश्वास १ इसतरह ११ प्रकृ-

तियो की उदयविछुत्ति होती है और सासादनगुणस्थान में उपरोक्त ११ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ६६ प्रकृतियो का उदय होता है और अनतानुबधी ४ एकेन्द्रिय १ स्थावर १ इसतरह ६ प्रकृतियों की उदयविछुत्ति होती है।

अर्थ–विकलत्रय के एकेन्द्रिय की ८० प्रकृतियो मे से स्थावर १ सूक्ष्म १ साधारण १ एकेन्द्रिय १ आताप १ इसतरह ५ प्रकृतियों को कम कर त्रस १ कुचाल १ दुस्वर १ आगोपाग १ अपनी अपनी इन्द्रिय १ सृपाटिकसहनन १ इसतरह ६ प्रकृतियों को मिलाने से ८१ प्रकृतियो का उदय होता है। इस प्रकार विकलत्रय जीवो का सामान्य अर्थ है।

भावार्थ–विकलत्रय के मिथ्यात्वगुणस्थान में अनुदय सून्य होने से ८१ प्रकृतियो का उदय होता है और मिथ्यात्व १ अपर्याप्त १ शयनगृद्धि ३ परघात १ उश्वास १ उद्योत १ कुचाल १ दुस्वर १ इसतरह १० प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है और सासादनगुण-स्थान मे उपरोक्त १० प्रकृतियों का उदय न होने से शेष ७१ प्रकृतियो का उदय होता है और अनंतानुबधी ४ अपनी अपनी इन्द्रिय १ इसतरह ५ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है। इस प्रकार उनका विशेष अर्थ है।

अर्थ––पचेन्द्रिय जीव के गुणस्थानसमान १२२ प्रकृतियों में से साधारण १ आदि की इन्द्रिय ४ आताप १ स्थावर १ सूक्ष्म १ इस तरह ८ प्रकृतियों का उदय न होने से शेष ११४ प्रकृतियो का उदय होता है। इस प्रकार पचेन्द्रिय जीव का सामान्य अर्थ होता है।

भावार्थ–मिथ्यात्वगुणस्थान में गुणस्थानसमान ५ प्रकृतियों का उदय न होने से शेष १०६ प्रकृतियों का उदय होता है और मिथ्यात्व और अपर्याप्तप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है सासादन-गुणस्थान में उपरोक्त ७ नरकगत्यानुपूर्वी १ इसतरह ८ प्रकृतियों

का उदय न होने से शेप १०६ प्रकतियो का उदय होता है और अनतानुवधी ४ की उदयविछुत्ति होती है और मिश्रादिगुणस्थानो मे उदय और उदयविछुत्ति गुणस्थानसमान है किन्तु अनुदयप्रकृतियो मूल से ८-८ कम है ॥३४६-३५१॥

एके० विकलत्रय पंचेन्द्रिय रचना।

	मि०	सा०		मि०	सा०		मि०	सा०	मिश्रादि
अ०	०	११	अ०	०	१०	अ०	५	८	८-८ कम
उ०	८०	६६	उ०	८१	७१	उ०	१०६	१०६	गुण०स०
वि०	११	६	वि०	१०	५	वि०	२	४	,, ,,

आगे काय और योगमार्गणा मे अनुदयादि दिखाते है।

एयं वा पणकाये ण हि साहारणमिणं य आदावं।
दुसु तद्दुगमुज्जोवं कमेण चरिमम्हि आदावं॥३५२॥
ओघं तसे ण थावरदुगसाहरणेयतावमथ ओघं।
मणवयणसत्तगे ण हि ताविगिविगलं य थावराणुचओ ॥३५३
अणुभयवचि वियलजुदा ओघमुराले ण हारदेवाऊ।
वेगुव्वछक्कणरतिरियाणु अपज्जत्तणिरयाऊ ॥३५४॥
तम्मिस्सेऽपुण्णजुदा ण मिस्सथीणतियसरविहायदुगं।
परघादचओ अयदे णादेज्जदुदुब्भगं ण संढिच्छी ॥३५५॥
साणे तेसिं छेदो वामे चत्तारि चोद्दसा साणे।
चउदालं वोछेदो अयदे जोगिम्हि छत्तीसं ॥३५६॥
देवोघं वेगुव्वे ण सुराणू पक्खिवेज्ज णिरयाऊ।
णिरयगदिहुंडसंढं दुग्गदि दुब्भगचओ णीचं ॥३५७॥

वेगुव्वं वा मिस्से ण मिस्स परघादसरविहायदुगं ।
साणे ण हुंडसंढं दुब्भगणादेज्ज अज्जसयं ॥३५८॥
णिरयगदिआउणीचं ते खित्तयदेऽवणिज्ज थीवेदं ।
छट्ठगुणं वाहारे ण थीणतियसंढथीवेदं ॥३५९॥
दुग्गदि दुस्सरसंहदि ओरालदु चरिमपंचसंठाणं ।
ते तम्मिस्से सुस्सर परघादडुसत्थगदि हीणा ॥३६०॥
ओघं कम्मे सरगदिपत्तेयाहारुरालदुग मिस्सं ।
उवघादपण विगुव्वदुथीणतिसंठाणसंहदी णत्थि ॥३६१॥
साणे थीवेदछिदी णिरयदुणिरयाउगं ण तियदसयं ।
इगिवण्णं पणवीसं मिच्छादिसु चउसु वोच्छेदो ॥३६२॥

इकवत् भू साधा विना, साधातप विन नीर ।
दो साधातप द्योत विन, तरु आतप विन वीर ॥३५२॥
त्रस गुणवत् तज थवर दुक, साधा इक आताप ।
मन वच सात न इक विकल,अनुथावर चउ ताप ॥३५३
विकल सहित अनुभय वचन, विक्रिय छै आहार ।
नर पशु अनु सुर नरक वय, ऊंन बिना औदार ॥३५४॥
सुरगति दुक परघात चउ, मिश्र नींद त्रय छंड ।
मिश्र ऊंनयुत दृग न तिय, दुभग अदे दुक षंड ॥३५५

ये सासा में विछुरतीं, भ्रम चउ चौदह सान ।
अविरत विछुरें चवलिसा, सयोग छालिस जान ॥३५६
विक्रिय सुरमें दुभग चउ, हुंड नरक वय षंड ।
कुगति नरकगति नीच मिल, सुरपूर्वी को छंड ॥३५७
मिश्र उसीवत् मिश्रसुर, गति परवध दुक हेय ।
सास न हुंडा यश दुभग, षंड नीच अनदेय ॥३५८॥
नरक आयु गति पर उदय, दृग में नारी टार ।
आहर में गुण प्रमत की, षंड नींद् त्रय नार ॥३५९
सँहनन औदा दुक कुगति, दुस्वर चिन्ह पन खोय ।
और मिश्र में कम सुस्वर, कुगति रु परवध दोय ॥३६०
कर्म न परवध पन मिसर, आदि तीन तन जोड ।
चिन्ह नींद् त्रय संहनन, स्वर गति प्रत्ये जोड ॥३६१॥
सास नारि क्षय उदय नहिं, नारक दुक वय मान ।
त्रय दश इक्यावन पचिस, क्षय भ्रमादि त्रय थान ॥३६२

अर्थ—कायमार्गणा मे पृथ्वीकाय के एकेन्द्रिय की ८० प्रकृतियो मे से साधारणप्रकृति का उदय न होने से शेष ७९ प्रकृतियो का उदय होता है । जल और प्रत्येकवनस्पतिकाय के एकेन्द्रिय की ८० प्रकृतियो मे से साधारण और आतापप्रकृति का उदय न होने से शेष ७८ प्रकृतियो का उदय होता है । अग्नि और पवन के एकेन्द्रिय की ८० प्रकतियो मे से साधारण, आताप और उद्योतप्रकृति का उदय न होने

से शेष ७७ प्रकृतियों का उदय होता है। साधारणवनस्पति काय के भी एकेन्द्रिय की ८० प्रकतियो मे से प्रत्येक-उद्योत और आताप-प्रकृति का उदय न होने से शेष ७७ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—जिस जिस प्रकृति का जिस जिस के उदय नही है उस उस के विना अनुदयादि का कथन एकेन्द्रिय के समान है किन्तु अग्नि, पवन और साधारणवनस्पंतिकाय के सासादनगुणस्थान नही होता।

अर्थ—त्रसकाय के गुणस्थानसमान १२२ में से स्थावर १ सूक्ष्म १ साधारण १ एकेन्द्रिय १ आताप १ इसतरह ५ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ११७ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे गुणस्थानसमान ५ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ११२ प्रकृतियो का उदय त्रस के होता है और मिथ्यात्व और अपर्याप्तप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है सासादन गुणस्थान में उपरोक्त ७ नरकगत्यानुपूर्वी १ इसतरह ८ प्रकृतियों का उदय न होने से शेष १०९ प्रकृतियो का उदय होता है और अनतानुवधी ४ विकलत्रय ३ इसतरह ७ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है और मिश्रादिगुणस्थानो में उदय और उदयविछुत्ति गुण-स्थानसमान है किन्तु अनुदयप्रकृतियो में मूल से ५–५ प्रकृतिया कम हैं।

	पृथ्वी		ज० प्र०		अ०प०सा०		त्रसकाय र०		
	मि.	सा	मि.	सा.	मि.	सा.	मि.	सा.	मिश्रादि
अ.	०	१०	०	९	०	+	५	८	५–५ कम
उ.	७९	६९	७८	६९	७७	+	११२	१०९	गुण. स.
वि.	१०	६	९	६	०	+	२	७	गुण. स.

अर्थ—योगमार्गणा में चार प्रकार के मन योगवालो के और अनुभयवचन विना तीन प्रकार के वचनयोगवालों के गुणस्थान-समान १२२ प्रकृतियों में से आताप १ आदिकी इन्द्रिय ४ स्थावर ४

आनुपूर्वी ४ इस तरह १३ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप १०६ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे गुणस्थानसमान ५ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप १०४ प्रकृतियो का उदय होता है और मिथ्यात्व की उदयविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ६ प्रकृतियो का उदय म होने से शेप १०३ प्रकृतियो का उदय होता है और अनतानुबधी ४ की उदयविछुत्ति होती है मिश्रगुणस्थान मे मिश्रप्रकृति विना उपरोक्त ९ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप १०० प्रकृतियो का उदय होता है और मिश्रप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है अविरतगुणस्थान मे सम्यक्प्रकृति विना उपरोक्त ९ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप १०० प्रकृतियो का उदय होता है और आनुपूर्वी ४ विना गुणस्थानसमान १३ प्रकृतियो कि उदयविछुत्ति होती है देशविरत से लेकर क्षीणमोहगुणस्थान तक उदय और उदयविछुत्ति गुणस्थानसमान है और अनुदयप्रकृतिया मूल से १३ १३ कम हैं और सयोगगुणस्थान मे उपरोक्त ६७ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ४२ प्रकृतियो का उदय होता है और इनही ४२ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है।

नोट—असत्य और उभयमन तथा वचन का अनुदयादि कथन क्षीणमोहगुणस्थान तक है।

अर्थ—अनुभय वचनयोग वालो के उपरोक्त १०९ प्रकृतियो मे विकलत्रय ३ मिलाने से ११२ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे गुणस्थानसमान ५ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप १०७ पकतियो का उदय होता है और मिथ्यात्व की उदयविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ६ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप १०६ प्रकृतियो का उदय होता है और अनतानुवधी ४ की उदयविछुत्ति होती है और मिश्र से सयोगगुणस्थान तक अनुदय, उदय और उदयविछुत्ति मनोयोग समान है किन्तु मनोयोग से अनुदयप्रकृतिया ३–३ वढती है।

४ मन ३ वचन की रचना

	मि०	सा०	मि०	अ०	देशादि	स०
अ०	५	६	९	९	१३-१३ काम	६७
उ०	१०४	१०३	१००	१००	गुस	४२
वि०	१	४	१	१३	गुस	४२

अनुभय वचन रचना

	मि०	सा०	मिश्रादि
अ०	५	६	३-३ बढ
उ०	१०७	१०६	म० स०
वि०	१	४	म० स०

अर्थ—औदारिककाययोग वालो के गुणस्थानसमान १२२ प्रकृतियो में से आहारक २ विक्रियक ६ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ तिर्यंच-गत्यानुपूर्वी १ अपर्याप्त १ नरकायु १ देवायु १ इसतरह १३ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष १०९ प्रकृतियों का उदय होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे तीर्थंकर, मिश्र और सम्यक्त्व प्रकृति का उदय न होने से शेष १०६ प्रकृतियो का उदय होता है और अपर्याप्त बिना गुणस्थानसमान ४ प्रकृतियों की उदयविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान में उपरोक्त ७ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप १०२ प्रकृतियों का उदय होता है और गुणस्थानसमान ९ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है मिश्रगुणस्थान में मिश्रप्रकृति विना उपरोक्त १५ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप ९४ प्रकृतियों का उदय होता है और मिश्रप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है। अवि-रतगुणस्थान में सम्यक्प्रकृति विना उपरोक्त १५ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ९४ प्रकृतियो का उदय होता है और अप्रत्याख्यान

४ दुर्भगादि ३ इसतरह ७ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है देश-विरतगुणस्थान मे उपरोक्त २२ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप ८७ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ८ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है। प्रमत्तगुणस्थान मे उपरोक्त ३० प्रकृतियो का उदय न होने से शेप ७६ प्रकृतियो का उदय होता है और शयन-गृद्धि ३ की उदयविछुत्ति होती है और अप्रमत्त से लेकर सयोगगुण-स्थान तक अनुदय, उदय और उदयविछुत्ति मनोयोग समान है।

अर्थ—औदारिकमिश्रकाययोगवाले के उपरोक्त १०६ अपर्याप्त १ इसतरह ११० प्रकृतियो मे से मिश्रप्रकृति १ शयनगृद्धि ३ स्वर २ चाल २ परघात ४ इसतरह १२ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ६८ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावर्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे तीर्थंकर और सम्यक्प्रकृति का उदय न होने से शेष ६६ प्रकृतियो का उदय होता है और मिथ्यात्व १ सूक्ष्मादि ३ इसतरह ४ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है सासा-दनगुणस्थान मे उपरोक्त ६ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ६२ प्रकृतियो का उदय होता है और अनतानुवधी ४ स्थावर १ आदि की इन्द्रिय ४ दुर्भग १ अनादेय २ नपुसकवेद १ स्त्रीवेद १ इस-तरह १४ प्रकृतियो की उदय विछुत्ति होती है अविरतगुणस्थान मे सम्यक्प्रकृति विना उपरोक्त १६ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७६ प्रकृतियो का उदय होता है और प्रत्याख्यान ४ उद्योत विना देशविरत की ७ प्रमत्त ० अप्रमत्त की ४ अपूर्वकरण की ६ स्त्री और नपुसकवेद विना अनिवृत्तिकरण की ४ सूक्ष्मसापराय की १ उप-शातमोह की २ क्षीणमोह की १६ इसतरह ४४ प्रकृतियो की उदय-विछुत्ति होती है तथा सयोगगुणस्थान मे तीर्थंकर विना उपरोक्त ६२ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप ३६ प्रकृतियो का उदय होता है और इन ही ३६ प्रकृतियो की उदय विछुत्ति होती है कारण स्वर २ चाल २ परघात १ उश्वास १ इन ६ प्रकृतियो का समुदघात के

समय उदय ही नही होता इसलिये ३६ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति है ।

औदारिककाययोग रचना

	मि०	सा०	मि०	अ०	दे०	प्र०	शे०
अ.	३	७	१५	१५	२२	३०	म.स.
उ.	१०६	१०२	९४	९४	८७	७९	म.स
वि.	४	९	१	७	८	३	म.स.

औ० मि० का० यो० र०

मि०	सा०	अ०	स०
२	६	१९	६२
९६	९२	७९	३६
४	१४	४४	३६

अर्थ—विक्रियकाययोग वाले के देवगत्यानुपूर्वी बिना देवगतिसमान ७६ प्रकृतियों में नरकायु १ नरकगति १ हुंडकसस्थान १ नपुसकवेद १ कुचाल १ दुर्भगादि ४ नीचगोत्र १ इसतरह १० प्रकृतियों को मिलाने से ८६ प्रकृतियों का उदय होता है ।

भावार्थ—मिथ्यात्व से लेकर सासादनगुणस्थान तक अनुदय और उदयविछुत्ति देवगातिसमान है और उदय क्रमसे ८४-८३ प्रकृतियों का है मिश्रगुणस्थान में मिश्रप्रकृति बिना उपरोक्त ६ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ८० प्रकृतियो का उदय होता है और मिश्रप्रकृति की उदय विछुत्ति होती है अविरतगुणस्थान मे सम्यक्प्रकृति बिना उपरोक्त ६ प्रकृतियों का उदय न होने से शेष ८० प्रकृतियो का उदय होता है और अप्रत्याख्यान ४ देवगति १ नरकगति १ विक्रियक २ देवायु १ नरकायु १ दुर्भगादि १ अनादेय २ इस तरह १३ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है ।

अर्थ—विक्रियकमिश्रकाययोग वाले के उपरोक्त ८६ प्रकृतियो मे से मिश्रप्रकृति १ परघात २ स्वर २ चाल २ इसतरह ७ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७६ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुस्थान मे सम्यक्प्रकृति का उदय न होने से शेष ७८ प्रकृतियो का उदय होता है और मिथ्यात्वप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थानमे उपरोक्त २ हुडकसस्थान १ नपुसकवेद १ दुर्भग १ अनादेय २ नरकगति १ नरकायु १ नीचगोत्र १ इसतरह १० प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ६९ प्रकृतियो का उदय होता है और अनतानुवधी ४ स्त्रीवेद १ इसतरह ५ प्रकृतियों की उदयविछुत्ति होती है तथा अविरतगुणस्थान मे सम्यकप्रकृति १ हुंडकसस्थानादि ८ इसतरह ९ प्रकृतियो के विना उपरोक्त ६ प्रकतियो का उदय न होने से शेष ७३ प्रकृतियो का उदय होता है और विक्रियककाययोग समान १३ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है।

विक्रियक रचना

	मि०	सा०	मि०	अ०
अ	२	३	६	६
उ	८४	८३	८०	८०
वि.	१	४	१	१३

वि० मि० रचना

	मि०	सा०	अ०
अ.	१	१०	६
उ	७८	६९	७३
वि	१	५	१३

अर्थ—आहारककाययोग वाले के प्रमत्तगुणस्थान की ८१ प्रकृतियो मे से शयनगृद्धि ३ नपुसकवेद १ स्त्रीवेद १ कुचाल १ दुःस्वर १ सस्थान ५ औदारिक २ सहनन ६ इसतरह २० प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ६१ प्रकृतियो का उदय होता है और आहारकमिश्रकाययोग वाले के उपरोक्त ६१ प्रकृतियो मे से सुस्वर १ परघात १ उश्वास १ सुचाल १ इसतरह ४ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ५७ प्रकृतियो का उदय होता है।

अर्थ—कार्मणिकाययोग वाले के गुणस्थानसमान १२२ प्रकृतियों मे से स्वर २ चाल २ प्रत्येक २ आहारक २ औदारिक २ मिश्रप्रकृति १ उपघातादि ५ विक्रियक २ शयनगृद्धि ३ सस्थान ६ सहनन ६ इसतरह ३३ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप ८६ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ——मिथ्यात्वगुणस्थान मे सम्यकत्व प्रकृति और तीर्थकर प्रकृति का उदय न होने से शेप ८७ प्रकृतियो का उदय होता है और मिथ्यात्व १ सूक्ष्म १ अपर्याप्प १ इसतरह ३ प्रकृतियो की उदय-विछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ५ नरकगति २ नरकायु १ इसतरह ८ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप ८१ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ६ स्त्रीवेद १ इसतरह १० प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है अविरतगुणस्थान मे सम्यक्प्रकृति १ नरकगति २ नरकायु १ इन ४ बिना उपरोक्त १४ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप ७५ प्रकृतियो का उदय होता है और विक्रियक २ विना अविरत की १५ उद्योत विना देशविरत की ७ प्रमत्तकी० सम्यक्प्रकृति १ अपूर्वकरण की ६ स्त्रीवेद विना अनिवृत्तिकरण की ५ मूक्ष्मलोभ १ उपशांतकी ० क्षीणमोह की १६ इस तरह ५१ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है तथा सयोगगुण-स्थान मे तीर्थंकरप्रकृति विना उपरोक्त ६४ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप २५ प्रकृतियो का उदय होता है और इन्ही २५ प्रकृतियों की उदयविछुत्ति होती है कारण प्रथमसहनन १ स्वर २ चाल २ औदारिक २ सस्थान ६ उपघात १ परघात १ उश्वास १ प्रत्येक १ इन १७ प्रकृतियो का समुदघात के समय उदय ही नही होता इसलिये २५ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति है ॥३५१—३६१॥

आ० यो०		मि० यो०		कार्मणयोग २०				
	प्र०		प्र०		मि०	सा०	अ०	स०
अ	०	अ	०	अ	२	८	१४	६४
उ	६१	उ	५७	उ	८७	८१	७५	२५
वि	०	वि	०	वि	३	१०	५१	२५

आगे वेदमार्गणा मे अनुदयादि प्रकृतियो को दिखाते है।

मूलोघं पुंवेदे थावरचउणिरयजुगलतित्थयरं।
इगिविगलं थीसंढं तावं णिरयाउगं णत्थि ॥३६२॥
इत्थीवेदेवि तहा हारदुपुरिसूणमित्थिसंजुत्तं।
ओघं संढे ण हि सुरहारदुथीपुंसुराउतित्थयरं ॥३६३॥

पुरुष मूलवत् इक विकल, आतप थावर चार।
नारकगति दुक नरक त्रय, तीर्थ षंडतिय टार ॥३६३॥
नारि उसीवत् तिय मिला, तज नर अरु आहार।
षंड न सुर त्रय तीर्थ नर, सुराहार दुक नार ॥३६४॥

अर्थ—वेदमार्गणा मे पुरुष वेद वाले के गुणस्थानसमान १२२ प्रकृतियो मे से स्थावर ४ नरकगति २ तीर्थंकर १ इन्द्रिय ४ स्त्री-वेद १ नपुसकवेद १ आताप १ नरकायु १ इसतरह १५ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष १०७ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे तीर्थंकर प्रकृति विना गुणस्थान ४ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष १०३ प्रकृतियो का उदय होता है और मिथ्यात्व की उदयविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ५ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष १०२ प्रकृतियो का

उदय होता है और अनतानुबंधी ४ की उदयविछुत्ति होती है मिश्र-गुणस्थान में मिश्रप्रकृति बिना उपरोक्त ८ आनुपूर्वी ३ इसतरह ११ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ९६ प्रकृतियो का होता है और मिश्रप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है अविरतगुणस्थान मे सम्यक्-प्रकृति १ पूर्वी ३ बिना उपरोक्त ८ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ९९ प्रकृतियो का उदय होता है और अप्रत्याख्यान ४ देवगति ४ देवायु १ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ तिर्यचगत्यानुपूर्वी १ दुर्भग १ अनादेय २ इसतरह १४ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है देशविरतगुण-स्थान मे उपरोक्त २२ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ८५ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थान समान ८ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है प्रमत्तगुणस्थान में आहारक २ बिना उपरोक्त २८ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७९ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ५ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है अप्रमत्तगुणस्थान मे उपरोक्त ३३ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७४ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ४ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है अपूर्वकरणगुणस्थान मे उप-रोक्त ३७ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७० प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ६ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है और अनिवृत्तिकरणगुणस्थान मे उपरोक्त ४३ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ६४ प्रकृतियो का उदय होता है और पुरुप-वेद १ क्रोधादि ३ सूक्ष्मलोभ १ वज्रनाराच १ नाराच १ क्षीणमोह की १६ तीर्थकर बिना केवली की ४१ इसतरह ६४ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है ।

पुरुषवेद की रचना

	मि.	सा.	मि	अ	दे	प्र.	अ.	अ	अ.
अ.	४	५	११	८	२२	२८	३३	३७	४३
उ.	१०३	१०२	९६	९९	८५	७९	७४	७०	६४
वि	१	४	१	१४	८	५	४	६	६४

अर्थ—स्त्रीवेद वाले के आहारक २ पुरुपवेद १ विना पुरुपवेद-समान १०४ प्रकृतियो मे स्त्री वेद मिलाने से १०५ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे मिश्र और सम्यक्प्रकृति का उदय न होने से शेप १०३ प्रकृतियो का उदय होता है और मिथ्यात्व की उदयविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ३ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप १०२ प्रकृतियो का उदय होता है अनतानुवधी ४ आनुपूर्वी ३ इसतरह ७ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है मिश्रगुणस्थान मे मिश्रप्रकृति विना उपरोक्त ९ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ९६ प्रकृतियो का उदय होता है और मिश्रप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है अविरतगुणस्थान मे सम्यक्-प्रकृति विना उपरोक्त ९ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ९६ प्रकृतियो का उदय होता है और आनुपूर्वी ३ विना पुरुषवेदसमान ११ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है देशविरत से लेकर अनि-वृत्तिगुणस्थान तक अनुदयादि का कथन पुरुप वेद समान है केवल आहारक २ का यहाँ अनुदयादि है।

स्त्रीवेद की रचना

	मि	सा	मि	अ	दे	प्र	अ.	अ	अ
अ	२	३	९	९	२०	२८	३१	३५	४१
उ	१०३	१०२	९६	९६	८५	७७	७४	७०	६४
वि	१	७	१	११	८	३	४	६	६४

अर्थ—नपुसक वेद वाले के गुणस्थानसमान १२२ प्रकृतियो मे से देवगति २ आहारक २ स्त्रीवेद १ पुरुपवेद १ देवायु १ तीर्थकर १ इसतरह ८ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ११४ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे मिश्रप्रकृति और सम्यक्प्रकृति के उदय न होने से शेप ११२ प्रकृतियो का उदय होता है और गुण-

ऽ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ तिर्यग्गत्यानु-
की उदयविछुत्ति होती है मिश्रगुण-
ारोक्त १८ प्रकृतियो का उदय न होने
ा होता है और मिश्रप्रकृति की उदय-
ास्थान मे सम्यक्प्रकृति और नरक-
७ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष
है और अप्रत्याख्यान ४ नरकगति ४
२ इसतरह १२ प्रकृतियो की उदय-
रत से लेकर अनिवृत्तिगुणस्थान तक
ृत्ति स्त्रीवेदसमान है किन्तु अनुदय-
है इस प्रकार नपुसकवेद का विशेष

सकवेद रचना

अ.	दे	प्र	अ	अ.	अ
१७	२६	३७	४०	४४	५०
९७	८५	७७	७४	७०	६४
१२	८	३	४	६	६४

ार्गणा तक अनुदयादि दिखाते हैं।

नकूणमोघमिह कोहे।

नऽणकोहाणुथावरचउक्कं ॥३६४॥

मण्णाणगे दु सगुणोघं।

गलिंदी थावराणुचऊ ॥३६५॥

सण्णाणपंचयादी दंसणमग्गणपदोत्ति सगुणोघं ।
मणपज्जवपरिहारे णवरि ण संढित्थि हारदुगं ॥३६६॥
चक्खुम्मि ण साहारणताविगिबितिजाइ थावरं सुहुमं ।
किण्हदुगे सगुणोघं मिच्छे णिरयाणुवोच्छेदो ॥३६७॥
साणे सुराउसुरगदिदेवतिरिक्खाणुवोछिदी एवं ।
काओदे अयदगुणे णिरयतिरिक्खाणुवोछेदो ॥३६८॥
तेउतिये सगुणोघं णादाविगिविगलथावरचउक्कं ।
णिरयदुतदाउतिरियाणुगं णराणू ण मिच्छदुगे ॥३६९॥

क्रोध मूलवत् तीर्थ मद, कपट लोभ चउ टार ।
अन विनहि न अनक्रोध तप, इंदि थवर अनु चार ॥३६४
यों मदादि श्रुत कुमति में, अहारादि पन टार ।
कुअवधि उन वत् विन तपा, इंदि थवर अनु चार ॥३६५
गुणवत् पन सद ज्ञान से, दर्शन मग तक सार ।
मन पर्यय में नहिं उदय, षंड नारि आहार ॥३६६॥
दृग न सूक्ष्म जिन थवर तप, साधा इक वे तीन ।
कृष्ण नील निज मूलवत्, भ्रमहिं नरक अनु हीन ।३६७
सासा में सुर आयु गति, सुर-पशु पूर्वी हीन ।
उन वत् कपोत दृष्टि में, नरक पशू अनु छीन ॥३६८

शेष स्वगुण वत् थवर चउ, पशु अनु इक विकलान।
नारक दुक वय ताप तज, नर अनु नहिं भ्रमसान ॥३६८

अर्थ—कषायमार्गणा में अनतानुवंधी आदि क्रोध कषाय वाले के गुणस्थान समान १२२ प्रकृतियो मे से मान ४ माया ४ लोभ ४ तीर्थंकर १ इसतरह १३ प्रकृतियों का उदय न होने से शेष १०९ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान में आहारक २ मिश्रप्रकृति १ सम्यक्प्रकृति १ के उदय न होने से शेष १०५ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ५ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है सासादन गुणस्थान में उपरोक्त ९ और नरकगत्यानुपूर्वी के उदय न होने से शेष ९९ प्रकृतियो का उदय होता है और अनतानुबधीक्रोध १ इन्द्रिय ४ स्थावर १ इसतरह ६ प्रकृतियों की उदयविछुत्ति होती है मिश्रगुणस्थान में मिश्र विना उपरोक्त १५ आनुपूर्वी ३ इसतरह १८ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ९१ प्रकृतियो का उदय होता है और मिश्रप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है। अविरतगुणस्थान मे सम्यक्प्रकृति १ आनुपूर्वी ४ के विना उपरोक्त १४ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ९५ प्रकृतियो का उदय होता है और अप्रत्याख्यानक्रोध १ विक्रियक ६ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ तिर्यंचगत्यानुपूर्वी १ देवायु १ नरकायु १ दुर्भग १ अनादेय २ इसतरह १४ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है। देशविरतगुणस्थान मे उपरोक्त २८ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ८१ प्रकृतियो का उदय होता है और प्रत्याख्यान क्रोध १ तिर्यंचायु १ उद्योत १ नीचगोत्र १ तिर्यंचगति १ इसतरह ५ प्रकृतियों की उदयविछुत्ति होती है प्रमत्तगुणस्थान मे आहारक २ विना उपरोक्त ३१ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७८ प्रकृतियो का उदय होता और गुणस्थानसमान ५ प्रकृतियों की उदयविछुत्ति होती है अप्रमत्तगुणस्थान मे उपरोक्त ३६ प्रकृतियो

का उदय न होने से शेष ७३ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ४ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है अपूर्वकरणगुणस्थान मे उपरोक्त ४० प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ६९ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ६ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है और अनिवृत्तिकरणगुणस्थान मे उपरोक्त ४६ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ६३ प्रकृतियो का होता है और वेद ३ सज्वलनक्रोध १ लोभ ० वज्रनाराच २ क्षीणमोहकी १६ तीर्थकर विना सयोग की ४१ इसतरह ६३ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है इसीतरह अनतानुवधी आदि मान, माया और लोभ का कथन है अतर केवल इतना है कि सज्वलनलोभ का उदय सूक्ष्मसापरायगुणस्थान तक होता है।

अर्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे अनतानुवधी रहित क्रोध वाले के उपरोक्त १०९ मे से इन्द्रिय ४ आताप १ अनतानुवधी क्रोध १ आनुपूर्वी ४ स्थावर ४ इसतरह १४ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ९१ प्रकृतियो का उदय होता है इसीतरह मानादि का है।

अनंतानुबंधी आदि क्रोध की रचना ३ को० र०

	मि	सा	मि	अ	दे	प्र	अ	अ	अ		मि
अ.	४	१०	१८	१४	२८	३१	३६	४०	४६	अ	
उ	१०५	९९	९१	९५	८१	७८	७३	६९	६३	उ	९१
वि	५	६	१	१४	५	५	४	६	६३	वि.	

अर्थ—ज्ञानमार्गणा मे कुमति और कुश्रुतवाले के गुणस्थानसमान १२२ प्रकृतियो मे से आहारक २ मिश्रप्रकृति १ सम्यक्प्रकृति १ तीर्थंकर १ इसतरह ५ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ११७ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान अनुदय सून्य होने से ११७ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ५ नरकगत्यानु-

पूर्वी १ इसतरह ६ प्रकृतियों की उदयविछुत्ति होती है सासादन-गुणस्थान में उपरोक्त ६ प्रकृतियों का उदय न होने से शेष १११ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ६ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है।

अर्थ—कुअवधि—ज्ञानवाले के उपरोक्त ११७ में से आताप १ इन्द्रिय ४ स्थावर ४ आनपूर्वी ४ इसतरह १३ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप १०४ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे अनुदय सून्य होने से १०४ प्रकृतियो का उदय होता है और मिथ्यात्व की उदयविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान में मिथ्यात्व का उदय न होने से शेष १०३ प्रकृतियो का उदय होता है और अनतानुवधी ४ की उदयविछुत्ति होती है।

अर्थ—सुमति, सुश्रुत और सुअवधि ज्ञानवाले के गुणस्थानसमान १२२ प्रकृतियो मे से आदि के तीन गुणस्थानो में विछुत्ति होनेवाली १५ तीर्थकर १ इसतरह १६ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष १०६ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—अविरत से लेकर क्षीणमोह गुणस्थान तक अनुदय, उदय और उदयविछुत्ति गुणस्थानसमान है किन्तु अनुदयप्रकृतिया मूल से १६-१६ कम है।

अर्थ—मनपर्ययवाले के १२२ मे से आदि के ५ गुणस्थानो में विछुत्ति होनेवाली ४० तीर्थकर १ आहारक २ स्त्रीवेद १ नपुसक-वेद १ इस तरह ४५ का उदय न होने से शेष ७७ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—प्रमत्त से क्षीणमोहगुणस्थान तअ अनुदय, उदय और उदयविछुत्ति क्रमसे ०-७७-३, ३-७४-४, ७-७०-६, १३-६४-६, १७-६०-१, १८-५९-२ और २०-५७-१६ होती है।

अर्थ—केवलज्ञान वाले के सयोग और अयोगगुणस्थान में गुण-स्थानसमान अनुदय, उदय और उदयविछुत्ति होती है।

कुमतिकु श्रुत

	मि०	सा०
अ०	०	६
उ०	११७	१११
वि०	६	९

कुअवधि

	मि०	सा०
अ०	०	१
उ०	१०४	१०३
वि०	१	४

तीन सम्यक् ज्ञान रचना

	अ	दे	प्र	अ	अ	अ	सू	उ.	क्षी
अ	२	१९	२५	३०	३४	४०	४६	४७	४९
उ	१०४	८७	८१	७६	७२	६६	६०	५९	५७
वि.	१७	८	५	४	६	६	१	२	१६

मनपर्यज्ञान की रचना

	प्र	अ	अ	अ	सू	उ.	क्षी
अ.	०	३	७	१३	१७	१८	२०
उ	७७	७४	७०	६४	६०	५९	५७
वि	३	४	६	४	१	२	२६

के. ज्ञा. र.

	स	अ.
अ	०	३०
उ	४२	१२
वि.	३०	१२

अर्थ—सयममार्गणा में सामायिक और छेदोपस्थापना सयमवाले के प्रमत्तगुणस्थान मे उदय होनेवाली ८१ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—प्रमत्त से लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक अनुदय, उदय और उदयविछुत्ति गुणस्थानसमान हैं किंतु अनुदय प्रकृतिया मूल से ४१-४१ कम है।

अर्थ—परिहारविशुद्धि सयमवाले के उपरोक्त ८१ प्रकृतियो मे से आहारक २ स्त्रीवेद १ नपुसकवेद १ इसतरह ४ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७७ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—प्रमत्तगुणस्थान में अनुदयसून्य होने से ७७ प्रकृतियो का उदय होता है और शयनगृद्धि ३ की उदयविछुत्ति होती है और अप्रमत्तगुणस्थान मे उपरोक्त ३ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७४ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ४ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है।

अर्थ—सूक्ष्मसापरायगुणस्थान में गुणस्थानसमान ६० प्रकृतियो का उदय होता है और सूक्ष्मलोभ की उदयविछुत्ति होती है।

अर्थ—यथाख्यात सयमवाले के उपशातगुणस्थान में उदय होने वाली ५९ प्रकृतियो में तीर्थकरप्रकृति मिलाने से ६० का उदय होता है।

भावार्थ—उपशातमोह से लेकर अयोगगुणस्थान तक उदय और उदयविछुत्ति गुणस्थानसमान है तथा अनुदय १, ३, १८, ४८ का होता है अर्थात् अनुदयप्रकृतिया मूल से ६२-६२ कम है।

अर्थ– देशसयम वाले के गुणस्थान ८७ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणंस्थान एक देशविरत ही होता है।

असयम वाले जीव के गुणस्थानसमान १२२ प्रकृतियो में से आहारक २ और तीर्थकरप्रकृति १ उदय न होने से शेष ११९ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्व से लेकर अविरतगुणस्थान तक अनुदय, उदय और उदयविछुत्ति गुणस्थानसमान है किन्तु अनुदय प्रकृतिया मूल से ३-३ कम है। -

सामा० छेद० रचना परि० रचना सू०र०

	प्र०	अ०	अ०	अ०		प्र०	अ०		सू०
अ०	०	५	९	१५	अ	०	३	अ०	०
उ०	८१	७६	७२	६६	उ	७७	७४	उ०	६०
वि०	५	४	६	६	वि.	३	४	वि०	१

यथाख्यात रचना

	उ०	क्षी०	स०	अ०
अ०	१	३	१८	४८
उ०	५६	५७	४२	१२
वि०	२	१६	३०	१२

दे० र० असंयम रचना

	दे०		मि०	सा०	मि०	अ०
अ०	०	अ०	२	८	१६	१५
उ०	८७	उ०	११७	१११	१००	१०४
वि०	०	वि०	५	६	१	१७

अर्थ—दर्शनमार्गणा मे चक्षुदर्शनवाले के गुणस्थान समान १२२ प्रकृतियो मे से साधारण १ आताप १ इन्द्रिय ३ स्थावर २ तीर्थकर १ इसतरह ८ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप ११४ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ–मिथ्यात्वगुणस्थान मे आहारक २ मिश्रप्रकृति १ सम्यक्-प्रकृति १ का उदय न होने मे शेप ११० प्रकृतियो का उदय होता है और मिथ्यात्व १ और अपर्याप्तप्रकृति १ की उदयविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ६ नरकगत्यानुपूर्वी १ इसतरह ७ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप १०७ प्रकृतियो का उदय होता है और अनतानुवधी ४ चौइन्द्रिय १ इसतरह ५ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है और मिश्र से लेकर क्षीणमोह गुणस्थान तक अनुदय, उदय और उदयविछुत्ति गुणस्थान समान है किन्तु अनुदय प्रकृतिया मूल से ८-८ कम है।

अर्थ—अचक्षुदर्शनवाले जीव के गुणस्थानसमान १२२ प्रकृतियो मे से केवल तीर्थकरप्रकृति का उदय न होने से शेप १२१ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्व से लेकर क्षीणमोहगुणस्थान तक अनुदय उदय और उदयविछुत्ति गुणस्थानसमान है किन्तु अनुदय प्रकृतिया मूल से १-१ कम है।

अर्थ—अवधि और केवलदर्शनवाले के अवधि और केवलज्ञान के समान क्रम से १०६, ४२ प्रकृतियो का उदय होता है और इनके अनुदयादि का कथन अवधि और केवलज्ञान के समान है।

चक्षुदर्शन रचना

	मि०	सा०	मिश्र से क्षीण तक
अ०	४	७	८-८ प्र० कम
उ०	११०	१०७	गुण० समान
वि०	२	५	गुण० समान

अचक्षुदर्शन रचना

	मि०	सा०	मिश्र से क्षीण तक
अ०	४	१०	१-१ कम
उ०	११७	१११	गुण० समान
वि०	५	९	गुण० समान

अर्थ—लेश्यामार्गणा मे कृष्ण और नीललेश्या वाले के गुणस्थान समान १२२ प्रकृतियो में से आहारक २ तीर्थकर १ इसतरह ३ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ११९ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान में मिश्र और सम्यक्प्रकृति का उदय न होने से शेष ११७ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ५ नरकगत्यानुपूर्वी १ इसतरह ६ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ८ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष १११ प्रकृतियो का उदय होता है और गुण-

स्थानसमान ६ देवगति २ देवायु१ तिर्यंचगत्यानुपूर्वी १ इसतरह १३ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है मिश्रगुणस्थान मे मिश्र-प्रकृति विना उपरोक्त २० मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ इसतरह २१ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ६८ प्रकृतियो का उदय होता है और मिश्रप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है और अविरतगुणस्थान मे सम्यक्प्रकृति और मनुप्यगत्यानुपूर्वी के विना उपरोक्त २० प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ६६ प्रकृतियो का उदय होता है और अप्रत्याख्यान ४ नरकगति १ नरकायु १ विक्रियक २ मनुष्य-गत्यानुपूर्वी १ दुर्भग १ अयश १ अनादेय १ इसतरह १२ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है ।

अर्थ—कपोतलेश्या वाले के कृष्णालेश्या समान ११६ प्रकृतियो का उदय होता है ।

भावार्थ–मिथ्यात्वगुणस्थान मे मिश्रप्रकृति और सम्यक्प्रकृति का उदय न होने से शेप ११७ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थान समान ५ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ७ नरकगत्यानुपूर्वी १ इसतरह ८ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप १११ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थान समान ६ देवगति २ देवायु १ इसतरह १२ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है मिश्रगुणस्थान मे मिश्रप्रकृति विना उपरोक्त १६ मनुष्य-गत्यानुपूर्वी १ तिर्यचगत्यानुपूर्वी १ इसतरह २१ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप ६८ प्रकृतियो का उदय होता है और मिश्रप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है तथा अविरतगुणस्थान मे सम्यक्प्रकृति १ आनुपूर्वी ३ इसतरह ४ विना उपरोक्त १८ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप १०१ प्रकृतियो का उदय होता है और अप्रत्याख्यान ४ नरकगति ४ नरकायु १ तिर्यचगत्यानुपूर्वी १ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ दुर्भग १ अनादेय १ अशय १ इसतरह १४ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है ।

अर्थ–पीत और पद्मलेश्यावाले के गुणस्थानसमान १२२ प्रकृतियो मे से आताप १ इन्द्रिय ४ स्थावर ४ नरकगति २ नरकायु १ तिर्यचगत्यानुपूर्वी १ तीर्थकर १ इसतरह १४ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष १०८ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ–मिथ्यात्वगुणस्थान मे मिश्रप्रकृति १ सम्यक्प्रकृति १ आहारक २ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ इसतरह ५ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप १०३ प्रकृतियो का उदय होता है और मिथ्यात्व की उदयविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ६ प्रकृतियों का उदय न होने से शेष १०२ प्रकृतियो का उदय होता है और अनतानुबधी ४ की उदयबिछुत्ति होती है मिश्रगुणस्थान में मिश्रप्रकृति बिना उपरोक्त ९ देवगत्यानुपूर्वी १ इसतरह १० प्रकृतियों का उदय न होने से शेष ९८ प्रकृतियो का उदय होता है और मिश्रप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है अविरतगुणस्थान में सम्यक्प्रकृति १ देव और मनुष्यगत्यानुपूर्वी के बिना उपरोक्त ८ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष १०० प्रकृतियो का उदय होता है और अप्रत्याख्यान ४ देवगति ४ देवायु १ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ दुर्भग १ अनादेय २ इस तरह १३ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है और देशविरत से लेकर अप्रमत्तगुणस्थान तक अनुदय, उदय और उदयविछुत्तिगुणस्थान समान है किन्तु अनुदयप्रकृतियाँ मूल से १४-१४ कम है।

अर्थ—शुक्ललेश्यावाले के उपरोक्त १०८ मे तीर्थकर प्रकृति मिलाने से १०९ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्व से लेकर अप्रमत्तगुणस्थान तक अनुदय, उदय और उदयविछुत्ति पीतलेश्या समान है किन्तु अनुदय में १–१ प्रकृति बढती है अपूर्वकरण से लेकर क्षीणमोहगुणस्थान तक अनुदय, उदय और उदयविछुत्ति गुणस्थान समान है किन्तु अनुदय में १३–१३ मूल से कम है और सयोगगुणस्थान मे अनुदय ६७ उदय ४२ और उदयविछुति मे ४२ प्रकृतिया है ॥३६४-३६९॥

कृष्ण, नील रचना

	मि	सा	मि.	अ.
अ	२	८	२१	२०
उ.	११७	१११	९८	९९
वि	६	१३	१	१२

कपोत रचना

	मि.	सा	मि	अ.
अ	२	८	२१	१८
उ	११७	१११	९८	१०१
वि.	५	१२	१	१४

पीत, पद्मलेश्या रचना

	मि	सा	मि	अ.	दे.	प्र	अ
अ	५	६	१०	८	२१	२७	३२
उ	१०३	१०२	९८	१००	८७	८१	७६
वि	१	४	१	१३	८	५	४

शुक्ल ले० रचना

	मि से अ तक	अ क्षी तक	स
अ	पीत से १-१ अ.	गु १३-१३ कम	६७
उ	पीत समान	गुण समान	४२
वि	पीत समान	गुण. समान	४२

आगे भव्य से आहारक मार्गणा तक अनुदयादि दिखाते हैं।

भव्विदरुवसमवेदगखइये सगुणोघमुवसमे खयिये ।
ण हि सम्ममुवसमे पुणणादितियाणू य हारदुगं ॥३७०॥
खाइयसम्मो देसो णर एव जदो तहिं ण तिरियाऊ ।
उज्जोवं तिरियगदी तेसिं अयदम्हि वोच्छेदो ॥३७१॥
सेसाणं सगुणोघं सण्णिस्सवि णत्थि तावसाहरणं ।
थावरसुहुमिगिविगलं असण्णिणोवि य ण मणुदुच्चं ॥३७२॥
वेगुव्वछ पणसंहदिसंठाण सुगमण सुभगआउतियं ।
आहारे सगुणोघं णवरि ण सव्वाणुपुव्वीओ ॥३७३॥

कम्मे व अणाहारे पयडीणं उदयमेवमादेसे ।
कहियमिणं वलमाहवचंदच्चियणेमिचंदेण ॥३७४॥

उपशम वेदक भव्य पर, क्षयिक स्वगुण वत् सार ।
क्षय न साम्य शम में न शम, आदि पूर्वि त्रस हार ।३७०

क्षायिक दृष्टी देश में, होय मनुष ही मान ।
उद्योता पशु आयु गति, विछुरे दृग में जान ॥३७१॥

शेष स्वगुण वत् समन तज, थावर दुक जिन ताप ।
साध विकल इक अमल तज, आयु सुभग त्रय नाप ।३७२

नर दुक सँहनन चिन्ह पन, विक्रिय छै शुभ चाल ।
ऊंचाहारा स्वगुण वत्, परिपूर्वी सब टाल ॥३७३

अनाहार है कर्म वत्, प्रकृति उदय पहिचान ।
नारायण वलदेव से, पूजित नेम वखान ॥३७४॥

अर्थ—भव्यमार्गणा मे भव्य जीव के गुणस्थानसमान १२२ प्रकृतियो का उदय होता है और अभव्य जीव के एक मिथ्यात्व-गुणस्थान होता है इसलिये गुणस्थानसमान ११७ प्रकृतियों का उदय होता है तथा अनुदयादि का कथन गुणस्थान समान है ।

अर्थ—सम्यक्त्वमार्गणा मे उपशमसम्यक्त्व वाले के अविरत-गुणस्थानसमान १०४ प्रकृतियो मे से आदि की आनुपूर्वी ३ सम्यक्-प्रकृति १ इन ४ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष १०० प्रकृतियों का उदय होता है ।

भावार्थ—अविरतगुणस्थान मे अनुदयसून्य होनें से १०० प्रकृतियो का उदय होता है और अप्रत्याख्यान ४ देवगति ४ देवायु १ नरकगति १ नरकायु १ दुर्भग १ अनादेय २ इसतरह १४ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है देशविरतगुणस्थान मे उपरोक्त १४ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ८६ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ८ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है प्रमत्त-गुणस्थान मे उपरोक्त २२ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७८ प्रकृतियो का उदय होता है और शयनगृद्धि ३ की उदयविछुत्ति होती है अप्रमत्तगुणस्थान मे उपरोक्त २५ प्रकृतियो का उदय न होने से ७५ प्रकृतियो का उदय होता है और अत के ३ सहननो की उदयविछुत्ति होती है अपूर्वकरण से लेकर उपशातगुणस्थानतक अनुदय, उदय और उदयविछुत्ति गुणस्थानसमान है किन्तु अनुदय में मूल से २२–२२ प्रकृतिया कम है ।

अर्थ—वेदकसम्यक्त्व वाले के गुणस्थानसमान १२२ प्रकृतियो में से आदि के तीन गुणस्थानो मे उदयविछुत्ति होने वाली १५ तीर्थंकर १ इसतरह १६ प्रकृतियो का उदय न होने से १०६ प्रकृतियो का उदय होता है ।

भावार्थ—अविरतगुणस्थान मे आहारक २ का उदय न होने से शेष १०४ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान १७ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है देशविरत से लेकर अप्रमत्त-गुणस्थान तक अनुदय, उदय और उदयविछुत्ति गुणस्थानसमान है किन्तु अनुदय मे मूल से १६–१६ प्रकृतिया कम है ।

अर्थ—क्षायिक सम्यक्त्व वाले के गुणस्थानसमान १२२ प्रकृतियो मे से आदि के तीन गुणस्थानो मे उदयविछुत्ति होने वाली १५ सम्यक्त्वप्रकृति १ इसतरह १६ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष १०६ प्रकृतियो का उदय होता है और वह देशविरतगुणस्थान मे मनुष्य ही होता है कारण इसके अविरतगुणस्थान मे उद्योत, तिर्यंचगति और तिर्यंच आयु की उदयविछुत्ति होती है ।

भावार्थ—अविरतगुणस्थान में आहारक २ तीर्थंकर १ इसतरह ३ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष १०३ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान १७ तिर्यंचगति १ तिर्यंचायु १ उद्योत १ इसतरह २० प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है देश-विरतगुणस्थान मे उपरोक्त २३ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ८३ प्रकृतियो का उदय होता है और प्रत्याख्यान ४ नीचगोत्र १ इसतरह ५ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है प्रमत्तगुणस्थान में आहारक २ बिना उपरोक्त २६ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ८० प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ५ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है अप्रमत्तगुणस्थान में उपरोक्त ३१ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ७५ प्रकृतियो का उदय होता है और अत के सहनन ३ की उदयविछुत्ति होती है तथा अपूर्वकरण से लेकर अयोगगुणस्थान तक अनुदय, उदय और उदयविछुत्ति गुणस्थानसमान है किन्तु अनुदय मे १६–१६ प्रकृतिया मूल से कम है।

उ० रचना

	अ०	दे०	प्र०	अ०	शेष
अ०	०	१४	२२	२५	२२-२२ कम
उ०	१००	८६	७८	७५	गु०स०
वि०	१४	८	३	३	गु०सं०

वे० रचना

	अ०	शेष
अ०	२	१६-१६ कम
उ०	१०४	गु०स०
वि०	१७	गु०सं०

क्षा० रचना

	अ०	दे०	प्र०	अ०	शे०
अ०	३	२३	२६	३१	१६-१६ कम
उ०	१०३	८३	८०	७५	गु०सं०
वि०	२०	५	५	३	गु०सं०

अर्थ—शेष मिथ्यात्व, सासादन और मिश्रसम्यक्त्वमार्गणा मे अपने २ गुणस्थानसमान क्रमसे ११७, १११, १०० प्रकृतियो का उदय होता है।

अर्थ—सैनीमार्गणा मे सैनी के गुणस्थानसमान १२२ प्रकृतियो मे से आताप १ साधारण १ स्थावर १ सूक्ष्म १ इन्द्रिय ४ तीर्थकर १ इसतरह ९ प्रकृतियो का उदय न होने से ११३ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान में तीर्थकर विना गुणस्थानसमान ४ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष १०९ प्रकृतियो का उदय होता है और मिथ्यात्व और अपर्याप्त की उदयविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ६ नरकगत्यानुपूर्वी १ इसतरह ७ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष १०६ प्रकृतियो का उदय होता है और अनतानुबधी ४ की उदयविछुत्ति है मिश्रगुणस्थान मे मिश्र-प्रकृति विना उपरोक्त १० अत की आनुपूर्वी ३ इसतरह १३ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष १०० प्रकृतियो का उदय होता है और मिश्रप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है अविरत से लेकर क्षीणमोहगुणस्थान तक अनुदय, उदय और उदयविछुत्ति गुणस्थान-समान है किन्तु अनुदय मे ९-९ प्रकृतिया मूल से कम है और क्षीणमोहगुणस्थान मे ५७ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति है।

अर्थ—असैनी के मिथ्यात्वगुणस्थान समान ११७ प्रकृतियो मे से ऊचगोत्र १ मनुष्यगति २ विक्रियक ६ सस्थान ५ सहनन ५ शुभचाल १ सुभग ३ नरकायु १ मनुष्यायु १ देवायु १ इसतरह २६ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ९१ प्रकृतियो का उदय होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे अनुदय सून्य होने से ९१ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ५ शयनगृद्धि ३ पर-घात १ उद्योत १ उश्वास १ दुस्वर १ कुचाल १ इसतरह १३ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है तथा सासादनगुणस्थान मे

उपरोक्त १३ प्रकृतियों का उदय न होने से शेष ७८ प्रकृतियों का उदय होता है और गुणस्थानसमान ९ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है।

सैनी की रचना

	मि०	सा०	मि०	अ. से उ. तक	क्षी०
अ.	४	७	१३	९–९ कम	५६
उ.	१०९	१०६	१००	गुण० स०	५७
वि.	२	४	१	गुण० स०	५७

असैनी रचना

	मि.	सा
अ.	०	१३
उ.	९१	७८
वि.	१३	९

आहारमार्गणा में आहारवाले के गुणस्थानसमान १२२ प्रकृतियो में से आनुपूर्वी ४ का उदय न होने से शेष ११८ प्रकृतियों का उदय होता है।

भावार्थ—आहारमार्गणा के मिथ्यात्वगुणस्थान में गुणस्थान-समान ५ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष ११३ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ५ प्रकृतियों की उदयविछुत्ति होती है सासादनगुणस्थान में उपरोक्त १० प्रकृतियो का उदय न होने से शेष १०८ प्रकृतियो का उदय होता है और गुणस्थानसमान ९ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है मिश्रगुणस्थान में मिश्रप्रकृति बिना उपरोक्त १८ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष १०० प्रकृतियों का उदय होता है और मिश्रप्रकृति की उदयविछुत्ति होती है अविरतगुणस्थान मे सम्यक्प्रकृति बिना उपरोक्त १८ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष १०० प्रकृतियो का उदय होता है और आनुपूर्वी ४ बिना गुणस्थानसमान १३ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है तथा देशविरत से लेकर सयोग गुणस्थानसमान तक अनुदय, उदय और उदयविछुत्ति गुणस्थानसमान है किन्तु अनुदय मे मूल से ४–४ प्रकृतिया कम है और सयोग गुणस्थान मे ४२ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है।

अर्थ—अनाहार वाले के कार्माणकाययोग समान ८९ प्रकृतियो का उदय होता है ।

भावार्थ—मिथ्यात्व, सासादन और अविरतगुणस्थान मे अनुदयादि का कथन कार्माणकाययोग समान है तथा सयोगगुणस्थान मे उपरोक्त ६३ तीर्थकर १ इस तरह ६४ प्रकृतियो का उदय न होने से शेष २५ प्रकृतियो का उदय होता है और कोई वेदनी १ निर्माण १ स्थिर २ शुभ २ तैजस २ वर्ण ४ अगुरुलघु १ इसतरह १३ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है तथा अयोगगुणस्थान मे उपरोक्त ७७ प्रकृतियो का उदय न होने से शेप १२ प्रकृतियो का उदय होता है और इनही १२ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है ।।३७०-३७४

आहारक रचना

	मि.	सा	मि	अ	देश से क्षीण तक	स
अ.	५	१०	१८	१८	४–४ कम	७६
उ	११३	१०८	१००	१००	गुण० स०	४२
वि.	५	९	१	१३	गुण० स०	४२

अनाहार रचना

	मि	सा	अ	स	अ
अ	२	८	१४	६४	७७
उ	८७	८१	७५	२५	१२
वि.	३	१०	५१	१३	१२

॥ उदयाधिकार समाप्त ॥



आगे आदि के तीन गुणस्थानों सत्वनियम दिखाते है ।

तित्थाहारा जुगवं सव्वं तित्थं ण मिच्छगादितिए ।
तस्सत्तकम्मियाणं तग्गुणठाणं ण संभवदि ।।३७५।।

युगवत् सत्व न वाम में, तीर्थंकर आहार ।
सत्व न उनका सास में, मिश्र न तीर्थ सँभार ।।३७५।।

अर्थ—जिस जीव के मिथ्यात्वगुणस्थान में तीर्थकर प्रकृति का सत्व होता है और उसके आहारक और आहारक आगोपाग प्रकृति का सत्व नही होता तथा जिस जीव के आहारक और आहारक आगोपांग प्रकृति सत्व होता है उसके तीर्थंकर प्रकृति का सत्व नही होता और नाना जीवो की अपेक्षा १४८ प्रकृतियो का सत्व होता है सासादनगुणस्थान मे उपरोक्त ३ प्रकृतियो का सत्व न होने से शेष १४५ प्रकृतियो का सत्व होता है तथा मिश्रगुणस्थान में तीर्थकर प्रकृति का सत्व न होने से शेष १४७ प्रकृतियो का सत्व होता है इस नियम से विपरीत सत्व वाले के ये गुणस्थान नहीं होते ।।३७५।।

आगे अविरत से अपूर्वकरण तक सत्वनियम दिखाते है ।

चत्तारिवि खेत्ताइं आउगबंधेण होइ सम्मत्तं ।
अणुवदमहव्वदाइं ण लहइ देवाउगं मोत्तुं ।।३७६।।
णिरयतिरिक्खसुराउगसत्ते ण हि देससयलवदखवगा ।
अयदचउक्कं तु अणं अणियट्टीकरणचरिमम्हि ।।३७७।।
जुगवं संजोगित्ता पुणोवि अणियट्टिकरणबहुभागं ।
वोलिय कमसो मिच्छं मिस्सं सम्मं खवेदि कमे ।।३७८।।

सम्यक् दर्शन हो सके, किसी आयु को बांधि।
अणु-व्रत मह-व्रत नहि लहे, सुर विन लय वय बांधि। ३७६
सत्व नरक पशु देव वय, अणु मह क्षपक न मान।
चउ दृगादि में अमित का, अनि-वृत्ति अंतहिं जान। ३७७
कर लय चौकडि वत् उसे, फिर अनि-वृति वहुभाग।
विता वाम अरु मिश्र अरु, समकित क्षय क्रम लाग। ३७८

अर्थ—किसी भी आयु के उदय अथवा वध होने पर सम्यक्-दर्शन होता है किन्तु नरक तिर्यंच और मनुष्यायु के वध होने पर अणुव्रत और महाव्रत नही होता जिसके भुजमान देव और नरकायु का सत्व होता है उसके अणुव्रत नही होता जिसके भुजमान (जिसको भोग रहा है) तिर्यंचायु का सत्व होता है उसके महाव्रत नही होता और जिसके वध्यमान देवायु का सत्व होता है उसके क्षपकश्रेणी नही होती यदि अविरतादि ४ गुणस्थानो मे से किसी भी गुणस्थान मे अनिवृत्तिकरणपरिणाम (तीनकरणो) के अत मे अनतानुवधी ४ कपायो की विसयोजना (अप्रत्याख्यानादि रूप) कर लेता है वह पुन अध करण और अपूर्वकरण के पश्चात अनिवृत्ति-करण के वहुभाग समय व्यतीतमान कर शेप सख्यातवे भाग के प्रथम समय से लेकर अत समय तक क्रमसे मिथ्यात्व, मिश्र और सम्यक्प्रकृति का क्षय करता है उसके मिथ्यात्वादि ७ प्रकृतियो की सत्वविच्छुत्ति उस गुणस्थान मे होती है अपूर्वकरणगुणस्थान मे किसी प्रकृति की सत्वविछुत्ति नही होती इसतरह अविरत से लेकर अपूर्वकरणगुणस्थान तक का यह सत्वनियम है ।।३७६-३७८।।

आयुओं में सम्यक्त्वादि दर्पण

विषय	भुज्यमानायु				बध्यमानायु			
	नरक	तिर्यंच	मनु०	देव	नरक	तिर्यंच	मनु०	देव
सम्यक्त्व	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
अणुव्रत	०	,,	,,	०	०	०	०	,,
महाव्रत	०	०	,,	०	०	०	०	,,
उ० श्रे०	०	०	,,	०	०	०	०	,,
क्षा० श्रे०	०	०	,,	०	०	०	०	०

आगे अनिवृत्तिकरण से अयोग तक सत्वविछुत्ति दिखाते है।

सोलट्ठेक्किगिछक्कं चदुसेक्कं बादरे अदो एक्कं।
खीणे सोलसऽजोगे बायत्तरि तेरुवत्तंते ॥३७६॥

अनिहिं सोल अठ इक इक छ, चउ में इक सू एक।
सोलह क्षीण अयोग में, वहतर तेरह देख ॥३७६॥

अर्थ—अनिवृत्तिकरण गुणस्थान के ९ भागो में से प्रथम ५ भागो मे क्रमसे १६, ८, १, १, ६ और शेष ४ भागो मे क्रम से १, १, १, १, प्रकृति की सत्वविछुत्ति होती है सूक्ष्मसापराय गुणस्थान मे १ प्रकृति की सत्वविछुत्ति होती है क्षीणमोह गुणस्थान में १६ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है और अयोगगुणस्थान के अत के दो समयो में से प्रथम समय मे ७२ अत के समय में १३ प्रकृतियों की सत्वविछुत्ति होती है ॥३७९॥

आगे उन सत्वविछुत्ति प्रकृतियो के नाम दिखाते है।

णिरयतिरिक्खदु वियलंथीणतिगुज्जोवतावएइंदी।
साहरणसुहुमथावर सोलं मज्झिमकसायट्ठं ॥३८०॥

संढित्थि छक्कसाया पुरिसो कोहो य माण मायं य ।
थूले सुहुमे लोहो उदयं वा होदि खीणम्हि ॥३८१॥
देहादीफस्संता थिरसुहसरसुरविहायदुग दुभगं ।
णिमिणाजसऽणादेज्जं पत्तेयापुण्ण अगुरुचऊ ॥३८२॥
अणुदयतदियं णीचमजोगिदुचरिमम्मि सत्तवोच्छिण्णा ।
उदयगबार णराणू तरेस चरिमम्हि वोच्छिण्णा ॥३८३॥

थावर तप पशु नरक दुक. साधा इक विकलान ।
नींद तीन मिल सोलहा, अठ कषाय मध्यान ॥३८०॥
षंड नारि हास्यादि छै, पुरुष क्रोध मदमाय ।
थूल सूक्ष्म में लोभ इक, क्षीण उदय वत् गाय ॥३८१॥
सुर थिर शुभ स्वर गति युगल, तन से फर्श तकान ।
अनदे प्रत्ये ऊंन निच, दुभग अयश निर्माण ॥३८२॥
को इक वेदनि अगुरु चउ, दो क्षण अयोगि अंत ।
अंत उदय वत् द्वादशा, सत्व पूर्वि नर हंत ॥३८३॥

अर्थ—अनिवृत्तिकरणगुणस्थान के प्रथम भाग की नरकगति २ तिर्यंचगति २ इन्द्रिय ४ शयनगृद्धि ३ उद्योत १ आताप १ साधारण १ सूक्ष्म १ स्थावर १ इसतरह १६ है द्वितीय भाग की अप्रत्याख्यान ४ प्रत्याख्यान ४ इसतरह ८ हैं तृतीय भाग की नपुसकवेद १ है चतुर्थ भाग की स्त्रीवेद १ है पचम भाग की हास्यादि ६ है शेप चार भाग की क्रमसे पुरुषवेद १ सज्वलन क्रोध १ सज्वलन मान १ सज्वलन माया १ इसतरह सब ३६ प्रकृतिया है सूक्ष्म-

सापरायगुणस्थान की सज्वलन लोभ १ क्षीणमोहगुणस्थान की ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ६ अंतराय ५ इसतरह १६ है और अयोगगुणस्थान के अत समय के दो समयों में से प्रथम समय की ५ शरीर से लेकर स्पर्श तक ५० स्थिर २ शुभ २ स्वर २ देवगति २ चाल २ दुर्भग १ निर्माण १ अयश १ अनादेय १ प्रत्येक १ अपर्याप्त १ अगुरुलघु ४ कोई वेदनी १ नीचगोत्र १ इसतरह ७२ है और अतसमय की कोई वेदनी १ मनुष्यगति २ मनुष्यायु १ पचेन्द्रिय १ सुभग १ त्रस १ बादर १ पर्याप्त १ आदेय १ यश १ तीर्थकरप्रकृति १ ऊचगोत्र १ इसतरह १३ है ॥३८०–३८३॥

आगे गुणस्थानो मे असत्वादिप्रकृतियो को दिखाते है ।

नभतिगिणभइगि दोद्दो दस दससोलट्ठगादिहीणेसु ।
सत्ता हवंति एवं असायपरक्कमुद्दिट्ठं ॥३८४॥

नभ त्रय इक नभ इक दुदो, दश-दश सोलह अष्ट ।
इनका सत्व न नवम् तक, कहें घातिया नष्ट ॥३८४॥

अर्थ––मिथ्यात्वसे लेकर अपूर्वकरणगुणस्थान तक क्रमसे ०, ३, १, ०, १, २, २, १० और अनिवृत्तिकरणगुणस्थान के नवभागो मे क्रमसे १०, १६, ८, १, १, ६, १, १, १ प्रकृतियो का सत्व नही होता ।

भावार्थ––मिथ्यात्वगुणस्थान मे नानाजीवो की अपेक्षा असत्व-सून्य होने से १४८ प्रकृतियो का सत्व होता है और सत्वविछुत्ति नही होती सासादनगुणस्थान मे आहारक २ तीर्थकर १ इसतरह ३ प्रकृतियों का सत्व न होने से शेष १४५ प्रकृतियो का सत्व होता है और सत्वविछुत्ति नही होती मिश्रगुणस्थान में तीर्थकर प्रकृति का सत्व न होने से शेष १४७ प्रकृतियो का सत्व होता है अविरत-गुणस्थान में असत्व सून्य होने से शेष १४८ प्रकृतियो का सत्व

होता है यदि क्षायिक सम्यक्दर्शन हो जावे तो ७ प्रकृतियो की सत्वविछुत्ति होती है देशविरतगुणस्थान मे नरकायु का सत्व न होने से १४७ प्रकृतियो का सत्व होता है क्षायिक सम्यक्दृष्टि की अपेक्षा ८ प्रकृतियो का सत्व न होने से शेप १४० प्रकृतियो का सत्व होता है यदि यहाँ क्षायिक सम्यक्दर्शन होवे तो ७ प्रकृतियो की सत्वविछुत्ति होती है प्रमत्तगुणस्थान मे नरक और तिर्यंचायु का सत्व न होने से १४६ प्रकृतियो का सत्व होता है क्षायिकसम्यक्-दृष्टि की अपेक्षा ९ प्रकृतियो का सत्व न होने से शेप १३९ प्रकृतियो का सत्व होता है यदि यहाँ क्षायिकसम्यक्दर्शन होवे तो ७ प्रकृतियो की सत्वविछुत्ति होती है अप्रमत्तगुणस्थान मे नरक और त्रिर्यंचायु का सत्व न होने से शेप १४६ प्रकृतियो का सत्व होता है क्षायिक सम्यक्दृष्टि की अपेक्षा ९ प्रकृतियो का सत्व न होने से शेष १३९ प्रकृतियो का सत्व होता है यदि यहाँ अनतानु-वधी की विसयोजना हुई है तो ४ प्रकृतियो की सत्वविछुत्ति होती है यदि क्षायिक सम्यक्दर्शन हुआ है तो ७ प्रकृतियाँ सत्वविछुत्ति होती है अपूर्वकरणगुणस्थान मे ७ प्रकृतियो के उपशम से उपशम-श्रेणी चढा है तो उपरोक्त २ प्रकृतियो का सत्व न होने से शेप १४६ प्रकृतियो का सत्व है अनतानुवधी की विसयोजना से उपशम-श्रेणी चढा है तो २+४=६ प्रकृतियो का सत्व न होने से शेष १४२ प्रकृतियो का सत्व है क्षायिक वाला उपशमश्रेणी से चढा हो तो २+७=९ प्रकृतियो का सत्व न होने से शेष १३९ प्रकृतियो का सत्व है और क्षायिकश्रेणी से चढा है तो आयु ३ मिथ्यात्वादि ७ इसतरह १० प्रकृतियो का सत्व न होने से शेष १३८ प्रकृतियो का सत्व होता है और सत्वविछुत्ति यहाँ नही होती अनिवृत्तिकरण-गुणस्थान के ९ भागो मे तीनो उपशमश्रेणी और क्षायिकश्रेणी की अपेक्षा असत्व, सत्व और सत्वविछुत्ति का कथन उपरोक्त समान है किन्तु क्षायिकश्रेणीवाले के प्रथम भाग मे उपरोक्त १० प्रकृतियो का सत्व न होने से शेष १३८ प्रकृतियो का सत्व होता है और

१६ प्रकृतियो की सत्वविछुत्ति होती है द्वितीय भाग में उपरोक्त २६ प्रकृतियो का सत्व न होने से शेष १२२ प्रकृतियो का सत्व होता है ८ कषायो की सत्वविछुत्ति होती है तृतीय भाग मे उपरोक्त ३४ प्रकृतियो का सत्व न होने से शेष ११४ प्रकृतियों का सत्व होता है और नपुसकवेद की सत्वविछुत्ति होती है चतुर्थ भाग में ३५ प्रकृतियो का सत्व न होने से शेष ११३ प्रकृतियो का सत्व होता है और स्त्रीवेद की सत्यविछुत्ति होती है पचम भाग मे उपरोक्त ३६ प्रकृतियो का सत्व न होने से शेप ११२ प्रकृतियो का सत्व होता है और हास्यादि ६ प्रकृतियो की सत्वविछुत्ति होती है और छट्टे से नववे भाग तक क्रम से ४२, ४३, ४४, ४५ प्रकृतियो का सत्व न होने से शेष १०६, १०५, १०४, १०३ प्रकृतियो का सत्व होता है और १, १, १, १, की सत्वविछुत्ति होती है सूक्ष्मसापरायगुणस्थान मे तीनो उपशमश्रेणी की अपेक्षा असत्व, सत्व और सत्वविछुत्ति का कथन उपरोक्त समान है और क्षायिक श्रेणी की अपेक्षा उपरोक्त ४६ प्रकृतियो का सत्व न होने से शेष १०२ प्रकृतियो का सत्व होता है और सूक्ष्मलोभ की सत्व-विछुत्ति होती है उपशातमोहगुणस्थान मे उपशमश्रेणी की अपेक्षा नरक और तिर्यंचायु का सत्व न होने से १४६ प्रकृतियों का सत्व है अनतानुबधी ४ की विसयोजन से श्रेणी चढा हो तो १४२ प्रकृतियो का सत्व है और क्षायिकवाला उपशमश्रेणी से चढा हो तो १३९ प्रकृतियो का सत्व होता है क्षीणमोह गुणस्थान मे सूक्ष्म-सापराय की ४७ प्रकृतियो का सत्व न होने से शेष १०१ प्रकृतियो का सत्व होता है और १६ प्रकृतियो की सत्वविछुत्ति होती है सयोग-गुणस्थान मे ६३ प्रकृतियो का सत्व न होने से शेप ८५ प्रकृतियो का सत्व होता है और यहाॅ सत्वविछुत्ति नही होती है अयोगगुण-स्थान मे ६३ प्रकृतियो का सत्व न होने से शेष ८५ प्रकृतियो का सत्व होता है अतके दो समयो मे से प्रथम समय में ७२ प्रकृतियों की उदयविछुत्ति होती है और इस गुणस्थान के अतसमय १३५

प्रकृतियो का सत्व न होने से शेष १३ प्रकृतियो का सत्व होता है और इन्ही १३ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति होती है ॥३८४॥

मिथ्यात्व मे अपूर्वकरण तक की रचना

	मि	सा.	मि	अ.	दे	प्र	अ	अपूर्व ४			
अ.	०	३	१	०	१	२	२	२	६	९	१०
स	१४८	१४५	१४७	१४८	१४७	१४६	१४६	१४६	१४२	१३९	१३८
वि	०	०	०	७	७	७	७	०	०	०	०

अनिवृत्तिकरण की रचना

	अनि० उप० ३			अनि० क्षपक श्रेणी ९								
अ	२	६	९	१०	२६	३४	३५	३६	४२	४३	४४	४५
स	१४६	१४२	१३९	१३८	१२२	११४	११३	११२	१०६	१०५	१०४	१०३
वि	०	०	०	१६	८	१	१	६	१	१	१	१

सूक्ष्म से सयोग तक की रचना

	सूक्ष्म० ४				उपशात ३			क्षी	स	अयोग ३		
अ.	२	६	९	४६	२	६	९	४७	६३	६३	६३	१३५
स	१४२	१४६	१३९	१०२	१४६	१४२	१३९	१०१	८५	८५	८५	१३
वि	०	०	०	१	०	०	०	१६	०	०	७२	१३

आगे उपशमन विधि में क्षपणविधि से कुछ अतर दिखाते है।

खवणं वा उवसमणे णवरि य संजलणपुरिसमज्झम्हि ।
मज्झिमदोद्दो कोहादीया कमसोवसंता हु ॥३८५॥

साम्यक्षपण वत् भेद परि, नर रु संज्वलन वीच ।
दोय दोय क्रोधादि को, उपशमता विच वीच ॥३८५॥

अर्थ—उपशमविधि सब जगह क्षपणविधि के समान है अतर केवल अनिवृत्तिकरणगुणस्थान मे पडता है वह इस प्रकार है कि इसके प्रथमभाग में १६, द्वितीयभाग मे नपुसक वेद, तृतीयभाग मे स्त्रीवेद, चतुर्थभाग मे हास्यादि ६, पाचवे भाग में पुरुषवेद, छट्टे भाग मे मध्यकषायों के क्रोध २ सज्वलन क्रोध १ सातवे भाग मे मध्यकषायों के मान २ सज्वलनमान १ आठवे भाग में मध्यकषायों की माया २ सज्वलनमाया १ और नवमे भाग मे मध्यकषायो के लोभ २ सज्वलनवादर लोभ १ का उपशम होता है ॥३८५॥

आगे गुणस्थानो में सत्व कहकर मार्गणाओ मे सत्व दिखाते है।

णिरयादिसु पयडिट्ठिदिअणुभागपदेसभेदभिण्णस्स ।
सत्तस्स य सामित्तं णेदव्वमिदो जहाजोग्गं ॥३८६॥

नरकादिक में प्रकृति थिति, देश और अनुभाग ।
सत्व विषें स्वामित्व का, यथायोग्य बुध पाग ॥३८६॥

अर्थ—गुणस्थानों मे प्रकृति आदि का सत्व कहकर अव नरकगति आदि मार्गणाओ मे भी प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश सत्व को यथायोग्य कहता हूँ ॥३८६॥

आगे गति आदि मार्गणाओं मे सत्व के नियम दिखाते है।

तिरिए ण तित्थसत्तं णिरयादिसु तिय चउक्क चउतिण्णि ।
आऊणि होंति सत्ता सेसं ओघादु जाणेज्जो ॥३८७॥

पशु में सत्व न तीर्थ का, नरकादिक में आयु ।
त्रय चउ चउ त्रय सत्व है, शेष मूल वत् पाउ ॥३८७॥

अर्थ—तिर्यंचगति मे तीर्थंकर प्रकृति का सत्व नही होता नरकगति मे भुज्यमान नरकआयु वध्यमानतिर्यंच अथवा मनुष्य आयु का सत्व होता है तिर्यंचगति मे भुज्यमानतिर्यंच आयु वध्यमान-नरक, तिर्यंच, मनुष्य अथवा देव आयु का सत्व होता है मनुष्यगति मे भुज्यमान मनुष्य आयु वध्यमाननरक, तिर्यंच, मनुष्य अथवा देवआयु का सत्व होता है तथा देवगति मे भुज्यमान देवआयु वध्यमानतिर्यंच अथवा मनुष्य आयु का सत्व होता है और शेष प्रकृतियो का सत्व गुणस्थान समान जानना चाहिये ॥३८७॥

आगे नरकादि गति मे सत्व दिखाते है ।

ओघं वा णेरइये ण सुराऊ तित्थमत्थि तदियोत्ति ।
छट्ठित्ति मणुस्साऊ तिरिए ओघं ण तित्थयरं ॥३८८॥
एवं पंचतिरिक्खे पुण्णिदरे णत्थि णिरयदेवाऊ ।
ओघं मणुसतियेसुवि अपुण्णगे पुण अपुण्णेव ॥३८९॥
ओघं देवे ण हि णिरयाऊ सारोत्ति होदि तिरयाऊ ।
भवणतियकप्पवासियइत्थीसु ण तित्थयरसत्तं ॥३९०॥

विन सुर वय गुण वत् नरक, तीर्थ तृतिय तक सत्व ।
छै तक नर वय पशू के, गुण वत् तीर्थ न सत्व ॥३८८

यों पशु पन परिऊंन में, आयु नरक सुर हीन।
नर त्रय गुण वत् ऊंन में, पशु ऊंन वत् चीन ॥३८९॥
सुर गुण वत् नहिं नरक वय, स्त्रार तलक पशु आयु।
भवनत्रय और देवि में, तीर्थ सत्व नहिं पाउ ॥३९०॥

अर्थ—नरकगति में सत्व गुणस्थानसमान है किन्तु देवायु का सत्व न होने से शेष १४७ प्रकृतियो का सत्व है। तीर्थकर प्रकृति का सत्व तृतीय नरक तक ही है और मनुष्यायु का सत्व छटे नरक तक ही है। तिर्यचगति मे सत्वगुणस्थान समान है किन्तु तीर्थकर प्रकृति का सत्व न होने से शेप १४७ प्रकृतियो का सत्व है। इसी प्रकार पाच प्रकार के तिर्यचों मे सत्व है किन्तु लब्धिअपर्याप्त-तिर्यच के नरक और देवायु का सत्व नही है मनुष्यगति मे सत्व-गुणस्थानसमान है, इसीप्रकार चार प्रकार के मनुष्य में सत्व है किन्तु लब्धिअपर्याप्तमनुष्य के तीर्थंकरप्रकृति, नरक और देवायु का सत्व नही है और देवगति में गुणस्थान समान सत्व है किन्तु नर-कायु का सत्व न होने से १४७ प्रकृतियो का सत्व है किन्तु तिर्यं-चायु का सत्व सहस्रारस्वर्ग तक ही है। भवनत्रयदेव और चार प्रकार की देवांगनाओ मे तीर्थंकरप्रकृति का सत्व नही है ॥३८९-३९०॥

आगे इन्द्रिय और कायमार्गणा मे सत्व दिखाते है।

ओघं पंचक्खतसे सेसिंदियकायगे अपुण्णं वा।
तेउ दुगे ण णराऊ सव्वत्थुव्वेल्लणावि हवे ॥३९२॥

पंचेन्द्रिय त्रस मूल वत्, शेष ऊंन वत् जोय।
अग्नि पवन नहिं आयु नर, उद्वेलन सब कोय ॥३९२॥

अर्थ–पचेन्द्रिय और त्रसकाय मे सत्वगुणस्थानसमान (१४८) है शेप एकइन्द्रिया और स्थावरकाय मे सत्व लब्धिअपर्याप्त के समान (१४५) है किन्तु अग्नि और पवनकाय मे मनुष्यायु का सत्व न होने से १४४ प्रकृतियो का सत्व होता है तथा इन्द्रिय और काय-मार्गणा के सब भेदो मे प्रकृतियो की उद्वेलना होती है ॥३६२॥

उद्वेलना—जिस प्रकृति का बध हुआ हो उसका परिणाम विशेप से बधरहित कर देने को उद्वेलना कहते हैं।

आगे उद्वेलना प्रकृतियो के नाम दिखाते है।

हारदु सम्मं मिस्सं सुरदुग णारयचउक्कमणुकमसो ।
उच्चागोदं मणुदुगमुव्वेल्लिज्जंति जीवेहिं ॥३६३॥

समकित मिस आहार दुक, सुर दुक नारक चार ।
ऊंच गोत अरु मनुष दुक, ये उद्वेलन धार ॥३६३॥

अर्थ—आहारक २ सम्यक्प्रकृति १ मिश्रप्रकृति १ देवगति २ नरकगति ४ ऊचगोत्र १ मनुष्यगति २ ये १३ उद्वेलनाप्रकृतिया हैं ॥३६३॥

आगे किस प्रकृति की उद्वेलना किस जीव के दिखाते है।

चदुगदिमिच्छे चउरो इगिविगले छप्पि तिण्णि तेउदुगे ।
सिय अत्थि णत्थि सत्तं सपदे उप्पण्णठाणेवि ॥३६४॥

त्रस में चउ इक विकल छै, अग्नि पवन में तीन ।
है या नहिं है सत्व निज, या उत्पति थल चीन ॥३६४॥

अर्थ—चारो गति वाले मिथ्यादृष्टि जीव के निज अथवा उत्पति स्थान मे आहारक २ मिश्रप्रकृति १ सम्यक्प्रकृति १ इन ४ प्रकृतियो की उद्वेलना न भई हो, तो सत्व होता है और उद्वेलना

हो गई हो तो सत्व नही होता है- एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीव के निज अथवा उत्पति स्थान मे विक्रियक ६ की उद्वेलना न भई हो तो सत्व होता है और उद्वेलना हो गई हो तो सत्व नही होता है अग्नि और पवनकाय के जीव के निज अथवा उत्पतिस्थान मे ऊँचगोत्र १ मनुष्यगति २ इन तीन प्रकृतियो की उद्वेलना नही भई हो तो सत्व होता है और उद्वेलना हो गई हो तो सत्व नही होता है ॥३६४॥

भावार्थ—चारो गतिवाले तीव्रकषायी पचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि, जीव के तीर्थकर, वध्यमान नरक और देवायु का सत्व न होने से शेष १४५ प्रकृतियो का सत्व होता है आहारक २ सम्यक्प्रकृति १ मिश्रप्रकृति १ की उद्वेलना होने पर १४३, १४२, १४१ प्रकृतियो का सत्व होता है एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीव के तीर्थकर नरक और देवायु का सत्व न होने से १४५ प्रकृतियो का सत्व होता है आहारक २ सम्यक्प्रकृति १ मिश्रप्रकृति १ विक्रियक ६ की उद्वेलना होने पर १४३, १४२, १४१, १३५ प्रकृतियो का सत्व होता है जिसमें अग्नि और पवनकाय के मनुष्यायु का सत्व न होने से १४४ प्रकृतियो का सत्व होता है आहारक २ सम्यक्प्रकृति १ मिश्रप्रकृति १ विक्रयक ६ ऊँचगोत्र १ मनुष्यगति २ की उद्वेलना होने पर १४२, १४१, १४०, १३४, १३३, १३१ प्रकृतियो का सत्व होता है ॥३६४॥

एकेन्द्रिय विकलेन्द्रिय सत्व रचना

मू०	आ०	स०	मि०	वि०
१४५	१४३	१४२	१४१	१३५

अग्नि और पवन सत्व रचना

मू०	आ०	स०	मि०	वि०	उ०	म०
१४४	१४२	१४१	१४०	१३४	१३३	१३१

निजस्थान सत्व—जिस पर्याय मे उद्वेलना होकर जो सत्व शेष रहा हो उसको निज स्थान सत्व कहते है।

उत्पतिस्थान सत्व—जिस पर्याय मे विना उद्वेलना के सत्व पाया जावे उसको उत्पतिस्थान सत्व कहते हैं।

आगे योगमार्गणा मे सत्व दिखाते हैं।

पुण्णेकारसजोगे साहारयमिस्सगेवि सगुणोघं।
वेगुव्वियमिस्सेवि य णवरि ण माणुसतिरिक्खाऊ ॥३६५॥
ओरालमिस्सजोगे ओघं सुरणिरयआउगं णत्थि।
तम्मिस्सवामगे ण हि तित्थं कम्मेवि सगुणोघं ॥३६६॥

ग्यारह योगहिं स्वगुण वत्, आहारक मिस युक्त।
विक्रिय मिस भी स्वगुणवत्, नरपशु आयु मुक्त ॥३६५
गुणवत् औदा मिश्र परि, सुर नारक नहि आयु।
तीर्थ न उस मिस वाम में, कर्म स्वगुण वत् पाउ ॥३६६

अर्थ—मनयोग ४ वचनयोग ४ औदारिक काययोग १ विक्रियक काययोग १ आहारककाययोग १ आहारकमिश्रकाययोग १ इस-तरह इन १२ योगो मे असत्व, सत्व और सत्वविछुत्ति का कथन अपने-अपने (जितने गुण ० हो) गुणस्थानसमान है औदारिकमिश्र-काययोग मे नरक और देवायु के विना गुणस्थानसमान १४६ प्रकृतियो का सत्व है किन्तु मिथ्यात्वगुणस्थान मे तीर्थकरप्रकृति का सत्व न होने से शेष १४५ प्रकृतियो का सत्व होता है विक्रियक-मिश्रकाययोग मे तिर्यंच और मनुष्यायु का सत्व न होने से शेष १४६ प्रकृतियो का सत्व होता है किन्तु सासादनगुणस्थान मे तीर्थंकर १ आहारक २ नरकायु १ का सत्व न होने से शेष १४२

प्रकृतियो का सत्व होता है और कार्माणकाययोग में अपने गुण-स्थानसमानसत्व होता है किन्तु सासादनगुणस्थान मे तीर्थंकर १ आहारक २ नरकायु १ इस तरह ४ प्रकृतियो का सत्व न होने से १४४ प्रकृतियो का सत्व होता है ॥३६५-३६६॥

आगे वेद से आहारक मार्गणा तक का असत्वादि दिखाते हैं।

वेदादाहारोत्ति य सगुणोघं णवरि संढथीखवगे।
किण्हदुगसुहतिलेस्सियवामेवि ण तित्थयरसत्तं ॥३६७॥
अभव्वसिद्धे णत्थि हु सत्तं तित्थयरसम्ममिस्साणं।
आहारचउक्कस्सवि असण्णिजीवे ण तित्थयरं ॥३६८॥
कम्मेवाणाहारे पयडीणं सत्तमेवमादेसे।
कहियमिणं वलमाहवचंदच्चियणेमिचंदेण ॥३६९॥

शेष स्वगुण वत् तीर्थ नहिं, क्षपक षंड तिय धाय।
त्रय शुभलेश्या कृष्ण दुक, तीर्थ सत्व नहि वाय ॥३६७॥
तीर्थ मिश्र समकित तथा, आहारक चउ मान।
ये नहिं सत्व अभव्य के असन तीर्थ बिन जान ॥३६८॥
अनाहार में कर्म वत्, प्रकृति सत्व सब मान।
नारायण बलदेव से, पूजित नेमि बखान ॥३६९॥

अर्थ—वेदमार्गणा से लेकर आहारमार्गणा तक अपने-अपने गुणस्थानसमान असत्व, सत्व और सत्वविछुत्ति होती है किन्तु स्त्री और नपुसकवेदवाले के क्षपकश्रेणी मे तीर्थकर प्रकृति का सत्व नही होता। कृष्ण, नील, पीत, पद्म और शुक्ललेश्यावाले के मिथ्यात्व गुणस्थान में तीर्थकर का सत्व नही होता अभव्य जीव के तीर्थकर

सो मे तिहुवणमहियो सिद्धो बुद्धो णिरंजणो णिच्चो ।
दिसदु वरणाणलाहं बुहजणपरिपत्थणं परमसुद्धं ॥४००॥

बुद्ध निरंजन नित्य तुम, त्रिभुवन पूजित ईश ।
बुधजन प्रार्थित ज्ञान को, देहु मुझे आशीश ॥४००॥

॥ बन्ध-अधिकार समाप्त ॥



आगे सत्वाधिकार लिखते हैं ।

णमिऊण वड्ढमाणं कणयणिहं देवरायपरिपुज्जं ।
पयडीण सत्तठाणं ओघे भंगे समं वोच्छं ॥४०१॥

नमों वीर छवि कनक सम, सुरपति पूजित पाहिं ।
प्रकृति सत्व थल भंग युत, कहूँ यथागुण माहिं ॥४०१

अर्थ—जिनके शरीर का रग कचन के समान है और जिनके चरणकमल देवेन्द्रों द्वारा पूजनीय है ऐसे श्री महावीर भगवान को नमस्कार करके गुणस्थानो में प्रकृतियो के भंग सहित सत्वस्थानों का वर्णन करता हूं ॥४०१॥

आगे सत्वस्थान और उनके अगों का प्रकार दिखाते है।

आउगबंधाबंधणभेदमकाऊण वण्णणं पढमं।
भेदेण य भंगसमं परूवणं होदि बिदियम्हि ॥४०२॥

आयू बंधाबंध विन, भेद कथन इक मान।
आयू बंधाबंध युत, भेद कथन द्विय जान ॥४०२॥

अर्थ—प्रकृतियो के सत्वस्थान और उनके भंगो का वर्णन दो प्रकार का होता है आयु बधाबध की अपेक्षा रहित ऐसा समान्य वर्णन और आयु बधाबध की अपेक्षा सहित ऐसा विशेप वर्णन ॥४०२॥

आगे प्रथम पक्ष को लेकर सत्व दिखाते है।

सव्वं तिगेग सव्वं चेगं छसु दोण्णि चउसु छद्दस य दुगे।
छस्सगदालं दोसु तिसट्ठी परिहीण पडि सत्तं जाणे ॥४०३॥
सासण मिस्से देसे संजददुग सामगेसु णत्थी य।
तित्थाहारं तित्थं णिरयाऊ णिरयतिरियआउअणं ॥४०४॥

सब त्रय इक सब इक छै में, दो चउ में छै दस्स।
दो में छालिस सेंतालिस, दो में त्रेसठि हस्स ॥४०३॥
सास मिश्र अणु प्रमत दुक, उपशम में नर हंत।
तीर्थहार जिन नरक वय, वय पशु नरक अनंत ॥४०४॥

त्रिगुणणव चारि अट्ठं मिच्छतिये अयदचउसु चालीसं ।
तिय उवसमगे संते चउवीसा होंति पत्तेयं ॥४०५॥
चउछस्सदि चउअट्ठं चउक्कारस य होंति सत्तठाणाणि ।
आउगबंधाबंधे अजोगिअंते तदो भंगा ॥४०६॥

ठारह चउ अठ वाम त्रय, दृग चउ में चालीस ।
उपशमश्रेणी चार में, प्रत्येकहि चौबीस ॥४०५॥
चउ छत्तिस चउ आठ चउ, छै सत्ता स्थान ।
आयू बंधाबंध से, चौदस तक स्थान ॥४०६॥

अर्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान में १८ सत्वस्थान हैं सासादनगुण-स्थान में ४ सत्वस्थान है मिश्रगुणस्थान में ८ सत्वस्थान है अविरत से लेकर अप्रमत्तगुणस्थान तक ४०-४० सत्वस्थान हैं उपशमश्रेणी के ४ गुणस्थानों में २४-२४ सत्वस्थान हैं और क्षपकश्रेणी के ४ सयोग तथा अयोगगुणस्थान में क्रम से ४, ३६, ४, ८, ४, ६ सत्व-स्थान हैं इसप्रकार आयु के बंधाबध सहित सत्वस्थान कहे आगे इनमें भंगों को दिखाते है ॥४०५-४०६॥

आगे उपरोक्त स्थानों में भग दिखाते हैं।

पण्णास बार छक्कदि वीससयं अट्ठदाल दुसु दालं।
अडवीसा बासट्ठी अडचउवीसा य अट्ठ चउ अट्ठ ॥४०७॥

पनचस अरु बारह तथा, छत्तिस इकसौ बीस।
अड़तालिस चालिस तथा, चालिस अरु अठवीस।४०७१
बासठि अट्ठाईस अरु, चौविस अठ चउ आठ।
सत्व अठारह आदि का, लख भंनों का ठाठ॥४०७२

अर्थ—उपरोक्त सत्व स्थानो में मिथ्यात्व से लेकर अप्रमत्त गुणस्थान तक क्रमसे ५०, १२, ३६, १२०, ४८, ४०, ४० भग है और उपशम श्रेणी के ४ गुणस्थानो मे २४–२४ भग है तथा क्षपक श्रेणी के सब गुणस्थान में क्रमसे ४, ३८, ४, ८, ४, ८ भग हैं ॥४०७॥

सत्वस्थान—एक जीव के एक काल मे जितनी प्रकृतियो के समूह का सत्व पाया जावे उसको स्थान कहते है जैसे किसी जीव के दो आयु विना १४६ प्रकृतियो का सत्व होता है उसको १ स्थान कहते हैं।

भग—एक स्थान मे प्रकृतियो के वदलने से भेद होता है उसको भंग कहते है जैसे किसी जीव के मनुष्य और देवायु के विना १४६

आगे मिथ्यात्व में १८ स्थानों में प्रकृति सत्ता दिखाते हैं ।

दुतिछस्सत्तट्ठणवेरस्सत्तं सत्तर सगुणतीससिगिवीसं ।
हीणा सव्वे सत्ता मिच्छे बद्धाउगिदरमेगूणं ॥५०८॥
तिरियाउगदेवाउगमण्णदराउगदुगं तहा तित्थं ।
देवतिरियाउसहिया हारचउक्कं तु छच्चेदे ॥५०९॥
आउदुगहारतित्थं सम्मं मिस्सं य तह य देवदुगं ।
णारयछक्कं य तहा णराउउच्चं य मणुवदुगं ॥५१०॥

दुति छ सत ठ नव ग्यारहा, सत्र तीस इकवीस ।
हीन सत्व भ्रस बद्ध बय, इतर एक कम दीस ॥५०८॥
सुर पशु बय अरु अन्य को, बय दुक तीर्थ बढाय ।
सुर पशु बय आहार चउ, इनमें तीर्थ मिलाय ॥५०९॥
समकित मिल अरु मिश्र मिल, सुर दुक और बढाय ।
नारक छै नर आयु उच, नर दुक और मिलाय ॥५१०

अर्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान में तिर्यंच और देवायु के विना १४६ प्रकृतियो का प्रथमसत्वस्थान होता है। कोई भी आयु २ तीर्थकर-प्रकृति १ इन ३ विना १४५ प्रकृतियों का द्वितीय सत्वस्थान होता है। तिर्यचायु १ देवायु १ आहारक ४ इन ६ के विना १४२ प्रकृतियों का तृतीय सत्व स्थान होता है। कोई आयु २ आहारक ४ तीर्थकर १ इन ७ विना १४१ प्रकृतियों का चतुर्थ सत्व स्थान होता है। उपरोक्त ७ सम्यक्प्रकृति १ इन ८ के विना १४० प्रकृतियो का पाचवा सत्वस्थान होता है। उपरोक्त ८ मिश्रप्रकृति १ इन ९ के बिना १३९ प्रकृतियो का छटवा सत्वस्थान होता है। उपरोक्त ९ देवगति २ इन ११ के विना १३७ प्रकृतियो का सातवां सत्व स्थान होता है। उपरोक्त ११ नरक गति ६ इन १७ के विना १३१ प्रकृतियो का आठवा सत्वस्थान होता है। उपरोक्त १७ मनुष्यायु १ ऊचगोत्र १ इन १९ के विना भुज्यमान वध्यमान तिर्यंचायु सहित १२९ प्रकृतियो का नववा सत्वस्थान होता है और उपरोक्त १९ मनुष्यगति २ इन २१ के विना १२७ प्रकृतियो का दशवा सत्वस्थान होता है इस प्रकार ये १० सत्वस्थान वद्धायु की अपेक्षा से होते हैं इनमें आदि के ८ स्थान मे वद्धायु की १–१ प्रकृति कम करने से अवद्धायु के ८ भेद और होते हैं सब मिलकर १८ सत्वस्थान होते हैं ॥४०८–४१०॥

उपरोक्त सत्वस्थानो मे भग इसप्रकार है कि वद्धायु का प्रथम (१४६) सत्वस्थान उस मिथ्यादृष्टि मनुष्य के होता है जिसने नरकायु का वध कर पश्चात् वेदक सम्यक्त्व के साथ तीर्थकर प्रकृति के वध का प्रारम्भ कर लिया है उसके मरण समय मिथ्यात्व का उदय होता है इसतरह यहा आयु के न वदलने से १ भग होता है ॥४०८-४१०॥

अवद्धायु का प्रथम (१४५) सत्वस्थान उपरोक्त मनुष्य के जव होता है जव वह द्वितीय अथवा तृतीय नरक की निवृत्ति अपर्याप्त-अवस्थाको प्राप्त होता है यहा भी भग १ ही है।

बद्धायु का द्वितीय (१५५) सासादनस्थान में आयु के बदलने से ५ भंग होते हैं वे इसप्रकार हैं कि भुज्यमाननरकायु और बध्यमानतिर्यंचायु होने से भंग १ भुज्यमाननरकायु और बध्यमानमनुष्यायु होने से भंग १ भुज्यमानतिर्यंचायु और बध्यमानमनुष्यायु होने से भंग १ भुज्यमानतिर्यंचायु और बध्यमानदेवायु होने से भंग १ और भुज्यमानमनुष्यायु और बध्यमानदेवायु होने से भंग १ इन ५ भेदों के अतिरिक्त आयु के सात भेद और भी हो सकते हैं किन्तु वे इन ५ भेदों में ही समाविष्ट हो जाते हैं।

बद्धायु के भंग निकालने की विधी

भंग	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
भु	न.	न.	ति.	ति	ति.	ति.	म.	म	म	म	दे	दे
ब०	ति	म	न	ति	म	दे	म	ति	म.	दे	ति	म
भं	१	१	पु.	पु	१	१	पु.	पु	पु	१	पु	पु

नोट—नं० ३ नं० १ से नं० ७ नं० २ से नं० ८ नं० ५ से नं० ११ नं० ६ से और नं० १२ नं० १० से भुज्यमान और बध्यमान आयु समान है नं० ४ और नं० ९ में भुज्यमान और बध्यमान आयु में भेद न होने से पुनरुक्त कहा जाता है।

अबद्धायु का द्वितीय (१५४) सासादनस्थान भुज्यमान नरकादि ४ आयुओं के बदलने से भंग ४ होते हैं वे उपरोक्त रीति से होते हैं।

बद्धायु का तृतीय (१५३) स्थान उस मिथ्यादृष्टि मनुष्य के होता है जिसके अप्रमत्तगुणस्थान में आहारक ४ का बंध न हुआ हो अथवा बंधकर उसकी उद्वेलना करली हो तत्पश्चात् नरकायु का बंधकर वेदकसम्यक्त्व सहित तीर्थंकरप्रकृति का बंधकर लिया हो उसके मरणसमय मिथ्यात्व का उदय होता है वहां भंग १ है।

अवद्धायु का तृतीय (१४१) सत्वस्थान उपरोक्त जीव के जब होता है तव वह मरण कर द्वितीय अथवा तृतीय नरक की निवृत्ति अपर्याप्त अवस्था को प्राप्त होता है, यहा भी भग १ है ।

वद्धायु के चतुर्थ, पंचम और छट्ठम (१४१-१४०-१३६) सत्वस्थान मे वद्धायु के द्वितीयसत्वस्थान की तरह आयु के वदलने से ५-५ भग होते है ।

अबद्धायु के चतुर्थ, पचम और छट्ठम (१४०-१३९-१३८) सत्वस्थान मे अवद्धायु के द्वितीयसत्वस्थान की तरह आयु के बदलने से ४-४ भग होते है ।

वद्धायु का सातवा (१३७) सत्वस्थान उस एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीव के होता है जिसके देवगति २ की उद्वेलना हुई हो, यहा भंग १ है ।

आगे अवद्धायु के सातवे सत्वस्थान के ४ भंग दिखाते है ।

उव्वेल्लिददेवदुगे बिदियपदे चारि भंगया एवं ।
सपदे पढमो बिदियं सो चेव णरेसु उप्पण्णो ।।४११।।
वेगुव्वअट्ठरहिदे पंचिंदियतिरियजादिसुववण्णे ।
सुरछब्बंधे तदियो णरेसु तब्बंधणे तुरियो ।।४१२।।

सुरदुक वय न अबद्ध में, उद्वेलित चउ भंग ।
स्वपद प्रथम अरु द्वितीय में, ले मानुष का अंग ।।४११।।
विक्रिय अठविन जीव वह, पंचेन्द्रिय पशु कोय ।
बंध देव छै तृतीय चउ, वही बंध नर होय ।।४१२।।

अर्थ—अवद्धायु के सातवे (१३६) सत्वस्थान वाले के देवगति की उद्वेलना होने से निम्न प्रकार ४ भग होते हैं ।

णारकछक्कुव्वेल्ले आउगबंधुज्झिदे दुभंगा हु ।
इगिविकलेसिगिभंगो तम्मि णरे विदियमुप्पण्णे ॥८१३॥

नारक छै उद्वेलना, पलटे बंध त्रय भंग ।
प्रथम भंग इक विकल का, द्वितिय मनुप का अंग ॥८१३॥

अर्थ—नरकायु के आठों (१३०) सत्त्वस्थान में आयु के पलटने से दो भंग होते हैं वे इस प्रकार हैं कि एकेन्द्रिय अथवा विकलेन्द्रिय जीव के नारकगति ६ की उद्वेलना होने से १ भंग होता है और

वही जीव मरकर मनुष्य होता है तब उसकी अपर्याप्त अवस्था का द्वितीय भग होता है यहा केवल आयु पलटी है।

बद्धायु का नववा (१२६) सत्वस्थान अग्नि और पवनकाय के होता है भग १ है और अवद्धायु का नववा (१२६) सत्वस्थान उपरोक्त जीवो के बद्धायु कम करने से होता है भग १ है।

बद्धायु का दशवां (१२७) सत्वस्थान भी मनुष्यगति उद्वेलना से उपरोक्त जीवों के ही होता है और अबद्धायु का दशवां (१२७) सत्वस्थान उपरोक्त जीवो के बद्धायु कम करने से होता है ॥४१३॥

आगे उपरोक्त १८ स्थान के ५० भग दिखाते है।

बिदिये तुरिये पणगे छट्ठे पंचेव सेसगे एक्कं।
बिगचउपणछस्सत्तयठाणे चत्तारि अट्ठगे दोण्णि ॥४१४॥

दो चउ पन छै थान में, पांच शेष इक एक।
दो चउ पन छै सात में, चउ अठ में दो देख ॥४१४॥

अर्थ—बद्धायु के १० सत्व स्थानो मे क्रम से १, ५, १, ५, ५, ५, १, १, १, १ भग है और अबद्धायु के ८ सत्व स्थानो मे क्रम से १, ४, १, ४, ४, ४, ४, २ भग होते हैं ॥४१४॥

मिथ्यात्व के १८ सत्वस्थानों का भंगदर्पण

बं.	स्था.	१४६	१४५	१४२	१४१	१४०	१३६	१३७
	भं.	१	५	१	५	५	५	१
अ.	स्था.	१४५	१४४	१४१	१४०	१३६	१३८	१३६
	भ		१	४	१	४	४	४	४

बं.	स्था.	१३१	१२६	१२७
	भं.	१	१	१
अ.	स्था.	१३०	१२६	१२७
	भ.	२	पु.	पु.

आगे सासादन और मिश्र में स्थान और भंग दिखाते हैं।

सत्ततिगं आसाणे मिस्से तिगसत्तसत्तएयारा।
परिहीण सव्वसत्तं बद्धस्सियरस्स एगूणं ॥५१५॥
तित्थाहारचउक्कं अण्णदराउगदुगं च सत्तेदे।
हारचउक्कं वज्जिय तिण्णि य केई समुद्दिट्ठं ॥५१६॥
तित्थण्णदराउदुगं तिण्णिवि अणसहिय तह य सत्तं च।
हारचउक्के सहिया ते चेव य होंति एयारा ॥५१७॥
साणे पण इगि भंगा बद्धस्सियरस्स चारि दो चेव।
मिस्से पणपण भंगा बद्धस्सियरस्स चउ चऊ णेया ॥५१८॥

सासन तीन कम सास में, मिश्र सात त्रय सात।
सात रु ग्यारह सत्व कम, अबद्ध इक-इक पात ॥५१५॥
तीर्थ हार चउ अन्य को, त्रय दुक कम सब मान।
चउ अहार बिन शेष त्रय, को इक मत से जान ॥५१६
तीर्थ अन्य को आयु दो, त्रय अनंत युत सात।
चउ अहार युत सात हैं, इन युत ग्यारह ख्यात ॥५१७
सासा पन इक भंग हैं, बद्ध इतर चउ दोय।
मिश्र पांच पन भंग अरु चउ-चउ अबद्ध जोय ॥५१८॥

अर्थ—सासादनगुणस्थान में बद्धायु की अपेक्षा भुज्यमान और बध्यमान आयुओं को छोड़कर शेष आयु २ आहारक ४ तीर्थंकर १ इन ७ बिना १४१ प्रकृतियों का सत्व स्थान होता है। यहां आयु

के पलटने से पूर्व की तरह भंग ५ होते है और अबद्धायु की अपेक्षा उपरोक्त सत्वस्थान मे बध्यमानआयु कम करने से १४० प्रकृतियों का सत्वस्थान होता है। यहा नरकगति आदि ४ आयु के पलटने से भग ४ होते है इसतरह ६ भग होते है किन्तु श्रीभूतवलि आचार्य के अतिरिक्त किसी आचार्य के मत से इस गुणस्थान में एक सत्वस्थान और होता है वह इस प्रकार है कि जिस मनुष्य के आहारक ४ का बधकर सासादनगुणस्णान हुआ है उसके १४५ प्रकृतियो का द्वितीयसत्वस्थान वद्धायु की अपेक्षा से हुआ इसमें भग १ है और अवद्धायु की अपेक्षा १४४ प्रकृतियो का सत्वस्थान होता है इसमे भग २ है। वे इस प्रकार है कि भुज्यमानमनुष्यायु वाला उपशमसम्यक्दृष्टि आहारक ४ का वध कर सासादनगुण-स्थान मे आने से भग १ हुआ और वही जीव देवायु के वध के कारण देव हुआ वहाँ उसकी अपर्याप्तअवस्था में सासादनगुण-स्थान है इसलिये भग १ यह हुआ इसतरह सव १२ भंग हुये अन्यथा ६ भग तो होते ही है।

मिश्रगुणस्थान मे वद्धायु की अपेक्षा भुज्यमान और वध्यमान-आयु को छोडकर कोई भी आयु २ तीर्थकरप्रकृति १ इन ३ विना १४५ प्रकृतियो का प्रथमसत्वस्थान होता है उपरोक्त ३ अनतानु-वधी ४ इन ७ विना १४१ प्रकृतियो का द्वितीयसत्वस्थान होता है उपरोक्त ३ आहारक ४ इन ७ बिना १४१ प्रकृतियो का तृतीय-सत्वस्थान होता है और उपरोक्त ७ अनतानुवधी ४ इन ११ विना १३७ प्रकृतियो का चतुर्थ सत्वस्थान होता है यहा पूर्व की तरह आयु के पलटने से ५-५ भग होते है और अवद्धायु की अपेक्षा उपरोक्त सत्वस्थानो मे वध्यमानआयु कम करने से १४४, १४०, १४० और १३६ प्रकृतियो के ४ सत्वस्थान होते है। भुज्यमान-नरकादि ४ आयु पलटने से ४-४ भग होते है। इसतरह सव ३६ भग होते है ॥४१५-४१८॥

आदिमपचट्ठाणे दुगदुगभंगा हवंति बद्धस्स ।
उवरिम्मवि णादव्वा तिगतिगदुगि तिण्णितिण्णेव ॥४२२॥

विदियम्मवि पणठाणे पण पण तिग तिण्ग चारि बद्धस्स ।
उवरिम्म होंति णेया चउचउइगिचारि चत्तारि ॥४२३॥

आदिल्लदसस्सु सरिसा भंगेण य तिदियदसयठाणाणि ।
विदियस्स चउत्थस्स य दसठाणाणि य समा होंति ॥४२४॥

दो छै सत अठ नव रहित, कर इन पंक्ति चार ।
नभ इक चउ पन हीन कर, इक-इक अबंध टार ॥४१६

तीर्थ हार युत तीर्थ बिन, चउ अहार से हीन ।
बिना तीर्थ आहार चउ, चउ पंक्ति थल चीन ।।४२०।।
को इक वय अरु पशू वय, ये अरु अन चउ मान ।
मिथ्या मिश्र रु सम्मकिता, क्रमसे कम कर थान ।।४२१
प्रथम पंक्ति पन थलों में, दो दो भंग जु चीन ।
अरु अबंध पन थलों में, त्रय त्रय इक त्रय तीन ।।४२२।।
द्वितिय पंक्ति पन थलों में, पन पन त्रय त्रय चार ।
अरु अबंध पन थलों में, चउ चउ इक चउ चार ।।४२३
प्रथम पंक्ति दश थान सम, तीजी के दश थान ।
द्वितिय पंक्ति दश थान सम, चौथी के दश थान ।।४२४

अर्थ—अविरतगुणस्थान के ४० सत्वस्थान और भग समझने के लिये प्रथम ५–५ कोठो की ४ पक्ति बनाना आवश्यक है वे इस प्रकार की प्रथमपक्ति के प्रथम कोठे मे भुज्ययान और बध्यमानतिर्यचायु १ अन्य कोई आयु १ इन दो आयुओं के विना १४६ द्वितीय कोठे मे अनतानुबधी ४ के बिना १४२ तृतीय कोठे में मिथ्यात्व के विना १४१ चतुर्थ कोठे मे मिश्रप्रकृति बिना १४० और पचम कोठे मे सम्यक्प्रकृति विना १३९ प्रकृतियो के अक बना कर द्वितीयपक्ति के पाच कोठो मे कोई आयु २ तीर्थकर प्रकृति १ इसतरह ३ विना अनतानुबधी ४ के विना मिथ्यात्वप्रकृति के विना मिश्रप्रकृति के विना सम्यक्प्रकृति विना क्रम से १४५, १४१, १४०, १३९ १३८ अक बना कर तृतीयपक्ति के पाच कोठो मे प्रथम पक्ति के पाच कोठो से आहारक ४ कम करने पर क्रम से १४२, १३८,

तिर्यंचायु ४ भुज्यमानमनुष्यायु-वध्यमानमनुष्यायु ५ भुज्यमानमनुष्यायु-वध्यमानदेवायु ६ भुज्यमानदेवायु-वध्यमानमनुष्यायु ७ इनमे पाचवा भग पुनुरुक्त है प्रथम और तृतीय छटवा और सातवा भग समान है इसलिये इन ३ विना ४ भग माने जाते है चारो गति के १२ भगो मे से यहा ५ भग नही होते ।

अवद्धायु की प्रथम और तृतीयपक्ति के तृतीय कोठे मे १ भग भुज्यमानमनुष्यायु का है शेष कोठो मे ३–३ भग भुज्यमाननरक, मनुष्य और देवायु के है कारण तीर्थकर के वध मे निर्यंचायु वध मे नही होती है यदि अवद्धायु के १३८ सत्वस्थान वाला क्षायिक-सम्यक्दृष्टि मनुष्य उस ही भव से कर्म क्षय करे तो उसके गर्भ और जन्म कल्याणक नही होते यदि कर्म क्षय न करे तो नियम से देवायु का वध करता है वहा से मनुष्य जन्म पावे और पचकल्याणक का धारी होता है यदि पूर्व नरकायु का वध कर लिया हो तो नियम से नरक जाता है और वहा से मनुष्य जन्म पाता है और पचकल्याणक का धारी होता है तथा अवद्धायु की द्वितीय और चतुर्थ पक्ति के तृतीय कोठे मे मनुष्यायु का १ भग है और शेप कोठो मे चारि गति की अपेक्षा ४-४ भग है ।।४१६-४२४।।

अविरत के स्थान और भंग दर्पण

बद्धायु

स्था	१४६	१४२	१४१	१४०	१३९
भ	२	२	२	२	२
स्था	१४५	१४१	१४०	१३९	१३८
भ	५	५	३	३	४
स्था	१४२	१३८	१३७	१३६	१३५
भ	२	२	२	२	२
स्था	१४१	१३७	१३६	१३५	१३४
भ	५	५	३	३	४

अबद्धायु

स्था	१४५	१४१	१४०	१३९	१३८
भ	३	३	१	३	३
स्था	१४४	१४०	१३९	१३८	१३७
भ.	४	४	१	४	४
स्था.	१४१	१३७	१३६	१३५	१३४
भ	३	३	१	३	३
स्था	१४०	१३६	१३५	१३४	१३३
भ	४	४	१	४	४

स्था	१४२	१३८	१३७	१३६	१३५	स्था.	१४१	१३७	१३६	१३५	१३४
भ	१	१	१	१	१	भ.	१	१	१	१	१
स्था	१४१	१३७	१३६	१३५	१३४	स्था	१४०	१३६	१३५	१३४	१३३
भ	२	२	१	१	१	भ.	२	२	१	१	१

प्रमत्त और अप्रमत्तगुणस्थान मे उपरोक्त ही सत्वस्थान है और उनमे वद्धायु सम्वन्धी भुज्यमानमनुष्यायु और वध्यमानदेवायु रूप १–१ भग है और अवद्धायु सम्वन्धी भुज्यमान मनुष्यायुरूप १–१ भग है इस तरह वद्ध और अवद्धायु के २०–२० सत्वस्थान और २०–२० भग होते है यदि अवद्धायु के १३८ सत्वस्थान वाला उसी भव से कर्म क्षय करे तो उसके अत के २ ही कल्याण होते है अन्यथा देवायु का वध करता है ॥४२५॥

प्रमत्त और अप्रमत्त के सत्वस्थान और भंग दर्पण

बद्धायु

स्था	१४६	१४२	१४१	१४०	१३९
भ	१	१	१	१	१
स्था	१४५	१४१	१४०	१३९	१३८
भ	१	१	१	१	१
स्था	१४२	१३८	१३७	१३६	१३५
भ.	१	१	१	१	१
स्था	१४१	१३७	१३६	१३५	१३४
भ	१	१	१	१	१

अबद्धायु

स्था	१४५	१४१	१४०	१३९	१३८
भ	१	१	१	१	१
स्था.	१४४	१४०	१३९	१३८	१३७
भ	१	१	१	१	१
स्था	१४१	१३७	१३६	१३५	१३४
भं.	१	१	१	१	१
स्था	१४०	१३६	१३५	१३४	१३३
भ	१	१	१	१	१

आगे [illegible] से [illegible] भंग लिखते हैं ।

दुगछक्कतिण्णिवग्गेणवचदुपणगे चउपदं किच्चा ।
णभमिगिचउपणहीणं बत्तीसयपक्कम गुणं ॥५२६॥
णिरयतिरियाउ दोण्णिवि पढमकसायाणि दंसणतियाणि ।
हीणा एदे णेया भंगे एगंतगा होंति ॥५२७॥

बन्ध अबन्धहिं दोय छः, नव क्रम पंक्ती ठान ।
नभ इक चउ पन रहित थल, इक इक अबन्ध हान ॥५२६॥
नारक पशु वय अमित चउ, दर्श मोह की तीन ।
इतनी प्रकृति हीन कर, भंग एक इक चीन ॥५२७॥

उपशम अपूर्वकरण दर्पण

बद्धायु				अबद्धायु			
स्था.	१४६	१४२	१३९	स्था.	१४५	१४१	१३८
भ.	१	१	१	भ	१	१	१
स्था	१४५	१४१	१३८	स्था.	१४४	१४०	१३७
भ	१	१	१	भ.	१	१	१
स्था.	१४२	१३८	१३५	स्था.	१४१	१३७	१३४
भ.	१	१	१	भ	१	१	१
स्था	१४१	१३७	१३४	स्था	१४०	१३६	१३३
भ	१	१	१	भ	१	१	१

आगे उपशमश्रेणी के ३ क्षपक अपूर्वकरण के भग दिखाते है।

एवं तिसु उपसमगे खवगापुव्वम्मि दसहिं परिहीणं ।
सव्वं चउपडि किच्चा णभमेक्कं चारि पण हीणं ॥४२८॥

उस प्रकार त्रय उपशमक, क्षय अपूर्व दश हीन ।
क्रम से चउ पंक्ती करहु, नभ इक चउ पन हीन ॥४२८

अर्थ—उपशमश्रेणी के शेष तीन गुणस्थानों के स्थान और भग उपशमश्रेणी के अपूर्वकरणगुणस्थान समान २४ सत्वस्थान और २४ भग जानना चाहिये।

क्षपकश्रेणी के अपूर्वकरणगुणस्थान मे मनुष्यायु को छोडकर शेष आयु ३ अनतानुबधी ४ दर्शनमोह की ३ इस प्रकार १०

क्षपक अपूर्वकरण [illegible]

[illegible]	१०८	१०[illegible]	१०[illegible]	१३३
[illegible]	१	१	१	१

[illegible]

एदे सत्तट्ठाणा अणियट्टिस्सवि पुणोवि खविदेवि ।
सोलस अट्ठेक्किक्कं छक्किक्कं एक्कमेक्कं तहा ॥४२९॥
भंगा एक्केक्का पुण णउंसयखविदचउक्कट्ठाणेसु ।
विदियतुरियेसु दो दो भंगा तित्थयरहीणेसु ॥४३०॥
थीपुरिसोदयचडिदे पुव्वं संढं खवेदि थी अत्थि ।
संढस्सुदये पुव्वं थीखविदं संढमत्थित्ति ॥४३१॥

उस प्रकार से सत्त्व थल, नवमें गुण के ठौर ।
सोलह अठ इक एक छै, इक इक इक कम और ॥४२९॥
भंग एक इक पंड के, क्षपण चार स्थान ।
तीर्थ रहित दो चार में, भंग दोय दो जान ॥४३०॥

चढैं उदय नर नारि से, षंड खिपे सतु नार ।
षंड उदय क्षय प्रथम तिय, षंड सत्व नव नार ॥४३१॥

अर्थ—क्षपकश्रेणी के अनिवृत्तिकरणगुणस्थान मे क्षपकअपूर्वकरण समान चार सत्वस्थान और चार भग होते है इनके अतिरिक्त १६, ८, १, १, ६, १, १, १ प्रकृति क्षय होने पर क्रम से १२२, ११४, ११३, ११२, १०६, १०५, १०४, १०३ प्रकृति रूप ८ सत्वस्थान और होते हैं। इनमे तीर्थंकर कम करने पर १२१, ११३, ११२, १११, १०५, १०४, १०३, १०२ प्रकृति रूप ८ सत्वस्थान और होते है। प्रथम सत्वस्थानो मे आहारक ४ कम करने पर ११८, ११०, १०९, १०८, १०२, १०१, १००, ९९ प्रकृति रूप ८ सत्व-स्थान और होते है और इनमे तीर्थकरप्रकृति कम करने पर ११७, १०९, १०८, १०७, १०१, १००, ९९ ९८ प्रकृति रूप ८ सत्व-स्थान और होते है। इसप्रकार सव ३६ सत्वस्थान होते है। इनमे १-१ भग है किन्तु अतर इतना है कि जहाँ नपुसकवेद का क्षय होता है ऐसी चार पक्तियो मे से तीर्थंकर प्रकृति रहित द्वितीय और चतुर्थपक्ति के तृतीय कोठे मे २-२ भग होते है। इसप्रकार सव ३८ भग होते है उपशम के मिलाने से इस गुण-स्थान के ६० सत्वस्थान और ६२ भग होते है।

जो मुनि स्त्रीभाव अथवा पुरुपवेद के उदयसहित क्षपकश्रेणी चढता है वह प्रथम नपुसकवेद का क्षय करता है। यहाँ स्त्रीवेद का सत्व विद्यमान है और जो नपुसकवेद के उदय सहित क्षपक-श्रेणी चढता है वह प्रथम स्त्रीवेद का क्षय करता है। उसके उपरोक्त २ सत्वस्थानो मे नपुसकवेद का सत्व विद्यमान है इसलिये दो स्थानों मे २-२ भग कहे ॥४२९-४३१॥

नोट—यहाँ मायारहित चारि सत्वस्थान न कहे क्योकि इस गुणस्थान मे माया का सत्व विद्यमान है।

क्षपक अनिवृत्तिकरण दर्पण

स्थान	१२२	११४	११३	११२	१०६	१०५	१०४	१०३
भं	१	१	१	१	१	१	१	१
स्था	१२१	११३	११२	१११	१०५	१०४	१०३	१०२
भं	१	१	२	१	१	१	१	१
स्था	११८	११०	१०९	१०८	१०२	१०१	१००	९९
भं	१	१	१	१	१	१	१	१
स्था	११७	१०९	१०८	१०७	१०१	१००	९९	९८
भं	१	१	२	१	१	१	१	१

[illegible]

अणियट्टिचरिमठाणा चत्तारिवि एक्कीण गुणसम्म।
ते इगिदोण्णिविहीणं गोणम्मवि होंति ठाणाणि ॥४३२॥

चउ थल अनि-वृत्ति अंत के, उनमें इक इक हीन।
सूक्षम के इक दोय कम, आठ क्षीण के चीन ॥४३२

में निद्रा और प्रचला कम करने पर ९९, ९८, ९५, ९४ प्रकृतिरूप ४ सत्वस्थान अत के समय मे होते हैं इसप्रकार इस गुणस्थान में ८ सत्व स्थान होते है तथा इनमें १–१ भग होता है ॥४३२॥

सूक्ष्मसांपराय क्षीणमोह दर्पण

स्थान.	१०२	१०१	९८	९७
भ.	१	१	१	१

स्था	१०१	१००	९७	९६
भ.	१	१	१	१
स्था	९९	९८	९५	९४
भ.	१	१	१	१

आगे सयोग और अयोग के स्थान औरभग दिखाते है।

ते चोद्दसपरिहीणा जोगिस्स अजोगिचरिमगेवि पुणो ।
बावत्तरिमडसट्ठिं दुसु दुसु हीणेसु दुगदुग भंगा ॥४३३॥

वे चौदह कम योगि के, अंत अयोगी अंग ।
वहतर अडसठि दोय दो, हीन दोय दो भंग ॥४३३॥

अर्थ—सयोगगुणस्थान में क्षीणमोहगुणस्थान सबधी अतसमय के ४ सत्वस्थानो (९९-९८-९५-९४) मे ज्ञानावरणी ५, दर्शनावरणी ४ तथा अतराय ५। इसप्रकार १४ प्रकृति कम करने पर ८५, ८४, ८१, ८० प्रकृतिरूप ४ सत्वस्थान होते है और ४ भग है।

अयोगगुणस्थान के अत के दो समयो मे से प्रथम समय तक उपरोक्त ८५, ८४, ८१, ८० प्रकृतिरूप ४ सत्वस्थान होते है। इनमें आदि के दो सत्वस्थानो में ७२ प्रकृतियो को कम करने पर १३, १२ और अत के दो सत्वस्थानो में आहारक ४ बिना ६८ प्रकृतियो को कम करने पर १३, १२ प्रकृतिरूप ४ सत्वस्थान होते

है। ये १३ और १२ दो बार आने से २ ही सत्वस्थान माने जाते है। इनमे नाना जीवो की अपेक्षा साता और असाता के सत्व वदलने से ४ भग होते है इस प्रकार ६ सत्वस्थान और ८ भग होते है ॥४३३॥

सयोग भंग दर्पण

स्था	८५	८४	८१	८०
भ	१	१	१	१

अयोग भंग दर्पण

स्था	८५	८४	८१	८०
भ	१	१	१	१
स्था	१३	१२	१३	१२
भ	२	२	पु	पु

आगे उपरोक्त कथन मे श्री कनकनदि आचार्य का मतभेद दिखाते है।

णत्थि अणं उपसमगे खवगापुव्वं खवित्तु अट्ठा य।
पच्छा सोलादीणं खवणं इदि केइं णिद्दिट्ठं ॥४३४॥
अणियट्टिगुणट्ठाणे मायारहिदं य ठाणमिच्छंति।
ठाणा भंगपमाणा केई एवं परूवेंति ॥४३५॥

उपशम में नहिं अमित चउ, क्षय अपूर्व हनि अष्ट।
पीछे सोलह को हने, यही कनक को इष्ट ॥४३४॥
गुणस्थान अनि-वृत्ति में, छल बिन चउ स्थान।
इस प्रकार थल भंग का, अंतर लेउ पिछान ॥४३५॥

अर्थ—उपरोक्त कथन मे श्री कनकनदि आचार्य के मत से स्थान और भगो मे अतर आता है वह इस प्रकार है कि अनतानु-

बधी ४ का सत्व उपशमश्रेणी के ४ गुणस्थानो मे नही होता। इसलिये वद्ध और अवद्धायु के ४-४ सत्वस्थान कम होने से १६-१६ सत्वस्थान रह गये। अनिवृत्तिकरणगुणस्थान मे ८ कषाये १६ प्रकृतियो के पश्चात् क्षय होती है। अनिवृत्तिकरण गुणस्थान मे मायाकषाय रहित ४ सत्वस्थान और होते है। इसलिये ४ सत्व-स्थान बढ गये सासादन गुणस्थान मे देवअपर्याप्त का भग नही होता। कारण द्वितीय उपशमसम्यक्दृष्टि मरणकर सासादनगुण-स्थान में नही आता इसलिये ११ भग रह गये ॥४३४-४३५॥

आगे उपरोक्त मत से स्थान और भग दिखाते है।

अट्ठारह चउ अट्ठं मिच्छतिये उवरि चाल चउठाणे।
तिसु उवसमगे संते सोलस सोलस हवे ठाणा ॥४३६॥
पण्णेकारं छक्कदि वीससयं अट्ठदालं दुसु तालं।
वीसडतिण्णं वीसं सोल्लट्ठ य चारि अट्ठेव ॥४३७॥

ठारह चउ अठ आदि त्रय, इग चउ चा चालीस।
उपशम श्रेणी चार में, सोलह-सोलह दीस ॥४३६॥
पनचस अरु ग्यारह तथा, छत्तिस एकसौ वीस।
अडतालिसचालिस तथा,अरु चालिस अरु बीस ४३७-१
अडतिस बीस रु सोलहा, आठ चार अरु आठ।
सत्व अठारह आदि में, है भंगों का ठाठ ॥४३७-२॥

अर्थ--मिथ्यात्वगुणस्थान मे १८ सासादन मे ४ मिश्र मे ८ अविरतगुणस्थान से लेकर अप्रमत्तगुणस्थान तक ४०-४० सत्वस्थान है। उपशमश्रेणी के ४ गुणस्थानों मे १६-१६ सत्वस्थान

है । क्षपकश्रेणी ४ गुणस्थानो मे सयोग और अयोगगुणस्थान मे क्रम से ४, ४०, ४, ८, ४, ६ सत्वस्थान हैं । इनमे मिथ्यादृष्टि से लेकर अप्रमत्तगुणस्थान तक क्रमसे ५०, ११, ३६, १२०, ४८, ४०, ४०, भग है । उपशमश्रेणी के ४ गुणस्थानो मे १६-१६ भग हैं । क्षायिक श्रेणी के ४ गुणस्थानो मे सयोग और अयोगगुणस्थान में क्रमसे ४, ४२, ४, ८, ४, ८ भग है ।।४३६-४३७।।

आगे सत्वस्थान पढने का फल दिखाते है ।

एवं सत्तट्ठाणं सवित्थरं वण्णियं मए सम्मं ।
जो पढ़इ सुणइ भावइ सो पावइ णिव्वुदिं सोक्खं ।।४३८।।

इस प्रकार से सत्व थल, लिखा यथा विस्तार ।
पढ़े सुने अरु चिंतवें, सो लह सुक्ख अपार ।।४३८।।

अर्थ--मैंने (कनकनदि आचार्य) इस प्रकार इस सत्वस्थान अधिकार को सविस्तार भलीभाँनि वर्णन किया जो इसको पढेगा, सुनेगा और चितवन करेगा वह स्वर्ग और मोक्षसुख को प्राप्त होगा ।।४३८।।

आगे उपरोक्त आशय मे इन्द्रनदि का प्रमाण दिखाते है ।

वरइंदणंदिगुरुणो पासे सोऊण सयलसिद्धंतं ।
सिरिकणयणंदिगुरुणा सत्तट्ठाणं समुद्दिट्ठं ।।४३९।।

इन्द्र नंदि गुरु के निकट, सुनकर सब श्रुत ज्ञान ।
कनक नंदि गुरु ने कहा, यथा सत्व स्थान ।।४३९।।

अर्थ--ग्रन्थकार कहते है कनकनदि सिद्धात चक्रवर्ती गुरु ने इस सत्वस्थान को श्री इन्द्रनदि गुरु के पास सकल सिद्धात को सुनकर लिखा है ।।४३९।।

आगे ग्रन्थकार कनकनदि के वचनप्रमाण दिखाते है।

जह चक्केण य चक्की छक्खंडं साहियं अविग्घेण।
तह मइचक्केण मया छक्खंड साहियं सम्मं ॥४४०॥

जैसे चक्री चक्र से, जीते छै भू खंड।
तैसे मैं निज बुद्धि से, वांचे छै श्रुत खंड ॥४४०॥

अर्थ—जैसे चक्रवर्ती सुदर्शनचक्र से छै खड पृथ्वी को बिना किसी बाधा के सहज जीत लेता है तैसे मैने अपनी बुद्धि से जीवस्थान, क्षुद्रकबध, बधस्वामी, वेदनाखड, वर्गणाखड और महावधसिद्धात पढ लिया है। तत्पश्चात् इस सत्वस्थान को लिखा है इसलिये प्रमाण करने योग्य है ॥४४०॥

॥ सत्वस्थानाधिकार समाप्त ॥



आगे मगलाचरण दिखाते है।

णमिऊण णेमिणाहं सच्चजुहिट्ठिरणमंसियंघिजुगं।
बंधुदयसत्तजुत्तं ठाणसमुक्कित्तणं वोच्छं ॥४४१॥

पांडव पूजित नेमि के, चरण नमों सिरनाय।
वंध उदय अरु सत्व के, कहूँ थान समझाय ॥४४१॥

अर्थ—जिनके चरणकमल युधिष्ठिरादि पाँच पाडवो के द्वारा पूजे गये है ऐसे श्री नेमिश्वर भगवान को नमस्कार करके वध, उदय और सत्वस्थानो को कहता हूँ ॥४४१॥

आगे गुणस्थानो मे ८ कर्मो की वर्धविधि दिखाते है।

छसु सगविहमट्ठविहं कम्मं बंधंति तिसु य सत्तविहं ।
छव्विहमेकट्ठाणे तिसु एक्कमबंधगो एक्को ॥४४२॥

बँधे कर्म अठ सात विधि, छै में त्रय में सात।
इक में छै त्रय में जु इक, इक अबंध विख्यात ॥४४२॥

अर्थ—मिश्रगुणस्थान के विना अप्रमत्तगुणस्थान तक आयु विना ७ अथवा आयुसहित ८ प्रकार के कर्मो का वध होता है। मिश्र, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरणगुणस्थान मे आयु बिना ७ कर्मो का बध होता है। सूक्ष्मसापरायगुणस्थान मे आयु और मोह बिना ६ कर्मो का बध होता है उपशातमोह, क्षीणमोह और सयोगगुणस्थान मे केवल वेदनीकर्म का वध होता है और अयोगगुणस्थान मे बध का अभाव है ॥४४२॥

आगे उपरोक्त ४ प्रकार के वधस्थानो मे भुजाकारादि भेद दिखाते है।

चत्तारि तिण्णि तिय चउ पयडिट्ठाणाणि मूलपयडीणं ।
भुजागारप्पदराणि य अवट्ठिदाणिवि कमे होंति ॥४४३॥

मूल कर्म के बंध थल, चउ में, त्रय-त्रय चार ।
वढ़ता-घटता एक-सा, बंध होय निरधार ॥४४३॥

अर्थ—उपरोक्त गीति मे मूलकर्मो के वधस्थान ८, ७, ६, १ कर्म के वध होने से ४ है। इनमे भुजाकार, अल्पतर अथवा अवस्थित रूप वध होता है। उपशमश्रेणी से उतरते समय मूल कर्मो मे भुजाकार वध ३ होते हैं। वे इस प्रकार है कि कोई जीव उपशातमोह से सूक्ष्मसापरायगुणस्थान मे गिरा तो १ तज ६ कर्मो का वध करने लगा। वहाँ से अनिवृत्तिकरण अपूर्वकरण गुणस्थान मे

आया तो ६ तज ७ कर्मो का बध करने लगा तथा अप्रमत्तगुण-स्थान मे आया तो ७ तज ८ कर्मो का बध करने लगा। इसतरह भुजाकारबध ३ है इनके अतिरिक्त अन्य भुजाकार बध नही होने के कारण ऊपर से उतरने का क्रम इसी प्रकार से है। यदि किसी ने पूर्व देवायु का बध कर लिया है तो वह मरण करे तो ऊपर से गिरकर अविरतगुणस्थान मे सीधा आता है यहाँ आयुसहित बध नही होता। चढते समय अल्पतरबध ३ होते है। वे इस प्रकार है कि अप्रमत्तगुणस्थान से अपूर्वकरणअनिवृत्तिकरण चढा तो ८ तज ७ कर्मो का बध करने लगा यहाँ से सूक्ष्मसापराय मे चढा तो ७ तज ६ कर्मो का बध करने लगा यहा से उपशातमोह चढा तो ६ तज १ कर्म का बध करने लगा। इस तरह अल्पतर बध ३ है और अवस्थितबध ४ है वे इसतरह है कि ८ कर्मो का बध कर ८ का ही फिर किया तब १ भेद हुआ इसीतरह ७ का कर ७ का किया तब १ हुआ, ६ का कर ६ का किया तब १ हुआ और १ का कर १ का किया तब १ हुआ इसतरह अवस्थितबध ४ है। इनके अतिरिक्त अकथबध और होता है किन्तु वह मूलकर्मो में नही होता ॥४४३॥

आगे भुजाकारादि बधो का स्वरूप दिखाते है।

अप्पं बंधंतो बहुबंधे बहुगादु अप्पबंधेवि।
उभयत्थ समे बंधे भुजगारादी कमे होंति ॥४४४॥

अल्प बँधे फिर बहु बँधे, बहु फिर अल्प स्वरूप।
उभय काल में सम बँधे, भुजा आदि क्रम रूप ॥४४४॥

अर्थ—प्रथम थोडे कर्मो का बध होता है पश्चात् बहुत कर्मो का बध होना हे उसको भुजाकार (बढता हुआ) बध कहते है। प्रथम बहुत कर्मो का बध होता है पश्चात् थोडे कर्मो का बध होता है उसको

अल्पातर बध कहते है। प्रथम और पश्चात् समान कर्मो का बध होता है उसको अवस्थित बध कहते हैं। इनके अतिरिक्त उत्तर प्रकृतियो मे अकथवध और होता है जो कि बध के अभाव के पश्चात् होता है ॥४४४॥

आगे गुणस्थानो मे मूलकर्मो का उदय दिखाते है।

अट्ठुदओ सुहुमोत्ति य मोहेण विणा हु संतखीणेसु।
घादिदराण चउक्कस्सुदओ केवलिदुगे णियमा ॥४४५॥

सूक्षम तक अठ का उदय, शांतक्षीण विन मोह।
चारि घातिया का उदय, केवल दुक में सोह ॥४४५॥

अर्थ—सूक्ष्मसापरायगुणस्थान तक ८ कर्मो का उदय होता है। उपशात और क्षीणमोहगुणस्थान मे मोह बिना ७ कर्मो का उदय होता है और सयोग तथा अयोगगुणस्थान मे ४ अघातिया कर्मो का उदय होता है ॥४४५॥

आगे गुणस्थानो मे आठो कर्मो की उदीरण दिखाते है।

घादीणं छदुमट्ठा उदीरगा रागिणो हि मोहस्स।
तदियाऊण पमत्ता जोगंता होंति दोण्हंपि ॥४४६॥

घाति उदीरण क्षीण तक, अरु सूक्षम तक मोह।
आयु वेदनी प्रमत्त तक, नाम गोत्र जिन सोह ॥४४६॥

अर्थ—वेदनी और भुज्यमानआयुकर्म की उदीरणा मिथ्यात्व मे लेकर प्रमत्तगुणस्थान तक हो सकती है। मोहकर्म की उदीरणा सूक्ष्मसापरायगुणस्थान तक हो सकती है। ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी और अतराय कम की उदीरणा क्षीणमोहगुणस्थान तक हो सकती

है और नाम तथा गोत्र कर्म की उदीरणा सयोगगुणस्थान तक हो सकती है ॥४४६॥

आगे गुणस्थानो मे आयु विना शेष की उदीरणा दिखाते है ।

मिस्सूणपमत्तंते आउस्सद्धा हु सुहुमखीणाणं ।
आवलिसिट्ठे कमसो सग पण दो येवुदीरणा होंति ॥४४७॥

मिश्र न प्रमत्त अंत तक, वय थिति सूक्ष्म रु क्षीण ।
आवलि भर क्रम सात पन, दोय उदीरण चीन ॥४४७॥

अर्थ—भुज्यमानआयुकर्म मे १ आवलीकाल शेष रहने पर आयु विना सात कर्मो की उदीरणा मिश्रगुणस्थान विना प्रमत्तगुणस्थान तक हो सकती है । भुज्यमान आयुकर्म में १ आवली काल शेष रहने पर आयु, वेदनी और मोहकर्म बिना पाचकर्मो की उदीरणा सूक्ष्मसापरायगुणस्थान तक हो सकती है और भुज्यमान आयुकर्म मे १ आवली काल शेप रहने पर नाम और गोत्र कर्म की उदीरणा क्षीणमोहगुणस्थान तक हो सकती है ॥४४७॥

आगे गुणस्थानो मे मूलकर्मो का सत्व दिखाते है ।

संतोत्ति अट्ठ सत्ता खीणे सत्तेव होंति सत्ताणि ।
जोगिम्मि अजोगिम्मि य चत्तारि हवंति सत्ताणि ॥४४८॥

सत्व आठ का शांत तक, सत्व सात का क्षीण ।
और सयोग अयोग में, सत्व चार का चीन ॥४४८॥

अर्थ—उपशातमोहगुणस्थान तक आठो कर्मो का सत्व होता है । क्षीणमोहगुणस्थान मे मोह विना सात कर्मो का सत्व होता है । सयोग और अयोगगुणस्थान मे ४ अघातिया कर्मो का सत्व होता है ॥४४८॥

आगे उत्तरप्रकृतियो मे बधस्थान दिखाते है ।

तिण्णि दस अट्ठ ठाणाणि दंसणावरणमोहणामाणं ।
एत्थेव य भुजगारा सेसेसेयं हवे ठाणं ॥४४६॥

दर्शावरण में तीन थल, मोहहिं दश अठ नाम ।
भुजाआदि भी इन्हों में, शेष एक इक ठाम ॥४४९॥

अर्थ—दर्शनावरणी कर्म मे तीन बधस्थान होते है, मोहकर्म मे दश बधस्थान होते है । नामकर्म मे आठ बधस्थान होते है, भुजाकारादि बध भी इन तीनो मे ही होते है और शेप कर्मो मे १-१ बधस्थान होता है । कारण ज्ञानावरणी और अतरायकर्म की ५-५ प्रकृतियाँ साथ-साथ बध मे आती है और वेदनी, आयु और गोत्रकर्म की एक काल मे १ ही प्रकृतिबध मे आती है ॥४४९॥

कर्मस्थान दर्पण

कर्म	ज्ञा०	द०	वे०	मो०	आ०	ना०	गो०	अ०
स्थान	१	३	१	१०	१	८	१	१

आगे दर्शनावरणी के बधस्थान दिखाते है ।

णव छक्क चदुक्कं य य बिदियावरणस्स बंधठाणाणि ।
भुजगारप्पदराणि य अवट्ठिदाणिवि य जाणाहि ॥४५०॥

दर्शनवरणी बंध थल, हैं नव छै अरु चार ।
भुजा अल्प अरु अवस्थित, अकथ बंध उरधार ॥४५०॥

अर्थ—दर्शनावरणी कर्म मे ९ प्रकृतिरूप प्रथमबधस्थान है, तीन निद्रा विना ६ प्रकृतिरूप द्वितीयबध स्थान है और निद्रा-प्रचला विना चार प्रकृतिरूप तृतीय बधस्थान है । इनमे भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित अथवा अकथरूप बध होता है ।

भुजाकारवध—उपशम श्रेणी से उतरने वाला नीचे दर्शनावरणी का ४ प्रकृतिरूपबध कर पश्चात् ६ प्रकृतिरूप बध करता है, तब १ भुजाकारबध होता है और ६ प्रकृतिरूपवध के पश्चात् जव ९ प्रकृतिरूप बध करता है तव १ भुजाकारवध होता है। इसतरह २ भुजाकरवध होते है।

अल्पतरवध—प्रथमसम्यक्त्व के सन्मुख होने वाला ९ प्रकृति रूप बध से ६ प्रकृतिरूप बध करता है तब १ अल्पतरबध होता है और वह उपशम अथवा क्षायिकश्रेणी चढता है। जब ६ प्रकृतिरूप बध से ४ प्रकृति रूप करता है तव १ अल्पतरवध होता है इस तरह २ अल्पतरवध होते है।

अवस्थितबध—जब ९ प्रकृतिरूप से ९ प्रकृतिरूपबंध करता है तव १ अवस्थितवध होता है। जब ६ प्रकृतिरूप से ६ प्रकृतिरूप बध करता है तब १ अवस्थितबध होता है और जब ४ प्रकृतिरूप वध से ४ प्रकृतिरूपबध करता है तब १ अवस्थितबध होता है। इस प्रकार ३ अवस्थितिबध होते है।

अकथवध—जब उपशातमोह में बध की अभाव अवस्था से गिर कर सूक्ष्म सापराय मे आकर ४ प्रकृतिरूपवध करता है तब १ अकथ वध होता है और वद्धायु वाला उपशात मोह से गिर कर अविरतगुणस्थान मे आकर ६ प्रकृतिरूपबध करता है, तब १ अकथबध होता है इसप्रकार २ अकथवध होते हैं ॥४५०॥

आगे उपरोक्त बधस्थानो के गुणस्थान दिखाते हैं।

णव सासणोत्ति बंधो छच्चेव अपुव्वपढमभागोत्ति।
चत्तारि होंति तत्तो सुहुमकसायस्स चरिमोत्ति ॥४५१॥

सासादन तक नव बंधें, पुनि अपूर्व चित धार।
प्रथम भग तक छै बंधें, सूक्ष्म अंत तक चार ॥४५१॥

अर्थ—सासादनगुणस्थान तक दर्शनावरणी का ६ प्रकृतिरूप बध होता है। अपूर्वकरणगुणस्थान के प्रथम भाग तक ६ प्रकृतिरूप बध होता है और सूक्ष्मसापरायगुणस्थान तक ४ प्रकृतिरूप बध होता है ॥४५१॥

आगे दर्शनावरणी के उदयस्थान दिखाते हैं।

खीणोत्ति चारि उदया पंचसु णिद्दासु दोसु णिद्दासु।
एक्के उदयं पत्ते क्षीणदुचरिमोत्ति पंचुदया ॥४५२॥

क्षीण मोह तक चउ उदय, निद्रा पन या दोय।
एक उदय मिल पन उदय,क्षीण दु क्षण तक होय ॥४५२

अर्थ—जाग्रत अवस्थावाले जीव के दर्शनावरणी की चक्षुदर्शनावरणी आदि ४ प्रकृतियो का उदयरूप स्थान क्षीणमोहगुणस्थान तक होता है निद्रावान जीव के उपरोक्त ४ और पाच निद्राओ से कोई निद्रा १ इस तरह ५ प्रकृतिरूप उदयस्थान प्रमत्तगुणस्थान तक होता है और निद्रा-प्रचला मे से कोई एक निद्रा के उदय होने पर ५ प्रकृतिरूप उदयस्थान क्षीणमोहगुणस्थान के प्रारभ से लेकर अत के दो समयो मे से प्रथम समय तक होता है ॥४५२॥

आगे गुणस्थानो में दर्शनावरणी के सत्व स्थान दिखाते है।

मिच्छादुवसंतोत्ति य अणियट्टीखवगपढमभागोत्ति।
णवसत्ता खीणस्स दुचरिमोत्ति य छच्चदूबरिये ॥४५३॥

प्रथम भाग अनि क्षपक तक, ग्यारह तक नव सत्व।
क्षीण दु क्षण अरु अंत तक, क्रम से छै चउ सत्व ॥४५३

अर्थ—मिथ्यात्व से लेकर उपशमश्रेणी के उपशातगुणस्थान तक और क्षपकश्रेणी के अनिवृत्तिकरणगुणस्थान तक दर्शनावरणी

की ९ प्रकृतिरूप सत्वस्थान होता है इससे आगे क्षीणमोहगुणस्थान के अत के दो समयो में से प्रथम समय तक दर्शनावरणी का ६ प्रकृतिरूप सत्वस्थान होता है और अत के समय में केवल ४ प्रकृतिरूप सत्वस्थान होता है ॥४५३॥

आगे मोहकर्म के बधस्थान दिखाते है ।

बावीसमेक्कवीसं सत्तारस तेरसेव णव पंच ।
चदुतियदुगं य एक्कं बंधट्ठाणाणि मोहस्स ॥४५४॥

बाइस इक्किस सत्रहा, तेरह नव अरु पांच ।
चउ त्रय दो इक मोह के, बंध थान दश वांच ॥४५४॥

अर्थ—मोहकर्मबधस्थान २२, २१, १७, १३, ९, ५, ४, ३, २, १ प्रकृतिरूप दश होते हैं ॥४५४॥

आगे उपरोक्त बध स्थानो के गुणस्थान दिखाते है ।

बावीसमेक्कवीसं सत्तर सत्तार तेर तिसु णवयं ।
थूले पणचदुतियदुगमेक्कं मोहस्स ठाणाणि ॥४५५॥

बाइस इक्किस सत्रहा, सत्रह तेरह टोह ।
त्रय में नव अनि पांच चउ, त्रय दो इक थल मोह॥४५५

अर्थ—उपरोक्त मोहकर्म के बधस्थानो में से मिथ्यात्व से लेकर अपूर्वकरणगुणस्थान तक क्रमसे २२, २१, १७, १७, १३, ९, ९, ९ प्रकृतिरूपबधस्थान होते है और अनिवृत्तिकरणगुणस्थान के पाच भागों में क्रमसे ५, ४, ३, २, १ प्रकृतिरूप ५ बधस्थान होते हैं ॥४५५॥

मोह बंधस्थान दर्पण

गु	मि	सा	मि	अ	दे.	प्र.	अ.	अ.	अ.				
स्था.	२२	२१	१७	१७	१३	९	९	९	५	४	३	२	१

आगे उपरोक्त स्थानो में ध्रुवबधी प्रकृतियो को दिखाते है ।

उगुवीसं अट्ठारस चोद्दस चोद्दस य दस य तिसु छक्कं ।
थूले चदुतिदुगेक्कं मोहस्स य होंति धुवबंधा ॥४५६॥

उन्निस ठारह चौदहा, चौदह दश छै टोह ।
छै छै अनि चउ तीन दो, इक ध्रुव बंधी मोह ॥४५६॥

अर्थ—उपरोक्त स्थानो मे क्रम से १९, १८, १४, १४, १०, ६, ६, ६, ४, ३, २, १ ध्रुवबधी प्रकृतिया है जिनका बध अवश्य हो उनको ध्रुवबधीप्रकृति कहते है ॥४५६॥

मोह ध्रुवबंध प्रकृति दर्पण

स्था.	२२	२१	१७	१३	९	५	४	३	२	१
ध्रु	१९	१८	१४	१०	६	४	४	३	२	१

आगे उपरोक्तस्थानो मे भग निकालने की विधि दिखाते हैं ।

सगसंभवधुवबंधे वेदेक्के दोजुगाणमेक्के य ।
ठाणो वेदजुगाणं भंगहदे होंति तब्भंगा ॥४५७॥

निज संभव ध्रुव प्रकृति में, वेद दु युग में एक ।
मिलें थान अरु भंग हित, वेद युगल गुणि नेक ॥४५७॥

अर्थ—उपरोक्त ध्रुवबधी प्रकृतियो का जहा तक जिन का बध है वहा तक तीन वेदो मे से १ वेद हास्य-रति और अरति-शोक के

जोडे मे १–१ वेद मिलाने से स्थान होते है अर्थात् वेद के परिणाम (३) मे उपरोक्त जोडो के परिमाण (२) का गुणा करने से भग (६) होते है।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान में मिथ्यात्व १, कषाय १६, वेद १ हास्यरति में से १ अरति-शोक मे से १, भय १, ग्लानि १ इसतरह २२ प्रकृतिरूप बधस्थान होता है। यहा वेद ३ और युगल २ के बदलने से भग ६ होते है सासादनगुणस्थान मे मिथ्यात्व बिना २१ प्रकृतिरूप बधस्थान होता है। यहाँ वेद २ युगल २ के बदलने से भग ४ होते है मिश्र और अविरतगुणस्थान मे अनतानुबधी ४ बिना १७ प्रकृतिरूप बधस्थान होता है यहाँ भग २-२ है। देशविरतगुणस्थान मे अप्रत्याख्यान ४ बिना १३ प्रकृतिरूप बधस्थान होता है यहाँ भग २ है। प्रमत्तगुणस्थान में प्रत्याख्यान ४ बिना ९ प्रकृतिरूप बधस्थान है यहाँ भग २ है अप्रमत्त और अपूर्वकरणगुणस्थान मे ९-९ प्रकृतिरूप बधस्थान है यहाँ अरति-शोक युगल बिना भग १-१ है और अनिवृत्तिकरणगुणस्थान के पाँच भागों में क्रमसे ५, ४, ३, २, १ प्रकृतिरूप बधस्थान है। इनमें १-१ भग है ॥४५७॥

२	२	२	२	२	२	१	४	३
२–२	२–२	२–२	२–२	२–२	२	४		
१–१–१	१–१	१	१	१	१			
१६	१६	१२	८	४	४			
१	०							

२	१

आगे उपरोक्त भगो की सख्या दिखाते है।

छब्बावीसे चदु इगिवीसे दो द्दो हवंति छट्ठोत्ति।
एक्केक्कमदो भंगो बंधट्ठाणेसु मोहस्स ॥४५८॥

बाइस छै इक्कीस चउ, छै तक दो-दो मान।
भंग शेष में एक इक, बंध मोह स्थान ॥४५८॥

अर्थ—मोह के २२वें बधस्थान मे ६ भग है, २१वे बधस्थान मे ४ भग हैं, मिश्र से प्रमत्तगुणस्थान तक के वधस्थानो मे २-२ भग है और अप्रमत्त से अनिवृत्तिकरणगुणस्थान तक १-१ भग है ॥४५८॥

	मि	सा	मि	अ.	दे	प्र	अ	अ				
स्था.	२२	२१	१७	१७	१३	९	९	९	५	४	३	२	१
भ.	६	४	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१

	अ				
स्था	५	४	३	२	१
भ	१	१	१	१	१

आगे मोह के १० स्थानो मे भुजाकारादि दिखाते है।

दस वीसं एक्कारस तेत्तीसं मोहबंधठाणाणि।
भुजगारप्पदराणि य अवट्ठिदाणिवि य सामण्णे ॥४५९॥

मोह वंध थल दशों में, भुजाकार हैं बीस।
अरु ग्यारह हैं अल्पतर, इकसे हैं तेतीस ॥४५९॥

अर्थ—उपरोक्त मोह के १० वधस्थानो मे भगो की अपेक्षा न करके भुजाकारवध २० है, अल्पतरवध ११ है और अवस्थितवध ३३ है ॥४५९॥

आगे सामान्य से अकथवध की सख्या दिखाते है।

सामण्णअवत्तव्वो ओदरमाणम्मि एक्कयं मरणे ।
एक्कं य होदि एत्थवि दो येव अवट्ठिदा भंगा ॥४६०॥

अकथबंध सामान्य से, उतरत श्रेणी एक ।
मरण काल इक दोय यों, अवस्थिता दो देख ॥४६०॥

अर्थ—सामान्य (भगो की अपेक्षा बिना) से अकथबध उपशम-श्रेणी से उतरते समय १ होता है, मरणसमय १ होता है । इसप्रकार २ अकथबध होते है और अकथबध के पश्चात् द्वितीयादि समय मे उतनी ही प्रकृतियो का बध होने से वहा २ अवस्थित (एकसा), बध भी होते है ॥४६०॥

भावार्थ—इनके उपजने की विधि इस प्रकार है कि उपशम-श्रेणी से उतरकर अनिवृत्तिकरण मे सज्वलनलोभ को बाधकर माया और लोभ को बाधने से १ भुजाकारबध होता है अथवा बद्धायुवाला मरकर १७ प्रकृतियो को बाधने से १ भुजाकारबध होता है । इसप्रकार एक प्रकृतिरूप स्थान के २ भुजाकार होते है । दो को वाधि मान को बाधने से १ भुजाकार बध होता है अथवा बद्धायु वाला मरकर १७ प्रकृतियो को बाधने से १ भुजाकार बध होता है । इसप्रकार दो प्रकृतिरूप स्थान के २ भुजाकार होते है । तीन को वाधि क्रोध को बाधने से १ अथवा बद्धायुवाला मरकर १७ को बाधने से १ भुजाकारबध होता है इसप्रकार तीन प्रकृतिरूप स्थान के २ भुजाकार होते है । चार को वाधि पुरुषवेद को बाधने से १ अथवा बद्धायुवाला मरकर १७ को बाधने से १ भुजाकार-बध होता है । इसप्रकार चार प्रकृतिरूप स्थान के २ भुजाकार होते हैं । ५ को वाधि अपूर्वकरण में ९ बाधने से १ अथवा बद्धायुवाला मरकर १७ को बाधने से १ भुजाकार बध होता है । इसप्रकार पाच प्रकृतिरूप स्थान के २ भुजाकार होते है । अपूर्वकरण, अप्रमत्त

प्रमत्तवाला ९ को वाधि १३ को वाधने से १ वद्धायुवाला मरकर १७ को वाधने से १ प्रथमोपशमसम्यक्दृष्टि २१ को वाधने से १ अथवा प्रथमोपशमसम्यक्दृष्टि—वेदकसम्यक्दृष्टि २२ को वाधने से १ भुजाकार बध होता है। इसप्रकार नव प्रकृतिरूप स्थान के २ भुजाकार होते है। १३ को वाधि १७ को वाधने से १ प्रथमोपशमसम्यक्दृष्टि २१ को वाधने से १ अथवा प्रथमोपशमसम्यक्दृष्टि—वेदकसम्यक्दृष्टि २२ को वाधने से १-१ भुजाकारवध होता है। इसप्रकार १३ प्रकृतिरूप स्थान के ३ भुजाकार होते हैं। १७ को वाधि प्रथमोपशमसम्यक्दृष्टि २१ को वाधने से १ अथवा प्रथमोपशमसम्यक्दृष्टि—वेदकसम्यक्दृष्टि २२ को वाधने से १ भुजाकारवध होते हैं। इसप्रकार १७ प्रकृतिरूप स्थान के ३ भुजाकार होते है। और २१ को वाधि २२ को वाधने से १ भुजाकार वध होता है, इसतरह सब २० भुजाकारवध होते हैं।

भुजा०	स्थान से स्थान तक	भुजा०	स्थान से स्थान तक
२	१—२ या १—१७	४	९-१३या९-१७,९-२१,९-२२
२	२—३ या २—१७	३	१३-१७या१३-२१,१३-२२
२	३—४ या ३—१७	२	१७-२१या१७-२२
२	४—५ या ४—१७	१	२१-२२
२	५—९ या ५—१७		

अनादि अथवा सादि मिथ्यादृष्टि अनिवृत्तिकरण के अत समय २२ का वाधकर प्रथमोपशमसम्यक्दृष्टि अथवा वेदकसम्यक्दृष्टि होकर १७ को वाधने से १, १३ को वाधने से १ अथवा ९ को वाधने से १ इसतरह २२वे स्थान के ३ अल्पतर होते हैं वेदक और क्षायिक सम्यक्दृष्टि १७ को वाधि १३ को वाधने मे १ अथवा ९ को वाधने मे १ इसतरह १७वे स्थान के २ अल्पतर होते हैं। १३ को वाधि अप्रमत्त मे ९ को वाधने से १ अल्पतर होता है। अपूर्वकरण मे ९ को वाधि अनिवृत्तिकरण के प्रथम भाग मे ५ को

बाधने से १ पाच को बाधि द्वितीय भाग मे ४ को बांधने से १ चारि बांधि तृतीय भाग मे ३ को बाधने से १ तीन बाँधि चतुर्थ भाग मे २ को बाधने से १ दो बाँधि पचम भाग मे १ प्रकृति को बाधने से १ इसतरह ११ अल्पतर होते है ।

अल्प०	स्थान से स्थान तक	अ	स्थान से स्थान तक
३	२२–१७ या २२–१३ या २२–९	१	५–४
२	१७–१३ या १७–९	१	४–३
१	१३–९	१	३–२
१	९–५	१	२–१

उपरोक्त अकथबध २ भुजाकार २० अल्पतर ११ इनमे जितनी प्रकृतियो का बध होता है उतनी ही प्रकृतियो का बध द्वितीयादि समय मे होने से ३३ अवस्थितबध होते है ॥४६०॥

आगे विशेष से भुजाकारादिबधो का परिमाण दिखाते है ।

सत्तावीसहियसयं पणदालं पंचहत्तरिहियसयं ।
भुजगारप्पदराणि य अवट्ठिदाणिवि विसेसेण ॥४६१॥

इकसौ सत्ताईस हैं, भुजाकार जु विशेष ।
पैंतालिस हैं अलपतर, इकसौ पिचतर शेष ॥४६१॥

अर्थ—विशेष (भगो की अपेक्षा) से भुजाकारबध १२७ है । अल्पतरबध ४५ है और अवस्थितबध १७५ है ॥४६१॥

आगे १२७ भुजाकार बधो को गुणस्थानो मे दिखाते है ।

णभ चउवीसं बारस बीसं चउरट्ठवीस दो द्दो य ।
थूले पणगादीणं तियतिय मिच्छादिभुजगारा ॥४६२॥

नभ चौविस बारह विसा, चौबिस अठविस दोय।
दो अनि पन में तीन त्रय, भुजाकार हैं जोय ॥४६२

अर्थ—उपरोक्त १२७ भुजाकारवध मिथ्यादृष्टि से लेकर अपूर्वकरणगुणस्थान तक क्रमसे ०, २४, १२, २०, २४, २८, २, २ हैं और अनिवृत्तिकरणगुणस्थान के पाच भागो मे ३-३ है ॥४५६॥

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे भुजाकार बध नही होते कारण २२ से अधिक का बध है ही नही। सासादन से मिथ्यात्व मे आये तव दोनो जगह के भगो (४×६) को गुणे २४ भुजाकार मिथ्यात्व के होते है मिश्र से मिथ्यात्व मे आवे तव दोनो जगह के भगो को (२×६) गुणें १२ भुजाकार मिश्र के होते हैं। इसीतरह भगों को गुणने से अविरत से सासादन मे आवे तव २×४=८ और मिथ्यात्व मे आवे तव २×६=१२ इसतरह २० भुजाकार अविरत के होते हैं देशविरत से मिश्र अथवा अविरत मे आवे तव २×२=४ सासादन मे आवे तव २×४=८ और मिथ्यात्व मे आवे तव २×६=१२ इस तरह २४ भुजाकार देशविरत के होते हैं प्रमत्त से देश विरत मे आवे तव २×२=४ मिश्र और अविरत मे आवे तव २×२=४ सासादन मे आवे तव २×४=८ और मिथ्यात्व में आवे तव २×६=१२ इस तरह २८ भुजाकर प्रमत्त के होते है अप्रमत्त से वद्धायु वाला अविरत मे आवे तव २ भुजाकार अप्रमत्त के होते है अपूर्वकरण से वद्धायुवालामरि अविरत मे आवे तव २ भुजाकार होते हैं अनिवृत्तिकरण के प्रथम भाग से अपूर्वकरण मे आवे तव १ और अविरत मे आवे तव २, इसतरह ३ भुजाकारवध अनिवृत्तिकरण के प्रथम भाग मे होते है इसीतरह शेप ४ भागो के १२ भुजाकार होते है सव मिलकर १२७ भुजाकारवध वधस्थानो के भगो को गुणने से होते है एक वधस्थान मे जितने भग है उतने ही वधस्थानो के भेद है उनसे जव अधिक को वाधता है तव भुजाकारवध होता है ॥४६२॥

आगे ४५ अल्पतरवधो को गुणस्थानो में दिखाते है।

अप्पदरा पुण तीसं णभ णभ छद्दोण्णि दोण्णि णभ एक्कं।
थूले पणगादीणं एक्केक्कं अंतिमे सुण्णं ॥४६३॥

अल्पतरा तिस नभ नभा, छै दो दो नभ एक।
थूल चार में एक इक, अंत भाग को छेक ॥४६३॥

अर्थ—उपरोक्त अल्पतरवध मिथ्यात्व से लेकर अपूर्वकरण-गुणस्थान तक क्रमसे ३०, ०, ०, ६, २, २, ०, १ होता है। अनिवृत्तिकरण के आदि के चार भागो मे १–१ है और अत भाग मे ० है ॥४६३॥

भावार्थ—मिथ्यात्व से मिश्र अथवा अविरत मे जाय तव ६×२=१२ देशविरत मे जाय तव ६×२=१२ अप्रमत्त मे जाय तव ६×१=६ इसतरह मिथ्यात्व के ३० अल्पतर वध है मिथ्यात्व से सासादन और प्रमत्त मे जाता नही इसलिये अल्पतर नही होते मिश्र और अविरत मे १७–१७ का वध होने से अल्पतर नही होते, अवस्थित वध होता है अविरत से देशविरत जाय तव २×२=४ और अप्रमत्त जाय तव २×१=२ इसतरह ६ अल्पतर अविरत के होते है देशविरत से अप्रमत्त जाय तव २×१=२ अल्पतर देशविरत के होते है प्रमत्त से अप्रमत्त जाय तव २×१=२ अल्प-तर प्रमत्त के होते है यहाँ वध ९–९ का ही है परिभगो मे अतर होने से अल्पतर माने गये है अप्रमत्त से अपूर्वकरण जाय तव ९–९ का वध होने से अल्पतर नही होता अपूर्वकरण से अनिवृत्तिकरण के प्रथम भाग मे जाय तव १ प्रथम भाग से द्वितीय भाग में जाय तव १ द्वितीय भाग से तृतीय भाग मे जाय तव १ तृतीय भाग से चतुर्थ भाग मे जाय तव १ और चतुर्थ भाग से पचमभाग में जाय तव १ होता है पचमभाग से आगे अल्पतरबध नही होता इस तरह ४५ अल्पतर होते हैं ॥४६३॥

आगे अवस्थित और अकथबधो की सख्या दिखाते है ।

भेदेण अवत्तव्वा ओदरमाणम्मि एक्कयं मरणे ।
दो येव होंति एत्थवि तिण्णेव अवट्ठिदा भंगा ॥४६४॥

अकथ वंध भी भेद से, उतरत में इक चीन ।
मरण काल दो सर्व त्रय, थिती बंध भी तीन ॥४६४॥

अर्थ—विशेष (भगो की अपेक्षा) से अकथबध सूक्ष्मसापराय से उतरते ही १ होता है और बद्धायु वाले के मरकर २ होते है कारण १७ प्रकृतियो को दो प्रकार से बाधता है हास्य-रति से अथवा अरति-शेक से इस प्रकार ३ अकथबध होते हैं और यहां द्वितीयादि समय मे समान बध करने से ३ अवस्थित बध होते हैं इनके अतिरिक्त भुजाकार बधो के साथ के १२७ और अल्पतर बधो के साथ के ४५ सब मिलकर १७५ अवस्थितबध होते हैं भुजाकार बध १२७ अल्पतर ४५ और अकथबध ३ सब मिल १७५ ये होते हैं सब मिलकर ३५० होते है ॥४६४॥

भुजाकारादि बंधों का भंगदर्पण

	मि	सा.	मि.	अ	दे.	प्र.	अ.	अ.	अ४
भु०	०	२४	१२	२०	२४	२८	२	२	१२
अ०	३०	०	०	६	२	२	०	१	४
अ०	३०	२४	१२	२६	२६	३०	२	३	१६
अ०									

	अ.५	उ	म.	जोड
भु०	३	०	०	१२७
अ०	०	०	०	४५
अ०	३	१	२	१७५
अ०		१	२	३

३५०

आगे मोहकर्म के उदय स्थान दिखाते है ।

दस णव अट्ठ य सत्त य छप्पण चत्तारि दोण्णि एक्कं य ।
उदयट्ठाणा मोहे णव येव य होंति णियमेण ॥४६५॥

दश नव अठ अरु सात छै, पन चउ दो इक मान ।
उदय थान ये मोह के, निश्चय नव ही जान ॥४६५॥

अर्थ—मोहकर्म के उदयस्थान १०, ९, ८, ७, ६, ५, ४, २, १ प्रकृति रूप ९ होते है ॥४६५॥

आगे उपरोक्त स्थानो में प्रकृति बदलने से भेद दिखाते है ।

मिच्छं मिस्सं सगुणे वेदगसम्मेव होदि सम्मत्तं ।
एक्का कसायजादी वेददुजुगलाणमेक्कं य ॥४६६॥
भयसहियं य जुगुच्छासहियं दोहिंवि जुदं य ठाणाणि ।
मिच्छादिअपुव्वंते चत्तारि हवंति णियमेण ॥४६७॥
अणसंजोजिदसम्मे मिच्छं पत्ते ण आवलित्ति अणं ।
उवसमखइये सम्मं ण हि तत्थवि चारि ठाणाणि ॥४६८॥

वाम मिश्र निज थान में, समकित वेदक थान ।
चउ कषाय में एक इक, वेद दु युग इक जान ॥४६६॥
ग्लानि सहित या भय सहित, या दो युत या हीन ।
मिथ्या से अठवें तलक, चार चार थल चीन ॥४६७॥
वाम न अन आवलि तलक, अन संयोजित पान ।
साम्य न क्षायिक शांत के, यों चउ चउ थल जान ॥४६८

अर्थ—मिथ्यात्व का उदय मिथ्यात्वगुणस्थान मे होता है मिश्र-प्रकृति का उदय मिश्रगुणस्थान मे होता है और सम्यक्प्रकृति का उदय अविरतगुणस्थान से अप्रमत्तगुणस्थान तक होता है अनतानुवधी आदि चार कपायो की क्रोधादि चारिजाति मे से एक जाति का उदय होता है तीन वेदो मे से एक का उदय होता है हास्य-रति अथवा अरति-शोक इन मे से १ युगल का उदय होना है इनके साथ भय और ग्लानि का उदय होने से प्रथम स्थान होता है केवल भय के उदय से द्वितीय स्थान होता है केवल ग्लानि के उदय से तृतीय स्थान होता है तथा भय और ग्लानि विना चतुर्थ स्थान होता है इस प्रकार यथायोग्य मिथ्यात्व से लेकर अपूर्वकरणगुणस्थान तक ४–४ उदयस्थान होते है।

इनके अतिरिक्त जव अनतानुवधीकपाय का विसयोजना करने वाला वेदकसम्यक्दृष्टि मिथ्यात्व के उदय से मिथ्यात्वगुणस्थान मे आता है तव उसके एक आवली काल तक अनतानुवधी का उदय नही होता कारण पूर्वसमय की वँधी हुई अनतानुवधीकपाय का एकआवली काल तक अपकर्पण द्वारा उदय मे लाने की सामर्थ्य नही होती इस अपेक्षा से मिथ्यात्वगुणस्थान मे अनतानुवधी रहित ४ उदयस्थान और होते है तथा उपशम और क्षायिकसम्यक्त्व मे सम्यक्प्रकृति का उदय नही होता। इस कारण अविरत से अप्रमत्त-गुणस्थान तक ४-४ उदयस्थान और होते है ऊपर जो ४-४ उदय-स्थान कहे गये है वे वेदकसम्यक्त्व की अपेक्षा से जानना ॥४६६-४६८॥

आगे मिथ्यात्व से लेकर सूक्ष्मसापरायगुणस्थान तक स्थानभेद दिखाते है।

पुव्विल्लेसुवि मिलिदे अड चउ चत्तारि चदुसु अट्ठेव।
उत्तारि दोण्णि एक्कं ठाणा मिच्छादिसुहुमंते ॥४६९॥

इनमें पूरब सहित मिल, थल अठ चउ चउ मान।
चउ में अठ अठ सूक्ष्म तक, चउ दो इक स्थान ॥४६९

अर्थ—पूर्व उदयस्थानो मे उत्तर उदयस्थानो को मिलाने से मिथ्यात्व से लेकर सूक्ष्मसापरायगुणस्थान तक क्रम से ८, ४, ४, ८, ८, ८, ८, ४, २, १ प्रकृतिरूप ५५ उदयस्थान है ॥४६९॥

मिथ्यात्व के अनंतानुबंधी सहित स्थान

(१०) २	(९) १	(९) १	(८) ०
२–२	२–२	२–२	२–२
१–१–१	१–१–१	१–१–१	१–१–१
४–४–४–४	४–४–४–४	४–४–४–४	४–४–४–४
१	१	१	१

मिथ्यात्व के अनंतानुबंधी रहित स्थान

(९) २	(८) १	(८) १	(७) ०
२–२	२–२	२–२	२–२
१–१–१	१–१–१	१–१–१	१–१–१
३–३–३–३	३–३–३–३	३–३–३–३	३–३–३–३
१	१	१	१

सासादन के स्थान

(९) २	(८) २	(८) १	(७) ०
२–२	२–२	२–२	१–२
१–१–१	१–१–१	१–१–१	१–१–१
४–४–४–४	४–४–४–४	४–४–४–४	४–४–४–४

मिश्रगुणस्थान के स्थान

(९) २ २—२ १—१—१ ३—३—३—३ १	(८) १ २—२ १—१—१ ३—३—३—३ १	(८) १ २—२ १—१—१ ३—३—३—३ १	(७) ० २—२ १—१—१ ३—३—३—३ १

वेदक अविरत के स्थान

(९) २ २—२ १—१—१ ३—३—३—३ १	(८) १ २—२ १—१—१ ३—३—३—३ १	(८) १ २—२ १—१—१ ३—३—३—३ १	(७) ० २—२ १—१—१ ३—३—३—३ १

उपशम और क्षायिक अविरत के स्थान

(८) २ २—२ १—१—१ ३—३—३—३	(७) १ २—२ १—१—१ ३—३—३—३	(७) १ २—२ १—१—१ ३—३—३—३	(६) ० २—२ १—१—१ ३—३—३—३

वेदक देशविरत के स्थान

(८) २ २—२ १—१—१ २—२—२—२ १	(७) १ २—२ १—१—१ २—२—२—२ १	(७) १ २—२ १—१—१ २—२—२—२ १	(६) ० २—२ १—१—१ २—२—२—२ १

उपशम और क्षायिक देशविरत के स्थान

(७) २ २—२ १—१—१ २—२—२—२	(६) १ २—२ १—१—१ २—२—२—२	(६) १ २—२ १—१—१ २—२—२—२	(५) ० २—२ १—१—१ २—२—२—२

वेदक प्रमत्त और अप्रमत्त के स्थात

(७) २	(६) १	(६) १	(५) ०
२-२	२-२	२-२	२-२
१-१-१	१-१-१	१-१-१	१-१-१
१-१-१-१	१-१-१-१	१-१-१-१	१-१-१-१
१	१	१	२

उपशम अथवा क्षायिक प्रमत्त और अप्रमत्त के स्थान

(६) २	(५) १	(५) १	(४) ०
२-२	२-२	२-२	२-२
१-१-१	१-१-१	१-१-१	१-१-१
१-१-१-१	१-१-१-१	१-१-१-१	१-१-१-१

अपूर्वकरण के स्थान

(६) २	(५) १	(५) १	(४) ०
२-२	२-२	२-२	२-२
१-१-१	१-१-१	१-१-१	१-१-१
१-१-१-१	१-१-१-१	१-१-१-१	१-१-१-१

अनवृत्तिकरण के स्थान सू०

(२) ५	(२)	(१)	(१)	(१)	(१)	(१)
१-१-१	१-१-१	१-१-१-१	१-१-१	१-१	१	१
१-१-१-१	१-१-१-१					

आगे उपरोक्त स्थानों मे प्रकृतिभेद से अपुनुरुक्तपना दिखाते है।

दसणवणवादि चउतियतिट्ठाण णवट्ठसगसगदि चऊ।
ठाणा छादि तियं य य चदुवीसगदा अपुव्वोत्ति ॥४७०॥

दश नव नव के चउ ति त्रय, नव अठ सत सत आदि।
चउथल अरु छै आदि त्रय, चौविस अठ तक वादि॥४७०

अर्थ—उपरोक्त मिथ्यात्वगुणस्थान के ८ स्थानो मे १०, ९, ८, ७ प्रकृतियो के ४ उदयस्थान हैं सासादन और मिश्रगुणस्थान के ४-४ स्थानो मे ९, ८, ७ प्रकृतियो के ३-३ उदयस्थान है अविरत-गुणस्थान के ८ स्थानो मे ९, ८, ७, ६ प्रकृतियों के ४ उदयस्थान है देशविरतगुणस्थान के ८ स्थानो मे ८, ७, ६, ५ प्रकृतियो के ४ उदयस्थान है प्रमत्त और अप्रमत्तगुणस्थान के ८–८ स्थानो मे ७, ६, ५, ४ प्रकृतियो के ४-४ उदयस्थान है अपूर्वकरणगुणस्थान के ४ स्थानो मे ६, ५, ४ प्रकृतियो के ३ उदयस्थान है ये सब २४-२४ भग सहित हैं इन स्थानो मे किसी २ स्थान की एक बराबर प्रकृति सख्या होने पर भी प्रकृतियो के वदलने से पुनरुक्तदोप नही माना जाता ॥४७०॥

आगे दशआदि प्रकृतियो के स्थानो की सख्या दिखाते है ।

एक्क य छक्केयारं एयारेयारसेव णव तिण्णि ।
एदे चउवीसगदा चदुवीसेयार दुगठाणे ॥४७१॥

इक छै ग्यारह ग्यारहा, ग्यारह नव त्रय थान ।
चौविस चौविस दोय के, चौविस ग्यारह जान ॥४७१॥

अर्थ—उपरोक्त उदयस्थानो मे १० प्रकृति का १ स्थान है ९ प्रकृति के ६ स्थान है ८, ७, ६ प्रकृति के ११-११ स्थान हैं ५ प्रकृति के ९ स्थान है और ४ प्रकृति के ३ स्थान हैं इसतरह ५२ स्थान हैं इनमे तीन वेद । चारकपाय और २ युगलो के वदलने से २४-२४ भग होते है और शेप दो स्थानो के २४-११ भग है ॥४७१॥

आगे उपरोक्त दो स्थानो के २४-११ भगो को दिखाते हैं ।

उदयट्ठाणं दोण्हं पणबंधे होदि दोण्हमेकस्स ।
चदुविहबंधट्ठाणे सेसेसेयं हवे ठाणं ॥४७२॥

उदय दु थल पन बंध में, होहि दोय इक मान ।
चउ विधि बंधस्थान अरु, शेषहिं इक इक थान ॥४७२

अर्थ—अनिवृत्तिकरणगुणस्थान मे उपरोक्त दो उदयस्थान होते है। दो प्रकृतिरूप और एक प्रकृतिरूप जिसमे दो प्रकृतिरूप उदयस्थान के भी दो भेद होते है ५ प्रकृति के बध के साथ तीन वेदो में से कोई एक वेद और चार कपायो में से कोई एक कषाय के उदयरूप प्रथम स्थान और ४ प्रकृति के बध के साथ तीन वेदो मे से कोई एक वेद और चार कषायो मे से कोई एक कषाय के उदयरूप द्वितीय स्थान होता है इन दोनो स्थानो मे वेद और कषाय के वदलने से १२–१२ भग होते हैं एक प्रकृतिरूप उदयस्थान के यहाँ ४ भेद है जहाँ ४ प्रकृतियो का बध होता है उसके अतसमय वेदो के उदय का अभाव होने पर चार कषायो मे से कोई एक कषाय का उदयरूप प्रथम स्थान, तीन प्रकृति का बध होता है वहाँ तीन कपायो मे से कोई एक का उदयरूप द्वितीय स्थान, दो प्रकृति का बध होता है वहा दो कषायो मे से कोई एक का उदयरूप, तृतीयस्थान और एक प्रकृति का बध है वहाँ बादरलोभ का उदयरूप चतुर्थस्थान इनमे क्रमसे कपाय के वदलने से ४, ३, २, १ भग है और सूक्ष्मसापराय-गुणस्थान मे सूक्ष्मलोभ के उदय से १ भग है इसतरह एकप्रकृतिरूप स्थान के ११ भग होते है इसतरह आनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसापराय गुणस्थान के ३५ भग होते हैं ॥४७२॥

आगे उपरोक्त आशय को स्पष्ट दिखाते है ।

अणियट्टिकरणपढमा संढित्थीणं य सरिस उदयद्धा ।
तत्तो मुहुत्तअंते कमसो पुरिसादिउदयद्धा ॥४७३॥
पुरिसोदएण चडिदे बंधुदयाणं य जुगवदुच्छित्ती ।
सेसोदयेण चडिदे उदयदुचरिमम्हि पुरिसबंधछिदी ॥४७४॥

पणबंधगम्मि बारस भंगा दो येव उदयपयडीओ ।
दोउदये चदुबंधे बारेव हवंति भंगा हु ।।४७५।।
कोहस्स य माणस्स य मायालोहाणियट्टि भागम्हि ।
चदुतिदुगेक्कंभंगा सुहुमे एक्को हवे भंगो ।।४७६।।

नववें गुण में प्रथम से, षंड नारि सम काल ।
क्रम से भिन्न मुहुर्त्त धिक, पुरुषादिक का काल ।।४७३।।
पुरुष उदय चढता हरे, बंध उदय एक साथ ।
शेष उदय चढ उदय दो, क्षण हिं बंध नर हाथ ।।४७४
पाँच बंध के बारहा, दोय उदय से भंग ।
चार बंध के बारहा, दोय उदय से भंग ।।४७५।।
क्रोध मान छल लोभ के, उदय अनिवृत्ति अंग ।
चउ त्रय दो इक भंग है, सूक्षम में इक भंग ।।४७६।।

अर्थ—अनिवृत्तिकरण के प्रथमभाग के प्रथमसमय से लेकर जहाँ तक नपुसक और स्त्री वेद का उदय है वहा तक काल समान है इससे पुरुषवेद और सज्वलनक्रोधादि चार कषायो का उदय-काल यथासभव क्रमसे अतमुहूर्त्त अधिक २ है। पुरुषवेद के उदय सहित श्रेणी चढने वाले के पुरुषवेद की बधविछुत्ति और उदयविछुत्ति एक काल मे होती है और नपुसकवेद और स्त्रीवेद के उदय सहित श्रेणी चढने वाले के पुरुषवेद की बधविछुत्ति इन (नपुसक और स्त्रीवेद) के उदयकाल के अत के दो समयो मे से प्रथम समय मे होती है। अनिवृत्तिकरणगुणस्थान मे जहाँ ५ प्रकृतियो का बध है अथवा चार प्रकृतियो का बध है वहा वेद और कषायो का उदय

है। इसकारण वेद ३ और कषाय ४ को परस्पर गुणने से १२-१२ भग होते है। अनिवृत्तिकरणगुणस्थान मे वेदों के उदय का अभाव के पश्चात् क्रोध, मान, माया, और लोभ के उदयरूप चारों भागो मे ४, ३, २, १ प्रकृति का बध होता है उनमें क्रमसे कषाय के बदलने से ४, ३, २, १ भग है और सूक्ष्मसापरायगुणस्थान में सूक्ष्मलोभ के उदयरूप स्थान में १ भग है इसतरह सब मिलकर २४, ११ भंग होते है ॥४७३–४७६॥

आगे मोह के उदयस्थान और प्रकृतियो के भग दिखाते है।

बारससयतेसीदीठाणवियप्पेहिं मोहिदा जीवा।
पणसीदिसदसगेहिं पयडिवियप्पेहिं ओघम्मि ॥४७७॥

सब बारह सौ तिरासी, थान भेद इम कीव।
पञ्चासी सौ सात के, प्रकृति भेद रत जीव ॥४७७॥

अर्थ—दोहा न० ४७१ मे कहे हुये ५२ स्थानों को २४ भगों से गुणा करने पर १२४८ भग होते है और शेष दो स्थानो के २४-११ भग है इसतरह सब १२८३ स्थान भग होते है इनसे सब जीव मोहित हो रहे है।

दशप्रकृतिरूप १ स्थान की १०, नवप्रकृतिरूप छै स्थानो की ५४ आठ, सात और छै प्रकृतिरूप ११–११ स्थानो की २३१ पाँच प्रकृतिरूप ९ स्थानो की ४५ चार प्रकृतिरूप तीन स्थानों की १२ और दो प्रकृतिरूप १ स्थान की २ प्रकृतिया है इसतरह सब ३५४ प्रकृतिया है इनको २४ भगों से गुणा करने पर ८४९६ प्रकृतिभेद होते है और एकप्रकृतिरूप एकस्थान के ११ भग मिलाने से ८५०७ प्रकृतिभेद होते है इनसे सब जीव मोहित हो रहे हैं ॥४७७॥

मोह उदय पुनुरुक्तापुनुरुक्त स्थानों का भंगदर्पण

प्र.	१०	९	८	७	६	५	४	२	१	जो०
स्था	१	६	११	११	११	९	३	१	५	५८
भ	२४+	१४४+	२६४+	२६४+	२६४+	२१६+	७२+	२४+	११	=१२८३

मोह उदय पुनुरुक्तापुनुरुक्त प्रकृतियों का भंग दर्पण

प्र.	१०	९	८	७	६	५	४	२	१	जो
स्था	१	६	११	११	११	९	३	१	५	५८
जो	१०	५४	८८	७७	६६	४५	१२	२	०	०
भ	२४०+	१२९६+	२११२+	१८४८+	१५८४+	१०८०+	२८८+	४८+	११	=८५०७

आगे उपरोक्त भेदो मे पुनुरुक्तभेद छोडकर दिखाते है ।

एक्कं य छक्केयारं दससगचदुरेक्कयं अपुणरुत्ता ।
एदे चदुवीसगदा बार दुगे पंच एक्कम्मि ॥४७८॥
णवसयसत्तत्तरिहिं ठाणवियप्पेहिं मोहिदा जीवा ।
इगिदालूणत्तरिसयपयडिवियप्पेहिं णायव्वा ॥४७९॥

इक छै ग्यारह दश सपत, चउ इक पुनरा लांच ।
चौविस चौविस दोय के, बारह इक के पांच ॥४७८॥
सब नौ सौ सतहत्तरा, थान भेद इमि कीव ।
उनतर शत इकतालिसा, प्रकृति भेद रत जीव ।४७९॥

अर्थ—दोहा न० ४७१ मे कहे गये ५२ स्थानो मे से दशप्रकृतिरूप १, नवप्रकृतिरूप ६, आठप्रकृतिरूप ११, सातप्रकृतिरूप १०,

छै प्रकृतिरूप ७, पाचप्रकृतिरूप ४ और चारिप्रकृतिरूप १ स्थान इसतरह ४० स्थानपुनुरुक्त दोप से रहित है शेप पुनुरुक्तदोष सहित है कारण वेदकप्रमत्त और वेदक अप्रमत्तगुणस्थान के ४-४ स्थानसमान है। उपशम और क्षायिकप्रमत्त और अप्रमत्त के ४-४ तथा अपूर्व-करणगुणस्थान के ४ स्थानसमान है इन बीस मे से १२ स्थान छोडने से ४० स्थान रहते है इनमे २४ भगो से गुणा करने पर ९६० भेद होते है। इनसे दो प्रकृतिरूपस्थान के १० एकप्रकृतिरूप के ५ इसतरह १७ भग पुनुरुक्त दोष से रहित है ९६० और १७ जोडने से ९७७ स्थानभेद होते है तथा उपरोक्त ४० स्थानो की उपरोक्त रीति से प्रकृतिया २८८ होती है इनको २४ भगो से गुणा करने पर ६९१२ भेद होते है उपरोक्त १७ मिलाने से ६९२९ प्रकृतिभेद होते है इनसे सब जीव मोहित होते है ॥४७८-४७९॥

मोह उदय अपुनरुक्त स्थानों का भंग दर्पण

प्र.	१०	९	८	७	६	५	४	२	१	जो.
स्था.	१	६	११	१०	७	४	१	१	१	४२
भ.	२४	१४४	२६४	२४०	१६८	९६	२४	१२	५	९७७

मोह उदय अपुनरुक्तप्रकृतियों का भंग दर्पण

प्र.	१०	९	८	७	६	५	४	२	१	जो.
स्था.	१	६	११	१०	७	४	१	१	१	४२
जो	१०	५४	८८	७०	४२	२०	४	०	०	०
भ.	२४०	१२९६	२११२	१६८०	१००८	४८०	९६	१२	५	६९२९

आगे मोहकर्म के स्थान और प्रकृतियो के निकालने की विधि दिखाते है।

उदयट्ठाणं पयडिं सगसगउवजोगजोगआदीहिं ।
गुणयित्ता मेलविदे पदसंखा पयडिसंखा य ॥४८०॥

उदय थान अरु प्रकृति को, निज निज उपयोगादि ।
जोड़ि गुणा कर सर्व को, राशि प्रकृति थल लादि ॥४८०

अर्थ—दोहा न० ४७१ मे कहे हुये उदयस्थान और उनकी प्रकृतियो की सख्या को अपने २ गुणस्थान मे सभवते उपयोग, योग, सयम, देशसयम, लेश्या और सम्यक्त्व से गुणा करने पर जो सख्या आवे उतनी मोह के उदयस्थान और प्रकृतियो की सख्या होती है ॥४८०॥

आगे उपयोग अपेक्षा मोह के स्थान और प्रकृतिभेद दिखाते है।

मिच्छदुगे मिस्सतिये पमत्तसत्ते जिणे य सिद्धे य ।
पण छस्सत्त दुगं य य उवजोगा होंति दो येव ॥४८१॥
णवणउदिसगसयाहियसत्तसहस्सप्पमाणमुदयस्स ।
ठाणवियप्पे जाणसु उवजोगे मोहणीयस्स ॥४८२॥
एकावण्णसहस्सं तेसीदिसमण्णियं वियाणाहि ।
पयडीणं परिमाणं उवजोगे मोहणीयस्स ॥४८३॥

मिथ्या दो अरु मिश्र त्रय, प्रमत्त सात जिन सिद्ध ।
क्रम से पन छै सात दो, हैं उपयोग प्रसिद्ध ॥४८१॥
सात सहस अरु सात सौ, नव्वे नव परिमाण ।
मोह उदय के थान ये, हैं उपयोग प्रधान ॥४८२॥

इक्यावन हज्जार अरु, तेरासी परिमाण ।
मोह उदय की प्रकृतियाँ, हैं उपयोग प्रधान ।।४८३।।

अर्थ—उपयोग की अपेक्षा मोह के मिथ्यात्वगुणस्थान मे ८ स्थान ६८ प्रकृति २४ भग और ५ उपयोग है। सासादनगुणस्थान मे ४ स्थान, ३२ प्रकृति २४ भग और ५ उपयोग है। मिश्रगुणस्थान मे ४ स्थान ३२ प्रकृति २४ भग और ६ उपयोग है अविरतगुणस्थान मे ८ स्थान ६० प्रकृति २४ भग और ६ उपयोग है। देशविरत गुणस्थान मे ८ स्थान ५२ प्रकृति २४ भग और ६ उपयोग है। प्रमत्तगुणस्थान मे ८ स्थान ४४ प्रकृति २४ भग और ७ उपयोग है। अप्रमत्तगुणस्थान में ८ स्थान ४४ प्रकृति २४ भग और ७ उपयोग हैं। अपूर्वकरणगुणस्थान में ४ स्थान २० प्रकृति २४ भग और ७ उपयोग होते है। अनिवृत्तिकरण के सवेद भाग मे १ स्थान २ प्रकृति १२ भग और ७ उपयोग है अवेद भाग मे १ स्थान १ प्रकृति ४ भग ७ उपयोग है और सूक्ष्मसापराय गुणस्थान मे १ स्थान १ प्रकृति १ भग और ७ उपयोग है उपरोक्त गुणस्थानो के स्थानों को उनके भगो से गुणाकर उनके उपयोगो से गुणा करने पर ७७९६ स्थान भेद होते हैं और उनकी प्रकृतियो को उनके भगो से गुणाकर उनके उपयोगो से गुणा करने पर ५१०८३ प्रकृति भेद होते है ।।४८१–४८३।।

उपयोग की अपेक्षा स्थान और प्रकृति दर्पण

गु०	स्था भ उ कु	प्र भ उ कु
मि	८×२४×५= ९६० ।	६८×२४×५=८१६० ।
सा	४×२४×५= ४८० ।	३२×२४×५=३८४० ।
मि	४×२४×६= ५७५ ।	३२×२४×६=४६०८ ।
अ	८×२४×६=११५२ ।	६०×२४×६=८६४० ।
[illegible]	[illegible]×२४×६=११५२ ।	५२×२४×६=७४८८ ।

प्र	८×२४×७=१३४४ ।	४४×२४×७=७३९२ ।
अ	८×२४×७=१३४४ ।	४४×२४×७=७३९२ ।
अ	४×२४×७= ६७२ ।	२०×२४×७=३३६० ।
अ	१×१२×७= ८४ ।	२×१२×७= २८ ।
अ	१× ४×७= २८ ।	१× ४×७= २८ ।
सू	१× १×७= ७ ।	१× १×७= ७ ।
	७७९९	५१०८३

आगे योग अपेक्षा उदयस्थान और प्रकृति भेद दिखाते हैं।

तिसु तेरं दस मिस्से णव सत्तसु छट्ठयम्मि एक्कारा ।
जोगिम्मि सत्त जोगा अजोगिठाणं हवे सुण्णं ॥४८४॥
मिच्छे सासण अयदे पमत्तविरदे अपुण्णजोगगदं ।
पुण्णगदं य य सेसे पुण्णगदे मेलिदं होदि ॥४८५॥
सासणअयदपमत्ते वेगुव्वियमिस्स तं य कम्मयियं ।
ओरालमिस्स हारे अडसोलडवग्ग अट्ठवीससयं ॥४८६॥
णत्थि णउंसयवेदो इत्थीवेदो णउंसइत्थिदुगे ।
पुव्वुत्तपुण्णजोगगचदुसुट्ठाणेसु जाणेज्जो ॥४८७॥
तेवण्णणवसयाहियबारसहस्सपमाणमुदयस्स ।
ठाणवियप्पे जाणसु जोगं पडि मोहणीयस्स ॥४८८॥
विदिये बिगिपणगयदे खट्ठणवएक्कं खअट्ठचउरो य ।
छट्ठे चउसुण्णसगं पयडिवियप्पा अपुण्णम्हि ॥४८९॥
पणदालछस्सयाहियअट्ठासीदीसहस्समुदयस्स ।
पयडीणं परिसंखा जोगं पडि मोहणीयस्स ॥४९०॥

शेषों में तेरह मिश्र दश, छै में ग्यारह योग।
त्रय में तेरह मिश्र दश, योग अभाव अयोग ॥४८४॥
शेषों में नव सात जिन, योग अभाव अयोग।
मिथ्या सासा अविरता, प्रमत विषें अनपूर्ण।
पूर्ण योग भी इन्हों में, शेषों में परिपूर्ण ॥४८५॥
चौंसठि थल सासा विषें, विक्रिय मिस के पर्स।
दो सौ छप्पन दृग विषें, विक्रिय मिस अरु कर्म ॥४८६₁
चौंसठि थल अविरत विषें, औदा मिस के दीस।
प्रमत विषें आहार दुक, इकसौं अट्ठाईस ॥४८६₂
षंड वेद नहिं नारि नहिं, दोनों दोनों नांहि।
पूर्व कहे मिस योग के, चारों थल के मांहि ॥४८७
वारस सहसरु नव शतक, त्रेपन का परिमाण।
मोह उदय के थान ये, योग दृष्टि से जान ॥४८८॥
पन सौ बारह सास की, दृग उन्निस सौ वीस।
चउ सौ अस्सी प्रमत्त की, सात सतक चउ दीस ॥४८९
सहस अठासी छै शतक, पैंतालिस परिमाण।
मोहकर्म की प्रकृतियां, योग दृष्टि से जान ॥४९०॥

अर्थ—योग की अपेक्षा मोह के मिथ्यात्वगुणस्थान में अनंतानुबंधी सहित के स्थान ४ प्रकृति ३६ भंग २४ और योग १३ है अनंतानु-

चढी रहित के स्थान ४ प्रकृति ३२ भंग २४ और मिश्रयोग ३ बिना योग १० हैं सासादन गुणस्थान मे स्थान ४ प्रकृति ३२ भंग २४ और योग १२ तथा विक्रियामिश्रयोग के स्थान ४ प्रकृति ३२ नपुंसकवेद बिना भंग १६ और योग १ होता है मिश्रगुणस्थान मे स्थान ४ प्रकृति ३२ भंग २४ और योग १० होते हैं अविरतगुणस्थान में स्थान ८ प्रकृति ६० भंग २४ और योग १० हैं विक्रिय मिश्रकाययोग और कार्माणकाययोग के स्थान ८ प्रकृति ६० स्त्रीवेद बिना भंग १६ और योग २ तथा औदारिकमिश्रकाययोग के स्थान ८ प्रकृति ६०

सा.	४×१६× १= ६४ ।	३२×१६× १= ५१२ ।
मि	४×२४×१०= ९६० ।	३२×२४×१०= ७६८० ।
अ.	८×२४×१०= १९२० ।	६०×२४×१०=१४४०० ।
अ.	८×१६× २= २५६ ।	६०×१६× २= १९२० ।
अ.	८× ८× १= ६४ ।	६०× ८× १= ४८० ।
दे.	८×२४× ९= १७२८ ।	५२×२४× ९=११२३२ ।
प्र	८×२४× ९= १७२८ ।	४४×२४× ९= ९५०४ ।
प्र.	८× ८× २= १२८ ।	४४× ८× २= ७०४ ।
अ.	८×२४× ९= १७२८ ।	४४× ८× ९= ९५०४ ।
अ.	४ ×२४× ९= ८६४ ।	२०×२४× ९= ४३२० ।
सू.	१×१२× ९= १०८ ।	२×१२× ९= २१६ ।
सू.	१× ४× ९= ३६ ।	१× ४× ९= ३६ ।
सू	१× १× ९= ९ ।	१× १× ९= ९ ।
	१२९५३	८८६४५

आगे संयम अपेक्षा मोह के स्थान और प्रकृतिभेद दिखाते है ।

तेरससयाणि सत्तरिसत्तेव य मेलिदे हवंतित्ति ।
ठाणवियप्पे जाणसु संजमलंवेण मोहस्स ॥४९१॥
तेवण्णतिसदसहियं सत्तसहस्सप्पमाणमुदयस्स ।
पयडिवियप्पे जाणसु संजमलवेण मोहस्स ॥४९२॥

एक सहस अरु तीन सौ, सतहत्तर परिमाण ।
मोह उदय के थान सब, संयम आश्रय जान ॥४९१॥
सात सहस अरु तीन सौ, त्रेपन के परिमाण ।
मोह उदय की प्रकृतियां, संयम आश्रय जान ॥४९२॥

पंचसहस्सा वेसयसत्ताणउदी हवंति उदयस्स ।
ठाणवियप्पे जाणसु लेस्सं पडि मोहणीयस्स ॥४९४॥
अट्ठत्तीससहस्सा वेण्णिसया होंति सत्ततीसा य ।
पयडीणं परिमाणं लेस्सं पडि मोहणीयस्स ॥४९५॥

भ्रम चउ में छै देश त्रय, शुभलेश्या हैं तीन ।
लेश्या शुक्ल सयोग तक, अंत न लेश्या चीन ॥४९३॥
पाँच सहस अरु दोय सौ, सत्तानव परिमाण ।
मोह उदय के थान ये, लेश्या आश्रय जान ॥४९४॥
अडतिस सहस अरु दोय सौ, सैंतिस के परिमाण ।
मोह उदय की प्रकृतियाँ, लेश्या आश्रय जान ॥४९५॥

अर्थ—लेश्या की अपेक्षा मोह के मिथ्यात्व से अविरतगुणस्थान तक क्रमसे स्थान ८, ४, ४, ८ होते है प्रकृति ६८, ३२, ३२, ६० होती हैं भग २४-२४ होते है और लेश्या ६-६ होती है देशविरत से अप्रमत्तगुणस्थान तक स्थान ८—८ होते है प्रकृति ५४, ४४, ४४ होती है भग २४—२४ होते है और लेश्या ३—३ होती हैं अपूर्वकरण-गुणस्थान मे स्थान ४ प्रकृति २० भग २४ और लेश्या १ होती है अनिवृत्तिकरणगुणस्थान के सवेद और अवेद भाग में स्थान १—१ होता है प्रकृति २, १ होती है भग १२, ४ होते है और लेश्या १ होती है और सूक्ष्मसापरायगुणस्थान में स्थान १ प्रकृति १ भग १ लेश्या १ होती है उपरोक्त गुणस्थान के स्थानो को उनके भगो से गुणाकर उनकी लेश्याओ से गुणा करने पर ५२५७ स्थान भेद होते हैं और उनकी प्रकृतियो को उनके भगो से गुणाकर उनकी लेश्याओं से गुणा करने पर ३८,२३७ प्रकृति भेद होते है ॥४९३-४९५॥

लेश्या की अपेक्षा स्थान और प्रकृति दर्पण

गु०	स्था० भ० ले० कु०	प्र० भ० ले० कु०
मि०	८×२४×६=११५२ ।	६८=२४×६=६७९२ ।
सा०	४×२४×६= ५७६ ।	३२×२४×६=४६०८ ।
मि०	४×२४×६= ५७६ ।	३२×२४×६=४६०८ ।
अ०	८×२४×६=११५२ ।	६०×२४×६=८६४० ।
दे०	८×२४×३= ५७६ ।	५२×२४×३=३७४४ ।
प्र०	८×२४×३= ५७६ ।	४४×२४×३=३१६८ ।
अ०	८×२४×३= ५७६ ।	४४×२४×३=३१६८ ।
अ०	४×२४×१= ९६ ।	२०×२४×१= ४८० ।
थू०	१×१२×१= १२ ।	२×१२×१= २४ ।
थू०	१× ४×१= ४ ।	१× ४×१= ४ ।
सू०	१× १×१= १ ।	१× १×१= १ ।
	५२९७	३८२३७ ।

आगे सम्यक्त्व अपेक्षा स्थान और प्रकृति भेद दिखाते है ।

अट्ठुत्तरीहिं सहिया तेरसयसया हवंति उदयस्स ।
ठाणवियप्पे जाणसु सम्मत्तगुणेण मोहस्स ॥४९६॥
अट्ठेव सहस्साइं छव्वीसा तह य होंति णादव्वा ।
पयडीणं परिमाणं सम्मत्तगुणेण मोहस्स ॥४९७॥

एक सहस्र अरु तीन सौ, अठहत्तर परिमाण ।
मोह उदय के थान ये, समकित आश्रय जान ॥४९६
आठ सहस के ऊपरें, छब्विस का परिमाण ।
मोह उदय की प्रकृतियाँ, समकित आश्रय जान ॥४९७

अर्थ–मोह कर्म के वेदकसम्यक्त्व की अपेक्षा अविरत से लेकर अप्रमत्तगुणस्थान तक स्थान ४–४ प्रकृति ३२, २८, २४, २४ और भग २४–२४ होते है उपशमसम्यक्त्व की अपेक्षा अविरत से लेकर अपूर्वकरणगुणस्थान तक स्थान ४–४ प्रकृति २८, २४, २०, २० २० और भग २४-२४ होते हैं अनिवृत्तिकरणगुणस्थान के सवेद और अवेद भाग मे स्थान १, १ प्रकृति २, १ भग १२, ४ और सूक्ष्म-सापरायगुणस्थान में स्थान १ प्रकृति १ और भग १ होता है इसी प्रकार क्षायिकसम्यक्त्व में स्थान, प्रकृति और भग होते हैं अपने २ सम्यक्त्व के स्थानो को भगो से गुणा करने पर १३७८ स्थान भेद होते है और प्रकृतियो को भगो से गुणा करने पर ८०२६ प्रकृति भेद होते है ॥४९६-४९७॥

वेदक के स्थान और प्रकृति दर्पण

गु.	स्था	भ	कु	प्र	भ	कु
अ०	४ ×	२४ =	९६ ।	३२ ×	२४ =	७६८ ।
दे०	४ ×	२४ =	९६ ।	२८ ×	२४ =	६७२ ।
प्र०	४ ×	२४ =	९६ ।	२४ ×	२४ =	५७६ ।
अ०	४ ×	२४ =	९६ ।	२४ ×	२४ =	५७६ ।
			३८४			२५९२

उपशम के स्थान और प्रकृति दर्पण

गु	स्था	भ.	कु	प्र	भ	कु
अ०	४ ×	२४ =	९६ ।	२८ ×	२४ =	६७२ ।
दे०	४ ×	२४ =	९६ ।	२४ ×	२४ =	५७६ ।
प्र०	४ ×	२४ =	९६ ।	२० ×	२४ =	४८० ।
अ०	४ ×	२४ =	९६ ।	२० ×	२४ =	४८० ।
अ०	४ ×	२४ =	९६ ।	२० ×	२४ =	४८० ।
सू०	१ ×	१२ =	१२ ।	२ ×	१२ =	२४ ।

थू० १× ४= ४। १× ४= ४।
सू० १× १= १। १× १= ४।

४६७ २७१७

क्षायिक के स्थान और प्रकृति दर्पण

गु० स्थान	भ० कु०	प्र० भ० कु०
उपशमसमान	४६७	२७१७
	१३७८	८०२६

आगे मोहकर्म के सत्वस्थान दिखाते है ।

अट्ठ य सत्त य छक्क य चदुतिदुगेगाधिगाणि वीसाणि ।
तेरस बारेयारं पणादि एगूणयं सत्तं ॥४६८॥

आठ सात छै चार त्रय, दो इक से धिक बीस ।
तेरह बारह ग्यारह पन, इक इक कम सतु दोस ॥४६८

अर्थ—२८, २७, २६, २४, २३, २२, २१, १३, १२, ११, ५, ४, ३, २, १ प्रकृति रूप मोह कर्म के १५ सत्वस्थान है ॥४६५

भावार्थ—जिस जीव के किसी प्रकृति की उद्वेलनादि नही हुई है उसके २८ प्रकृतियो का सत्व होता है जिस जीव के सम्यक्त्वप्रकृति की उद्वेलना हो गई है उसके २७ प्रकृतियो का सत्व होता है जिस जीव के मिश्रप्रकृति की भी उद्वेलना होगई है उसके २६ प्रकृतियो का सत्व होता है जिस जीव के २८ मे से अनतानुबधी ४ की विसयोजना होगई है उसके २४ प्रकृतियो का सत्व है जिस जीव के मिथ्यात्व का क्षय होगया है उसके २३ प्रकृतियो का सत्व है जिस जीव के मिश्रप्रकृति का क्षय हो गया है उसके २२ प्रकृतियो का सत्व है जिस जीव के सम्यकप्रकृति का क्षय हो गया है उसके २१ प्रकृतियो का सत्व है जिसके अप्रत्या-ख्यान ४ और प्रत्याख्यान ४ का क्षय हो गया है उसके १३ प्रकृतियो का सत्व है जिस नपुसक और स्त्रीवेद मे से किसी एक का

क्षय हो गया है उसके १२ प्रकृतियो का सत्व है जिसके शेप (नपुंसक अथवा स्त्री वेद) का क्षय हो गया है उसके ११ प्रकृतियो का सत्व है जिसके हास्यादि ६ का क्षय हो गया है उसके ५ प्रकृतियो का सत्व हैं जिसके पुरुषवेद, सज्वलन क्रोध, मान, माया का क्षय हो गया है उसके क्रमसे ४, ३, २, १ प्रकृति का सत्व है ।।४९८।।

आगे उपरोक्त सत्वस्थानो को गुणस्थानों में दिखाते हैं ।

तिण्णेगे एगेगं दो मिस्से चदुसु पण णियट्टीए ।
तिण्णि य थूलेयारं सुहमे चत्तारि तिण्णि उवसंते ।।४९९।।
पढमतियं य य पढमं पढमं चउवीसयं य मिस्सम्हि ।
पढमं चउवीसचऊ अविरददेसे पमत्तितरे ।।५००।।
अडचउरेक्कावीसं उवसमसेढिम्हि खवगसेढिम्हि ।
एक्कावीसं सत्ता अट्ठकसायाणियट्टित्ति ।।५०१।।
तेरस बारेयारं तेरस बारं य तेरस कमसो ।
पुरिसित्थिसंढवेदोदयेण गदपणगबंधम्हि ।।५०२।।
पुरिसोदयेण चडिदे अंतिमखंडंतिमोत्ति पुरिसुदओ ।
तप्पणिधिम्मिदराणं अवगदवेदोदयं होदि ।।५०३।।
तट्ठाणे एक्कारस सत्ता तिण्होदयेण चडिदाणं ।
सत्तण्हं समग छिदी पुरिसे छण्हं य णवगमत्थित्ति ।।५०४।।
इदि चदुबंधक्खवगे तेरस बारस एगार चउसत्ता ।
तिदुइगिबंधे तिदुइगि णवगुच्छिट्ठाणमविवक्खा ।।५०५।।

इनमें त्रय इक मिश्र दो, चउ में पन-पन चीन ।
अठ में त्रय अनि ग्यारहा, सूक्ष्म चार शम चीन ।।४९९

प्रथम तीन सासा प्रथम, मिश्र प्रथम चौवीस ।
अविरतादि चउ में प्रथम, चौविससे इक्कीस ।।५००।।
अठविस चौविस इक्किसा, उपशम क्षायिक मांहि ।
अठ कषाय अनि भाग तक,इक्कीस सत्ता पांहि ।।५०१
तेरह बारस ग्यारहा, तेरह बारह तेर ।
उदय पुरुष तिय षंड से, पन बंधक के घेर ।।५०२।।
पुरुष उदय चढ़ वह उदय, अंत खंड तक पाय ।
उस समीप नहिं दूसरा, कोई वेद दिखाय ।।५०३।।
उस थल ग्यारह सत्व हैं, किसी वेद चढ़ जाय ।
सातों छूटें एक क्षण, नर छै नूतन आय ।।५०४।।
तेरह बारह ग्यार चउ, सत्व क्षपक चउ बंध ।
त्तय दो इक में त्तय दु इक, नूतन शेष न संध ।।५०५।।

अर्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे २८, २७, २६, प्रकृतिरूप तीन सत्वस्थान हैं । सासादनगुणस्थान मे २८ प्रकतिरूप एक सत्वस्थान है मिश्रगुणस्थान मे २८, २४ प्रकृतिरूप दो सत्वस्थान है । अविरत से अप्रमत्तगुणस्थान तक २८, २४, २३, २२, २१ प्रकृतिरूप पाच २ सत्वस्थान है । उपशमश्रेणी के चार गुणस्थान मे २८, २४, २१ प्रकृतिरूप तीन २ सत्वस्थान है । क्षायिकश्रेणी के अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरणगुणस्थान के आठ कषाय क्षय होनेवाले द्वितीय भाग तक २१ प्रकृतिरूप एक सत्वस्थान है । पुरुषवेद के उदयसहित

क्षपकश्रेणी चढनेवाले के पुरुषवेद १ सज्वलन ४ इसतरह ५ प्रकृतियों के वध होनेवाले भाग में १३, १२, ११ प्रकृतिरूप तीन सत्वस्थान होते है। स्त्रीवेद के उदयसहित क्षपकश्रेणी चढने वाले के उपरोक्त ५ प्रकृतियो के वध होने वाले भाग मे १३ प्रकृतिरूप और नपुसकवेद का सत्व क्षय होने से १२ प्रकृतिरूप इसतरह दो सत्वस्थान होते है और नपुसकवेद के उदयसहित क्षपकश्रेणी चढनेवाले के १३ प्रकृतिरूप एक ही सत्वस्थान होता है। कारण इसके नपुसक और स्त्रीवेद के क्षय का प्रारभ एक काल मे होता है। पुरुषवेद के उदय सहित क्षपकश्रेणी चढने वाले के नपुसकवेद, स्त्रीवेद और पुरुपवेद के क्षय भागो मे से अत के भागो के अतसमय तक पुरुषवेद का उदय और वध पाया जाता है यहाँ अन्यवेद का उदय और वध का अभाव है। उपरोक्त दोनो स्थानो मे ११ प्रकृतिरूप १ सत्वस्थान होता है नपुसक और स्त्रीवेद के उदयसहित क्षपकश्रेणी चढने वाले के पुरुपवेद १ हास्यादि ६ इसतरह ७ प्रकृतियो का क्षय एक काल मे होता है और पुरुषवेद के उदयसहित क्षपकश्रेणी चढने वाले के पुरुपवेद के नये वधसवधी समयप्रवद्ध (परमाणु) पाये जाते हैं। इस कारण पुरुपवेद विना हास्यादि ६ का सत्व क्षय होता है। इसप्रकार के कथन से अनिवृत्तिकरणगुणस्थान के ४ प्रकृतियो के वध वाले सवेद भाग मे १३, १२, ११ प्रकृतिरूप तीन सत्वस्थान होते हैं चार प्रकृतियो के वध वाले अवेद भाग में ५ प्रकृतियो का सत्व होता है और ३, २, १ प्रकृति के वध वाले भागों में क्रमसे ३. २, १ प्रकृति का सत्व होता है किन्तु इन तीन सत्वस्थानो मे भी पुरुपवेद के आवलीमात्र नवीनवध के समयप्रवद्ध शेष है जो कि क्रोधादि रूप उदय होकर क्षय होते है उनकी यहाँ अपेक्षा नही की गई यदि की जाती तो ३, २, १ के सत्वस्थान में ४, ३, २, १ प्रकृति का सत्व लिखना होता ॥४९९-५०५॥

मोह में सत्व रचना

गु०	बंध	सत्व
मि०	२२	२८, २७, २६
सा०	२१	२८
मि०	१७	२८, २४
अ०	१७	२८, २४, २३, २२, २१
दे०	१३	२८, २४, २३, २२, २१
प्र०	९	२८, २४, २३, २२, २१
अ०	९	२८, २४, २३, २२, २१
अ०	९	२८, २४, २१
अ० १	५	२८, २४, २१, १३, १२, ११
अ० २	४	२८, २४, २१, १३, १२, ११, ४
अ० ३	३	२८, २४, २१, ३
अ० ४	२	२८, २४, २१, २
अ० ५	१	२८, २४, २१, १

मोह के क्षपकश्रेणी की सत्व रचना

नपुसकवेद			स्त्रीवेद			पुरुषवेद		
ब०	स०	वि०	ब०	स०	वि०	बं०	स०	वि०
	२१			२१			२१	
५	१३		५	१३		५	१३	
५	१३		५	१२		५	१३	
४	१३		४	१२		५	१२	
४	११	७	४	११	७	५	११	६
४	४		४	४		४	५-४	
३	३		३	३		३	३	
२	२		२	२		२	२	
१	१		१	१		१	१	

आगे मोह के बधस्थानो मे सत्वस्थानो की सख्या दिखाते है।

तिण्णेव दु बावीसे इगिवीसे अट्ठवीस कम्मंसा।
सत्तरतेरेणवबंधगेसु पंचेव ठाणाणि ॥५०६॥
पंचविधचदुविधेसु य छ सत्त सेसेसु जाण चत्तारि।
उच्छिट्ठावलिणवकं अविवेक्खिय सत्तठाणाणि ॥५०७॥
दसणवपण्णरसाइं बंधोदयसत्तपयडिठाणाणि।
भणिदाणि मोहणिज्जे एत्तो णामं परं वोच्छं ॥५०८॥

त्रय वाइस के बंध में, इक्कीस में अठबीस।
सत्रह तेरह नव विषें, पाँच पाँच ही दीस ॥५०६॥
पन में छै चउ में सपत, शेषहिं चउ चउ इष्टि।
सत्व थान इन सबों में नूतन शेष न दृष्टि ॥५०७॥
दृश बंध रु नव उदय के, पन्द्रह सत्ता थान।
कहे मोह के अब सुनो, नाम कर्म स्थान ॥५०८॥

अर्थ—मोहकर्म के २२ प्रकृतिरूप बधस्थान मे २८, २७, २६ प्रकृतिरूप तीन सत्वस्थान है। २१ प्रकृतिरूप बधस्थान में २८ प्रकृतिरूप एक सत्वस्थान है। १७, १३, ९ प्रकृतिरूप बधस्थान मे २८, २४, २३, २२, २१ प्रकृतिरूप पाँच-पाँच सत्वस्थान है। ५ प्रकृतिरूप बधस्थान मे २८, २४, २१, १३, १२, ११ प्रकृतिरूप ६ सत्वस्थान है। ४ प्रकृतिरूप बधस्थान मे २८, २४, २१, १३, १२, ११, ४ प्रकृतिरूप सात सत्वस्थान है। ३ प्रकृतिरूप बधस्थान मे २८, २४, २१, ३ प्रकृतिरूप चार सत्वस्थान है। २ प्रकृतिरूप बधस्थान मे २८, २४, २१, २ प्रकृतिरूप ४ सत्वस्थान है और १

प्रकृतिरूप बधस्थान में २८, २४, २१, १ प्रकृतिरूप चार सत्वस्थान हैं इन सत्वस्थानो में पुरुषवेद और सज्वलनकषाय का नवीनबध क्षय होने से रह जाता है और वह अन्य प्रकृतिरूप होकर क्षय होता है उसकी अपेक्षा यहाँ नही की गई तथा ये सत्वस्थान दोनो श्रेणियो की अपेक्षा से लिखे हैं इसप्रकार मोहकर्म के १० बधस्थान ६ उदयस्थान और १५ सत्वस्थान का वर्णन है। अब नामकर्म का वर्णन करते हैं ॥५०६-५०८॥

मोह के बंधस्थानों में सत्व रचना

बधस्थान	सत्वस्थान
२२	२८-२७-२६।
२१	२८।
१७-१३-९	२८-२४-२३-२२-२१।
५	२८-२४-२१-१३-१२-११।
४	२८-२४-२१-१३-१२-११-४।
३	२८-२४-२१-३।
२	२८-२४-२१-२।
१	२८-२४-२१-१।

आगे नामकर्म के स्थानो के आधारभूत जीवभेदो को दिखाते है।

णिरया पुण्णा पण्हं बादरसुहुमा तहेव पत्तेया।
वियलाऽसण्णी सण्णी मणुवा पुण्णा अपुण्णा य ॥५०९॥
सामण्ण तित्थकेवलि उहयसमुग्घादगा य आहारा।
देवावि य पज्जत्ता इदि जीवपदा हु इगिदाला ॥५१०॥

नारक पूरण थूल तरु, थूल सूक्ष्म पन पांच।
विकल असैनी समन नर, पूर्णापूर्ण सांच ॥५०९॥

तीर्थंकर सादा उभय, समदघात आहार।
देव पूर्ण मिलि जीव पद, इकताल्लीस सँभार ॥५१०॥

अर्थ—बादरस्थावर ५ सूक्ष्मस्थावर ५ प्रत्येकवनस्पति १ विकलत्रय ३ असैनीपंचेन्द्रिय १ सैनीतिर्यंच १ मनुष्य १ ये १७ पर्याप्त और अपर्याप्त के भेद से ३४ होते हैं समुदघात करने वाले तीर्थंकर १ समुदघात न करने वाले तीर्थंकर १ समुदघात करने वाले सामान्यकेवली १ समुदघात न करनेवाले सामान्यकेवली १ आहार शरीरधारी मुनि १ नारकी १ देव १ ये सात मिलकर सब ४१ जीवपद (जीवभेद) होते हैं ॥५०९-५१०॥

आगे नामकर्म के बधस्थान दिखाते हैं।

तेवीसं पणवीसं छव्वीसं अट्ठबीसमुगतीसं।
तीसेक्कतीसमेवं एक्को बंधो दुसेढिम्हि ॥५११॥

तेइस पच्चिस छब्बिसा, अठविस उनतिस तीस।
इकतिस अरु इक बंध थल, दोनों श्रेणी दीस ॥५११॥

अर्थ—नामकर्म के २३, २५, २६, २८, २९, ३०, ३१, १ प्रकृतिरूप ८ बधस्थान है इनमे आदि के ७ बधस्थान मिथ्यात्व से लेकर अपूर्वकरणगुणस्थान के छट्ठे भाग तक यथासभव बँधते है और १ प्रकृतिरूप बधस्थान अपूर्वकरण के सातवे भाग से लेकर सूक्ष्मसापरायगुणस्थान तक बँधता है ॥५११॥

आगे उपरोक्तस्थानो को मुख्यप्रकृति के साथ बध दिखाते है।

ठाणमपुण्णेण जुदं पुण्णेण य उवरि पुण्णगेणेव।
तावदुगाणण्णदरेणण्णदरेणमरणिरयाणं ॥५१२॥

णिरयेण विणा तिण्हं एक्कदरेणेवमेव सुरगइणे ।
बंधंति विणा गइणा जीवा तज्जोगपरिणामा ॥५१३॥

थल अपूर्ण युत पूर्ण पर, आगे सब पर्याप्त ।
आतप दुक में कोइ इक, सुर नारक इक ख्यात ॥५१२॥
नारक विन को एक गति, इस विधि सुर गति युक्त ।
बँधे विना गति इन्हों में, चहे भाव उपयुक्त ॥५१३॥

अर्थ—उपरोक्त ८ बधस्थानो मे से २३ प्रकृतिरूपबधस्थान अपर्याप्रप्रकृति के साथ बँधता है २५ प्रकृतिरूपबधस्थान पर्याप्त अथवा अपर्याप्तप्रकृति के साथ बँधता है २६ प्रकृतिरूप बधस्थान पर्याप्त और आताप अथवा उद्योतप्रकृति के साथ बँधता है २८ प्रकृतिरूपबधस्थान पर्याप्त और देवगति अथवा नरकगति के साथ बँधता है, २९ और ३० प्रकृतिरूप बधस्थान पर्याप्त और देव, मनुष्य अथवा तिर्यचगति के साथ बँधता है ३१ प्रकृतिरूप बधस्थान पर्याप्त और देवगति के साथ बँधता है तथा १ प्रकृतिरूप बधस्थान नामकर्म की किसी प्रकृति के साथ नही बँधता है इसप्रकार इन स्थानो के योग्य परिणाम वाले जीव इन स्थानो को बाधते है ॥५१२-५१३॥

आगे आताप और उद्योत के बध वालो को दिखाते है ।

भूबादरपज्जत्तेणादावं बंधजोग्गमुज्जोवं ।
तेउतिगूणतिरिक्खपसत्थाणं एयदरगेण ॥५१४॥

भू बादर पर्याप्त युत, आतप बँधती जोय ।
बँधे द्योत बिन तैज त्रक, पशु शुभ की इक जोय ॥५१४

अर्थ—आतापप्रकृति, पर्याप्तबादरपृथ्वीकाय के साथ बँधती है और उद्योतप्रकृति, बादरपर्याप्तपृथ्वीकाय बादरपर्याप्तजलकाय प्रत्येक वनस्पतिकाय और तिर्यचसम्बन्धी किसी पुण्यप्रकृति के साथ बधती है ॥५११॥

आगे तीर्थकर और आहारक के बध वालो को दिखाते है ।

णरगइणामरगइणा तित्थं देवेण हारमुभयं य ।
संजदबंधट्ठाणं इदराहि गईहि णत्थित्ति ॥५१५॥

नर सुर गति युत तीर्थ को, सुर युत तीर्थाहार ।
बंध थान संयम उचित, अन्य गती न सँभार ॥५१५॥

अर्थ—तीर्थंकरप्रकृति को देव और नारकी मनुष्यगति के साथ बाधते हैं और अविरतादि ४ गुणस्थानवाले मनुष्य देवगति के साथ बाधते है आहारक २ अथवा तीर्थकर १ आहारक २ इसतरह दो या तीन प्रकृतियो को सयमीमनुष्य देवगति के साथ बाधते है कारण सयम के योग्य बधस्थान देवगति बिना अन्यगतिया नही हो सकती ॥५१५॥

आगे २३ आदि बधस्थानो की प्रकृतियो को दिखाते है ।

णामस्स णव धुवाणि य सरूणतसजुम्मगाणमेक्कदरं ।
गइजाइदेहसंठाणाणेक्कं य सामण्णा ॥५१६॥
तसबंधेण हि संहदिअंगोवंगाणमेक्कदरगं तु ।
तप्पण्णेण य सरगमणाणं पुण एगदरगं तु ॥५१७॥
पुण्णेण समं सव्वेणुस्सासो णियमदो दु परघादो ।
जोगट्ठाणे तावं उज्जोवं तित्थमाहारं ॥५१८॥

तित्थेणाहारदुगं एक्कसराहेण बंधमेदीदि ।
पक्खित्ते ठाणाणं पयडीणं होदि परिसंखा ॥५१९॥

नव ध्रुव प्रकृती नाम की, स्वर विन युग में एक।
गति इन्द्रिय तन चिन्ह अरु, पूर्वी में इक एक ॥५१६॥
त्रस बंधन युत अंग अरु, सँहनन में इक मान ।
त्रस पूरण युत स्वर गमन, इनमें से इक जान ॥५१७॥
पूर्ण सहित सब श्वास अरु, पर वध में इक धार ।
योग पदों में आतपा, उद्यो तीर्थाहार ॥५१८॥
तीर्थ सहित आहार दुक, बँधे एक क्षण आय ।
वढ़े हुये से प्रकृति अरु, थल की संख्या पाय ॥५१९॥

अर्थ—नामकर्म की तैजस १ कार्माण १ अगुरुलघु १ उपघात १ निर्माण १ वर्ण ४ ये सदा बँधनेवाली ९ त्रस-स्थावर १ बादर-सूक्ष्म १ पर्याप्त-अपर्याप्त १ प्रत्येक-साधारण १ स्थिर-अस्थिर १ शुभ-अशुभ १ सुभग-दुर्भग १ आदेय-अनादेय १ यश-अयश १ इन ९ युगलो मे १-१ का बध होता है गति ४ इन्द्रिय ५ आनपूर्वी ४ आदि के शरीर ३ सस्थान ६ मे से १-१ का बध होता है। इसप्रकार २३ प्रकृतियो का बध तो सव जीवो के होता ही है त्रस पर्याप्त अथवा अपर्याप्त प्रकृति के साथ सहनन ६ आगोपाग ३ मे से १-१ का बध होता है त्रस पर्याप्त प्रकृति के साथ स्वर २ चाल २ मे मे १-१ का बध होता है त्रस और स्थावर पर्याप्तप्रकृति के साथ उश्वास और परघात का बध होता है तथा आताप, उद्योत, तीर्थंकर और आहारकयुगल ये पाच प्रकृतिया भी यथायोग्य पूर्व

कहे जीवो के बँधती है जो आहारकयुगल तीर्थंकरप्रकृति के साथ बाधता है वह एक काल मे बाधता है इसकारण उपरोक्त २३ प्रकृतियो के बँध मे यथासभव प्रकृतियो के मिलाने से अन्य बधस्थान और उनकी प्रकृतियो की सख्या हो जाती है ॥५१६–५१६॥

आगे उपरोक्त स्थानो के आवातरस्थान दिखाते है ।

एयक्खअपज्जत्तं इगिपज्जत्तं बितिचपणरापज्जत्तं ।
एइंदियपज्जत्तं सुरणिरयगईहिं संजुत्तं ॥५२०॥
पज्जत्तागबितिचप मणुसदेवगदिसंजुदाणि दोण्णि पुणो ।
सुरगइजुदमगइजुदं बंधट्ठाणाणि णामस्स ॥५२१॥

इक अपूर्ण इक पूर्ण दो, त्रय चउ पन नर ऊंन ।
एकेन्द्रिय पर्याप्त सुर, नारक गति युत थून ॥५२०॥
पूरण दो त्रय चार पन, नर सुर गति युत दोय ।
सुर गति युत अरु अगति युत, नाम बंध थल जोय ॥५२१

अर्थ—अपर्याप्तएकेन्द्रिय सहित २३ का १ स्थान है एकेन्द्रिय-पर्याप्त, दो, तीन, चौ, पचेन्द्रियतिर्यच और मनुष्यअपर्याप्त सहित २५ के ६ स्थान है । पर्याप्तएकेन्द्रिय आताप अथवा उद्योत सहित २६ के २ स्थान है । देव अथवा नरकगति सहित २८ के २ स्थान है । पर्याप्त दो, तीन, चौ, पचेन्द्रियतिर्यच, मनुष्य और देवगतिसहित २९ के ६ स्थान है । पर्याप्त दो, ते, चौ, पचेन्द्रियतिर्यच उद्योतसहित, मनुष्यगति और देवगतिसहित ३० के ६ स्थान है । देवगतिआहारक सहित ३१ का १ स्थान है और यश का १ स्थान है ॥५२०-५२१॥

भावार्थ—उपरोक्त रीति से अपर्याप्त एकेन्द्रिय के साथ २३ का बधस्थान १ है । इसमे अपर्याप्तप्रकृति कम करके पर्याप्त १

उश्वास १ परघात १ इन ३ प्रकृतियो को वढाने से पर्याप्तएकेन्द्रिय सहित २५ का प्रथमवधस्थान होता है इसमे स्थावर १ पर्याप्त १ एकेन्द्रिय १ उश्वास १ परघात १ इन पाच प्रकृतियो को कम करके त्रस १ अपर्याप्त १ दोइन्द्रिय १ स्पाटिकसहनन १ औदारिक-आगोपाग १ इन ५ प्रकृतियो को वढाने से दोइन्द्रियअपर्याप्त सहित २५ का द्वितीयबधस्थान होता है इसमे दोइन्द्रिय कम करके तेइन्द्रिय बढाने से तेइन्द्रिय अपर्याप्त सहित २५ का तृतीयबध-स्थान होता है। इसमे तेइन्द्रिय कम करके चौइन्द्रिय वढाने से चौइन्द्रियअपर्याप्त सहित २५ का चतुर्थबधस्थान होता है। इसमे चौइन्द्रिय कम करके पचेन्द्रिय बढाने से पचेन्द्रियअपर्याप्ततिर्यच सहित २५ का पाचवा बधस्थान होता है और इसमे तिर्यचगति कम करके मनुष्यगति बढाने से मनुष्यअपर्याप्त सहित २५ का छठवा बधस्थान होता है। इसतरह २५ प्रकृति के ६ बधस्थान है।

उसमे त्रस १ अपर्याप्त १ मनुष्यगति १ पचेन्द्रिय १ स्पाटिक-सहनन १ औदारिक आगोपाग १। इन ६ प्रकृतियो को कम करके स्थावर १ पर्याप्त १ तिर्यचगति १ एकेन्द्रिय १ उश्वास १ परघात १ आताप १ इन ७ प्रकृतियो को बढाने से एकेन्द्रियपर्याप्त सहित २६ का प्रथमबधस्थान होता है और इसमे आताप कम करके उद्योत वढाने से एकेन्द्रियपर्याप्त सहित २६ का द्वितीयबधस्थान होता है। इसप्रकार २६ प्रकृति के २ बधस्थान है।

सदा बँधनेवाली ९ त्रस १ बादर १ पर्याप्त १ प्रत्येक १ स्थिर-अस्थिर मे १ शुभ-अशुभ मे १ सुभग १ आदेय १ यश-अयश मे १ देवगति २ पचेन्द्रिय १ विक्रियक २ समचतुरस्रसस्थान १ सुस्वर १ शुभचाल १ उश्वास १ परघात १ इन २८ प्रकृतियो का देवगति सहित प्रथमवधस्थान होता है और उपरोक्त आदि की १३ अस्थिर १ अशुभ १ दुर्भग १ अनादेय १ अयश १ नरकगति २ विक्रियक २ पचेन्द्रिय १ हुडकसस्थान १ दुस्वर १ कुचाल १ उश्वास १ परघात

इन २८ प्रकृतियो का नरकगति सहित द्वितीयबधस्थान होता है। इसप्रकार २८ के २ बधस्थान होते हैं।

उपरोक्त आदि की १३ स्थिर-अस्थिर मे १ शुभ-अशुभ मे १ दुर्भंग १ अनादेय १ यश-अयश मे १ तिर्यचगति २ दोइन्द्रिय १ औदारिक २ हुडकसस्थान १ स्पाटिक सहनन १ दुस्वर १ कुचाल १ उश्वास १ परघात १ इन २९ प्रकृतियो का दोइन्द्रियपर्याप्तसहित प्रथमबधस्थान होता है इसमे दोइन्द्रिय कम करके तेइन्द्रिय वढाने से तेइन्द्रियपर्याप्तसहित २९ का द्वितीयबधस्थान होता है। इसमें तेइन्द्रिय कम करके चौइन्द्रिय वढाने से चौइन्द्रियपर्याप्त सहित २९ का तृतीय बधस्थान होता है।

उपरोक्त १३ स्थिर-अस्थिर १ शुभ-अशुभ मे १ सुभग-दुर्भंग मे १ आदेय-अनादेय मे १ सहनन छै मे १ सस्थान छै मे १ सुस्वर-दुस्वर मे १ कुचाल-सुचाल मे १ यश-अयश मे १ तिर्यचगति २ पचेन्द्रिय १ औदारिक २ उश्वास १ परघात १ इन २९ प्रकृतियों का पचेन्द्रियपर्याप्ततिर्यंचसहित चतुर्थबधस्थान होता है इसमें तिर्यचगति २ कम करके मनुष्यगति २ वढाने से पर्याप्तमनुष्य सहित २९ का पाचवा बधस्थान होता है और उपरोक्त आदि की १५ सुभग १ आदेय १ यश-अयश मे १ देवगति २ विक्रिय २ पचेन्द्रिय १ समचतुरस्रसस्थान १ सुस्वर १ सुचाल १ उश्वाश १ परघात १ तीर्थकर १ इन २९ प्रकृतियो का देवगति सहित छटवा बधस्थान होता है। इसप्रकार २९ के ६ बधस्थान होते हैं।

दोइन्द्रिय से लेकर पचेन्द्रियतिर्यचपर्याप्त सहित २९ तक के ४ बधस्थानो मे उद्योतप्रकृति बढाने से ३०-३० प्रकृतियो के ४ बध-स्थान होते है उपरोक्त १५ सुभग १ आदेय १ यश-अयश मे १ मनुष्यगति २ औदारिक २ पचेन्द्रिय १ समचतुरस्रसस्थान १ वज्र-वृषभनाराचसहनन १ सुस्वर १ सुचाल १ उश्वास १ परघात १

तीर्थकर १ इन ३० प्रकृतियो का मनुष्यगति सहित पाचवा वध-स्थान होता है और देवगतिसहित २९ के छठवे वधस्थान मे से तीर्थकर प्रकृति कम करके आहारक २ वढाने से देवगतिसहित छटवा वधस्थान होता है। इस प्रकार ३० के ६ वधस्थान होते है।

देवगतिसहित २९ के छटवे वधस्थान मे आहारक २ वढाने से देवगतिसहित ३१ का १ वधस्थान होता है।

केवल यशप्रकृति का १ वधस्थान होता है ॥५२०–५२१॥

नामकर्म का बंधस्थान दर्पण

नामस्थान	प्र०	नामस्थान	प्र०
एकेन्द्रियअपर्याप्तसहित	२३	दोइन्द्रियपर्याप्तसहित	२९
एकेन्द्रियपर्याप्तसहित	२५	तेइन्द्रियपर्याप्तसहित	२९
दोइन्द्रियअपर्याप्तसहित	२५	चौइन्द्रियपर्याप्तसहित	२९
तेइन्द्रियअपर्याप्तसहित	२५	पचेन्द्रिय तिर्यचपर्याप्तसहित	२९
चौइन्द्रियअपर्याप्तसहित	२५	मनुष्यपर्याप्तसहित	२९
पचेन्द्रियअपर्याप्ततिर्यचसहित	२५	देवतीर्थकरसहित	२९
मनुष्यअपर्याप्तसहित	२५	दोइन्द्रियपर्याप्तउद्योतसहित	३०
एकेन्द्रियपर्याप्तआतापसहित	२६	तेइन्द्रियपर्याप्तउद्योतसहित	३०
एकेन्द्रियपर्याप्त उद्योतसहित	२६	चौइन्द्रियपर्याप्तउद्योतसहित	३०
देवगतिसहित	२८	पचेन्द्रियतिर्यचउद्योतसहित	३०
नरकगतिसहित	२८	मनुष्यपर्याप्ततीर्थकरसहित	३०
		देवआहारकसहित	३०
		देवआहारकतीर्थकरसहित	३१
		यशप्रकृति	१

आगे उपरोक्त बध स्थानो में भग दिखाते है।

संठाणे संहडणे विहायजुम्मे य चरिमछज्जुम्मे।
अविरुद्धेक्कदरादो बंधट्ठाणेसु भंगा हु ॥५२२॥

सँहनन छै संस्थान छै, गति युत छै युग अंत।
इक सम इक इक कहें से, भंग बंध थल मंत ॥५२२

अर्थ—सस्थान ६ सहनन ६ चाल २ प्रत्येक २ स्थिर २ शुभ २ सुभग २ आदेय २ यश २ इनमे १–१ बध होता है इस कारण इनको परस्पर गुणा करने से (६×६×२×२×२×२×२×२×२=४६०८) भग होते है ॥५२२॥

आगे नरकगति और अपर्याप्त मे १–१ भग दिखाते है।

तत्थासत्थो णारयसव्वापुण्णेण होदि बंधो दु।
एक्कदराभावादो तत्थेवको येव भंगो दु ॥५२३॥

अपर्याप्त अरु नरक युत, बँधे अशुभ इन थान।
बिन प्रतिपक्षी के वहां, भंग एक इक जान ॥५२३

अर्थ—नरकगतिसहित और अपर्याप्तप्रकृतिसहित बधस्थानो में अशुभ प्रकृतियो का ही बध होता है इस कारण इन स्थानो में १-१ ही भग है ॥५२३॥

आगे सूक्ष्म पर्याप्त और बादरपर्याप्तवनस्पति मे ४–४ भग दिखाते है।

तत्थासत्थं एदि हु साहारणथूलसव्वसुहुमाणं।
पज्जत्तेण य थिरसुहजुम्मेक्कदरं तु चदुभंगा ॥५२४॥

सूक्ष्मरु साधा थूल तरु, इक इक अशुभा मान ।
थिर शुभ युग में एक इक, भंग चार चउ जान ॥५२४॥

अर्थ—सब सूक्ष्मपर्याप्त सहित और वादरपर्याप्तसाधारण-वनस्पतिकाय सहित बधस्थानो मे अशुभ प्रकृतियो के साथ स्थिर-अस्थिर और शुभ-अशुभ मे से १–१ का वध होता है इस कारण इन बधस्थानो ४–४ भग होते है ॥५२४॥

आगे शेष एकेन्द्रिय और त्रस असैनी तक ८–८ भग दिखाते हैं

पुढवी आऊतेऊवाऊपत्तेयवियलसण्णीणं ।
सत्थेण असत्थं थिरसुहजसजुम्मट्ठभंगा हु ॥५२५॥

भू जल अग्नी पवन तरु, विकल अमन प्रत्येक ।
भंग आठ शुभ अशुभ सँग, थिर शुभ यश युग एक ॥५२५

अर्थ—वादरपृथ्वी, जल, अग्नि, पवन, प्रत्येकवनस्पति, दो-इन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय और असैनीपचेन्द्रियपर्याप्त सहित २५, २६, २९, ३० के वधस्थानो मे अशुभ प्रकृतियो के साथ स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ और यश-अयश में १–१ का बध होता है इसकारण इन बधस्थानो मे ८–८ भग होते हैं ॥५२५॥

आगे शेष जीव भेद मे भग दिखाते है ।

सण्णिस्स मणुस्सस्स य ओघेक्कदरं तु मिच्छभंगा हु ।
छादालसयं अट्ठ य विदिये वत्तीससयभंगा ॥५२६॥

मिस्साविरदमणुस्सट्ठाणे मिच्छादिदेवजुदठाणे ।
सत्थं तु पमत्तंते थिरसुहजसजुम्मगट्ठभंगा हु ॥५२७॥

समन रु नर के थान में, इक इक कर श्रम थान ।
छालिस सौ अठ भंग हैं, वत्तिस सौ सासान ।।५२६।।
मिश्र दृष्टि नर थान में, श्रमादि सुर युत थान ।
शुभ प्रमत्त तक थिर शुभा, यश युग से अठ जान ।।५२७

अर्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे सैनीतिर्यचगतिपर्याप्त सहित २९ के स्थान और उद्योत सहित ३० के स्थान तक मनुष्यपर्याप्त सहित २९ के स्थान मे सस्थान ६ सहनन ६ चाल आदि ७ युगलो मे से १–१ का बध होता है इस कारण प्रकृतियो के बदलने से ४६०८–४६०८ प्रत्येक स्थान मे भग होते है सासादनगुणस्थान में उद्योत रहित २९ और उद्योत सहित ३० के बध स्थान मे सस्थान ५ सहनन ५ और चालादि ७ युगलो के वदलने से ३२००–३२०० प्रत्येक स्थान मे भग होते है देव और नारकी मिश्र और अविरत-गुणस्थान वाले के पर्याप्त मनुष्यगति सहित २९ के बधस्थान मे देव और नारकी अविरतगुणस्थान वाले के मनुप्यपर्याप्त सहित ३० के बधस्थान मे स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ और यश-अयश मे १–१ का बध होता है इस कारण इन बधस्थानो मे ८–८ भग है मिथ्यात्व से लेकर प्रमत्तगुणस्थान वाले जीवो के देवगति सहित २८ और देवतीर्थकरसहित २९ के स्थान मे शुभ प्रकृतियो के साथ स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ और यश-अयश मे १–१ का बध होता है इस कारण इन बधस्थानो मे ८–८ भग होते है अप्रमत्त और अपूर्वकरण गुणस्थान वाले के देवगति सहित २८ का, देवतीर्थकर सहित २९का, देव आहारक सहित ३० का और देव आहारक-तीर्थंकर सहित ३१ इन चारो स्थानो मे उपरोक्त ३ युगलो मे से शुभ का ही बध होता है इस कारण १–१ भग है और अपूर्वकरण के अत भाग से लेकर सूक्ष्मसापराय गुणस्थान तक एक यश प्रकृति का ही बध है इस कारण एक ही भग है ।।५२६-५२७।।

आगे जीवो की गति और आगति दिखाते है।

णेरयियाणं गमणं सण्णीपज्जत्तंकस्मतिरियणरे।
चरिमचऊतित्थूणे तेरिच्छे येव सत्तमिया ॥५२८॥

तत्थतणऽविरदसम्मो मिस्सो मणुवदुगमुच्चयं णियमा।
बंधदि गुणपडिवण्णा मरंति मिच्छेव तत्थ भवा ॥५२९॥

तेउदुगं तेरिच्छे सेसेगअपुण्णवियलगा य तहा।
तित्थूणणरेवि तहाऽसण्णी धम्मे य देवदुगे ॥५३०॥

सण्णीवि तहा सेसे णिरये भोगेवि अच्चुदंतेवि।
मणुवा जंति चउग्गदिपरियंतं सिद्धिठाणं य ॥५३१॥

आहारगा दुं देवे देवाणं सण्णिकस्मतिरियणरे।
पत्तेयपुढविआऊबादरपज्जत्तगे गमणं ॥५३२॥

भवणतियाणं एवं तित्थूणणरेसु येव उपपत्ती।
ईसाणंताणेगे सदरदुगंताण सण्णीसु ॥५३३॥

नारक मर कर नर पशू, समन पूर्ण भू कर्म।
चार अंत के तीर्थ बिन, केवल पशु भू चर्म ॥५२८

बांधे नर दुक ऊंच को, मिश्र दृष्टि भू सात।
इन गुण सहित न वे मरें, मरत उदय मिथ्यात ॥५२९॥

अग्नि दु मर पशु शेष इक, विकल मरें पशु होय।
जिन विन नर उसविधि अमन, प्रथम नरक दुक दोय५३०

समन उसी विधि शेष भू, अच्युत तक भू भोग।
जाय मनुष मर चार गति, या मेटे भव रोग ॥५३१

आहारक युत सुर गमन, समन कर्म भू ढोर।
मनुष वायु प्रत्येक भू, थूल पूर्ण की ओर ॥५३२॥

भवन त्रयी बिन तीर्थ के, प्रथम युगल उस रीति।
थावर बिन सहरार तक, आगे सब नर प्रीति ॥५३३

अर्थ—प्रथमनरक से लेकर तृतीयनरक तक के नारकी मरकर कर्मभूमि मे गर्भजपर्याप्तसैनीतिर्यंच अथवा मनुष्य होते है चतुर्थ से लेकर छट्ठे नरक तक के नारकी मरकर कर्म भूमि मे गर्भजपर्याप्त-सैनीतिर्यंच अथवा तीर्थकरादि पुण्य पुरुषो के बिना शेष मनुष्य होते है और सातवे नरक के नारकी मरकर कर्मभूमि मे गर्भज-पर्याप्त तिर्यंच होते है ये मिश्र और अविरत गुणस्थान में मनुष्यगति युगल और ऊचगोत्र का बध करते है किन्तु मरण समय मिथ्यात्व-गुणस्थान को प्राप्त कर ही मरते है।

अग्नि-पवनकाय के जीव मर कर तिर्यंच होते है और तिर्यंच-गति से ही आते है शेष एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीव मरकर तिर्यंच अथवा तीर्थंकरादि पुण्य पुरुपो के बिना शेष पर्याप्तमनुष्य होते है असैनीपचेन्द्रिय जीव मरकर कर्मभूमि में तिर्यंच प्रथम नरक मे नारकी, भवनवासी—व्यवरदेव अथवा तीर्थकरादि बिना शेष पर्याप्तमनुष्य होते है सैनीतिर्यंच मर कर कर्म और भोगभूमि मे तिर्यंच सव नरको मे नारकी, तीर्थकरादि बिना शेष पर्याप्तमनुष्य अथवा अच्युतस्वर्ग तक देव होते है किन्तु वाहनादि नीच देवो मे जन्म लेते है।

मनुष्य मरकर चारो गतियो को जाते है अथवा सिद्ध पद पाते है। अपर्याप्त मनुष्य मरकर कर्मभूमि मे तिर्यंच और तीर्थकरादि विना शेष मनुष्य होते हैं भोगभूमि के मनुष्य और तिर्यंच मरकर सौधर्म, ईसान स्वर्ग तक होते है और आहारक शरीरवाले मुनि मरकर कल्पवासी देव होते है।

भवनत्रकदेव मरकर बादरपर्याप्तपृथ्वीकाय, बादरपर्याप्त-जलकाय, प्रत्येकवनस्पतिकाय, कर्मभूमि मे दोइन्द्रियादि पर्याप्त-तिर्यंच अथवा तीर्थंकरादि बिना शेप पर्याप्तमनुज्य होते है। सौधर्म-ईसानस्वर्ग के देव मरकर बादरपर्याप्तपृथ्वी, बादरपर्याप्त जल, प्रत्येकवनस्पति, कर्भभूमि मे दोइन्द्रियादिपर्याप्त तिर्यंच और मनुष्य होते हैं सनत्कुमार से सहस्रार तक के देव मरकर कर्मभूमि मे सैंनी पर्याप्ततिर्यंच अथवा मनुष्य होते हैं तथा शेष (आनत, प्राणत, आरुण, अच्युत, नवग्रीवक, नवअनुदिश विजय, वैंजयत, जयत, अपराजित, स्वार्थसिद्धि) देव कर्मभूमि मे पर्याप्तमनुष्य होते है ॥५२८-५३३॥

आगे उपरोक्त जीवो के बधस्थान नरकादि गति मे दिखाते हैं।

णामस्स बंधठाणा णिरयादिसु णवयवीस तीसमदो।
आदिमछक्कं सव्वं पणछण्णववीस तीसं य ॥५३४॥

नामबंध नरकादि में, उनतिस तिस के दोय।
पहिले छै सब पांच छै, नवधिक विस तिस जोय ॥५३४॥

अर्थ—उपरोक्त जीव नरकगति मे नामकर्म के २९ अथवा ३० के २ बधस्थान बाधते है। तिर्यंचगति मे आदि के ६ बधस्थान बाँधते हैं। मनुष्यगति मे सब बधस्थान बाँधते है और देवगति मे २५, २६, २९, ३० के ४ बधस्थान बाँधते हैं ॥५३४॥

नामकर्म का गतिबंध दर्पण

न०	२९, ३०
ति०	२३, २५, २६, २८, २९, ३०
म०	सब
दे०	२५, २६, २९, ३०

आगे इन्द्रिय से दर्शनमार्गणा तक के बधस्थान दिखाते है।

पंचक्खतसे सव्वं अडवीसूणादिछक्कयं सेसे।
चउमणवयणोराले सड देवं वा विगुव्वदुगे ॥५३५॥

अडवीसदु हारदुगे सेसदुजोगेसु छक्कमादिल्लं।
वेदकसाये सव्वं पढमिल्लं छक्कमण्णाणे ॥५३६॥

सण्णाणे चरिमपणं केवलजहखादसंजमे सुण्णं।
सुदमिव संजयतिदए परिहारे णत्थि चरिमपदं ॥५३७॥

अंतिमठाणं सुहुमे देसाविरदीसु हारकम्मं वा।
चक्खूजुगले सव्वं सगसगणाणं व ओहिदुगे ॥५३८॥

त्रस सकला सब शेष में, अंत दु अठविस खोय।
औदा चउ मन वचन सब, सुरवत् विक्रिय दोय ॥५३५

हार दुकहिं अठवीस दुक, शेष भोग छै आदि।
वेद कषायहिं सर्व हैं, कुमति त्रयी छै आदि ॥५३६॥

सत्य ज्ञान में अंत पन, अंत ज्ञान व्रत टार।
संयम त्रय सत ज्ञानवत्, थल न अंत परिहार ॥५३७॥

अंत थान इक सूक्ष्म में, कर्म हार दृग देश ।
अवधिदुकहिं निजज्ञान वत्, चक्षुयुगल सब भेष ॥५३८

अर्थ—एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय और पाच स्थावरकाय मे २३, २५, २६, २९, ३० के ५ बधस्थान बँधते हैं । पचेन्द्रिय, त्रसकाय, मनयोग ४ वचनयोग ४ और औदारिककाययोग मे सब बधस्थान बँधते है । विक्रियक और विक्रियकमिश्रकाययोग मे २५, २६, २९, ३० के ४ बधस्थान बँधते है । आहारक और आहारकमिश्रकाययोग मे २८, ३० के २ बधस्थान बँधते है । औदारिकमिश्रकाययोग और कार्माणकाययोग मे आदि के ६ बधस्थान बँधते है । वेद ३ और कषाय ४ मे सब बधस्थान बँधते है । तीन कुज्ञानो मे आदि के ६ बधस्थान बँधते है । चार सम्यक्ज्ञानो मे अत के ५ बधस्थान बँधते हैं । केवल ज्ञान और यथाख्यातसयम मे कोई बधस्थान नही बँधता । सामायिक और छेदोपस्थापनासयम मे अत के ५ बधस्थान बँधते है । परिहारविशुद्धिसयम मे २८, २९, ३०, ३१ के ४ बधस्थान बँधते है । सूक्ष्मसापरायसयम मे अत का १ बधस्थान बँधता है । देशसयम मे २८, २९ के २ बधस्थान बँधते हैं । अविरत मे आदि के ६ बधस्थान बँधते है । चक्षु और अचक्षुदर्शन मे सब बधस्थान बँधते हैं तथा अवधि और केवलदर्शन मे अवधिज्ञान और केवलज्ञान के समान बधस्थान बँधते है ॥५३५-५३८॥

आगे लेश्या से आहारमार्गणा तक के बधस्थान दिखाते हैं ।

कम्मं वा किण्हतिये पणुवीसाछक्कमट्ठवीसचऊ ।
कमसो तेऊजुगले सुक्काए ओहिणाणं वा ॥५३९॥
भव्वे सव्वमभव्वे किण्हं वा उवसमम्मि खइए य ।
सुक्कं वा पम्मं वा वेदगसम्मत्तठाणाणि ॥५४०॥

अडवीसतिय दु साणे मिस्से मिच्छे दु किण्लेस्सं वा ।
सण्णीआहारिदरे सव्वं तेवीसछक्कं तु ॥५४१॥

कृष्ण तीन में कर्म वत्, पच्चिस आदि छै पीत।
अठ विसादि चउ पद्म में, शुक्ल अवधि वत् रीति॥५३९

भव्य विषें सब अभवि में, कृष्ण समान पिछान।
शय क्षायिक में शुक्ल वत्, वेदकपद्म समान ॥५४०

सासा में अठवीस त्रक, कृष्ण तुल्य मिस वाम ।
समनाहारेतर सरव, तेइसादि छै ठाम ॥५४१॥

अर्थ—कृष्ण, नील और कपोतलेश्या मे आदि के ६ बधस्थान बँधते है पीतलेश्या मे २५ आदि के ६ बधस्थान बँधते है पद्मलेश्या मे २८ आदि के ४ बधस्थान बँधते है शुक्ललेश्या मे अत के ५ बधस्थान बँधते है भव्यमार्गणा मे सब बधस्थान बँधते है अभव्य-मार्गणा में आदि के ६ बधस्थान बँधते है उपशम और क्षायिक-सम्यक्त्व में अत के ५ बधस्थान बँधते है वेदकसम्यक्त्व मे २८ आदि के ४ बधस्थान बँधते है सासादनसम्यकत्वमार्गणा मे २८ आदि के ३ बधस्थान बँधते है मिश्र और मिथ्यात्वसम्यक्त्व मार्गणा मे आदि के ६ बधस्थान बँधते है सैनी और आहारक मार्गणा मे सब बधस्थान बँधते है तथा असैनी और अनाहार मार्गणा मे आदि के ६ बधस्थान बँधते है ॥५३९-५४१॥

आगे नामकर्म के बधस्थानो मे पुनुरुक्त भग दिखाते है ।

णिरयादिजुदट्ठाणे भंगेणप्पप्पणम्मि ठाणम्मि ।
ठविदूण मिच्छभंगे सासाणभंगा हु अत्थित्ति ॥५४२॥

अविरदभंगे मिस्सयदेसपमत्ताण सव्वभंगा हु ।
अत्थित्ति ते दु अवणिय मिच्छाविरदापमादेसु ॥५४३॥

नरकादिक युत थलों को, निज निज भंगों साथ।
निज निज गुण में रखे से, भ्रमसँग सासा हाथ ॥५४२
अविरत में मिस देश अरु, प्रमत भंग आजात।
इससे इनको कम किये, भ्रम दृग अ-प्रमत आत ॥५४३

अर्थ—नरकादिगति सहित बधस्थानो को अपने २ भगो के साथ अपने २ गुणस्थानो मे रखने से मिथ्यात्वगुणस्थान के भगो मे सासादन गुणस्थान के भग आ जाते हैं इस कारण सासादनगुण-स्थान के भग कम करने से मिथ्यात्वगुणस्थान के भग अपुनुरुक्त होते है अविरतगुणस्थान के भगो मे मिश्र, देशविरत और प्रमत्त-गुणस्थान के भग आ जाते है इस कारण उपरोक्त तीन गुणस्थानो के भग कम करने से अविरतगुणस्थान के भग अपुनुरुक्त होते हैं अर्थात मिथ्वात्व, अविरत और अप्रमत्त गुणस्थान के भग ग्रहण करने से नामकर्म के बधस्थानो के सब भग अपुनुरुक्त होते हैं ॥ ५४२-५४३॥

आगे नाम कर्म के बधस्थानो मे भुजाकारादि दिखाते है।

भुजगारा अप्पदरा अवट्ठिदावि य सभंगसंजुत्ता ।
सव्वपरट्ठाणेण य णेदव्वा ठाणबंधम्मि ॥५४४॥

भुजाकार अरु अल्पतर, थिर अरु अकथ कहाय ।
बंध थलहिं निज भंग युत, सब पर थान लगाय ॥५४४॥

अर्थ—उपरोक्त बध चार प्रकार के होते हैं भुजाकार (बढता) अल्पतर (घटता) अवस्थित (एकसा) और अकथ ये अपने २ भगो

कर सहित है इनको नामकर्म के वंधस्थानो में लगाना चाहिये जो कि निजस्थान, परस्थान, उभयस्थान अथवा सव परस्थान रूप है ॥५४४॥

आगे निजस्थानादि का स्वरूप दिखाते है।

अप्पपरोभयठाणे बंधट्ठाणाण जो दु बंधस्स।
सट्ठाण परट्ठाणं सव्वपरट्ठाणमिदि सण्णा ॥५४५॥

बंध थान जो बंध के, स्वपर उभय गुणराम।
निज थल पर थल सर्व पर, थल के इस विधि नाम॥५४५

अर्थ—अपनागुणस्थान, परगुणस्थान और उभयस्थान (अन्यगति अन्यगुणस्थान) इन तीनो मे मिथ्यात्व, अविरत और अप्रमत्तगुण-स्थान के वधस्थाल सम्वन्धी भुजाकारादि वध है उनके क्रमसे निज-स्थानभुजाकारादि, परस्थानभुजाकारादि और शेष सव परस्थान भुजाकारादि ऐसे तीन नाम है ॥५४५

आगे गुणस्थानो से चढ़ने उतरने के मार्ग दिखाते है।

चदुरेक्कदुपण पंच य छत्तिगठाणाणि अप्पमत्तांता।
तिसु उवसमगे संते त्ति य तियतिय दोण्णि गच्छंति ॥५४६॥
सासणपमत्तवज्जं अपमत्तांतं समल्लियइ मिच्छो।
मिच्छत्तं बिदियगुणो मिस्सो पढमं चउत्थं य ॥५४७॥
अविरदसम्मो देसो पमत्तपरिहीणमप्पमत्तांतं।
छट्ठाणाणि पमत्तो छट्ठगुणं अप्पमत्तो दु ॥५४८॥
उवसामगा दु सेढिं आरोहंति य पडंति य कमेण।
उवसामगेसु मरिदो देवतमत्तं समल्लियई ॥५४९॥

चउ इक दो पन पांच छे, त्रय गुण सप्तहिं जांहि।
त्रय उपशम उपशांत के, त्वय त्वय दो गुण पांहि ॥५२६
सान प्रमत तज सात तक, मिथ्यादृष्टी जाय।
सासा मिथ्या भू गिरे, मिश्र प्रथम चउ आय ॥५२७
प्रमत विना सप्तम तलक, अविरत देश जु इष्ट।
गुणस्थान छै प्रमत के, सप्तम अध उप दृष्टि ॥५२८
क्रम से श्रेणी उपशमक, चढ़ें उतरते मान।
यदि वे मरते उस समय, पावें स्वर्ग विमान ॥५२९

अर्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान वाला जीव चढ़े तो मिश्र, अविरत, देशविरत अथवा दिगम्बरमुनि हो तो अप्रमत्तगुणस्थान को चढ़ता है, सासादनगुणस्थानवाला जीव केवल मिथ्यात्वगुणस्थान को उतरता है, मिश्रगुणस्थान वाला अविरतगुणस्थान को चढ़ता है और मिथ्यात्वगुणस्थान को उतर आता है। अविरतगुणस्थान वाला जीव चढ़े तो देशविरत अथवा दिगम्बरमुनि हो तो अप्रमत्तगुणस्थान को चढ़ता है और उतरे तो मिश्र-सासादन अथवा मिथ्यात्वगुणस्थान को उतर आता है। देशविरतगुणस्थान वाला जीव दिगम्बरमुनि हो तो अप्रमत्तगुणस्थान को चढ़ता है उतरे तो अविरत, मिश्र, सासादन अथवा मिथ्यात्वगुणस्थान को उतरता है। प्रमत्तगुणस्थानवाला जीव चढ़े तो अप्रमत्तगुणस्थान को चढ़ता है और उतरे तो देशविरत, अविरत, मिश्र, सासादन अथवा मिथ्यात्वगुणस्थान को उतर आता है। अप्रमत्तगुणस्थान वाला चढ़े तो अपूर्वकरणगुणस्थान को चढ़ता है उतरे तो प्रमत्तगुणस्थान को उतरता है और मरे तो अविरतगुणस्थान को प्राप्त होता है। अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्म-

सापरायगुणस्थानवाले अपने आगे वाले एक गुणस्थान को चढते है अपने से पीछे वाले एक गुणस्थान को उतरते है और मरे तो तीनो अविरतगुणस्थान को प्राप्त होकर महान् ऋद्धिधारी देव होते हैं तथा उपशातगुणस्थान वाला सूक्ष्मसांपरायगुणस्थान को उतरता है और मरे तो अविरतगुणस्थान को प्राप्त होकर महान् ऋद्धिधारी देव होता है ।।५४६–५४९।।

आगे किनही स्थानो मे मरण का अभाव दिखाते है ।

मिस्सा आहारस्स य खवगा चउमाणपढमपुव्वा य ।
पढमुवसम्मा तमतमगुणपडिवण्णा य ण मरंति ।।५५०।।
अणसंजोजिदमिच्छे मुहुत्तअंतं तु णत्थि मरणं तु ।
किदकरणिज्जं जाव दु सव्वपरट्ठाण अट्ठपदा ।।५५१।।

मिश्र आहारक अरु क्षपक, प्रथम जु उपशम ख्यात ।
प्रथम जु भाग अपूर्व का, शम दृग युत भू सात ।।५५०
अन्तर्मुहूर्त काल तक, अन-संयोजक वाम ।
जबतक वेदक कृत्य कृत, मरे न आठो ठाम ।।५५१

अर्थ–मिश्र (तृतीय) गुणस्थानवाले, निवृत्तिअपर्याप्तअवस्थावाले, आहारकमिश्रकाययोगवाले, क्षपकश्रेणीवाले, उपशमश्रेणी सम्बन्धी अपूर्वकरणगुणस्थान के प्रथम भागवाले जीव, प्रथमोपशमसम्यक्त्व वाले, सातवेनरक के सासादन, मिश्र और अविरतगुणस्थान वाले मरण को प्राप्त नही होते तथा अनतानुबधी का विसयोजना करके मिथ्यात्वगुणस्थान को प्राप्त होने वाले अन्तर्मुहूर्त्त तक मरण को प्राप्त नही होते और जवतक दर्शनमोह क्षपक कृतकृत्य न हो तबतक मरण को प्राप्त नही होता ।।५५०–५५१।।

आगे कृतकृत्यवेद का काल और उपजस्थान दिखाते है।

देवेसु देवमणुवे सुरणरतिरिये चउग्गईसुंपि ।
कदकरणिज्जुप्पत्ती कमसो अंतोमुहुत्तेण ॥५५२॥

सुर सुर नर सुर नर पशू, या चउगति में पूर्त।
कृत करणी की उपज है, क्रमसे भिन्न मुहूर्त ॥५५२

अर्थ—कृतकृत्यवेदकसम्यक्दृष्टि जीव की अवस्था का काल अन्तः-मुहूर्त है । इसके चार भागो मे से प्रथम भाग में मरे तो देव होता है द्वितीय भाग मे मरे तो देव अथवा मनुष्य होता है, तृतीय भाग मे मरे तो देव, मनुष्य अथवा तिर्यंच होता है और चतुर्थ भाग मे मरे तो चारो गति मे से किसी एक गति को पाता है ॥५५२॥

आगे वधस्थानो मे चढने उतरने से भुजाकारादिभेद दिखाते है।

तिविहो दु ठाणबंधो भुजगारप्पदरवट्ठिदो पढमो ।
अप्पं बंधंतो बहुबंधे बिदियो दु विवरीयो ॥५५३॥
तदियो सणामसिद्धो सव्वे अविरुद्धठाणबंधभवा ।
ताणुप्पत्तिं कमसो भंगेण समं तु वोच्छामि ॥५५४॥

वंधथान त्रय भुजाकर, अल्पतरा थिति चूल ।
प्रथम अल्प फिर बहु वंधे, द्वितीय वंधे प्रतिकूल ॥५५३
तृतीय नाम से सिद्ध है, उपज वंध थल साम्य ।
क्रमसे इनकी उपज को, भंग सहित दिख लाम्य ॥५५४

अर्थ—नामकर्म के वधस्थान तीन प्रकार के होते है भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित इनमें जब प्रथम अल्प प्रकृतिया ,वंधकर

फिर बहुत प्रकृतियाँ बँधती है तब भुजाकार बध कहलाता है जब वहुत प्रकृतिया बध कर फिर अल्प प्रकृतियां बधती है तब अल्पतर-बध कहलाता है और जब आगे पीछे एकसी प्रकृतिया बँधती है तब अवस्थितबध कहलाता है। ये सब विरोध रहित बधस्थानों मे होते है अब इनकी उत्पत्ति को क्रमसे भगसहित दिखलाता हू ॥५५३ ५५४॥

आगे नामकर्म के स्थानो में मिथ्यादृष्टि के भुजाकारो को दिखाते है।

भूबादरतेवीसं बंधंतो सव्वमेव पणुवीसं।
बंधदि मिच्छाइट्ठी एवं सेसाणमाणेज्जो ॥५५५॥

तेवीसट्ठाणादो मिच्छत्तीसोत्ति बंधगो मिच्छो।
णवरि हु अट्ठावीसं पंचिंदियपुण्णगो येव ॥५५६॥

भोगे सुरट्ठवीसं सम्मो मिच्छो य मिच्छगअपुण्णे।
तिरिउगतीसं तीसं णरउगुतीसं य बंधदि हु ॥५५७॥

मिच्छस्स ठाणभंगा एयारं सदरि दुगुणसोल णवं।
अडदालं बाणउदी सदाण छादाल चत्तधियं ॥५५८॥

मिथ्यादृष्टी बांधता, भू बादर तेईस।
फिर बांधे पच्चीस सब, शेष इसी विधि दीस ॥५५५॥

भ्रम में तेइस थान से, बंध योग्य तिस तक्क।
पूर्ण सकल मिथ्यात्व धर, अठविस बांधे हक्क ॥५५६॥

मिथ्या सम्मकित भोग भू, बांधे सुर अठ वीस।
वाम ऊन पशु उनतिसा, या तिस नर उनतीस ॥५५७॥

भंग वाम थल ग्यारहा, सत्तर अरु बत्तीस।
बावन सौ अड़तालिसा, छालिस अरु चालीस ।।५५८

अर्थ—जब मिथ्यादृष्टि जीव बादरपृथ्वीकायसहित २३ के स्थान को बाधिकर २५ आदि के सब स्थानो को बाधता है तब वध के भेद होते है। इसीतरह शेप वधस्थानो मे वधभेद होते है मिथ्यात्व गुणस्थान मे २३ से लेकर ३० के स्थान तक मिथ्यादृष्टि जीव बाधता है किन्तु २८ के दोनो स्थानो को कर्मभूमि का पर्याप्त पचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि बाधता है। भोगभूमि का पर्याप्तपचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि-सम्यक्दृष्टि और निर्वृत्ति अपर्याप्तसम्यक्दृष्टि देवगतिसहित २८ के स्थान को बाधता है। निवृत्तिअपर्याप्तमिथ्यादृष्टि जीवतिर्यंचगति सहित २९ के अथवा ३० के स्थान को बाधता है और मनुष्यगतिसहित २९ के स्थान को भी बाधता है। इनमे मिथ्यात्वगुणस्थान सम्बन्धी २३ के ११, २५ के ७०, २६ के ३२, २८ के ९, २९ के ९२४८, ३० के ४६४०, स्थानभेद हैं ।।५५५-५५८।।

भावार्थ—बादरअपर्याप्तपृथ्वी १, जल १, अग्नि १, पवन १, साधारण १, सूक्ष्मअपर्याप्तपृथ्वी १, जल १, अग्नि १, पवन १, साधारण १ अथवा अपर्याप्त प्रत्येकवनस्पतिसहित २३ के बधस्थानमे ११ भेद है।

बादरपर्याप्तपृथ्वी, जल, अग्नि, पवन अथवा प्रत्येकवनस्पतिसहित २५ के बधस्थान मे स्थिर, शुभ और यशयुगल के बदलने से ८-८ भग होते है इसलिये ४० भेद हैं सूक्ष्मपर्याप्तपृथ्वी, जल, अग्नि, पवन, साधारण और बादरपर्याप्त साधारणसहित २५ के वधस्थान मे स्थिर और शुभयुगल के बदलने से ४-४ भग है इसलिये २४ भेद है और अपर्याप्त दोइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय, असैनीपचेन्द्रियतिर्यंच, सैनीतिर्यंच अथवा मनुष्यसहित २५ के बधस्थान मे ६ भेद है। इसतरह २५ बधस्थान के ७० भेद होते हैं।

बादरपर्याप्तपृथ्वी आतापसहित, बादरपर्याप्तपृथ्वी उद्योत-सहित, वादरपर्याप्तजल उद्योतसहित और पर्याप्त प्रत्येकवनस्पति उद्योतसहित २६ के बधस्थान मे तीनयुगलों के बदलने से ८-८ भंग होते है इसलिये ३२ भेद है।

देवगतिसहित २८ के स्थान मे तीनयुगलो के बदलने से ८ भग होते है और नरकगतिसहित २८ के स्थान मे १ भंग होता है इसतरह २८ के बंधस्थान मे ९ भेद होते है।

पर्याप्तदोइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय अथवा असैनीपचेन्द्रिय सहित २९ के स्थान मे तीनयुगलों के बदलने से ८-८ भग होते है इसलिये ३२ भेद है तथा सैनीतिर्यंचगति और मनुष्यगतिसहित २९ के स्थान मे सस्थान ६ सहनन ६ और ७ युगलो के बदलने से ४६०८-४६०८ भग होते है इसलिये २९ के बधस्थान में ९२४८ भेद होते हैं।

पर्याप्तदोइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय अथवा असैनीपचेन्द्रिय उद्योतसहित ३० के बधस्थान मे तीनयुगलों के बदलने से ८-८ भग होते है इसलिये ३२ भेद है और सैनीतिर्यंच उद्योतसहित ३० के बंधस्थान में उपरोक्त सस्थानादि बदलने से ४६०८ भग होते है ३२ और ४६०८ मिलकर ३० के स्थान के ४६४० भेद होते है।

उपरोक्त २३, २५, २६, २८, २९, ३० के बधस्थानों में क्रम से ११, ७०, ३२, ९, ९२४८, ४६४० भेद होते है इनमे २३ आदि के १-१ भेद को बाधकर पश्चात् २५ आदि के १-१ भेद को बाधने से जो भेद होते है उनको भुजाकार बध कहते है। उनका परिमाण २३ के भेदो का २५ आदि के भेदो से गुणा करने पर २३ के भुजाकारों का परिमाण आता है। इसतरह से २५ आदि के भुजाकारों का परिमाण आता है वह निम्न प्रकार है ॥५५५-५५८॥

मिथ्यात्व के भुजाकारों का दर्पण

२३ के ११ भेदों के भुजा०

गुण्य	गुणक	गुणनफल
७०	११	७७०
३२	११	३५२
९	११	९९
९२४८	११	१०१७२८
४६४०	११	५१०४०
		१५३९८९

२६ के ३२ भेदों के भुजा०

९	३२	२८८
९२४८	३२	२९५९३६
४६४०	३२	१४८४८०
		४४४७०४

२५ को ७० भेदों के भुजा०

३२	७०	२२४०
९	७०	६३०
९२४८	७०	६४७३६०
४६४०	७०	३२४८००
		९७५०३०

२८ के ९ भेदों के भुजा०

९२४८	९	८३२३२
४६४०	९	४१७६०
		१२४९९२

२९ के ९२४८ भेदों के भुजा०

४६४०	९२४८	४२९१०७२०
		४४६०९४३५

आगे मिथ्यात्वगुणस्थान के अलपतरो का परिमाण दिखाते है।

विपरीयेणप्पदरा होंति हु तेरासिएण भंगा हु।
पुव्वपरट्ठाणाणं भंगा इच्छा फलं कमसो ॥५५९॥

उनसे उलटे अल्पतर, भंग गणित आधार।
पूर्वापर स्थान के, भंग इच्छ फल धार ॥५५९॥

अर्थ—भुजाकारबधो के भगो के गणित से उलटा गणित करने पर अल्पतरो के भग होते है जिसमे आगे के स्थानो को गुण्य और प्रथम स्थानो के भगो को गुणक बनाने से क्रमसे भेद होते है। ३०

के स्थान को बाधकर पश्चात् २९ आदि के स्थान को बाधने से अल्पतर होते हैं इसलिये ३० के भेदों का २९ आदि के भेदों से गुणा करने पर ३० के अल्पतरों का परिमाण आता है। इसीतरह २९ आदि के अल्पतरो का परिमाण आता है जोकि निम्न प्रकार है ॥५५९॥

मिथ्यात्व के अल्पतरों का दर्पण

३० के ४६४० भेदों के अल्प०

गुण्य	गुणक	गुणनफल
९२४८	४६४०	४२९१०७२०
९	४६४०	४१७६०
३२	४६४०	१४८४८०
७०	४६४०	३२४८००
११	४६४०	५१०४०
		४३४७६८००

२९ के ९२४८ भेदों के अल्प०

९	९२४८	८३२३२
३२	९२४८	२९५९३६
७०	९२४८	६४७३६०
११	९२४८	१०१७२८
		११२८२५६

२८ के ९ भेदों के अल्प०

३२	९	२८८
७०	९	६३०
११	९	९९
		१०१७

२६ के ३२ भेदों के अल्प०

७०	३२	२२४०
११	३२	३५२
		२५९२

२५ के ७० भेदों के अल्प०

११	७०	७७०
		४४६०९४३५

आगे भुजाकार-अल्पतरो का थोडे मे परिमाण दिखाते है।

लघुकरणं इच्छंतो एयारादीहिं उबरिमं जोग्गं।
संगुणिदे भुजागारा उवरीदो होंति अप्पदरा ॥५६०॥

थोड़े में जानन चहो, ग्यारादिक से ऊप ।
जोड़ि गुणें से भुजाकर, पलट अल्पतर रूप ।।५६०।।

अर्थ–भुजाकार और अल्पतरबधो का परिमाण थोडे गणित मे निकालनें का एक सरल उपाय यह है कि २३ के भेदो का २५ आदि के भेदो के जोड से गुणा करने पर २३ के भुजाकारो का परिमाण आता है इसीतरह से २५ आदि के भेदो के भुजाकारो का परिमाण आता है और ३० के भेदो का २९ आदि के भेदो के जोड से गुणा करने पर ३० के अल्पतरो का परिमाण आता है। इसी-तरह से २९ आदि के भेदो के भुजाकारो का परिमाण आता है ।।५६०।।

थोड़े मे मिथ्यात्व के भुजाकारों का दर्पण

गुण्य	गुणक	गुणनफल
२५ आदि के ७०, ३२, ९, ९२४८, ४६४०	२३ के ११	१५३९८९
२६ आदि के ३२, ९, ९२४८, ४६४०	२५ के ७०	९७५०३०
२८ आदि के ९, ९२४८, ४६४०	२६ के ३२	४४४७०४
२९ आदि के ९२४८, ४६४०	२८ के ९	१२४९९२
३० के ४६४०	२९ के ९२४८	४२९१०७२०
		४४६०९४३५

थोड़े में मिथ्यात्व के अल्पतरों का दर्पण

गुणक	गुणक	गुणनफल
२९ आदि के ९२४८, ९, ३२, ७०, ११	३० के ४६४०	४३४७६८००
२८ आदि के ९, ३२, ७०, ११	२९ के ९२४८	११२८२५६
२६ आदि के ३२, ७०, ११	२८ के ९	१०१७
२५ आदि के ७०, ११	२६ के ३२	२५९२
२३ के ११	२५ के ७०	७७०
		४४६०९४३५

आगे अवस्थितबधो का परिमाण दिखाते है।

भुजगारप्पदराणं भंगसमासो समो हु मिच्छस्स ।
पणतीसं चउणउदी सट्ठी चोदालमंककमे ॥५६१॥

भुजाकार अरु अलपतर, भ्रम में भंग समान ।
पेंतिसांक चौरानवे, साठि चवालिस जान ॥५६१॥

अर्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे ४४६०९४३५ भुजाकारबध हैं ४४६०९४३५ अल्पतरबध है और ८९२१८८७० अवस्थितबध है ॥५६१॥

आगे अविरत के भुजाकारो का परिमाण दिखाते है।

देवट्ठवोस णरदेवुगुतीस मणुस्सतीस बंधऽयदे ।
तिछणवणवदुगभंगा तित्थविहीणा हु पुणरुत्ता ॥५६२॥

देवट्ठवीसबंधे देवुगुतीसम्मि भंग चउसट्ठी ।
देवुगुतीसे बंधे मणुवत्तीसेवि चउसट्ठी ।।५६३।।
तित्थयरसत्तणारयमिच्छो णरऊणतीसबंधो जो ।
सम्मम्मि तीसबंधो तियछक्कडछक्कचउभंगा ।।५६४।।

सुर अठविस नरसुर उँतिस, नर तिस दृग बंधुक्त ।
भंग तीन छै नव नव दु, तीर्थ हीन पुनुरुक्त ।।५६२
सुर अठविस सुर उनतिसा, बँधे भंग चउ साठि ।
सुर उनतिस नर तीस युत, बँधे भंग चउ साठि ।।५६३
तीर्थ सत्व नारक असत, बांधे नर उनतीस ।
दृग में तिस के भंग सब, चौंसठि अठ छत्तीस ।।५६४

अर्थ—अविरतगुणस्थान मे देवगति सहित २८ के स्थान मे, मनुष्यगति सहित २९ के स्थान मे, देवगति सहित २९ के स्थान मे और मनुष्यगति सहित ३० के स्थान मे ३६९९२ भग होते हैं इनमे तीर्थंकर रहित ६४ भग पुनुरुक्त है। कारण वे मिथ्यादृष्टि के भगो मे आ गये है वे इसप्रकार है कि जब मनुष्य अविरतगुण-स्थान मे देवगति सहित २८ का बध करके देवगति और तीर्थंकर सहित २९ का बध करता है तब ८—८ भग होते है उनका गुणा करने से ६४ भग होते हैं और जब वह देवगति और तीर्थंकर सहित २९ का बध करके मनुष्य, देव अथवा नारकी अविरतगुण-स्थान होकर मनुष्यगति और तीर्थंकर सहित ३० का बध करता है तब भी ८—८ भग होते हैं उनका गुणा करने से ६४ भग होते है। तीर्थंकर सत्व सहित नारकी मिथ्यादृष्टि की जव तक निवृत्ति अपर्याप्त अवस्था है ४६०८ भगो का तीर्थंकर विना मनुष्यगति

सहित २९ का बध करता है। उसके पश्चात, पर्याप्त अवस्था में आता है तव मनुष्य गति और तीर्थकर सहित ३० का बध करता है तब ८ भग होते है इसलिये ४६०८ को ८ से गुणा करने पर ३६८६४ भग होते है इनमे उपरोक्त ६४-६४ भग मिलाने से ३६९९२ भग होते है जो कि अविरतगुणस्थान के भुजाकार बध कहलाते है ॥५६२-५६४॥

आगे अविरत के अल्पतरो का परिमाण दिखाते है।

बावत्तरि अप्पदरा देवुगुतीसा दु णिरयअडवीसं।
बंधंत मिच्छभंगेणवगयतित्था हु पुणरुत्ता ॥५६५॥

अल्पतरा वहतर नरक, अठविस सुर उनतीस।
बांधे भ्रम में तीर्थ बिन, भंग पुनुरुत्ता दीस ॥५६५॥

अर्थ—जिसके पूर्व नरक आयु का बध कर लिया है ऐसा अविरतगुणस्थान वाला मनुष्य तीर्थकर बध का प्रारभ करके जब देवगति और तीर्थंकर सहित २९ का बंध करता है तब ८ भग होते है पश्चात् नरक के सन्मुख होकर अन्तर्मुहूत तक मिथ्यादृष्टि होता है तब १ भग होता है आठ को एक से गुणा करने पर ८ भग होते हैं जव देव अथवा नारकी अविरतगुणस्थानवाला मनुष्य गति और तीर्थंकर सहित ३० के स्थान को बाधता है तब ८ भग होते है पश्चात् वह मरण कर माता के गर्भ में देवगति और तीर्थंकर सहित २९ के स्थान को बाधता है तब भी ८ भग होते है इन ८-८ का गुणा करने से ६४ भग होते है इनमे उपरोक्त ८ मिलाने से ७२ भग होते है जो कि अविरतगुणस्थान के अल्पतर बध कहलाते है यहाँ तीर्थंकर रहित मनुष्यगति सहित २९ के स्थान को बाधि के देवगति सहित २८ के स्थान को बांधता है तब ८-८ भगो के ६४ भग होते है वे पुनुरुक्त है जो कि दो० ५५७ में मिथ्यात्वगुणस्थान के भगों मे कहे जा चुके इस कारण यहाँ नही लिखे ॥५६५॥

अविरत के भुजाकारादिकों का दर्पण

भुजाकार			अल्पतर	
दे० २८	दे० २९	म० २९	दे० २९	म० ३०
८	८	४६०८	८	८
दे० २९	म० ३०	म० ३०	न० २८	दे० २९
८	८	८	१	८
६४	६४	३६८६४	८	६४

आगे अप्रमत्त के भुजाकारो को दिखाते है।

देवजुदेक्कट्ठाणे णरतीसे अप्पमत्तभुजयारा।
पणदालिगिहारुभये भंगा पुणरुत्तगा होंति ॥५६६॥

इगि अड अट्ठिगि अट्ठिगिभेदड अट्ठड ठुणव य वीस तीसेक्के।
अडिगिगि अडिगिगि बिहि उणखिगि इगिइगितीस देवचउ
कमसो ॥५६७॥

सुर युत इक थल तीस नर, भुजाकार गुणसात।
भंग पितालिस हार इक, युगयुत पुनुरुत जान ॥५६६

इक अठ अठ इक आठ इक, इक इक इक इक धार।
अठविसत्रयउनतीसदो, तिस इकइकतिसचार॥५६७,१

अठ इक इक अठ एक इक, इक इक इक इक धार।
उनतिसतिसइकतीस तिस, इकतिसदोसुर चार।५६७,२

अर्थ—अप्रमत्तगुणस्थान मे देवगतिसहित २८ के स्थान मे और मनुष्यगति और तीर्थंकर सहित ३० के स्थान मे ४५ भुजाकार

होते है तथा तीर्थकरसहित, आहारकसहित और आहारकतीर्थकर-सहित मे जो भग है वे पुनुरुक्त हैं। इनका विशेष इस प्रकार है कि २८, २८, २८, २९, २९, ३०, ३१, ३१, ३१, ३१ प्रकृतिरूप स्थानो मे क्रमसे १, ८, ८, १, ८, १, १, १, १, १, भग है और २९, ३०, ३१, ३०, ३१, ३१, २८, २९, ३०, ३१ प्रकृतिरूप स्थानो मे क्रमसे ८, १, १, ८, १, १, १, १, १, १ भग हैं इनमे नीचे-ऊपर के भगों से परस्पर गुणा करने से ४५ भग होते है ।।५६६-५६७।।

भावार्थ—जब अप्रमत्त मे देवगतिसहित २८ को १ भग से बाधकर प्रमत्त मे देवगति और तीर्थकरसहित २९ को ८ भगो से बाधता है तब दोनो को गुणे ८ भग होते है। जब प्रमत्त मे देव-गतिसहित २८ को ८ भगो से बाँधकर अप्रमत्त मे आहारक सहित ३० को १ भग से बाँधता है तब दोनो को गुणे ८ भग होते है। जब प्रमत्त मे २८ को ८ भगो से बाँधकर अप्रमत्त मे आहारक और तीर्थकरसहित ३१ को एक भग होता है तब दोनो को गुणे ८ भग होते है जब अप्रमत्त में तीर्थकर और देवगतिसहित २९ को १ भग से बाँधकर मरकर अविरतगुणस्थान मे मनुष्यगति और तीर्थकरसहित ३० को ८ भगो से बाँधता है तब दोनो को गुणे ८ भग होते है। जब प्रमत्तगुणस्थान मे देवगति और तीर्थकर-सहित २९ को ८ भगो से बाँघकर तीर्थकर और आहारकसहित ३१ को १ भग से बाँधता हैं तव दोनो के गुणे ८ भग होते है। जब अप्रमत्त मे आहारकसहित ३० को १ भग से बाँधकर ३१ को १ भग से बाँधता है तव दोनो को गुणे एक भग होता है। उपशमश्रेणी से उतरकर अपूर्वकरण के सातवें भाग मे यश को वाधि देवगतिसहित २८ को देवगतितीर्थकरसहित २९ को देवआहारकसहित ३० को अथवा ३१ को बाँधता है तब ४ भग होते है। इसतरह सब ४५ भग (भुजाकार) होते है ।।५६६-५६७।।

अप्रमत्त के ४५ भुजाकारों का दर्पण

प्र	अ.	अ.	अवि	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ
२९	३०	३१	३०	३१	३१	२८	२९	३०	३१
८	१	१	८	१	१	१	१	१	१
अ.	प्र.	प्र.	अ.	प्र.	अ.				
२८	२८	२८	२९	२९	३०	१	१	१	१
१	८	८	१	८	१	१	१	१	१

आगे अप्रमत्त के गुणस्थान के अल्पतरो का परिमाण दिखाते हैं।

इगिविहिगिगिखखतीसे दस णव णवडधियवीसमट्ठविहं ।
देवचउक्केक्केक्के अपमत्तप्पदरछत्तीसा ॥५६८॥

एक एक युत एक इक, सुन सुन से धिक तीस ।
बांधिआठअठसहितदश,नव-नवअठधिकवीस।५६८-१
और एक इक भंग युत, सुर चउ बांधे शीश ।
इस प्रकार गुण सात में, अल्पतरा छत्तीस ॥५६८-२॥

अर्थ—अप्रमत्तगुणस्थान वाला जब १-१ भगसहित ३१, ३१, ३०, ३० प्रकृतिरूपस्थानो को बॉधकर ८-८ भगो कर सहित ३०, २९, २९, २८ प्रकृतिरूप स्थानो को नीचे उतरकर बाधता है तव ३२ भेद होते है और जब १-१ भगसहित २८, २९, ३०, ३१ के चार स्थानो को बॉधता है तब ४ भेद होते है। इसतरह सब ३६ भेद होते है जोकि अप्रमत्तगुणस्थान के अल्पतरबध कहलाते है ॥५६८॥

भावार्थ—अप्रमत्तगुणस्थान मे जब ३१ को १ भग से बाधि पश्चात मरकर देव के अविरत गुणस्थान मे मनुष्यगति तीर्थंकर सहित ३० को ८ भग से बाधता है तव इन दोनो को गुणे ८ भग

होते है। अप्रमत्त में ३१ को १ भग सहित बांध कर पश्चात् प्रमत्त गुणस्थान मे देवगतितीर्थंकर सहित २६ को १ भग से बाधता है तव इन दोनों को गुणें ८ भग होते है। जव अप्रमत्त मे देवगति आहारक सहित ३० को १ भग से बांधकर प्रमत्तगुणस्थान मे देवगतितीर्थंकर सहित २९ को ८ भगों से बाधता है तब इन दोनों को गुणे ८ भग होते हैं। जब अप्रमत्तगुणस्थान मे देवगति आहारक सहित ३० को १ भग से बाधकर प्रमत्तगुणस्थान में देवगति सहित २८ को ८ भगो से बाधता है तव इन दोनो को गुणे ८ भग होते हैं। अप्रमत्त से अपूर्वकरणगुणस्थान के चढते समय १-१ भग से देवगति सहित २८ देवगतितीर्थंकर सहित २९ देवगति आहारक सहित ३० देवगति आहारक तीर्थंकरसहित ३१ और अपूर्वकरण के सातवे भाग मे यश को बाधता है तव ४ भग होते है इसतरह से सब ३६ भग होते है जो कि अप्रमत्तगुणस्थान के अल्पतर बध कहलाते है ॥५६८॥

अप्रमत्तगुणस्थान के अल्पतरों का दर्पण

अवि	प्र.	प्र.	प्र.	अपू.	अपू.	अपू.	अपू.
३०	२९	२९	२८	१	१	१	१
८	८	८	८	१	१	१	१
अ०	अ०	अ०	अ०	अ०	अ०	अ०	अ०
३१	३१	३१	३०	२८	२९	३०	३१
१	१	१	१	१	१	१	१

आगे नामकर्म के सव भुजाकार और अल्पतरो को दिखाते है।

सव्वपरट्ठाणेण य अयदपमत्तिदरसव्वभंगा हू ।
मिच्छस्सभंगमज्झे मिलिदे सव्वे हवे भंगा ॥५६९॥

सव पर थल चउ सात गुण, आदिक के सव भंग ।
मिथ्यातम के भंग में, मिले होंहि सव भंग ॥५६९॥

अर्थ—अविरत और अप्रमतादि सब गुणस्थानो के भुजाकार और अल्पतर भेदो को मिथ्यात्वगुणस्थान के भुजाकार और अल्पतर भेदो मे मिलाने से नामकर्म के भुजाकारों का परिमाण ४४६४६४७२ होता है और अल्पतरो का परिमाण ४४६०६५४३ होता है ॥५६६॥

आगे भुजाकार अल्पतर भगो की उत्पति का कारण दिखाते हैं

भुजगारा अप्पदरा हवंति पुव्ववरठाणसंताणे ।
पयडिसमोऽसंताणोऽपुणरुत्तोत्ति य समुद्दिट्ठो ॥५७०॥

भुजाकार अरु अलपतर, पूर्वापर थल लाय ।
प्रकृति भेद समुदाय सम, अपुनुरुक्त कहलाय ॥५७०

अर्थ—प्रथमस्थान थोडी प्रकृतियो का हो उसको यथासभव अधिक प्रकृतियो के स्थान के साथ लगाने को भुजाकार बध कहलाते हैं अधिक प्रकृतियो के स्थान को थोडी प्रकृतियो के स्थान के साथ लगाने को अल्पतरबध कहते हैं और जिस प्रकृति भेद के साथ प्रकृति समुदाय की समान सख्या है उसको अपुनुरुक्त भग कहते हैं जैसे तीर्थकर रहित सहननसहित भी २६ का बध होता है और तीर्थंकर सहित सहननरहित भी २६ का बध होता है ये दोनो स्थान पुनुरुक्त नही है ॥५७०॥

आगे अकथबध का परिमाण दिखाते है ।

पडिय मरियेक्कमेक्कूणतीस तीसं य बंधगुवसंते ।
बंधो दु अवत्तव्वो अवट्ठिदो विदियसमयादि ॥५७१॥

शांत पडत इक बाँधता, मर कर उनतिस तीस ।
अकथ बंध यों अवस्थित, द्वितियक्षणादिक दीस ॥५७१

अर्थ—जब उपशातमोहगुणस्थान से गिरकर १ के स्थान को

बाधता है तब १ भग होता है जब उपशातमोहगुणस्थान से मरकर देव के अविरतगुणस्थान मे आकर मनुष्यगति सहित २९ के स्थान को ८ भग सहित बाधता है अथवा मनुष्यगति और तीर्थंकर सहित ३० के स्थान को ८ भगसहित बाधता है इन दोनों को जोडे १६ भग होते है इसतरह सब १७ अकथ बध नामकर्म के भगहोते हैं और इनके द्वितीयादि समयों में इनके समान बध होने पर १७ अवस्थित बध होते है ।।५७१।।

आगे अवस्थित बध का परिमाण दिखाते है ।

भुजगारे अप्पदरेऽवत्तव्वे ठाइदूण समबंधो ।
होदि अवट्ठिदबंधोतब्भंगा तस्स भंगा हु ।।५७२।।

भुजाकार अरु अलपतर, अकथबंध को थाप ।
तुल्य बंध जहँ अवस्थित, भंग उन्ही वत् नाप ।।५७२।।

अर्थ—जहा भुजाकार, अल्पतर और अकथवध जितनी प्रकृतियो और भगो के सहित होता है वहा द्वितीयादि समय मे उतनी ही प्रकृति और भगो सहित यदि फिर बध हो तो उसको अवस्थिति बध कहते है इसलिये इन तीनो का जितना परिमाण है उतना ही अवस्थितबध का परिमाण है ।।५७२।।

नामकर्म के भुजाकारादि दर्पण

	भुजाकार	अल्पतर	अकथ	अवस्थित
मि.	४४६०९४३५	४४६०९४३५	०	८९२१८८७०
अ.	३६९९२	७२	०	३७०६४
अप्र.	४५	३६	०	८१
उप	०	०	१७	१७
कुल	४४६४६४७२	४४६०९५४३	१७	८९२५६०३२

१७८५१२०६४

आगे नामकर्म के उदयस्थान दिखाते हैं ।

विग्गहकम्मसरीरे सरीरमिस्से सरीरपज्जत्ते ।
आणावचिपज्जत्ते कमेण पंचोदये काला ॥५७३॥

परभवगति या कर्म तन, तन अपूर्ण या पूर्ण ।
श्वास वचन पर्याप्ति मिल, पांच उदय क्षण चूर्ण॥५७३

अर्थ—नामकर्म का उदय परभव जाते समय (कार्माणशरीर के उदय मे) होता है शरीर अपर्याप्त के समय होता है शरीर पर्याप्त मे होता है, श्वासोश्वास पर्याप्त मे होता है और वचन पर्याप्ति मे होता है इसतरह क्रमसे नामकर्म के ५ उदयकाल है ।

भावार्थ—जबतक कार्माणशरीर पाया जावे तबतक कार्माण-शरीर काल है जबतक शरीर अपूर्ण है तबतक शरीर अपर्याप्ति काल है जबतक श्वासोश्वास पर्याप्तिपूर्ण नही होती तबतक शरीर पर्याप्तकाल है जबतक भापा पर्याप्तिपूर्ण नही होती तबतक श्वासो-श्वास काल है और जबतक आयु पूर्ण नही होती तबतक भाषा-पर्याप्तिकाल है ॥५७३॥

आगे उपरोक्त ५ कालो की स्थिति दिखाते है ।

एक्कं व दो व तिण्णि व समया अंतोमुहुत्तयं तिसुवि ।
हेट्ठिमकालूणाओ चरिमस्स य उदयकालो दु ॥५७४॥

इक दो त्रय क्षण आदि के, त्रय के भिन्न मुहूर्त ।
ये क्षण कम कर आयु सें, भाषा का क्षण पूर्त ॥५७४॥

अर्थ—कार्माणकाय योग का काल एक समय, दो समय अथवा तीन समय है शरीर-अपर्याप्ति-अवस्था का काल अन्तर्मुहूर्त है शरीर-पर्याप्ति का काल अन्तर्मुहूर्त है श्वासोश्वासपर्याप्ति का

काल अन्तर्मुहूर्त है और भाषापर्याप्ति का काल उपरोक्त ४ कालों को छोडकर शेष आयु है ।।५७४।।

आगे उपरोक्त कालों को जीवो में दिखाते है ।

सव्वापज्जत्ताणं दोण्णिवि काला चउक्कमेयक्खे ।
पंचवि होंति तसाणं आहारस्सुवरिमचउक्कं ।।५७५।।

सब अपूर्ण के आदि दो, एकेन्द्रिय के चार ।
त्रस के पन आहार के, प्रथम बिना सब धार ।।५७५।।

अर्थ—सब लब्धिअपर्याप्त जीवो के आदि के २ काल होते है एकेन्द्रिय के आदि के ४ काल होते है दोइन्द्रयादि के सब काल होते है और आहारककायवाले के प्रथमबिना आगे के ४ काल होते है ।।५७५।।

आगे समुदघातकेवली के ५ काल दिखाते है ।

कम्मोरालियमिस्सं ओरालुस्सासभास इति कमसो ।
काला हु समुग्घादे उवसंहरमाणगे पंच ।।५७६।।
ओरालं दंडदुगे कवाडजुगले य तस्स मिस्सं तु ।
पदरे य लोगपूरे कम्मे व य होदि णायव्वो ।।५७७

कर्म रु औद अपूर्ण अरु, पूर्ण श्वास वच मान ।
समुद्घात संकोच ते, पांच काल ये जान ।।५७६।।
दंड युगल में औद क्षण, युग कपाट मिल काल ।
प्रतर लोक के पूर्ण में, कर्मण काल सँभाल ।।५७७।।

अर्थ—समुदघात केवली के प्रदेश समेटने के समय कार्माणकाल, औदारिकअपर्याप्तिकाल, औदारिकशरीरपर्याप्तिकाल, श्वासोश्वास-

काल और भाषापर्याप्तिकाल ये पाच काल होते है और विस्तार ने मे दड रूप समुदघात करने के समय और समेटने के समय औदारिकपर्याप्तिकाल होता है कपाटरूप समुदघात करने के समय और समेटने के समय औदारिकअपर्याप्तिकाल होता है प्रतरसमुदघात के समय और लोकपूर्ण समुदघात के समय कार्माणकाल होता है इसतरह ३ काल होते है किन्तु श्वासोश्वास और भाषापर्याप्ति प्रदेश समेटते समय ही होती है कारण मूल शरीर मे प्रवेश करते समय से ही सैनीपचेन्द्रिय की तरह क्रमसे पर्याप्तिपूर्ण (क्षय) होती है इसतरह ५ काल सभव है ।।५७६-५७७।।

आगे नामकर्म के उदयस्थान दिखाते है ।

वीसं इगिचउवीसं तत्तो इगितीसओत्ति एयधियं ।
उदयट्ठाणा एवं णव अट्ठ य होंति णामस्स ।।५७८।।

विस इकविस चौवीस अरु, इक इकधिक इकतीस ।
उदय थान नव आठ मिल, बारह नाम कहीस ।।५७८

अर्थ—नामकर्म के २०, २१, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ९, ८ प्रकृतिरूप १२ उदयस्थान है ।।५७८।।

आगे उपरोक्त स्थानो मे आवातरस्थान और स्वामी दिखाते है।

णामधुवोदयबारस गइजाईणं य तसतिजुम्माणं ।
सुभगादेज्जजसाणं जुम्मेक्कं विग्गहे वाणू ।।५७९।।
मिस्सम्मि तिअंगाणं संठाणाणं य एगदरगं तु ।
पत्तेयदुगाणेक्को उवघादो होदि उदयगदो ।।५८०।।
तसमिस्से ताणि पुणो अंगोवंगाणमेगदरगं तु ।
छण्हं संहडणाणं एगदरो उदयगो होदि ।।५८१।।

परघादमंगपुण्णे आदावदुगं विहायमविरुद्धे ।
सासवची तपुण्णे कमेण तित्थं य केवलिणि ॥५८२॥
चदुगदिया एइंदी विसेसमणुदेवणिरयएइंदो ।
इगिवितिचपसामाण्णा विसेससुरणारगेइंदो ॥५८३॥
सामाण्णसयलवियलविसेसमणुस्ससुरणारया दोण्हं ।
सयलवियलसामण्णा सजोगपंचक्खवियलया सामी ॥५८४॥
एगे इगिवीसपणं इगिछव्वीसहवीसतिण्णि णरे ।
सयले वियलेवि तहा इगितीसं चावि वचिठाणे ॥५८५॥
सुरणिरयविसेसणरे इगिपणसगवीसतिण्णि समुघादे ।
मणुसं वा इगिवीसे वीसं रूवाहियं तित्थं ॥५८६॥
वीसदु चउवीसचऊ पणछव्वीसादिपंचयं दोसु ।
उगुतीसति पणकाले गयजोगे होंति णव अट्ठं ॥५८७॥
गयजोगस्स य बारें तदियाउगगोद इदि विहीणेसु ।
णामस्स य णव उदया अट्ठेव य तित्थहीणेसु ॥५८८॥

नाम उदय बारह ध्रुवा, सुभग देय यश जोड ।
गति इन्द्रिय त्रस त्रय युगल, पूर्वी इक इक मोड ॥५७९
तीन अंग संस्थान अरु, साधारण युग मान ।
एक एक उपघात इक, उदय ऊंन क्षण जान ॥५८०
उनमें अंगोपांग इक, सँहनन एक मिलाय ।
इन छै प्रकृतियों का उदय, त्रस अपूर्ण के पाय ॥५८१

परवध पूर्ण रु ताप दुक, गति अविरुद्ध सँभार।
श्वास रु स्वर परिपूर्ण के, तीर्थ केवली धार ॥५८२

चहुँगति एकेन्द्रिय प्रमुख, नर सुर नारक एक।
इकसे पन तक सरल मुख, नर सुर नारक एक ॥५८३

सरल सकल विकला प्रमुख, नर सुर नारक मान।
तिसहिं सकल विकला प्रमुख, योगिसफल विकलान५८४

इकविसादि पन थवर नर, इक छै अठ नव तीस।
सकल विकल भी उसीविधि, वच थल में उनतीस ॥५८५

सुर नारक अरु प्रमुख नर, इक पन सत विस तीन।
समुद घात में मनुषवत्, विस इक धिक जिम चीन।५८६

विस दुक चउ चौवीस दुक, पन छै विसादि पांच।
उनतिसादि त्रय काल पन, अयोग नव अठ जांच॥५८७

बारह में से वेदनी, आयू गोत्र विहीन।
नाम उदय नव तीर्थ विन, आठ अयोगी चीन ॥५८८॥

अर्थ—नामकर्म की ध्रुवउदय १२ गति, इन्द्रिय मे से १-१ त्रस, वादर, पर्याप्त, सुभग, आदेय, यशयुगल मे से १-१ आनुपूर्वी १ इसतरह २१ का उदयस्थान परभवगति मे होता है। उपरोक्त २१ मे आनुपूर्वी १ कम करके आदि के तीन शरीरो मे से १, सस्थान छै मे से १ प्रत्येक-साधारण मे से १ और उपघात १ ये ४ मिलाने

से २४ का उदयस्थान अपर्याप्तिकाल मे होता है। उपरोक्त ४ तीन आगोपाग मे से १ सहनन छै मे से १ इसतरह ६ प्रकृतियो का उदय त्रस के पर्याप्तकाल मे होता है। परघात का उदय त्रस और स्थावर जीव के अपर्याप्तकाल मे होता है। आताप-उद्योत और चाल २ का उदय अविरुद्ध योग्य (दे० दो०न० ३२८) त्रस-स्थावर जीव के पर्याप्तकाल मे होता है। श्वासोश्वास और स्वर युगल का उदय अपने २ पर्याप्तकाल मे होता है तथा तीर्थकर प्रकृति का उदय केवलीभगवान के होता है।

२१ का उदय चारोगति के जीवों के होता है। २४ का उदय एकेन्द्रिय के होता है। २५ का उदय आहारक ऋद्धिधारी मुनि, देव और नारकियो के होता है २६ का उदय एक, दो, तीन, चार और पचेन्द्रियसामान्यजीव तथा केवली के होता है २७ का उदय आहारकऋद्धिधारी, तीर्थंकर केवली, देव, नारकी और एकेन्द्रियजीव के होता है २८ और २९ का उदय सामान्यपुरुष, पचेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय आहारक ऋद्धिधारी, देव और नारकियो के होता है ३० का उदय सामान्यपुरुष, पचेन्द्रिय और विकलेन्द्रियजीवो के होता है ३१ का उदय सयोगकेवली, पचेन्द्रिय और विकलेन्द्रियजीवो के होता है। ९ और ८ का उदय अयोगकेवली के होता है ॥५७९—५८८॥

पूर्व कहे हुये पाचकालो में यथासभव क्रमसे एकेन्द्रिय के २१, २४, २५, २६, २७ के ५ स्थान उदययोग्य है सामान्यमनुष्य के २१, २६, २८, २९, ३० के ५ स्थान उदययोग्य है विकलत्रय और पचेन्द्रियतिर्यच के २१, २६, २८, २९, ३० और भाषाकाल मे ३१ का यो ६ स्थान उदययोग्य हैं देव और नारकी, आहारकऋद्धिधारी अथवा केवली के २१, २५, २७, २८, २९ के ५ स्थान उदय योग्य है। सामान्य समुदघातकेवली के मनुष्य की तरह २१ मे से आनुपूर्वी बिना २० का स्थान होता है। तीर्थकर समुदघातकेवली के २१ का स्थान उदययोग्य है पर भवगति मे २१ का स्थान होता

है अपर्याप्तजीव के २४, २५, २६, २७ के ४ स्थान होते है। शरीरपर्याप्तकाल मे २५, २६, २७, २८, २९ के ५ स्थान होते है श्वासोश्वास पर्याप्तिकाल मे २६, २७, २८, २९, ३० के ५ स्थान होते है भाषापर्याप्तिकाल मे २९, ३०, ३१ के ३ स्थान होते है अयोगगुणस्थान में तीर्थकरकेवली के मनुष्यगति १ पचेन्द्रिय १ सुभग १ आदेय १ यश १ त्रस १ वादर १ पर्याप्त १ तीर्थकर १ इसतरह ९ का स्थान उदययोग्य है और सामान्यकेवली के तीर्थकर विना ८ का स्थान उदययोग्य है ॥५७९—५८८॥

भावार्थ—ध्रुवउदयी (तैजस २ वर्ण ४ स्थिर २ शुभ २ अगुरुलघु १ निर्माण १) १२ गति, इन्द्रिय मे से १-१ त्रस, वादर, पर्याप्त, सुभग, आदेय और यश के युगल मे से १—१ मिलाने से २० प्रकृतियो का उदय सामान्य समुदघातकेवली के कार्माणकाल मे होता है।

उपरोक्त २० मे तीर्थकरप्रकृति मिलाने से २१ प्रकृतियो का उदय तीर्थकर समुदघातकेवली के कार्माणकाल मे होता हैं। उपरोक्त २० मे आनुपूर्वी १ मिलाने से २१ प्रकृतियो का उदय चारो गति के जीवो के परभवगति जाते समय होता है इसतरह २१ के दो उदयस्थान है।

उपरोक्त २० मे औदारिकादि तीन शरीर मे से १ सहनन छै मे से १ प्रत्येक साधारण मे मे १ और उपघातप्रकृति मिलाने से २४ प्रकृतियो का उदय एकेन्द्रियजीवो के अपर्याप्तकाल मे होता है।

उपरोक्त २४ मे परघात मिलाने से २५ प्रकृतियो का उदय एकेन्द्रिय जीवो के शरीरपर्याप्तकाल मे होता है उपरोक्त २४ मे आगोपाग मिलाने से २५ प्रकृतियो का उदय आहारक-ऋद्धिधारी मुनि के आहारक अपर्याप्तकाल मे होता है और उपरोक्त २४ मे आगोपाग मिलाने से २५ प्रकृतियो का उदय देव और नारकियो के अपर्याप्तकाल मे होता है इसीतरह २५ के ३ स्थान है।

एकेन्द्रिय की २५ में आताप अथवा उद्योत मिलाने से २६ प्रकृतियो का उदय एकेन्द्रिय जीवों के शरीरपर्याप्तकाल में होता है। उपरोक्त २५ मे श्वासोश्वास मिलाने से २६ प्रकृतियो का उदय एकेन्द्रियजीव के श्वासोश्वास पर्याप्तकाल में होता है उपरोक्त २४ में औदारिकआगोपाग और कोई सहनन मिलाने से २६ प्रकृतियो का उदय दोइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय, पचेन्द्रियतिर्यंच, सामान्यमनुष्य और सामान्यकेवली के औदारिक अपर्याप्तकाल मे होता है इसतरह २६ के ३ स्थान होते है।

उपरोक्त २४ में आगोपाग, परघात और शुभचाल मिलाने से २७ प्रकृतियों का उदय प्रमत्तगुणस्थानवाले के आहारकशरीर-पर्याप्तकाल मे होता है समुदघातकेवली की २६ मे तीर्थकरप्रकृति मिलाने से २७ प्रकृतियो का उदय तीर्थकरसमुदघातकेवली के औदारिकशरीर-अपर्याप्तकाल में होता है उपरोक्त २४ मे आगो-पाग, परघात और चाल मिलाने से २७ प्रकृतियो का उदय देव और नारकीयो के शरीरपर्याप्तकाल मे होता है। उपरोक्त २४ मे आताप-उद्योत मे से कोई १ परघात १ और श्वासोश्वास मिलाने से २७ प्रकृतियो का उदय एकेन्द्रिय के श्वासोश्वास-पर्याप्तकाल मे होता है। इसतरह २७ के ४ स्थान होते है।

उपरोक्त २४ मे आगोपाग १, सहनन १, परघात १ यथा-योग्यचाल १ मिलाने से २८ प्रकृतियो का उदय सामान्यमनुष्य, अथवामूलशरीर मे प्रवेश करते समय सामान्यसमुदघातकेवली, दोइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय औग पचेन्द्रियतिर्यच के शरीर-पर्याप्तकाल मे होता है। उपरोक्त २४ मे आगोपाग १, परघात १ शुभचाल १ और श्वासोश्वास मिलाने से २८ प्रकृतियो का उदय प्रमत्तगुणस्थान वाले के श्वासोश्वास-पर्याप्तकाल मे होता है। उपरोक्त २४ मे आगोपाग १ परघात १ चाल १ श्वासोश्वास १ मिलाने से २८ प्रकृतियो का उदय देव और नारकियो के श्वासोश्वास-पर्याप्तकाल मे होता है। इसतरह २८ के ३ स्थान होते हैं।

समुदघातकेवली की २८ मे श्वासोश्वास मिलाने से २९ प्रकृतियो का उदय सामान्यमनुष्य और मूलशरीर मे प्रवेश करते समय सामान्यसमुदघातकेवली के श्वासोश्वासपर्याप्तकाल मे होता है। उपरोक्त २४ मे आगोपाग १ सहनन १ परघात १ चाल १ उद्योत १ मिलाने से २९ प्रकृतियो का उदय दोइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय और पचेन्द्रियतिर्यच के शरीरपर्याप्तकाल मे होता है। इसमे उद्योत कम कर श्वासोश्वास मिलाने से २९ प्रकृतियो का उदय उपरोक्त जीवो के श्वासोश्वास-पर्याप्तकाल मे होता है। उपरोक्त २४ मे आगोपाग १ सहनन १ शुभचाल १ परघात १ तीर्थंकरप्रकृति मिलाने से २९ प्रकृतियो का उदय तीर्थंकरसमुदघातकेवली के शरीरपर्याप्तकाल मे होता है उपरोक्त २४ मे आगोपाग १ परघात १ शुभचाल १ श्वासोश्वास १ सुस्वर १ मिलाने से २९ प्रकृतियो का उदय प्रमत्तगुणस्थानवाले के भाषापर्याप्तकाल में होता है देव और नारकियो की २८ मे स्वर १ मिलाने से २९ प्रकृतियो का उदय देव और नारकियो के भाषापर्याप्तकाल मे होता है। इसतरह २९ के ६ स्थान होते है।

उपरोक्त २४ मे आगोपाग १ सहनन १ परघात १ चाल १ उद्योत १ श्वासोश्वास १ मिलाने से ३० प्रकृतियो का उदय दोइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय और पचेन्द्रियतिर्यचो के श्वासोश्वास-पर्याप्तकाल मे होता है इसमे उद्योत कम कर स्वर मिलाने से ३० प्रकृतियो का उदय सामान्य मनुष्य और उपरोक्त जीवो के भाषा-पर्याप्तकाल मे होता है। उपरोक्त २५ मे आगोपाग १ प्रथम सहनन १ परघात १ शुभचाल १ तीर्थकर मिलाने से ३० प्रकृतियो का उदय तीर्थंकर समुदघातकेवली के श्वासोश्वासपर्याप्तकाल मे होता है इसमे तीर्थकर कम कर स्वर मिलाने से ३० प्रकृतियो का उदय सामान्य समुदघातकेवली के भाषापर्याप्तकाल मे होता है। इसतरह ३० के ४ उदयस्थान होते है।

उपरोक्त ३० मे तीर्थंकर मिलाने से ३१ प्रकृतियों का उदय तीर्थंकरकेवली के भाषापर्याप्तकाल मे होता है। दोइन्द्रियादि की ३० मे स्वर मिलाने से ३१ प्रकृतियो का उदय दोइन्द्रियादि-तिर्यचो के भाषापर्याप्तकाल मे होता है। इसतरह ३१ के २ उदय-स्थान होते है।

मनुष्यगति १ पचेन्द्रिय १ सुभग १ आदेय १ यश १ त्रस १ बादर १ पर्याप्त १ तीर्थंकर १ इसतरह ९ प्रकृतियो का उदय तीर्थंकरकेवली के अयोगगुणस्थान में होता है इसमें तीर्थंकरप्रकृति कम करने से ८ प्रकृतियो का उदय सामान्यकेवली के अयोगगुणस्थान में होता है ॥५७९-५८८॥

नामकर्म के उदयस्थान, स्वामी और काल दर्पण

	एके	अ त्र.	सं त्र स	म.	सा.के.	ती के	आहा.	देव	नारकी
का	२१	२१	२१	२१	२०	२१	०	२१	२१
अ	२४	२६	२६	२६	२६	२७	२५	२५	२५
प.	२५–२६	२८-२९	२८–२९	२८	२८	२९	२७	२७	२७
श्वा	२६–२७	२९-३०	२९–३०	२९	२९	३०	२८	२८	२८
भा	०	३१	३०–३१	३०	३०	३१	२९	२९	२९

नामकर्म का उदयस्थान दर्पण

सामानकेवली के कार्माणकाल	२०	एकेन्द्रिय के अपर्याप्तकाल मे	२६
चारोगति की परभवगति मे	२१	एकेन्द्रिय के श्वासकाल में	२६
तीर्थंकर के कार्माणकाल मे	२१	सामान्यकेवलीत्रसो के अपर्याप्तकाल में	२६
एकेन्द्रिय के अपर्याप्तकाल मे	२४	अहारक के पर्याप्तकाल मे	२७
एकेन्द्रिय के पर्याप्तकाल मे	२५	तीर्थंकरसमुदघातकाल मे	२७
आहारक के अपर्याप्तकाल मे	२५	देव-नारकी के पर्याप्तकाल मे	२७
देव-नारकी के अपर्याप्तकाल मे	२५		

एकेन्द्रिय के श्वासकाल मे	२७	देव-नारकी के भाषाकाल मे	२६
सामान्यकेवली और त्रसो के पर्याप्तकाल मे	२८	त्रसतिर्यच के श्वासकाल मे	३०
आहारक के श्वासकाल मे	२८	त्रसो के भाषाकाल मे	३०
देव-नारकी के श्वासकाल मे	२८	तीर्थंकर के श्वासकाल मे	३०
सामान्यकेवलीकेश्वासकालमे	२६	सामान्यकेवलीकेभाषाकालमे	३०
त्रसो के पर्याप्तकाल मे	२६	तीर्थंकर के भाषाकाल मे	३१
त्रसो के श्वासकाल मे	२६	त्रसतिर्यचो के भाषाकाल मे	३१
तीर्थंकर के पर्याप्तकाल मे	२६	तीर्थंकरकेवली	६
आहारक के भाषाकाल मे	२६	सामान्यकेवली	८

आगे नामकर्म के उदयस्थानो मे सामान्य भग दिखाते है ।

संठाणे संहडणे विहायजुम्मे य चरिमचदुजुम्मे ।
अविरुद्धेक्कदरादो उदयट्ठाणेसु भंगा हु ॥५८६॥

सँहनन चिन्ह रु गति युगल, अंत चार युग मान ।
इक मिल इक इक गहें से, भंग उदय थल जान ॥५८६

अर्थ—नामकर्म के जिस उदयस्थान मे सस्थान ६ सहनन ६ चाल २ सुभग २ स्वर २ आदेय २ और यश २ मे से विरोध रहित १-१ का उदय होता है उस उदयस्थान मे ६, ६, २, २, २, २, २ को परस्पर गुणा करने से ११५२ भग होते हैं और जिस स्थान मे सस्थानादि का कम उदय होता है उस स्थान मे भग कम होते हैं ॥५८६॥

आगे ४१ जीव भेदो मे नामकर्म के भग दिखाते हैं ।

तत्थासत्था णारयसाहारणसुहुमगे अपुण्णे य ।
सेसेगविगलऽसण्णीजुदठाणे जस जुगे भंगा ॥५६०॥
सण्णिम्मि मणुस्सम्मि य ओघेक्कदरं तु केवले वज्जं ।
सुभगादेज्जजसाणि य तित्थजुदे सत्थमेदीदि ॥५६१॥
देवाहारे सत्थं कालवियप्पेसु भंगमाणेज्जो ।
वोच्छिण्णं जाणित्ता गुणपडिवण्णेसु सव्वेसु ॥५६२॥

अशुभ उदय साधा नरक, सूक्ष्म ऊंन के संग ।
शेष एक विकला अमन, यश युग से दो भंग ॥५८०
समन रु नर के मूलवत्, जिनके यश आदेय ।
सुभग वज्र से तीर्थ युत, शुभ का उदय जु वेय ॥५८१
सुराहार में शुभ उदय, सब क्षण में इक भंग ।
लख विछुत्ति गुण धार में, शेष सर्व लख भंग ॥५८२

अर्थ—उपरोक्त उदयप्रकृतियो मे से नारकी, साधारणवनस्पतिकाय, सब सूक्ष्म जीव और लब्धिअपर्याप्तको मे अशुभ प्रकृतियो का उदय है इसकारण उनके उदयस्थानो मे १–१ भग है बादरपर्याप्त-पृथ्वी, जल, अग्नि, पवन, प्रत्येकवनस्पतिकाय विकलेन्द्रिय और असैनीपंचेन्द्रियजीवों मे भी अशुभ प्रकृतियो का उदय है किन्तु साथ में यश अथवा अयश का उदय होने से उनके उदयस्थानो मे २–२ भंग है सैनीतिर्यंच और मनुष्यो में सस्थानादि का उदय होने से दोहा न० ५८९ के अनुसार उनके उदय स्थानो मे यथासभव ११५२–११५२ भग है सामान्यकेवली के वज्रवृषभनाराचसहनन, सुभग, आदेय और यश के उदय के साथ सस्थान ६ चाल २ स्वर

२ मे १–१ का उदय होने से उनके सब उदयस्थानो मे २४–२४ भग है तीर्थंकरकेवली के सब शुभ प्रकृतियो का उदय होने से उनके सब उदयस्थानों मे १–१ भग है चार प्रकार के देवों मे और आहारक शरीर वाले के सब शुभ प्रकृतियो का उदय होने से उनके सब उदयस्थानो मे १–१ भग है तथा सासादनादिकगुणस्थानवालो के कार्माणादिक कालो मे उदयविछुत्ति भई प्रकृतियो को जानकर शेष प्रकृतियो मे यथासंभव भग होते है ॥५९०-५९२॥

आगे २० आदि से लेकर सब उदयस्थानो के भग दिखाते है।

वीसादीणं भंगा इगिदालपदेसु संभवा कमसो ।
एक्कं सट्ठी चेव य सत्तावीसं य उगुवीसं ॥५९३॥
वीसुत्तरछच्चसया बारस पण्णत्तरीहि संजुत्ता ।
एक्कारससयसंखा सत्तरससयाहिया सट्ठी ॥५९४॥
ऊणत्तीससयाहियएक्कावीसा तदोवि एकट्ठी ।
एक्कारससयसहिया एक्केक्क विसरिसगा भंगा ॥५९५॥

वीस आदि के भंग हैं, इकतालिस के शीश ।
क्रम से इक अरु साठि हैं, सत्ताइस उन्नीस ॥५९३॥
छै सौ ऊपर वीस हैं, जोडो चउ अरु आठ ।
ग्यारह सौ पिचहत्तरा, अरु सत्रह सौ साठ ॥५९४॥
उनतिस सौ इक्कीस हैं, ग्यारह सौ इक साठ ।
एक और इक भंग है, अपुनुरुक्त का ठाठ ॥५९५॥

अर्थ—४१ जीवभेदो की अपेक्षा यथासभव २०, २१, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ९, ८ के उदयस्थानो मे क्रमसे

१, ६०, २७, १९, ६२०, १२, ११७५, १७६०, २९२१, ११६१, १, १ भग है इसप्रकार सब ७७५८ भंग है ॥५९३-५९५॥

भावार्थ—२० के स्थान में सामान्यकेवली के कार्मणकाल में १ भग है २१ के स्थान में देव का १ तीर्थकर का १ भग है। मनुष्य और सैनीतिर्यंच के सुभग, आदेय और यशयुगल के वदलने से ८-८ भग है। बादरस्थावर पांच और त्रस असैनी चार के यश युगल के वदलने से १०-८ भग होते हैं। सूक्ष्मस्थावर ५ और वादरसाधारण वनस्पति १ इसतरह छै के ६ भग होते हैं। नारकी का १ भंग होता है और लब्धिअपर्याप्त १७ के १७ भंग कार्मणकाल में होते हैं। इसतरह २१ के स्थान में ६० भंग होते है।

२४ के स्थान में बादरस्थावर ५ के यशयुगल के वदलने से १० भग होते है। सूक्ष्मस्थावर ५ बादरसाधारणवनस्पतिकाय १ और एकेन्द्रियलब्धिअपर्याप्त ११ इसतरह १७ जीवों के १७ भग होते है १७+१० मिलकर २४ के स्थान में २७ भग अपर्याप्त-काल मे होते है।

२५ के स्थान में आहारक का १ देव का १ और नारकी के अपर्याप्तकाल में १ बादरस्थावर ५ के १० सूक्ष्मस्थावर के ५ और बादरसाधारणवनस्पति के पर्याप्तकाल में १ इसतरह २५ के स्थान में १९ भग होते है।

२६ के स्थान में त्रसअसैनी ४ के यशयुगल के वदलने से ८ भग होते है। सैनीतिर्यच और मनुष्य के सस्थान ६ सहनन ६ सुभग, आदेय और यशयुगल के वदलने से २८८-२८८ भग होते है। सामान्यकेवली के सस्थान वदलने से ६ भग होते है लब्धि-अपर्याप्त ६ के ६ भग होते है। शरीरपर्याप्तकाल मे बादरपृथ्वी-आताप अथवा उद्योतसहित के यशयुगल के बदलने से ४ भग होते है। शरीरपर्याप्तकाल मे वादरजल और प्रत्येकवनस्पति के यश-युगल के बदलने से ४ भग होते है तथा श्वासोश्वासकाल मे वादर-स्थावर के उपरोक्त प्रकार १० भग होते है और सूक्ष्म ५ वादर-

साधारणवनस्पति १ के ६ भग होते है। इसप्रकार २६ के स्थान में ६२० भग होते है।

२७ के स्थान मे तीर्थंकरकेवली के अपर्याप्तकाल मे १ भग, आहारक का १ भग, देव का १ भग, नारकी का १ भग, बादर-पृथ्वी, जल और प्रत्येक वनस्पति के पर्याप्तकाल मे उपरोक्त प्रकार ८ भग होते हैं। इसतरह २७ के स्थान मे १२ भग होते हैं।

२८ के स्थान मे सामान्यकेवली के सस्थान और चालयुगल के वदलने से १२ भग होते हैं। सैनीतिर्यच और मनुष्य के सस्थान ६ सहनन ६ सुभग, आदेय, यश और चालयुगल के बदलने से ५७६-५७६ भग होते हैं और त्रसअसैनी के पर्याप्तकाल मे ८ देव का १ नारकी का १ आहारक वाले के श्वासकाल मे १ इस तरह २८ के स्थान मे ११७५ भग होते हैं।

२९ के स्थान मे सामान्यकेवली के १२ तीर्थकरकेवली का १ उद्योत सहित सैनी तिर्यच, उद्योतरहितसैनी तिर्यच और मनुष्य के उपरोक्त प्रकार ५७६–५७६ उद्योतरहित औरसहित त्रस असैनियो के उपरोक्त प्रकार ८, ८, देव का १ आहारकवाले का १ नारकी का१ इसतरह २९ के स्थान मे १७६० भग होते है।

३० के स्थान मे श्वासोश्वासकाल मे तीर्थंकरकेवली का १ उद्योत सहित सैनीतिर्यंच के उपरोक्त प्रकार ५७६ त्रस असैनी के उपरोक्त प्रकार ८ भाषाकाल मे सामान्यकेवली के सस्थान छै स्वर और चाल युगल के बदलने से २४ सैनीतिर्यच और मनुष्य के दोहा नं० ५८९ के अनुसार ११५२–११५२ और त्रसअसैनी के उपरोक्त प्रकार ८ इसतरह ३० के स्थान मे २९२१ भग होते है।

३१ के स्थान मे तीर्थंकरकेवली १ सैनीतिर्यच के उपरोक्त प्रकार ११५२ और त्रसअसैनी के उपरोक्त प्रकार ८ इसप्रकार ३१ के स्थान मे ११६१ भग होते है।

९–८ के स्थान मे तीर्थंकरकेवली का १ और सामान्यकेवली का १ इस तरह ९–८ के स्थान मे २ भग होते हैं इसतरह सब

७७५८ अपुनरुक्त भग होते है। ये किस काल में होते है इसके लिये दोहा न० ५८८ के नीचे लिखे हुये यत्र से देखना चाहिये ॥५६३—५६५॥

आगे छोडने योग्य पुनरुक्त भंग दिखाते है।

सामण्णकेवलिस्स समुग्घादगदस्स तस्स वचि भगा।
तित्थस्सवि सगभंगा समेदि तत्थेक्कमवणिज्जो ॥५६६॥

सादा केवलि वच समय, समुद्घात के थान।
तीर्थ थान में एक इक, भंग समान पिछान ॥५६६॥

अर्थ—सामान्यकेवली के भापापर्याप्तिकाल मे भाषापर्याप्ति-समुदघात के समय ३० के स्थान में २४–२४ भग है तथा तीर्थकर केवली के भाषापर्याप्ति और भाषापर्याप्ति समुदघात समय ३१ के स्थान में १–१ भग है इनमे केवली की भापा पर्याप्ति के २५ ग्रहण किये हैं और शेष २५ पुनरुक्त होने के कारण छोड दिये है ॥५६६॥

आगे गुणस्थानों में पुनरुक्तापुनरुक्त दिखाते है।

णारयसण्णिमणुस्ससुराणं उवरिमगुणाण भंगा जे।
पुणरुक्ता इदि अवणिय भणिया मिच्छस्स भंगेसु ॥५६७॥

नारक सैनी मनुष सुर, ऊपर जो गुण भंग।
वे पुनरुक्ता भंग हैं, कहे वाम के संग ॥५६७॥

अर्थ—नारकी, सैनीतिर्यच, मनुष्य और देव के सासादनादि गुणस्थानो मे जो भग है वे मिथ्यात्वगुणस्थान के समान होनें से पुनरुक्त है इसलिये उनको छोडकर केवल मिथ्यात्वगुणस्थान के भगो में ही उनको कहा गया है ॥५६७॥

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान में तीर्थकर के १ भग बिना २१ के स्थान में ५८ भंग हैं। २४ के स्थान में २७ भंग हैं। आहारक

के १ भग बिना २५ के स्थान मे १८ भंग है। समुदघातकेवली के ६ भगो के बिना २६ के स्थान मे ६१४ भग है। आहारक और तीर्थंकर के २ भग बिना २७ के स्थान मे १० भग है। सामान्य केवली के १२ और आहारक का १ बिना २८ के स्थान मे ११६२ भग है। सामान्यकेवली के १२ तीर्थंकर का १ आहारक का १ इसतरह १४ बिना २९ के स्थान मे १७४६ भग है। सामान्य केवली के २४ तीर्थंकर का १ इन २५ विना ३० के स्थान मे २८९६ भग है। तीर्थंकर का १ बिना ३१ के स्थान मे ११६० भग है। इसतरह ७६९२ भग है।

सासादनगुणस्थान मे २१ के स्थान मे वादरपृथ्वी, जल और प्रत्येकवनस्पति के ६ त्रस असैनी के ८ सैनीतिर्यंच के ८ मनुष्य के ८ देव का१ इसतरह ३१ भग है २४ के स्थान मे बादरपृथ्वी, जल और प्रत्येक वनस्पति के ६ भग है २५ के स्थान मे देव का १ भग है २६ के स्थान मे त्रसअसैनी के ८ सैनीतिर्यंच के २८८ और मनुष्य के २८८ इसतरह ५८४ भग है २९ के स्थान मे देव का १ नारकी का १ भग है ३० के स्थान मे सैनीतिर्यंच के ११५२ और मनुष्य के ११५२ भग है ३१ के स्थान मे सैनीतिर्यच के ११५२ भग है इस-तरह सब ४०८० भग है।

मिश्रगुणस्थान मे २९ के स्थान मे देव का १ नारकी का १ भग है ३० के स्थान मे सैनीतिर्यच के ११५२ और मनुष्य के ११५२ इसतरह २३०४ भगा है ३१ के स्थान मे सैनीतिर्यंच के ११५२ भग है इसतरह ३४५८ भग है।

अविरतगुणस्थान मे २१ के स्थान मे चारगति के ४ भग है २५ के स्थान मे देव का १ नारकी का १ भग है २६ के स्थान मे भोगभूमि के तिर्यच का १ कर्मभूमि के सैनीतिर्यंच के सस्थान और सहनन के वदलने से ३६ भंग है २७ के स्थान मे प्रथम नरक का १ स्वर्ग के देव का १ भग है २८ के स्थान मे भोगभूमि के तिर्यच का १ प्रथमनरक का १ स्वर्ग के देव का १ मनुष्य के सस्थान,

संहनन और चाल के वदलने से ७२ इस तरह ७५ भंग है २६ के स्थान मे भोगभूमि के तिर्यच और मनुष्य के २ देव का १ नारकी का १ कर्मभूमि के मनुष्य के उपरोक्त प्रकार ७२ इसतरह ७६ भग है ३० के स्थान में भोगभूमि के तिर्यच का १ कर्मभूमि के सैनीतिर्यच और मनुष्य के ११५२–११५२ भग है ३१ के स्थान में सैनीतिर्यच के ११५२ भग है इसतरह सव ३६५३ भग है।

देशविरतगुणस्थान में ३० के स्थान मे सैनीतिर्यच और मनुष्य के सस्थान संहनन, चाल और स्वर के वदलने से १४४-१४४ भग हैं ३१ के स्थान मे सैनीतिर्यच के उपरोक्त प्रकार १४४ भग है इसतरह सब ४३२ भग है।

प्रमत्तगुणस्थान में २५ के स्थान मे आहारक-अपर्याप्त का १ भग है २७ के स्थान मे आहारपर्याप्त का १ भग है २८ के स्थान मे आहारश्वासोश्वास का १ भग है २६ के स्थान मे आहारकभापा का १ भग है ३० के स्थान मे मनुर्ष्य के औदारिकभापा के उपरोक्त प्रकार १४४ भग है इस प्रकार १४८ भग है।

अप्रमत्तगुणस्थान, मे ३० के स्थान में मनुप्य के उपरोक्त प्रकार १४४ भग है।

उपशमश्रेणी के ४ गुणस्थानों मे ३० के स्थान में मनुष्य के सस्थान ६ सहनन ३ चाल २ और स्वर २ के वदलने से ७२-७२ भग है।

क्षपकश्रेणी के ४ गुणस्थानो में ३० के स्थान मे मनुष्य के सस्थान ६ सहनन १ चाल २ और स्वर २ के वदलने से २४-२४ भग है।

सयोगगुणस्थान मे २० के स्थान में १ भग है २१ के स्थान मे १ भग है २६ के स्थान मे सामान्यकेवली के संस्थान के वदलने से ६ भग है २७ के स्थान मे तीर्थंकर का १ भग है २८ के स्थान मे सामान्यकेवली के सस्थान ६ और चाल २ के वदलने से १२ भग है २६ के स्थान में तीर्थंकर का १ सामान्यकेवली के १२

भंग हैं ३० के स्थान मे तीर्थंकर का १ सामान्यकेवली के संस्थान ६ चाल २ और स्वर २ के बदलने से २४ भग हैं ३१ के स्थान में तीर्थंकर का १ भग है इसतरह सब ६० भग है।

अयोगगुणस्थान मे ९ के स्थान मे १ भग है और ८ के स्थान मे १ भग है इस तरह सब २ भंग है सब गुणस्थानो में पुनुरुक्त और अपुनुरुक्त मिलकर २००५३ भग है ॥५९७॥

नामकर्म के गुणस्थानों में उदयस्थान दर्पण

स्थान	भंग											जोड
	मि.	सा.	मि.	अ	दे	प्र.	अ.	उ. श्रे.	क्ष श्रे	स	अ.	
२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
२१	५९	३१	०	४	०	०	०	०	०	१	०	९५
२४	२७	६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३३
२५	१८	१	०	२	०	१	०	०	०	०	०	२२
२६	६१४	५८४	०	३७	०	०	०	०	०	६	०	१२४१
२७	१०	०	०	२	०	१	०	०	०	१	०	१४
२८	११६२	०	०	७५	०	१	०	०	०	१२	०	१२५०
२९	१७४६	२	२	७६	०	१	०	०	०	१३	०	१८४०
३०	२८९६	२३०४	२३०४	२३०५	२८८	१४४	१४४	२८८	९६	२५	०	१०७९४
३१	११६०	११५२	११५२	११५२	१४४	०	०	०	०	१	०	४७६१
९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१
८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१
जो	७६९२	४०८०	३४५८	३६५३	४३२	१४८	१४४	२८८	९६	६०	२	२००५३

आगे अपुनुरुक्त भंगों का परिमाण दिखाते हैं ।

अडवण्णा सत्तसया सत्तसहस्सा य होंति पिंडेण ।
उदयट्ठाणे भंगा असहायपरक्कमुद्दिट्ठा ॥५९८॥

सात सहस अरु सात सौ, अट्ठावन धिक मान ।
उदय थान के भंग सब, पूर्व कहे पहिचान ॥५९८॥

अर्थ—नामकर्मसम्बन्धी २० आदि के उपरोक्त १२ उदयस्थानो मे मिथ्यात्वगुणस्थान के ७६९२ प्रमत्तगुणस्थान के ४ सयोगगुणस्थान के ६० अयोगगुणस्थान के २ सब मिलकर ७७५८ अपुनुरुक्त भग हैं और १२२९५ पुनुरुक्तभंग है सब मिलकर २००५३ होते हैं ॥५९८॥

आगे नामकर्म के सत्त्वस्थान दिखाते हैं ।

तिदुइगिणउदी णउदी अडचउदोअहियसीदि सीदी य ।
ऊणासीदट्ठत्तरि सत्तत्तरि दस य णव सत्ता ॥५९९॥

त्रय दो इक नव्वें नवे, अठ चउ दो असि अस्सि ।
उनसी अठतर सततरा, दश नव सत्ता राशि ॥५९९॥

अर्थ—नामकर्म के ९३, ९२, ९१, ९०, ८८, ८४, ८२, ८०, ७९, ७८, ७७, १०, ९ प्रकृतिरूप १३ सत्वस्थान होते हैं ॥५९९॥

आगे उपरोक्त स्थानों की प्रकृतियों को दिखाते हैं ।

सव्वं तित्थाहारुभऊणं सुरणिरयणरदुचारिदुगे ।
उव्वेल्लिदे हदे चउ तेरे जोगिस्स दसणवयं ॥६००॥

गयजोगस्स दु तेरे तदियाउगगोदइदि विहीणेसु ।
दस णामस्स य सत्ता णव चेव य तित्थहीणेसु ॥६०१॥

सव जिन हारा उभय सुर, नारक नर उद्वेल ।
चउ थल में तेरह घटें, दश नव अयोग केल ॥६००॥
तेरह में से वेदनी, आयू गोत्रविहीन ।
नाम सत्व दश तीर्थ विन, नव गत योगी चीन ॥६०१॥

अर्थ—नामकर्म की सब प्रकृतिरूप ९३ का प्रथम सत्वस्थान होता है इनमे तीर्थंकर कम करने से ९२ का सत्वस्थान होता है ९३ के मे आहारक २ कम करने से ९१ का सत्वस्थान होता है ९३ के मे तीर्थंकर १ और आहारक २ कम करने से ९० का सत्वस्थान होता है इसमे देवगति २ की उद्वेलना होने पर ८८ प्रकृतियो का सत्वस्थान होता है इसमे नरकगति ४ की उद्वेलना होने पर ८४ प्रकृतियो का सत्वस्थान होता है इसमे मनुष्यगति २ की उद्वेलना होने पर ८२ प्रकृतियो का सत्वस्थान होता है ९३, ९२, ९१, ९० के स्थान मे नरकगति २ तिर्यंचगति २ इन्द्रिय ४ उद्योत १ आताप १ साधारण १ सूक्ष्म १ स्थावर १ इन १३ प्रकृतियो को कम करने से क्रम से ८०, ७९, ७८, ७७ प्रकृतियो के ४ सत्वस्थान होते हैं मनुष्यगति २ पचेन्द्रिय १ सुभग १ त्रस १ बादर १ पर्याप्त १ आदेय १ यश १ तीर्थंकर १ इन १० प्रकृतिरूप १ सत्वस्थान होता है इसमे तीर्थंकर कम करने से ९ प्रकृति रूप १ स्थान होता हैं इसप्रकार १३ सत्वस्थानो मे प्रकृतिया होती हैं ॥६००-६०१॥

आगे मिथ्यात्वगुणस्थान मे उद्वेलना दिखाते हैं ।

गुणसंजादपयडिं मिच्छे बंधुदयगंधहीणम्मि ।
सिसुव्वेल्लणपयडिं णियमेणुव्वेल्लदे जीवा ॥६०२॥

भ्रम में बंध न उदय है, गुण सँग उपजें और ।
शेष प्रकृति उद्वेल की, पलटे भ्रम के ठोर ।।६०२।।

अर्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे जिन प्रकृतियों की वध अथवा उदय की वासना भी नही है ऐसी सम्यक्त्वादिगुण से उत्पन्न आहारक २ सम्यक्प्रकृति १ और मिश्रप्रकृति १ इन ४ प्रकृतियो की तथा शेष उद्वेलना प्रकृतियों की उद्वेलना यह जीव मिथ्यात्व-गुणस्थान मे करता है ।।६०२।।

आगे उन प्रकृतियो के उद्वेलना का क्रम दिखाते है ।

सत्थत्तादाहारं पुव्वं उव्वेल्लदे तदो सम्मं ।
सम्मामिच्छं तु तदो एगो विगलो य सगलो य ।।६०३।।

जीव एक विकला सकल, बदले शुभ आहार ।
पीछे समकित मिश्र का, फिर सुर आदि सँभार ।।६०३

अर्थ—आहारक की दोनो प्रकृतिया शुभ है इसलिये चारो गति के तीव्रमिथ्यादृष्टि जीव प्रथम इन दोनो प्रकृतियो की उद्वेलना करते है पश्चात् सम्यक्प्रकृति की इसके पश्चात् मिश्रप्रकृति की उद्वेलना करते है इसके पश्चात् एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय और सकले-न्द्रिय जीवदेवगति आदि की उद्वेलना करते है ।।६०३।।

आगे उस उद्वेलना का काल दिखाते है ।

वेदगजोग्गे काले आहारं उवसमस्स सम्मत्तं ।
सम्मामिच्छं चेगे वियले वेगुव्वछक्कं तु ।।६०४।।

वेदक क्षण आहार की, शम क्षण शम सम्यक्त्व ।
विक्रिय छै की वेलना, एक विकल जिय कत्व ।।६०४।।

अर्थ—वेदक योग्य काल में आहारक २ की उद्वेलना होती है उपशम काल मे सम्यक्प्रकृति और मिश्रप्रकृति की उद्वेलना होती है और जब यह जीव एकेन्द्रियं और विकलेन्द्रिय की पर्याय मे जाता है तब विक्रियक ६ की उद्वेलना होती है ॥६०४॥

आगे उन दोनो के काल का परिमाण दिखाते हैं।

उदधिपुधत्तं तु तसे पल्लासंखूणमेगमेयक्खे ।
जाव य सम्मं मिस्सं वेदगजोग्गो य उवसमस्सतदो ॥६०५॥

साम्य मिश्र थिति दधिहिं कम, पल्य असंख्ये भाग।
इक के त्रस के पृथक दधि, वेदक शम क्षण जाग॥६०५

अर्थ—त्रस जीवो के सम्यक्प्रकृति और मिश्रप्रकृति की सत्तारूपस्थिति पूर्व बधी थी वह पृथक्त्वसागर बराबर शेष रहे तब वेदक सम्यक्त्व योग्य काल कहलाता है और इससे भी वह सत्तारूपस्थिति कम हो जावे तब उपशमसम्यक्त्व योग्य काल कहलाता है तथा एकेन्द्रियजीव के पल्य के असंख्यातवे भाग कम एक सागर बराबर काल शेष रह जावे तब वेदकसम्यक्त्व योग्यकाल कहलाता है और इससे भी वह सत्तारूप स्थिति कम हो जावे तब उपशम सम्यक्त्वयोग्य काल कहलाता है ॥६०५॥

आगे अग्नि और पवनकाय के योग्य उद्वेलना प्रकृतियां दिखाते है।

तेउदुगे मणुवदुगं उच्चं उव्वेल्लदे जहण्णिदरं ।
पल्लासंखेज्जंदिमं उव्वेल्लणकालपरिमाणं ॥६०६॥

अग्नि पवन के मनुष दुक, उच्च वेलना मान ।
पल्य असंख्ये भाग वत्, लघु वर क्षण परिमाण ॥६०६॥

अर्थ—जब जीव अग्नि और पवनकाय में उत्पन्न होता है तब उसके मनुष्यगति २ और ऊंचगोत्र का बंध हो तो उनकी उद्वेलना हो जाती है जबकि उनकी स्थिति का परिमाण पल्य के असंख्यातवें भाग बराबर शेष हो ॥६०६॥

आगे उपरोक्त आशय को स्पष्ट दिखाते है।

पल्लासंखेज्जदिमं ठिदिमुव्वेल्लदि मुहुत्तअंतेण ।
संखेज्जसायरठिदिं पल्लासंखेज्जकालेण ॥६०७॥

पल्य असंख्ये थिती को, वेलैं मुहूर्त हीन ।
संख्य उदधि थिति के लिये, पल्य असंख्ये चीन ॥६०७॥

अर्थ—पल्य के असंख्यातवे भाग बराबर स्थिति की उद्वेलना अन्तमुहूर्त में करता है तो सख्यातसागर बराबर मनुष्यगतियुगल की स्थिति की उद्वेलना पल्य के असख्यातवे भाग बराबर काल में कर सकता है ऐसा गणित द्वारा निकलता है ॥६०७॥

आगे सम्यक्त्व का ग्रहण अनेकबार दिखाते हैं।

सम्मत्तं देसजमं अणसंजोजणविहिं य उक्कस्सं ।
पल्लासंखेज्जदिमं वारं पडिवज्जदे जीवो ॥६०८॥

उपशम वेदक देश-व्रत, अन संयोजन मान ।
पल्य असंख्ये भागवत्, ग्रहण त्याग वर जान ॥६०८॥

अर्थ—प्रथमोपशमसम्यक्त्व, वेदक (क्षयोपशमिक) सम्यक्त्व, देशविरत और अनंतानुबंधी कषाय की विसंयोजना अधिक से अधिक पल्य के असख्यातवे भाग में जितने समय होतें है उतनी वार ग्रहण और त्याग कर सकता है अत मे सिद्धपद पाता है ॥६०८॥

आगे उपशमश्रेणी, क्षपकश्रेणी और सयमग्रहण का नियम दिखाते है।

चत्तारि वारमुवसमसेढिं समरुहदि खविदकम्मंसो।
बत्तीसं वाराइं संजममुवलहिय णिव्वादि ॥६०६॥

चार-बार उपशम चढ़े, पीछे कर्म नासय।
संयम बत्तिस बार धर, अंत मोक्ष को पाय ॥६०८॥

अर्थ—उपशयश्रेणी अधिक-से-अधिक चार वार चढ सकता है तत्पश्चात् क्षपकश्रेणी चढ मोक्ष पाता है। सयम अधिक-से-अधिक ३२ वार धर सकता है अत मे मोक्ष ही जाता है ॥६०६॥

आगे गुणस्थानो मे नामकर्म के सत्वस्थान दिखाते है।

सुरणरसम्मे पढमो सासणहीणेसु होदि वाणउदी।
सुरसम्मे णरणारयसम्मे मिच्छे य इगिणउदी ॥६१०॥
णउदी चदुग्गदिम्मि य तेरसखवगोत्ति तिरियणरमिच्छे।
अडचउसीदी सत्ता तिरिक्खमिच्छम्मि वासीदी ॥६११॥
सीदादिचउट्ठाणा तेरसखवगादु अणुवसमगेसु।
गयजोगस्स दुचरिमं जाव य चरिमम्हि दसणवयं ॥६१२॥

दृग सुर नर के प्रथम थल, बानव का त्रिन सान।
दृग सुर दृग भ्रम नर नरक, इक्यानव का जान ॥६१०॥
सब के तेरह क्षपक तक, नव्वे नर पशु नाम।
अट्ठासी चौरासि का, ब्यासी पशु के वाम ॥६११॥

अस्सी से चउ थान तक, तेरह क्षय से लेय।
दो क्षण अंत अयोग तक, दश नव अंत गिनेय॥६१२॥

अर्थ—९३ का सत्वस्थान अविरतसम्यक्दृष्टि देव और अविरतादिगुणस्थानवाले मनुष्य के होता है। ९२ का सत्वस्थान सासादन विना शेष गुणस्थानों में चारोंगति के जीवों के होता है तथा ९१ का सत्वस्थान सम्यक्दृष्टिदेव, सम्यक्दृष्टि अथवा मिथ्या-दृष्टि मनुष्य और नारकी के होता है। ९० का सत्वस्थान अनि-वृत्तिकरण गुणस्थान के प्रथम भाग तक सब जीवों के होता है। ८८-८४ का सत्वस्थान मिथ्यादृष्टि तिर्यंच और मनुष्य के होता है। ८२ का सत्वस्थान मिथ्यादृष्टि तिर्यंच के होता है। ८०-७९-७८-७७ के सत्वस्थान अनिवृत्तिकरण गुणस्थान के प्रथम भाग से लेकर अयोगगुणस्थान के अत के दो समयो मे से प्रथम समय तक होते है तथा १०-९ के सत्वस्थान अयोगगुणस्थान के अत तक होते हैं ॥६१०-६१२॥

आगे ४१ जीवभेदों में सत्वस्थान दिखाते है।

णिरये वा इगिणउदी णउदी भूआदिसव्वतिरियेसु।
वाणउदी णउदी अडचउवासीदी य होंति सत्ताणि॥६१३॥
वासीदिं वज्जित्ता वारसठाणाणि होंति मणुवेसु।
सीदादिचउट्ठाणा छट्ठाणा केवलिदुगेसु॥६१४॥
समविसमट्ठाणाणि य कमेण तित्थिदरकेवलीसु हवे।
तिदुणवदी आहारे देवे आदिमचउक्कं तु॥६१५॥
वाणउदिणउदिसत्ता भवणतियाणं य भोगभूमीणं।
हेट्ठिमपुढविचउक्कभवाणं य य सासणे णउदी॥६१६॥

नरक हिं वानव से नवे, भू से सब पशु मान।
व्यासि चुरासी अठासी, नवे वानवे जान ॥६१३॥
व्यासी के स्थान तज, नर के बारह थान।
अस्सी चउ अरु असी छै, योग अयोगी जान॥६१४॥
क्रम से सम अरु विषय थल, तीर्थंकर सामान्य।
आहार हिं तय दो नवे, सुरहि आदि चउ जान्य॥६१५॥
वानव नव्वे सत्व है, भवनत्रक भू भोग।
नरक चार से सात तक, सासा नव्वे योग॥६१६॥

अर्थ—नारकी जीवो मे नामकर्म के ९२-९१-९० के ३ सत्वस्थान होते है। पृथ्वी से लेकर सब तिर्यचो मे ९२-९०-८८-८४-८२ के ५-५ सत्वस्थान होते है। मनुष्यो मे ८२ के सत्वस्थान को छोडकर सब सत्वस्थान होते है किन्तु सयोगगुणस्थान मे ८०-७९-७८-७७ के ४ सत्वस्थान होते है और अयोगगुणस्थान मे ८०-७९-७८-७७-१०-९ के ६ सत्वस्थान होते है जिसमे ८०-७८-१० के ३ सत्वस्थान तीर्थंकरकेवली के होते है और ७९-७७-९ के ३ सत्वस्थान सामान्यकेवली के होते है। आहारकऋद्धिधारी के ९३, ९२। के २ सत्वस्थान होते हैं। सब विमानवासी देवो मे ९३-९२-९१-९० के ४ सत्वस्थान होते है। भवनत्रकदेव, भोगभूमि के मनुष्य और तिर्यच और चौथे नरक से सातवें नरक तक के नारकियो मे ९२-९० के २ सत्वस्थान होते हैं। सासादनगुणस्थान के सब जीवो मे ९० का सत्वस्थान होता है। इन स्थानो मे जितनें जीवभेद हैं उतने भग हैं ॥६१३–६१६॥

आगे बधादि के त्रिसयोगी भग दिखाते हैं।

मूलुत्तरपयडीणं बंधोदयसत्तठाणभंगा हु ।
भणिदा हु तिसंजोगे एत्तो भंगे परूवेमो ॥६१७॥

मूलोत्तर प्रकृतियों का, बंध उदय सत्वान ।
थान भंग कहि के कहूँ, संयोगी भंगान ॥६१७॥

अर्थ—इसप्रकार मूल और उत्तरप्रकृतियो के बंध, उदय और सत्वस्थान और भग कहकर अब उनके त्रिसयोगी भगों को कहते है ॥६१७॥

आगे मूलकर्मों मे वधादि के त्रिसयोगी भग दिखाते है ।

अट्ठविहसत्तछव्वंधगेषु अट्ठेव उदयकम्मंसा ।
एयविहे तिवियप्पो एयवियप्पो अबंधम्मि ॥६१८॥

आठ सात छै बंध के, उदय सत्व अठ आठ ।
इक बंधक के भेद त्रय, भेद अबंध न घाट ॥६१८॥

अर्थ—जिसके ज्ञानावरणादि आठकर्मो का, आयु विना सातकर्मो का अथवा मोह विना छै कर्मो का वध होता है उसके उदय और सत्व ८–८ प्रकार का होता है । जिसके केवल सातावेदनी का वंध होता है उसके उदय ७ प्रकार का सत्व ८ प्रकार का अथवा उदय और सत्व दोनो ७–७ प्रकार के अथवा ४–४ प्रकार के होते है तथा जिसके वध एक भी प्रकार का नही होता उसके उदय और सत्व ४–४ प्रकार के होते है ॥६१८॥

मूलकर्मों का त्रिसंयोगी दर्पण

बं०	८	७	६	१	१	१	०
उ०	८	८	८	७	७	४	४
स०	८	८	८	८	७	४	४

आगे उपरोक्त त्रिसयोगी भंगों को गुणस्थानो में दिखाते हैं।

मिस्से अपुव्वजुगले विदियं अपमत्तओत्ति पढमदुगं।
सुहुमादिसु तदियादी बंधोदयसत्तभंगेसु ॥६१६॥

त्रय अठ नव में द्वितीय है, सप्तम तक इक दोय।
सूक्ष्म से तृतियादि हैं, बंधादिक भंगोय ॥६१८

अर्थ—उपरोक्त भगो मे से गुणस्थानो की अपेक्षा मिश्र, अपूर्व-करण औरअनिवृत्तिकरणगुणस्थान मे बध ७ प्रकार का उदय और सत्व ८–८ प्रकार का होता है मिश्र बिना अप्रमत्तगुणस्थान तक बध, उदय और सत्व ८–८ प्रकार का अथवा बध ७ प्रकार का उदय और सत्व ८–८ प्रकार का होता है सूक्ष्मसापरायगुणस्थान मे बध ६ प्रकार का उदय और सत्व ८–८ प्रकार का होता है. उप-शातमोह गुणस्थान मे बध १ प्रकार का, उदय ७ प्रकार का और सत्व ८ प्रकार का होता है क्षीणमोहगुणस्थान मे बध १ प्रकार उदय और सत्व ७–७ प्रकार का होता है सयोगगुणस्थान मे बध १ प्रकार का, उदय और सत्व ४-४ प्रकार का होता है अयोगगुणस्थान मे बध का अभाव, उदय और सत्व ४-४ प्रकार का होता है ॥६१६॥

गुणस्थानों में त्रिसंयोगी भंग दर्पण

	मिथ्या	सासादन	मि०	अ०	दे०	प्र०	अ०
ब०	८–७	८–७	७	८–७	८–७	८–७	८–७
उ०	८–८	८–८	८	८–८	८–८	८–८	८–८
स०	८–८	८–८	८	८–८	८–८	८–८	८–८

	अ०	अ०	सू०	उ०	क्षी०	स०	अ०
ब०	७	७	६	१	१	१	०
उ०	८	८	८	७	७	४	४
स०	८	८	८	८	७	४	४

आगे ज्ञानावरणी और अतराय की प्रकृतियो के भंग दिखाते है.

बंधोदयकम्मंसा णाणावरणंतरायिए पंच ।
बंधोपरमेवि तहा उदयंसा होंति पंचेव ॥६२०॥

बंध उदय अरु सत्व है, ज्ञान विघ्न पन पांच ।
बंध परें इन दोय का, उदय सत्व पन पांच ॥६२०

अर्थ—ज्ञानावरणी और अतराय कर्म की ५–५ प्रकृतियो का बध सूक्ष्मसापरायगुणस्थान तक होता है उदय और सत्व क्षीणमोह-गुण स्थान तक होता है ॥६२०॥

ज्ञानावरणी और अंतराय का त्रिसंयोगी भंग दर्पण

	मि	सा.	मि	अ	दे	प्र.	अ	अ	अ	सू	उ	क्षी
ब०	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०	०
उ०	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
स०	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५

आगे दर्शनावरणी की प्रकृतियो के भग दिखाते है ।

बिदियावरणे णवबंधगेसु चदुपंचउदय णवसत्ता ।
छब्बंधगेसु एवं तह चदुबंधे छडंसा य ॥६२१॥
उवरदबंधे चदुपंचउदय णव छच्च सत्त चदु जुगलं ।
तदियं गोदं आउं विभज्ज मोहं परं वोच्छं ॥६२२॥

द्वितिय कर्म नव बंध में, पन च उदय नव सत्व ।
छै बंधक में इसी विधि, चउ में छै भी सत्व ॥६२१॥
बंध बिना चउ पन उदय, नव छै सत युग चार ।
वेदनि गोत रु आयु कह, पीछे मोह सँभार ॥६२२॥

अर्थ—जिसके दर्शनावरणी की ९ प्रकृतियो का वध होता है उसके ५ का अथवा ४ प्रकृतियो का उदय और ९ प्रकृतियो का सत्व होता है जिसके ६ प्रकृतियो का वध होता है उसके उपरोक्त प्रकार उदय और सत्व होता है जिसके ४ प्रकृतियो का वध होता है उसके ५ का अथवा ४ का उदय और ९ का अथवा ६ प्रकृतियो का सत्व होता है तथा जिसके वध का अभाव है उसके ५ का अथवा ४ का उदय और ९ का अथवा ६ प्रकृतियो का सत्व अथवा उदय और सत्व ४-४ का होता है। इसप्रकार दर्शनावरणी का वर्णन कर आगे क्रमसे वेदनी, गोत्र, आयु और मोह के भगो को कहता हू ॥६२१–६२२॥

दर्शनावरणी का त्रिसंयोगी भंगदर्पण

	मि	सा	मि	अ.	दे	प्र.	अ.
व	९	९	६	६	६	६	६
उ.	४।५	४।५	४।५	४।५	४।५	४।५	४।५
स	९	९	९	९	९	९	९

	अपूर्व				अनि·		सू.		उ	क्षी	
	उ.		क्षा.		उ.	क्षा	उ	क्षा.			
व.	६	४	६	४	४	४	४	४	०	०	०
उ.	४।५	४।५	४।५	४।५	४।५	४।५	४।५	४।५	४।५	४।५	४
स.	९		९		९	६	९	६	९	६	४

आगे वेदनीकर्म के भग दिखाते हैं।

सादासादेक्कदरं बंधुदया होंति संभवट्ठाणे ।
दोसत्तं जोगित्ति य चरिमे उदयगदं सत्तं ॥६२३॥
छट्ठोत्ति चारि भंगा दो भंगा होंति जाव जोगिजिणे ।
चउभंगाऽजोगिजिणे ठाणं पडि वेयणीयस्स ॥६२४॥

सात असाता एक का, बंध उदय जहँ जत्व।
दो का सत्व-सयोग तक, अंत उदय जस सत्व ॥६२३॥

भंग चार हैं प्रमत तक, दो सयोग तक मान।
चार भंग हैं अंत में, वेदनीय के जान ॥६२४॥

अर्थ—साता और असातावेदनी मे से एक काल में एक का बध और उदय होता है वह भी इनके अनुकूल स्थानो मे होता है और सत्व दोनो का मिथ्यात्व से लेकर सयोगगुणस्थान तक होता है तथा अयोगगुणस्थान मे जिसका उदय होता है उसका सत्व होता है। इसकारण मिथ्यात्व से लेकर प्रमत्तगुणस्थान तक किसी जीव के साता का बध और साता का उदय होता है। किसी के साता का बध और असाता का उदय होता है, किसी जीव के असाता का बध और साता का उदय होता है, और किसी जीव के असाता का बध और असाता का उदय होता है सत्व चारो के दोनो का होता हैं इसलिये भग ४ होते है। अप्रमत्त से लेकर सयोगगुणस्थान तक सबके साता का बध होता है किसी के साता का उदय तो किसी के असाता का उदय होता है और सबके सत्व दोनो का होता है। इसकारण भग २ होते है और अयोगगुणस्थान मे बध का अभाव है। किसी के साता का उदय सत्व दोनो का होता है किसी के असाता का उदय और सत्व दोनो का होता है किसी के साता का उदय और साता का सत्व होता है। किसी के असाता का उदय और असाता का सत्व होता है। इसकारण भग ४ होते है इसतरह ४२ भग होते हैं ॥६२३-६२४॥

४ भंग दर्पण

व	सा	सा	अ	अ
उ.	सा.	अ.	सा	अ
स.	दो	दो	दो.	दो.
भ	१	१	१	१

२ भंग त० प०

व	सा.	सा
उ.	सा.	अ.
स.	दो.	दो
भ.	१	१

अयोग के ४ भंग

वं	०	०	०	०
उ.	सा.	अ	सा	अ
स	दो	दो	सा.	अ
भ	१	१	१	१

गुणस्थानों मे वेदनी का भगदर्पण

मि.	सा.	मि	अ	दे	प्र	अ	अ	अ	सू	उ	क्षी	स	अ
४	४	४	४	४	४	२	२	२	२	२	२	२	४

आगे गोत्रकर्म के वधादि स्थान दिखाते है।

णीचुच्चाणेगदरं बंधुदया होंति संभवट्ठाणे।
दोसत्ताजोगित्ति य चरिमे उच्चं हवे सत्तं ॥६२५॥

नीच ऊंच में एक का, बंध उदय जहँ जत्व।
दो का सत्व अयोगि तक, अंत ऊंच का सत्व ॥६२५॥

अर्थ—नीच और ऊच गोत्र मे से एक काल मे एक का वध और उदय होता है वह भी इनके अनुकूल स्थानो मे होता है और सत्वमिथ्यात्व से लेकर अयोगगुणस्थान के अत के दो समयो मे से प्रथम समय तक दोनो का होता है और अत के समय मे केवल ऊच गोत्र का सत्व होता है ॥६२५॥

आगे जीवो मे गोत्रकर्म का सत्व दिखाते है।

उच्चुव्वेल्लिदतेऊ वाउम्मि य णीचमेव सत्तं तु।
सेसिगिवियले सयले णीचं य दुगं य सत्तं तु ॥६२६॥

उच्चुव्वेल्लिदतेऊ वाऊ सेसे य वियलसयलेसु ।
उप्पण्णपढमकाले णीचं एयं हवे सत्तं ॥६२७॥

उच्च उद्वेलित अग्नि दुक, नीच गोत्र का सत्व ।
शेष एक विकला सकल, नीच उभय का सत्व ॥६२६
उच्च उद्वेलित अग्नि दुक, शेष विकल सकलान ।
मर जन्में तो नीच का, सत्व प्रथम क्षण जान ॥६२७

अर्थ—जिन जीवो के ऊचगोत्र की उद्वेलना हो जाती है ऐसे अग्नि और पवनकाय के जीवो के केवल नीच गोत्र का सत्व होता है और शेप एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय जीवो के दोनो का सत्व होता है उपरोक्त नीच गोत्र के सत्ववाले अग्नि और पवनकाय के जीव मरकर एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय अथवा तिर्यंच सकलेन्द्रिय मे जन्म लेते है तो वहाँ जन्म के अन्तर्मुहूर्त काल तक नीचगोत्र का सत्व होता है पश्चात् ऊच गोत्र का वध होने पर दोनो का सत्व होता है ॥६२६-६२७॥

आगे गुणस्थानों मे गोत्रकर्म के भग दिखाते है ।

मिच्छादिगोदभंगा पण चदु तिसु दोण्णि अट्ठठाणेसु ।
एक्केक्का जोगिजिणे दो भंगा होंति णियमेण ॥६२८॥

गोत्र भंग क्रम सास में, पन चउ त्रय में दोय ।
आठ थान में एक इक, अंत विषें दो जोय ॥६२८॥

अर्थ—गोत्रकर्म का मिथ्यात्वगुणस्थान में किसी जीव के ऊच का बध, ऊच का उदय और सत्व दोनो का होता है। किसी जीव के ऊच का बध, नीच का उदय और सत्व दोनो का होता है। किसी जीव के नीच का वध ऊच का उदय और सत्व दोनो का होता है

किसी जीव के नीच का बध, नीच का उदय और सत्व दोनो क
होता है अथवा किसी जीव के नीच का बध, नीच का उदय औ
नीच का सत्व होता है इसतरह ५ भग होते है सासादनगुणस्था
मे अत के भग के विना ४ भग होते है मिश्र, अविरत और दे
विरतगुणस्थान मे किसी जीव के ऊच का बध, ऊच का उद
और सत्व दोनो का होता है अथवा किसी जीव के ऊच का बध
नीच का उदय और सत्व दोनो का होता है इसतरह २-२ भ
होते है प्रमत्त से लेकर सूक्ष्मसापराय गुणस्थान तक सवके ऊच क
बध ऊंच का उदय और सत्व दोनो का होता है इसतरह १-
भग है उपशातमोह से सयोगगुणस्थान तक सबके बध का अभा
ऊच का उदय और सत्व दोनो का होता है इसतरह १-१ भ
है और अयोगगुणस्थान मे किसी जीव के ऊच का उदय और सत
दोनो का होता है अथवा किसी जीव के ऊच का उदय और ऊ
का सत्व होता है इसतरह २ भग होते है सव मिलकर २५ भ
होते हैं ॥६२८॥

५ भंग दर्पण

व	ऊ	ऊ	नी.	नी	नी
उ.	ऊ	नी	ऊ	नी	नी
स	दो	दो	दो.	दो	नी
भ.	१	१	१	१	१

४ भंग दर्पण

ऊ	ऊ	नी	नी
ऊ	नी	ऊं	नी.
दो.	दो	दो	दो
१	१	१	१

२ भंग

ऊ	ऊ
ऊ	नी
दो.	दो
१	१

१

ऊ
ऊ
दो
१

२

०	०
ऊ	ऊं
दो	ऊ.
१	१

गुणस्थानो मे गोत्रकर्म का भंगदर्पण

मि	सा	मि	अ	दे	प्र	अ	अ	ऊ	सू	उ	क्षी	स	अ
५	४	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	२

आगे आयुकर्म के बंध का स्वरूप दिखाते है।

सुरणिरया णरतिरियं छम्मासवसिट्ठगे सगाउस्स ।
णरतिरिया सव्वाउं तिभागसेसम्मि उक्कस्सं ॥६२६॥
भोगभुमा देवाउं णम्मासवसिट्ठगे य बंधति ।
इगिविगला णरतिरियं तेउदुगा सत्तगा तिरियं ॥६३०॥

नर पशु का सुर नरक जिय, आयु मास छै शेष ।
नर पशु भी सब आयु का, आयु भाग त्रय शेष ॥६२९॥
भोग भूमि में आयु सुर, आयु मास नव छोर ।
पशुहि सप्तभू अग्निदुक, इकविकला नर ढोर ॥६३०॥

अर्थ—देव और नारकी जीव अपनी आयु के अधिक-से-अधिक छै मास शेष रहने पर मनुष्य अथवा तिर्यंचआयु का बंध करते है। कर्मभूमि के मनुष्य और तिर्यंच अपनी आयु के तृतीय भाग शेष रहने पर चारो आयुओ मे से किसी एक आयु का बध करते है। भोगभूमि के मनुष्य और तिर्यंच अपनी आयु के नव मास शेष रहने पर देवायु का बध करते है एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीव अपनी आयु के तृतीय भाग शेप रहने पर मनुष्य अथवा तिर्यचायु का बध करते है किन्तु अग्नि, पवन और सातवी पृथ्वी के नारकी-तिर्यंचायु का ही बध करते है ॥६२९–६३०॥

आगे आयुकर्म के उदय और सत्व का स्वरूप दिखाते है।

सगसगगदीणमाउं उदेदि बंधे उदिण्णगेण समं ।
दो सत्ता हु अबंधे एक्कं उदयागदं सत्तं ॥६३१॥

निज-निज गति को आयु का, उदयबंध जिय सत्व ।
दो का सत्व रु बंध विन, एक उदय का सत्व ॥६३१॥

अर्थ—सव जीवो के अपनी-अपनी गति सवधी एक आयु का उदय होता है और परभव की आयु का बध होने पर दो आयु का सत्व होता है यदि परभव की आयु का वध जबतक न हो तवतक एक उदय वाली आयु का ही सत्व होता है ॥६३१॥

यहाँ कल्पना करिये कि कर्मभूमि के मनुष्य अथवा तिर्यंच की आयु ६५६१ वर्ष की है इसमे जब ४३७४ वर्ष बीत जावे और २१८७ वर्ष शेष रहे तव प्रथम त्रिभाग आता है। २१८७ वर्ष मे से जब १४५८ वर्ष बीत जावें और ७२९ वर्ष शेष रहे तव द्वितीय त्रिभाग आता है। ७२९ वर्ष मे से जब ४८६ वर्ष बीत जावे और २४३ वर्ष शेष रहे तव तृतीय त्रिभाग आता है। २४३ वर्ष मे से जब १६२ वर्ष बीत जावें और ८१ वर्ष शेष रहे तब चतुर्थ त्रिभाग आता है। ८१ वर्ष मे से जब ५४ वर्ष बीत जावे और २७ वर्ष शेष रहे तब पाँचवा त्रिभाग आता है। २७ वर्ष मे से जब १८ वर्ष बीत जावे और ९ वर्ष शेष रहे तब छटवा त्रिभाग आता है। ९ वर्ष मे से जब ६ वर्ष बीत जावें और ३ वर्ष शेष रहें तब सातवाँ त्रिभाग आता है तथा ३ वर्ष मे से जब २ वर्ष बीत जावे और १ वर्ष शेष रहे तब आठवाँ त्रिभाग आता है। इन आठ त्रिभागो मे आऊ का वध होता है। इसीतरह देव-नारकियो की आयु के छै मास और भोगभूमियो की आयु के नव मास शेष रहने पर ८ त्रिभाग आते है यदि इनमे वध न हो तो अतसमय आयु का वध अवश्य होता है ॥६३१॥

त्रि	प्र	द्वि.	तृ	च.	प	छ	सा	आ
आयु	६५६१	२१८७	७२९	२४३	८१	२७	९	३
गत	४३७४	१४५८	४८६	१६२	५४	१८	६	२
शेष	२१८७	७२९	२४३	८१	२७	९	३	१

आगे आयु का वध अधिक-से-अधिक आठ वार दिखाते है।

एक्के एक्कं आऊ एक्कभवे बंधमेदि जोग्गपदे ।
अडवारं वा तत्थवि तिभागसेसे व सव्वत्थ ॥६३२॥

इकभव में इक आयु ही, बँधे योग्य क्षण पाय ।
आठ बार ही सब जगह, शेष त्रिभाग रहाय ॥६३२॥

अर्थ—एक जीव के एक भव में एक ही आयु का बध होता है वह भी योग्यकाल मे होता है । योग्यकाल आठ बार आता है आठ बार आयु के तृतीय २ भागो मे होते है उन तृतीय २ भाग के अन्तर्मुहूर्त्तकाल मे आयु का बध होता है । यदि न होवे तो आयु के अतसमय अवश्य होता है ॥६३२॥

आगे एक आयु का बध और उदय होने पर कदलीघात दिखाते है ।

इगिवारं वज्जित्ता वड्ढी हाणी अवट्ठिदो होदि ।
ओवट्टणघादो पुण परिणामवसेण जीवाणं ॥६३३॥

प्रथम बार बिन शेष में, घटे बढे ठहरात ।
उदय भये परिणाम से, होवे कदली घात ॥६३३॥

अर्थ—उपरोक्त आठ त्रिभागो में से प्रथम त्रिभाग को छोडकर शेष त्रिभागो मे प्रथम त्रिभाग के समय जो आयुबध हुआ था उसकी स्थिति मे वृद्धि होती है, हानि होती है अथवा ज्यो-की-ज्यों रहती है किन्तु पलटकर द्वितीय आयु का बध नही होता और आयु के बध होने पर उस जीव के परिणाम के निमित्त से भुज्यमान आयु का कदलीघात हो सकता है ॥६३३॥

आगे आयुबध में ३-३ भग दिखाते है ।

एवमबंधे बंधे उवरदबंधेवि होंति भंगा हु ।
एक्कस्सेक्कम्मि भवे एक्काउं पडि तये णियमा ।।६३४।।

इसविधि बंध अबंध अरु, भूतबंध के भंग ।
इक भव में इक एकसे, वय के त्रय-त्रय भंग ।।६३४।।

अर्थ—उपरोक्त प्रकार एक जीव के एक पर्याय मे अबध रूप भग, वर्तमानकाल मे बधरूप भग और भूतकाल मे बधरूप बध के भेद से आयु के ३-३ भग होते है ।।३३४।।

भावार्थ—किसी भी जीव के आगामी आयु के बध की अपेक्षा तीन भग हो सकते हैं वध, अबध और पूर्व बध जैसे आगामी आयु का बध भूतकाल मे न हुआ हो और वर्तमान मे भी नही हो रहा हो उसको अबधरूप भग कहते है । आगामी आयु का भूतकाल मे वध न हुआ हो किन्तु वर्तमान मे हो रहा हो उसको वर्तमानबध-रूप भग कहते है और आगामी आयु का वध भूतकाल मे हो गया हो किन्तु वर्तमान मे नही हो रहा हो तो उसको पूर्व बधरूप भग कहते है ।।६३४।।

आगे उपरोक्त भगो को प्रत्येक गति मे दिखाते है ।

एक्काउस्स तिभंगा संभवाऊहि ताडिदे णाणा ।
जीवे इगिभवभंगा रूऊणगुणूणमसरित्थे ।।६३५।।

इक वय के त्रय भंग हैं, संभव आयु गुणाय ।
भंग विविध जिय एक भव, इक कम उन्हें घटाय।।६३५

अर्थ—नाना जीवो की अपेक्षा उपरोक्त १-१ आयु के ३-३ भगो को चारि गति मे से किसी भी गति की सभव होने वाली

आयुबध की सख्या मे गुणा करने से १-१ भव के भग निकलते है सो देव नारकियो मे २ आयु का ही बध होता है, इसलिये ३ को २ से गुणा करने से ६-६तथा मनुष्य, तिर्यचों के चारो आयु का बध होता है, इसीलिये ३ को ४ से गुणा करने से १२-१२ भग होते है। इन भगो मे अबधायु के सब भग कम करके शेप भगो मे भुज्यमान आयु का १-१ भग जोड़ने से अपुनुरुक्त भग होते है वे नरकादिगति मे क्रमसे ५, ९, ९, ५ होते है ।।६३५।।

आयु भंग दर्पण

जीव	अबधायु				वर्तमानबधायु				भूतकालबधायु			
	न०	ति०	म०	दे०	न०	ति०	म०	दे०	न०	ति०	म०	दे०
दे० ना०	०	१	१	०	०	१	१	०	०	१	१	०
म० ति०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१

आगे मिथ्यात्व और सासादन गुणस्थान के अपुनुरुक्त भग दिखाते है ।

पण णव णव पण भंगा आउचउक्केसु होंति मिच्छम्मि ।

णिरयाउबंधभंगेणूणा ते चेव विदियगुणे ।।६३६।।

पन नव नव पन भंग हैं, आयु चार क्रम थान ।

नरक आयु बिन सास में, बंध रूप भंगान ।।६३६

अर्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे चार आयु के नरकादिगति में क्रमसे ५, ९, ९, ५ अपुनुरुक्त भग होते है और सासादनगुणस्थान मे वर्तमान बधरूप नरकायु के भग विना क्रमसे ५, ८, ८, ५ भग होते है ।।६३६।।

मिथ्यात्व का आयु भंग दर्पण

जीव	भुज्यमानआयु				वर्त-बंधरूपआयु				भूत-बंधरूपआयु			
	न०	ति०	म०	दे०	न०	ति०	म०	दे०	न०	ति०	म०	दे०
न०	१	०	०	०	०	१	१	०	०	१	१	०
ति०	०	१	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१
म०	०	०	१	०	१	१	१	१	१	१	१	१
दे०	०	०	०	१	०	१	१	०	०	१	१	०

सासादन का आयु भंग दर्पण

जीव	भुज्य आयु				वर्त बंधरूपआयु				भूत बंधरूपआयु			
	न०	ति०	म०	दे०	न०	ति०	म०	दे०	न०	ति०	म०	दे०
न०	१	०	०	०	०	१	१	०	०	१	१	०
ति०	०	१	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१
म०	०	०	१	०	०	१	१	१	१	१	१	१
दे०	०	०	०	१	०	१	१	०	०	१	१	०

आगे मिश्रगुणस्थान और अविरतगुणस्थान के अपुनरुक्त भग दिखाते हैं।

सव्वाउबंधभंगेणूणा मिस्सम्मि अयदसुरणिरये।

णरतिरिये तिरियाऊ णिण्णाउगबंधभंगूणा ॥६३७॥

आयु बंध के भंग सब, हीन मिश्र दृग चीन ।
सुर नरकहिं पशु आयु बिन, नर पशु त्रय वय हीन।६३७

अर्थ—मिश्रगुणस्थान में आयु के वर्तमान बधरूप सब भगो को छोडकर शेष भगो को जोडने से नरकादिगति मे क्रमसे ३, ५, ५, ३ भग होते है अविरतगुणस्थान देव और नारकगति मे वर्तमान बधरूपआयु के भगो मे तिर्यचायु के भंगो को छोडकर शेष भगो को जोडने से क्रमसे ४-४ भग होते है तथा मनुष्य और तिर्यचगति मे वर्तमान बधरूप आयु के भगो मे से नरक, तिर्यच और मनुष्य के भगो को छोडकर शेष भगो को जोडने से क्रमसे ६-६ भग होते हैं कारण इनकी सासादनगुणस्थान मे बधविछुत्ति होजाती है ।।६३७।।

मिश्र का आयु भंग दर्पण

जीव	भुज्य-आयु				वर्त-बध रूपआयु				भूत-वधरूपआयु			
	न	ति	म	दे	न	ति	म	दे	न	ति	म.	दे
न०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	०
ति०	०	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१
म०	०	०	१	०	०	०	०	०	१	१	१	१
दे०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	१	१	०

अविरत का आयु भंग दर्पण

जीव	भुज्य-आयु				वर्त बधरूप आयु				भूत-बधरूप आयु			
	न	ति	म	दे	न	ति	म	दे	न	ति	म	दे
न०	१	०	०	०	०	०	१	०	०	१	१	०
ति०	०	१	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१
म०	०	०	१	०	०	०	०	१	१	१	१	१
दे०	०	०	०	१	०	०	१	०	०	१	१	०

आगे शेष गुणस्थानो के अपुनुरुक्त भगो को दिखाते है ।

देस णरे तिरिये तियतियभंगा होंति छट्ठसत्तमगे ।
तियभंगा उवसमगे दोद्दो खवगेसु एक्केक्को ॥६३८॥

नर अरु पशु के देश में, त्रय त्रय भंग पिछान ।
षट दुक में त्रय साम्य दो, क्षपक हिं इक इक जान ॥६३८

अर्थ—देशविरतगुणस्थान मे मनुष्य और तिर्यचगति के भुज्यमान आयु, वर्तमानवधायु और भूतकालवधायु की अपेक्षा ३–३ भंग होते हैं प्रमत्त और अप्रमत्तगुणस्थान मे मनुष्य के भुज्यमान-आयु, वर्तमान वध आयु और भूतकाल वधायु की अपेक्षा ३–३ भग होते हैं उपशम श्रेणी के ४ गुणस्थानो मे भुज्यमान आयु और भूतकाल वधायु की अपेक्षा २–२ भग होते है और क्षपकश्रेणी के ४ गुणस्थानो मे भुज्यमान आयु की अपेक्षा १-१ भग होता है ॥६३८॥

देश० भंग

जीव	भु		वर्त	भू
	ति	म	दे	दे
ति०	१	०	१	१
म०	०	१	१	१

प्र० अ० भं०

जी	भु	व	भू
	म	दे	दे
म	१	१	१

उ० श्रे० भं०

जी०	भु०	भू०
	म०	दे०
म०	१	१

क्ष० भं०

जी०	भु०
	म०
म०	१

आगे आयुकर्म के सव अपुनुरुक्त भग दिखाते है ।

अडछव्वीसं सोलस वीसं छत्तिगतिगं य चदुसु दुगं ।
असरिसभंगा तत्तो अजोगिअंतेसु एक्केक्को ॥६३९॥

अठविस छविस सोल विस, छै त्रय-त्रय से युक्त।
उपशम दोय अयोग तक, इक-इक अनपुनुरुक्त ॥६३९

अर्थ—आयुकर्म के मिथ्यात्व से लेकर अप्रमत्तगुणस्थान तक क्रमसे २८, २६, १६, २०, ६, ३, ३ अपुनुरुक्त भग है। उपशम-श्रेणी के ४ गुणस्थानो मे २-२ अपुनुरुक्त भग है क्षायिकश्रेणी के अपूर्वकरण से लेकर अयोगगुणस्थान तक १-१ अपुनुरुक्त भग है। इस तरह सब ११६ अपुनुरुक्त भग होते है ॥६३९॥

आयु भंगदर्पण

गु	मि.	सा	मि	अ	दे	प्र	अ	उ श्रे ४	शेष
भ	२८	२६	१६	२०	६	३	३	२-२	१-१

आगे वेदनी, गोत्र और आयु के अपुनुरुक्त भग दिखाते है।

वादालं पणुवीसं सोलसअहियं सयं य वेयणिये।
गोदे आउम्मि हवे मिच्छादिअजोगिणो भंगा ॥६४०॥

ब्यालीस वेदनि भंग हैं, गोत्र विषें पच्चीस।
इकसौ सोलह आयु के, क्रम से अयोग दीस ॥६४०॥

अर्थ—मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगगुणस्थान तक उपरोक्त वेदनीकर्म के ४२ गोत्रकर्म के २५ और आयुकर्म के ११६ अपुनुरुक्त भग होते है ॥६४०॥

आगे वेदनी, गोत्र और आयु के मूल अपुनुरुक्त भग दिखाते है।

वेयणिये अडभंगा गोदे सत्तोव होंति भंगा हु।
पण णव णव पण भंगा आउचउक्के सुविसरित्था ॥६४१॥

भंग भेदनी मूल अठ, गोत्रकर्म के सात ।
पन नव-नव पन आयु के, अपुनुरुक्त विख्यात ॥६४१॥

अर्थ—वेदनीकर्म के उपरोक्त पुनुरुक्तापुनुरुक्त भगो मे से मिथ्यात्व के ४ अयोग के ४ इसतरह से ८ भग अपुनुरुक्त है। गोत्रकर्म के मिथ्यात्व के ५ अयोग के २ इसतरह ७ भग अपुनुरुक्त हैं और चारो आयुकर्म के मिथ्यात्वसबधी क्रम से ५, ९, ९, ५ भग अपुनुरुक्त है, शेष सब पुनुरुक्त है ॥६४१॥

आगे मोहकर्म के त्रिसयोगी भग पूर्वरीति से दिखाते है।

मोहस्स य बंधोदयसत्तट्ठाणाण सव्वभंगा हु ।
पत्तोउत्तं व हवे तियसंयोगेवि सव्वत्थ ॥६४२॥

बंध उदय अरु सत्व थल, सर्व मोह के भंग ।
जैसे पूरब कह चुके, त्यों संयोगी भंग ॥६४२॥

अर्थ— जिस तरह मोहकर्म के बध, उदय और सत्वस्थानो के भग पूर्व दोहा न० ४५८—५०८ तक कह चुके है। उसी तरह मोहकर्म के बधादि के त्रिसयोगी भग होते है ॥६४२॥

आगे गुणस्थानो मे मोहकर्म के बधादिस्थान दिखाते है।

अट्ठसु एक्को बंधो उदया चदु ति दुसु चउसु चत्तारि ।
तिण्णि य कमसो सत्तं तिण्णेगदु चउसु पणग तियं ॥६४३॥
अणियट्टीबंधतियं पणदुगएक्कारसुहुमउदयंसा ।
इगि चत्तारि य संते सत्तं तिण्णेव मोहस्स ॥६४४॥
वावीसं दसयचऊ अडवीसतियं य मिच्छबंधादी ।
इगिवीसं णवयतियं अट्ठावीसे य बिदियगुणे ॥६४५॥

सत्तारसं णवयतियं अडचउवीसं पुणोवि सत्तारसं ।
णवछउ अडचउवीस य तिवीसतियमंसयं चउसु ॥६४६॥
तेरट्ठचऊ देसे पमदिदरे णव सगादिचत्तारि ।
तो णवगं छादितियं अडचउरिगिवीसयं य बंधतियं ॥६४७॥
पंचादिपंचबंधो णवमगुणे दोण्णि एक्कमुदयो दु ।
अट्ठचदुरेक्कवीसं तेरादीअट्ठयं सत्तं ॥६४८॥
लोहेक्कुदओ सुहमे अडचउरिगिवीसमेक्कयं सत्तं ।
अडचउरिगिवीसंसा संते मोहस्स गुणठाणे ॥६४६॥

बंध एक अठ तक उदय, चउ त्रय-त्रय चउ चार ।
चउ चउ त्रय सतु तीन इक, दो चउ में पन धार ॥६४३
त्रय अनि में बंधादि क्रम, पन दो ग्यारह सोह ।
सूक्ष्म उदय इक सत्व चउ, शांत सत्व त्रय मोह ॥६४४
भ्रम बाइस दश आदि चउ, अठविस त्रय बंधादि ।
इक्किस अरु नव आदि त्रय, अठ विस सासात्वादि ॥६४५
सत्रह नव से त्रय रु अठ, चउविस मिस सत्तार ।
नवसे चउ अठ चउविसा, तेइस त्रय द्दग चार ॥६४६
देशहिं तेरह अठस चउ, दुहिं नव सातस चार ।
अठ से नव छै आदि त्रय, अठ चउ इक विस सार ॥६४७

अनि में पन से बंध पन, उदय दोय इक मान ।
अठ चउ इक धिक वीस क्षय, तेरस अठ सत्वान ॥६४८
लोभ उदय इक सूक्ष्म में, अठ चउ इक विस सत्व ।
क्षपक एक अरु शांत में, अठ चउ इक विस सत्व ॥६४९

अर्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे २२ का १ वध स्थान, १०–९–८-७ के ४ उदयस्थान और २८–२७–२६ के ३ सत्वस्थान होते हैं सासादनगुणस्थान मे २१ का १ वधस्थान ९-८-७ के ३ उदयस्थान और २८ का १ सत्वस्थान होता है मिश्रगुणस्थान मे १७ का १ वधस्थान ९-८-७ के ३ उदयस्थान और २८-२४ के २ सत्वस्थान होते है। अविरतगुणस्थान मे १७ का १ वंध स्थान ९-८-७-६ के ४ उदयस्थान और २८-२४-२३-२२-२१ के ५ सत्वस्थान होते हैं। देशविरतगुणस्थान मे १३ का १ बधस्थान ८-७-६-५ के ४ उदयस्थान और उपरोक्त ५ सत्वस्थान होते हैं। प्रमत्त और अप्रमत्त-गुणस्थान मे ९ का १ बधस्थान ७-६-५-४ के ४ उदयस्थान और उपरोक्त ५ सत्वस्थान होते हैं। अपूर्वकरणगुणस्थान की उपशमश्रेणी मे ९ का १ वधस्थान ६-५-४ के ३ उदयस्थान और २८-२४-२१ के ३ सत्वस्थान होते है किन्तु क्षपकश्रेणीवाले के २१ का १ ही सत्वस्थान होता है अनिवृत्तिकरणगुणस्थान मे ५-४-३-२-१ के ५ वधस्थान २-१ के दो उदयस्थान और उपशमश्रेणी मे २८-२४-२१ के ३ सत्वस्थान होते है किन्तु क्षपकश्रेणी मे १३-१२-११-५-४-३-२-१ के ८ सत्वस्थान होते हैं सूक्ष्मसापरायगुणस्थान मे सूक्ष्मलोभ का १ उदयस्थान और उपशमश्रेणी मे २८-२४-२१ के ३ सत्वस्थान होते है किन्तु क्षपकश्रेणी मे सूक्ष्मलोभ का १ सत्वस्थान होता है और उपशातमोहगुणस्थान मे २८-२४-२१ के ३ सत्वस्थान होते है यहा वध और उदय का अभाव है॥६४३-६४९॥

भावार्थ—मोहकर्म की सब बधप्रकृतियो मे ४ गति के मिथ्या-दृष्टि जीव २२ का बध करते हैं इनके मिथ्यात्वसहित, अनतानु-बधीसहित और रहित ८ कूट पूर्व कहे थे उनमें अपुनुरुक्त १०—९—८—७ के ४ उदयस्थान होते है इनमे आदि के तीन स्थानो मे २८—२७—२६ का सत्व होता है और ७ के उदय मे २८ का ही सत्व होता है। कारण अविरतादि ४ गुणस्थानो में से किसी एक गुण-स्थान मे वेदक सम्यक्दृष्टि अनतानुबधी का विसयोजना करिके मिथ्यात्व के उदय से मिथ्यादृष्टि होता है वहाँ प्रथम समय मे २२ का बध करता है वहाँ अनतानुबधी का एक समयप्रवद्ध वाधा तिसकी उदीरणा अचलावलीकाल तक न होने से २४ का सत्व नही होता, २८ का ही होता है और अनतानुवधी का उदयरहित मिथ्यादृष्टि के सम्यक्त्व और मिश्रप्रकृति का वेदककाल होने से उद्वेलना नही होती। उद्वेलना उपशमकाल मे होती है इस कारण २७—२६ का सत्व नही होता, २८ का ही सत्व होता है।

४ गति के सासादनगुणस्थान में २१ का १ वध ९—८—७ के ३ उदयस्थान और २८ का १ सत्व होता है। कारण उपशमसम्यक्-दृष्टि गिरकर सासादनगुणस्थान मे आता है तिसकी स्थिति एक समय से लेकर १ आवली तक की है। इतने काल मे सम्यक्त्व और मिश्रप्रकृति की उद्वेलना नही होती इस कारण २७—२६ का सत्व नही होता और अनतानुबधी की विसयोजना वेदकसम्यक्दृष्टि के ही होती है सो वह यहाँ आता नही इस कारण २४ का भी सत्व नही होता २८ का ही सत्व होता है।

४ गति के मिश्रगुणस्थान में १७ का १ वध ९—८—७ के ३ उदयस्थान और २८—२४ के २ सत्वस्थान होते है। २३—२२ के नही होते कारण मिश्रप्रकृति के उदय होने से दर्शनमोह का क्षपणा प्रारभ नही होता।

४ गति के अविरतगुणस्थान मे १७ का बध ९ के उदय मे

कर्मभूमि का वेदक सम्यक्दृष्टि दर्शनमोह का क्षपणा प्रारभ होने से अनतानुबधी, मिथ्यात्व और मिश्रप्रकृति सहित और रहित क्रम-से २८-२४-२३-२२ का सत्व और क्षायिक सम्यक्दृष्टि के २१ का सत्व होता है ८-७ के उदय मे प्रथमोपशमसम्यक्त्वी के तो २८ का ही सत्व है। द्वितीयोपशमसम्यक्त्वी के २८-२४ का सत्व है वेदकसम्यक्त्वी के २८-२४-२३-२२ का सत्व है और क्षायिक-सम्यक्दृष्टि के २१ का सत्व होता है तथा ६ के उदय मे उपशम-सम्यक्दृष्टि के २८-२४ का सत्व और क्षायिकसम्यक्दृष्टि के २१ का सत्व होता है।

देशविरतगुणस्थान मे १३ का बध और ८ के उदय मे वेदक-सम्यक्दृष्टि तिर्यच के २८-२४ का और मनुष्य के २८-२४-२३-२२ का सत्व होता है। ७-६ के उदय मे उपशमसम्यक्दृष्टि तिर्यंच और मनुष्य के २८-२४ का सत्व होता है वेदकसम्यक्-दृष्टि तिर्यच के २८-२४ का मनुष्य के २८-२४-२३-२२ का और क्षायिकसम्यक्दृष्टि मनुष्य के २१ का सत्व होता है ५ के उदय मे उपशमसम्यक्दृष्टि तिर्यच और मनुष्य के २८-२४ का और क्षायिकसम्यक्दृष्टि मनुष्य के २१ का सत्व होता है।

प्रमत्त और अप्रमत्तगुणस्थान मे ९ के बध और ७ के उदय मे वेदकसम्यक्दृष्टि के २८-२४-२३-२२ का सत्व है ६-५ के उदय मे उपशमसम्यक्दृष्टि के २८-२४ का और वेदकसम्यक्दृष्टि के २८-२४-२३-२२ का और क्षायिकसम्यक्दृष्टि के २१ का सत्व है ४ के उदय मे उपशमसम्यक्दृष्टि के २८-२४ और क्षायिक-सम्यक्दृष्टि के २१ का सत्व होता है।

अपूर्वकरणगुणस्थान मे ९ का वध और ६-५-४ के उदय मे उपशमसम्यक्दृष्टि के २८-२४ का और क्षायिकसम्यक्दृष्टि के २१ का सत्व होता है।

अनिवृत्तिकरणगुणस्थान मे ५-४ का वध और २ के उदय मे

उपशमसम्यक्दृष्टि के २८–२४ का और क्षायिकसम्यक्दृष्टि के २१–१३–१२–११ का सत्व होता है ४ के बध और १ के उदय में उपशमसम्यक्दृष्टि के २८–२४ का और क्षायिकसम्यक्दृष्टि के २१–११–५–४ का सत्व होता है ३ का बध और १ के उदय मे उपशमसम्यक्दृष्टि के २८–२४ का और क्षायिकसम्यक्दृष्टि के २१–४–३ का सत्व होता है २ का बध और १ के उदय मे उपशमसम्यक्दृष्टि के २८–२४ का और क्षायिकसम्यक्दृष्टि के २१–३–२ का सत्व होता है तथा १ बध और १ के उदय में उपशमसम्यक्दृष्टि के २८–२४ का और क्षायिकसम्यक्दृष्टि के २१–२–१ का सत्व होता है यहाँ ४–३–२–१ के बध मे क्रम से ५–४, ४–३, ३–२, २–१ का जो सत्व है सो प्रथम २ स्थान मे वेद और कषाय के नये समयप्रवद्ध के उच्छिष्टावलीनिषेक क्षय होने से शेष रहते है उनकी अपेक्षा कथन है और २१ का सत्व क्षायिक-सम्यक्दृष्टि के उपशमश्रेणी से चढता है तब होता है एककाल मे एकजीव के १ ही का बध, उदय और सत्वस्थान होता यह नाना जीवो की अपेक्षा कथन है ॥६४३–६४६॥

गुणस्थानों में मोह का बंध, उदय, सत्वस्थान

गु.	ब	उ.	स
मि	२२	१०–९–८–७	२८–२७–२६
सा	२१	९–८–७	२८
मि	१७	९–८–७	२८–२४
अ	१७	९–८–७–६	२८–२४–२३–२२–२१
दे	१३	८–७–६–५	"
प्र	९	७–६–५–४	"
अ	९	"	"
अ	९	६–५–४	२८–२४–२१

गु	ब	उ	स
अ.	५–४–३–२–१	२–१	२८–२४–२१–१३–१२–११–५–४–३–२–१
सू	०	१	२८–२४–२१–१
उ	०	०	२८–२४–२१

आगे १ आधार और २ आधेय के त्रिसयोगीस्थान दिखाते है।

बंधपदे उदयंसा उदयट्ठाणेवि बंध सत्तं य ।
सत्ते बंधुदयपदं इगिअधिकरणे दुगाधेज्जं ॥६५०॥

बंध थान में उदय सतु, उदमें बंध रु सत्व।
सत्व विषें वंध रु उदय, इक आश्रय दो रत्व ॥६५०॥

अर्थ—बधस्थान मे उदय और सत्वस्थान होते है उदयस्थान मे वध और सत्वस्थान होते हैं तथा सत्वस्थान मे वध और उदयस्थान होते है इस प्रकार एक आधार और दो आधेय होते हैं सो ही दिखाते है ॥६५०॥

आगे वधस्थान मे उदय और सत्वस्थान दिखाते है।

बावीसयादिबंधेसुदयंसा चदुतितिगिचउपंच ।—
तिसु इगि छट्ठो अट्ठ य एक्कं पंचेव तिट्ठाणे ॥६५१॥
दसयचऊ पढमतियं णवतियमडवीसयं णवादिचऊ ।
अडचदुतिदुइगिवीसं अडचदु पुव्वं व सत्तं तु ॥६५२॥
सगचउ पुव्वं वंसा दुगमडचउरेक्कवीस तेरतियं ।
दुगसेक्कं य य सत्तं पुव्वं वा अत्थि पणगदुगं ॥६५३॥

तिसु एक्केक्कं उदओ अडचउरिगि वीससत्तसंजुत्तं ।
चदुतिदयं तिदयदुगं दो एक्कं मोहणीयस्स ॥६५४॥

बाइस बंध हिं उदय सतु, चउ त्रय फिर त्रय एक।
त्रय में चउ पन एक छै, द्वु ठ इति पन देख ॥६५१
दश चउ अरु अठवीस त्रय, नव से त्रय अठवीस।
नव अठ से चउ सत्व इन,अठ चउ ति दु इकवीस॥६५२
सप्तक से चउ पूर्व वत्, दो शम क्षय वत् मान ।
दो इक सत्ता पूर्व वत् , अरु पन दो युत जान॥६५३
त्रय में इक इक उदय है, अठ चउ इक धिक वीस।
चार तीन अरु तीन दो, दो इक मोहहिं दीस ॥६५४

अर्थ—२२ के बधस्थान मे १०-९-८-७ के ४ उदयस्थान और २८-२७-२६ के ३ सत्वस्थान होते है २१ के बधस्थान मे ९-८-७ के ३ उदयस्थान और २८ का १ सत्वस्थान होता है १७ के बध-स्थान मे ९-८-७-६ के ४ उदयस्थान और २८-२४-२३-२२-२१ के ५ सत्वस्थान होते है १३ के बधस्थान में ८-७-६-५ के ४ उदय-स्थान और उपरोक्त ५ सत्वस्थान होते है ९ के बधस्थान मे ७-६-५-४ के ४ उदयस्थान और उपरोक्त ५ सत्वस्थान होते है ५ के बधस्थान मे २ का उदयस्थान और उपशमश्रेणी में २८-२४-२१ के ३ सत्वस्थान तथा क्षपकश्रेणी मे १३-१२-११ के ३ इसप्रकार ६ सत्वस्थान होते है ४ के बधस्थान में २-१ के २ उदयस्थान और उपशमश्रेणी मे २८-२४-२१ के ३ सत्वस्थान तथा क्षपकश्रेणी मे १३-१२-११-५-४ के ५ इसप्रकार ८ सत्वस्थान होते हैं ३ के बध-

स्थान मे १ का १ उदयस्थान और २८-२४-२१-४-३ के ५ सत्व-स्थान होते है २ के बधस्थान मे १ का १ उदयस्थान और २८-२४ २१-३-२ के ५ सत्वस्थान होते है और १ के बधस्थान मे १ का १ उदयस्थान और २८-२४-२१-२-१ के ५ सत्वस्थान होते हैं इसप्रकार स्थान समझकर भग समझ लेना चाहिये ॥६५१-६५४॥

मोहबंध में उदय और सत्वस्थान

ब०	उ०	स०
२२	१०–९–८–७	२८–२७–२६
२१	९–८–७	२८
१७	९–८–७–६	२८–२४–२३–२२–२१
१३	८–७–६–५	,,
९	७–६–५–४	,,
५	२	२८–२४–२१–१३–१२–११
४	२–१	२८–२४–२१–१३–१२–११–५–४
३	१	२८–२४–२१–४–३
२	१	२८–२४–२१–३–२
१	१	२८–२४–२१–२–१

आगे उदयस्थान मे बध स्थान और सत्वस्थान घटित कर दिखाते है।

दसयादिसु बंधंसा इगितिय तियछक्क चारिसत्तं य ।
पणपण तियपण दुगपण इगितिग दुगछच्चचऊणवयं ॥६५५॥
पढमं पढमतिचउपणसत्तरतिग चदुसु बंधयं कमसो ।
पढिमतिछस्सगमडचउतिदुइगिवीसंसयं दोसु ॥६५६॥
तेरदु पुव्वं वंसा णवमडचउरेक्कवीससत्तमदो ।
पणदुगमडचउरेक्कावीसं तेरसतियं सत्तं ।६५७॥

चरिमे चदुतिदुगेक्कं अट्ठयचदुरेक्कसंजुदं वीसं ।
एक्कारादीसव्वं कमेण ते मोहणीयस्स ॥६५८॥

दश आदिक में बंध सतु, इकति तिछै चउ सात ।
पन पन त्रय पन दोय पन, इकति दुछै च न ख्यात।६५५
बंध प्रथम त्रय चार पन, सतह त्रय क्रम वार ।
अठविस त्रय छै सात युग, अठविस चौविस चार ॥६५६
तेरह दुक सतु पूर्ण वत्, नव में शम वत् मान ।
पन दुक अठ चउ एक विस, तेरह त्रय सत्वान ॥६५७
अंतहिं चउ त्रय दोय इक, अठ चउ इक धिक-वीस ।
ग्यारह से ले सर्व थल, सत्व मोह नव दीस ॥६५८

अर्थ—१० के उदयस्थान मे २२ का १ बधस्थान और २८-२७ २६ के ३ सत्वस्थान होते है ९ के उदयस्थान में २२-२१-१७ के ३ बधस्थान और २८-२७-२६-२४-२३-२२ के ६ सत्वस्थान होते है ८ के उदयस्थान मे २२-२१-१७-१३ के ४ बधस्थान और २८-२७-२६-२४-२३-२२-२१ के ७ सत्वस्थान होते है ७ के उदयस्थान मे २२-२१-१७-१३-९ के ५ बंधस्थान और २८-२४-२३-२२-२१ के ५ सत्वस्थान होते है ६ के उदयस्थान में १७-१३-९ के ३ बध-स्थान और २८-२४-२३-२२-२१ के ५ सत्वस्थान होते है ५ के उदयस्थान मे १३-९ के २ बधस्थान और २८-२४-२३-२२-२१ के ५ सत्वस्थान होते है ४ के उदयस्थान मे ९ का १ बधस्थान और २८-२४-२१ के ३ सत्वस्थान होते है २ के उदयस्थान में ५-४ के २ बधस्थान और २८-२४-२१-१३-१२-११ के ६ सत्वस्थान होते है

तथा १ के उदयस्थान मे ४-३-२-१ के ४ बधस्थान और २८-२४-२१-११-५-४-३-२-१ के ९ सत्वस्थान होते हैं इस प्रकार स्थानो को समझकर भग समझ लेना चाहिये ।।६५५-६५८।।

मोह उदय मे बंध और सत्वस्थान

उ०	ब०	स०
१०	२२	२८–२७–२६
९	२२–२१–१७	२८–२७–२६–२४–२३–२२
८	२२–२१–१७–१३	२८–२७–२६–२४–२३–२२–२१
७	२२–२१–१७–१३–९	२८–२४–२३–२२–२१
६	१७–१३–९	,,
५	१३–९	,,
४	९	२८–२४–२१
२	५–४	२८–२४–२१–१३–१२–११
१	४–३–२–१	२८–२४–२१–११–५–४–३–२–१

आगे सत्वस्थान मे वधस्थान और उदयस्थान घटित कर दिखाते है ।

सत्तपदे बंधुदया दसणव इगिति दुसु अडड तिपण दुसु ।
अडसग दुगि दुसु बिबिगिगि दुगि तिसु इगिसुण्णमेक्कं य।।६५९।।
सव्वं सयलं पढमं दसतिय दुसु सत्तरादियं सव्वं ।
णवयप्पहुदीसयलं सत्तरति णवादिपण दुपदे ।।६६०।।
सत्तरसादि अडादीसव्वं पण चारि दोण्णि दुसु तत्तो ।
पंचचउक्क दुगेक्कं चदुरिगि चदुतिण्णि एक्कं य ।।६६१।।
तत्तो तियदुगमेक्कं दुप्पयडीएक्कमेक्कठाणं य ।
इगिणभबंधो चरिमे एउदओ मोहणीयस्स ।।६६२।।

सत्ता में बंध रु उदय, दश नव युग इक तीन ।
अठ अठ युग में तीन पन, आठ सात क्रम चीन ॥६५८
युग में दो इक दोय दो, इक इक तिहु दो एक। १
एक सत्व स्थान में, इक या सुन इक दोय ॥६५९
सत्र सव दो में प्रथम है. दश में त्रय थल वांच । २
सत्रह सव नव सत्र युगल. सत्रह त्रय नव पांच ॥६६०
सत्रह सव अठ सव युगल. पन चउ अरु दो देख ।
पन से चउ दो आदि इक. चउ इक चउ त्रय एक॥६६१
त्रय दो बंध रु इक उदय, दो इक अरु इक सोह ।
एक बंध अरु इक उदय. अंत सत्व जो मोह ॥६६२

अर्थ—२८ के सत्वस्थान में २२–२१–१७–१३–९–५–४–३–२–१ के १० बंधस्थान और १०–९–८–७–६–५–४–२–१ के ९ उदयस्थान होते है। २७–२६ के सत्वस्थान में २२ का १ बंधस्थान और १०–९–८ के ३ उदयस्थान होते है। २४ के सत्व-स्थान मे १७–१३–९–५–४–३–२–१ के ८ बंधस्थान और ९–८–७–६–५–४–२–१ के ८ उदयस्थान होते है। २३–२२ के सत्वस्थान मे १७–१३–९ के ३ बंधस्थान और ९–८–७–६–५ के ५ उदयस्थान होते है २१ के सत्वस्थान में १७–१३–९–५–४–३–२–१ के ८ बंधस्थान और ८–७–६–५–४–२–१ के ७ उदयस्थान होते है १३–१२ के सत्वस्थान मे ५–४ के २ बंधस्थान और २ का १ उदयस्थान होता है। ११ के सत्वस्थान मे ५–४ के २ बंध-

स्थान और २–१ के २ उदयस्थान होते है। ५ के सत्वस्थान मे ४ का १ बधस्थान और १ का १ उदयस्थान होता है ४ के सत्व-स्थान मे ४–३ के २ बधस्थान और १ का १ उदयस्थान होता है ३ के सत्वस्थान मे ३–२ के २ बधस्थान और १ का १ उदय-स्थान होता है २ के सत्वस्थान मे २–१ के २ बधस्थान और १ का १ उदयस्थान होता है तथा १ के सत्वस्थान मे १–० के २ बधस्थान और १ का १ उदयस्थान होता है इसप्रकार स्थानो को समझकर भग समझ लेना चाहिये ॥६५९-६६२॥

मोह सत्व में बंध और उदयस्थान

स.	ब	उ.
२८	सव	सव
२७-२६	२२	१०-९-८
२४	१७-१३-९-५-४-३-२-१	९-८-७-६-५-४-२-१
२३-२२	१७-१३-९	९-८-७-६-५
२१	१७-१३-९-५-४-३-२-१	८-७-६-५-४-२-१
१३-१२	५-४	२
११	५-४	२-१
५	४	१
४	४-३	१
३	३-२	१
२	२-१	१
१	१-०	१

आगे दो आधार और एक आधेय के त्रिसयोगी भग घटितकर दिखाते हैं।

बंधुदये सत्तपदं बंधंसे णेयमुदयठाणं य।
उदयंसे बंधपदं दुट्ठाणाधारसेक्कमाधेज्जं ॥६६३॥

वंध उदय में सत्व थल, वंध सतुहिं उदयेय ।
उदय सत्व में वंध थल, दु अधार इक धेय ॥६६३॥

अर्थ—वध और उदयस्थान मे सत्वस्थान होता है तथा बध और सत्वस्थान मे उदयस्थान होता है तथा उदय और सत्वस्थान मे वधस्थान होता है इसप्रकार दो आधार और एक आधेय होता है उसको दिखाते है ॥६६३॥

आगे बध और उदय मे सत्वस्थान दिखाते है ।

बावीसेण णिरुद्धे दसचउरुदये दसादिठाणतिये ।
अट्ठावीसति सत्तं सत्तुदये अट्ठवीसेव ॥६६४॥
इगिवीसेण णिरुद्धे णवयतिये सत्तमट्ठवीसेव ।
सत्तरसे णवचदुरे अडचउतिदुगेक्कवीसंसा ॥६६५॥
इगिवीसं ण हि पढमे चरिमे तिदुवीसयं ण तेरणवे ।
अडचउसगचउरुदये सत्तं सत्तरसयं व हवे ॥६६६॥
णवरि य अपुव्वणवगे छादितियुदयेवि णत्थि तिदुवीसा ।
पणबंधे दोउदये, अडचउरिगिवीसतेरसादितियं ॥६६७॥
चदुबंधे दोउदये सत्तं पुव्वं व तेण एक्कुदये ।
अडचउरेक्कावीसा एयारतिगं य सत्ताणि ॥६६८॥
तिदुइगिबंधेक्कुदये चदुतियठाणेण तिदुगठाणेण ।
दुगिठाणेण य सहिदा अडचउरिगिवीसया सत्ता ॥६६९॥

प्रथम वंध दश तक उदय, अठविस तक सत्वान ।
प्रथम वंध सप्तक उदय, अठविस सत्ता जान ॥६६४॥

इक्किस बंध रु नवक त्रय, अठविस सत्ता दीस।
सत्रह बंध रु नवक चउ, अठचउ से इकवीस ॥६६५॥
उदय होय नव का जवे, इक्किस सत्व न होय।
उदय होय छै का जवे, त्रय दो वीस न कोय ॥६६६$_1$
तेरह युत अठ से चऊ, नव युत सप्तक चार।
उदय थान का होय जब, सत्रह तुल्य सँभार ॥६६६$_2$ ॥
इतना और विशेष है, गुण अपूर्व के मांहि।
नवयुत छै से त्रय उदय, त्रयदोधिक विस नाहिं॥६६७$_1$
पाँच बंध युत दोय के, उदय भये सत्वान।
अठविस चौविस इक्किसा, तेरह से त्रय जान ॥६६७$_2$
चार बंध दो के उदय, सत्व पूर्व वत् चीन।
एक उदय अठ चउ इका, विस ग्यारह से चीन ॥६६८
त्रय दो इक युत इकउदय, चउ त्रय अरु त्रय दोय।
दो इक सत्ता क्रम सहित, अठ चउ इक विस जोय ६६९

अर्थ—२२ के वध और १०-९-८ के उदयस्थान मे २८-२७-२६ के ३ सत्वस्थान और ७ के उदयस्थान मे २८ का १ सत्वस्थान होता है। २१ के वध और ९-८-७ के उदयस्थान मे २८ का १ सत्वस्थान होता है। १७ के वध और ९ के उदयस्थान मे २८-२४-२३-२२ के सत्वस्थान, ८-७ के उदयस्थान मे २८-२४-२३-२२-२१ के ५-५ सत्वस्थान और ६ के उदयस्थान मे २८-२४-

२१ के ३ सत्वस्थान होते है १३ के वध और ८-७-६-५ के उदयस्थान मे तथा ९ के बध ७-६-५-४ के उदयस्थान मे १७ के बधस्थान की तरह सत्वस्थान होते है किन्तु अपूर्वकरणगुणस्थान मे ९ के वध और ६-५-४ के उदयस्थान मे २८-२४-२१ के ३ सत्वस्थान होते है ५-४ के बध और २ के उदयस्थान मे २८-२४-२१-१३-१२-११ के ६ सत्वस्थान होते है ४ के बध और १ के उदयस्थान मे २८-२४-२१-५-४ के ५ सत्वस्थान होते है। ३ के बध और १ के उदयस्थान मे २८-२४-२१-४-३ के ५ सत्वस्थान होते है २ के बध और १ के उदय होने पर २८-२४-२१-३-२ के ५ सत्वस्थान होते है तथा १ के बध और १ के उदयस्थान मे २८-२४-२१-२-१ के ५ बधस्थान होते है ॥६६४-६६९॥

मोहबंध और उदय में सत्वस्थान दर्पण

बं.	उदय	सत्व
२२	१०-९-८	२८-२७-२६
	७	२८
२१	९-८-७	२८
१७	९	२८-२४-२३-२२
	८-७	२८-२४-२३-२२-२१
	६	२८-२४-२१
१३	८-७	२८-२४-२३-२२-२१
	६-५	२८-२४-२१
९	७	२८-२४-२३-२२-२१
	६-५-४	२८-२४-२१
५-४	२	२८-२४-२१-१३-१२-११
४	१	२८-२४-२१-५-४
३	१	२८-२४-२१-४-३
२	१	२८-२४-२१-३-२
१	१	२८-२४-२१-२-१

आगे बध और सत्व मे उदयस्थान दिखाते है।

बावीसे अडवीसे दसचउरुदओ अणे ण सगवीसे।
छव्वीसे दसयतियं इगिअडवीसे दु णवयतियं ॥६७०॥
सत्तरसे अडचदुवीसे णवयचदुरुदयमिगिवीसे।
णो पढमुदओ एवं तिदुवीसे णंतिमस्सुदओ ॥६७१॥
तेरणवे पुव्वंसे अडादिचउ सगचउण्हमुदयाणं।
सत्तरसं व वियारो पणगुवसंते सगेसु दो उदया ॥६७२॥
तेणेवं तेरतिये चदुबंधे पुव्वसत्तगेसु तहा।
तेणुवसंतंसेयारतिए एक्को हवे उदओ ॥६७३॥
तिदुइगिबंधे अडचउरिगिवीसे चदुतिएण ति दुगेण।
दुगिसत्तेण य सहिदे कमेण एक्को हवे उदओ ॥६७४॥

बाइस युत अठवीस युत, उदय दशक चउ होय।
अमित उदय बिन थान भी, वहां संभवे जोय ॥६७०-१
और सात छै वीस सतु, उदय दशक त्रय मान।
इक्किस युत अठवीस सतु,उदय नवक तयजान।६७०-२
सत्रह युत अठ चउ विसा, उदय नवक चउ दीस।
इक्किस सतु नहिं नव उदय, छै न तीन दो बीस ॥६७१
तेरह नव युत पूर्व सतु, अठ चउ सप्तक चार।
सत्रह मतवत् पांच शस, अनिहिं उदय दो धार ॥६७२

उन पन युत तेरह त्रये, च्यार बंध सतु पूर्व ।
अरु शम में ग्यारह त्रये, इक का उदय अपूर्व ॥६७३
लय दो इक युत में क्रमस, अठ चउ इकविस और ।
चउ त्रय त्रय दो दोय युत, सत्व उदय इक ठौर ॥६७४

अर्थ—२२ के बध और २८ का सत्वस्थान में १०-९-८-७ के ४ उदयस्थान होते है कारण अनतानुबधी रहित उदयस्थानो का होना सभव है। २७-२६ के सत्वस्थान में १०-९-८ के ३ उदयस्थान होते है। २१ के बध और २८ के सत्वस्थान मे ९-८-७ के ३ उदयस्थान होते है १७ के बध और २८-२४ के सत्वस्थान मे ९-८-७-६ के ४ उदयस्थान २१ के सत्वस्थान मे ८-७-६ के ३ उदयस्थान और २३-२२ के सत्व स्थान मे ९-८-७ के ३ उदयस्थान होते है। १३ के बध और २८-२४ के सत्वस्थान मे ८—७—६—५ के ४ उदयस्थान, २१ के सत्वस्थान मे ७—६—५ के ३ उदयस्थान और २३—२२ के सत्वस्थान मे ८-७—६ के ३ उदयस्थान होते हैं ९ के बध और २८-२४ के सत्वस्थान मे ७-६-५-४ के ४ उदयस्थान २१ के सत्व स्थान मे ६-५-४ के ३ उदयस्थान और २३-२२ के सत्वस्थान मे ७-६-५ के ३ उदयस्थान होते है ५-४ के बध और २८-२४-२१-१३-१२-११ के सत्वस्थान में २-१ के २ उदयस्थान होते है ४ के बध और २८-२४-२१-११-५-४ के सत्वस्थान मे १ का १ उदयस्थान होता है ३ के बध और २८-२४-२१-४-३ के सत्वस्थान में १ का १ उदयस्थान होता है २ के बध और २८-२४-२१-३-२ के सत्वस्थान मे १ का १ उदयस्थान होता है तथा १ के बध और २८-२४-२१-२-१ के सत्वस्थान मे १ का १ उदयस्थान होता है यहाँ क्षपकश्रेणी वाले के नवीनबध की अपेक्षा दो प्रकार का सत्व कहा गया है ॥६७०-६७४॥

मोह के बंध और सत्व में उदयस्थान

ब०	स०	उदयस्थान
२२	२८	१०–९–८–७
	२७-२६	१०–९–८
२१	२८	९–८–७
१७	२८-२४	९–८–७–६
	२१	८–७–६
	२३-२२	९–८–७
१३	२८-२४	८–७–६–५
	२१	७–६–५
	२३-२२	८–७–६
९	२८-२४	७–६–५–४
	२१	६–५–४
	२३-२२	७–६–५
५-४	२८-२४-२१-१३-१२-११	२–१
४	२८-२४-२१-११-५-४	१
३	२८-२४-२१-४-३	१
२	२८-२४-२१-३-२	१
१	२८-२४-२१-२-१	१

आगे उदय और सत्वस्थान मे बधस्थान दिखाते हैं ।

दसगुदये अडवीसतिसत्ते बावीसबंध णवअट्ठे ।
अडवीसे बावीसतिचउबंधो सत्तवीसदुगे ॥६७५॥

बावीसबंध चदुतिदुवीसंसे सत्तरसयदद्गुगबंधो ।
अट्ठुदये इगिवीसे सत्तरबंधं विसेसं तु ॥६७६॥
सत्तुदये अडवीसे बंधो बावीसपंचयं तेण ।
चउवीसतिगे अयदतिबंधो इगिवीसगयददुगबंधो ॥६७७॥
छप्पणउदये उवसंतंसे अयदतिगदेसदुगबंधो ।
तेण तिदोवीसंसे देसदुणवबंधयं होदि ॥६७८॥
चउरुदयुवसंतंसे णवबंधो दोण्णिउदयपुव्वंसे ।
तेरसतियसत्तोवि य पण चउ ठाणाणि बंधस्स ॥६७६॥
एक्कुदयुवसंतंसे बंधो चदुरादिचारि तेणेव ।
एयारदु चदुबंधो चदुरंसे चदुतियं बंधो ॥६८०॥
तेणतिये तिदुबंधो दुगसत्तो दोण्णि एक्कयं बंधो ।
एक्कंसे इगिबंधो गयणं वा मोहणीयस्स ॥६८१॥

दशक उदय अठवीस त्रय, सत्व रु बाइस बंध ।
नव अठयुत अठवीस सतु,बाइस त्रय चउ बंध ॥६७५॥
उनमें सत्ताईस दुक, सत्व रु बाइस बंध ।
मिस चौविस दृग चारत्रय,दो विस सतह बंध॥६७६-१
देश उदय अठ चौविसा, त्रय तक तेरह बंध ।
दृष्टि उदय अठ इक्किसा, सतु तेरह का बंध॥६७६-२

सात उदय अठवीस सतु, बाइस पन का बंध ।
दृग चौविस लक वंधलय, दृग इक्किस दो बंध ।।६७७
छै पन उदया शांत सतु, दृग लय अणु दो बंध ।
उन युत लय दो वीस सतु,अणु दो नव का बंध ।।६७८
चार उदय शम सत्व नव,बंध उदय दो मान ।
सत्व पूर्ण तेरह लयी, बंध पाँच चउ जान ।।६७९।।
एक उदय उपशांत सतु, चउ से चउ तक बंध ।
ग्यारह दुक सतु बंध चउ, चउ सतु चउ लय बंध।।६८०
उस लय सतु तिदु बंध है, दो सतु दो इक बंध ।
एक सत्व में बंध इक, सून्य मोह का बंध ।।६८१।।

अर्थ—१० के उदय और २८-२७-२६ के सत्वस्थान मे २२ का १ बधस्थान होता है ९ के उदय और २८ के सत्वस्थान मे २२-२१-१७ के ३ बधस्थान २६-२७ के सत्वस्थान मे २२ का १ बधस्थान और २४-२३-२२ के सत्वस्थान मे १७ का १ बधस्थान होता है ८ के उदय और २८ के सत्वस्थान मे २२-२१-१७-१३ के ४ बधस्थान २७-२६ के सत्वस्थान मे २२ का १ बधस्थान २४-२३-२२ के सत्वस्थान मे १७-१३ के २ बधस्थान और २१ के सत्व-स्थान मे १७ का १ वधस्थान होता है ७ के उदय और २८ का सत्व होने पर २२-२१-१७-१३-९ के ५ वधस्थान २४-२३-२२ के सत्वस्थान मे १७-१३-९ के ३ बधस्थान और २१ के सत्वस्थान मे १७-१३ के २ वधस्थान होते है ६ के उदय और २८-२४-२१ के

सत्वस्थान मे १७-१३-९ के ३ वधस्थान और २३-२२ के सत्व-स्थान मे १३ का १ वधस्थान होता है ५ के उदय और २८-२४-२१ के सत्वस्थान मे १३-९ के २ वधस्थान और २३-२२ के सत्व-स्थान में ९ का १ वधस्थान होता है। ४ के उदय और २८-२४-२१ के सत्वस्थान में ९ का १ वधस्थान होता है। २ के उदय और २८–२४–२१–१३–१२–११ के सत्वस्थान मे ५ का १ बधस्थान और २८–२४–२१–१३–१२ के सत्वस्थान मे ४ का १ बधस्थान होता है १ के उदय और २८–२४–२१ के सत्वस्थान मे ४–३–२–१ के ४ वधस्थान, ११–५ के सत्वस्थान में ४ का १ वधस्थान ४ का सत्वस्थान में ४–३ के २ बधस्थान ३ के सत्वस्थान मे ३–२ के २ वधस्थान २ के सत्वस्थान मे २–१ के २ वधस्थान और १ का सत्वस्थान में १–० के २ बधस्थान होता है ॥६७५-६८१॥

मोह उदय और सत्वस्थान में बंधस्थान

उ.	स	ब
१०	२८-२७-२६	२२
९	२८	२२-२१-१७
	२७-२६	२२
	२४-२३-२२	१७
८	२८	२२-२१-१७-१३
	२७-२६	२२
	२४-२३-२२	१७-१३
	२१	१७
७	२८	२२-२१-१७-१३-९
	२४-२३-२२	१७-१३-९
	२१	१७-१३
६	२८-२४-२१	१७-१३-९
	२३-२२	१३

उ	स	व
५	२८-२४-२१	१३-९
	२३-२२	९
४	२८-२४-२१	९
२	२८-२४-२१-१३-१२-११	५
	२८-२४-२१-१३-१२	४
१	२८-२४-२१	४-३-२-१
	११-५	४
	४	४-३
	३	३-२
	२	२-१
	१	१-०

आगे नामकर्म के वधादिस्थानो के त्रिसयोगीभग दिखाते है।

णामस्स य बंधोदयसत्ताट्ठणाण सव्वभंगा हु ।
पत्तेउत्तं व हवे तियसंजोगेवि सव्वत्थ ॥६८२॥

नाम बंध थल उदय थल, सत्वथान के भंग ।
यथा पूर्व में कहे त्यों, त्रय संयोगी भंग ॥६८२॥

अर्थ—जैसे नामकर्म के वध, उदय और सत्वस्थानो के भगपूर्व दोहा न० ५०९-६१६ तक कह चुके है तैसे ही त्रिसयोगी भग होते है ॥६८२॥

आगे नामकर्म के वधादिस्थानो को गुणस्थानो मे दिखाते है।

छण्णवछत्तियसगइगि दुगतिगदुग तिण्णिअट्ठचत्तारि ।
दुगदुगचदुदुगपणचदु चदुरेयचदू पणेयचदू ॥६८३॥

एगेगंमट्ठ एगेगमट्ठ छदुमट्ठ केवलिजिणाणं ।
एगचदुरेगचदुरो दोचदु दोछक्क बंधउदयंसा ॥६८४॥

णामस्स य बंधोदयसत्ताणि गुणं पडुच्च उत्ताणि ।
पत्तेयादो सव्वं भणिदव्वं अत्थजुत्तीय ॥६८५॥

तेवीसादी बंधा इगिवीसादीणि उदयठाणाणि ।
वाणउदादी सत्तं बंधा पुण अट्ठवीसतियं ॥६८६॥

इगिवीसादीएक्कत्तीसंता सत्तअट्ठवीसूणा ।
उदया सत्तं णउदी बंधा पुण अट्ठवीसदुगं ॥६८७॥

एगुणतीसत्तिदयं उदयं वाणउदिणउदियं सत्तं ।
अयदे बंधट्ठाणं अट्ठावीसत्तियं होदि ॥६८८॥

उदया चउवीसूणा इगिवीसप्पहुदिएक्कतीसंता ।
सत्तं पढमचउक्कं अपुव्वकरणोत्ति णायव्वं ॥६८९॥

अडवीसदुगं बंधो देसे पमदे य तीसदुगमुदओ ।
पणवीससत्तवीसप्पहुदीचत्तारि ठाणाणि ॥६९०॥

अपमत्ते य अपुव्वे अडवीसादीण बंधमुदओ दु ।
तीसमणियट्टिसुहुमे जसकित्ती एक्कयं बंधो ॥६९१॥

उदओ तीसं सत्तं पढमचउक्कं य सीदिचउ संते ।
खीणे उदओ तीसं पढमचऊ सीदिचउ सत्तं ॥६९२॥

जोगिम्मि अजोगिम्मि य तीसिगितीसं णवट्ठयं उदओ ।
सीदादिचऊछक्कं कमसो सत्तं समुद्दिट्ठं ॥६९३॥

छै नव छै त्रय सात इक, दोति दोति अठचार ।
दो दो चउ दो पांच चउ, चइकच पन इक चार॥६८३

इक इक अठ इक एकअठ, बंध उदय अरु सत्व ।
इक चउ इक चउ दोय चउ, दो छै बंधक सत्व।।६८४

नाम बंध थल उदय सतु, कहे पूर्व गुण थान ।
यहां कहें उन सर्व को, अर्थ युक्ति को ठान ।।६८५

इक्किस से नव उदय थल, तेइस से छै बंध ।
वानव से छै सत्व भ्रम, अठविसादि त्रय बंध ।।६८६

इक्किस से इकतीस तक, बिना सात अठ बीस ।
उदय सत्व नव्वे तथा, बंध आठ नव बीस ।।६८७॥

उनतिस से त्रय उदय थल, वानव नव्वे सत्व ।
चौथे में अठवीस से, तीन बंध थल कत्व ।।६८८॥

इक्किस से इकतीस तक, चौबिस उदय न मान ।
वानव से चउ सत्व थल, ये अठगुण में जान ।।६८९

देश प्रमत अठवीस दुक, बंध उदय तिस दोय ।
पच्चिस सत्ताईस से, चार सत्व गत जोय ।।६९०॥

सात आठ गुण के विषें, अठविसादि चउ बंध ।
उदय तीस अनि सूक्ष्म में, यश कीरत का बंध ।।६९१

उद्य तीस सतु प्रथम चउ, असि से चउ उरधार ।
शांत क्षीण तिस उद्य सतु, प्रथम चार असिचार॥६६२
उद्य सयोग अयोग में, तिस दुक नव अठमान ।
असी आदि से चार छै, क्रम से सत्ता थान ॥६६३॥

अर्थ—नामकर्म के बध, उदय और सत्वस्थानो मे से मिथ्यात्व-गुणस्थान में २३–२५–२६–२८–२९–३० के ६ बधस्थान २१–२४–२५–२६–२७–२८–२९–३०–३१ के ९ उदयस्थान और ९२–९१–९०–८८–८४–८२ के ६ सत्वस्थान होते है सासादन-गुणस्थान मे २८–२९–३० के ३ बधस्थान २१–२४–२५–२६–२९–३०–३१ के ७ उदयस्थान और ९० का १ सत्वस्थान होता है मिश्रगुणस्थान मे २८–२९ के २ बधस्थान २९–३०–३१ के ३ उदयस्थान और ९२–९० के २ सत्वस्थान होते हैं अविरतगुण-स्थान मे २८–२९–३० के ३ बधस्थान २१–२५–२६–२७–२८–२९–३०–३१ के ८ उदयस्थान और ९३–९२–९१–९० के ४ सत्वस्थान होते है देशविरतगुणस्थान में २८–२९ के २ बधस्थान ३०–३१ के २ उदयस्थान और ९३–९२–९१–९० के ४ सत्व-स्थान होते है प्रमत्तगुणस्थान मे २८–२९ के २ बधस्थान २५–२७–२८–२९–३० के ५ उदयस्थान और ९३–९२–९१–९० के ४ सत्वस्थान होते है अप्रमत्तगुणस्थान मे २८–२९–३०–३१ के ४ बधस्थान ३० का १ उदयस्थान और ९३–९२–९१–९० के ४ सत्वस्थान होते है अपूर्वकरणगुणस्थान मे २८–२९–३०–३१–१ के ५ बधस्थान ३० का १ उदयस्थान और ९३–९२–९१–९० के ४ सत्वस्थान होते है अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसापराय गुणस्थान मे १–१ का बधस्थान ३० का १–१ उदयस्थान और ९३–९२–९१–९०–८०–७९–७८–७७ के ८–८ उदयस्थान होते है उपशातमोह-

गुणस्थान मे ३० का १ उदयस्थान ९३–९२–९१–९० के ४ सत्वस्थान होते है क्षीणमोहगुणस्थान मे ३० का १ उदयस्थान और ८०–७९–७८–७७ के ४ सत्वस्थान, होते हैं सयोगगुणस्थान मे ३०–३१ के २ उदयस्थान और ८०–७९–७८–७७ के ४ सत्वस्थान होते है तथा अयोगगुणस्थान मे ९-८ के २ उदयस्थान और ८०-७९-७८-७७-१०-९ के ६ सत्वस्थान होते है ॥६८३–६९३॥

गुणस्थानो मे नामकर्म के वंधादिस्थान

गु	ब	उ	सत्व
मि	२३-२५-२६-२८-२९-३०	२१-२४-२५-२६-२८-२८-२९-३०-३१	९२-९१-९०-८८-८४-८२
सा	२८-२९-३०	२१-२४-२५-२६-२९-३०-३१	९०
मि	२८-२९	२९-३०-३१	९०-९२
अ	२८-२९-३०	२१-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१	९३-९२-९१-९०
दे	२८-२९	३०-३१	,,
प्र	,,	२५-२७-२८-२९-३०	,,
अ	२८-२९-३०-३१	३०	,,
अ	२८-२९-३०-३१-१	३०	,,
अ	१	३०	९३-९२-९१-९०-८०-७९-७८-७७
सू	१	३०	,,
उ	०	३०	९३-९२-९१-९०
क्षी	०	३०	८०-७९-७८-७७
स	०	३०-३१	८०-७९-७८-७७
अ	०	९-८	८०-७९-७८-७७-१०-९

आगे नामकर्म के बंधादिस्थानो के १४ जीवसमासो को दिखाते है ।

पणदोपणगं पणचदुपणगं बंधुदयसत्त पणगं य ।
पणछक्कपणगछछक्कपणगमट्ठट्ठमेयारं ॥६६४ ॥
सत्तेव अपज्जत्ता सामी सुहुमो य बादरो चेव ।
वियलिंदिया य तिविहा होंति असण्णी कमा सण्णी ॥६६५॥
बंधा तियपणछण्णववीसत्तीसं अपुण्णगे उदओ ।
इगिचउवीसं इगिछव्वीसं थावरतसे कमसो ॥६६६॥
बाणउदीणउदिचऊ सत्तं एमेव बंधयं अंसा ।
सुहुमिदरे वियलतिये उदया इगिवीसयादिचउपणयं ॥६६७॥
इगिछक्कडणववीसत्तीसिगितीसं य वियलठाणं वा ।
बंधतियं सण्णिदरे भेदो बंधदि हु अडवीसं ॥६६८॥
सण्णिम्मि सव्वबंधो इगिवीसप्पहुदिएक्कतीसंता ।
चउवीसूणा उदओ दसणवपरिहीणसव्वयं सत्तं ॥६६९॥

सप्त अपूर्णा पन दु पन, सूक्ष्म पाँच चउ पाँच ।
बादर पन-पन पाँच थल, विकल पाँच छै पाँच ॥६६४॥
असना छै-छै पाँच थल, समन आठ अठ ग्यार ।
बंध उदय अरु सत्व थल, क्रमसे लेहु विचार ॥६६५॥
त्रय पन छै नव वीस तिस, वंध उदय अरु मान ।
इक चउ विस इक छै विसा, थावर त्रस क्रम जान॥६६६

चानव नव्वे चार सतु, वंध सत्व फिर वांच ।
सूक्ष्म इतर विकला उदय, इक विस से चउ पाँच ॥६९७

इक छै अठ नव वीस तिस, इकतिस अमना मान ।
वंधादिक हैं विकल वत् , अठविस भी वंधान ॥६९८॥

सैनी के सव वंध थल, चौविस उदय न पत्व ।
इकविस से इकतीस तक, दश नव विन सव सत्व ॥६९९

अर्थ—७ प्रकार के अपर्याप्त जीवो मे से वादर और सूक्ष्म एकेन्द्रियलब्धि अपर्याप्त जीवो के २३-२५-२६-२९-३० के ५ वधस्थान २१-२४ के २ उदयस्थान और ९२-९०-८८-८४-८२ के ५ सत्वस्थान होते है त्रसलब्धि अपर्याप्त जीवो के उपरोक्त ५ वध स्थान २१-२६ के २ उदयस्थान और उपरोक्त ५ सत्वस्थान होते है सूक्ष्म पर्याप्त जीवो के उपरोक्त ५ वधस्थान २१-२४-२५-२६ के ४ उदयस्थान और उपरोक्त ५ सत्वस्थान होते है वादर पर्याप्त एकोन्द्रिय जीवो के उपरोक्त ५ वधस्थान २१-२४-२५-२६-२७ के ५ उदयस्थान और उपरोक्त ५ सत्वस्थान होते हैं वादर पर्याप्त विकलेन्द्रियजीवो के उपरोक्त ५ वधस्थान २१-२६-२८-२९-३०-३१ के ६ उदयस्थान और उपरोक्त ५ सत्वस्थान होते है पर्याप्त असैनीपचेन्द्रिय के २३-२५-२६-२८-२९-३० के ६ ववस्थान उपरोक्त ६ उदयस्थान और उपरोक्त ५ सत्वस्थान होते है तथा पर्याप्तसैनी के सव वधस्थान २१-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१ के ८ उदयस्थान और १०-९ के विना ११ सत्वस्थान होते हैं ॥६८४-६९९॥

नाम के जीवसमासों में बंधादिस्थान

जीव	ब.	उ.	स
अ बा सू एके	२३-२५-२६-२९-३०	२१-२४	९२-९०-८८-८४-८२
अ त्रस	,,	२१-२६	,,
प सू	,,	२१-२४-२५-२६	,,
प.बा एके	,,	२१-२४-२५-२६-२७	,,
प विक.	,,	२१-२६-२८-२९-३०-३१	,,
प.अ प.	२३-२५-२६-२८-२९-३०	,,	,,
प.सैनी	सब	२१-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१	१०-९ बिना सब

आगे नामकर्म की गतिमार्गणा मे बधादिस्थान दिखाते है।

दोछक्कट्ठचउक्कं णिरयादिसु णामबंधठाणाणि ।
पणणवएगारपणयं तिपंचबारसचउक्कं य ॥७००॥
एगे वियले सयले पण पण अड पंच छक्केगार पणं ।
पणतेरं बंधादी सेसादेसेवि इदि णेयं ॥७०१॥
णिरयादिणामबंधा उगुतीसं तीसमादिमं छक्कं ।
सव्व पणछक्कुत्तरवीसुगुतीसंदुगं होदि ॥७०२॥
उदय इगिपणसग अडणववीसं एक्कवीसपहुदिणवं ।
चउवीसहीणसव्वं इगिपणसगअट्ठणववीसं ॥७०३॥
सत्ता वाणउदितियं बाणउदीणउदि अट्ठसीदितियं ।
बासीदिहीणसव्वं तेणउदिचउक्कयं होदि ॥७०४॥

दो छै अठ चउ चहुँ गनों. नाम बंध थान धार ।
दो पन ग्यारह पांच थल, नवपन ग्यारह चार ॥७००

एक विकल नकलाहिं पन. पन अठपन छै च्यार ।
पन पन तेरह बंधदिक. शेष कथन इमि धार ॥७०१॥

नाम बंध नरकादि में. क्रम से उनतिस तीस ।
तिनसे छै अरु सर्व थल, पन छै नव विस तीस ॥७०२॥

उदय नरक सुर एक पन, सात आठ नव तीस ।
इक्किस मे नव पशु मनुष, चौवीस विन नव दीस॥७०३

सत्व बानवे सेजु नव, बानव नवे और ।
अठसी नव सव व्यासि विन. बानव चउचउ ठौर॥७०४

नाम के नरकादि गतियों में बंधादि स्थान

गति	बंध	उ०	स०
न०	२९-३०	२१-२५-२७-२८-२९	९२-९१-९०
ति०	२३-२५-२६-२८ २९-३०	२१-२४-२५-२६ २७-२८-२९-३०-३१	९२-९०-८८-८४-८२
म०	सब	२४ के बिन सब	८२ के बिना सब
दे०	२५-२६-२९-३०	२१-२५-२७-२८-२९	९३-९२-९१-९०

आगे नामकर्म की इन्द्रियमार्गणा मे बंधादिस्थान दिखाते है।

इगिविगल बंधठाणं अडवीसूणं तिवीसछक्कं तु।
सयलं सयले उदया एगे इगिवीसपंचयं वियले ॥७०५॥
इगिछक्कडणववीसं तीसदु चउवीसहीणसव्वुदया।
णउदिचऊ वाणउदी एगे वियले य सव्वयं सयले ॥७०६॥

इक विकला अठवीस विन, तेइस छै बंधान।
सकल सर्व इक के उदय, इक्किस पन विकलान ॥७०५
इक छै अठ नव विस तिस दु, चौबिस विन सब मान।
बानव नव्वे चउ इकल, विकलरु सब सकलान ॥७०६॥

एकेन्द्रिय २३-२५-२६-२९-३० के ५ बंधस्थान २१-२४-२५-२६-२७ के ५ उदयस्थान और ९२-९०-८८-८४-८२ के ५ सत्वस्थान होते हैं विकलेन्द्रिय के उपरोक्त ५ बंधस्थान २१-२६-२८-२९-३०-३१ के ६ उदयस्थान और उपरोक्त ५ सत्वस्थान होते है तथा सकलेन्द्रिय के सब बंधस्थान २४ के बिना सब उदयस्थान और सब सत्वस्थान होते है ॥७०५-७०६॥

नाम के इन्द्रियमार्गणा मे बंधादिस्थान

इन्द्रिय	बंध	उदय	सत्त्व
[illegible]	[illegible] २६-२९-३०	[illegible] ३१	९२-९०-८८-८४ ८२
[illegible]	,,	२१-२६-२८-२९-३०-३१	,,
[illegible]	[illegible]	२० [illegible]	[illegible]

आगे नामकर्म के कायमार्गणा मे बंधादिस्थान दिखाते है ।

पुढवीयादीपंचसु तसे कमा बंधउदयसत्ताणि ।
एय वा वियलं वा तेउदुगे णत्थि सगवीसं ॥७०७॥

थावर अरु त्रस काय मे, बंध उदय सत्थान ।
इकल सकल वत अग्नि द्विक, सत्ताइस विन जान ॥७०७

नाम के कायमार्गणा मे बंधादिस्थान

काय	बंध	उदय	सत्त्व
पृ. अ. व.	एके. समान	एके. समान	एके. समान
तेज.	एके. समान	२१-२४-२५-२६	एके. समान
त्रस	पंचे. समान	पंचे. समान	पंचे. समान

आगे नामकर्म के योगमार्गणा मे बंधादिस्थान दिखाते है ।

मणिवचि बंधुदयंसा सव्वं णववीसतीसइगितीसं ।
दसणवदुसीदिवज्जिदसव्वं ओरालतम्मिस्से ॥७०८॥

सव्वं तिवीसछक्कं पणुवीसादेक्कतीसपेरंतं ।
चउछक्कसत्तवीसं दुसु सव्वं दसणवहीणं ॥७०९॥
वेगुव्वे तम्मिस्से बंधसा सुरगदीव उदयो दु ।
सगवीसतियं पणजुदवीसं आहारतम्मिस्से ॥७१०॥
बंधतियं अडवीसदु वेगुव्वं वा तिणउदिबाणउदी ।
कम्मे वीसदुगुदओ ओरालियमिस्सयं व बंधंसा ॥७११॥

मन वच में बंधादि सब, उनतिस से इकतीस ।
दश नव ब्यासी बिना सब, औदा अरु मिस दीस ॥७०८
सब तेइस से छै तलक, पच्चिस से इकतीस ।
चउ छै सतविस मिश्र में, दश नव बिन सब दीस॥७०९
विक्रिय अरु मिस बंध सतु, सुरवत् उदय अनादि ।
सत्ताइस त्रय पच्चिसा, हार मिश्र बंधादि ॥७१०॥
अठविस दुक विक्रियसु वत्, त्रानव वानव सत्व ।
कारमाण विस दुक उदय, औद मिश्र बँध सत्व ॥७११

अर्थ—मन और वचनयोग में सब बधस्थान २९–३०–३१ के ३ उदयस्थान और १०–९–८२ के बिना सब सत्वस्थान होते है औदारिककाययोग मे सब बधस्थान २५–२६–२७–२८–२९–३०-३१ के ७ उदयस्थान और १०–९ के बिना सब सत्वस्थान होते है औदारिकमिश्रकाययोग मे २३–२५–२६–२८–२९–३० के ६ बधस्थान २४–२६–२७ के ३ उदयस्थान और १०–९ के बिना सब सत्वस्थान होते है विक्रियककाययोग में देवगति के समान बध

नाम के योगमार्गणा में बंधादिस्थान

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०-६ [illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०-६ [illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	,,
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]	,,
[illegible]	[illegible]	[illegible]	६२-६३
[illegible]	,,	,,	,,
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०-६ [illegible]

[illegible]

वेदकसाये सव्व इगिवीसपव तिणउदिएक्कारं ।
थीपुरिसे चउवीस सीदउमदरी ण थीमदे ॥७१२॥

वेद कषय सब इक्किस्ना. नव त्रानत्र से ग्यार ।
असि अठतर बिन पंड तिय, चौबिस बिन नर नार ।७१२

अर्थ—स्त्रीवेद मे सब बधस्थान २१–२५–२६–२७–२८–
-३०–३१ के ८ उदयस्थान और १०–९–८०–७८ के बिना सब
स्थान होते है नपुसकवेद मे सब बधस्थान २१–२४–२५–२६–
-२८–२९–३०–३१ के ९ उदयस्थान और ९३–९२–९१–
-८८–८४–८२–७९–७७ के ९ सत्वस्थान होते है पुरुषवेद मे
बधस्थान स्त्रीवेद के समान ८ उदयस्थान और १०–९ के
ा सब सत्वस्थान होते है क्रोध, मान, माया और लोभकषाय मे
बधस्थान नपुसकवेद के समान ९ उदयस्थान और १०–९ के
ा सब सत्वस्थान होते है ॥७१२॥

नाम के वेद और कषायमार्गणा में बंधादिस्थान

	ब	उ	स
	सव	२१-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१	१०-९-८०-७८के बिना सब
	,,	२१-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१	९३-९२-९१-९०-८८-८४-८२-७९-७७
	,,	स्त्री समान	१०-९ के बिना सब
दि	,,	नपुसक समान	,,

आगे नामकर्म की ज्ञान से लेश्यामार्गणा तक के बधादिस्थान
ते है ।

ाणदुगे बंधो आदीछ णउंसयं व उदयो दु ।
दुणउदिछक्कं विभंगबंधा हु कुमदिं व ॥७१३॥
ा उणतीसतियं सत्ता णिरयं व मदिसुदोहीए ।
ीसपंच बंधा उदया पुरिसं व अट्ठेव ॥७१४॥
चऊ सीदिचऊ सत्तं मणपज्जवम्हि बंधंसा ।
व तीसमुदयं ण हि बंधो केवले णाणे ॥७१५॥

उदओ सव्वं चउपणवीसूणं सीदिछक्कयं सत्तं ।
सुदमिव सामयियदुगे उदओ पणुवीससत्तवीसचऊ ॥७१६॥
परिहारे बंधतियं अडवीसच्चऊ य तीसमादिचऊ ।
सुहुमे एक्को बंधो मणं व उदयंसठाणाणि ॥७१७॥
जहखादे बंधतियं केवलयं वा तिणउदिचउ अत्थि ।
देसे अडवीसदुगं तीसदु तेणउदिचारि बंधतियं ॥७१८॥
अविरमणे बंधुदया कुमदिं व तिणउदिसत्तयं सत्तं ।
पुरिसं वा चक्खिदरे अत्थि अचक्खुम्मि चउवीसं ॥७१९॥
ओहिदुगे बंधतियं तण्णाणं वा किलिट्ठलेस्सतिये ।
अविरमणं वा सुहजुगलुदओ पुंवेदयं व हवे ॥७२०॥
अडवीसचऊ बंधा पणछव्वीसं य अत्थि तेउम्मि ।
पढमचउक्कं सत्तं सुक्के ओहिं व वीसयं चुदओ ॥७२१॥

बंधादिक छै कुमति दुक, उदय षंड वत् मान ।
बानव से छै सत्व थल, कुवधि कुमति बंधान ॥७१३॥
उनतिस से त्रय उदय सतु, नरक सत्य त्रय ज्ञान ।
अठविस पन बंध रु उदय, पुरुष तुल्य अठ जान ॥७१४
सत्व प्रथम चउ असी चउ, मनपर्यय सतु बंध ।
अवधि तुल्य तिस का उदय, केवल बंध न गंध ॥७१५॥
चउ पन विस विन सब उदय, सत्व असी छै लार ।
समय छेद श्रुत वत् उदय, पच्चिस सतु विस चार।७१६

अठ विस चउ तिस आदि चउ, बंधादिक परिहार।
सूक्ष्म बंध इक उदय सतु, मन पर्यय वत् सार ।।७१७

यथाख्यात में बंध त्रय, केवल त्रानव चार ।
देश विषें अठवीस दुक, तिस दुक त्रानव चार ।।७१८।।

बंध उदय अविरत कुमति, सत्व त्रानवे सात ।
चक्षु इतर दो पुरुष वत्, चौविस अचक्षु आत ।।७१९।।

अवधि दुक हिं उन ज्ञान वत्, कृष्ण त्रयी बंधादि।
अव्रतवत् शुभ युगल में, उदय पुरुष वत् लादि ।।७२०

अठविस से चउ बंध अरु, पन छै विस युत पीत ।
सत्व प्रथम चउ शुक्ल थल, अवधि उदय विसगीत।७२१

अर्थ—कुमतिज्ञान और कुश्रुतज्ञान मे २३–२५–२६–२८–२९-३० के ६ बधस्थान नपुसकवेद के समान ९ उदयस्थान और ९२–९१–९०–८८–८४–८२ के ६ सत्वस्थान होते है कुअवधि ज्ञान मे कुमतिज्ञानसमान ६ वधस्थान २९–३०–३१ के ३ उदयस्थान और नरकसमान सत्वस्थान होते है सुमति, सुश्रुत और सुअवधिज्ञान मे २८–२९–३०–३१-१ के ५ वधस्थान, पुरुषवेद के समान ८ उदयस्थान और ९३-९२-९१-९०-८०-७९-७८-७७ के ८ सत्वस्थान होते है मनपर्ययज्ञान मे बध और सत्वस्थान सुअवधिज्ञान के समान है और ३० का १ उदयस्थान होता है केवलज्ञान मे ० बधस्थान २४-२५ के बिना सब उदयस्थान और ८०-७९-७८-

७७-१०-६ के ६ सत्वस्थान होते है सामायिक और छेदोपस्थापनासयम मे वध और सत्वस्थान सुश्रुतज्ञान के समान और २५-२७-२८-२६-३० के ५ उदयस्थान होते है परिहारविशुद्धिसयम मे २८-२६-३०-३१ के ४ बधस्थान ३० का १ उदयस्थान और ६३-६२-६१-६० के ४ सत्वस्थान होते है सूक्ष्मसापराय सयम मे १ का १ वधस्थान, उदय और सत्वस्थान मनपर्यज्ञान के समान होते है यथाख्यातसयम मे बध और उदयस्थान केवलज्ञान के समान और ६३–६२–६१–६०–८०–७६–७८–७७–१०–६ के १० सत्वस्थान होते है देशसयम मे २८, २६ के २ बधस्थान ३०–३१ के २ उदयस्थान और ६३-६२-६१-६० के ४ सत्वस्थान होते है असयम मे कुमतिज्ञान के समान बध और उदयस्थान और ६३–६२–६१–६०–८८–८४–८२ के ७ सत्व स्थान होते है चक्षुदर्शन मे पुरुषवेद के समान वध उदय और सत्व स्थान होते है अचक्षुदर्शन मे पुरुषवेद के समान बध और सत्वस्थान तथा नपुसकवेद के समान ६ उदयस्थान होते है अवधि और केवल दर्शन मे सुअवधि और केवल ज्ञान के समान वधादिस्थान होते है कृष्ण, नील और कपोतलेश्या मे असयम के समान वधादिस्थान होते है पीतलेश्या मे २५-२६-२८-२६-३०-३१ के ६ वधस्थान पुरुपवेद के समान ८ उदयस्थान और ६३-६२-६१-६० के ४ सत्वस्थान होते है पद्मलेश्या मे २८-२६-३०-३१ के ४ वधस्थान पुरुपवेद के समान ८ उदयस्थान और पीतलेश्या के समान ४ सत्वस्थान होते है तथा शुक्ललेश्या मे वध और सत्वस्थान सुअवविज्ञान समान और २०–२१–२५–२६–२७–२८–२६–३०–३१ के ६ उदयस्थान होते है ॥७१३-७२१॥

नाम के ज्ञान लेश्यामार्गणा तक में बंधादि स्थान

ज्ञा—ले	ब०	उ०	स०
कुम, कुश्रु	२३-२५-२६ २८-२९-३०	नपुसकसमान	९२-९१-९०-८८-८४ ८२
कुअवधि	,,	२९-३०-३१	नरकसमान
म श्रु अ	२८-२९-३० ३१-१	पुरुषवेदसमान	९३-९२-९१-९०-८० ७९-७८-७७
मन०	अवधिसमान	३०	अवधिसमान
केवल०	०	२४-२५ बिना	८०-७९-७८-७७-१०-९
सा० छे०	श्रुतसमान	२५-२७-२८ २९-३०	श्रुतसमान
परि०	२८-२९-३०-३१	३०	९३-९२-९१-९०
सू०	१	मन समान	मन समान
यथा०	केवलसमान	केवलसमान	९३-९२-९१-९०-८० ७९-७८-७७-१०-९
दे०	२८-२९	३०-३१	९३-९२-९१-९०
असयम	कुमतिसमान	कुमतिसमान	९३-९२-९१-९०-८८ ८४-८२
च द	पुरुषसमान	पुरुषसमान	पुरुषसमान
अ च द	,	नपुसकसमान	,
अ द	अ ज्ञा स	अ ज्ञा स	अ.ज्ञा स
के द	के ज्ञा स	के.ज्ञा सा	के ज्ञा स
कृ नी क	असयमस	असयम स	अ.सयमस
पीत	२५-२६-२८ २९-३०-३१	पुरुषसमान	९३-९२-९१-९०
पद्म	२८-२९-३०-३१	,,	,,
शु	अवधिसमान	२०-२१-२५-२६ २७-२८-२९-३० ३१	अवधिसमान

आगे नामकर्म की भव्य से सैनीमार्गणा तक बधादिस्थान होते है।

भव्वे सव्वमभव्वे बंधुदया अविरदव्व सत्तं तु ।
णउदिचउ हारबंधणदुगहीणं सुदमिवुवसमे बंधो ॥७२२॥
उदया इगिपणवीसं णववीसतियं य पढमचउ सत्तं ।
उवसम इव बंधंसा वेदगेसम्मे ण इगिबंधो ॥७२३॥
उदया मदि व खइये बंधादी सुदमिवत्थि चरिमदुगं ।
उदयंसे वीसं य य साणे अडवीसतियबंधो ॥७२४॥
उदया इगिवीसचऊ णववीसतियं य णवदियं सत्तं ।
मिस्से अडवीसदुगं णववीसतियं य बंधुदया ॥७२५॥
वाणउदिणउदिसत्तं मिच्छे कुसदि व होदि बंधतियं ।
पुरिसं वा सण्णीये इदरे कुमदिं व णत्थि इगिणउदी ॥७२६॥

भवि सब अभव्य बंध अरु, उदयाव्रत सतु गंध ।
नव्वे चउ आहार बिन, श्रुतवत् उपशम बंध ॥७२२
इक पन विस नव बीस त्रय, उदय प्रथम चउसत्व ।
वेदक शमवत् बंध सतु, बंध न इक का पत्व ॥७२३
उदय मतिस क्षय बंध त्रय, श्रुतवत् उदय रु सत्व ।
अंत दोय विस सास में, अठ विस त्रय बंधत्व ॥७२४॥
इक विस चउ उनतीस त्रय, उदयरु नव्वे सत्व ।
अठविस दुक उनतीस त्रय, बंध उदय मिश्रत्व ॥७२५
वानव नव्वे सत्व भ्रम, कुमति तुल्य बंधादि ।
समन पुरुषवत् असन के, कुमति नवे इकवादि ॥७२६

अर्थ—भव्य के बध, उदय और सत्वस्थान सब होते है अभव्य के २३-२५-२६-२८-२९ उद्योतसहित ३० इस तरह ६ बधस्थान असयमसमान ९ उदयस्थान और ९० आदि के ४ सत्वस्थान होते है उपशमसम्यकत्व मे सुश्रुतसमान ५ बधस्थान २१-२५-२९-३०-३१ के ५ उदयस्थान और ९३-९२-९१-९० के ४ सत्वस्थान होते है वेदक-सम्यकत्व मे २८-२९-३०-३१ के ४ बधस्थान, पुरुषवेद के समान ८ उदयस्थान और उपरोक्त ४ सत्वस्थान होते है क्षायिक-सम्यकत्व मे २८-२९-३०-३१-१ के ५ बधस्थान २०-२१-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१-९-८ के ११ उदयस्थान और ९३-९२-९१ ९०-८०-७९-७८-७७-१०-९ के १० सत्वस्थान होते है। सासादन सम्यकत्व मे २८-२९-३० के ३ बधस्थान २१-२४-२५-२६-२९-३० ३१ के ७ उदयस्थान और ९० का १ सत्वस्थान होता है मिश्र मे २८-२९ के २ बधस्थान २९-३०-३१ के ३ उदयस्थान और ९२-९० के २ सत्वस्थान होते है मिथ्यात्व मे कुमतिज्ञान समान बधादि स्थान होते है सैनी के पुरुपवेद समान बध, उदय और सत्वस्थान होते है तथा असैनी में कुमतिज्ञान समान बध उदय और ९२, ९०, ८८-८४-८२ के ५ सत्वस्थान होते है ॥७२२-७२६॥

नाम के भव्य से सैनीमार्गणा तक में बंधादि स्थान

भ सै	ब	उ	स
भव्य	सब	सब	सब
अभव्य	२३-२५-२८-२९-३०	असंयम समान	९०-८८-८४-८२
उपशम	श्रुत समान	२१-२५-२९-३०-३१	९३-९२-९१-९०
वेदक	२८-२९-३०-३१	पुरुप समान	,,
क्षायिक	२८-२९-३०-३१-१	२४ विना सब	८८-८४-८२विनासब
सासा	२८-२९-३०	२१-२४-२५-२६- २९-३०-३१	९०
मिश्र	२८-२९	२९-३०-३१	९२-९०
मिथ्या	कुमति समान	कुमति समान	कुमति समान
सैनी	पुरुव समान	पुरुप समान	पुरुप समान
असैनी	कुमति समान	कुमति समान	९२-९०-८८-८४-८२

आगे नामकर्म की आहारमार्गणा मे बधादिस्थान दिखाते है।

आहारे बंधुदया संढं वा णवरि णत्थि इगिवीसं।
पुरिसं वा कम्मंसा इदरे कम्मं व बंधतियं ।।७२७।।
अत्थि णवट्ठ य दुदओ दसणवसत्तं य विज्जदे एत्थ।
इदि बंधुदयप्पहुदीसुदणामे सारमादेसे ।।७२८।।

बंध उदय आहार में, इक्किस विन वत् षंड।
सत्व पुरुष वत् बंध त्रय, इतर कर्म वत् मंड ।।७२७।
है नव अठ का उदय अरु, दश नव सत्ता और।
बंध उदय अरु सत्व थल, इस प्रकार सग ठौर।।७२८

अर्थ—आहारमार्गणा मे सब बधस्थान २४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१ के ८ उदयस्थान और १०-९ के विना सब सत्वस्थान होते है तथा अनाहार मार्गणा मे २३-२५-२६-२८-२९-३० के ६ बधस्थान २०-२१-९-८ के ४ उदयस्थान और सव सत्वस्थान अयोगगुणस्थान सहित होते है इसप्रकार मार्गणाओ मे नामकर्म के वधादिस्थान होते है ।।७२७—७२८।।

नाम के आहारमार्गणा में बंधादि स्थान

आ० मा०	व०	उ०	स०
आहार	सव	२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१	१०-९ के विना सब
अनाहार	कुमतिसमान	२०-२१-९-८	सव

आगे अत मगल दिखाते है।

चारुसुदंसणधरणे कुवलयसंतोसणे समत्थेण ।
माधवचंदेण महावीरेणत्थेण वित्थरिदो ॥७२६॥

सम्यक्दर्शन वर धरा, सब भू सुख दातार ।
यादवचन्द्र सुवीर ने, दिया अर्थ विस्तार ॥७२६

अर्थ—इसप्रकार उपरोक्त सब कथन परमावगाढक्षायिक सम्यक्दर्शन के धारण वाले, सब पृथ्वीमडल को आनन्द उत्पन्न करने वाले और वीरो के वीर श्रीनेमिनाथ भगवान ने स्पष्ट किया ७२६॥

आगे नामकर्म के बधस्थान मे उदय और सत्वस्थान दिखाते है

णवपंचोदयसत्ता तेवीसे पण्णुवीस छव्वीसे ।
अट्ठचदुरट्ठवीसे णवसत्तुगुतीसतीसम्मि ॥७३०॥

एगेगं इगितीसे एगे एगुदयमट्ठसत्ताणि ।
उवरदबंधे दसदस उदयंसा होंति णियमेण ॥७३१॥

तियपणछवीसबंधे इगिवीसादेक्कतीसचरिमुदया ।
बाणउदी णउदिच्चऊ सत्तं अडवीसगे उदया ॥७३२॥

पुव्वं व ण चउवीसं बाणउदिच्चउक्कसत्तमुगुतीसे ।
तीसे पुव्वं वुदया पढमिल्लं सत्तयं सत्तं ॥७३३॥

इगितीसे तीसुदओ तेणउदी सत्तयं हवे एगे ।
तीसुदओ पढमचऊ सीदादिच्चउक्कमवि सत्तं ॥७३४॥

उवरदबंधेसुदया चउपणवीसूण सव्वयं होदि ।
सत्तं पढमचउक्कं सीदादीछक्कमवि होदि ॥७३५॥

उद्‌य सत्व नव पांच हैं, त्रय पन छै विस शीश।
अठ चउ हैं अठवीस में, नव सत उनतिस तीस ॥७३०
इक इक है इकतीस में, इक में है इक सात।
बंध रहित में उद्‌य सतु, दश दश श्रुत विख्यात ॥७३१
त्रय पन छै विस में उद्‌य, इक्किस से इकतीस।
सत्व बानवे नवे चउ, बंध आठ विस शीश ॥७३२॥
उद्‌य पूर्व चौबीस विन, बानव चउ सतु ख्यात।
उनतिस तिस के उद्‌यगत्, सत्व प्रथम से सात ॥७३३
इकतिस से तिस का उद्‌य, सत्व त्रानवे तार।
इक में तिस का उद्‌य सतु, तानव चउ असि चार ॥७३४
बंध रहित में उद्‌य सव, परि चउपन विस नांहिं।
सत्व प्रथम चउ असी चउ, ऐसा जिन मग मांहि ॥७३५

अर्थ—नामकर्म के २३-२५-२६ के बधस्थान मे २१-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१ के ९ उदयस्थान और ९२-९०-८८-८४-८२ के ५ सत्वस्थान होते है २८ के बधस्थान मे २१-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१ के ८ उदयस्थान और ९२-९१-९०-८८ के ४ सत्वस्थान होते है २९—३० के वधस्थान मे २१-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१ के ९ उदयस्थान और ९३-९२-९१-९०-८८-८४-८२ के ७ सत्वस्थान होते है ३१ के बधस्थान मे ३० का १ उदय और ९३ का सत्वस्थान होता है १ के वधस्थान मे ३० का उदय और

९३-९२-९१-९०-८०-७९-७८-७७ के ८ सत्वस्थान होते है तथा वधरहितस्थान में २०-२१-२६-२७-२८-२९-३०-३१-९-८ के १० उदय और उपरोक्त ८ और १०-९ के सत्वस्थान होते है ॥७३०-७३५

नाम के बंध में उदय और सत्वस्थान

वध	उदय	सत्व
२३-२५-२६	२१–२४–२५–२६–२७–२८–२९–३०–३१	९२–९०–८८–८४–८२
२८	२१–२५–२६–२७–२८–२९–३०–३१	९२–९१–९०–८८
२९-३०	२३ के वध समान	९३–९२–९१–९०–८८–८४–८२
३१	३०	९३
१	३०	९३-९२-९१-९०-८०-७९-७८-७७
०	२०–२१–२६–२७–२८–२९–३०–३१–९–८	९३-९२९१-९०-८०-७९-७८-७७ १०-९

भावार्थ—२३ के बध समय तिर्यंच के मिथ्यात्वगुणस्थान में २१–२४–२५–२६–२७–२८–२९–३०-३१ के ९ उदयस्थान और ९२–९०–८८–८४–८२ के ५ सत्वस्थान होते है तथा मनुष्य के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २१–२६–२८–२९–३० के ५ उदयस्थान और ९२–९०–८८–८४ के ४ सत्वस्थान है।

२५ के बधसमय तिर्यंच और मनुष्य के मिथ्यात्वगुणस्थान में उदय और सत्वस्थान २३ के बधस्थान समान होते है तथा सौधर्म-ईसान तक के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २१–२५–२७–२८–२९ के ५ उदयस्थान और ९२–९० के २ सत्वस्थान होते है।

२६ के बध समय तिर्यंच, मनुष्य और सौधर्म-ईसान तक के मिथ्यात्वगुणस्थान मे उदय और सत्वस्थान २५ के बधसमान होते है।

२८ के बधसमय पर्याप्तपचेन्द्रियतिर्यंच के मिथ्यात्वगुणस्थान

मे २८–२९–३०–३१ के ४ उदयस्थान और ९२–९०–८८ के ३ सत्वस्थान होते है सासादनगुणस्थान मे देवसहित २८ के बधसमय ३०–३१ के २ उदयस्थान और ९० का १ सत्वस्थान होता है मिश्रगुणस्थान मे ३०–३१ के २ उदयस्थान और ९२–९० के २ सत्वस्थान होते है अविरतगुणस्थान मे २१–२६–२८–२९–३०–३१ के ६ उदयस्थान और ९२–९० के २ सत्वस्थान होते है तथा देशविरतगुणस्थान मे ३०–३१ के २ उदयस्थान और ९२–९० के २ सत्वस्थान होते है मनुष्य के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २८–२९–३० के ३ उदयस्थान और ९२–९१–९०–८८ के ४ सत्वस्थान होते है सासादनगुणस्थान मे देवगतिसहित २८ के बधसमय ३० का १ उदयस्थान और ९० का १ सत्वस्थान होता है मिश्रगुणस्थान मे ३० का १ उदयस्थान और ९२–९० के २ सत्वस्थान होते है अविरतगुणस्थान मे २१–२६–२८–२९–३० के ५ उदयस्थान और ९२–९० के २ सत्वस्थान होते है देशविरतगुणस्थान मे ३० का १ उदयस्थान और ९२–९० के २ सत्वस्थान होते है प्रमत्तगुणस्थान मे २५–२७–२८–२९–३० के ५ उदयस्थान और ९२-९० के २ सत्वस्थान होते है अप्रमत्त और अपूर्वकरणगुणस्थान मे ३० का १ उदयस्थान और ९२-९० के २ सत्वस्थान होते है।

पचेन्द्रियतिर्यच या मनुष्यसहित २९ के वधसमय प्रथम नरक के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २१–२५–२७–२८–२९ के ५ उदयस्थान और ९२–९० के २ सत्वस्थान होते है सासादनगुणस्थान मे २९ का १ उदयस्थान और ९० का १ सत्वस्थान होता है मिश्रगुणस्थान मे मनुष्यसहित २९ के वधसमय २९ का १ उदयस्थान और ९२–९० के २ सत्वस्थान होते हे तथा अविरतगुणस्थान मे उदय और सत्वस्थान मिथ्यात्व के समान है किन्तु मि गु के अपर्याप्तकाल मे ९१ का १ सत्व होता है द्वितीय और तृतीय नरक के मिथ्यात्व मे मिश्र-गुणस्थान तक उदय और सत्वस्थान प्रथम नरक के समान है तथा अविरतगुणस्थान मे २९ का १ उदय और ९२-९० के २ सत्वस्थान

होते है किन्तु मि० गु० के अपर्याप्तकाल में ६१ का १ सत्व होता है शेष नरको के मिथ्यात्व से अविरतगुणस्थान तक उदय और सत्वस्थान द्वितीयनरक के पर्याप्तसमान है देव विना २६ के बधसमय तिर्यंच के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २१–२४–२५–२६–२७–२८–२६–३०–३१ के ६ उदयस्थान और ६२–६०–८८–८४–८२ के ५ सत्वस्थान होते है तथा सासादनगुणस्थान मे पचेन्द्रियतिर्यंच या मनुष्यसहित २६ के बधसमय २१–२४–२६–३० के ४ उदयस्थान और ६० का १ सत्वस्थान होता है देवगति विना २६ के बधसमय मनुष्य के मिथ्यात्वगुणस्थान में २१–२६–२८–२६–३० के ५ उदयस्थान और ६२–६१–६०–८८–८४ के ५ सत्वस्थान होते है किन्तु ३० का उदय और ६१ का सत्व नरक को जाते समय होता है सासादनगुणस्थान मे पचेन्द्रियतिर्यंचसहित या मनुष्यसहित २६ के बधसमय २१–२६–३० के ३ उदयस्थान और ६० का १ सत्वस्थान होता है देवतीर्थसहित २६ के बधसमय अविरतगुणस्थान मे २१–२६–२८–२६–३० के ५ उदयस्थान और ६३–६१ के २ सत्वस्थान होते है देशविरतगुणस्थान मे ३० का १ उदयस्थान और ६३–६१ के २ सत्वस्थान होते है प्रमत्तगुणस्थान मे २५–२७–२८–२६–३० के ५ उदयस्थान और ६३–६१ के २ सत्वस्थान होते है तथा अप्रमत्त और अपूर्वकरणगुणस्थान मे ३० का १ उदय और ६३–६१ के २ सत्वस्थान होते है पचेन्द्रियतिर्यंच या मनुष्यसहित २६ के बधसमय सहस्रार विमान तक मिथ्यात्वगुणस्थान मे २१-२५-२७-२८-२६ के ५ उदयस्थान और ६२-६० के २ सत्वस्थान होते है सासादनगुणस्थान में २१-२५-२७-२८-२६ के ५ उदयस्थान और ६० का १ सत्वस्थान होता है मिश्रगुणस्थान मे मनुष्यसहित २६ के बधसमय २६ का १ उदयस्थान और ६२-६१ के २ सत्वस्थान होते है अविरतगुणस्थान मे भवनत्रक के २६ का १ उदय और शेषो के २१-२५-२७-२८-२६ के ५ उदयस्थान और ६२-६० के सबके २ सत्वस्थान होते है मनुष्यसहित २६ के बधसमय आनत

से ग्रीवक तक मिथ्यात्व से अविरतगुणस्थान तक के उदय और सत्वस्थान सहस्रार विमान के समान है तथा शेप विमानो मे उदय और सत्वस्थान सहस्रार विमान के अविरतगुणस्थान समान है ।

पचेन्द्रियतिर्यच उद्योतसहित ३० के वधसमय प्रथमनरक के मिथ्यात्व-सासादन गुणस्थान मे उदय और सत्वस्थान २९ के पर्याप्त वधसमान है मनुष्यतीर्थकर सहित ३० के वधसमय अविरतगुणस्थान मे २१-२५-२७-२८-२९ के ५ उदयस्थान और ९१ का १ सत्व-स्थान होता है द्वितीय और तृतीय नरक के मिथ्यात्व और सासा-दनगुणस्थान मे उदय और सत्वस्थान प्रथमनरक समान है तथा मनुष्य तीर्थकरसहित ३० के वधसमय अविरतगुणस्थान मे २९ का १ उदयस्थान और ९१ का १ सत्वस्थान होता है दोइन्द्रियादि तिर्यचउद्योतसहित ३० के वधसमय तिर्यच के मिथ्यात्वगुणस्थान मे उदय और सत्वस्थान २९ के वधसमान है सासादनगुणस्थान मे पचेन्द्रियतिर्यचउद्योतसहित ३० के वधसमय २१-२४-२६-३०-३१ के ५ उदयस्थान और ९० का १ सत्वस्थान होता है दोइन्द्रियादि तिर्यच उद्योतसहित ३० के वधसमय मनुष्य के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २१-२६-२८-२९-३० के ५ उदयस्थान और ९२-९०-८८-८४ के ४ सत्वस्थान होते है सासादनगुणस्थान मे पचेन्द्रियतिर्यच उद्योत-सहित ३० के बधसमय २१-२६-३० के ३ उदयस्थान और ९० का १ सत्वस्थान होता है अप्रमत्त और अपूर्वकरणगुणस्थान मे देवआहारकसहित ३० के वध समय ३० का १ उदय और ९२ का १ सत्वस्थान होता है सहस्रारविमान तक मिथ्यात्वगुणस्थान मे पचेन्द्रियतिर्यच उद्योतसहित ३० के बधसमय २१-२५-२७-२८-२९ के ५ उदयस्थान और ९२-९० के २ सत्वस्थान होते है सासादन-गुणस्थान मे २१-२५-२९ के ३ उदयस्थान और ९० का १ सत्व-स्थान होता है अविरतगुणस्थान मे सौधर्म से सहस्रार विमान तक मनुष्यसहित ३० के बधसमय २१-२५-२७-२८-२९ के ५ उदय स्थान तीर्थ और ९३-९१ के २ सत्वस्थान होते है तथा आनत से सर्वार्थ-

सिद्धि तक अविरतगुणस्थान में २१-२५-२७-२८-२९ के ५ उदयस्थान और ९३-९१ के २ सत्वस्थान होते है।

३१ के बधसमय मनुष्य के अप्रमत्त और अपूर्वकरणगुणस्थान मे ३० का १ उदयस्थान और ९३-९२-९१-९० के ४ सत्वस्थान होते है १ के बधसमय अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसापराय गुणस्थान मे ३० का १ उदयस्थान और ९३-९२-९१-९०-८०-७९-७८-७७ के ८ सत्वस्थान होते है ० बधसमय उपशातमोह गुणस्थान मे ३० का १ उदय और ९३-९२-९१-९० के ४ सत्वस्थान होते है क्षीणमोहगुणस्थान ३० का १ उदयस्थान और ८०-७९-७८-७७ के ४ सत्वस्थान होते हैं सयोगगुणस्थान में ३०-३१ के २ उदयस्थान और ८०-७९-७८-७७ के ४ सत्वस्थान होते है समुदघातकेवली के २०-२१-२६-२७-२८-२९-३०-३१ के ८ उदयस्थान और ८०-७९-७८-७७ के ४ सत्वस्थान होते है अयोगगुणस्थान मे ३०-३१-९-८ के ४ उदयस्थान और ८०-७९-७८-७७-१०-९ के ६ सत्वस्थान होते है।

गति	गु०	बधसमय	उदयस्थान	सत्वस्थान
ति०	मि०	२३	२१-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१	९२-९०-८०-८४-८२
म०	,,	,,	२१-२६-२८-२९-३०	९२-९०-८८-८४
ति०	,,	२५	२१-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१	९२-९०-८८-८४-८२
म०	,,	,,	२१-२६-२८-२९-३०	९२-९०-८८-८४
सौ० तक देव	,,	,,	२१-२५-२७-२८-२९	९२-९०
ति०	,,	२६	२५ वधसमान	२५ वधसमान
म०	,,	,,	,,	,,
सौ० तक देव	,,	,,	,,	,,
ति०	,,	२८	२८-२९-३०-३१	९२-९०-८८
,,	सा०	,,	३०-३१	९०
,,	मि०	,,	३०-३१	९२-९०
,,	अ०	,,	२१-२६-२८-२९-३०-३१	९२-९०
,,	दे०	,,	३०-३१	,,

गति	गु०	बधसमय	उदयस्थान	सत्त्वस्थान
म०	मि०	२८	२८-२९-३०	९२-९१-९०-८८
,,	सा०	,,	३०	९०
,,	मि०	,,	३०	९२-९०
,,	अ०	,,	२१-२६-२८-२९-३०	,,
,,	दे०	२८	३०	९२-९०
,,	प्र०	,,	२५-२७-२८-२९-३०	,,
,,	अ०	,,	३०	,,
,	अ०	,,	३०	,,
न० १–७	मि०	२९	२१-२५-२७-२८-२९	९२-(अ० ९१)-९०
,,	सा०	,,	२९	९०
,,	मि०	,,	२९	९२-९०
,,	अ०	,,	२१-२५-२७-२८-२९	९२-९०
न० २-३	,,	,,	२९	९२-९०
शे० न०	,,	,,	२९	,,
ति०	मि०	२९	२१-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१	९२-९०-८८-८४-८२
,,	सा०	,,	२१-२४-२६-३०	९०
म०	मि०	,,	२१-२६-२८-२९-३०	९२-९१-९०-८८-८४
,,	सा०	,,	२१-२६-३०	९०
,,	अ०	,,	२१-२६-२८-२९-३०	९३-९१
,,	दे०	,,	३०	,,
,,	प्र०	,,	२५-२७-२८-२९-३०	,,
,,	अ०	,,	३०	,,
,,	अ०	,,	३०	,,
सहस्रारतक	मि०	२९	२१-२५-२७-२८-२९	९२-९०
,,	सा०	,,	,,	९०
,,	मि०	,,	२९	९२-९०
,,	अ०	,,	२१-२५-२७-२८-२९	,,
भवनत्रक	,,	,,	२९	,,
आ० ग्री०	मि०	,,	२१-२५-२७-२८-२९	९२-९०
	सा०	,,	,,	९०

गति	गु०	वधसमय	उदयस्थान	सत्वस्थान
	मि०	२९	२९	९२-९०
	अ०	,,	२१-२५-२७-२८-२९	,,
शे० दे०	,,	,,	,,	,,
न० १-३	मि०	३०	२१-२५-२७-२८-२९	९२-९०
,,	सा०	,,	२९	९०
न० १	अ०	३०	२१-२५-२७-२८-२९	९१
२-३ न०	,,	,,	२९	,,
ति०	मि०	३०	२१-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१	९२-९०-८८-८४-८२
,,	सा०	,,	२१-२४-२६-३०-३१	९०
म०	मि०	,,	२१-२६-२८-२९-३०	९२-९०-८८-८४
,,	सा०	,,	२१-२६-३०	९०
,,	अप्र०	आ ३०	३०	९२
,,	अपू०	,,	,,	,,
सहस्रारतक	मि०	ति उ ३०	२१-२५-२७-२८-२९	९२-९०
,,	सा०	,,	२१-२५-२९	९०
सौ.सहस्रार	अ०	ती. ३०	२१-२५-२७-२८-२९	९३-९१
आ० से अत	अ०	,,	,,	,,
म०	अप्र०	३१	३०	९३-९२-९१-९०
,,	अपू०	,,	,,	,,
,,	अ०	१	३०	९३-९२-९१-९०-८०-७९-७८-७७
,,	सू०	,,	,,	,,
,,	उ०	०	,,	९३-९२-९१-९० ८०-७९-७८-७७
,,	क्षी०	०	,,	
,,	स०	०	३०-३१	,,
,,	स स	०	२०-२१-२६-२७-२८-२९-३०-३१	,,
,,	अ०	०	३०-३१-९-८	८०-७९-७८-७७-१०-९

आगे नामकर्म के उदयस्थान मे बध और सत्वस्थान दिखाते है

वीसादिसु बंधंसा णभदु छण्णव पणपणं य छसत्तं ।
छण्णव छड दुसु छद्दस अट्ठदसं छक्कछक्क णभति दुसु॥७३६॥
वीसुदये बंधो ण हि उणसीदीसत्तसत्तरी सत्तं ।
इगिवीसे तेवीसप्पहुदीतीसंतया बंधा ॥७३७॥
सत्तं तिणउदिपहुदीसीदंता अट्ठसत्तरी य हवे ।
चउवीसे पढमतियं णववीसं तीसयं बंधो ॥७३८॥
बाणउदी णउदिचऊ सत्तं पणछस्सगट्ठणववीसे ।
बंधा आदिमछक्कं पढमिल्लं सत्तयं सत्तं ॥७३९॥
ते णवसगसदरिजुदा आदिमछस्सीदिअट्ठसदरीहिं ।
णवसत्तसत्तरीहिं सीदिचउक्केहिं सहिदाणि ॥७४०॥
तीसे अट्ठवि बंधो ऊणत्तीसं व होदि सत्तं तु ।
इगितीसे तेवीसप्पहुदीतीसंतयं बंधो ॥७४१॥
सत्तं दुणउदिणउदीतिय सीदडहत्तरी य णवगट्ठे ।
बंधो ण सीदिपहुदीसुसमविसमं सत्तमुद्दिट्ठं ॥७४२॥

वीसादिक में बंधु सतु, ख दु छ न प प छै सात।
छै नव छै अठ छै दशा, ठ द छ छ ख ति ख ति ख्यात॥७३६
वीस उदय में बंध नाहिं, न्यासी सततर सत्व।
इक्किस में तेईस से, तिस तक बंध जु पत्व॥७३७॥
सतु त्रानव से असी तक, अठतर का भी मान।
चौविस में उनतीस तिस, आदि तीन बंधान॥७३८॥

सत्व वानवे नवे चउ, पच्चिस से उनतीस ।
बंध आदि छै पच्चिस में, प्रथम सात सतु दीस ।।७३६।।
न्यासी सततर युत प्रथम, छै असि अठतर मान।
न्यासी सततर आदि छै, छै युत असि चउ जान ॥७४०
तीस उदय में बंध अठ, उनतिस वत् सतु मान ।
इकतिस में तेईस से, तिस तक बंधस्थान ।।७४१।।
सत्व वानवे नवे त्रय, असि अरु अठतर मान ।
नव अठ बंध न असी से, सम विषमा सत्वान ।।७४२।।

अर्थ—नामकर्म के २० के उदयस्थान मे ० बधस्थान और ७६–७७ के २ सत्वस्थान होते है २१ के उदयस्थान मे २३–२५–२६–२८–२६–३० के ६ बधस्थान और ६३–६२–६१–६०–८८–८४–८२–८०–७८ के ६ सत्वस्थान होते है २४ के उदयस्थान में २३–२५–२६–२६–३० के ५ बधस्थान और ६२–६०–८८–८४–८२ के ५ सत्वस्थान होते है २५ के उदयस्थान मे २३-२५-२६-२८-२६-३० के ६ बधस्थान और ६३-६२-६१-६०८८-८४-८२ के ७ सत्वस्थान होते है २६ के उदयस्थान मे उपरोक्त ६ बधस्थान और ६३-६२-६१-६०-८८-८४-८२-७६-७७ के ६ सत्वस्थान होते है २७ के उदयस्थान मे उपरोक्त ६ बधस्थान और ६३-६२-६१-६०-८८-८४-८०-७८ के ८ सत्वस्थान होते है २८ के उदयस्थान में उपरोक्त ६ बधस्थान और ६३-६२-६१-६०-८८ ८४-७६-७७ के ८ सत्वस्थान होते है २६ के उदयस्थान में उपरोक्त ६ बधस्थान और ६३-६२-६१-६०-८८-८४-८०-७६-७८-७७ के १० सत्वस्थान होते है ३० के उदयस्थान मे सब बंधस्थान और उपरोक्त १० सत्वस्थान होते है ३१ के उदयस्थान मे २३-२५-२६-२८-२६-३० के ६ बध-

स्थान और ६२-६०-८८-८४-८०-७८ के ६ सत्वस्थान होते है ९ के उदयस्थान मे ० बधस्थान और ८०-७८-१० के ३ सत्वस्थान होते है तथा ८ के उदयस्थान मे ० बधस्थान और ७९-७७-९ के ३ सत्वस्थान होते है ॥७३६-७४२॥

नाम उदय मे बंध और सत्वस्थान

उ० मे	बध	सत्व
२०	०	७९-७७
२१	२३-२५-२६-२८-२९-३०	९३-९२-९१-९०-८८-८४-८२-८०-७८
२४	२३-२५-२६-२९-३०	९२-९०-८८-८४-८२
२५	२३-२५-२६-२८-२९-३०	९३-९२-९१-९०-८८-८४-८२
२६	,,	९३-९२-९१-९०-८८-८४-८२-७९-७७
२७	,,	९३-९२-९१-९०-८८-८४-८०-७८
२८	,,	९३-९२-९१-९०-८८-८४-७९-७७
२९	,,	९३-९२-९१-९०-८८-८४-८०-७९-७८-७७
३०	२३-२५-२६-२८-२९-३०-३१-१	,,
३१	२३-२५-२६-२८-२९-३०	९२-९०-८८-८४-८०-७८
९	०	८०-७८-१०
८	०	७९-७७-९

भावार्थ—२० के उदय समय सामान्यकेवली के ० वधस्थान और ७९-७७ के २ सत्व होते है।

२१ के उदयसमय तीर्थकरकेवली के ० वधस्थान और ८०-७८ के २ सत्वस्थान होते है। प्रथम से तृतीय नरक तक के मिथ्यात्वगुण-स्थान मे पचेन्द्रियतिर्यच सहित या मनुष्यसहित २९ उद्योतसहित ३० के २ वधस्थान और ९२-९१-९० के ३ सत्वस्थान होते हैं प्रथमनरक के अविरतगुणस्थान मे मनुष्यसहित २९ तीर्थकरसहित ३० के २ वधस्थान और ९२-९१-९० के ३ सत्वस्थान होते हैं। चतुर्थ से छट्ठेनरक तक के मिथ्यात्वगुणस्थान मे पचेन्द्रियतिर्यच मनुष्यसहित २९ उद्योतसहित ३० के २ वधस्थान और ९२-९० के २ सत्वस्थान होते है। तिर्यच के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २३-

२५–२६–२६–३० के ५ बधस्थान और ६२–६०–८८–८४–८२ के ५ सत्वस्थान होते है सासादनगुणस्थान मे पचेन्द्रियतिर्यंच मनुष्यसहित २६ उद्योतसहित ३० के २ बधस्थान और ६० का १ सत्वस्थान होता है और अविरतगुणस्थान में देवसहित २८ का १ बधस्थान और ६२–६० के २ सत्वस्थान होते है। मनुष्य के मिथ्यात्वगुणस्थान में २३–२५–२६–२६–३० के ५ वधस्थान और ६२–६०–८८–८४ के ४ सत्वस्थान होते है सासादनगुणस्थान मे पचेन्द्रियतिर्यच, मनुष्यसहित २६ उद्योतसहित ३० के २ बधस्थान और ६० का १ सत्वस्थान होता है और अविरतगुणस्थान मे देवसहित २८ देवतीर्थकरसहित २६ के २ बधस्थान और ६३–६२–६१ के ३ सत्वस्थान होते है। भवनवासी, व्यतर, ज्योतिषीदेव और सब देवागनाओ के मिथ्यात्वगुणस्थान में २५–२६–२६–३० के ४ बंधस्थान और ६२–६० के २ सत्वस्थान होते है सासादनगुणस्थान मे पचेन्द्रियतिर्यच या मनुष्यसहित २६ उद्योतसहित ३० के २ बधस्थान और ६० का १ सत्वस्थान होता है सौधर्म-ईसान के मिथ्यात्वगुणस्थान में २५–२६–२६–३० के ४ बधस्थान और ६२–६० के २ सत्वस्थान होते है सासादनगुणस्थान मे पचेन्द्रियतिर्यच, मनुष्यसहित २६ उद्योतसहित ३० के २ बधस्थान और ६० का १ सत्वस्थान होता है अविरतगुणस्थान में मनुष्यगति सहित २६ मनुष्य-तीर्थकर सहित ३० के २ बधस्थान और ६३–६२–६१–६० के ४ सत्वस्थान होते है। सनत्कुमार से सहस्रार विमान तक के मिथ्यात्वगुणस्थान मे पचेन्द्रियतिर्यच, मनुष्य २६ उद्योत ३० के २ बधस्थान और ६२–६० के २ सत्वस्थान होते है और सासादन और अविरतगुणस्थान मे सौधर्म समान बध और सत्वस्थान होते है आनत से ग्रीवक तक के मिथ्यात्वगुणस्थान मे मनुष्य २६ का १ बधस्थान और ६२–६० के २ सत्वस्थान होते हैं सासादनगुणस्थान में मनुष्य २६ का १ बंधस्थान और ६० का १ सत्वस्थान होता है और अविरतगुणस्थान में सौधर्मसमान बध

और सत्वस्थान होते हैं। अनुदिश से सर्वार्थसिद्धि तक अविरतगुण-स्थान मे सौधर्मसमान वध और सत्वस्थान होते है।

२४ के उदयसमय एकेन्द्रियलब्धि और निवृत्तिअपर्याप्ति के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २३–२५–२६–२९–३० के ५ वधस्थान और ९२-९०-८८-८४-८२ के ५ सत्वस्थान होते हैं।

२५ के उदयसमय सब नरको के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २१ के उदयसमान वध और सत्वस्थान होते है प्रथमनरक के अविरत-गुणस्थान मे २१ के उदयसमान वध और सत्वस्थान होते है। एकेन्द्रिय के २३–२५–२६–२९–३० के ५ वधस्थान और ९२–९०–८८–८४–८२ के ५ सत्वस्थान होते है। मनुष्य के प्रमत्त-गुणस्थान मे देवसहित २८, देवतीर्थसहित २९ के २ वधस्थान और ९३–९२ के २ सत्वस्थान होते हैं और देवो मे २१ के उदयसमान वध और सत्वस्थान होते हैं।

२६ के उदयसमय एकेन्द्रिय के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २३-२५-२६–२९–३० के ५ वधस्थान और ९२–९०–८८–८४–८२ के ५ सत्वस्थान होते है। पचेन्द्रियतिर्यच के सासादनगुणस्थान मे २९–३० के २ वधस्थान और ९० का १ सत्वस्थान होता है और अविरतगुणस्थान मे देवसहित २८ का १ वधस्थान और ९२–९० के २ सत्वस्थान होते है। मनुष्य के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २३-२५–२६–२९–३० के ५ वधस्थान और ९२–९०–८८–८४ के ४ सत्वस्थान होते है सासादनगुणस्थान में तिर्यंच-मनुष्यसहित २९ तिर्यंचउद्योतसहित ३० के २ वधस्थान और ९० का १ सत्वस्थान होता है अविरतगुणस्थान मे देवसहित २८ देवतीर्थसहित २९ के २ वधस्थान और ९३–९२–९०-९१ के ४ सत्वस्थान होते हैं और सामान्यकेवली के कपाटसमय० वधस्थान और ७९-७७ के २ सत्व-स्थान होते है।

२७ के उदयसमय प्रथम से तृतीयनरक तक के मिथ्यात्वगुण-स्थान मे तिर्यंच-मनुष्यसहित २९ उद्योतसहित ३० के २ बधस्थान और ९२–९० के २ सत्वस्थान होते है प्रथमनरक के अविरतगुण-

स्थान में मनुष्यसहित २९ मनुष्य तीर्थसहित ३० के २ बधस्थान और ९२-९१-९० के ३ सत्वस्थान होते हैं द्वितीय और तृतीयनरक के अविरतगुणस्थान मे मनुष्यतीर्थसहित ३० का १ बधस्थान और ९१ का १ सत्वस्थान होता है चतुर्थ से छट्‌ठेनरक के मिथ्यात्वगुणस्थान में तिर्यच-मनुष्यसहित २९ उद्योतसहित ३० के २ बधस्थान और ९२-९० के २ सत्वस्थान होते है और सातवेनरक के मिथ्यात्वगुणस्थान मे तिर्यचसहित २९ उद्योतसहित ३० के २ बधस्थान और ९२-९० के सत्वस्थान होते है एकेन्द्रिय के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २३-२५-२६-२९-३० के ५ बधस्थान और ९२-९०-८८-८४ के ४ सत्वस्थान होते है मनुष्यआहारक के प्रमत्तगुणस्थान मे देवसहित २८ देव तीर्थसहित २९ के २ बधस्थान और ९३-९२-के २ सत्वस्थान होते है और तीर्थंकरकेवली के कपाटसमय ० बधस्थान और ८०-७८ के २ सत्वस्थान होते है भवनत्रक और सब देवागनाओ के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २५-२६ तिर्यच-मनुष्ययुत २९ उद्योतसहित ३० के ४ बधस्थान और ९२-९० के २ सत्वस्थान होते है सौधर्म-ईसान के मिथ्यात्वगुणस्थान मे बध और सत्वस्थान भवनत्रकसमान है अविरतगुणस्थान मे मनुष्यसहित २९ मनुष्यतीर्थसहित ३० के २ बधस्थान और ९३-९२-९१-९० के ४ सत्वस्थान होते हैं सनत्कुमार से सहस्रार तक के मिथ्यात्वगुणस्थान में तिर्यच-मनुष्यसहित २९ उद्योतसहित ३० के २ बधस्थान और ९२-९० के २ सत्वस्थान होते है अविरतगुणस्थान मे बधस्थान और सत्वस्थान सौधर्म समान है आनत से ग्रीवक तक के मिथ्यात्वगुणस्थान में मनुष्यसहित २९ का १ बधस्थान और ९२-९० के २ सत्वस्थान होते है और अनुदिश से सर्वार्थसिद्धि तक के अविरतगुणस्थान मे मनुष्यसहित २९ तीर्थसहित ३० के २ बधस्थान और ९३-९२-९१-९० के ४ सत्वस्थान होते है।

२८ के उदयसमय प्रथमनरक के मिथ्यात्वगुणस्थान मे तिर्यच-मनुष्यसहित २९ उद्योतसहित ३० के २ वधस्थान और ९२-९०

के २ सत्वस्थान होते हैं और अविरतगुणस्थान मे मनुष्यसहित २९ तीर्थसहित ३० के २ बधस्थान और ९२–९१–९० के ३ सत्वस्थान होते हैं द्वितीय और तृतीयनरक के मिथ्यात्वगुणस्थान में वध और सत्व प्रथमनरक समान है और अविरतगुणस्थान मे तीर्थसहित ३० का १ बधस्थान और ९१ का १ सत्वस्थान होता हैं चतुर्थ से छट्ठे नरक के मिथ्यात्वगुणस्थान मे वध और सत्वस्थान प्रथमनरक समान है और सातवेंनरक के मिथ्यात्वगुणस्थान मे तिर्यंचसहित २९ तिर्यंचउद्योतसहित ३० के २ बधस्थान और ९२–९० के २ सत्वस्थान होते है तिर्यंच के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २३–२५–२६–२८–२९–३० के ६ बधस्थान और ९२–९०–८८–८४ के ४ सत्वस्थान होते है तथा अविरतगुणस्थान में देवसहित २८ का १ बधस्थान और ९२–९० के २ सत्वस्थान होते है मनुष्य के मिथ्यात्वगुणस्थान मे बधस्थान और सत्वस्थानतिर्यंच समान है अविरत-गुणस्थान मे देवसहित २८ देवतीर्थसहित २९ के २ बधस्थान और ९३–९२–९१–९० के ४ सत्वस्थान होते है आहारकशरीर में देवसहित २८ देवतीर्थसहित २९ के २ बधस्थान और ९३-९२ के २ सत्वस्थान होते हैं सामान्यकेवली के दडसमुदघात मे ० बधस्थान और ७९-७७ के २ सत्वस्थान होते है तथा देवो मे २७ के उदय-समान बध और सत्वस्थान होते है।

२९ के उदयसमय प्रथम से तृतीयनरक के मिथ्यात्वगुणस्थान मे तिर्यंच–मनुप्यसहित २९ उद्योतसहित ३० के २ वधस्थान और ९२–९० के २ सत्वस्थान होते हैं सासादनगुणस्थान मे तिर्यच–मनुष्यसहित २९ उद्योतसहित ३० के २ बधस्थान और ९० का १ सत्वस्थान होता है मिश्रगुणस्थात मे मनुष्यसहित २९ का १ बध-स्थान और ९२–९० के २ सत्वस्थान होते हैं अविरतगुणस्थान में मनुष्यसहित २९ मनुष्यतीर्थसहित ३० के २ बधस्थान और ९२-९१–९० के ३ सत्वस्थान होते हैं द्वितीय और तृतीयनरक के ४ गुणस्थानो मे प्रथमनरकसमान वध और सत्वस्थान है चतुर्थ से

छट्ठेनरक तक के आदि के तीन गुणस्थानो मे बध और सत्वस्थान प्रथमनरकसमान है अविरतगुणस्थान में मनुष्यसहित २९ का १ बंधस्थान और ९२–९० के २ सत्वस्थान होते है सातवें नरक के मिथ्यात्वगुणस्थान मे तिर्यचसहित २९ उद्योतसहित ३० के २ बंध-स्थान और ९२-९० के २ सत्वस्थान होते है सासादन में तिर्यच २९ उद्योत ३० के २ बंधस्थान और ९० का १ सत्वस्थान होता है मिश्र और अविरतगुणस्थान मे बध और सत्वस्थान चतुर्थनरकसमान होते है त्रसतिर्यंच के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २३-२५-२६-२८-२९-३० के ६ बधस्थान और ९२-९०-८८-८४ के ४ सत्वस्थान होते है अविरतगुणस्थान में देवसहित २८ का १ बंधस्थान और ९२–९० के २ सत्वस्थान होते है मनुष्य के मिथ्यात्वगुणस्थान मे बध और सत्वस्थानतिर्यचसमान है अविरतगुणस्थान मे देवसहित २८ देवतीर्थसहित २९ के २ बंधस्थान और ९३-९२-९१-९० के ४ सत्वस्थान होते हैं आहारक के भाषाकाल मे देवसहित २८ देवतीर्थसहित २७ के २ वधस्थान और ९३–९२ के २ सत्वस्थान होते है तीर्थंकरकेवली के उश्वासकाल मे ० बधस्थान और ८०-७८ के २ सत्वस्थान होते है सामान्यकेवली के उश्वासकाल में ० बंधस्थान और ७९–७७ के २ सत्वस्थान होते है भवनत्रक और सब देवांगनाओ के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २५–२६–२९–३० के ४ बधस्थान ९२-९० के २ सत्वस्थान होते हैं सासादन में तिर्यंच-मनुष्यसहित २९ उद्योतसहित ३० के २ बंधस्थान और ९० का १ सत्वस्थान होता है। मिश्र और अविरतगुणस्थान मे मनुष्यसहित २९ का १ बघस्थान ९२-९० के २ सत्वस्थान होते है सौधर्म से सहस्रार तक के मिथ्यात्वगुणस्थान मे तिर्यंच–मनुष्यसहित २९ उद्योतसहित ३० के २ वधस्थान और ९२-९० के २ सत्वस्थान होते हैं सासादन और मिश्रगुणस्थान मे बंध और सत्वस्थान भवन-त्रक समान है अविरतगुणस्थान में मनुष्यसहित २९ तीर्थसहित ३० के २ वधस्थान और ९३-९२-९१-९० के ४ सत्वस्थान होते है

आनत से ग्रीवक तक के मिथ्यात्वसेमिश्रगुणस्थान तक मे मनुष्य–सहित २९ का १-१ बधस्थान और ९२-९० के २-२ सत्वस्थान होते है किन्तु सासादन मे ९० का ही सत्व होता है अविरतगुणस्थान मे मनुष्यसहित २९ तीर्थसहित ३० के २ बधस्थान और ९३-९२-९१-९० के ४ सत्वस्थान होते है इस ही तरह अनुदिशादि मे होते हैं।

३० के उदयसमय तिर्यंच के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २३-२५-२६-२८-२९-३० के ६ बधस्थान और ९२-९०-८८-८४ के ४ सत्वस्थान होते है सासादनगुणस्थान मे तिर्यच-मनुष्यसहित २९ उद्योतसहित ३० के २ बधस्थान और ९० का १ सत्वस्थान होता है मिश्रगुणस्थान मे देवसहित २८ का १ बधस्थान और ९२-९० के २ सत्वस्थान होते हैं। अविरतगुणस्थान मे देवसहित २८ का १ बधस्थान और ९२-९० के २ सत्वस्थान होते है और देशविरत-गुणस्थान मे देवसहित २८ का १ बधस्थान और ९२-९० के २ सत्वस्थान होते है। मनुष्य के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २३-२५-२६-२८–२९–३० के ६ बधस्थान और ९२–९१–९० के ३ सत्वस्थान होते है सासादनगुणस्थान मे तिर्यंच-मनुष्यसहित २९ उद्योतसहित ३० के २ बधस्थान और ९० का १ सत्वस्थान होता है मिश्रगुण-स्थान मे देवसहित २८ का १ बधस्थान और ९२–९० के २ सत्वस्थान होते है अविरत से अपूर्वकरण के छट्ठे भाग तक देव–सहित २८ देवतीर्थसहित २९ के २ बधस्थान और ९३-९२-९१-९० के ४ सत्वस्थान होते है अपूर्वकरण के सातवें भाग में यश का १ बधस्थान और ९३–९२–९१–९० के ४ सत्वस्थान होते है अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसापरायगुणस्थान में यश का १ बधस्थान और ९३–९२–९१–९०–८०–७९–७८–७७ के ८ सत्वस्थान होते है। उपशातमोहगुणस्थान मे ० बधस्थान और ९३–९२–९१–९० के ४ सत्वस्थान होते है क्षीणमोह और सयोगगुणस्थान मे ० बध-

स्थान और ८०–७९–७८–७७ के ४ सत्वस्थान होते है तीर्थंकर के उश्वासकाल मे ० बधस्थान और ८०-७८ के २ सत्वस्थान होते है सामान्यकेवली के भाषाकाल मे ० बधस्थान और ७९-७७ के २ सत्वस्थान होते है।

३१ के उदयसमय तिर्यंच के मिथ्यात्व से देशविरतगुणस्थान तक मे बध और सत्वस्थान ३० के उदयसमान है। तीर्थंकर के भाषाकाल मे ० बधस्थान और ८०-७८ के २ सत्वस्थान होते है ९ के उदयसमय तीर्थंकर के अयोगगुणस्थान मे ० बधस्थान और ८०-७९-१० के ३ सत्वस्थान होते है। ८ के उदयसमय सामान्य केवली के अयोगगुणस्थान मे ० बधस्थान और ७९-७७-९ के ३ सत्वस्थान होते है।

जीव	गु०	उ०	बधस्थान	सत्वस्थान
सा०	१३	२०	०	७९-७७
ती०	१३	२१	०	८०-७८
न०१–३	१	,,	ति०म० २९ उ० ३०	९२-९१-९०
न० १	४	,,	म० २९ ती० ३०	,,
न०४–६	१	,,	ति०म० २९ उ० ३०	९२-९०
ति०	१	,,	२३-२५-२६-२९-३०	९२-९०-८८-८४-८२
,,	२	,,	ति०म० २९ उ० ३०	९०
,,	४	,,	दे० २८	९२-९०
म०	१	,,	२३-२५-२६-२९-३०	९२-९०-८८-८४
,,	२	,,	ति०म० २९ उ० ३०	९०
,,	४	,,	दे० २८ ती० २९	९३-९२-९१
भ०	१	२१	२५-२६-२९-३०	९२-९०
,,	२	,,	ति० म० २९ उ० ३०	९०
स्व० २	१	,,	२५-२६-२९-३०	९२-९०
,,	२	,,	ति०म० २९ उ० ३०	९०
,,	४	,,	म० २९ ती० ३०	९३-९२-९१-९०
स्व० १२	१	,,	ति०म० २९ उ० ३०	९२-९०

जीव	गु०	उ०	बधस्थान	सत्वस्थान
स्व० १२	२	२१	सौधर्म समान	सौधर्म समान
,,	४	,,	,,	,,
आ०ग्री०	१	,,	म० २६	९२-९०
,,	२	,,	,,	९०
,,	४	,,	सौधर्म समान	सौधर्म समान
शे०	४	,,	,,	,,
ए०	१	२४	२३-२५-२६-२९-३०	९२-९०-८८-८४-८२
न० ७	१	२५	२१ के उदयसमान	२१ के उदय समान
न० १	४	,,	,,	,,
ए०	१	,,	२३-२५-२६-२९-३०	९२-८०-८८-८४-८२
म०	६	,,	दे० २८ दे०ती० २९	९३-९२
दे०	१,२,४	,,	२१ के उदयसमान	२१ के उदय समान
ए०	१	२६	२३-२५-२६-२९-३०	९२-९०-८८-८४-८२
प०	२	,,	२९-३०	९०
प०	४	२६	दे० २८	९२-९०
म०	१	,,	२३-२५-२६-२९-३०	९२-९०-८८-८४
,,	२	,,	ति०म० २९ उ० ३०	९०
,,	४	,,	दे० २८ दे० ती० २९	९३-९२-९१-९०
सा०	१३	,,	०	७९-७७
न०१—३	१	२७	ति०म० २९ उ० ३०	९२-९०
न० १	४	,,	म० २९ ती० ३०	९२-९१-९०
न०२, ३	४	,,	म०ती० ३०	९१
न०४—६	१	,,	ति०म० २९ उ० ३०	९२-९०
न० ७	१	,,	ति० २९ उ० ३०	९२-९०
ए०	१	,,	२३-२५-२६-२९-३०	९२-९०-८८-८४
म०	६	,,	दे० २८ दे०ती० २९	९३-९२
ती०	१३	,,	०	८०-७८
भ०	१	,,	२५-२६ति०म०२९उ०३०	९२-९०
भौ०ई०	१	,,	,,	,,
,,	४	,,	म० २९ ती० ३०	९३-९२-९१-९०
स्व० १०	१	,,	ति०म० २९ उ० ३०	९२-९०
,,	४	,,	सौधर्म समान	सौधर्मसमान

जीव	गु०	उ०	बंधस्थान	सत्वस्थान
आ० ग्री०	१	२७	म० २९	९२-९०
शे०	४	,,	सौधर्म समान	सौधर्मसमान
न० १	१	२८	ति०म० २९ उ० ३०	९२-९०
,,	४	,,	म० २९ ती० ३०	९२-९१-९०
न०२-३	१	,,	प्रथमनरकसमान	प्रथमनरकसमान
,,	४	,,	ती० ३०	९१
न०४-६	१	,,	प्रथमनरकसमान	प्रथमनरकसमान
न० ७	१	,,	ति० २९ उ० ३०	९२-९०
ति०	१	,,	२३-२५-२६-२८-२९-३०	९२-९०-८८-८४
,,	४	,,	दे० २८	९२-९०
म०	१	,,	तिर्यंचसमान	तिर्यंचसमान
,,	४	,,	दे० २८ दे०ती० २९	९३-९२-९१-९०
,,	६	,,	,,	९३-९२
सा०	१३	,,	०	७९-७७
दे०	१-४	२८	२७ के उदयसमान	२७ के उदयसमान
न० १	१	२९	ति०म० २९ उ० ३०	९२-९०
,,	२	,,	,,	९०
,,	३	,,	म० २९	९२-९०
,,	४	,,	म० २९ ती० ३०	९२-९१-९०
न०२-३	१-४	,,	प्रथमनरक समान	प्रथमनरकसमान
न०४-६	१-३	,,	,,	,,
,,	४	,,	म० २९	९२-९०
न० ७	१	,,	ति० २९ उ० ३०	९२-९०
,,	२	,,	,,	९०
,,	३-४	,,	चतुर्थनरकसमान	चतुर्थनरकसमान
ति०	१	,,	२३-२५-२६-२८-२९-३०	९२-९०-८८-८४
,,	४	,,	दे० २८	९२-९०
म०	१	,,	तिर्यंचसमान	तिर्यंचसमान
,,	४	,,	दे० २८ दे०ती० २९	९३-९२-९१-९०
,,	६	,,	,,	९३-९२
ती०	१३	,,	०	८०-७८

जीव	गु०	उ०	बधस्थान	सत्वस्थान
सा०	१३	२९	०	७९-७७
भ०	१	,,	२५-२६-२९-३०	९२-९०
,,	२	,,	ति०म० २९ उ० ३०	९०
,,	३-४	,,	म० २९	९२-९०
सौ० १२	१	,,	ति०म० २९ उ० ३०	,,
,,	२-३	,,	भवनत्रकसमान	भवनत्रकसमान
,,	४	,,	म० २९ म०ती० ३०	९३-९२-९१-९०
आ०ग्री०	१,३	,,	म० २९	९२-९०
,,	२	,,	,,	९०
,,	४	,,	म० २९ म०ती० ३०	९३-९२-९१-९०
शे०	४	,,	,,	,,
ति०	१	३०	२३-२५-२६-२८-२९-३०	९२-९०-८८-८४
,,	२	,,	ति०म० २९ उ० ३०	९०
,,	३-५	,,	दे० २८	९२-९०
म०	१	,,	२३-२५-२६-२८-२९-३०	९२-९१-९०
,,	२	,,	ति०म० २९ उ० ३०	९०
,,	३	,,	दे० २८	९२-९०
,,	अ०से ८ के ६ भागतक	,,	दे० २८ दे०ती० २९	९३-९२-९१-९०
,,	७ भागमे	,,	यश का १	,,
,,	९-१०	,,	,,	९३ आदि४।८०आदि४
,,	११	,,	०	९३-९२-९१-९०
,,	१२-१३	,,	०	८०-७९-७८-७७
ती०	१३	,,	०	८०-७८
सा०	१३	,,	०	७९-७७
ति०	१-५	३१	३० के उदयसमान	३० के उदयसमान
ती०	१३	,,	०	८०-७८
ती०	१४	९	०	८०-७८-१०
सा०	१४	८	०	७९-७७-९

आगे सत्वस्थान मे बध और उदयस्थान दिखाते है ।

सत्ते बंधुदया चदुसग सगणव चतुसगं य सगणवयं ।
छण्णव पणणव पणचदु चदुसिगिछक्कं णभेक्क सुण्णेगं ॥७४३॥

तेणउदीए बंधा उगुतीसादीचउक्कमुदओ दु ।
इगिपणछस्सगअट्ठयणववीसं तीसयं णेयं ॥७४४॥

बाणउदीए बंधा इगितीसूणाणि अट्ठाणाणि ।
इगिवीसादीएक्कत्तीसंता उदयठाणाणि ॥७४५॥

इगिणवदीए बंधा अडवीसत्तिदयमेक्कयं चुदओ ।
तेणउदिं वा णउदीबंधा बाणउदियं व हवे ॥७४६॥

चरिमदुवीसूणुदयो तिसु दुसु बंधा छतुरियहीणं य ।
वासीदी बंधुदया पुव्वं विगिवीसचत्तारि ॥७४७॥

सीदादिचउसु बंधा जसकित्ती समपदे हवे उदओ ।
इगिसगणवधियवीसं तीसेक्कत्तीसणवगं य ॥७४८॥

वीसं छडणववीसं तीसं चट्ठं य विसमठाणुदया ।
दसणवगे ण हि बंधो कमेण णवअट्ठयं उदओ ॥७४९॥

सतुहिं बंध उदया च सत, सत नव चउ सत देख ।
छ नव प नव प च चार में, इक छ ख इक नभ एक ॥७४३

त्रानव के में बंधथल्ल, उनतिस से चउ मान ।
उदय एक पन छै सपत, अठ नव विस तिस ज्

गुणस्थान मे यश का १ बधस्थान और ३० का १ उदयस्थान होता है उपशातमोहगुणस्थान में ० बधस्थान और ३० का १ उदयस्थान होता है सौधर्मादि के अविरतगुणस्थान मे ३० का १ बधस्थान और २१-२५-२७-२८-२९ के ५ उदयस्थान होते है।

९२ के सत्वसमय प्रथमनरक के मिथ्यात्वगुणस्थान मे तिर्यचमनुष्यसहित २९ उद्योत सहित ३० के २ बधस्थान और २१-२५-२७-२८-२९ के ५ उदयस्थान होते है मिश्रगुणस्थान मे मनुष्यसहित २९ का १ बधस्थान और २९ का १ उदयस्थान होता है अविरतगुणस्थान मे मनुष्य सहित २९ का १ बधस्थान और २१-२५-२७-२८ २९ के ५ उदयस्थान होते हैं द्वितीय से लेकर छट्ठे नरक के मिथ्यात्व मिश्रगुणस्थान मे वध और उदयस्थान प्रथमनरक समान है अविरत मे २९ का १ बधस्थान और २९ का १ उदयस्थान होता है सातवें नरक के मिथ्यात्वगुणस्थान मे तिर्यचसहित २९ उद्योतसहित ३० के २ वधस्थान और प्रथमनरकसमान उदयस्थान होते है मिश्र और अविरतगुणस्थान मे मनुष्य २९ का १ बधस्थान और २९ का १ उदयस्थान होता है तिर्यच के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २३-२५-२६-२८-२९-३० के ६ बधस्थान और २१-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१ के ९ उदयस्थान होते है मिश्रगुणस्थान मे देवसहित २८ का १ वधस्थान और ३०-३१ के २ उदयस्थान होते है अविरतगुणस्थान मे २८ का १ वधस्थान और २१-२६-२८-२९-३०-३१ के ६ उदयस्थान होते है देशविरतगुणस्थान २८ का १ वधस्थान और ३०-३१ के २ उदयस्थान होते हैं मनुष्य के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २३-२५-२६-२८-२९-३० के ६ बधस्थान और २१-२६-२८-२९-३० के ५ उदयस्थान होते है मिश्रगुणस्थान मे देवसहित २८ का १ वधस्थान और ३० का १ उदयस्थान होता है अविरतगुणस्थान मे २८ का १ बधस्थान और २१-२६-२८-२९-३० के ५ उदयस्थान होते है देशविरतगुणस्थान मे २८ का १ वधस्थान और ३० का १ उदयस्थान होता है प्रमत्त-

गुणस्थान में २८ का १ बधस्थान और २५-२७-२८-२६-३० के ५ उदयस्थान होते है अप्रमत्त और अपूर्वकरणगुणस्थान में २८ देव आहारकसहित ३० के २ बधस्थान और ३० का १ उदयस्थान होता है अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसांपरायगुणस्थान में यश का १ बधस्थान और ३० का १ उदयस्थान होता है उपशातगुणस्थान में ० बधस्थान और ३० का १ उदयस्थान होता है भवनत्रक के मिथ्यात्वगुणस्थान में २५-२६-२६-३० के ४ बधस्थान और २१-२५-२७-२८-२६ के ५ उदयस्थान होते है मिश्र और अविरत-गुणस्थान में मनुष्यगतिसहित २६ का १ बधस्थान और २६ का १ उदयस्थान होता है सौधर्म-ईसान के मिथ्यात्वगुणस्थान और मिश्र गुणस्थान में बध और सत्वस्थान भवनत्रक समान हैं अविरत-गुणस्थान में मनुष्यगतिसहित २६ का १ बधस्थान और २१-२५-२७-२८-२६ के ५ उदयस्थान होते हैं सनत्कुमार से सहस्रार तक के मिथ्यात्वगुणस्थान मे तिर्यच-मनुष्यसहित २६ उद्योतसहित ३० के २ बधस्थान और भवनत्रक के समान उदयस्थान होते है मिश्र और अविरतगुणस्थान मे बध और उदयस्थान सौधर्म समान होते है आनत से ग्रीवक तक के मिथ्यात्वगुणस्थान में मनुष्यसहित २६ का १ बधस्थान और सौधर्मसमान उदयस्थान होते है मिश्र और अविरतगुणस्थान में बध और उदयस्थान सौधर्मसमान होते है अनुदिशादि के अविरतगुणस्थान बध और उदयस्थान सौधर्मसमान होते है।

६१ के सत्वसमय प्रथमनरक के मिथ्यात्वगुणस्थान मे मनुष्य-गति सहित २६ का १ बधस्थान और २१-२५ के २ उदयस्थान होते है अविरतगुणस्थान में मनुष्यगतितीर्थसहित ३० का १ बधस्थान और २१-२५-२७-२८-२६ के ५ उदयस्थान होते है द्वितीय और तृतीयनरक के मिथ्यात्वगुणस्थान में बंध और उदयस्थान प्रथम नरकसमान है अविरतगुणस्थान में मनुष्यगतितीर्थसहित ३० का १ बधस्थान और २७-२८-२६ के ३ उदयस्थान होते है मनुष्य के

मिथ्यात्वगुणस्थान मे नरकगति सहित २८ मनुष्यगति सहित २९ के २ बधस्थान और ३० का १ उदयस्थान होता है अविरतगुणस्थान मे देवगतितीर्थसहित २९ का १ बधस्थान और २१-२६-२८-२९-३० के ५ उदयस्थान होते है देशविरत से अपूर्वकरण के छट्ठे भाग तक मे देवगतितीर्थसहित २९ का १ बधस्थान और ३० का १ उदयस्थान होता है अपूर्वकरण के सातवे भाग से सूक्ष्मसांपरायगुणस्थान तक यश का १ बधस्थान और ३० का १ उदयस्थान उपशात मे ३० का १ उदयस्थान होता है सौधर्म से सर्वार्थसिद्धि तक देवो के अविरत गुणस्थान मे मनुष्यगतितीर्थसहित ३० का १ बधस्थान और २१–२५–२७–२८–२९ के ५ उदयस्थान होते है।

९० के सत्वसमय प्रथमनरक के मिथ्यात्वगुणस्थान मे तिर्यंच-मनुष्यगतिसहित २९ उद्योत सहित ३० के २ बधस्थान और २१–२५–२७–२८–२९ के ५ उदयस्थान होते है सासादनगुणस्थान में उपरोक्त २ बधस्थान और २९ का १ उदयस्थान होता है मिश्र-गुणस्थान मे मनुष्यगति सहित २९ का १ बधस्थान और २९ का १ उदयस्थान होता है अविरतगुणस्थान मे उपरोक्त १ बंधस्थान और २१–२५–२७–२८–२९ के ५ उदयस्थान होते है द्वितीय से छट्ठे नरक तक के मिथ्यात्व से मिश्रगुणस्थान तक मे बध और उदयस्थान प्रथमनरक समान है अविरतगुणस्थान मे मनुष्यगति सहित २९ का १ बधस्थान और २९ का १ उदयस्थान होता है सातवेनरक के मिथ्यात्वगुणस्थान मे तिर्यचगतिसहित २९ उद्योत-सहित ३० के २ बधस्थान और २९ का १ उदयस्थान होता है सासादन से अविरतगुणस्थान तक मे बध और उदयस्थान द्वितीय नरक के समान होते हैं। तिर्यंच के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २३-२५-२६-२८-२९-३० के ६ बधस्थान और २१–२४–२५–२६–२७–२८–२९–३०–३१ के ९ उदयस्थान होते है सासादनगुणस्थान मे देवगति सहित २८ तिर्यंच मनुष्यगतिसहित २९ उद्योतसहित ३० के

३ बधस्थान और २१–२४–२६–३०–३१ के ५ उदयस्थान होते है मिश्र और देशविरत गुणस्थान में देवगतिसहित २८ का १ बधस्थान और ३०–३१ के २ उदयस्थान होते है अविरतगुणस्थान मे देवगतिसहित २८ का १ बधस्थान और २१–२६–२८–२९–३०–३१ के ६ उदयस्थान होते है मनुष्य के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २३–२५–२६–२८–२९–३० के ६ बघस्थान और २१–२६–२८–२९–३० के ५ उदयस्थान होते है सासादनगुणस्थान मे तिर्यंच समान बधस्थान और २१–२६–३० के ३ उदयस्थान होते हैं मिश्र गुणस्थान में देवगतिसहित २८ का १ बंधस्थान और ३० का १ उदयस्थान होता है अविरतगुणस्थान में देवगतिसहित २८ का १ बधस्थान और २१–२६–२८–२९–३० के ५ उदयस्थान होते है देशविरत से अप्रमतगुणस्थान तक मे देवगति सहित २८ का १ बधस्थान और ३० का १ उदयस्थान होता है अपूर्वकरणगुणस्थान में देवगतिसहित २८ यश के २ बधस्थान और ३० का १ उदय स्थान होता है अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसांपरायगुणस्थान मे यश का १ बधस्थान और ३० का १ उदयस्थान होता है उपशातगुण-स्थान मे ० बधस्थान और ३० का १ उदयस्थान होता है भवनत्रक देवो के मिथ्यात्वगुणस्थान में २५–२६–२९–३० के ४ बधस्थान और २१–२५–२७–२८–२९ के ५ उदयस्थान होते है सासादन-गुणस्थान मे मनुष्यतिर्यंचसहित २९ उद्योत सहित ३० के २ बध-स्थान और २१–२५–२९ के ३ उदयस्थान होते है मिश्र और अविरत गुणस्थान मे मनुष्य २९ का १ बधस्थान और २९ का १ उदयस्थान होता है सौधर्म ईसान के मिथ्यात्व से मिश्र तक में बध और उदयस्थान भवनत्रक समान है अविरतगुणस्थान मे मनुष्यसहित २९ का १ बधस्थान और २१–२५–२७–२८–२९ के ५ उदय स्थान होते है सनत्कुमार से सहस्रातक के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २९–३० के २ बधस्थान और भवनत्रकसमान उदयस्थान होते है सासादन और मिश्रगुणस्थान में बंध और उदयस्थान भवनत्रक

समान है अविरतगुणस्थान मे वध और उदयस्थान सौधर्मसमान हैं। आनत से ग्रीवक तक के मिथ्यात्व और अविरतगुणस्थान मे मनुष्य २६ का १ बधस्थान और २१–२५–२७–२८–२६ के ५ उदय स्थान होते है सासादनगुणस्थान मे मनुष्य २६ का १ बधस्थान और २१–२५–२६ के ३ उदयस्थान होते है। मिश्रगुणस्थान मे मनुष्य २६ का १ बधस्थान और २६ का १ उदयस्थान होता है। अनुदिशादि के अविरतगुणस्थान मे बध और उदयस्थान आनत समान है।

८८ के सत्व समय तिर्यंच के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २३–२५–२६–२८–२६–३० के ६ वधस्थान और २१–२४–२५–२६–२७–२८–२६–३०–३१ के ६ उदयस्थान होते हैं मनुष्य के मिथ्यात्व-गुणस्थान मे बधस्थान तिर्यचसमान और २१–२६–२८–२६–३० के ५ उदयस्थान होते है।

८४ के सत्वसमय तिर्यंच के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २३–२५–२६–२६–३० के ५ बधस्थान और २१-२४-२५-२६-२७-२८-२६-३०-३१ के ६ उदयस्थान होते है मनुष्य के मिथ्यात्वगुणस्थान मे बधस्थान तिर्यंचसमान और २१–२६–२८--२६–३० के ५ उदय-स्थान होते है।

८२ के सत्वसमय तिर्यंच के मिथ्यात्वगुणस्थान मे २३-२५-२६ २६-३० के ५ बधस्थान और २१-२४-२५-२६ के ४ उदयस्थान होते है किन्तु अग्नि, पवन और साधारणवनस्पतिकाय के २६ का उदय नही होता।

८०–७८ के उदय समय मनुष्य के अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्म सापरायगुणस्थान मे यश का १ वधस्थान और ३० का १ उदयस्थान होता है क्षीणमोहगुणस्थान में ० बधस्थान और ३० का १ उदयस्थान होता है सयोगगुणस्थान में ० बधस्थान और तीर्थंकर के ३० का समुदघात मे २१-२७-२६-३०-३१ के ५ उदयस्थान होते है अयोग-गुणस्थान मे ० बधस्थान और ६ का १ उदयस्थान होता है।

७९-७७ के सत्वसमय मनुष्य के अनिवृत्तिकरण से क्षीणमोह गुणस्थान तक वध और उदयस्थान ८० के सत्वसमान है सयोग गुणस्थान में ० बधस्थान और सामान्यकेवली के ३० समुदघात में २०-२६-२८-२९-३० के ५ उदयस्थान होते है अयोगगुणस्थान मे ० वधस्थान और ८ का १ उदयस्थान होता है।

१० के सत्वसमय अयोगगुणस्थान में ० बधस्थान और ९ का १ उदयस्थान होता है।

९ के सत्वसमय अयोगगुणस्थान मे ० बधस्थान और ८ का १ उदयस्थान होता है।

जीव	गु०	स०	बधस्थान	उदयस्थान
मनुष्य	४	९३	२९	२१-२६-२८-२९-३०
,,	५	,,	,,	३०
,,	६	,,	,,	२५-२७-२८-२९-३०
,,	७	,,	२९-३१	३०
,,	८	,,	२९-३१	३०
,,	९	,,	१	,,
,,	१०	,,	,,	,,
,,	११	,,	०	,,
सौधर्मादि मे	४	,,	३०	२१-२५-२७-२८-२९
न १	१	९२	२९-३०	२१-२५-२७-२८-२९
,,	३	,,	२९	२९
,,	४	,,	२९	२१-२५-२७-२८-२९
न २-६	१-३	,,	२९-३०	,,
,,	४	,,	२९	२९
न ७	१	,,	२९-३०	२१-२५-२७-२८-२९
,,	३-४	,,	२९	२९
ति	१	,,	२३-२५-२६-२८-२९-३०	२१-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१
,,	३	,,	२८	३०-३१

जीव	गु०	स०	बधस्थान	उदयस्थान
,,	४	,,	२८	२१-२६-२८-२६-३०-३१
,,	५	,,	२८	३०-३१
मनुष्य	१	,,	२३-२५-२६-२८-२६-३०	२१-२६-२८-२६-३०
,,	३	,,	२८	३०
,,	४	,,	२८	२१-२६-२८-२६-३०
,,	५	,,	२८	३०
,,	६	,,	२८	२५-२७-२८-२६-३०
,,	७-८	,,	२८-३०	३०
,,	६-१०	,,	१	३०
मनुष्य	११	६२	०	३०
भ देवी	१	,,	२५-२६-२६-३०	२१-२५-२७-२८-२६
,,	३-४	,,	२६	२६
सौ ई	१-३	,,	भवनत्रक समान	भवनत्रक समान
,,	४	,,	२६	२१-२५-२७-२८-२६
स म	१	,,	२६-३०	,,
,,	३-४	,,	सौधर्म समान	सौधर्म समान
आ ग्री	१	,,	२६	,,
,,	३-४	,,	सौधर्म समान	सौधर्म समान
शे.	४	,,	,,	,,
न १	१	६१	२६	२१-२५
	४	,,	३०	२१-२५-२७-२८-२६
न २-३	१	,,	प्रथम नरक समान	प्रथम नरक समान
,,	४	,,	३०	२७-२८-२६
मनुष्य	१	,,	२८-२६	३०
,,	४	,,	२६	२१-२६-२८-२६-३०
,,	५-८	,,	२६	३०
,,	८-१०	,,	१	३०

जीव	गु०	स०	बधस्थान	उदयस्थान
	११	,,	,,	,,
क दे	४	,,	३०	२१-२५-२७-२८-२९
न १	१	९०	२९-३०	२१-२५-२७-२८-२९
,,	२	,,	,,	२९
,,	३	,,	२९	२९
,,	४	,,	२९	२१-२५-२७-२८-२९
न. २-६	१-३	,,	प्रथम नरक समान	प्रथम नरक समान
,,	४	,,	२९	२९
न ७	१	,,	२९-३०	२९
,,	२-४	,,	द्वितीय नरक समान	द्वितीय नरक समान
ति	१	,,	२३-२५-२६-२८-२९-३०	२१-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१
ति०	२	९०	२८-२९-३०	२१-२४-२६-३०-३१
,,	३,५	,,	२८	३०-३१
,,	४	,,	२८	२१-२६-२८-२९-३०-३१
मनुष्य	१	,,	२३-२५-२६-२८-२९-३०	२१-२६-२८-२९-३०
,,	२	,,	२८-२९-३०	२१-२६-३०
,,	३	,,	२८	३०
,,	४	,,	२८	२१-२६-२८-२९-३०
,,	५-७	,,	२८	३०
,,	८	,,	२८-१	३०
,,	९-१०	,,	१	३०
,,	११	,,	०	३०
भ दे	१	९०	२५-२६-२९-३०	२१-२५-२७-२८-२९
,,	२	,,	२९-३०	२१-२५-२९
,,	३-४	,,	२९	२९
सौ ई	१-३	,,	भवनत्रक समान	भवनत्रक समान
,,	४	,,	२९	२१-२५-२७-२८-२९
स स	१	,,	२९-३०	,,
,,	२-४	,,	सौधर्म समान	सौधर्म समान

जीव	गु०	स०	वधस्थान	उदयस्थान
अ ग्री	१-४	,,	२६	२१-२५-२७-२८-२६
,,	२	,,	२६	२१-२५-२६
,,	३	,,	२६	२६
शे	४	,,	आनतनमान	आनत समान
ति	१	८८	२३-२५-२६-२८-२६-३०	२१-२४-२५-२६-२७-२८-२६-३०-३१
म	१	,,	,,	२१-२६-२८-२६-३०
ति	१	८४	२३-२५-२६-२६-३०	२१-२४-२५-२६-२७-२८-२६-३०-३१
म	१	,,	,,	२१-२६-२८-२६-३०
ति	१	८२	,,	२१-२४-२५-२६
म	६-१०	८०-७८	१	३०
,,	१२	,,	०	३०
,,	१३	,,	०	३०स २१-२७-२६-३०-३१
,,	१४	,,	०	६
म	६-१२	७६-७७	८० के सत्व समान	८० के सत्व समान
,,	१३	,,	०	३०स २०-२६-२८-२६-३०
,,	१४	,,	०	८
,,	१४	१०	०	६
,,	१४	६	०	८

आगे वध और उदयस्थान मे सत्वस्थान दिखाते हैं।

तेवीसबंधगे इगिवीसणवुदयेसु आदिमचउक्के ।
बाणउदिणउदिअडचउबासीदी सत्तठाणाणि ॥७५०॥
तेणुवरिमपंचुदये ते चेवंसा विवज्ज बासीदिं ।
एवं पणछव्वीसे अडवीसे एक्कवीसुदये ॥७५१॥

बाणउदिणउदिसत्तं एवं पणुवीसयादिपंचुदये ।
पणसगवीसे णउदी विगुव्वणे अत्थिणाहारे ॥७५२॥
तेण णभिगितीसुदये बाणउदिचउक्कमेक्कतीसुदये ।
णवरि ण इगिणउदिपदं णववीसिगिवीसबंधुदये ॥७५३॥
तेणवदिसत्तसत्तं एवं पणछक्कवीसठाणुदये ।
चउवीसे बाणउदी णउदिचउक्कं य सत्तपदं ॥७५४॥
सगवीसचउक्कुदये तेणउदीछक्कमेवमिगितीसे ।
तिगिणउदी ण हि तीसे इगिपणसगअट्ठणवयवीसुदये ॥७५५॥
तेणउदिछक्कसत्तं इगिपणवीसेसु अत्थि बासीदी ।
तेण छवउवीसुदये बाणउदी णउदिचउसत्तं ॥७५६॥
एवं खिगितीसे ण हि बासीदी एक्कतीसबंधेण ।
तीसुदये तेणउदी सत्तपदं एक्कमेव हवे ॥७५७॥
इगिबंधट्ठाणेण दु तीसट्ठाणोदये णिरुंधम्मि ।
पढमचउसीदिचऊ सत्तट्ठाणाणि णामस्स ॥७५८॥

तेइस बंधहिं इक्किसा, नव उदयहिं चउ आदि ।
बानव नव्वे आठ चउ, दो अस्सी सतु लादि ॥७५०
उस ऊपर पन उदय में, व्यासी का सतु नांहि ।
यों ही पन छै वीस में, अठविस इकविस मांहि ॥७५१॥
बानव नव्वे सत्व में, उदय पचिस से पांच ।
विक्रिय पन सत वीस में, नवे हार मत वांच ॥७५२॥

उनतिस इकतिस उदय में, बानव चउ सतु दीस।
इकतिस उदयज बानवे, बंध उदय उनतीस ॥७५३
इक्किस त्रानव सात सतु, उदय पांच छै बीस ।
चौविस में सतु बानवे, नव्वे से चउ दीस ॥७५४।
सत्ताइस चउ के उदय, त्रानव छै इकतीस ।
त्रय इक नवे न तिसहि इक, पन सत अव नव वीस।७५
वानव छै सतु एक पन, धिक विस व्यासी लार ।
उस चउ छै विस उदय सतु, वानव नव्वे चार ॥७५
उस प्रकार तिस दुक उदय, व्यासी विन इकतीस।
बंध तीस के उदय में, सतु त्रानव ही दीस ॥७५
एक बंध तिस के उदय, अथवा बंध विहीन ।
प्रथम चार अरु असी चउ, सत्व नाम के चीन॥७५८।

अर्थ—२३-२५-२६ के बध और २१-२४-२५-२६ के उदय-स्थान मे ९२-९०-८८-८४-८२ के ५ सत्वस्थान होते हैं और २७-२८-२९-३०-३१ के उदयस्थान मे ९२-९०-८८-८४ के ४ सत्व-स्थान होते है २८ के बध और २१ के उदयस्थान मे ९२-९० के २ सत्वस्थान विक्रिकाययोग की अपेक्षा २५-२७ के उदयस्थान मे ९२-९० के २ सत्वस्थान आहारककाययोग की अपेक्षा—२५-२७ के उदयस्थान मे ९२ का १ सत्वस्थान २६-२८-२९ के उदयस्थान मे ९२-९० के २ सत्वस्थान ३० के उदयस्थान मे ९२-९१-९०-८८

के ४ सत्वस्थान होते है और ३१ के उदयस्थान मे ६२-६०-८८ के ३ सत्वस्थान होते है २६ के बध और २१ के उदयस्थान मे ६३-६२-६१-६०-८८-८४-८२ के ७ सत्वस्थान २४-२६ के उदयस्थान में ६२-६०-८८-८४-८२ के ५ सत्वस्थान विक्रियकाययोग की अपेक्षा २५ के उदयस्थान मे ६२-६०-८८-८४-८२ के ५ सत्व-स्थान आहारककाययोग की अपेक्षा से २५ के उदयस्थान मे ६२-८८-८४-८२ के ४ सत्वस्थान २७-२८-२६-३० के उदयस्थान मे ६३-६२-६१-६०-८८-८४ के ६ सत्वस्थान और ३१ के उदयस्थान में ६२-६०-८८-८४ के ४ सत्वस्थान होते है ३० के बध और २१-२५ के उदय होने पर ६३-६२-६१-६०-८८-८४-८२ के ७ सत्वस्थान २४-२६ के उदयस्थान में ६२-६०-८८-८४-८२ के ५ सत्वस्थान २७-२८-२६ के उदयस्थान ६३-६२-६१-६०-८८-८४ के ६ सत्वस्थान और ३०,३१ के उदयस्थान में ६२,६०, ८८,८४ के ४ सत्वस्थान होते है ३१ के बध और ३० के उदय, स्थान में ६३ का १ सत्वस्थान होता है १ के बध और ३० के उदयस्थान में ६३,६२,६१,६०,८०,७६,७८,७७ के ८ सत्वस्थान होते है ॥७५०–७५८॥

नामबंध और उदयस्थान में सत्वस्थान

बध और	उदयस्थान	सत्वस्थान
२३-२५-२६	२१-२४-२५-२६	६२-६०-८८-८८-८२
	२७-२८-२६-३०-३१	६२-६०-८८-८४
२८	२१	६२-६०
	विक्रिय से २५-२७	,,
	आहारक से २५-२७	६२
	२६-२८-२६	६२-६०
	३०	६२-६१-६०-८८
	३१	६२-६०-८८
२६	२१	६३-६२-६१-६०-८८-८४-८२

बध और	उदयस्थान	सत्वस्थान
	२४–२६	९२-९०-८८-८४-८२
	विक्रिय से २५	,,
	आहारक से २५	९२-८८-८४-८२
	२७-२८-२९-३०	९३-९२-९१-९०-८८-८४
	३१	९२-९०-८८-८४
३०	२१–२५	९३-९२-९१-९०-८८-८४-८२
	२४–२६	९२-९०-८८-८४-८२
	२७–२८–२९	९३-९२-९१-९०-८८-८४
	३०–३१	९२-९०-८८-८४
३१	३०	९३
१	३०	९३-९२-९१-९०-८०-७९-७८-७७

आगे नामकर्म के बध सत्व मे उदयस्थान दिखाते हैं।

तेवीसबंधठाणे दुखणउदडचदुरसीदी सत्तपदे ।
इगिवीसादिणउदओ बासीदे एक्कवीसचऊ ॥७५९॥
एवं पणछव्वीसे अडवीसे बंधगे दुणउदंसे ।
इगिवीसादिणवुदया चउवीसट्ठाणपरिहीणा ॥७६०॥
इगिणउदीए तीसं उदओ णउदीए तिरियसण्णि वा ।
अडसीदीए तीसदु णववीसे बंधगे तिणउदीए ॥७६१॥
इगिवीसादट्ठुदओ चउवीसूणो दुणउदिणउदितिये ।
इगिवीसणविगिणउदे णिरयं व छवीसतीसधिया ॥७६२॥
बासीदे इगिचउपणछव्वीसा तीसबंधतिगिणउदी ।
सुरमिव दुणउदिणउदी चउसुदओ ऊणतीसं वा ॥७६३ ॥
इगितीसबंधठाणे तेणउदे तीसमेव उदयपदं ।
इगिबंध तिणउदिचऊ सीदिचउक्केवि तीसुदओ ॥७६४॥

तेइस युत बानव नवे, अठ चउ असि सतु धार ।
इक्किससे नव तक उद्य,व्यासिहिं इक्किस चार ७५९
यों पन छै विस आठ विस, बंध बानवे सत्व ।
चौविस विन इक्कोस से, नव तक उद्या कत्व।।७६०।।
इक्यानव पर तिस उद्य, नवे समन पशु कत्व ।
अठसी सतु तिस दुकउद्य,उनतिसत्रानव सत्व ।।७६१
इक्किस अठ चौवीस विन, बानव नव्वे तीन ।
इक्किस नव क्यानव नरक,छव्विसतिस धिक चीन ७६२
व्यासि इक च पन छै विसा, तिस पर वानव क्यान ।
सुर वत् बानव नवे चउ, उनतिसके वत् जान ।।७६३।।
इकतिस बंधहिं वानवे, तीस उद्य इक बंध ।
त्रानव चउ अरु असी चउ,तीस उद्य की गंध ।।७६४।।

अर्थ—२३-२५-२६ के बधस्थान और ९२-९०-८८-८४ के सत्वस्थान मे २१-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१ के ९ उदय-स्थान और ८२ के सत्वस्थान मे २१-२४-२५-२६ के ४ उदयस्थान होते है २८ के बधस्थान और ९२ के सत्वस्थान मे २१-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१ के ८ उदयस्थान ९१ के सत्वस्थान में ३० का १ उदयस्थान सैनीतिर्यच की अपेक्षा ९० के सत्वस्थान में २१-२६-२८-२९-३०-३१ के ६ उदयस्थान और ८८ के सत्वस्थान मे ३०-३१ के २ उदयस्थान होते है २९ के बधस्थान और ९३ के सत्वस्थान मे २१-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१ के ८ उदयस्थान

९२-९०-८८-८४ के सत्वस्थान मे २१-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१ के ९ उदयस्थान ९१ के सत्वस्थान मे नरकगति की अपेक्षा २१-२५-२७-२८-२९ मनुष्यगति की अपेक्षा २६-३० के इसतरह ७ उदयस्थान और ८२ के सत्वस्थान मे २१-२४-२५-२६ के ४ उदयस्थान होते है ३० के बधस्थान और ९३-९१ के सत्वस्थान मे २१-२५-२७-२८-२९ के ५ उदयस्थान ९२-९०-८८-८४ के सत्वस्थान मे २१-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१ के ९ उदयस्थान और ८२ के सत्वस्थान मे २१-२४-२५ २६ के ४ उदयस्थान होते हैं ३१ के बधस्थान और ९३ के सत्वस्थान मे ३० का १ उदयस्थान होता है १ के बधस्थान और ९३-९२-९१-९०-८०-७९-७८-७७ सत्वस्थान मे ३० का १ उदयस्थान होता है ॥७५९-७६४॥

नामबंध और सत्वस्थान मे उदयस्थान

बध और	सत्व मे	उदयस्थान
२३-२५-२६	९२-९०-८८-८४	२१-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१
	८२	२१-२४-२५-२६
२८	९२	२१-२५-२६-२७-२८-२९-३० ३१
	९१	३०
	९०	सै ति २१-२६-२८-२९-३०-३१
	८८	३०-३१
२९	९३	२१-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१
	९२-९०-८८-८४	२१-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१
	९१	न २१-२५-२७-२८-२९ म २६-३०
	८२	२१-२४-२५-२६
३०	९३-९१	२१-२५-२७-२८-२९

बध और	सत्व मे	उदयस्थान
३०	६२–६०–८८–८४	२१–२४–२५–२६–२७–२८–२९–३०-३१
	८२	२१-२४-२५-२६
३१	६३	३०
१	६३-६२-६१-६०-८०-७९-७८-७७	३०

आगे उदय और सत्वस्थान मे बधस्थान दिखाते है ।

इगिवीसट्ठाणुदये तिगिणउदे णवयवीसदुगबंधो ।
तेण दुखणउदिसत्ते आदिमछक्कं हवे बंधो ॥७६५॥
एवमडसीदितिदए ण हि अडवीसं पुणोवि चउवीसे ।
दुखणउददडसीदितिए सत्ते पुव्वं व बंधपदं ॥७६६॥
पणवीसे तिगिणउदे एगुणतीसंदुगं दुणउदीए ।
आदिमछक्कं बंधो णउदिचउक्केवि णऽडवीसं ॥७६७॥
छव्वीसे तिगिणउदे उणतीसं बंध दुगखणउदीए ।
आदिमछक्कं एवं अडसीदितिए ण अडवीसं ॥७६८॥
सगवीसे तिगिणउदे णववीसदुबंधयं दुणउदीए ।
आदिमछण्णउदितिए एयं अडवीसयं णत्थि ॥७६९॥
अडवीसे तिगिणउदे उणतीसदु दुजुदणउदिणउदितिये ।
बंधो सगवीसं वा णउदीए अत्थि णडवीसं ॥७७०॥
अडवीसम्मिवुणतीसे तीसे तेणउदिसत्तगे बंधो ।
णववीसेक्कत्तीसं इगिणउदी अट्ठवीसदुगं ॥७७१॥

तेण दुणउदे णउदे अडसीदे बंधमादिमं छक्कं ।
चुलसीदेवि य एवं णवरि ण अडवीसबंधपदं ॥७७२॥
तं सुदयं विगितीसे सजोग्गबाणउदिणउदितियसत्तो ।
उवसंतचउक्कुदये सत्तो बंधस्स ण वियारो ॥७७३॥
नामस्स य बंधादिसु दुतिसंजोगा परूविदा एवं ।
सुदवणवसंतगुणगणसायरचंदेण सम्मदिणा ॥७७४॥

इक्किस युत त्रय इक नवे, उनतिस तिस का बंध ।
बानव नव्वे सत्व पर, आदि छहों का बंध ॥७६५॥
अठसी त्रय अठवीस विन, चौविस उदय पिछान ।
बानव नव्वे अठसि त्रय, बंध पूर्व वत् जान ॥७६६॥
पच्चिस युत त्रय इक नवे, उनतिस तिस सतु व्यान ।
बंध आदि छै नवे चउ, बंध आठ विस हान ॥७६७॥
छव्विस युत त्रय इक नवे, उनतिस बानव और ।
नवे आदि छै अठसि त्रय, अट्ठाइस विन ठौर ॥७६८॥
सत्ताइस त्रय इक नवे, उनतिस तिस बंधान ।
बानवादि छै नवे त्रय, अट्ठाइस विन जान ॥७६९॥
अठवीसहिं त्रय इक नवे, उनतिस तिस सतु व्यान ।
नव्वे त्रय सतवीस वत्, नव्वे अठविस हान ॥७७०॥

अठविस वत् उनतीस तिस, तिसहिं त्रानवे बंध।
उनतिस इकतिस व्यान सतु, अठविस दुक का बंध७७१
बानव नव्वे अठासी, बंध आदि छै मान ।
चौरासी में इसीविधि, परि अठविस की हान ॥७७२॥
तिस वत् इकतिस योग्य निज, बानव नव्वे तीन।
शांत चार में उदय सतु, हो पुनि बंध न चीन॥७७३॥
इस प्रकार से नाम के, बंध उदय सतु थान ।
दोय तीन संयोग कें, कहे वीर भगवान ॥७७४॥

अर्थ—२१ के उदय और ९३–९१ के सत्वस्थान मे २९-३० के २ बधस्थान ९२–९० के सत्वस्थान मे २३–२५–२६–२८–२९–३० के ६ बधस्थान और ८८–८४–८२ के सत्वस्थान में २३–२५–२६–२९–३० के ५ बधस्थान होते है २४ के उदय और ९२-९०-८८-८४-८२ के सत्वस्थान में उपरोक्त ५ बधस्थान होते हैं २५ के उदय और ९३–९१ के सत्वस्थान मे २९–३० के २ बधस्थान ९२ के सत्वस्थान मे २३–२५–२६–२८–२९–३० के ६ बधस्थान और ९०–८८–८४–८२ के सत्वस्थानमे २३–२५–२६–२९–३० के ५ बधस्थान होते है २६ के उदय और ९३–९१ के सत्वस्थान में २९ का १ बधस्थान ९२–९० के सत्वस्थान मे २३-२५-२६-२८-२९-३० के ६ बधस्थान और ८८–८४-८२ के सत्वस्थान मे २३–२५–२६–२९–३० के ५ बधस्थान होते हैं २७ के उदय और ९३–९१ के सत्वस्थान में २९–३० के २ बधस्थान ९२ के सत्वस्थान में २३–२५–२६–२८–२९–३० के ६ बधस्थान और ९०–८८–८४ के सत्वस्थान मे २३–२५–२६–२९–३० के ५

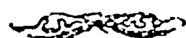
वधस्थान होते है २८ के उदय ओर ९३-९१ के सत्वस्थान मे २९-३० के २ वधस्थान ९२-८८-८४ के सत्वस्थान मे २३-२५-२६-२८-२९-३० के ६ वधस्थान और ९० के सत्वस्थान मे २३-२५-२६-२९-३० के ५ वधस्थान होते है २९ के उदय और ९३-९१ के सत्वस्थान मे २९-३० के २ वधस्थान ९२-८८-८४ के सत्वस्थान मे २३-२५-२६-२८-२९-३० के ६ वधस्थान और ९० के सत्व-स्थान मे २३-२५-२६-२९-३० के ५ वधस्थान होते है ३० के उदय और ९३ के सत्वस्थान मे २९-३० के २ वधस्थान ९१ के सत्वस्थान मे नरकगमन की अपेक्षा २८-२९ के २ वधस्थान ९२-९०-८८ के सत्वस्थान मे २३-२५-२६-२८-२९-३० के ६ वध-स्थान और ८४ के सत्वस्थान मे २३-२५-२६-२९-३० के ५ वधस्थान होते है ३१ के उदय और ९२-९०-८८ के सत्वस्थान मे २३-२५-२६-२८-२९-३० के ६ वधस्थान और ८४ के सत्व-स्थान मे २३-२५-२६-२९-३० के ५ वधस्थान होते है तथा उपशातमोहादि ४ गुणस्थानो मे वध के अभाव होने के कारण उदय और सत्व के स्थान नही लिखे । इसप्रकार नामकर्म के वध, उदय और सत्वस्थानो मे द्विसयोगी-त्रिसयोगी भगो का वर्णन श्रीमहावीरस्वामी ने किया ॥७६५-७७४॥

नामउदय और सत्वस्थान मे उदयस्थान

उ और	सत्वस्थान मे	वधस्थान
२१	९३-९१	२९-३०
	९२-९०	२३-२५-२६-२८-२९-३०
	८८-८४-८२	२३-२५-२६-२९-३०
२४	९२-९०-८८-८४-८२	,,
२५	९३-९१	२९-३०
	९२	२३-२५-२६-२८-२९-३०
	९०-८८-८४-८२	२३-२५-२६-२९-३०
२६	९३-९१	२९

उ और	सत्वस्थान मे	बधस्थान
२६	९२-९०	२३-२५-२६-२८-२९-३०
	८८-८४-८२	२३-२५-२६-२९-३०
२७	९३-९१	२९-३०
	९२	२३-२५-२६-२८-२९-३०
	९०-८८-८४	२३-२५-२६-२९-३०
२८-२९	९३-९१	२९-३०
	९२-८८-८४	२३-२५-२६-२८-२९-३०
	९०	२३-२५-२६-२९-३०
३०	९३	२९-३०
	९१	२८-२९
	९२-९०-८८	२३-२५-२६-२८-२९-३०
	८४	२३-२५-२६-२९-३०
३१	९२-९०-८८	२३-२५-२६-२८-२९-३०
	८४	२३-२५-२६-२९-३०

।। बंधादिस्थानाधिकार समाप्त ।।



आगे मगलाचरण करते है ।

असहायजिणवरिंदे असहायपरक्कमे महावीरे ।
पणमिय सिरसा वोच्छं तिचूलियं सुणह एयमणा ।।७७५।।

ज्ञान शक्ति इन्द्रिय रहित, महावीर जिनराय ।
कहूँ वन्दि मैं त्रय कथन, सुनो भव्य मन लाय ।।७७५।।

अर्थ—जिनका ज्ञान इन्द्रियो की सहायता से रहित है ऐसे श्रीमहावीर भगवान् को नमस्कार करके नवप्रश्न, दशकरण और पचनक्रमण नाम के तीन अधिकारो का वर्णन करता हूँ ।।७७५।।

आगे नवप्रश्न दिखाते है ।

किं बंधो उदयादो पुव्वं पच्छा समं विणस्सदि सो ।
सपरोभयोदयो वा णिरंतरो सांतरो उभयो ॥७७६॥

बँधे उदय के पूर्व को, पीछे या इक साथ ।
स्वपर उभय में को उदय, ध्रुव अध्रुव दो हाथ ॥७७६॥

अर्थ—उदयविछुत्ति के पूर्व किन प्रकृतियो की वधविछुत्ति होती है ? उदयविछुत्ति के पश्चात् किन प्रकृतियो की वधविछुत्ति होती है ? उदयविछुत्ति और वधविछुत्ति किन प्रकृतियो की साथ-साथ होती है ? अपनें उदय मे किन प्रकृतियो का वध होता है ? पर के उदय मे किन प्रकृतियो का वध होता है ? स्वपर के उदय मे किन प्रकृतियो का वध होता है ? किन प्रकृतियो का वध सदा होता है ? किन प्रकृतियो का वध कभी-कभी होता है ? और किन प्रकृतियो का वध सदा अथवा कभी-कभी होता है ? इस प्रकार इन ६ प्रश्नो का विचार इस अधिकार मे किया है ॥७७६॥

आगे प्रथम तीन प्रश्नो का उत्तर दिखाते है ।

देवचउक्काहारदुगज्जसदेवाउगाण सो पच्छा ।
मिच्छत्तादावाणं णराणुथावरचउक्काण ॥७७७॥
पण्णरकसायभयदुगहस्सदुचउजाइपुरिसवेदाणं ।
सममेक्कत्तीसाणं सेसिगिसीदाण पुव्वं तु ॥७७८॥

देव चार आहार दुक, सुरवय अयश पछार ।
नरपूर्वी मिथ्या तथा, पुरुष रु थावर चार ॥७७७॥
पन्द्रह कषाय हास्य दुक, इन्द्रिय चउ भय ग्लान ।
इकतिस साथ रु पूर्व में, इक्यासी पहिचान ॥७७८॥

अर्थ—देवगति ४ आहारक २ अयश १ देवायु १ इन ८ प्रकृतियो की वधविछुत्ति उदयविछुत्ति के पश्चात् होती है मिथ्यात्व १ आताप १ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ स्थावर ४ संज्वलनलोभ बिना कपाय १५ भय २ हास्य २ इन्द्रिय ४ पुरुषवेद १ इन ३१ प्रकृतियो की उदयविछुत्ति और बंधविछुत्ति साथ-साथ होती है और शेष ८१ प्रकृतियो की बधविछुत्ति उदयविछुत्ति के पूर्व होती है ।।७७७-७७८।।

आगे द्वितीय तीन प्रश्नो का उत्तर दिखाते है ।

सुरणिरयाऊ तित्थं वेगुव्वियछक्कहारमिदि जेसिं ।
परउदयेण य बंधो मिच्छं सुहुमस्स घादीओ ।।७७९।।
तेजदुगं वण्णचऊ थिरसुहजुगलगुरुणिमिणधुवउदया ।
सोदयबंधा सेसा बासीदा उभयबंधाओ ।।७८०।।

विक्रिय षट सुर नरक वय, तीर्थाहारा ख्यात ।
अन्य उदय में बँधे जे, वाम सूक्ष्म की घात ।।७७९।।
तैजस थिर शुभ दुक अगुरु, वर्ण चार निर्माण ।
ध्रुव उदयी स्वोदय बँधे, ब्यासी उभय बँधान ।।७८०।।

अर्थ—देवायु १ नरकायु १ तीर्थकर १ विक्रिय ६ आहारक २ इन ११ प्रकृतियो का वध पर के उदय मे होता है मिथ्यात्व १ ज्ञानावरणी ५ अतराय ५ दर्शनावरणी ४ तैजस २ वर्ण ४ स्थिर २ शुभ २ अगुरुलघु १ निर्माण १ इन २७ प्रकृतियो का वध अपने उदय मे होता है और शेष ८२ प्रकृतियो का वध अपने और पर के उदय होता है ।।७७९–७८०।।

आगे तृतीय तीन प्रश्नो का उत्तर दिखाते है ।

सत्तेताल धुवावि य तित्थाहाराउगा णिरंतरगा ।
णिरयदुजाइचउक्कं संहदिसंठाणपणपणगं ॥७८१॥
दुग्गमणादावदुगं थावरदसगं असादसढित्थि ।
अरदीसोगं चेदे सातरगा होंति चोत्तीसा ॥७८२॥
सुरणरतिरियोरालियवेगुव्वियदुगपसत्थगदिवज्ज ।
परघाददुसमचउरं पंचिंदिय तसदसं सादं ॥७८३॥
हस्सरदिपुरिसगोदट्ठु सप्पडिवक्खम्मि सांतरा होंति ।
णट्ठे पुण पडिवक्खे णिरंतरा होंति वत्तीसा ॥७८४॥

सेंतालिस ध्रुव आयु चउ, तीर्थाहार अखंड ।
सँहनन पन संस्थान पन, थावर दश तिय षंड ॥७८१॥
कुमति असाता नरक दुक, तप दुक इन्द्रिय चार ।
अरति शोक चौंतीस ये कभी वंध को धार ॥७८२॥
साता त्रस दश गोत्र सुर, नर पशु परवध दोय ।
हास्य वज्र समचतुर रति, औदा विक्रिय दोय ॥७८३॥
पंचेन्द्रिय शुभ गति पुरुष, पास विरोधी दीस ।
कभी वँधे अविरोध में, सदा वँधे वत्तीस ॥७८४॥

अर्थ—सदा उदय और वधवाली (ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ९ अतराय ५ मिथ्यात्व १ कषाय १६ भय १ ग्लानि १ निर्माण १ वर्ण ४ तैजस २ अगुरुलघु २) ४७ तीर्थंकर १ आहारक २ आयु ४ इन ५४ प्रकृतियो का वध जवतक होता है तवतक निरतर होता है नरकगति २ इन्द्रिय ४ सहनन ५ सस्थान ५ अशुभचाल १ आताप

२ स्थावर १० असाता १ नपुसक वेद १ स्त्रीवेद १ अरति १ शोक १ इन ३४ प्रकृतियो का बध निरतर नही होता देवगति २ मनुष्य-गति २ तिर्यचगति २ औदारिक २ विक्रियक २ शुभचाल १ वज्र-वृषभनाराचसहनन १ समचतुस्रसस्थान १ परघात २ पचेन्द्रिय १ त्रस १० साता १ हास्य २ पुरुपवेद १ गोत्र २ इन ३२ प्रकृतियों का वध अपनी विरोधी प्रकृतियो के अभाव मे निरतर होता है इसकारण उभयबधी कहलाती है ॥७८१–७८४॥

॥ नवप्रश्नाधिकार समाप्त ॥



आगे दशकरणो के नाम दिखाते है ।

बंधुक्कट्टणकरणं संकममोकट्टुदीरणा सत्तं ।
उदयुवसामणिधत्ती णिकाचणा होदि पडिपयडी ॥७८५॥

वंध उदीरण संक्रमण, उत्कर्षण अपकर्ष ।
सत्व उदय उपशम निधति, निकांचिता दश पर्श । ७८५

अर्थ—वध, उत्कर्पण, सक्रामण, अपकर्पण, उदीरणा, सत्व, उदय, उपशम, निधति और निकाचित य दशकरणो के नाम है ये मूल और उत्तर कर्मप्रकृतियो मे होते है ॥७८५॥

आगे उपरोक्त करणो का स्वरूप दिखाते है ।

कम्माणं संबंधो बंधो उक्कट्टणं हवे वड्ढी ।
संकमणमणत्थगदी हाणी ओकट्टणं णाम ॥७८६॥
अण्णत्थठियस्सुदये संथुहणमुदीरणा हु अत्थित्तं ।
सत्तं सकालपत्तं उदओ होदित्ति णिद्दिट्ठो ॥७८७॥

उदये संकममुदये चउसुवि दादुं कमेण णो सक्कं ।
उवसंतं य णिधत्ति णिकाचिदं होदि जं कम्मं ।।७८८।।

बंध कर्म सम्बन्ध है, वृद्धि रूप उत्कर्ष ।
अन्य रूप गति संक्रमण, हानि रूप अपकर्ष ।।७८६।।
उदय काल विन उदय में, लाय उदीरण चाल ।
विद्यमान सो सत्व है, उदय-उदय निज काल ।।७८७।।
शमहि उदीरण निधति में, संक्रम उदीर्ण खोय ।
कर्षण उदीर्ण संक्रमण, रहित निकांचित होय ।।७८८।।

अर्थ—जीव और कर्म के सवन्ध को वधकरण कहते हैं जो कर्मो की स्थिति और अनुभाग बढा दे उसको उत्कर्षणकरण कहते हैं जो बधरूपकर्मप्रकृति का स्वभाव अन्य प्रकृतिरूप करदे उसको सक्रमणकरण कहते है जो कर्मों की स्थिति और अनुभाग कम करदे उसको अपकर्षणकरण कहते हैं जो उदयकाल विना कर्मप्रकृति को उदय मे ला दे उसको उदीरणाकरण कहते है। जबतक उदय न आवे तबतक कर्मरूप रहने को सत्वकरण कहते है। उदयकाल मे कर्मप्रकृति उदय होवे उसको उदयकरण कहते है। जो बिना उदी-रणा के कर्मप्रकृति को कुछ समय तक उपशम करदे उसको उपशम-करण कहते है। जो कर्म की उदीरणा और सक्रमण न होने दे उसको निधतिकरण कहते हैं और जो कर्म की उदीरणा, सक्रमण, उत्कर्षण तथा अपकर्षण न होने दे उसको निकाचितकरण कहते हैं ।।७८६–७८८।।

आगे प्रकृतियो और गुणस्थानो मे करणो को दिखाते हैं।

संकमणाकरणूणा णवकरणा होंति सव्वआऊणं ।
सेसाणं दसकरणाअपुव्वकरणोत्ति दसकरणा ।।७८९।।
आदिमसत्तेव तदो सुहुमकसाओत्ति संकमेण विणा ।
छच्च सजोगित्ति तदो सत्तं उदयं अजोगित्ति ।।७९०।।
णवरि विसेसं जाणे संकममवि होदि संतमोहम्मि ।
मिच्छस्स य मिस्सस्स य सेसाणं णत्थि संकमणं ।।७९१।।

बिना एक संक्रमण के, आयू में नव कर्ण ।
शेषों में दश करण हैं, अठवें तक दश कर्ण ।।७८९।।
सात आदि के सूक्ष्म तक, बिना संक्रमण योग ।
छै ही कहे सयोग में, सत्ता उदय अयोग ।।७९०।।
वाम मिश्र का संक्रमण, शांत मोह में होय ।
शेषों में नहिं संक्रमण, यह विशेषता कोय ।।७९१।।

अर्थ—आयुकर्म मे सक्रमण के बिना नवकरण होते है और शेष कर्म प्रकृतियो मे १० करण होते है तथा मिथ्यात्व से लेकर अपूर्वकरणगुणस्थान तक १० करण होते है अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसांपरायगुणस्थान मे आदि के ७ करण होते है उपशातमोह गुणस्थान में मिथ्यात्व और मिश्रप्रकृति का सक्रमण (सम्यक्प्रकृति-रूप) होता है और शेष प्रकृतियो में ६ करण होते है क्षीणमोह और सयोगगुणस्थान मे ६ करण होते है तथा अयोगगुणस्थान मे सत्व और उदय ये २ करण होते है ।।७८९-७९१।।

आगे बंध, उत्कर्षण और सक्रमण के गुणस्थान दिखाते है ।

बंधुक्कट्टणकरणं सगसगबंधोत्ति होदि णियमेण ।
संकमणं करणं पुण सगसगजादीण बंधोत्ति ॥७६२॥

निज-निज बंधविछुत्ति तक, होहि उत्कर्षण बंध ।
निज-निज जाती बंध तक, हो संक्रमण गंध ॥७६२॥

अर्थ—जहाँतक अपनी-अपनी प्रकृतियो की बधविछुत्ति होती है तहाँतक बध और उत्कर्षणकरण होता है तथा जहाँतक अपनी-अपनी जाति सम्बन्धी प्रकृतियो की बधविछुत्ति होती है तहाँतक उनमे सक्रमणकरण होता है ॥७६२॥

आगे प्रकृतियो मे अपकर्षण के गुणस्थान दिखाते है ।

ओक्कट्टणकरणं पुण अजोगिसत्ताण जोगिचरिमोत्ति ।
खीणं सुहुमंताणं खयदेसं सावलीयसमयोत्ति ॥७६३॥
उवसंतोत्ति सुराऊ मिच्छत्तिय खवगसोलसाण य ।
खयदेसोत्ति य खवगे अट्ठकसायादिवीसाणं ॥७६४॥
मिच्छतियसोलसाणं उवसमसेढिम्मि संतमोहोत्ति ।
अट्ठकसायादीणं उवसमियट्ठाणगोत्ति हवे ॥७६५॥

सत्व अयोगी अपकरष, योगि अंत तक मान ।
क्षीण सूक्ष्म के अंत तक,आवलि धिक क्षय थान ॥७६३॥
सुरवय का शम अ्रम लिका, क्षपक सोल अरु और ।
अठकषाय से बीस तक, क्षपक देश तक ठौर ॥७६४॥
उपसमश्रेणी सोलहा, मिथ्या तक का शांत ।
अठ कषाय से बीस तक, उपशम थल तक सांत ॥७६५

अर्थ—अयोगगुणस्थान की ८५ सत्व प्रकृतियो का अपकर्पण-करण सयोगगुणस्थान के अत तक हो सकता है। सूक्ष्मलोभ १ का अपकर्पण सूक्ष्मसापरायगुणस्थान तक हो सकता है ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अतराय ५ निद्रा २ इन १६ प्रकृतियो का अपकर्षण क्षीणमोह गुणस्थान तक हो सकता है। इन १+१६=१७ प्रकृतियो के क्षय होने में एक समय अधिक एक आवलीकाल लगता है कारण ये अपने उदय मे ही क्षय होती है और जो पर के उदय मे क्षय होती है उनका क्षय एक समय मे होता है देवायु का अपकर्पण उपशातमोहगुणस्थान तक होता है मिथ्यात्व, मिश्र और सम्यक् प्रकृति का अपकर्षण अविरत, देशविरत, प्रमत्त अथवा अप्रमत्तगुण-स्थान तक होता है अनिवृत्ति करणगुणस्थान में क्षय होने वाली ३६ प्रकृतियो का अपकर्षण क्षपकश्रेणी की अपेक्षा अपने २ क्षय स्थान तक होता है उपशमश्रेणी की अपेक्षा मिथ्यात्वादि ३ और अनिवृत्तिकरणगुणस्थान के प्रथमभाग मे क्षय होने वाली १६ इस तरह १९ प्रकृतियो का अपकर्पण करण उपशातमोह गुणस्थान तक होता है तथा अनिवृत्तिकरण मे क्षय होने वाली ८ कपाय से लेकर २० प्रकृतियो का अपकर्षणकरण अपने २ उपशमस्थान तक होता है ॥७९३-७९५॥

आगे शेष का अपकर्पण और उदय-उदीरण-सत्व दिखाते है।

पढमकसायाणं य विसंजोजकं वोत्ति अयददेसोत्ति।

णिरयतिरियाउगाणमुदीरणसत्तोदया सिद्धा ॥७९६॥

मिच्छस्य य मिच्छोत्ति य उदीरणा उवसमाहिमुहियस्स।

समयाहियावलित्ति य सुहुमे सुहुमस्स लोहस्स ॥७९७॥

विसंयोजना थान तक, अनकषाय का जत्व।

पन चउ तक पशु नरक त्रय, उदय उदीरण सत्व ॥७९६

श्रम की भ्रम में उदीरणा, उपशम सन्तुण नाँभ ।
आवलि इकक्षण अधिक नव, सूक्षम सुदान नाँभ ॥ ३६७

[illegible] ॥३६८॥

शम न उदीरण तिनति तें, संक्रम उदीर्ण नाहिं ।
उन चारों बिन निर्धानन, आठें गुण नव पाहिं ॥ ३६८

उव्वेल्लणविज्झादो अधापवत्तो गुणो य सव्वो य ।
संकमदि जेहिं कम्मं परिणामवसेण जीवाणं ॥३६९॥

उद्वेलन विध्यात अरु, अधः प्रवृति गुण सव ।
अन्य रूप हो कर्म जब, जीव भाव वश थर्व ।।७६६।।

अर्थ—ससारी जीवो में वाधे हुये शुभ और अशुभ कर्म अपने परिणाम के निमित्त से अन्यप्रकृतिरूप हो जाते है उसको सक्रमण-करण अथवा भागहार कहते है वह पॉच प्रकार का होता है उद्वेलना, विध्यात, अध प्रवृत्ति, गुणसक्रमण और सर्वसक्रमण ।।७६६।।

उद्वेलना सक्रमण—जो वँधी हुई कर्म की प्रकृति के परमाणु अधः करणादि तीनकरणो के विना अन्यप्रकृति रूप करदे उसको उद्वेलना सक्रमण कहते है ।

विध्यात सक्रमण—जो वधी हुई कर्म प्रकृति की स्थिति और अनुभाग तीन करणो के विना मदकषायमात्र से कम करदे उसको विध्यात सक्रमण कहते है ।

अध प्रवृत्ति सक्रमण—जो पूर्व वँधी हुई कर्म प्रकृति के परमाणुओ को आगामी अपने वध में सभवती प्रकृतियो मे वदल दे उसको अध प्रवृत्ति सक्रमण कहते है ।

गुण सक्रमण—जो प्रतिसमय गुणाकार के क्रमसे वँधी हुई कर्म प्रकृति के अतिम भाग को छोड कर शेष भागो के परमाणुओ को वदल कर अन्य प्रकृतिरूप करदे उसको गुणसक्रमण कहते है ।

सर्व सक्रमण—जो वँधी हुई कर्म प्रकृति के अतिम भाग को वदल कर अन्य प्रकृति रूप करदे उसको सर्वसक्रमण कहते है ।

आगे सक्रमण के नियम दिखाते है ।

बंधे संकामिज्जदि णोवंधे णत्थि मूलपयडीणं ।
दंसणचरित्तमोहे आउचउक्के ण संकमणं ।।८००।।

पलटे अपने स्वभाव निज, और के प्रगटि सब।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ८०० ॥

सासण मिस्से मिच्छे [illegible] [illegible] [illegible] ।
सासणमिस्से [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ८०१ ॥

सम्यक् मिथ्या मिश्र त्रय, नहिं पलटें निजभाव।
सासन मिश्र में दर्श त्रय, पलटे नाहीं विधान ॥ ८०१ ॥

मिच्छे परिणामाणं [illegible] [illegible] ।
उवसमेण दु [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ८०२ ॥

भ्रम में समकित मिश्र का, कम मुहूर्त्त तक मान।
अधःप्रवत उद्वेलना, दुक्षण अंत तक जान ॥८०२॥

अर्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान को प्राप्त होने पर सम्यक् और मिश्रप्रकृति का पूरे अतर्मुहूर्त्तकाल तक अध प्रवृत्तसक्रमण होता है और इनका उद्वेलना सक्रमण उस अन्तर्मुहूर्त्त के अत के दो समयों मे से प्रथम समय तक ही होता है साराश यह है कि अध प्रवृत्त सक्रमण उद्वेलना सक्रमण से एक समय अधिक तक होता है ॥८०२॥

आगे उद्वेलनाप्रकृतियो में सक्रमण की विधि दिखाते है।

उव्वेलणपयडीणं गुणं तु चरिमम्हि कंडये णियमा।
चरिमे फालिम्मि पुणो सव्वं य य होदि संकमणं ॥८०३॥

उद्वेलन का गुण पलट, दुक्षण अंत तक भाय।
अंत समय में सर्व अणु, अन्य रूप पलटाय ॥८०३॥

अर्थ—उद्वेलनाप्रकृतियो का गुणसक्रमण अन्तर्मुहूर्त्त के अत के दो समयो मे से प्रथम समय तक होता है और अत के समय में उनका सर्व सक्रमण होता है ॥८०३॥

आगे तिर्यंचो के उदय होने वाली प्रकृतियो को दिखाते है।

तिरियदुजाइचउक्कं आदावुज्जोवथावरं सुहुमं।
साहारणं य एदे तिरियेयारं मुणेयव्वा ॥८०४॥

इन्द्रिय चउ साधातपा, थावर सूक्षम मान।
पशु दुक अरु उद्योत मिल, पशु एकादश जान ॥८०४॥

अर्थ—तिर्यचगति २ इन्द्रिय ४ आताप १ उद्योत १ स्थावर १ सूक्ष्म १ साधारण १ ये ११ प्रकृतियो का उदय तिर्यचो के ही होता है ॥८०४॥

आगे उद्वेलना प्रकृतियो को दिखाते है ।

आहारदुगं सम्मं मिस्सं देवदुगणारयचउक्कं ।
उच्चं मणुदुगमेदे तेरस उव्वेलणा पयडी ॥८०५॥

समकित मिस आहार दुक, सुर दुक नारक चार ।
ऊँच मनुष दुक तेरहा, ये उद्वेलन धार ॥८०५॥

अर्थ—आहारक २ सम्यक्प्रकृति १ मिश्रप्रकृति १ देवगति २ नरकगति ४ ऊँचगोत्र १ मनुष्यगति २ ये १३ प्रकृतियो की उद्वेलना हो सकती है ॥८०५॥

आगे ५ सक्रमणो के गुणस्थान दिखाते है ।

बंधे अधापवत्तो विज्झादं सत्तमोत्ति हु अबंधे ।
एत्तो गुणो अबंधे पयडीणं अप्पसत्थाणं ॥८०६॥

बँधे जहाँ तक अध-प्रवत, सप्तम तक विध्यात ।
अशुभ कर्म उपशांत तक, गुण पलटन विख्यात ॥८०६

अर्थ—जिन प्रकृतियो का वध हो रहा है उनकी वधविछुत्ति तक अध प्रवत्तसक्रमण हो सकता है किन्तु मिथ्यात्व का नही होता इसकी बधविछुत्ति के पश्चात् अविरत से लेकर अप्रमत्तगुणस्थान तक विध्यातसक्रमण होता है अप्रमत्त से लेकर उपशातमोहगुण-स्थान तक जिनका वध नही हो रहा ऐसी अशुभ प्रकृतियो का गुणसक्रमण होता है इसीप्रकार प्रथमोपशमसम्यक्त्व के ग्रहणकाल मे भी गुणसक्रमण होता है तथा सम्यक् और मिश्रप्रकृति के पूर्ण काल मे और मिथ्यात्व के क्षय करने मे अपूर्वकरणपरिणामो के द्वारा उस मिथ्यात्व के क्षय होने के अत के दो समयो मे से प्रथम समय तक यथासभव प्रकृतियो का गुणसक्रमण होता है और अत के समय मे सर्वसक्रमण होता है ॥८०६॥

आगे प्रकृतियो मे होने वाले सक्रमणो को दिखाते है ।

उगुदालं तीससत्तयवीसे एक्केक्कवारतिचउक्के ।
इगिचदुदुगतिगतिगचदुपणदुगदुगतिण्णि संकमणा ॥८०७॥
सुहुमस्स बंधघादी सादं संजलणलोहपंचिंदी ।
तेजदुसमवण्णचऊ अगुरुगपरघादउस्सासं ॥८०८॥
सत्थगदी तसदसयं णिमिणुगुदाले अधापवत्तो दु ।
थीणतिबारकसाया संढित्थी अरइ सोगोय ॥८०६॥
तिरियेयारं तीसे उव्वेलणहीणचारि संकमणा ।
णिद्दा पयला असुहं वण्णचउक्कं य उवघादे ॥८१०॥
सत्ताण्हं गुणसंकममधापवत्तो य दुक्खमसुहगदी ।
संहदि सठाणदसं णोचापुण्णथिरछक्कं य ॥८११॥
वीसण्हं विज्झादं अधापवत्तो गुणो य मिच्छत्ते ।
विज्झादगुणे सव्वं सम्मे विज्झादपरिहीणा ॥८१२॥
सम्मविहीणुव्वेल्ले पचेव य तत्थ होंति संकमणा ।
संजलणतिये पुरिसे अधापवत्तो य सव्वो य ॥८१३॥
ओरालदुगे वज्जे तित्थे विज्झादधापवत्तो य ।
हस्सरदिभयजुगुच्छे अधापवत्तो गुणो सव्वो ॥८१४॥

उनतालिस तिस सात विस, इक इक वारह चार ।
च च में इक च दु ति ति च प दु, दो त्रय संक्रम धार८०७
पंचेन्द्रिय लोभान्त सुख, घाति सूक्ष्म की ख्यात ।
श्वास तैज दुक वर्ण चउ, समच अगुरु परघात ॥८०८॥

त्रस दश निर्माणा सुगति, उनतालिस अध घौक ।
बारह कषाय नींद त्रय, अरति षंड तिय शोक ॥८०६॥
पशु ग्यारह युत तीस में, उद्वेलन विन चार ।
उपघाता शुभ वर्ण चउ, निद्रा प्रचला लार ॥८१०॥
सातों में गुण अध-प्रवत, दुक्ख अशुभ गति मान ।
नीच अथिर छै ऊंन अरु, पन संहनन संस्थान ॥८११॥
वीसों में विध्यात अरु, अधःप्रवत दो चीन ।
श्रस में विध्यत सर्वगुण, समकित विध्यत हीन ॥८१२॥
समकित विन उद्वेल में, पांच संक्रमण मान ।
अंत क्रोध त्रय पुरुष में, अधः सर्व पहिचान ॥८१३॥
औदा दुक जिन वज्र में, अधः और विध्यात ।
हास्य ग्लानि भय प्रीति में, सर्व अधः गुण ख्यात ॥८१४॥

अर्थ—ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अतराय ५ साता १ सज्वलनलोभ १ पचेन्द्रिय १ तैजस २ समचतुरस्रसस्थान १ वर्ण ४ अगुरुलघु १ परघात १ उश्वास १ शुभचाल १ त्रस १० निर्माण १ इन ३६ प्रकृतियो मे अध प्रवृत्तसक्रमण होता है शयनगृद्धि ३ आदि की कपाय १२ नपुसकवेद १ स्त्रीवेद १ शोक १ अरति १ तिर्यंच की ११ इन ३० प्रकृतियो मे उद्वेलनासक्रमण के बिना ४ सक्रमण होते है निद्रा १ प्रचला १ अशुभवर्ण ४ उपघात १ इन ७ प्रकृतियो मे गुणसक्रमण और अध प्रवृत्तसक्रमण ये दो ही होते है असाता १ अशुभचाल १ सहनन ५ सस्थान ५ नीचगोत्र १ अपर्याप्त

१ अस्थिर ६ इन २० प्रकृतियों मे विध्यात अध और गुणसक्रमण ये ३ होते है मिथ्यात्वप्रकृति मे विध्यात, गुण और सर्वसक्रमण ये ३ सक्रमण होते है सम्यक्प्रकृति मे विध्यातसक्रमण के बिना चार सक्रमण होते है सम्यक्प्रकृति के बिना उद्वेलना की १२ प्रकृतियों मे पाँचो ही संक्रमण होते है सज्वलनक्रोधादि ३ पुरुषवेद १ इन ४ प्रकृतियो मे अध प्रवृत्त और सर्वसक्रमण ये २ सक्रमण होते है औदारिक २ वज्रवृषभनाराचसहनन १ तीर्थकरप्रकृति १ इन ४ प्रकृतियो मे विध्यात और अध प्रवृत्त ये २ सक्रमण होते है तथा हास्य १ रति १ भय १ ग्लानि १ इन ४ प्रकृतियो में अध, गुण और सर्वसक्रमण ये ३ सक्रमण होते है ॥८०७-८१४॥

आगे सर्व सक्रमण की प्रकृतियो को दिखाते है ।

तिरियेयारुव्वेल्लणपयडी संजलणलोहसम्ममिस्सूणा ।
मोहा थीणतिगं य य बावण्णे सव्वसंकमणं ॥८१५॥

समकित मिस लोभान्त विन, मोह रु निद्रा तीन ।
बावन पशु उद्वेल युत, सर्व संक्रमण चीन ॥८१५॥

अर्थ—तिर्यच की ११ उद्वेलना की १३ सज्वलनलोभ बिना मोह की २७ शयनगृद्धि ३ इन ५४ प्रकृतियो मे से सम्यक् और मिश्रप्रकृति ये दो प्रकृतियाँ उद्वेलनाप्रकृतियो में भी आ चुकी है और मोह की प्रकृतियो में भी आ चुकी है इस कारण इन दो को कम करने से शेप ५२ प्रकृतियाँ रहती है इनका सर्व सक्रमण होता है ॥८१५॥

आगे विध्यात सक्रमण की प्रकृतियों को दिखाते है ।

सम्मत्तूणुव्वेलणथीणतिसीसं य दुक्खवीसं य ।
वज्जोरालदुतित्थं मिच्छं विज्झादसत्तट्ठी ॥८१६॥

समकित विन उद्वेल सब, नींद ति तिस दुख वीस।
औदा दुक भ्रम वज्र जिन, सरसठि विध्यातीस ।।८१६।।

अर्थ—सम्यक्प्रकृति बिना उद्वेलना की १२ शयनगृद्धि आदि उपरोक्त ३० असातावेदनी आदि उपरोक्त २० वज्रवृषभनाराच सहनन १ औदारिक २ तीर्थकर १ मिथ्यात्व १ इनका विध्यात-सक्रमण होता है ।।८१६।।

आगे अध प्रवृत्त गुणसक्रमण की प्रकृतियो को दिखाते हैं ।

मिच्छूणिगिवीससयं अधापवत्तस्स होंति पयडीओ ।
सुहुमस्स बंधघादिप्पहुदी उगुदालुरालदुगतित्थं ।।८१७।।
वज्जं पुंसंजलणति ऊणा गुणसंकमस्स पयडीओ ।
पणहत्तरिसंखाओ पयडीणियमं विजाणाहि ।।८१८।।

भ्रम विन इकसौवीस इक, अधःप्रवृत की मान।
बंध सूक्ष्म की घाति दिक, उनतालीस पिछान ।।८१७।।
अंत क्रोध त्रय वज्र जिन, औदा दुक नर खोय।
शेष पिचत्तर प्रकृतियाँ, गुणसंक्रम की जोय।।८१८।।

अर्थ—मिथ्यात्व के बिना शेष १२१ प्रकृतियो का अध प्रवृत्त-सक्रमण होता है सूक्ष्मसापराय गुणस्थान मे बध होने वाली घातिया कर्मो की १४ प्रकृतियो को आदि देकर उपरोक्त ३९ औदारिक २ तीर्थकर १ वज्रवृषभनाराचसहनन १ पुरुषवेद १ सज्वलनक्रोधादि ३ इन ४७ प्रकृतियो को छोडकर शेष ७५ प्रकृतियो का गुणसक्रमण होता है ।।८१७-८१८।।

आगे स्थिति अनुभाग-प्रदेशबध के सक्रमण के गुणस्थान दिखाते है ।

ठिदिअणुभागाणं पुण बंधो सुहुमोत्ति होदि णियमेण ।
बंधपदेसाणं पुण संकमणं सुहुमरागोत्ति ॥८१६॥

बंध थिती अनुभाग का, सूक्षम गुण तक मान ।
बँधे अणू का संक्रमण, सूक्षम गुण तक जान ॥८१६॥

अर्थ – स्थिति और अनुभागबध का सक्रमण सूक्ष्मसापराय-गुणस्थान तक होता है कारण कषायो का उदय यहॉ तक ही होता है और बँधे हुये कर्मपरमाणुओ (प्रदेशबध) का सक्रमण भी इस सूक्ष्मसापरायगुणस्थान तक होता है ॥८१६॥

आगे उपरोक्त सक्रमणो का अल्पबहुत्व दिखाते है ।

सव्वस्सेक्कं रूवं असंखभागो दु पल्लछेदाणं ।
गुणसंकमो दु हारो ओकट्टुक्कट्टणं तत्तो ॥८२०॥

हारं अधापवत्तं तत्तो जोगम्हि जो दु गुणगारो ।
णाणागुणहाणिसला असंखगुणिदक्कमा होंति ॥८२१॥

तत्तो पल्लसलायच्छेदहिया पल्लछेदणा होंति ।
पल्लस्स पढममूलं गुणहाणीवि य असंखगुणिदकमा ॥८२२॥

अण्णोण्णब्भत्थं पुण पल्लमसंखेज्जरूवगुणिदकमा ।
संखेज्जरूवगुणिदं कम्मुक्कस्सट्ठिदी होदि ॥८२३॥

अंगुलअसंखभागं विज्झादुव्वेल्लणं असंखगुणं ।
अणुभागस्स य णाणागुणहाणिसला अणंताओ ॥८२४॥

गुणहाणिअणंतगुणं तस्स दिवड्ढं णिसेयहारो य ।
अहियकमाणण्णोण्णब्भत्थोरासी अणंतगुणो ॥८२५॥

एक रूप वत् सर्व अरु, पल्य छेद बहु भाग ।
गुणसंक्रम अपकर्षणा, अरु उत्कर्षण लाग ॥८२०॥
अधःप्रवत अरु योग के, कथनों का गुणकार ।
नानागुण हानी सला, अगणित गुणी सँभार ॥८२१॥
पल्य शला के छेद को, पल्य छेद में छान ।
प्रथम मूल है पल्य का, अगणित गुणि गुण हान ॥८२२॥
गुणित परस्पर राशि में, पल्य असंख्य गुणाय ।
संख्य गुणी वर कर्म थिति, अंगुल असंख्य आय ॥८२३॥
विध्याता उद्वेल को, अगणित गुणी कहंत ।
अनुभागा नाना गुणी, हानी शला अनंत ॥८२४॥
गुणहानी क्षण नंत गुणि, डेढ गुण हान्निषेक ।
गुणित परस्पर राशि को, नंत गुणी क्रम देख ॥८२५॥

अर्थ—सबसे थोडा परिमाण सर्वसक्रमण का है जो कि एकरूप (अतिमनिषेक) बराबर है इससे असख्यातगुणा (पल्य के अर्धच्छेदो के असख्यातवे भाग) परिमाण गुणसक्रमण का है इससे असख्यातगुणा परिमाण अपकर्षण और उत्कर्षण का है तो भी इन प्रत्येक का परिमाण पल्य के अर्धच्छेदो के असख्यातवे भाग कारण असख्यातवें के अनेक भेद है इससे असख्यात गुणा परिमाण अध प्रवृत सक्रमण का है इससे असख्यातगुणापरिमाणयोगो के गुणाकार का है इससे असख्यातगुणा परिमाण कर्मस्थिति की नानागुणहानि का है वह पल्य की वर्गशलाका के अर्धच्छेदो को पल्य के अर्धच्छेदो मे कम

कर जो परिमाण शेष रहे उतना है इससे असख्यातगुणापरिमाण पल्य के प्रथममूल का है इससे असख्यातगुणापरिमाण कर्मस्थिति की एक गुणहानि के निषेको (समयो) का है इससे असख्यातगुणा-परिमाण कर्मस्थिति की परस्पर गुणितराशि का है इससे असख्यात-गुणापरिमाण पल्य का है कारण इस परस्पर गुणितराशि के परिमाण को पल्य की वर्गशलाका से गुणा करने पर पल्य का परिमाण होता है इससे सख्यातगुणा परिमाण कर्मो की उत्कृष्ट-स्थिति का है इससे असख्यातगुणा परिमाण विध्यातसक्रमण का है जो कि सूच्यगुल (चौडागुले) के असख्यातभाग बराबर है इससे असख्यातगुणा परिमाण उद्वेलनासक्रमण का है इससे अनतगुणा-परिमाण कर्मों के अनुभाग की नानागुणहानि का है इससे अनत-गुणापरिमाण उस अनुभाग की एक गुणहानि के निषेको (समयो) का है इससे डोढा परिमाण उसकी डेडगुणहानिका है इससे एक गुणहानि के आधे परिमाण से अधिक परिमाण दो गुणहानि का है इसको निषेकहार कहते है ।।८२०—८२५।।

।। कर्मअवस्थाधिकार समाप्त ।।



आगे मगलाचरण करते है ।

सिद्धे विसुद्धणिलये पणट्ठकम्मे विणट्ठसंसारे ।
पणमिय सिरसा वोच्छं पयडीणं पच्चयं वोच्छं ।।८२६।।

सिद्ध शुद्ध रत अरु नशा, अष्ट कर्म भव खान ।
नमस्कार कर मैं कहूँ, प्रकृति हेतु स्थान ।।८२६।।

अर्थ—जिन्होने अष्ट कर्मो को नाश कर ससार का अत कर दिया है और शुद्ध आत्मस्वभाव मे लीन हो गये है ऐसे सिद्धभगवान को नमस्कार करके कर्म बंध के कारण आस्रवो को कहता हूँ ।।८२६।।

आगे आस्रवो के भेद दिखाते है ।

मिच्छत्तं अविरमणं कषायजोगा य आसवा होंति ।
पण बारस पणुवीसं पण्णरसा होंति तब्भेया ॥८२७॥

मिथ्या अविरत कषाया, योग हि आस्रव मान ।
पन बारह पच्चीस अरु, पन्द्रह भेद पिछान ॥८२७॥

अर्थ—मिथ्यात्व, अविरत, कपाय और योग ये ४ मूल आस्रव हैं तथा इनके उत्तर भेद क्रमसे ५, १२, २५, १५ होते है ॥८२७॥

आगे मूल आस्रवो को गुणस्थानो मे दिखाते है ।

चदुपच्चइगो बंधो पढमे णंतररतिगे तिपच्चइगो ।
मिस्सगबिदियं उवरिमदुगं य देसेक्कदेसम्मि ॥८२८॥
उवरिल्लपंचये पुण दुपच्चया जोगपच्चओ तिण्हं ।
सामण्णपच्चया खलु अट्ठण्हं होंति कम्माणं ॥८२९॥

बंध हेतु चउ वाम में, आगे कारण तीन ।
द्वितिय मिला है देश में, उपरि पूर्ण दो चीन ॥८२८
आगे पन में हेतु दो, त्रय में कारण योग ।
साधारण कारण यथा, अष्ट कर्म के बोग ॥८२९॥

अर्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे मूल चारो आस्रवो के उदय से बध होता है सासादन, मिश्र और अविरतगुणस्थान मे मिथ्यात्व विना तीन आस्रवो के उदय से वध होता है देशविरतगुणस्थान मे अविरत से मिला हुआ व्रत, कषाय और योग के उदय से बध

होता है प्रमत्त से लेकर सूक्ष्मसांपरायगुणस्थान तक कषाय और योग के उदय से बंध होता है और उपशांतमोह से लेकर सयोगगुण-स्थान तक योग के उदय से बंध होता है ॥८२८–८२६॥

गुणस्थानों में मूल आस्रवदर्शक यंत्र

गु०	मि०	सा०	मि०	अ०	दे०	प्र०	अ०	अ०
आ०	४	३	३	३	३	२	२	२

गु०	अ०	सू०	उ०	क्षी०	स०	अ०
आ०	२	२	१	१	१	०

आगे उत्तर आस्रवों के गुणस्थानों में दिखाते हैं।

पणवण्णा पण्णासा तिदाल छादाल सत्ततीसा य।
चदुवीसा बावीसा बावीसमपुव्वकरणोत्ति ॥८३०॥
थूले सोलहपहुदी एगूणं जाव होदि दसठाणं।
सुहुमादिसु दस णवयं णवयं जोगिम्मि सत्तेव ॥८३१॥

पचपन पचास तेतालिस, छालिस अरु सैंतीस।
चौविस अरु बाईस हैं, अठ गुण में बाईस ॥८३०॥
अनि में सोलह आदि से, इक इक कम दश ख्यात।
सूक्ष्म दश नव शांत नव, क्षीण योग में सात ॥८३१॥

अर्थ—मिथ्यात्वादिगुणस्थानों में क्रम से ५५, ५०, ४३, ४६, ३७, २४, २२, २२, १६–१०, १०, ६, ६, ७, ० आस्रव होता है।

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान में आहारक २ आस्रवों का उदय न होने से शेष ५५ आस्रवों का उदय होता है और मिथ्यात्व के ५ आस्रवों की उदयविच्छुत्ति होती है सासादनगुणस्थान में उपरोक्त

७ आस्रवो का उदय न होने से शेष ५० आस्रवो का उदय होता है और अनतानुबधी के ४ आस्रवो की उदयविछुत्ति होती है मिश्र-गुणस्थान मे उपरोक्त ११ औदारिकमिश्र १ विक्रियकमिश्र १ कार्माण १ इन १४ आस्रवो का उदय न होने से शेष ४३ आस्रवो का उदय होता है और उदयविछुत्ति नही होती अविरतगुणस्थान मे औदारिकमिश्र १ विक्रयकमिश्र १ कार्माण १ इन तीन बिना उपरोक्त ११ आस्रवो का उदय न होने से शेप ४६ आस्रवो का उदय होता है और अप्रत्याख्यान ४ विक्रियक २ औदारिकमिश्र १ कार्माण १ त्रसहिसा १ इन ९ आस्रवो की उदयविछुत्ति होती है देशविरतगुणस्थान मे उपरोक्त २० आस्रवो का उदय न होने से शेष ३७ आस्रवो का उदय होता है और अविरत ११ प्रत्याख्यान ४ इसतरह १५ आस्रवो की उदयविछुत्ति होती है प्रमत्तगुणस्थान मे आहारक २ बिना उपरोक्त ३३ आस्रवो का उदय न होने से शेष २४ आस्रवो का उदय होता है और आहारक २ की उदयविछुत्ति होती है अप्रमत्तगुणस्थान मे उपरोक्त ३५ आस्रवो का उदय न होने से शेष २२ आस्रवो का उदय होता है और उदयविछुत्ति नही होती अपूर्वकरणगुणस्थान मे उपरोक्त ३५ आस्रवो का उदय न होने से शेष २२ आस्रवो का उदय होता है और हास्यादि ६ की उदयविछुत्ति होती है अनिवृत्तिकरणगुणस्थान के प्रथम भाग मे उपरोक्त ४१ आस्रवो का उदय न होने से शेष १६ आस्रवो का उदय होता है और नपुसकवेद की उदयविछुत्ति होती है द्वितीय भाग मे उपरोक्त ४२ आस्रवो का उदय न होने से शेष १५ आस्रवो का उदय होता है और स्त्रीविद की उदयविछुत्ति होती है तृतीय भाग मे उपरोक्त ४३ आस्रवो का उदय न होने से शेष १४ आस्रवो का उदय होता है और पुरुषवेद की उदयविछुत्ति होती है चतुर्थ भाग मे उपरोक्त ४४ आस्रवो का उदय न होने से शेष १३ आस्रवो का उदय होता है और सज्वलनक्रोध की उदयविछुत्ति होती है पचम भाग मे उपरोक्त ४५ आस्रवो का उदय न होने से

शेष १२ आस्रवो का उदय होता है और सज्वलनमान की उदय विछुत्ति होती है तथा छट्ठम भाग मे उपरोक्त ४६ आस्रवो का उदय न होने से शेष ११ आस्रवो का उदय होता है और सज्वलन माया की उदयविछुत्ति होती है सूक्ष्मसापरायगुणस्थान मे उपरोक्त ४७ आस्रवो का उदय न होने से शेष १० आस्रवो का उदय होता है और सज्वलनलोभ की उदयविछुत्ति होती है उपशातमोहगुणस्थान मे उपरोक्त ४८ आस्रवो का उदय न होने से शेष ६ आस्रवो का उदय होता है और उदयविछुत्ति नही होती क्षीणमोहगुणस्थान मे उपरोक्त ४८ आस्रवो का उदय न होने से शेष ६ आस्रवो का उदय होता है और असत्यमन और असत्यवचनयोग तथा उभयमन और उभयवचनयोग इस तरह ४ आस्रवो की उदयविछुत्ति होती है तथा सयोगगुणस्थान मे औदारिकमिश्र १ कार्माण १ इन दो के बिना उपरोक्त ५० आम्रवो के न होने से शेष ७ आस्रवो का उदय होता है और सत्यमनयोग १ सत्यवचनयोग १ अनुभयमनयोग १ अनुभय वचनयोघ १ औदारिककाययोग १ औदारिकमिश्रकाययोग १ कार्माणकाययोग १ इन ७ योगो की उदयविछुत्ति होती है ।।८३०-८३१।।

गुणस्थानों में उत्तर आस्रवदर्शक यंत्र

	मि	मा,	मि	अ	दे	प्र.	अ	अ.	अ १	अ २
अ	२	७	१४	११	२०	३३	३५	३५	४१	४२
उ	५५	५०	४३	४६	३७	२४	२२	२२	१६	१५
वि	५	४	०	६	१५	२	०	६	१	१

	अ ३	अ ४	अ ५	अ ६	सू	उ	क्षी	स	अ
अ	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४८	५०	५७
उ	१४	१३	१२	११	१०	६	६	७	०
वि	१	१	१	१	१	०	४	७	०

आगे एकसमय मे होनेवाले आस्रवो के प्रकार दिखाते है ।

अवरादीणं ठाणं ठाणपयार पयारकूडा य ।
कूडुच्चारणभंगा पंचविहा होंति इगिसमये ।।८३२।।

जघन मध्य वर थान अरु, थलविधि कूट प्रकार ।
कूट उच्चारण भंग युत,पण विधि इक क्षणधार।।८३२।।

अर्थ—आस्रवो मे जघन्य, मध्य और उत्कृष्टस्थान होते है स्थानो मे भेद होते है भेदो मे कूट होते है कूटो की उच्चारणविधि होती है और उनके भग होते है ।।८३२।।

आगे गुणस्थानो मे आस्रवो के जघन्यादि भेद दिखाते है ।

दस अट्ठारस दसयं सत्तर णव सोलसं य दोण्हंपि ।
अट्ठ य चोद्दस पणयं सत्त तिये दुति दुगेगमेगमदो ।।८३३।।

दश ठारह दश सत्रहा, दो में नव अरु सोल ।
अठ चौदह तिहुँ पाँच सत,दो त्रय दो इक तोल ।।८३३

अर्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे एक जीव के एकसमय मे कम-से-कम १० और अधिक-से-अधिक १८ आस्रव होते हैं सासादन-गुणस्थान मे कम-से-कम १० अधिक-से-अधिक १७ आस्रव होते है मिश्र और अविरतगुणस्थान मे कम-से-कम ९ और अधिक-से-अधिक १६ आस्रव होते है देशविरतगुणस्थान मे कम-से-कम ८ और अधिक-से-अधिक १४ आस्रव होते है प्रमत्त, अप्रमत्त और अपूर्वकरणगुणस्थान मे कम-से-कम ५ और अधिक-से-अधिक ७ आस्रव होते है अनिवृत्तिकरणगुणस्थान मे कम-से-कम २ और अधिक-से-अधिक ३ आस्रव होते है सूक्ष्मसापरायगुणस्थान मे २ आस्रव होते है उपशममोह, क्षीणमोह और सयोगगुणस्थान मे १ आस्रव होता है और अयोगगुणस्थान मे ० आस्रव होता है ।।८३३।।

कम-से-कम और अधिक-से-अधिक आस्रवदर्शक यंत्र

	मि	सा.	मि.	अ.	दे.	प्र.	अ	अ.	अ.	सू	उ.	क्षी.	स	अ.
क.	१०	१०	९	९	८	५	५	५	२	२	१	१	१	०
अः	१८	१७	१६	१६	१४	७	७	७	३	२	१	१	१	०

आगे उपरोक्त स्थानो में भेद दिखाते है ।

एक्कं य तिण्णि पंच य हेट्ठुवरीदो दु मज्झिमे छक्कं ।
मिच्छे ठाणपयारा इगिदुगमिदरेसु तिण्णि देसोत्ति ॥८३४॥

इक त्रय पन अध उपरि में, मध्यहि छै छै भाग ।
वाम थान में देश तक, इक दो पर त्रय जाग ॥८३४॥

अर्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान के १०वे और १८वे स्थान में १-१ भेद है ११वे और १७वे स्थान मे ३–३ भेद है १२वे और १६वें स्थान मे ५–५ भेद है तथा १३, १४, १५ वे स्थान में ६–६ भेद है सासादनगुणस्थान के १० वें और १७ वे स्थान मे १–१ भेद है ११ वे और १६ वे स्थान में २–२ भेद है तथा १२, १३, १४, १५ स्थान में ३–३ भेद है मिश्र और अविरतगुणस्थान के ९वे और १६वे स्थान मे १–१ भेद है १०वे और १५वे स्थान में २–२ भेद है तथा ११, १२, १३, १४वे स्थान में ३-३ भेद है देशविरतगुण-स्थान के ८वे और १४वे स्थान में १-१ भेद है ९वे और १३वें स्थान में २–२ भेद है तथा १०, ११, १२वे स्थान मे ३–३ भेद हैं और प्रमत्त से लेकर सयोगगुणस्थान तक १–१ भेद है ॥८३४॥

गुणस्थानों में स्थान और भेददर्शक यंत्र

मिथ्यात्वगुणस्थान

स्थान	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
भेद	१	३	५	६	६	६	५	३	१

सासादनगुणस्थान

स्थान	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
भेद	१	२	३	३	३	३	२	१

मिश्र और अविरतगुणस्थान

स्थान	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
भेद	१	२	३	३	३	३	२	१

देशविरतगुणस्थान

स्थान	८	९	१०	११	१२	१३	१४
भेद	१	२	३	३	३	२	१

प्र से अपू तक

स्थान	५	६	७
भेद	१	१	१

अनि

स्था.	२	३
भे	१	१

सू

२
१

उ से स

१
१

अ.

०
०

आगे उपरोक्त स्थानो को जानने के लिये कूट दिखाते है।

भयदुगरहियं पढमं एक्कदरजुदं दुसहियमिदि तिण्णं।
सामाण्णा तियकूडा मिच्छा अणहीणतिण्णिवि य ॥८३५॥

ग्लानी भय विन कूट इक, इक दो युत दो तीन।
सरल कूट चप थाम में, अनविन लय अरु चीन ॥८३५॥

अर्थ—पॉच मिथ्यात्व के ११११२ छै इन्द्रिय के १११११ छै काय की हिंसा के १ २ ३ ४ ५ ६ अप्रत्याख्यानादि तीन क्रोधादि के ३ ३ ३ ३ तीन वेद के १ १ १ हास्य-रति और अरति-शोक के २ २ भय—ग्लानि ० और दशयोग के १० अक क्रमसे ऊपर २ रखने से प्रथम कूट वनता है इसमे भय अथवा ग्लानि का १ अक बढाने से द्वितीय कूट वनता है अथवा दोनो के २ अक बढाने से तृतीय कूट वनता है इसतरह अनतानुबधी रहित मिथ्यात्वगुणस्थान

के ३ कूट बनते हैं और इनमे अनतानुबधीक्रोधादि का १ अक औदारिकमिश्रकाययोग, विक्रियकमिश्रकाययोग और कार्माणकाययोग के ३ अक वढाने से अनतानुबधीसहित मिथ्यात्वगुणस्थान के ३ कूट और वनते है इसीतरह मिथ्यात्वरहित ३ कूट सासादनगुणस्थान के बनते है मिथ्यात्व, अनतानुबधी और उपरोक्त ३ योग के विना मिश्रगुणस्थान के ३ कूट वनते है मिथ्यात्व और अनतानुबधीरहित तथा उपरोक्त ३ योग सहित अविरतगुणस्थान के ३ कूट वनते है तथा मिथ्यात्व, अनतानुबधी, अप्रत्याख्यानविक्रियककाययोग और उपरोक्त ३ योग बिना देशविरतगुणस्थान के ३ कूट वनते है इसीतरह शेष गुणस्थानो के कूट वनते है ॥८३५॥

आगे मिथ्यात्वादि के कूटदर्शक यत्र दिखाते है ।

मिथ्यात्व के ६ कूट

१०–१५	११–१६	१२–१७
१०	१०	१०
०	१	२
२–२	२–२	२–२
१–१–१	१–१–१	१–१–१
३–३–३–३	३–३–३–३	३–३–३–३
१–२–३–४–५–६	१–२–३–४–५–६	१–२–३–४–५–६
१–१–१–१–१–१	१–१–१–१–१–१	१–१–१–१–१–१
१–१–१–१–१	१–१–१–१–१	१–१–१–१–१

११–१६	१२–१७	१३–१८
१३	१३	१३
०	१	२
२–२	२–२	२–२
१–१–१	१–१–१	१–१–१
४–४–४–४	४–४–४–४	४–४–४–४
१–२–३–४–५–६	१–२–३–४–५–६	१–२–३–४–५–६
१–१–१–१–१–१	१–१–१–१–१–१	१–१–१–१–१–१
१–१–१–१–१	५–१–१–१–१	१–१–१–१–१

सासादन के ३ कूट

१०–१५	११–१६	१२–१७
१३	१३	१३
०	१	२
२–२	२–२	२–२
१–१–१	१–१–१	१–१–१
४–४–४–४	४–४–४–४	४–४–४–४
१–२–३–४–५–६	१–२–३–४–५–६	१–२–३–४–५–६
१–१–१–१–१–१	१–१–१–१–१–१	१–१–१–१–१–१

मिश्र के ३ कूट

९–१४	१०–१५	११–१६
१०	१०	१०
०	१	२
२–२	२–२	२–२
१–१–१	१–१–१	१–१–१
३–३–३–३	३–३–३–३	३–३–३–३
१–२–३–४–५–६	१–२–३–४–५–६	१–२–३–४–५–६
१–१–१–१–१–१	१–१–१–१–१–१	१–१–१–१–१–१

अविरत के ३ कूट

९–१४	९–१५	९–१६
१३	१३	१३
०	१	२
२–२	२–२	२–२
१–१–१	१–१–१	१–१–१
३–३–३–३	३–३–३–३	३–३–३
१–२–३–४–५–६	१–२–३–४–५–६	१–२–३–४–५–६
१–१–१–१–१–१	१–१–१–१–१–१	१–१–१–१–१–१

देशविरत के ३ कूट

८–१२	९–१३	१०–१४
९	९	९
०	१	२
२–२	२–२	२–२
१–१–१	१–१–१	१–१–१
२–२–२–२	२–२–२–२	२–२–२–२
१–२–३–४–५	१–२–३–४–५	१–२–३–४–५
१–१–१–१–१–१	१–१–१–१–१–१	१–१–१–१–१–१

प्रमत्त से अपूर्व तक के ३ कूट

५	६	७
११	११	११
०	१	२
२–२	२–२	२–२
१–१–१	१–१–१	१–१–१
१–१–१–१	१–१–१–१	१–१–१–१

अनिवृत्तिकरण के ७ कूट

३	३	३	२	२	२	२
९	९	९	९	९	९	९
१–१–१	१–१	१	०	०	०	०
१–१–१–१	१–१–१–१	१–१–१–१	१–१–१–१	१–१–१	१–१	१

मू २	उ १	क्षी १	स १	अ ०
९ १	९	९	७	०

भावार्थ––उपरोक्त मिथ्यात्वगुणस्थान के प्रथमकूट मे से मिथ्यात्व १ इन्द्रिय १ हिसा १ कपाय ३ वेद १ हास्य-रति अथवा

अरति-शोक २ योग १ ग्रहण करने से १० का आस्रव एकसमय मे होता है इसलिये यह एकस्थान कहा जाता है इसतरह इसमे १-१ हिंसा बढाने से १० से १५ तक स्थान होते है द्वितीयकूट मे ११ से १६ तक तृतीयकूट मे १२ से १७ तक चतुर्थकूट मे ११ से १६ तक पाँचवेकूट मे १२ से १७ तक और छटवेकूट मे १३ से १८ तक स्थान होते है इन छहो कूटो के स्थानो मे १० और १८ का स्थान १-१ बार ही आया है ११ और १७ के स्थान ३-३ वार आये है १२ और १६ के स्थान ५-५ वार आये है १३, १४, १५ के स्थान ६-६ बार आये है इनको भग कहते है इसीतरह सासादन से लेकर देशविरतगुणस्थान तक और भग निकाले जाते है और शेष गुणस्थानो के स्थानो मे भग १-१ है ॥८३५॥

मिथ्यात्व के स्थान और भंग दर्शक यंत्र

स्थान	१०	११	१२	१३	१४	१५	०	०	०
	०	११	१२	१३	१४	१५	१६	०	०
	०	०	१२	१३	१४	१५	१६	१७	०
	०	११	१२	१३	१४	१५	१६	०	०
	०	०	१२	१३	१४	१५	१६	१७	०
	०	०	०	१३	१४	१५	१६	१७	१८
भ	१	३	५	६	६	६	५	३	१

सासादन के स्थान और भंग दर्शक यंत्र

स्थान	१०	११	१२	१३	१४	१५	०	०
	०	११	१२	१३	१४	१५	१६	०
	०	०	१२	१३	१४	१५	१६	१७
भ	१	२	३	३	३	३	२	१

मिश्र और अविरत के स्थान और भंग दर्शक यंत्र

स्थान	९	१०	११	१२	१३	१४	०	०
	०	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
	०	०	११	१२	१३	१४	१५	१६
भ.	१	२	३	३	३	३	२	१

देशविरत के स्थान और भंग दर्शक यंत्र

स्थान	८	९	१०	११	१२	०	०
	०	९	१०	११	१२	१३	०
	०	०	१०	११	१२	१३	१४
भ	१	२	३	३	३	२	१

आगे उपरोक्त कूटो की उच्चारण विधि दिखाते है ।

मिच्छत्ताणण्णदरं एक्केणक्खेण एक्ककायादी ।

तत्तो कसायवेददुजुगलाणेक्कं य जोगाणं ॥८३६॥

मिथ्या इन्द्रिय काय वध, योग रु वेद कषाय ।

हास्यादिक युग योग में, इक इक भेद गहाय ॥८३६

अर्थ—जब मिथ्यात्वगुणस्थानवाला जीव विपरीत मिथ्यात्व, स्पर्शनइन्द्रिय पृथ्वीकाय की हिसा, अनतानुबधीआदिक्रोध, स्त्रीवेद, हास्य-रति और भय-ग्लानि बिना सत्यमनयोग को ग्रहण करता है तब उसके आस्रव का प्रथम उच्चारण होता है जब वह विपरीत मिथ्यात्व को छोडकर एकान्तमिथ्यात्व को ग्रहण करता है तब आस्रव का द्वितीय उच्चारण होता है इसी तरह जब वह मिथ्यात्व के शेष भेदो को ग्रहण करता हुआ क्रमसे इन्द्रियादि के भेदो को ग्रहण करता है तब उच्चारण की सख्या क्रमसे बढती जाती है ॥ ८३६॥

आगे उपरोक्त उच्चारण की भग सख्या दिखाते है ।

अणरहिदसहिदकूडे बावत्तरिसय सयाण तेणउदी ।
सट्ठी धुवा हु मिच्छे भयदुगसंजोगजा अधुवा ॥८३७॥
चउवीसट्ठारसयं तालं चोद्दस असीदि सोलसयं ।
छण्णउदी बारसयं वत्तीसं विसद सोल बिसदं य ॥८३८॥
सोलस बिसदं कमसो धुवगुणगारा अपुव्वकरणोत्ति ।
अद्धुवगुणिदे भंगा धुवभंगाणं ण भेदादो ॥८३९॥

वामकूट अनयुत रहित, तानव सौ पर साठ ।
वहतर सौ ध्रुव भय युगल, वध मिल अध्रुव ठाठ ॥८३७
ठारह सौ चौबीस अरु, चौदह सौ चालीस ।
सोलह सौ अस्सी कहे, भंग सर्व जगदीस ॥८३८-१
बारह सौ पर छानवे, दो सौ बत्तिस मान ।
दो सौ सोलह पुनि तथा, दो सौ सोलह जान ॥८३८-२
ये ध्रुव गुणिता भंग हैं, अठवें गुण तक मान ।
गुणि अध्रुव से भंग सब, अध्रुव परें न जान ॥८३९

अर्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे अनतानुबधी रहित तीन कूटो के मिथ्यात्व ५ इन्द्रिय ६ क्रोधादि ४ वेद ३ युगल २ योग १० को परस्पर गुणाकरने से ७२०० भग होते हैं और अनतानुबधी सहित तीन कूटो के मिथ्यात्व ५ इन्द्रिय ६ क्रोधादि ४ वेद ३ युगल २ योग १३ को परस्पर गुणा करने से ९३६० भग होते है इस तरह सब १६५६० ध्रुव भग होते है भय सहित के १६५६० ग्लानि

सहित के १६५६० तथा भय और ग्लानि दोनो सहित के १६५६० अध्रुव भग होते है इस तरह सब ६६२४० भग होते है इनको अध्रुव ६३ कायहिसा से गुणा करने पर सब ४१७३१२० ध्रुवाध्रुव भग होते है।

सासादनगुणस्थान मे इन्द्रिय ६ क्रोधादि ४ वेद ३ युगल २ योग १२ को परस्परगुणे १७२८ विक्रियमिश्रकाययोग के इन्द्रिय ६ क्रोधादि ४ वेद २ युगल २ योग १ को परस्पर गुणे ९६ इस तरह सब १८२४ ध्रुव भग होते है और इनमे उपरोक्त रीति से अध्रुव भग मिलाने से ४५९६४८ ध्रुवाध्रुव भग होते है।

मिश्रगुणस्थान मे इन्द्रिय ६ क्रोधादि ४ वेद ३ युगल २ योग १० को परस्पर गुणे १४४० ध्रुव भग होते है इनमें उपरोक्त रीति से अध्रुव भग मिलाने से ३६२८८० ध्रुवाध्रुव भग होते है।

अविरतगुणस्थान मे इन्द्रिय ६ क्रोधादि ४ वेद ३ युगल २ योग १० को परस्पर गुणे १४४० विक्रियमिश्र और कार्माणकाययोग के इद्रिय ६ क्रोधादि ४ नपुसक-पुरुष २ युगल २ योग २ को परस्पर गुणे १९२ और औदारिकमिश्रकाययोग मे इन्द्रिय ६ क्रोधादि ४ पुरुषवेद १ युगल २ योग १ को परस्परगुणे ४८ इस तरह १६८० ध्रुव भग होते है इनमे उपरोक्तरीति से अध्रुव भग मिलाने से ४२३३६० ध्रुवाध्रुव भग होते है।

देशविरतगुणस्थान मे इन्द्रिय ६ क्रोधादि ४ वेद ३ युगल २ वेद ९ को परस्पर गुणे १२९६ ध्रुव भग होते है भयसहित के १२९६ ग्लानिसहित के १२९६ और दोनो सहित के १२९६ ध्रुव भग है इसतरह सव ५१८४ भग होते है इनको ३१ कायहिसा से गुणा करने पर १६०७०४ ध्रुवाध्रुव भग होते है।

प्रमत्तगुणस्थान मे क्रोधादि ४ वेद ३ युगल २ योग ९ को परस्पर गुणे २१६ और आहारककाययोग-आहारकमिश्रकाययोग मे क्रोधादि ४ वेद १ युगल २ योग २ को परस्पर गुणे १६ इस तरह

सब २३२ ध्रुव भंग होते है इनमे भय-ग्लानि और दोनो के अध्रुव भग मिलाने से ९२८ ध्रुवाध्रुव भग होते है।

अप्रमत्त और अपूर्वकरण स्थान मे क्रोधादि ४ वेद ३ युगल २ योग ९ को परस्पर गुणे २१६-२१६ ध्रुव भग होते है इनमे उपरोक्त रीति से अध्रुव भग मिलाने से ८६४-८६४ ध्रुवाध्रुव भग होते है।

अनिवृत्तिकरणगुणस्थान के वेद सहित भाग मे क्रोधादि ४ वेद ३ योग ९ को परस्परगुणे १०८ क्रोधादि ४ वेद २ योग ९ को परस्परगुणें ७२ क्रोधादि ४ वेद १ योग ९ परस्परगुणे ३६ वेद-रहित भाग मे क्रोधादि ४ योग ९ को परस्परगुणें ३६ क्रोधरहित भाग मे मानादि ३ योग ९ को परस्पर गुणे २७ मानरहित भाग मे मायादि २ योग ९ को परस्परगुणे १८ मायारहित भाग मे बादर-लोभ १ योग ९ को परस्परगुणें ९ इसतरह सब २७० ध्रुव भग होते है।

सूक्ष्मसापरायगुणस्थान में सूक्ष्मलोभ १ योग ९ को परस्पर गुणे ९ ध्रुव भग होते है।

उपशात और क्षीणमोह गुणस्थान मे योगो के ९-९ ध्रुव भग होते है।

सयोगगुणस्थान मे योग के ७ भग होते हैं और अयोगगुणस्थान मे आस्रव का ही अभाव है ॥८३७-८३९॥

आस्रवों का भंग दर्पण

मि०	४१७३१२०	अ०	८६४
सा०	४५९६४८	अ०	२७०
मि०	३६२८८०	सू०	९
अ०	४२३३६०	उ०	९
दे०	१६०७०४	क्षी०	९
प्र०	९२८	स०	७
अ०	८६४	अ०	०

५५८२६७२

आगे उपरोक्तकायहिसा के सयोगी भंग निकालने की विधि दिखाते है।

छप्पंचादेयंतं रूवुत्तरभाजिदे कमेण हदे।
लद्धं मिच्छचउक्के देसे संजोगगुणगारा ॥८४०॥

छै पन से इक तक गुणें, इक इक भाग सँभार।
लब्ध वाम चउ देश में, मिले भंग विस्तार ॥८४०॥

अर्थ—मिथ्यात्व से लेकर अविरतगुणस्थान तक छै काय की हिसा के एक सयोगी आदि भग निकालने के लिये क्रमसे ६, ५, ४, ३, २, १ के भाज्य अक रखकर इनके नीचे १, २, ३, ४, ५, ६ भाजक अक रखकर फिर एक सयोगी के भग निकालना हो तो उपरोक्त भाज्य अंकों मे से ६ भाजक अको में से १ का भाग देने से लब्ध ६ आये जो कि एक सयोगी हिसा के भेद है दो सयोगी के भग निकालना हो तो भाज्य अकों में से ६ और ५ का गुणाकरने से ३० होते है भाजक अकों में से १ और २ का गुणा करने से २ होते है ३० में २ का भाग देने से लब्ध १५ आते हैं जो कि दो सयोगी हिंसा के भग है इसीतरह से तीन, चार, पाच और छै सयोगी के भग क्रमसे आगे २ अकों तक गुणा करके भाग देने से निकलते है देशविरतगुणस्थान की पाचकाय की हिसा के एक सयोगी आदि के भग ५, ४, ३, २, १ के भाज्य और १, २, ३ ४, ५ भाजक अक रखने से निकलते है ॥८४०॥

भावार्थ—मिथ्यात्व से लेकर अविरतगुणस्थान तक उपरोक्त रीति से एक सयोगी हिसा के पृथ्वी १ जल १ अग्नि १ पवन १ वनस्पति १ त्रस हिसा १ ये छै भग आते है।

दो सयोगी हिसा के पृथ्वी-जल १ पृथ्वी-अग्नि १ पृथ्वी-पवन १ पृथ्वी-वनस्पति १ पृथ्वी-त्रस १ जल-अग्नि १ जल-पवन १ जल-

वनस्पति १ जल-त्रस १ अग्नि-पवन १ अग्नि-वनस्पति १ अग्नि-त्रस १ पवन-वनस्पति १ पवन-त्रस १ वनस्पति-त्रस १ ये १५ भग आते है।

तीन सयोगी हिसा के पृथ्वी-जल-अग्नि १ पृथ्वी-जल-पवन १ पृथ्वी-जल-वनस्पति १ पृथ्वी-जल-त्रस १ पृथ्वी-अग्नि-पवन १ पृथ्वी-अग्नि-वनस्पति १ पृथ्वी-अंग्नि-त्रस १ पृथ्वी-पवन-वनस्पति १ पृथ्वी-पवन-त्रस १ पृथ्वी-वनस्पति-त्रस १ जल-अग्नि-पवन १ जल-अग्नि-वनस्पति १ जल-अग्नि-त्रस १ जल-पवन-वनस्पति १ जल-पवन-त्रस १ जल-वनस्पति-त्रस १ अग्नि-पवन-वनस्पति १ अग्नि-पवन-त्रस १ अग्नि-वनस्पति-त्रस १ पवन-वनस्पति-त्रस १ ये २० भग आते है।

चार सयोगी हिसा के पृथ्वी-जल-अग्नि-पवन १ पृथ्वी-जल-अग्नि-वनस्पति १ पृथ्वी-जल-अग्नि-त्रस १ पृथ्वी-जल-पवन-वनस्पति १ पृथ्वी-जल-पवन-त्रस १ पृथ्वी-जल-वनस्पति-त्रस १ पृथ्वी-अग्नि-पवन-वनस्पति १ पृथ्वी-अग्नि-पवन-त्रस १ पृथ्वी-अग्नि-वनस्पति-त्रस १ पृथ्वी-पवन-वनस्पति-त्रस १ जल-अग्नि-पवन-वनस्पति १ जल-अग्नि-पवन-त्रस १ जल-अग्नि-वनस्पति-त्रस १ जल-पवन-वनस्पति-त्रस १ अग्नि-पवन-वनस्पति-त्रस १ ये १५ भग आते है।

पाच सयोगी हिसा के पृथ्वी-जल-अग्नि-पवन-वनस्पति १ पृथ्वी-जल-अग्नि-पवन-त्रस १ पृथ्वी-अग्नि-पवन-वनस्पति-त्रस १ पृथ्वी-जल-पवन-वनस्पति-त्रस १ पृथ्वी-जल-अग्नि-वनस्पति-त्रस १ जल-अग्नि-पवन-वनस्पति-त्रस १ ये ६ भग आते है।

छै सयोगी हिंसा के पृथ्वो-जल-अग्नि-पवन-वनस्पति-त्रस १ यह १ भग आता है इसी तरह देशविरतगुणस्थान के भग त्रसहिंसा कम करने से निकलते हैं॥८४०॥

मिथ्यात्वादि ४ का भंग दर्शक यंत्र

हिंसा	१ स.	२ स.	३ स	४ स.	५ स	६ स
भाज्य	६	५	४	३	२	१
भाजक	१	२	३	४	५	६
भंग	६	१५	२०	१५	६	१

देशविरत का भंग दर्शक यंत्र

हिंसा	१ स.	२ स	३ स.	४ स	५ स
भाज्य	५	४	३	२	१
भाजक	१	२	३	४	५
भंग	५	१०	१०	५	१

आगे ज्ञान और दर्शनावरणी के बंध के कारण दिखाते है।

पडिणीगमंतराए उवघादो तप्पदोसणिण्हवणे ।
आवरणदुगं भूयो बंधदि अच्चासणाएवि ॥८४१॥

ज्ञान विषें ईर्षा अरुचि, विघ्न दोष छल रोक ।
ज्ञान दर्शनावरणि का, करे बंध बहु थोक ॥८४१॥

अर्थ—ज्ञान और ज्ञानी से ईर्षा करता, अरुचि, विघ्न, दोष, और कपट करता है तथा उनके कार्य को रोकता है वह ज्ञानावरणी और दर्शनावरणी कर्म का बंध करता है ॥८४१॥

आगे वेदनी कर्म के बंध के कारण दिखाते है।

भूदाणुकंपवदजोगजुंजिदो खंतिदाणगुरुभत्तो ।
बंधदि भूयो सादं विवरीयो बंधदे इदरं ॥८४२॥

जीव दया व्रत योग युत, क्षमा दान गुण भक्ति।
बांधे साता वेदनी, इतरहिं उलटा व्यक्ति ॥८४२॥

अर्थ—जो जीव दया, व्रत, साम्ययोग, क्षमा, दान और गुरु-भक्ति मे लीन हो जाता है वह सातावेदनी कर्म का बध करता है और इनसे विपरीत कारणों से असातावेदनीकर्म का बध करता है ॥८४२॥

आगे दर्शनमोह कर्म के वध के कारण दिखाते है ।

अरहंतसिद्धचेदियतवसुदगुरुधम्मसंघपडिणीगो ।
बंधदि दंसणमोहं अणंतसंसारिओ जेण ॥८४३॥

देव शास्त्र गुरु धर्म की, निंदा जो नर धार।
बांधे दर्शन मोह फिर, भ्रमे अमित संसार ॥८४३

अर्थ—जो देव, शास्त्र, गुरु और धर्म की निदा करता है वह दर्शनमोहकर्म का बध करता है जिससे वह घोर ससार मे भ्रमण करता है ॥८४३॥

आगे चरित्रमोह कर्म के बध के कारण दिखाते हैं ।

तिव्वकसाओ बहुमोहपरिणदो रागदोससंतत्तो
बंधदि चरित्तमोहं दुविहंपि चरित्तगुणघादी ॥८४४॥

बहु कषाय बहु मोह युत, राग द्वेश में ढात ।
बांधे चारित मोह को, द्विविधि चरण गुण धात ॥८४४

अर्थ—जो तीव्रकषाय, नोकषाय, मोह, राग और द्वेष मे लीन है वह कपाय और नोकषायरूप चारित्रमोहकर्म का बध करता है ॥८४४॥

आगे नरकायु के बध के कारण दिखाते है।

मिच्छो हु महारंभो णिस्सीलो तिव्वलोहसंजुत्तो।
णिरयाउगं णिबंधइ पावमई रुद्दपरिणामी ॥८४५॥

बहु आरंभी लोभ बहु, भ्रम युत शील विहीन।
नरक आयु को बांधता, रौद्र भाव अघ लीन ॥८४५

अर्थ—जो मिथ्यादृष्टि है, बहु आरभी है, शील रहित है, अधिक लोभी है रौद्रपरिणामी है, पाप करने वाला है वह नरकायु का बध करता है ॥८४५॥

आगे तिर्यचायु के बध के कारण दिखाते है।

उम्मग्गदेसगो मग्गणासगो गूढहियय माइल्लो।
सठसीलो य ससल्लो तिरियाउं बंधदे जीवो ॥८४६॥

उनमारग वच मार्ग हर, गूढ हृदय छल धार।
शठ स्वभाव अरु शल्य युत, बांधे पशु वय भार ॥८४६

अर्थ—जो विपरीतमार्ग का उपदेश देने वाला है, सन्मार्ग का नाशक है, गूढ हृदयवाला है, मायाचारी है, मूर्ख है, माया, मिथ्या और निदान शल्य का धारक है वह तिर्यचायु का बध करता है। ८४६॥

आगे मनुष्यायु के बध के कारण दिखाते है।

पयडीए तणुकसाओ दाणरदी सोलसंजमविहीणो।
मज्झिमगुणेहिं जुत्तो मणुवाऊं बंधदे जीवो ॥८४७॥

मंद कषाय रु दान युत, तप संयम से हीन।
जो मध्यम गुण धार है, बांधे नर वय चीन ॥८४७

अर्थ—जो मदकषाय वाला है दान देने वाला है मध्यम गुणो का धारण करने वाला है किन्तु तप सयम से रहित है वह मनुष्यायु का बध करता है ।।८४७।।

आगे देवायु के बध के कारण दिखाते हैं ।

अणुवदमहव्वदेहिं य वालतवाकामणिज्जाराए य ।
देवाउगं णिबंधइ सम्माइट्ठी य जो जीवो ।।८४८।।

व्यर्थ निर्जरा वाल तप, मुनि श्रावक व्रत लीन ।
अथवा सम्यक् दृष्टि जिय, बांधे सुर वय चीन ।।८४८।।

अर्थ—जो अकाम निर्जरा वाला है, बालतप वाला है सम्यक्-दृष्टिश्रावक है देशव्रतीश्रावक है अथवा मुनि है वह देवायु का बध करता है ।।८४८।।

आगे नामकर्म के बध के कारण दिखाते है ।

मणवयणकायवक्को माइल्लो गारवेहिं पडिबद्धो ।
असुहं बंधदि णामं तप्पडिवक्खेहिं सुहणामं ।।८४९।।

मन वच तन से कुटिल अरु, कपटी बहु धन धाम ।
अशुभनाम को बांधता, इन उलटा शुभ नाम ।।८४९

अर्थ—जो मन, वचन और काय से कुटिल है कपटी है और बहुत धन-धाम सचय करता है वह अशुभ नाम कर्म का बध करता है इससे विपरीत शुभनामकर्म का बध करता है ।।८४९।।

आगे गोत्रकर्म के बध के कारण दिखाते है ।

अरहत्तादिसु भत्तो सुत्तरुची पढणुमाणगुणपेही ।
बंधदि उच्चागोदं विवरीओ बंधदे इदरं ।।८५०।।

भक्ति देव गुरु शास्त्र रुचि, पठन मनन गुण प्रीति ।
ऊंच गोत्र को बांधता, बांधे पर विपरीत ॥८५०

अर्थ—जो देव, शास्त्र और गुरुओ की भक्ति करता है श्रुत-पठन करता है श्रुत का मनन करता है सम्यक्‌दर्शनादिगुणो से प्रीति करता है वह ऊचगोत्रकर्म का वध करता है इससे विपरीत नीच-गोत्रकर्म का बध करता है ॥८५०॥

आगे अतराय कर्म के बध के कारण दिखाते है ।

पाणवधादीसु रदो जिणपूजामोक्खमग्गविग्घयरो ।
अज्जेइ अंतरायं ण लहइ जं इच्छियं जेण ॥८५१॥

स्वपर प्राण हिंसादि रत, जिन पूजा मग ढाय ।
अंतराय को बांधकर, इच्छित वस्तु न पाय ॥८५१॥

अर्थ—स्वपर प्राणो की हिंसादि मे लीन है जिन पूजा और मोक्षमार्ग को रोकता है वह अतराय कर्म का बध करता है फल-स्वरूप इच्छितवस्तु को नही पाता ॥८५१॥

आस्रव-अधिकार समाप्त



आगे मगलाचरण करते है ।

गोम्मटजिणिंदचंदं पणमिय गोम्मटपयत्थसंजुत्तं ।
गोम्मटसंगहविसयं भावगयं चूलियं वोच्छं ॥८५२॥

नेमीस्वर को वन्दि के, गोमट सार मँझार ।
भाव कथन अब मैं करूँ, सुनो भव्य उरधार ॥८५२॥

अर्थ—श्रीनेमीश्वर भगवान को नमस्कार करके इस गोमटसार कर्मकाड ग्रन्थ मे अब भावकथन कहता हूँ ॥८५२॥

आगे भावो का स्वरूप दिखाते है।

जेहिं दु लक्खिज्जते उवसमआदीसु जणिदभावेहिं ।
जीवा ते गुणसण्णा णिद्दिट्ठा सव्वदरसीहिं ॥८५३॥

निज प्रति पक्षी कर्म के, उपशमादि जो भाव ।
जीव जांहि जिनसे लखे, भाव नाम वे पाव ॥८५३॥

अर्थ—जो अपने विरोधी कर्मो के उपशमादि से उत्पन्न होते है और जिनसे जीव पहिचाने जाते है उनको भाव कहते है ॥८५३॥

आगे उन भावो के नाम और भेद दिखाते है।

उवसम खइओ मिस्सो ओदयियो पारिणामियो भावो ।
भेदा दुग णव तत्तो दुगुणिगिवीसं तियं कमसो ॥८५४॥

उपशम क्षायिक मिश्र अरु, औदायिक निजभाव ।
क्रम से दो नव अठारह, इक्किस त्रय भेदाव ॥८५४॥

अर्थ—उपशम, क्षायिक, मिश्र, औदायिक और पारिणामिक ये पॉच भाव है इनमे क्रमसे २, ९, १८, २१, ३ भेद हैं ॥८५४॥

मूलभाव के भेददर्शक यंत्र

मू	उ	क्षा	मि	औ	पा
उ	२	९	१८	२१	३

आगे इन भावो के उत्पति के कारण दिखाते है।

कम्मुवसमम्मि उवसमभावो खीणम्मि खइयभावो दु ।
उदयो जीवस्स गुणो खओवसमिओ हवे भावो ।।८५५।।
कम्मुदयजकम्मिगुणो ओदयियो तत्थ होदि भावो दु ।
कारणणिरवेक्खभवो सभावियो होदि परिणामो ।।८५६।।

कर्मशांति से उपशमा, क्षय से क्षायिक भाव ।
उदय विषें जिय गुण रहें, क्षय उपशम कहलाव ।।८५५
कर्म जनित जहँ जीव गुण, तहँ औदायिक नाम ।
सव पर कारण रहित जो, स्वाभाविक परिणाम ।।८५६।।

अर्थ—जो अपने विरोधी कर्म के उपशम से उत्पन्न होता है उसको उपशम भाव कहते है जो अपने विरोधी कर्मो के समूल क्षय से उत्पन्न होता है उसको क्षायिक भाव कहते है जो अपने कुछ विरोधी कर्मो के रहने पर भी जीव के गुणो को प्रकट करता है उसको क्षयोपशमिक (मिश्र) भाव कहते है जो कर्मो के उदय से उत्पन्न होता है उसको औदायिक भाव कहते है जो कर्मो की उपशमादि की अपेक्षा नही रखता उसको पारिणामिक भाव कहते है ।।८५५-८५६।।

आगे उपरोक्त भावो के उत्तर भावो को स्पप्ट दिखाते है ।

उपसमभावो उवसमसम्मं चरणं य तारिसं खइओ ।
खाइय णाणं दंसण सम्म चरित्तं य दाणादी ।।८५७।।
खाओवसमियभावो चउणाण तिदंसण तिअण्णाणं ।
दाणादिपंच वेदगसरागचारित्तदेसजमं ।।८५८।।

ओदयिया पुण भावा गदिलिंगकसाय तह य मिच्छत्तं ।
लेस्सासिद्धासजमअण्णाणं होंति इगिवीसं ॥८५९॥
जीवत्तं भव्वत्तमभव्वत्तादी हवंति परिणामा ।
इदि मूलुत्तरभावा भंगवियप्पे बहू जाणे ॥८६०॥

उपशम समकित अरु चरण, उपशम भेद कहाव ।
क्षायिक दृग रुचि ज्ञान वृति, दानादिक क्षय भाव ॥८५७
ज्ञान चार अज्ञान त्रय, लब्धि पांच दृग तीन ।
संयम समकित देश व्रत, मिश्र अठारह चीन ॥८५८॥
लेश्या वेद कषाय गति, भ्रम अव्रत अज्ञान ।
सिद्धरहित युत वीस इक, औदायिक के जान ॥८५९॥
जीव रु भव्य अभव्य त्रय, परिणामिक के सान ।
मूलोत्तर यों भेद हैं, इनमें भेद महान ॥८६०॥

अर्थ—उपशमभाव दो प्रकार का होता है उपशमसम्यकत्व और उपशमचारित्र ।

क्षायिकभाव ९ प्रकार का होता है ज्ञान, दर्शन, सम्यक्त्व, चारित्र, दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य । मिश्रभाव १८ प्रकार का होता है सुमतिज्ञान, सुश्रुतज्ञान, सुअवधिज्ञान, मनपर्यय-ज्ञान, कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, कुअवधिज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, वेदकसम्यक्त्व, देशचारित्र, सरागचारित्र, दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य ।

औदायिकभाव २१ प्रकार का होता है गति ४ वेद ३ कषाय ४ मिथ्यात्व १ लेश्या ६ असयम १ अज्ञान १ और असिद्धित्व १ ।

पारिणामिकभाव ३ प्रकार का होता है जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व इसतरह मूल ५ भावो के ये ५३ उत्तरभाव है यदि इनके भेद किये जावे तो अनेक हो सकते है ।।८५७-८६०।।

उपरोक्त ५३ भावो मे से मिथ्यात्वगुणस्थान मे औदायिक के २१ अज्ञान ३ दर्शन २ लब्धि ५ पारिणामिक के ३ इसतरह ३४ भाव होते है सासादनगुणस्थान में मिथ्यात्व और अभव्यत्व कम होने से शेष ३२ भाव होते है मिश्रगुणस्थान मे औदायिक के २० मिश्ररूपज्ञान ३ दर्शन ३ लब्धि ५ पारिणामिक के २ इसतरह ३३ भाव होते है अविरतगुणस्थान में औदायिक के २० ज्ञान ३ दर्शन ३ लब्धि ५ सम्यक्त्व ३ पारिणामिक के २ इसतरह ३६ भाव होते हैं देशविरतगुणस्थान मे गति २ कषाय ४ लिग ३ लेश्या ३ असिद्धत्व १ अज्ञान १ ज्ञान ३ दर्शन ३ लब्धि ५ सम्यक्त्व ३ देशचारित्र १ पारिणामिक २ इसतरह ३१ भाव होते है प्रमत्त और अप्रमत्तगुणस्थान में तिर्यंचगति और देशचारित्र कम करके मनःपर्यय और सरागचारित्र मिलाने से ३१-३१ भाव होते है अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरणगुणस्थान में लेश्या २ वेदकसम्यक्त्व और सरागचारित्र कम करके उपशम और क्षायिकचारित्र मिलाने से २६-२६ भाव होते है सूक्ष्मसापरायगुणस्थान मे कषाय ३ लिग ३ कम करने से २३ भाव होते है उपशातमोहगुणस्थान मे लोभ और क्षायिकचारित्र कम करने से २१ भाव होते है क्षीणमोहगुणस्थान मे उपशमभाव के २ भेद कम करके क्षायिकचारित्र वढाने से २० भाव होते है सयोगगुणस्थान में मनुष्यगति १ शुक्ललेश्या १ असिद्धत्व १ क्षायिकभाव के ९ पारिणामिक २ इसतरह १४ भाव होते है अयोगगुणस्थान मे लेश्या कम करने से १३ भाव होते है और सिद्धभगवान के ज्ञान १ दर्शन १ सम्यक्त्व १ वीर्य १ जीवत्व १ इसतरह ५ भाव होते है ।

आगे मूल और उत्तरभावो के भग निकालने की विधि दिखाते है ।

ओघादेसे संभवभावं मूलुत्तारं ठवेदूण ।
पत्तेये अविरुद्धे परसगजोगेवि भंगा हु ।।८६१।।

संभवते गुण मार्ग में, मूलोत्तर रख भाव ।
विन विरोध प्रत्येक में, निज पर भंग कराव ।।८६१।।

अर्थ—गुणस्थान और मार्गणाओ मे होनेवाले मूलभाव अथवा उत्तरभावो को रखकर आस्रवो की तरह प्रत्येक के अविरोधी पर सयोगी और अविरोधी स्वसयोगी भग निकालना चाहिये ।।८६१।।

स्वसयोगी भग—जहाँ अपने ही एक उत्तरभाव के साथ अपने ही द्वितीय उत्तरभाव के साथ सयोग दिखाया जावे उसको स्व-सयोगीभग कहते है जैसे—एक उपशमभाव के भेद के साथ द्वितीय उपशमभाव के भेद के साथ सयोग दिखाना।

परसयोगी भग—जहाँ अन्य के उत्तरभेद के साथ अन्य के उत्तरभेद का सयोग दिखाया जावे उसको परसयोगी भग कहते हैं जैसे—उपशमभाव के भेद के साथ औदायिकभाव के भेद का सयोग दिखाना ।

आगे मूलभाव जनित गुणस्थानो मे भग दिखाते है ।

मिच्छतिये तिचउक्के दोसुवि सिद्धेवि मूलभावा हु ।
तिग पण पणगं चउरो तिग दोण्णि य सभवा होंति ।।८६२।।
तत्थेव मूलभंगा दसछव्वीसं कमेण पणतीसं ।
उगुवीसं दस पणगं ठाणं पडि उत्तरं वोच्छं ।।८६३।।

मूल भाव भ्रम आदि त्रय, त्रय चौका दो सिद्ध ।
त्रय पन पन चउ तीन दो, संभव क्रमज प्रसिद्ध ।।८६२

मूल भंग इनमें कहे, क्रम से दश छब्बीस।
पेंतिस उन्निस दश रु पन, उत्तर परें कहीस ।।८६३

अर्थ—मिथ्यात्व, सासादन और मिश्रगुणस्थान मे ३-३ भाव होते है औदायिक, मिश्र और पारिणामिक और इनके १०-१० भग होते है अविरत से लेकर अप्रमत्तगुणस्थान तक ५-५ मूलभाव होते है उनके २६-२६ भग होते है उपशमश्रेणी के ४ गुणस्थानो में ५-५ भाव होते है उनके ३५-३५ भग होते है क्षायिकश्रेणी के ४ गुणस्थानो मे उपशमभाव विना ४-४ भाव होते है उनके १९-१९ भग होते है सयोग और अयोगगुणस्थान मे तीन-तीन भाव होते है औदायिक, क्षायिक और पारिणामिक इनके १०-१० भग होते है तथा सिद्धभगवान के २ भाव होते है क्षायिक और पारिणामिक इनके ५ भग होते है इसप्रकार मूलभाव और उनके भग होते है आगे उत्तरभाव और उनके भग कहूँगा ।।८६२-८६३।।

१० भग—औदायिक–औदायिक १ मिश्र–मिश्र २ पारिणा-मिक–पारिणामिक ३ औदारिक १ मिश्र २ पारिणामिक ३ ये ६ भग स्वसयोग के है औदारिक–मिश्र १ औदारिक–पारिणामिक २ मिश्रपारिणामिक ३ औदारिक–मिश्र–पारिणामिक १ ये ४ भंग परसयोग से होते है। इसतरह सव १० भग मिथ्यात्व, सासादन और मिश्रगुणस्थान के है।

२६ भग—औदायिक–औदायिक १ मिश्र–निश्र २ पारिणा-मिक–पारिणामिक ३ उपशम १ क्षायिक २ मिश्र ३ औदायिक ४ पारिणामिक ५ ये ८ भग स्वसयोग के है। उपशम–मिश्र १ उप-शम–औदायिक २ उपशम–पारिणामिक ३ क्षायिक–मिश्र ४ क्षायिक–औदायिक ५ क्षायिक–पारिणामिक ६ मिश्र–औदायिक ७ मिश्र–पारिणामिक ८ औदायिक–पारिणामिक ९ उपशम–मिश्र–औदायिक १ उपशम–मिश्र–पारिणामिक २ उपशन–औदायिक–

पारिणामिक ३ क्षायिक-मिश्र—औदायिक ४ क्षायिक—मिश्र—पारिणामिक ५ क्षायिक—औदायिक—पारिणामिक ६ मिश्र—औदायिक—पारिणामिक ७ उपशम—मिश्र—औदायिक—पारिणामिक १ क्षायिक-मिश्र—औदायिक—पारिणामिक २ ये १८ भग परसयोग के है। इसतरह २६ स्वपरसयोग के भग अविरत से लेकर अप्रमत्तगुणस्थान तक मे होते है।

३५ भग—उपशम—उपशम १ औदायिक—औदायिक २ मिश्र—मिश्र ३ पारिणामिक—पारिणामिक ४ उपशम १ क्षायिक २ मिश्र ३ औदायिक ४ पारिणामिक ५ ये ९ भग स्वसयोग के है उपशम—क्षायिक १ उपशम—मिश्र २ उपशम—औदायिक ३ उपशम—पारिणामिक ४ क्षायिक—मिश्र ५ क्षायिक—औदायिक ६ क्षायिक—पारिणामिक ७ मिश्र—औदायिक ८ मिश्र—पारिणामिक ९ औदायिक—पारिणामिक १० उपशम—क्षायिक-मिश्र १ उपशम—क्षायिक—औदायिक २ उपशम—क्षायिक—पारिणामिक ३ उपशम—मिश्र—औदायिक ४ उपशम—मिश्र—पारिणामिक ५ उपशम—औदायिक—पारिणामिक ६ क्षायिक—मिश्र—औदायिक ७ क्षायिक—मिश्र—पारिणामिक ८ क्षायिक—औदायिक—पारिणामिक ९ मिश्र—औदायिक—पारिणामिक १० उपशम—क्षायिक—मिश्र—औदायिक १ उपशम—मिश्र—क्षायिक—पारिणामिक २ उपशम—क्षायिक—औदायिक—पारिणामिक ३ उपशम—मिश्र—औदायिक—पारिणामिक ४ क्षायिक—मिश्र—औदायिक—पारिणामिक ५ उपशम—क्षायिक—मिश्र-औदायिक-पारिणामिक १ ये २६ भग पर सयोग के है इसतरह स्वपर सयोग के ३५ भग उपशमश्रेणी के ४ गुणस्थानो मे होते है।

१९ भग—क्षायिक-क्षायिक १ मिश्र-मिश्र २ औदायिक-औदायिक ३ पारिणामिक-पारिणामिक ४ क्षायिक १ मिश्र २ औदायिक ३ पारिणामिक ४ ये ८ भग स्वसयोग के है क्षायिक-मिश्र १ क्षायिक-औदायिक २ क्षायिक-पारिणामिक ३ मिश्र-औदायिक ४ मिश्र-पारिणामिक ५ औदायिक-पारिणामिक ६ क्षायिक-मिश्र-

औदायिक १ क्षायिक-मिश्र-पारिणामिक २ क्षायिक-औदायिक-पारिणामिक ३ औदायिक-मिश्र-पारिणामिक ४ क्षायिक-मिश्र-औदायिक-पारिणामिक १ ये ११ परसयोग के है इसतरह स्वपरसयोग के १९ भग क्षपकश्रेणी के ४ गुणस्थानों मे होते है।

१० भग—औदायिक-औदायिक १ क्षायिक-क्षायिक २ पारिणामिक-पारिणामिक ३ औदायिक १ क्षायिक २ पारिणामिक ३ ये ६ भग स्वसयोग के है औदायिक-क्षायिक १ औदायिक-पारिणामिक २ क्षायिक-पारिणामिक ३ औदायिक-क्षायिक-पारिणामिक १ ये ४ भग परसयोग के है इसतरह स्वपरसयोग के १० भग सयोग और अयोग गुणस्थान में होते है।

क्षायिक-क्षायिक १ क्षायिक-पारिणामिक २ क्षायिक १ पारिणामिक २ क्षायिक-पारिणामिक १ इसतरह स्वपर के ५ भग सिद्ध-भगवान के होते है।

मूलभावों का भंगदर्पण

स	मि ३	अवि ४	उ श्रे	क्षा श्रे	स अ	सिद्ध
भा	३-३	५-५	५-५	४-४	३-३	२
भ	१०-१०	२६-२६	३५-३५	१९-१९	१०-१०	५

आगे उत्तरभावो के भगो में भेद दिखाते है।

उत्तरभंगा दुविहा ठाणगया पदगयात्ति पढमम्मि।
सगजोगेण य भंगाणयणं णत्थित्ति णिद्दिट्ठं ॥८६४॥

दो विधि उत्तर भंग हैं, थलगत पदगत मान।
थल में निज संयोग के, भंग न निकलें जान ॥८६४॥

अर्थ—उत्तरभावो के भग दो प्रकार के होते है स्थानगत और पदगत जिसमे स्थानगत भगो में स्वसयोगीभग नही होते कारण एक समय के एक स्थान मे द्वितीय कोई स्थान नही होता ॥८६४॥

स्थानगत भग—एक जीव के एक समय मे जितने भाव होते है उनके समूह का नाम स्थान है उसकी अपेक्षा से जो भग किये जाते है वे स्थानगत भग कहलाते है।

पदगत भग—एक जीव के एक समय मे जो भाव पाये जाते है उनकी एक जाति अथवा भिन्न २ का नाम पद है उसकी अपेक्षा मे जो भग किये जाते है वे पदगत भग कहलाते है।

आगे गुणस्थानो मे मिश्र और औदायिकभाव के स्थान दिखाते है

मिच्छदुगे मिस्सतिये पमत्तसत्ते य मिस्सठाणाणि ।
तिग दुग चउरो एक्कं ठाणं सव्वत्थ ओदयियं ॥८६५॥
तत्थावरणजभावा पणछस्सत्तेव दाणपंचेव ।
अयदच्चउक्के वेदगसम्मं देसम्मि देसजयं ॥८६६॥
रागजमं तु पमत्ते इदरे मिच्छादिजेट्ठठाणाणि ।
वेभगेण विहीणं चक्खुविहीणं य मिच्छदुगे ॥८६७॥
अवधिदुगेण विहीणं मिस्सतिए होदि अण्णठाणं तु ।
मणणाणेणवधिदुगेणुभयेणूणं तदो अण्णे ॥८६८॥

मिथ्या दुक अरु मिश्र त्रय, प्रमत सात मिस थान।
तय दो अरु चउ थान हैं, औदा इक-इक जान ॥८६५॥
इन आवरणज भाव पन, छै सत लब्धी पांच ।
वेदक अविरत चार में, देश देश में पांच ॥८६६॥
प्रमत अपर में राग व्रत, मिथ्यादिक में थान ।
कुवधि रहित चक्षू रहित, मिथ्या दुक में जान ॥८६७

अवधि दोय विन मिश्र त्रय, अन्य थान भी मान।
मनपर्यय अरु अवधि दुक, रहित अन्य स्थान ।।८६८

अर्थ—एक जीव के एक समय मे अज्ञान ३ दर्शन २ और लब्धि ५ इसतरह १० मिश्र भावों का १ स्थान कुअवधिज्ञान बिना ९ मिश्रभावो का १ स्थान और चक्षुदर्शन बिना ८ भावो का १ स्थान इसतरह मिश्रभाव के ३-३ स्थान मिथ्यात्व और सासादन-गुणस्थान मे होते है। ज्ञान ३ दर्शन ३ लब्धि ५ इसतरह ११ भावों का १ स्थान तथा अवधि ज्ञान और अवधि दर्शन विना ९ भावो का १ स्थान इस तरह मिश्रभाव के २ स्थान मिश्रगुणस्थान मे होते है उपरोक्त ११ वेदकसम्यक्त्व १ इसतरह १२ भावो का १ स्थान तथा अवधि ज्ञान और अवधि दर्शन विना १० भावो का १ स्थान इसतरह मिश्रभाव के २ स्थान अविरतगुणस्थान मे होते है उपरोक्त १२ देशसयम १ इसतरह १३ भावो का १ स्थान तथा अवधिज्ञान और अवधि दर्शन विना ११ भावो का १ स्थान इस तरह मिश्रभाव के २ स्थान देशविरतगुणस्थान मे होते है ज्ञान ४ दर्शन ३ लब्धि ५ वेदकसम्यक्त्व १ सरागसयम १ इस तरह १४ भावो का १ स्थान, मनपर्याय विन १३ भावो का १ स्थान अवधि-ज्ञान और अवधिदर्शन विना १२ भावो का १ स्थान तथा तीनों विना ११ भावो का १ स्थान होता है इसतरह मिश्रभाव के ४-४ स्थान प्रमत्त और अप्रमत्तगुणस्थान मे होते है। ज्ञान ४ दर्शन ३ लब्धि ५ इसतरह १२ भावो का १ स्थान मनपर्ययविना ११ भावो का १ स्थान, अवधि २ विना १० भावो का १ स्थान तथा तीनो विना ९ भावो का १ स्थान इस तरह मिश्रभाव के ४-४ स्थान अपूर्वकरण से लेकर क्षीणमोहगुणस्थान तक होते है।

एक जीव के एक समय मे गति १ कषाय १ वेद १ लेश्या १ मिथ्यात्व १ अज्ञान १ असयम १ असिद्धत्व १ इसतरह ८ औदायिक भावो का १ स्थान मिथ्यात्वगुणस्थान मे होता है मिथ्यात्व विना

७ औदारिक भावो का १-१ स्थान सासादन, मिश्र और अविरत-गुणस्थान मे होता है असयमभाव बिना ६ औदायिकभावो का १-१ स्थान देशविरत से लेकर अनिवृत्तिकरण के सवेद भाग तक होता है वेदबिना ५ औदायिकभावो का १-१ स्थान अनिवृत्तिकरण के अवेद भाव से लेकर सूक्ष्मसापरायगुणस्थान तक होता है कषाय बिना ४ औदायिक भावो का १-१ स्थान उपशात और क्षीणमोह-गुणस्थान मे होता है अज्ञानबिना ३ औदायिकभावो का १ स्थान सयोगगुणस्थान मे होता है और लेश्या बिना २ औदायिक भावो का १ स्थान अयोगगुणस्थान मे होता है ॥८६५-८६८॥

मिश्रभाव के स्थान दर्पण

गु	मि सा	मि	अ	दे	प्र अ	अपू० से क्षीण तक
भा	१०-९-८	११-९	१२-१०	१३-११	१४-१३-१२-११	१२-११-१०-९

औदायिक भाव का स्थान दर्पण

गु०	मि	सा ३	दे ५	अनि. सू	उ क्षी	स	अ
भा०	८	७	६	५	४	३	२

आगे औदायिक के स्थानो मे भाव बदलने से भग दिखाते है।

लिंगकसाया लेस्सा संगुणिदा चदुगदीसु अविरुद्धा।
बारस बावत्तरियं तत्तियमेत्तं य अडदालं ॥८६९॥

णवरि विसेसं जाणे सुर मिस्से अविरदे य सुहलेस्सा।
चदुवीस तत्थ भंगा असहायपरक्कमुद्दिट्ठा ॥८७०॥

चक्खूण मिच्छसासणसम्मा तेरिच्छगा हवंति सदा।
चारिकसायतिलेस्साणब्भासे तत्थ भंगा हु ॥८७१॥

खाइयअविरदसम्मे चउ सोल बिहत्तरी य बारं य।
तट्ठे सो मणुसेव य छत्तीसा तब्भवा भंगा ॥८७२॥

लेश्या लिंग कषाय गुणि, चहुँगति में अविरोध।
बारह बहतर बहत्तर, अडतालिस क्रम बोध ।।८६९
देवमिश्र अविरत विषें, शुभ लेश्या हैं तीन ।
इससे चौबिस भंग हैं, यह विशेषता चीन ।।८७०।।
दृग बिन मिथ्या सास में, सदा पशू ही चीन ।
चउ कषाय त्रयलेश्य को, गुणें भंग पहिचान ।।८७१
क्षायिक अविरत में चऊ, सोलह बहतर चार ।
क्षायिक नर ही देश में, छत्तिस भंग सँभार ।।८७२

अर्थ—मिथ्यात्व और सासादनगुणस्थान की नरकगति मे वेद १ कपाय ४ लेश्या ३ का परस्पर गुणे औदायिक भाव के १२ भग होते है तिर्यंच और मनुष्यगति मे वेद ३ कषाय ४ लेश्या ६ को परस्पर गुणे ७२-७२ भग होते है तथा देवगति मे वेद २ कपाय ४ लेश्या ६ को परस्पर गुणे ४८ भग होते है इस तरह २०४-२०४ भग होते है किन्तु देवगति मे मिश्र और अविरतगुणस्थान मे ३ शुभलेश्या होती है इस कारण २४ भग होने से १८०-१८० भग होते है इनके अतिरिक्त मिथ्यात्व और सासादनगुणस्थान मे जो चक्षुदर्शन रहित तिर्यंच होते है उनके वेद १ कपाय ४ लेश्या ३ को परस्पर गुणे १२-१२ भग जुदे होते है तथा अविरतगुणस्थान मे क्षायिक सम्यक्दर्शन की अपेक्षा नरकगति मे वेद १ कपाय ४ कपोतलेश्या १ को परस्पर गुणे ४ भग जुदे होते है तिर्यंचगति मे पुरुपवेद १ कपाय ४ कपोतादि लेश्या ४ को परस्पर गुणे १६ भग जुदे होते है मनुष्यगति मे वेद ३ कषाय ४ लेश्या ६ को परस्पर गुणे ७२ भग जुदे होते है तथा देवगति में पुरुप वेद १ कषाय ४

लेश्या ३ को परस्पर गुणे १२ भग जुदे होते है इस तरह सब १०४ भग जुदे होते है देशविरतगुणस्थान मे मनुष्य और तिर्यच के लिंग ३ कपाय ४ लेश्या ३ को परस्पर गुणे ३६-३६ भग होते है और क्षायिक सम्यक्त्व वाला यहाँ मनुष्य ही होता है उसके वेद ३ कषाय ४ लेश्या ३ को परस्पर गुणे ३६ भग जुदे होते है इसीतरह प्रमत्त और प्रमत्तगुणस्थान मे ३६-३६ भग होते हैं अपूर्वकरण और सवेद भाग अनिवृत्तिकरणगुणस्थान मे लिग ३ कपाय ४ लेश्या १ को परस्पर गुणे १२-१२ भग होते है अवेद भाग अनिवृत्तिकरण गुणस्थान मे कपाय ४ लेश्या १ के ४, कषाय ३ लेश्या १ के ३, कषाय २ लेश्या १ के २ और कषाय १ लेश्या १ का १ इसतरह १० भग होते है सूक्ष्मसापरायगुणस्थान मे कपाय १ लेश्या १ का १ भग होता है उपशात से लेकर सयोगगुणस्थान तक लेश्या का १-१ भग होता है और अयोगगुणस्थान मे मनुष्यगति का १ भग होता है ॥८६९-८७२॥

आगे पारिणामिक भाव के स्थानादि दिखाते है ।

परिणामो दुट्ठाणो मिच्छे सेसेसु एक्कठाणो दु ।
सम्मे अण्णं सम्मं चारित्ते णत्थि चारित्तं ॥८७३॥

भ्रम में दो निज भाव थल, शेषों में इक थान ।
समकित पर समकित विना, चरण चरण पर हान ८७३

अर्थ—पारिणामिक भाव के मिथ्यात्वगुणस्थान में दो स्थान है जीवत्वभव्यत्व और जीवत्वअभव्यत्व और शेष गुणस्थानो मे १ स्थान है जीवत्वभव्यत्व इन गुणस्थानो मे एकादिसयोगी भेद निकालने के लिये मुख्य वात यह है कि सम्यक्त्व सहित स्थान मे द्वितीय सम्यक्त्व स्थान नही होता इसतरह चारित्रसहित स्थान मे द्वितीय चारित्रस्थान नही होता अर्थात् एकस्थान मे एक ही सम्यक्त्व और एक ही चारित्र होता है ॥८७३॥

आगे एकादिसयोगी भगो को अपनी जगह मिलाना दिखाते है।

मिच्छदुगयदचउक्के अट्ठट्ठाणेण खयियठाणेण।
जुद परजोगजभंगा पुध आणिय मेलिदव्वा हु ॥८७४॥

मिथ्यादुक अविरत चऊ, अठ थल समकित थान।
परसंयोगी भंग युत, उपजे करो मिलान ॥८७४॥

अर्थ---मिथ्यात्व और सासादनगुणस्थान में मिश्रभाव के चक्षुदर्शन रहित ८ के स्थान में और अविरत से लेकर अप्रमत्तगुणस्थान तक क्षायिकसम्यकत्व के स्थान मे परसयोग से उत्पन्न भगो को अलग-अलग लेकर औदायिक के भगोसहित अपनी-अपनी राशि मे मिलाना चाहिये ॥८७४॥

आगे स्थानों मे गुणक और क्षेप निकलने की विधि दिखाते है।

उदयेणक्खे चढिदे गुणगारा एव होंति सव्वत्थ।
अवसेसभावठाणेणक्खे संचारिदे खेवा ॥८७५॥

औदायिक के भेद का, बदलन है गुण कार।
शेष भाव के थान का, बदलन क्षेप सँभार ॥८७५॥

अर्थ---मिश्र, औदायिक और पारिणामिक भाव के स्थान गुणस्थानो में दोहा न० ८६५-८६८ तक मे जो कह आये है उन स्थानो के बदलने से जो भग होते है उनमें औदायिक और औदायिक के साथ जो भग होते है वे गुणक और शेष भाव और भावो के साथ जो भग होते है वे क्षेप (जोडने योग्य) है ॥८७५॥

मि	औ	पा
१०	८	भ
९	०	अ.

दश मिश्रभाव का १ नव मिश्रभाव का १ आठ औदायिकभाव का १ पारिणामिकभाव मे भव्यभाव का १ अभव्यभाव का १

इमतरह इन पॉच स्थान के ५ प्रत्येक भग होते है इनमे आठ औदायिकभाव का १ गुणक और शेप भावो के ४ क्षेप है दश मिश्र-आठ औदायिक का १ नवमिश्र-आठ औदायिक का १ आठ औदायिक-भव्य का १ आठ औदायिक-अभव्य का १ दशमिश्र-भव्य का १ दशमिश्रअभव्य का १ नवमिश्र-भव्य का १ नवमिश्र-अभव्य का १ इसतरह इन ८ द्विसयोगी भगो मे जो औदारिक के साथ हुये है वे ४ गुणक है शेप ४ क्षेप है दशमिश्र-आठ औदायिक-भव्य का १ दशमिश्र-आठ औदायिक-अभव्य का १ नवमिश्र-आठ औदायिक-भव्य का १ नवमिश्र-आठ औदायिक-अभव्य का १ इसतरह ये ४ तृसयोगी भग गुणक है सब ६ गुणक और ८ क्षेप चक्षुदर्शन सहित के मिथ्यात्वगुण-स्थान मे होते हैं।

मि	औ	पा
८	८	भ
		अ

आठ मिश्र का १ आठ औदायिक का १ भव्य का १ अभव्य का १ इसतरह इन ४ स्थान के ४ प्रत्येक भग होते हैं इनमे आठ मिश्र का भग क्षेप है शेप ३ उपरोक्त समान होने के कारण पुनुरुक्त है आठ मिश्र-आठ औदायिक का १ भग गुणक है शेप ४ द्विसयोगी भगो मे २ क्षेप है २ पुनुरुक्त है इनके तृसयोगी भग २ होते हैं वे गुणक है इसतरह ३ गुणक ३ क्षेप और ५ पुनुरुक्त चक्षुदर्शनरहित के मिथ्यात्वगुणस्थान मे होते है।

मि	औ	पा
१०	७	भ
९	०	०

दश मिश्रभाव का १ नव मिश्रभाव का १ सात औदायिकभाव का १ भव्यभाव का १ इसतरह ये ४ प्रत्येक भग होते है इनके उपरोक्त रीति से ५ द्विसयोगी २ तृसयोगी सब ११ भग होते हैं इनमे ६ गुणक और ५ क्षेप चक्षुदर्शन सहित के सासादनगुणस्थान मे होते हैं।

मि.	औ	पा
८	७	भ.

आठ मिश्र भाव का १ आठ औदायिकभाव का १ भव्यभाव का १ इसतरह ये ३

प्रत्येक भग होते हैं इनके उपरोक्त रीति से ३ द्विसयोगी और १ तृसयोगी सब ७ भग होते है इनमे २ गुणक २ क्षेप ३ पुनुरुक्त चक्षुदर्शन रहित के सासादनगुणस्थान में होते है।

मि	औ	पा
११	७	भ
९	०	०

ग्यारह मिश्रभाव का १ नवमिश्रभाव का १ सात औदायिकभाव का १ भव्यभाव का १ इसतरह ये ४ प्रत्येक भग होते है इनके उपरोक्त रीति से ५ द्विसयोगी और २ तृसयोगी सब ११ भग होते है इनमे ६ गुणक और ५ क्षेप मिश्रगुणस्थान मे होते हैं।

उ	मि	औ	पा
१	१२	७	भ
०	१०	०	०

उपशमभाव का १ बारह मिश्रभाव का १ दश मिश्रभाव का १ सात औदायिकभाव का १ भव्यभाव का १ इसतरह ये ५ प्रत्येक भग होते है इनके उपरोक्त रीति से ९ द्विसयोगी ७ तृसयोगी और २ चौसयोगी सब २३ भग होते है इनमे १२ गुणक और ११ क्षेप उपशमसम्यक्त्व की अपेक्षा अविरतगुणस्थान में होते है।

क्षा	मि	औ.	पा
१	१२	७	भ
०	१०	०	०

क्षायिकभाव का १ बारह मिश्रभाव का १ दश मिश्रभाव का १ सात औदायिकभाव का १ भव्यभाव का १ इसतरह ५ प्रत्येक भग होते है इनके उपरोक्तरीति से ९ द्विसयोगी ७ तृसयोगी और २ चौसंयोगी सब २३ भग होते है इनमें ६ गुणक ६ क्षेप और ११ पुनुरुक्त क्षायिकसम्यक्त्व की अपेक्षा अविरतगुणस्थान में होते है।

उ	मि	औ	पा
१	१३	६	भ.
०	११	०	०

ये ५ प्रत्येक भग है इनके उपरोक्त रीति से ९ द्विसयोगी ७ तृसयोगी २ चौसयोगी सब २३ भग होते है इनमें १२ गुणक और ११ क्षेप उपशमसम्यक्त्व की अपेक्षा देशविरतगुणस्थान में होते है।

क्षा	मि	औ	पा
१	१३	६	भ
०	११	०	०

ये ५ प्रत्येक भग है इनके उपरोक्त रीति से ६ द्विसयोगी ७ तृसयोगी २ चौसयोगी सब २३ भग होते है इनमे ६ गुणक ६ क्षेप और ११ पुनुरुक्त क्षायिकसम्यक्त्व की अपेक्षा देशविरतगुणस्थान मे होते है।

उ	क्षा	मि	औ	पा
१	१	१४	६	भ.
०	०	१३	०	०
०	०	१२	०	०
०	०	११	०	०

ये ८ प्रत्येक भग है इनके उपरोक्त रीति से २१ द्विसयोगी २२ तृसयोगी और ८ चौंसयोगी सब ५६ भग होते है इनमे ३० गुणक और २६ क्षेप प्रमत्त और अप्रमत्तगुणस्थान मे होते है।

क्षा	मि	औ	पा
२	१२	६	भ
०	११	०	०
०	१०	०	०
०	६	०	०

ये सात प्रत्येक भग है इनके उपरोक्त रीति से १५ द्विसयोगी १३ तृसयोगी ४ चौसयोगी सब ३६ भग होते है इनमे २० गुणक और १६ क्षेप क्षपक अपूर्वकरणगुणस्थान मे होते हैं इसी तरह क्षपक-अनिवृत्तिकरणगुणस्थान के सवेदभाग मे २० गुणक और १६ क्षेप है।

क्षा	मि	औ	पा
२	१२	५	भ
०	११	०	०
०	१०	०	०
०	६	०	०

ये सात प्रत्येक भग है इनके उपरोक्त रीति से ३६ भग होते है इनमे २० गुणक और १६ क्षेप अनिवृत्तिकरण गुणस्थान के अवेद भाग मे होते है क्रोधरहित भाग मे मानरहित भाग मे और मायारहित भाग मे भी २०-२० गुणक और १६-१६ क्षेप होते है सूक्ष्मसापरायगुणस्थान मे भी २० गुणक और १६ क्षेप होते है और क्षीणमोहगुणस्थान मे भी २० गुणक और १६ क्षेप

होते है अन्तर केवल इतना है कि यहाँ चार औदायिकभाव का १ स्थान होता है।

उ	क्षा	मि	औ	पा
२	१	१२	६	भ
०	०	११	०	०
०	०	१०	०	०
०	०	९	०	०

ये ८ प्रत्येक भग है इनके उपरोक्त रीति से २२ द्विसयोगी २८ तृसयोगी १७ चौसयोगी ४ पाँच सयोगी सब ७९ भग होते है इनमे ४० गुणक और ३९ क्षेप उपशमश्रेणी के अपूर्वकरण-गुणस्थान से लेकर उपशातमोहगुणस्थान तक होते है अन्तर केवल इतना है कि उपशातमोहगुणस्थान मे चार औदायिका भाव का १ स्थान होता है।

क्षा	औ	पा
१	०	भ

ये ३ प्रत्येक भग है इनके उपरोक्त रीति मे ३ द्विसयोगी और १ तृसयोगी सब ७ भग होते है इनमे ४-४ गुणक और ३-३ क्षेप सयोग और अयोग गुणस्थान मे होते है।

क्षा	पा
१	जी

ये २ प्रत्येक भग है इनका १ द्विसयोगी भग होता है सब ३ भंग है वे सिद्ध के क्षेप रूप है।

आगे उपरोक्त विधि से गुण्य, गुणक और क्षेपो की सख्या दिखाते है।

दुसु दुसु देसे दोसुवि चउरुत्तर दुसदगसिदिसहिदसदं।
वावत्तरि छत्तीसा वारमपुव्वे गुणिज्जपमा ॥८७१॥
वारचउतिदुगमेक्कं थूले तो इगि हवे अजोगित्ति।
पुण वार वार सुण्णं चउसद छत्तीस देसोत्ति ॥८७२॥
वामे दुसु दुसु दुसु तिसु खीणे दोसुवि कमेण गुणगारा।
णव छब्बारस तीसं वीसं वीसं चउक्कं य ॥८७३॥

पुणरवि देसोत्ति गुणो तिदुणभछ्छक्कयं पुणो खेवा ।
पुव्वपदे अड पंचयमेगारमुगुतीसमुगुवीसं ॥८७४॥
उगुवीस तियं तत्तो तिदुणभछछक्कयं य देसोंत्ति ।
चउसुवसमगेसु गुणा तालं रुऊणया खेवा ॥८७५॥

गुण्य दोय दो देश में, दो में अपूर्व धार।
दोसौ चउ इकसौ असी, वहतर छत्तिस वार ॥८७१॥
अनि वारह चउ त्रय दु इक, अंत तलक इक एक।
वार वार सुन शतक चउ, छतिस देस तक टेक ॥८७२॥
भ्रम दो दो दो तीन में, क्षय दो में गुणकार ।
नव छै वारह तीसविस, वीस चार क्रम धार ॥८७३॥
फिर पन तक गुण तीन दो, नभ छै छै अरु च्पेप।
गत पद अठ पन ग्यारहा, उनतिस उन्निस लेप ॥८७४
उनतिस त्रय उन तीन दो, नभ छै छै अणु लेप ।
चउ उपशम में गुणाकर, चालिस इक कम च्पेप ॥८७५

अर्थ—मिथ्यात्व और सासादन मे चक्षुदर्शन सहित की अपेक्षा औदायिक भाव के भेदो से सयोग भये गुण्यरूप भग २०४, २०४ हे गुणक भग ६, ६ हैं क्षेप भग ८, ५ है चक्षुदर्शन रहित की अपेक्षा गुण्य भग १२, १२ हैं गुणक भग ३, २ है क्षेपभग ३, २ है मिश्रगुणस्थान मे गुण्य भग १८० है गुणक भग ६ है क्षेप भग ५ हैं अविरत और देशविरत गुणस्थान मे गुण्यभग १८०, ७२ है गुणकभग १२, १२ हैं क्षेपभग ११, ११ है क्षायिकसम्यक्त्व की

अपेक्षा गुण्यभग १०४, ३६ गुणकभग ६, ६ क्षेपभग ६, ६ है प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थान मे गुण्य भग ३६, ३६ है गुणक भग ३०, ३० है क्षेप भग २९, २९ है क्षपक अपूर्वकरण गुणस्थान मे गुण्यभग १२ गुणकभग २० है क्षेप भग १९ है क्षपक अनिवृत्तिकरणगुणस्थान के ५ भागो मे क्रमसे गुण्यभग १२, ४, ३, २, १ गुणक भग २०, २०, २०, २०, २० है क्षेपभग १९, १९, १९, १९, १९ है क्षपक सूक्ष्मसापराय, क्षीणमोह, सयोग और अयोग गुणस्थान मे क्रमसे गुण्यभग १, १, १, १ है गुणकभग २०, २०, ४, ४ है क्षेप भग १९, १९, ३, ३ है तथा उपशमश्रेणी के ४ गुणस्थानो में गुण्यभग १२–१२ है गुणक भग ४०–४० है क्षेपभग ३९-३९ है ॥८७१-८७५॥

गुण्य, गुणक और क्षेप दर्पण

	मि		मा		मि	अ.		दे	
गुण्य	२०४	१२	२०४	१२	१८०	१८०	१०४	७२	३६
गुणक	९	३	६	२	६	१२	६	१२	६
क्षेप	८	३	५	२	५	११	६	११	६

	प्र	अ	अ	क्ष अनि. ५ भाग
गुण्य	३६	३६	१२	१२,४ ३ २,१
गुणक	३०	३०	२०	२०,२०,२०,२०,२०
क्षेप	२९	२९	१९	१९,१९,१९,१९,१९

	सू	क्षी	उ ४	स	अ
गुण्य	१	१	१२-१२	१	१
गुणक	२०	२०	४०-४०	४	४
क्षेप	१९	१९	३९-३९	३	३

आगे उन गुण्यो को गुणको से गुणाकर और क्षेप मिला सख्या दिखाते है ।

मिच्छादिठाणभंगा अट्ठारसया हवंति तेसीदा ।
बारसया पणवण्णा सहस्ससहिया हु पणसीदा ॥८७६॥
रूवहियडवीससया सगणउदा दससया णवेणहिया ।
एक्कारसया दोण्हं खवगेसु जहाकमं वोच्छं ॥८७७॥
पुव्वंपंचणियट्टीसुहुमे खीणे दहाण छव्वीसा ।
तत्तियमेत्ता दसअडछच्चदुचदुचदुय एगूणं ॥८७८॥
उवसामगेसु दुगणं रूवहियं होदि सत्त जोगिम्हि ।
सत्तेव अजोगिम्मि य सिद्धे तिण्णेव भंगा हु ॥८७९॥

भंगथान मिथ्यात्व में, अट्ठारह सौ त्र्यासि ।
बारहसौ पचपन तथा, एक सहस्र पिच्चासि ॥८७६
अट्ठाइस सौ एक अरु, ग्यारह सौ त्रय हीन ।
ग्यारह सौ नव दोय में, कहूं क्षपक में चीन ॥८७७
अठ पांचो अनि सूक्ष्म क्षय, छव्विस छव्विस चीन ।
दश अठ छै चउ चार चउ, दश गुण में इक हीन ॥८७८
उपशम दुगुण इक अधिक, सात सयोगी जान ।
सात अयोगी सिद्ध के, तीन भंग पहिचान ॥८७९

अर्थ—उपरोक्त गुण्य संख्या को गुणाकार संख्या से गुणा करने पर और क्षेप मिलाने से मिथ्यात्व से लेकर अप्रमत्त गुणस्थान तक के स्थानों के भंग क्रम से १८८३, १२५५, १०८५, २८०१, १०९७, ११०९, ११०९ क्षपक अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण के पांचों भाग, सूक्ष्मसांपराय और क्षीणमोहगुणस्थान में भंग क्रम से २५९, २५९,

६६, ७६, ५६, ३६, ३६, ३६ है उपशयश्रेणी के ४ गुणस्थानों में भग ५१६-५१६ है सयोग और अयोगगुणस्थान मे ७-७ है तथा सिद्ध भगवान के ३ भग ही है इस प्रकार **स्थानगत भंग** कहे ॥८७७-८७६॥

उत्तर भावों का स्थान भंग दर्पण

मि०	सा०	मि०	अ०	दे०	प्र०	अ०	क्ष०अ०	क्ष०अनि० के ५ भाग				
१८८३	१२५५	१०८५	२८०१	१०९७	११०६	११०६	२५६	२५६	६६	७६	५६	३६

सू०	क्षी०	उ० श्रे० ४	स०	अ०	सि०
३६	३६	५१६—५१६	७	७	३

आगे उत्तर भावो के पद भगो मे भेद दिखाते है ।

दुविहा पुण पदभंगा जादिगपदसव्वपदभवात्ति हवे ।
जातिपदखइगमिस्से पिंडेव य होदि सगजोगो ॥८८०॥

दो प्रकार पद भंग हैं, जाति सर्व पद मान ।
जाति मिश्र क्षप पिंड में, स्वसंयोगि भी ज्ञान ॥८८०॥

अर्थ—उत्तर भावो के पद भग दो प्रकार के होते है जातिपद भग और सर्वपदभग । क्षायिक भाव मे लब्धि और मिश्रभाव मे ज्ञान, अज्ञान, दर्शन तथा लब्धि ये सब पिडरूप एक जाति के भाव है इस कारण इनको जातिपद भग कहते है इन में अनेक भेद है और स्वसयोगी भग भी पाये जाते है और जहा जुदे २ सब भाव ग्रहण किये जाते है उसको सर्वपद भग कहते है ॥८८०॥

जातिपद भग—जहा एक भेद को ग्रहण करने पर अनेक भेद ग्रहण हो उनको जातिपद भग कहते है जैसे क्षयोपशमिक ज्ञान ग्रहण करने से चारो ज्ञान ग्रहण मे आते है ।

सर्वपद भग—जहा जुदे २ सब भावो का ग्रहण किया जाता है

उसको सर्वपद भग कहते है। जैसे क्षयोपशामिकज्ञान मे मतिज्ञान आदि।

आगे उपशम और क्षायिक भाव के जाति भेद दिखाते है।

अयदुवसमगचउक्के एक्कं दो उवसमस्स जातिपदो।
खइगपदं तत्थेक्कं खवगे जिणसिद्धगेसु दु पण चदू ॥८८१॥

दृग शम चउमें एक दो, उपशम के पद जाति।
क्षायिक क्षप जिन सिद्ध में, इक दो पन चउ ख्याति।८८१

अर्थ—उपशमभाव के जाति भेद अविरत से लेकर अप्रमत्त-गुणस्थान तक सम्यक्त्वरूप एक ही है और उपशमश्रेणी के ४ गुणस्थानो मे सम्यक्त्व और चारित्ररूप दो है। क्षायिक भाव के जातिभेद अविरत से लेकर अप्रमत्तगुणस्थान तक सम्यक्त्व रूप एक ही है और क्षपकश्रेणी के ४ गुणस्थानो मे सम्यक्त्व और चारित्ररूप दो हैं। सयोग और अयोग गुणस्थान मे ज्ञान, दर्शन, सम्यक्त्व, चारित्र और लब्धि रूप ५ है और सिद्ध भगवान के ज्ञान, दर्शन, सम्यक्त्व और वीर्य रूप चार है ॥८८१॥

आगे मिश्रभाव के जातिपद भेद दिखाते है।

मिच्छतिये मिस्सपदा तिण्णि य अयदम्मि होंति चत्तारि।
देसतिये पंचपदा तत्तो खीणोत्ति तिण्णिपदा ॥८८२॥

भ्रम लय में मिस भेद लय, अविरत चार पिछान।
देश तीन में भेद पन, क्षीण तलक त्रय जान ॥८८२

अर्थ—मिश्रभाव के जाति भेद मिथ्यात्व और सासादनगुण-स्थान मे अज्ञान का १ दर्शन का १ लब्धि का १ इसतरह ३ है मिश्रगुणस्थान मे मिश्रज्ञान का १ दर्शन का १ लब्धि का १ इस तरह ३ है अविरतगुणस्थान मे ज्ञान का १ दर्शन का १ लब्धि का

१ सम्यक्त्व का १ इसतरह ४ है देशविरत गुणस्थान में उपरोक्त ४ देशचारित्र का १ इसतरह ५ है प्रमत्त और अप्रमत्तगुणस्थान मे ज्ञान का १ दर्शन का १ लब्धि का १ सम्यक्त्व का १ चारित्र का १ इसतरह ५ है तथा अपूर्वकरण से लेकर क्षीणमोहगुणस्थान तक ज्ञान का १ दर्शन का १ चारित्र का १ इसतरह ३ है ॥८८२॥

आगे औदायिक भाव के जातिभेद दिखाते है।

मिच्छे अट्ठुदयपदा ते तिसु सत्तेव तो सवेदोत्ति ।
छस्सुहुमोत्ति य पणगं खीणोत्ति जिणेसु चदुतिदुगं ॥८८३॥

भ्रम में अठ पद उदय के, त्रय में सात सजोय ।
छै सवेद तक सूक्ष्म पन, क्षप चउ जिन त्रय दोय ॥८८३

अर्थ—औदायिक भाव के जाति भेद मिथ्यात्वगुणस्थान मे गति १ कषाय १ वेद १ लेश्या १ मिथ्यात्व १ अज्ञान १ असयम १ असिद्धत्व १ इसतरह ८ है सासादन, मिश्र और अविरत गुणस्थान मे मिथ्यात्व के बिना ७ है देशविरत से लेकर अनिवृत्तिकरण के सवेदभाग तक असयम बिना ६ है इससे आगे सूक्ष्मसापरायगुण-स्थान तक वेद विना ५ है इससे आगे क्षीणमोहगुणस्थान तक कपाय बिना ४ है सयोगगुणस्थान मे अज्ञान बिना ३ है और अयोगगुणस्थान मे लेश्या बिन २ है ॥८८३॥

आगे पारिणामिकभाव के जाति पद दिखाते है।

मिच्छे परिणामपदा दोण्णि य सेसेसु होदि एक्कं तु ।
जातिपदं पडि वोच्छं मिच्छादिसु भंगपिंडं तु ॥८८४॥

परिणामिक दो भ्रम विषें, शेष विषें इक मान ।
कहूँ जाति पद भंग अब, मिथ्यादिक के जान ॥८८४॥

अर्थ—पारिणामिकभाव के जातिभेद मिथ्यात्वगुणस्थान मे

जीवत्व-भव्यत्व और जीवत्व-अभव्यत्व इसतरह २ हैं शेष गुण-स्थानों में केवल जीवत्व-भव्यत्व भंग १ है अब आगे इन मिथ्यात्वादि गुणस्थानों के जातिभेद की अपेक्षा भंग कहता हूं ॥८८४॥

आगे गुण्य, गुणक और क्षेपसंख्या गुणस्थानों में दिखाते हैं।

अट्ठ गुणिज्जा वामे तिसु सग छच्चउसु छक्क पणगं य।
थूले सुहुमे पणग दुसु चउतियदुगमदो सुण्णं ॥८८५॥
वारट्ठट्ठछ्वीस तिसु तिसु वत्तीसय य चउवील।
तो ताल चउवीसं गुणगारा वार वार णभं ॥८८६॥
वामे चउदस दुसु दस अडवीस तिसु हवति चोत्तीस।
तिसु छव्वीस दुदाल खेवा छव्वीस वार वार णवं ॥८८७॥

भ्रस अठ त्रय में सात हैं, विच छै अनि छै पंच।
सू पन दो में चार है, त्रय दो नभ गुण्यंच ॥८८५॥
बारह अठ अठ छव्विसा, त्रय में वत्तीस चुन्य।
क्षय चौविस शम वालिसा, वार-वार गुणसुन्य ॥८८६
चौदह दश-दश अठविसा, त्रय में चौंतिस लेप।
क्षय छव्विस शम व्यालिसा, वार-वार नव क्षेप ॥८८७॥

अर्थ—मिथ्यात्व से लेकर अप्रमत्तगुणस्थान तक क्रमसे ८, ७, ७, ७, ६, ६, ६, गुण्य है १२, ८, ८, २६, ३२, ३२, ३२ गुणक हैं और १४, १०, १०, २८, ३४ ३४, ३४ क्षेप हैं उपशमश्रेणी का अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण का सवेदभाग, अनिवृत्तिकरण का अवेदभाग, सूक्ष्मसांपराय और उपशांतमोह गुणस्थान में क्रमसे ६, ६, ५, ५, ४ गुण्य हे ४०, ४०, ४०, ४०, ४० गुणक है और

४२, ४२, ४२, ४२, ४२ क्षेप है क्षपक श्रेणी का अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण का सवेदभाग, अनिवृत्ति का अवेदभाग, सूक्ष्मसापराय, क्षीणमोह, सयोग और अयोगगुणस्थान मे क्रमसे ६, ६, ५, ५, ४,३,२-० गुण्य है २४,२४,२४,२४,२४,१२-१२-० गुणक है और २६, २६, २६, २६, २६ १२, १२ क्षेप है और सिद्धभगवान मे ३ क्षेप है। ८८५-८८७॥

भावार्थ—जातिपद भगो के निकालने की विधि यह है कि उपरोक्त पाँच भावो में जातिभेद अधिक-से-अधिक उपशमभाव के उपशम और चरित्र ऐसे २ है क्षायिकभाव के ज्ञान १ दर्शन १ सम्यक्त्व १ चारित्र १ लब्धि पाच का १ ऐसे ५ है मिश्रभाव के ज्ञान चार का १ अज्ञान तीन का १ दर्शन तीन का १ लब्धि पाच का १ सम्यक्त्व का १ देशचारित्र का १ रागचारित्र का १ इसतरह ७ है औदामिकभाव के गति चार का १ कपाय चार का १ लिग तीन का १ मिथ्यात्व का १ अविरत का १ अज्ञान का १ असिद्धित्व का १ लेश्या छै का १ इसतरह ८ है और पारिणामिक के जीवत्व १ भव्यत्व १ अभव्यत्व १ इसतरह ३ है इनमे औदायिकभाव के दोहा न० ८८३ के अनुसार जहाँ जितने जातिभेद पाये जाते है उतने वहाँ गुण्य है और औदायिकादि ५ भावो के प्रत्येक और द्वि-सयोगी आदि भग निकालकर उनमे औदायिक अथवा औदायिक-भाव के सयोग से जितने भग निकले वे गुणक है और शेप भावो के सयोग से जो भग निकले वे क्षेप है इस नियम के अनुसार दोहा न० ८८३ के अनुसार मिथ्यात्वगुणस्थान मे औदायिक के ८ भाव है वे गुण्य है मिश्रभाव के अज्ञान १ दर्शन १ लब्धि १ औदायिकभाव का १ पारिणामिकभाव के २ इसतरह ६ प्रत्येक भग है उनमे औदायिक का १ गुणक है शेप ५ क्षेप है द्विसयोगी मे औदायिक के साथ मिश्र ३ और पारिणामिक २ के सयोग मे ६ क्षेप होते है त्रिसयोगी मे गुणक ६ है और स्वसयोगी क्षेप ३ होते है इसतरह गुण्य ८ गुणक १२ क्षेप १४ होते है।

सासादनगुणस्थान मे औदायिक के ७ गुण्य है मिश्र ३ औ १ पा १ इन ५ प्रत्येक भग मे गुणक १ क्षेप ४ द्विसयोगी मे गुणक ४ क्षेप ३ तृसयोगी मे गुणक ३ स्वसयोगी मे क्षेप ३ इसतरह गुण्य ७ गुणक ८ क्षेप १० है मिश्रगुणस्थान मे औदायिक के ७ गुण्य है उपरोक्त ५ प्रत्येक मे गुणक १ क्षेप ४ द्विसयोगी मे गुणक ४ क्षेप ३ तृसयोगी मे गुणक ३ स्वसयोगी मे क्षेप ३ इसतरह गुण्य ७ गुणक ८ क्षेप १० है अविरतगुणस्थान मे औदायिक के गुण्य ७ है उ १ क्षा १ मि ४ औ १ पा १ इन ८ प्रत्येक मे गुणक १ क्षेप ७ द्विसयोगी मे गुणक ७ क्षेप १२ तृसयोगी मे गुणक १२ क्षेप ६ चौसयोगी मे गुणक ६ स्वसयोगीक्षेप ३ इसतरह गुण्य ७ गुणक २६ क्षेप २८ है, देशविरत, प्रमत्त और अप्रमत्तगुणस्थान मे औदायिक के गुण्य ६ उ १ क्षा १ मि ५ औ १ पा १ इन ९ प्रत्येक मे गुणक १ क्षेप ८ द्विसयोगी मे गुणक ८ क्षेप १५ तृसयोगी मे गुणक १५ क्षेप ८ चौसयोग मे गुणक ८ स्वसयोगीक्षेप ३ इसतरह गुण्य ६ गुणक ३२ क्षेप ३४ है उपशमश्रेणी का अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण के सवेद भाग मे औदायिक के गुण्य ६ उ २ क्षा १ मि ३ औ १ पा १ इन ८ प्रत्येक मे गुणक १ क्षेप ७ द्विसयोगी मे गुणक ७ क्षेप १६ तृसयोगी मे गुणक १६ क्षेप १३ चौसयोगी मे गुणक १३ क्षेप ३ पचसयोगी मे गुणक ३ स्वसयोगी क्षेप ३ इसतरह गुण्य ६ गुणक ४० क्षेप ४२ है अनिवृत्तिकरण अवेद भाग और सूक्ष्मसापरायगुणस्थान मे औदायिक के गुण्य ५ ओर उपरोक्त समान गुणक ४० क्षेप ४२ है उपशातमोहगुणस्थान मे औदायिक के गुण्य ४ और उपरोक्त समान गुणक ४० क्षेप ४२ हैं। क्षपकअपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरणगुणस्थान के सवेद भाग मे औदायिक के गुण्य ६ क्षा २ मिश्र ३ औ १ पा १ इन ७ प्रत्येक में गुणक १ क्षेप ६ द्विसयोगी मे गुणक ६ क्षेप ११ तृसयोगी मे गुणक ११ क्षेप ६ चौसयोगी मे गुणक ६ स्वसयोगीक्षेप ३ इसतरह गुण्य ६ गुणक २४ क्षेप २६ है अनिवृत्तिकरण के अवेद-

भाग और सूक्ष्मसापरायगुणस्थान मे औदायिक के गुण्य ५ उपरोक्त समानगुणक २४ क्षेप २६ है क्षीणमोहगुणस्थान मे औदायिक के गुण्य ४ और उपरोक्त समान गुणक २४ क्षेप २६ है सयोगगुणस्थान मे औदायिक के गुण्य ३ है क्षायिक ५ औ १ पा १ इन ७ प्रत्येक मे गुणक १ क्षेप ६ द्विसयोगीगुणक ६ क्षेप ५ तृसयोगी मे गुणक ५ स्वसयोगीक्षेप १ इसतरह गुण्य ३ गुणक १२ क्षेप १२ है अयोग-गुणस्थान में औदायिक के गुण्य २ और उपरोक्त समान गुणक १२ क्षेप १२ है तथा सिद्धभगवान के क्षा ४ जीवत्व १ इन ५ प्रत्येक मे क्षेप ५ द्विसयोगी में क्षेप ४ है इसतरह ९ भग है।

जाति पद का गुण्य, गुणक और क्षेप दर्पण

	मि	सा.	मि	अ	दे	प्र०	अ०	अपू	अ १	अ २
गुण्य	८	७	७	७	६	६	६	६	६	५
गुणक	१२	८	८	२६	३२	३२	३२	४०	४०	४०
क्षेप	१४	१०	१०	२८	३४	३४	३४	४२	४२	४२

	सू.	उ	अपू	अ १	अ २	सू	क्षा.	स.	अ	सि
गुण्य	५	४	६	६	५	५	४	३	२	०
गुणक	४०	४०	२४	२४	२४	२४	२४	१२	१२	०
क्षेप	४२	४२	२६	२६	२६	२६	२६	१२	१२	९

आगे गुण्य गुणक से गुणे और क्षेप मिलें भगसख्या दिखाते है।

एक्कारं दसगुणियं दुसु छावट्ठी दसाहियं विसयं।
तिसु छव्वीसं विसयं वेदवसामोत्ति दुसय बासीदी ॥८८८॥
बादालं वेण्णिसया तत्तो सुहुमोत्ति दुसय दोसहियं।
उवसंतम्मि य भंगा खवगेसु जहाकमं वोच्छं ॥८८९॥
सत्तरसं दसगुणिदं वेदित्ति सयाहियं तु छादालं।
सुहुमोत्ति खीणमोहे बावीससयं हवे भंगा ॥८९०॥

अडदालं छत्तीसं जिणेसु सिद्धेसु होंति णव भंगा ।
एत्तो सव्वपदं पडि मिच्छादिसु सुणह वोच्छामि ॥८९१॥

इकसौ दश मिथ्यात्व में, दो में छासठ मान ।
दृग दो सौ दश तीन में, दो सौ छव्विस जान ॥८८८
वेद सहित उपशमक तक, दो सौ ब्यासी मांत ।
दो सौ ब्यालिस सूक्ष्म तक, दो सौ दो उपशांत ॥८८९
क्षय अपूर्व से वेद तक, इकसौ सत्तर चीन ।
इकसौ छालिस सूक्ष्म तक, इकसौ बाइस क्षीण ॥८९०
अडतालिस छत्तीस नव, जिन शिव क्रम से मान ।
मिथ्यादिक में सर्व पद, आगे करूँ बखान ॥८९१

अर्थ—मिथ्यात्व से लेकर अप्रमत्त गुणस्थान तक क्रमसे ११० ६६, ६६, २१०, २२६, २२६, २२६ भग है उपशम श्रेणी का अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण का सवेद भाग, अनिवृत्तिकरण का अवेदभाग, सूक्ष्मसापराय और उपशातमोहगुणस्थान मे क्रम से २८२, २८२, २४२, २४२, २०२ भग है क्षपक श्रेणी का अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण का सवेद भाग, अनिवृत्तिकरण का अवे , भाग, क्षीणमोह, सयोग, अयोगगुणस्थान मे क्रमसे १७०, १७० १४६, १४६, १२२, ४८, ३६ भग है तथा सिद्ध भगवान के ९ भग है इसप्रकार **जातिपद भग** कहे इससे आगे अव मै मिथ्यात्वादि गुणस्थानो मे सर्वपद भग कहता हूँ सो हे भव्य जीव हो सुनो वे सर्व पद दो प्रकार के होते है पिंड पद और प्रत्येक पद ॥८८८—८९१॥

जातिपद भंग दर्पण

मि	सा	मि	अ	दे	प्र	अ	अ	अ १	अ २
११०	६६	६६	२१०	२२६	२२६	२२६	२८२	२८२	२४२

सू	उ	अ	अ.१	अ २	सू	क्षा	स	अ	नि
२४२	२०२	१७०	१७०	१४६	१४६	१२२	४८	३६	९

आगे सर्व पदो मे प्रथम पिड पदो का स्वरूप दिखाते है ।

भव्विदराणण्णदरं गदीण लिंगाण कोहपहुदीणं ।
इगिसमये लेस्साणं सम्मत्ताणं य णियमेण ।।८६२।।

भव्य इतर में एक इक, गतो लिंग क्रोधादि ।
लेश्या समकित विषें भी, एक समय इक लादि ।।८८२

अर्थ—एक जीव के एक समय मे भव्य-अभव्य, गति ४ वेद ३ क्रोधादि ४ और सम्यक्त्व ३ मे से कोई एक होता है इस कारण इनको पिड पद कहते है इनसे विपरीत को प्रत्येक पद कहते है । ।।८६२।।

आगे गुणस्थानो मे प्रत्येक पद दिखाते है ।

मिच्छादीणं दुति दुसु अपुव्वअणियट्टिखवगसमगेसु ।
सुहुमुवसमगे संते सेसे पत्तेयपदसंखा ।।८६३।।

पण्णर सोलट्ठारस वीसुगुवीसं य वीसमुगुवीसं ।
इगिवीस वीसचउदसतेरसपणगं जहाकमसो ।।८६४।।

त्रस दुक त्रय में दोय में, अठ नव क्षय शम मांहि ।
उपशम सूक्षम शांत में, शेष गुणों के मांहि ।।८८३।।

पंद्रह सोलह अंठारह, विस उन्निस विस नीस ।
इक्किस विस अरु चौदहा, तेरह पन क्रम दीस ॥८६४

अर्थ—मिथ्यात्व और सासादनगुणस्थान मे १५-१५ प्रत्येक पद है मिश्र, अविरत और देशविरत गुणस्थान मे १६-१६ प्रत्येकपद है प्रमत्त और अप्रमत्तगुणस्थान मे १८-१८ प्रत्येक पद है उपशमश्रेणी अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसापराय और उपशातमोहगुण-गुणस्थान मे क्रमसे १६, १८, २०, १६ प्रत्येकपद है क्षपकश्रेणी के अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसापराय और क्षीणमोहगुण-स्थान मे क्रमसे २०, २०, २१, २० प्रत्येकपद है सयोग, अयोग और सिद्धभगवान के क्रमसे १४, १३, ५ प्रत्येकपद हैं ॥८६३-८६४॥

आगे मिथ्यात्वगुणस्थान के प्रत्येकपदो के नाम दिखाते है ।

पत्तेयपदा मिच्छे पणरसा पंच चेव उवजोगा ।
दाणादी ओदयिये चत्तारि य जीवभावो य ॥८६५॥

प्रतिपद भ्रम में पन्द्रहा, उनमें पन उपयोग ।
लब्धि पांच अरु उदय चउ, जीव भाव इक वोग ॥८६५

अर्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे १५ प्रत्येकपद होते हैं कुमति, कुश्रुत, कुअवधि, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, दानलब्धि, लाभलब्धि, भोगलब्धि, उपभोगलब्धि, वीर्यलब्धि, मिथ्यात्व, अज्ञान, असयम, असिद्धत्व और जीवत्व इसतरह ये १५ उनके नाम है ॥८६५॥

आगे प्रत्येक और मूलपिडपदो की क्रमसे ऊपर २ रचना दिखाते हैं ।

पिंडपदा पंचेव य भव्विदरदुगं गदी य लिंग य ।
कोहादी लेस्सावि य इदि वीसपदा हु उड्ढेण ॥८६६॥

पांच पिंड पद् उन्हों के, भव्य इतर गति वेद्।
क्रोधादिक लेश्या तलक, ऊर्ध ऊर्ध विस भेद्॥८८६

अर्थ—उपरोक्त १५ प्रत्येक पदों के अतिरिक्त मिथ्यात्वगुणस्थान मे ५ पिड पद और होते है उनके भव्य-अभव्य युगल, गति, लिंग, क्रोधादिकषाय और लेश्या नाम है इस तरह मिलकर १५+५=२० पद होते है इनके सब भेदों को क्रमसे ऊपर रखना चाहिये अर्थात् एक से लेकर दूने २ भग मानना चाहिये इसका आशय आगे स्पष्ट होगा ॥८८६॥

भावार्थ—मिथ्यात्वगुणस्थान मे १५ प्रत्येक पदो के भग क्रमसे दूने २ होते है अत के जीवत्व से दूने भव्यत्व के भव्यत्व से चौगुण १ गति के, १ गति से दूने १ लिग के, १ लिग से दूने एक कषाय के, १ कषाय से दूने १ लेश्या के भग होते हैं। अविरतादिगुणस्थानो मे १ लेश्या से दूने १ सम्यक्त्व के भग होते है जहा लेश्या पिडपद प्रत्येक पद हो जाता है वहां १ कषाय से दूने १ सम्यक्त्व के भग होते है और जहा अभव्य नही होता है वहा भव्यत्व से दूने १ गति के भग होते हैं और इन गति आदि के प्रभेदो के भग गति आदि के भगो के समान भग होते है ऐसा आशय नीचे के दोहे से स्पष्ट है।

आगे पिडपदो के उत्तर भेदो की रचना तिरछी दिखाते है।

पत्तेयाणं उवरिं भव्विदरदुगस्स होदि गदि लिंगे।
कोहादिलेस्ससम्मत्ताणं रयणा तिरिच्छेण ॥८८७॥

प्रतिपद् ऊपर भव्य युग, गती लिंग क्रोधादि्।
लेश्या अरु सम्यक्त्व की, रचना तिरछी लादि्॥८८७

अर्थ—जिस गुणस्थान मे जितने प्रत्येक पद हो उनके ऊपर

भव्य युगल, गति, लिग, क्रोधादिकषाय, लेश्या और सम्यक्त्वरूप पिंड पदो के भेदो की रचना तिरछी करना चाहिये अर्थात् मूल पिड पदो के बराबर उनके भेदो के भग होते है इसका आशय आगे स्पष्ट होगा ॥८६७॥

आगे प्रत्येक पदो के भग निकालने की विधि दिखाते है ।

एक्कादी दुगुणकमा एक्केक्कं रु धिऊण हेट्ठम्मि ।
पदसंजोगे भंगा गच्छं पडि होति उवरुवरिं ॥८६८॥

इक से दूने क्रमस इक, इक आश्रय निच नीच ।
पद मिल भंग जु भेद के, परें परें के सीच ॥८६८

अर्थ—जिस गुणस्थान मे जितने प्रत्येक पद हो उनके अतिम प्रत्येक पद तक १-१ पद का अवलवन करके नीचे के पदो के सयोग से एक से लेकर दूने २ के क्रमसे ऊपर २ के भग होते है जैसे मिथ्यात्वगुणस्थान मे प्रत्येक पद १५ है उनमे से प्रथम कुमति सवके नीचे रखने से १ प्रत्येक भग होता है इसके ऊपर कुश्रुत को रखने से प्रत्येक १ और नीचे के सयोग से १ द्विसयोगी १ इसतरह २ भग होते हैं इसके ऊपर कुअवधि को रखने से प्रत्येक १ नीचे के सयोग से द्विसयोगी २ और तृसयोगी १ इसतरह ४ भग होते हैं इसके ऊपर चक्षुदर्शन को रखने से प्रत्येक १ नीचे के सयोग से द्विसयोगी ३ तृसयोगी ३ और चौसयोगी १ इसतरह ८ भग होते है इसके ऊपर अचक्षुदर्शन को रखने से प्रत्येक १ नीचे के सयोग से द्विसयोगी ४ तृसयोगी ६ चौसयोगी ४ और पाच सयोगी १ इसतरह १६ भग होते है इसके ऊपर दानलब्धि को रखने से प्रत्येक १ नीचे के सयोग से द्विसयोगी ५ तृसयोगी १० चौसयोगी १० पाच सयोगी ५ और छैसयोगी १ इस तरह ३२ भग होते है इसीतरह लाभ के ६४ भोग के १२८ उपभोग के २५६ वीर्य के ५१२ मिथ्यात्व के १०२४ अज्ञान के २०४८ असयम के

४०९६ असिद्धत्व के ८१९२ और जीवत्व के १६३८४ भग होते है इन सब प्रत्येक पदो के भगो का जोड ३२७६७ होता है आशय आगे स्पष्ट होगा ।।८९८।।

भंग निकालने की विधि

नामपद	प्र०	द्वि०	तृ०	चौ०	पाच	छैस०	जो०
दान०	१	५	१०	१०	५	१	३२
अ० च०	१	४	६	४	१	०	१६
चक्षु०	१	३	३	१	०	०	८
कुअवधि	१	२	१	०	०	०	४
कुश्रुत	१	१	०	०	०	०	२
कुमति	१	०	०	०	०	०	१

आगे प्रत्येक पदो के भग जोडने की विधि दिखाते है ।

इट्ठपदे रुऊणे दुगसंवग्गम्मि होदि इट्ठधणं ।
असरित्थाणंतधणं दुगणेगूणे सगीयसव्वधणं ।।८९९।।

इष्ट पदहिं इक कम दुके, गुणें इष्ट धन पव्व ।
असम अंत धन द्विगुण सें, इक कम निज धन सव्व।।८९९

अर्थ—जिस गुणस्थान मे जितने प्रत्येक पदों का परिमाण हो उसमें १ कम करके जो शेप रहे उतने २-२ के अक रखकर परस्पर गुणाकरने से जो परिमाण आवे उतना उस गुणस्थान के अतिम प्रत्येक पद का परिमाण है इसका एक कम दूना परिमाण उस गुणस्थान के सव प्रत्येक पदों का परिमाण है जैसे मिथ्यात्वगुण-स्थान मे १५ प्रत्येक पद है इनमे से १ कम करने से १४ शेप रहते है चौदह २–२ के अक रखकर परस्पर गुणा करने से १६३८४ होते है जो कि अतिम जीवत्व प्रत्येक पद का परिमाण है इसका १ कम दूना परिमाण ३२७६७ होता है जो कि सव प्रत्येक पदो का परिमाण है इसका आशय आगे स्पष्ट होगा ।।८९९।।

मिथ्यात्व के प्रत्येक पदों का जोड रूप दर्पण

ना.	कु	कु	कु	च	अ	दा	ला	भो	उ
भ	१	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६

ना	वीर्य	मि	अ	अ	अ	जीवत्व	जोड
भ	५१२	१०२४	२०४८	४०९६	८१९२	१६३८४	३२७६७

आगे पिंड पदो के भग निकालने की विधि दिखाते है ।

तेरिच्छा हु सरित्था अविरददेसाण खयियसम्मत्तं ।
मोत्तूण संभवं पडि खयिगस्सवि आणए भगे ॥९००॥

तिरछी सम अविरत तथा, देश हिं क्षायिक छोड ।
संभव भंग सँभार कर, क्षायिक पीछे जोड ॥९००॥

अर्थ—जिस गुणस्थान मे जितने पिडपदो के भेद हो उनकी तिरछी रचना समान रूप से करनी चाहिये और उनके भगो को यथासभव लगाना चाहिये किन्तु अविरत और देशविरतगुणस्थान मे क्षायिक सम्यक्त्व के भगो को छोड देना चाहिये कारण इन दोनो गुणस्थानो के क्षायिक सम्यक्त्व के भग निकालने का उपाय लिगादि के अतर से भिन्न है सो उन लिगादि को समझकर उनके भग निकालकर पीछे जहाँ की तहाँ जोड देने से उस गुणस्थान के पूरे भग होते है इसका आशय आगे स्पष्ट होगा ॥९००॥

आगे प्रत्येक और पिडपदो का जोड उस गुणस्थान के भग दिखाते है ।

उड्ढतिरिच्छपदाणं दव्वसमासेण होदि सव्वधणं ।
सव्वपदाणं भंगे मिच्छादिगुणेसु णियमेण ॥९०१॥

ऊर्ध्व रु तिरछे पदों के, मिले सर्व धन होय ।
सर्व पदों के भंग ही, मिथ्यादिक के जोय ॥९०१॥

अर्थ—मिथ्यात्वादि गुणस्थानो में से जिस गुणस्थान में जितने ऊर्ध्व रचनावाले प्रत्येक पद और तिरछी रचना वाले पिंडपद हो उनके भग उपरोक्त रीति से निकाल कर और उनको जोडने से उस गुणस्थान के सर्वपद भग होते है ॥८०१॥

मिथ्यात्वगुणस्थान मे कुमति का १, कुश्रुत के २ कुअवधि के ४ चक्षुदर्शन के ८ अचक्षुदर्शन के १६ दान के ३२ लाभ के ६४ भोग के १२८ उपभोग के २५६ वीर्य के ५१२ मिथ्यात्व के १०२४ अज्ञान के २०४८ असंयम के ४०९६ असिद्धत्व के ८१९२ और जीवत्व के १६३८४ भग होते हैं भव्यत्व के ३२७६८ अभव्यत्व के ३२७६८ नरकगति के १३१०७२ तिर्यचगति के १३१०७२ मनुष्य-गति के १३१०७२ देवगति के १३१०७२ नरकलिंग १ के २६२१४४ तिर्यचलिग ३ के ७८६४३२ मनुष्यलिग ३ के ७८६४३२ देवलिग २ के ५२४२८८ नरकलिंग १ कषाय ४ के २०९७१५२ तिर्यचलिग ३ कषाय ४ के ६२९१४५६ मनुष्यलिंग ३ कषाय ४ के ६२९१४५६ देवलिग २ कषाय ४ के ४१९४३१४ नरक लिग १ कषाय ४ लेश्या ३ के १२५८२९१२ तिर्यच लिग ३ कषाय ४ लेश्या ६ के ७५४९७४७२ मनुष्यलिग ३ कषाय ४ लेश्या ६ के ७५४९७४७२ और देवलिंग २ कषाय ४ लेश्या ६ के ५०३३१६४८ भग होते है सव मिलकर २३५७६५७५९ सर्वपद भग होते है।

न लि १ क ४ ले ३	ति लि ३ क ४ ले ६	म लि ३ क ४ ले ६	दे लि. २ क ४ ले ६	जोड
१२५८२९१२	७५४९७४७२	७५४९७४७२	५०३३१६४८	२१३९०९५०४
न लि क. १×१×४	ति लि क १×३×४= १२	म. लि क १×३×४= १२	दे लि क १×२×४= ८	जोड
२०९७१५२	६२९१४५६	६२९१४५६	४१९४३०४	१८८७४३६८
नरकलिंग १	तिर्यचलिग ३	म लि ३	दे लि २	जोड
२६२१४४	७८६४३२	७८६४३२	५२४२८८	२३५९२९६

नरकगति	तिर्यंचगति	मनुष्यगति	देवगति	जोड
१३१०७२	१३१०७२	१३१०७२	१३१०७२	५२४२८८

भव्य	अभव्य	जोड
३२७६८	३२७६८	६५५३६

प्रत्येक पद
३२७६७

२३५७६५७५९

सासादनगुणस्थान के प्रत्येकपदो मे कुमति का १ कुश्रुत के २ कुअवधि ४ चक्षुदर्शन के ८ अचक्षुदर्शन के १६ दान के ३२ लाभ के ६४ भोग के १२८ उपभोग के २५६ वीर्य के ५१२ अज्ञान के १०२४ असयम के २०४८ असिद्धत्व के ४०९६ जीवत्व के ८१९२ भव्यत्व के १६३८४ भग होते है गति ४ लिंग ९ कषाय ३६ लेश्या २०४ के सर्वपद भग निम्न प्रकार होते है।

न लि १ क ४ ले ३	ति लि ३ क ४ ले ६	म लि ३ क ४ ले ६	दे लि २ क ४ ले ६	जोड
३१४५७२८	१८८७४३६८	१८८७४३६८	१२५८२९१२	५३४७७३७६
न लि १ क ४	ति लि ३ क ४	म लि ३ क ४	दे लि २ क ४	जोड
५२४२८८	१५७२८६४	१५७२८६४	१०४८५७६	४७१८५९२
नरकलिंग १	तिर्यचलिंग ३	मनुष्यलिंग ३	देवलिंग २	जोड
६५५३६	१९६६०८	१९६६०८	१३१०७२	५८९८२४
नरकगति	तिर्यंचगति	मनुष्यगति	देवगति	जोड
३२७६८	३२७६८	३२७६८	३२७६८	१३१०७२

प्रत्येक पद
३२७६७

५८९४९६३१

मिश्रगुणस्थान के प्रत्येकपदो मे मिश्ररूप मति का १ श्रुत के २

अवधि के ४ चक्षु के ८ अचक्षुदर्शन के १६ अवधिदर्शन के ३२ दान के ६४ लाभ के १२८ भोग के २५६ उपभोग के ५१२ वीर्य के १०२४ अज्ञान के २०४८ असयम के ४०९६ असिद्धत्व के ८१९२ जीवत्व के १६३८४ भव्यत्व के ३२७६८ भग होते है गति ४ लिग ९ कषाय ३६ लेश्या १८० के सर्वपद भग निम्न प्रकार होते है।

न.लि.१ क ४ ले ३ ६२९१४५६	ति.लि ३ क.४ ले ६ ३७७४८७३६	म लि ३ क ४ ले ६ ३७७४८७३६	दे लि २ क.४ ले ३ १२५८२९१२	जोड ९४३७१८४०
न लि १ क.४ १०४८५७६	ति लि.३ क ४ ३१४५७२८	म लि ३ क ४ ३१४५७२८	देवलि २ क.४ २०९७१५२	जोड ९४३७१८४
नरकलिंग १ १३१०७२	तिर्यंचलिंग ३ ३९३२१६	मनुष्यलिंग ३ ३९३२१६	देवलिंग २ २६२१४४	जोड ११७९६४८
नरकगति ६५५३६	तिर्यचगति ६५५३६	मनुष्यगति ६५५३६	देवगति ६५५३६	जोड २६२१४४
प्रत्येकपद ६५५३५				

१०५३१६३५१

अविरतगुणस्थान में मति आदि प्रत्येकपद १६ गति ४ लिंग ९ कपाय ३६ और लेश्या १८० के भग मिश्रगुणस्थान के समान है नरकलिग १ कषाय ४ लेश्या ३ सम्यक्त्व २ के २५१६५८२४ तिर्यंचलिग ३ कपाय ४ लेश्या ६ सम्यक्त्व २ के १५०९९४९४४ मनुप्यलिग ३ कपाय ४ लेश्या ६ सम्यक्त्व के १५०९९४९४४ और देवलिग २ कपाय ४ लेश्या ३ सम्यक्त्व २ के ५०३३१६४८ भग होते है नरकलिग १ कपाय ४ लेश्या १ क्षायिकसम्यक्त्व १ के ४१९४३०४ तिर्यंचलिग १ कपाय ४ लेश्या ४ क्षायिकसम्यक्त्व १

के १६७७७२१६ मनुष्यलिंग ३ कषाय ४ लेश्या ६ क्षायिकसम्यक्त्व १ के ७५४९७४७२ और देवलिंग १ कषाय ४ लेश्या ३ क्षायिक-सम्यक्त्व १ के १२५८२९११ भग होते है सब मिलाकर ५९१८-५५६१५ सर्वपद भग होते है ।

ा लि.१ क.४ ले.१ क्षा १ ४१९४३०४	ति लि.१ क ४ ले.४ क्षा.१ १६७७७२१६	म.लि ३ क ४ ले ६ क्षा १ ७५४९७४७२	दे लि १ क ४ ले ३ क्षा १ १२५८२९१२	१०९०५१९०४
ा.लि.१ क ४ ले.३ स २ ?५१६५८२४	ति लि ३ क ४ ले.६ स २ १५०९९४९४४	म लि ३ क ४ ले ६ स २ १५०९९४९४४	दे लि २ क ४ ले ३ स.२ ५०३३१६४८	३७७४८७३६०
ा.लि.१ क.४ ले.३ ६२९१४५६	ति.लि.३ क ४ ले.६ ३७७४८७३६	म लि ३ क ४ ले.६ ३७७४८७३६	दे लि २ क.४ ले.६ १२५८२९१२	९४३७१८४०
ा.लि १ क ४ १०४८५७६	ति लि.३ क.४ ३१४५७२८	म लि ३ क.४ ३१४५७२८	दे लि २ क ४ २०९७१५२	९४३७१८४
नरकलिंग १ १३१०७२	तिर्यंचलिंग ३ ३९३२१६	मनुष्यलिंग ३ ३९३२१६	देवलिंग २ २६२१४४	११७९६४८
नरकगति ६५५३६	तिर्यंचगति ६५५३६	मनुष्यगति ६५५३६	देवगति ६५५३६	२६२१४४
प्रत्येकपद ६५५३५				

५९१८५५६१५

देशविरतगुणस्थान मे १६ प्रत्येक पदो के ६५५३५ भग होते हैं तिर्यंचगति के ६५५३६ मनुष्यगति के ६५५३६ तिर्यंचलिंग ३ के ३९३२१६ मनुष्यलिंग ३ के ३९३२१६ तिर्यंचलिंग ३ कषाय ४ के

३१४५७२८ मनुष्यलिंग ३ कषाय ४ के ३१४५७२८ तिर्यंचलिग ३ कषाय ४ लेश्या ३ के १८८७४३६८ मनुष्यलिग ३ कषाय ४ लेश्या ३ के १८८७४३६८ तिर्यचलिग ३ कषाय ४ लेश्या ३ सम्यक्त्व २ के ७५४९७४७२ मनुष्यलिग ३ कपाय ४ लेश्या ३ सम्यक्त्व २ के ७५४९७४७२ और मनुष्यलिंग ३ कषाय ४ लेश्या ३ क्षायिक सम्यक्त्व १ के ३७७४८७३६ सर्वपद भग होते है सब मिलकर २३३७६६९११ भग होते है।

देशविरत सर्वपद भंगदर्पण

०	म लि ३ क ४ ले ३ क्षा १ ३७७४८७३६
ति.लि.३ क.४ ले.३ स.२ ७५४९७४७२	म.लि ३ क ४ ले ३ स २ ७५४९७४७२
ति.लि.३ क ४ ले.३ १८८७४३६८	म लि.३ क ४ ले ३ १८८७४३६८
ति लि.३ क.४ ३१४५७२८	म लि ३ क ४ ३१४५७२८
तिर्यंचलिंग ३ ३९३२१६	मनुष्यलिंग ३ ३९३२१६
तिर्यंचगति ६५५३६	मनुष्यगति ६५५३६
प्रत्येकपद ६५५३५	

२३३७६६९११

प्रमतगुणस्थान मे मनपर्यय और गति वढने से प्रत्येकपद १८

के २६२१४३ भग होते है मनुष्यलिग ३ के ७८६४३२ मनुष्यलिग ३ कषाय ४ के ६२९१४५६ मनुष्यलिग ३ कषाय ४ लेश्या ३ के ३७७४८७३६ और मनुष्यलिंग ३ कपाय ४ लेश्या ३ सम्यक्त्व ३ के २२६४९२४१६ भग होते है सवमिलकर २७१५८११८३ सर्वपद भग होते है।

प्र. स. प. भं. दर्पण

म लि ३ क ४ ले ३ स ३ २२६४९२४१६
म.लि ३ क ४ ले ३ ३७७४८७३६
म लि ३ क ४ ६२९१४५६
मनुष्यलिग ३ ७८६४३२
प्रत्येकपद २६२१४३

२७१५८११८३

अप्रमत्तगुणस्थान मे प्रमत्तगुणस्थान समान २७१५८११८३ सर्वपद भग होते है।

उपशमश्रेणी के अपूर्वकरण मे लेश्या बढने से प्रत्येकपद १९ के ५२४२८७ भग होते है मनुष्यलिंग ३ के १५७२८६४ मनुष्यलिंग ३ कषाय ४ के १२५८२९१२ और मनुष्यलिंग ३ कषाय ४ सम्यक्त्व २ के ५०३३१६४८ भग होते हैं सब मिलकर ६५०११७१२ सर्वपद भग होते हैं।

म लि ३ क ४ स २ ५०३३१६४८
म लि ३ क ४ १२५८२६१२
मनुष्यलिंग ३ १५७२८६४
प्रत्येकपद १६ ५२४२८७

६५०११७१२

उपशमश्रेणी के सवेदभाग अनिवृत्तिकरण गुणस्थान मे उपशम श्रेणी के अपूर्वकरण समान ६५०११७१२ सर्वपद भंग होते है।

उपशमश्रेणी के अवेद अनिवृत्तिकरणगुणस्थान में उपरोक्त समान प्रत्येकपद १६ के ५२४२८७ भग होते हैं कषाय ४ के २०६७१५२ और कषाय ४ सम्यक्त्व २ के ८३८८६०८ सर्वपद भग होते है सब मिलकर ११०१००४७ भग होते है।

कषाय ४ स० २ ८३८८६०८
कषाय ४ २०६७१५२
प्रत्येकपद १६ ५२४२८७

११०१००४७

उपशमश्रेणी के सूक्ष्मसापरायगुणस्थान में सूक्ष्मलोभ बढने से प्रत्येकपद २० के १०४८५७५ भग होते है सम्यक्त्व २ के २०६७ १५२ भग होते है सब मिलकर ३१४७७२७ सर्वपदभग होते है।

सम्य० २ २०९७१५२
प्रत्येकपद २० १०४८५७५

३१४७७२७

उपशातमोह गुणस्थान मे सूक्ष्मलोभ कम होने से प्रत्येक पद १९ के ५२४२८७ भग होते हैं और सम्यक्त्व २ के १०४८५७६ भग होते है सबमिलकर १५७२८६३ सर्वपद भग होते हैं।

सम्य० २ १०४८५७६
प्रत्येकपद १९ ५२४२८७

१५७२८६३

क्षपकश्रेणी के अपूर्वकरणगुणस्थान मे उपशमश्रेणी के अपूर्वकरणगुणस्थान के १९ मे सम्यक्त्व वढने से प्रत्येकपद २० के १०४८५७५ भग होते है लिंग ३ के ३१४५७२८ और लिंग ३ कषाय ४ के २५१६५८२४ भग होते है सबमिलकर २९३६०१२७ सर्वपद भग होते हैं।

लि ३ क ४ २५१६५८२४
लि ३ ३१४५७२८
प्रत्येकपद २० १०४५५७५

२९३६०१२७

क्षपकश्रेणी के सवेद अनिवृत्तिकरणगुणस्थान मे क्षपकश्रेणी के अपूर्वकरणगुणस्थान समान २९३६०१२७ सर्वपदभग होते है।

क्षपकश्रेणी के अवेद अनिवृत्तिकरणगुणस्थान मे उपरोक्त समान प्रत्येक पद २० के १०४८५७५ और कषाय ४ के ४१९४३०४ सर्वपद भग होते है

कषाय ४
४१९४३०४
प्रत्येकपद २०
१०४८५७५

५२४२८७९

क्षपकश्रेणी के सूक्ष्मसापरायगुणस्थान मे उपरोक्त २० मे सूक्ष्म-लोभ बढने से प्रत्येकपद २१ के २०९७१५१ भग होते है।

क्षीणमोहगुणस्थान में सूक्ष्मलोभ कम होने से प्रत्येकपद २० के १०४८५७५ सर्वपद भग होते है।

सयोगगुणस्थान मे केवल ज्ञान का १ केवलदर्शन के २ क्षायिक सम्यक्त्व के ४ यथाख्यातचारित्र के ८ क्षायिक दान के १६ क्षायिक लाभ के ३२ क्षायिकभोग के ६४ क्षायिक उपभोग के १२८ अनतवीर्य के २५६ असिद्धत्व के ५१२ जीवत्व १०२४ भव्यत्व २०४८ मनुष्यगति ४०९६ और शुक्ललेश्या के ८१९२ भग होते है सबमिलकर १६३८३ सर्वपद भग होते है।

अयोगगुणस्थान में लेश्या छूटने से प्रत्येकपद १३ के ८१९१ सर्वपद भग होते है।

सिद्धभगवान मे केवलज्ञान का १ केवलदर्शन के २ क्षायिक सम्यक्त्व के ४ अनतवीर्य के ८ जीवत्व के १६ भग होते है सब मिलकर ३१ सर्वपद भग होते है।

आगे थोडे गणित मे उपरोक्त सर्वपदभग निकालकर दिखाते है।

मिच्छाइट्ठिप्पहुदिं खीणकसाओत्ति सव्वपदभंगा।
पण्णट्ठि य सहस्सा पंचसया होंति छत्तीसा ॥९०२॥

तग्गुणगारा कमसो पणणउदेयत्तरीसयाण दलं ।
ऊणट्ठारसयाणं दलं तु सत्तहियसोलसयं ॥६०३॥
तेवत्तरिं सयाइं सत्तावट्ठी य अविरदे सम्मे ।
सोलस चेव सयाइं चउसट्ठी खयियसम्मस्स ॥६०४॥
ऊणत्तीससयाइं एक्काणउदी य देसविरदम्मि ।
छावत्तरि पंचसया खइयणरे णत्थि तिरियम्मि ॥६०५॥
इगिदालं य सयाइं चउदालं य य पमत्त इदरे य ।
पुव्वुवसमगे वेदाणियट्टिभागे सहस्समट्ठूणं ॥६०६॥
अडसट्ठी एक्कसयं कसायभागम्मि सुहुमगे संते ।
अडदालं चउवीसं खवगेसु जहाकमं वोच्छं ॥६०७॥
अडदालं चारिसयापुव्वे अणियट्टिवेदभागे य ।
सीदी कसायभागे तत्तो वत्तीस सोलं तु ॥६०८॥
जोगिम्मि अजोगिम्मि य वेसदछप्पण्णयाण गुणगारा ।
चउसट्ठी वत्तीसा गुणगुणिदेवकूणया सव्वे ॥६०९॥
सिद्धेसु सुद्धभंगा एक्कत्तीसा हवंति णियमेण ।
सव्वपदं पडि भंगा असायपरक्कमुद्दिट्ठा ॥६१०॥
आदेसेवि य एवं संभवभावेहिं ठाणभंगाणि ।
पदभंगाणि य कमसो अव्वामोहेण आणेज्जो ॥६११॥

मिथ्यातम से क्षीण तक, भंग सर्व पद मान ।
पेंसठि सहस रु पांच सौ, छत्तिस गुण्य पिछान ॥९०२

पन कम व हतर सौ अरध, इक कम नवसौ अर्ध।
सोलह सौ अरु सातधिक, गुणाकार क्रम वर्ध ॥६०३
तिहतर सौ सरसठि कहे, अविरत में गुणकार।
सोलह सौ चौंसठि कहे, क्षायिक के गुणकार ॥६०४
उनतिस सौ इक्यानवे, देशविषें गुणकार ।
पशु विन पन सौ छहत्तर, क्षायिक नर गुणकार ॥६०५
इकतालिस सौ चवालिस, प्रमत्त इतर गुणकार।
शम अपूर्व अनिवेद में, नव सौ बानव धार ॥६०६
इकसौ अरसठि वेद विन, सूक्षम अरु उपशांत।
अडतालिस चौवीस हैं, क्षपक कहूँ आगांत ॥६०७
चउसौ अडतालीस हैं, अठ नव में युत वेद।
अस्सी वेद विहीन में, वत्तिस सोलह भेद ॥६०८॥
दो सौ छप्पन गुण्य हैं, योग इतर गुणकार ।
चौंसठि वत्तिस गुणक हैं, सव में इककम सार ॥६०६
गुण्य गुणक नहिं सिद्ध में, इकतिस भग पिछान ।
सर्वपदों के भंग का, किया वीर व्याख्यान ॥६१०॥
मारगणा में इसी विधि, संभव भाव वखान ।
थान रु पद के भंग सव, क्रमसे लेउ पिछान ॥६१

अर्थ—थोडे गणित मे उपरोक्त सर्वपद भग इसप्रकार से निकलते है कि ६५५३६ को ३५८९७½ से गुणा कर गुणनफल मे १ कम करने से मिथ्यात्वगुणस्थान के २३५७६५७५९ सर्वपद भग होते है उसी को ८९९६½ से गुणाकर गुणनफल मे १ कम करने से सासादनगुणस्थान के ५८९४९९६३१ सर्वपद भग होते है उसी को १६०७ से गुणाकर गुणनफल मे १ कम करने से मिश्रगुणस्थान के १०५३१६३५१ सर्वपद भग होते है उसी को ७३६७ से गुणाकर गुणनफल मे एक कमकर ४२२८०३७११ और उसी को १६६४ से गुणा करने से क्षायिकसम्यक्त्व के १०९०५१९०४ इसतरह सब मिलकर अविरतगुणस्थान के ५९१८५५६१५ सर्वपद भग होते है उसी को २९९१ से गुणाकर गुणनफल मे १ कम करने से १९६०-१८१७५ और उसी को ५७६ से गुणा करने पर क्षायिकमनुष्य के ३३४८७३६ इसतरह सब मिलकर २३३७६६९११ देशविरत-गुणस्थान के सर्वपद भग होते है उसी को ४१४४ से गुणाकर गुणनफल मे १ कम करने से २७१५८११८३ प्रमत्तगुणस्थान के सर्वपद भग होते है, इसीतरह २७१५८११८३ अप्रमत्तगुणस्थान के सर्वपद भग होते है उसी को ९९२ से गुणा करके गुणनफल मे १ कम करने से ६५०११७१२ उपशमश्रेणी के अपूर्व सवेदभागअनिवृत्ति-करणगुणस्थान के होते है उसी को १६८ से गुणाकर गुणनफल मे १ कम करने से ११०१००४७ उपशमश्रेणी के अवेदभाग अनिवृत्ति-करणगुणस्थान के होते है उसी को ४८ से गुणाकर गुणनफल मे १ कम करने से ३१४७७२७ उपशमश्रेणी के सूक्ष्मसापरायगुण-गुणस्थान के सर्वपद भग होते है उसीको २४ से गुणाकर गुणनफल मे १ कम करने से १५७२८६३ उपशातमोहगुणस्थान के सर्वपद भग होते है उसी को ५४८ से गुणाकर गुणनफल मे १ कम करने से २६३६०१२७ क्षपकश्रेणी के अपूर्वकरणगुणस्थान के सर्वपद भग होते है इसीतरह २८३६०१२७ क्षपकश्रेणी के सवेदभाग अनिवृत्ति-करणगुणस्थान के सर्वपद भग होते है उसी को ८० से गुणाकर

गुणनफल में १ कम करने से ४१६४३०४ क्षपकश्रेणी के अवेदभाग अनिवृत्तिकरणगुणस्थान के सर्वपद भग होते हैं उसी को ३२ से गुणाकर गुणनफल मे १ कम करने से २०६७१५१ क्षपकश्रेणी के सूक्ष्मसापराय गुणस्थान के सर्वपद भंग होते हैं उसी को १६ से गुणाकर गुणनफल मे १ कम करने से १०४८५७५ क्षीणमोहगुणस्थान के सर्वपद भग होते है २५६ को ६४ से गुणाकर गुणनफल में १ कम करने से १६३८३ सयोगगुणस्थान के सर्वपद भाग होते है २५६ को ३२ से गुणकर गुणनफल में १ कम करने से ८१६१ अयोगगुणस्थान के सर्वपद भग होते है और सिद्धभगवान के गुण्य और गुणको से रहित ३१ सर्वपद भंग होते है इसीप्रकार यथासभव भावों से मार्गणाओं मे भी स्थानभग और पदभग लगाना चाहिये ॥६०२-६११॥

भावों का सर्वपद भंगदर्पण

मि	२३५७६५७५६	उ.	१५७२८६३
सा	५८६४६६३१	क्ष. अ	२६३६०१२७
मि	१०५३१६३५१	वे अ.	२६३६०१२७
अ.	५६१८५५६१५	अ. अ	४१६४३०४
दे.	२३३७६६६११	सू.	२०६७१५१
प्र	२७१५८११८३	क्षी.	१०४८५७५
अ	२७१५८११८३	स.	१६३८३
अ	६५०११७१२	अ.	८१६१
वे. अ.	६५०११७१२	सि	३१
अ. अ.	११०१००४७		
सू.	३१४७७२७		

१६८२६५५५८३

आगे मिथ्यादृष्टियो के ३६३ भंग दिखाते है।

असिदिसदं किरियाणं अक्किरियाणं य आहु चुलसीदी ।
सत्तट्ठण्णाणीणं वेणयियाणं तु बत्तीसं ॥६१७॥

इकसौ अस्सी क्रियाधर, चौरासी अपरान ।
अरु सरसठि अज्ञान धर, वत्तिस विनय पिछान ॥८१७॥

अर्थ—मिथ्यादृष्टियो मे क्रियावादियो के १८० भग होते है अक्रियावादियो के ८४ भग होते हैं अज्ञानवादियो के ६७ भाग होते हैं और विनयवादियो के ३२ भग होते हैं ॥८१७॥

आगे क्रियावादियो के १८० भग दिखाते है ।

अत्थि सदो परदोवि य णिच्चाणिच्चत्तणेण य णवत्था ।
कालीसरप्पणियदिसहावेहि य ते हि भंगा हु ॥८१८॥
अत्थि सदो परदोवि य णिच्चाणिच्चत्तणेण य णवत्था ।
एसिं अत्था सुगमा कालादीणं तु वोच्छामि ॥८१९॥
है निज से पर से तथा, सदा क्षणक नव तत्व ।
क्षण ईश्वर आतम नियत, स्वभाव से भंगत्व ॥८१८॥
है निज से पर से तथा, सदा क्षणक नव तत्व ।
इनका सीधा अर्थ है, कालादिक का कत्व ॥८१९॥

अर्थ—क्रियावादी वस्तु की विद्यमानता मानकर क्रिया करते हैं उनमे से कोई मानता है कि जीवादि नवतत्व अपने स्वरूप से काल के आश्रय सदा विद्यमान है कोई मानता है कि जीवादि नवतत्व अपने स्वरूप से काल के आश्रय सदा क्षणक विद्यमान हैं कोई मानता है कि जीवादि नवतत्व पर स्वरूप से काल के आश्रय सदा विद्यमान है कोई मानता है कि जीवादि नवतत्व पर स्वरूप से क्षणक विद्यमान है इसतरह जीवादितत्व ९ काल १ और मान्यता ४ को परस्पर गुणा करने से ३६ भग होते है काल की

जगह ईश्वर बदलने से भी ३६ भग होते है आत्मा बदलने से भी ३६ भग होते है नियत बदलने से भी ३६ भग होते हैं और स्वभाव बदलने से भी ३६ भग होते है सब मिलकर १८० भग होते है इनमें जीवादि नवतत्व और मान्यता चार का अर्थ सुगम है तथा काल, ईश्वर, आत्मा, नियत और स्वभाववाद का अर्थ क्रमसे नीचे वर्णन करते है ॥६१८-६१६॥

आगे कालवादियो का एकान्त दिखाते हैं।

कालो सव्वं जणयदि कालो सव्वं विणस्सदे भूदं।
जागत्ति हि सुत्तेसुवि ण सक्कदे वंचिदुं कालो ॥६२०॥

काल उपज सबकी करे, करे सर्व का नाश।
सोते को जागृत करे, काल ठगे को खास ॥६२०॥

अर्थ—काल सबको उत्पन्न करता है काल सबका नाश करता है काल सोते हुये को जगाता है ऐसे वलवानकाल का परिहार कौन कर सकता है अर्थात् जीवादि नवतत्व की स्थिति काल के आश्रय से ही है ईश्वर आदि से नहीं है इसप्रकार की मान्यता कालवादियो की है ॥६२०॥

आगे ईश्वरवादियो का एकान्त दिखाते है।

अण्णाणी हु अणीसो अप्पा तस्स य सुहं य दुक्खं य।
सग्गं णिरयं गमणं सव्वं ईसरकयं होदि ॥६२१॥

ज्ञानरहित है आतमा, नाथ न उसका कोय।
नरक स्वर्ग अरु दुक्ख सुख, सब ईश्वर से होय ॥६२१॥

अर्थ—आत्मा ज्ञानरहित है और अनाथ है उसको नरक, स्वर्ग, दुक्ख और सुख ईश्वर ही देता है अर्थात् जीवादि नवतत्व की

स्थिति ईश्वर के आश्रय से ही है कालादि से नही है इस प्रकार की मान्यता ईश्वरवादियो की है ॥८२१॥

आगे आत्मावादियो का एकान्त दिखाते है ।

एक्को चेव महप्पा पुरिसो देवो य सव्ववावी य ।
सव्वंगणिगूढोवि य सचेयणो णिग्गुणो परमो ॥८२२॥

आतम एक महान है, पुरुष देव सब व्याप ।
सर्व अंग से छिपा अति, चेतन निर्गुण थाप ॥८२२॥

अर्थ—इस त्रिलोक्य मे एक ही महाआत्मा है, वही पुरुष है, वही देव है, वही सब पदार्थों मे व्यापक है, वही सर्वांग से सबमे छिपा है, वही चेतना गुणकर सहित है, वही निर्गुण है और वही सबमे परमोत्कृष्ट है अर्थात् जीवादि नवतत्व की स्थिति उसी महात्मा से ही है अन्य कालादि से नही है इसप्रकार की मान्यता आत्मावादियो की है ॥८२२॥

आगे नियतवादियो का एकान्त दिखाते है।

जत्तु जदा जेण जहा जस्स य णियमेण होदि तत्तु तदा ।
तेण तहा तस्स हवे इदि वादो णियदिवादो दु ॥८२३॥

जिसका जैसा जिस समय, जिस थल जिसके हाथ ।
होना सोही होयगा, रखो न उद्यम साथ ॥८२३॥

अर्थ—जिसका जिस समय, जिस स्थान मे जिसके द्वारा जैसा होना निश्चित है वैसा उससमय उसस्थान मे उसके द्वारा होता है अर्थात् जीवादि नवतत्व की स्थिति जैसी निश्चित है वैसी होती है उसमे कालादि कुछ नही करते इसप्रकार मान्यता नियतवादियो की है ॥८२३॥

आगे स्वभाववादियो का एकान्त दिखाते है ।

को करइ कंटयाणं तिक्खत्तं मियविहंगमादीणं ।
विविहत्तं तु सहाओ इदि सव्वपि य सहाओत्ति ॥६२४॥

को स्वभाव नाना करे, पशु पक्षी का आय ।
को कांट तीच्ण करे, सब स्वभाव से पाय ॥८२४॥

अर्थ—काटे को कौन तीक्ष्ण करता है पशु और पक्षियों में अनेक प्रकार अनेक स्वभाव पाये जाते हैं उनको कौन बदलता है इसका उत्तर यह है कि सब उस वस्तु के स्वभाव से होता है नव-तत्व की स्थिति स्वभाव से ही होती है उसमें कालादि कुछ नही करते इसप्रकार की मान्यता स्वभाववादियो की है ॥८२४॥

आगे अक्रियावादियो के ८४ भग दिखाते है ।

णत्थि सदो परदोवि य सत्तपयत्था य पुण्णपाऊणा ।
कालादियादिभंगा सत्तरि चदुपंतिसंजादा ॥६२५॥
णत्थि य सत्तपदत्था णियदीदो कालदो तिपंतिभवा ।
चोद्दस इदि णत्थित्ते अक्किरियाणं य चुलसीदी ॥६२६॥

नहिं निज से पर से तथा, सात पदारथ मान ।
कालादिक चउ पंक्ति के, सत्तर भंग पिछान ॥८२५॥
नहिं अरु सात पदार्थ लिख, नियत काल त्रय पंक्ति ।
गुणे चतुर्दश पूर्व मिल, क्रिया रहित असिवंत्ति ॥८२६॥

अर्थ—अक्रियावादी वस्तु की अविद्यमानता मानकर क्रिया नही करते हैं उनमे से कोई मानता है कि काल के आश्रय जीवादि

सात पदार्थ अपने स्वरूप मे विद्यमान नही है और कोई मानता है कि काल के आश्रय जीवादि सात पदार्थ पर स्वरूप से विद्यमान नही है इसतरह काल के आश्रय जीवादि सात पदार्थ के प्रति दो मान्यता से १४ भग होते है काल की जगह ईश्वर लगाने से १४ आत्मा लगाने से १४ नियत लगाने से १४ और स्वभाव लगाने से १४ इसतरह से ७० भग होते है इनके अतिरिक्त कोई मानता है कि काल के आश्रय जीवादि सात पदार्थ विद्यमान नही है इसतरह काल के आश्रय जीवादि सात पदार्थ की मान्यता से ७ भग होते है और काल की जगह नियत लगाने से ७ भग होते है इसतरह १४ ये और ७० ऊपर के मिलकर अक्रियावादियो के ८४ भग होते है ॥९२५-९२६॥

आगे अज्ञानवादियो के ६७ भग दिखाते है ।

को जाणइ णवभावे सत्तमसत्तं दयं अवच्चमिदि ।
अवयणजुद सत्ततयं इदि भंगा होंति तेसट्ठी ॥९२७॥
कोजाणइ सत्तचऊ भावं सुद्धं खु दोण्णिपंतिभवा ।
चत्तारि होंति एवं अण्णाणीणं तु सत्तट्ठी ॥९२८॥

को जाने नव तत्व को, है ना उभ विन वैन ।
तीन भंग मिल सात से, तेसठि भेद जु ऐन ॥९२७॥
को जाने सुध चार को, भाव सुद्ध दो पंक्ति ।
ये चारों मिल शठों के, सरसठि भेद जु संक्ति ॥९२८॥

अर्थ--अज्ञानवादी आप वस्तुस्वरूप जानते नही हैं और अन्य किसी को भी जाननेवाला नही मानते इस मान्यता से कोई मानता है कि जीवादि नवपदार्थ विद्यमान हैं ऐसा भी कोई नही जानता

कोई मानता है कि जीवादि नवपदार्थ विद्यमान नही है ऐसा भी कोई नही जानता कोई मानता है कि जीवादि नवपदार्थ उभयरूप है ऐसा भी कोई नही जानता कोई मानता है कि जीवादि नवपदार्थ अकथरूप हैं ऐसा भी कोई नही जानता कोई मानता है कि जीवादि नवपदार्थ विद्यमान है परि कहने में नही आते ऐसा भी कोई नही जानता कोई मानता है कि जीवादि नवपदार्थ विद्यमान नही है परि कहने मे नही आते ऐसा भी कोई नहीं जानता और कोई मानता है कि जीवादि नवपदार्थ विद्यमान है और नही भी है परि कहने में नही आते ऐसा भी कोई नही जानता इसतरह जीवादि नवपदार्थो को ७ भंगो से परस्पर गुणा करने से ६३ भंग होते है और इनके अतिरिक्त कोई मानता है कि शुद्धपदार्थ विद्यमान है ऐसा भी कोई नही जानता कोई मानता है कि शुद्धपदार्थ विद्यमान नही है ऐसा भी कोई नही जानता कोई मानता है कि शुद्धपदार्थ उभयरूप है ऐसा भी कोई नही जानता और कोई मानता है कि शुद्धपदार्थ अकथरूप है ऐसा भी कोई नही जानता ये सब कोरे विवाद है इसतरह ४ भंग ये और ६३ ऊपर के मिल सब अज्ञानवादियो के ६७ भंग होते है ॥६२७-६२८॥

आगे विनयवादियो के ३२ भंग दिखाते है।

मणवयणकायदाणगविणवो सुरणिवइणाणिजदिवुड्ढे।
वाले मादुपिदुम्मि य कायव्वो चेदि अट्ठचऊ ॥६२९॥

सच्छंददिट्ठीहिं वियप्पियाणि तेसट्ठिजुत्ताणि सयाणि तिण्णि।
पाखंडिणं वाउलकारणाणि अण्णाणिचित्ताणि हरंति ताणि॥६३०

देव नृपति ज्ञानी यती, बृद्ध पिता माँ बाल।
विनय योग्य लय दान से, करके वत्तिस ढाल ॥६२९॥

त्रय सौ त्रेसठि कल्पना, उनमार्गी ठहराय ।

पाखंडी व्याकुल करण, मूरख चित्त हराय ॥८३०॥

अर्थ—किसी भी अवस्था मे आप हो और कैसा भी देव, राजा, ज्ञानी, साधु, बुड्ढा, बालक, माता और पिता हो उसका विवेक न करके उनकी मन, वचन, काय और द्रव्य देकर विनय करना धर्म है इसतरह देवादि ८ और मनादि ४ को परस्पर गुणा करने से विनयवादियो के ३२ भग होते है इसप्रकार ३६३ उन मार्गियो की कल्पना से माने हुये धर्म है जोकि पाखडियो को व्याकुल करने वाले है और मूर्खों के चित्त को आकर्षण करनेवाले है ॥८२८-८३०॥

आगे उनके अतिरिक्त पुरुषार्थवादियो का एकान्त दिखाते है।

आलसड्ढो णिरुच्छाहो फलं किंचि ण भुंजदे ।

थणक्खीरादिपाणं वा पउरुसेण विणा ण हि ॥८३१॥

आलस युत उद्यम रहित, फल को लेश न पाय ।

जैसे थन से दूध को, उद्यम बिना न पाय ॥८३१॥

अर्थ—पुरुषार्थवादी पुरुषार्थ का एकान्त कर कहता है कि आलसी और निरुद्यमियो को किसी भी फल की प्राप्ति नही होती जिसतरह बिना पुरुषार्थ के स्तनो से दूध कोई भी नही पी सकता उसीतरह से बिना पुरुषार्थ के किसी भी कार्य की कोई भी सिद्धि नही कर सकता इसतरह एक पुरुषार्थ को ही प्रधान करने से पुरुपार्थवाद कहलाता है जोकि सर्वत्र घटित नही होता ॥८३१॥

आगे उनके अतिरिक्त दैववादियो का एकान्त दिखाते है ।

दइवमेव परं मण्णे धिप्पउरुसमणत्थयं ।
एसो सालसमुत्तुंगो कण्णो हण्णइ संगरे ।।८९२।।

भाग्य श्रेष्ट मैं मानता, धिक उद्यम वेकाम ।
ऊँचे किले समान जो, कर्ण हना संग्राम ।।८९२।।

अर्थ—दैववादी दैव (भाग्य) का एकान्त कर कहता है कि मैं केवल दैव से ही कार्य की सिद्धि मानता हूँ कारण दैव बिना पुरुषार्थ से कार्य की सिद्धि नही होती यदि पुरुषार्थ से कुछ होता तो ऊँचे किले के समान अजय (पुरुषार्थी) कर्ण नामक राजा रण-सग्राम में मारा नही जाता इसलिये पुरुषार्थ को धिक्कार देता हूँ अर्थात् पुरुषार्थ करना व्यर्थ है इसतरह एक दैव को ही प्रधान करने से दैववाद कहलाता है जोकि सर्वत्र घटित नही होता ।।८९२।।

आगे उनके अतिरिक्त सयोगवादियो का एकान्त दिखाते है।

संजोगमेवेति वदंति तण्णा णेवेक्कचक्केण रहो पयादि ।
अंधो य पंगू य वणं पविट्ठा ते संपजुत्ता णयरं पविट्ठा ।।८९३।।

कार्य सिद्ध संयोग से, रथ न चले इक चाक ।
अंध पंगु वन से निकसि, नगर गये पटु भाक ।।८९३।।

अर्थ—सयोगवादी सयोग का एकान्त कर कहता है कि दैव और पुरुषार्थ दोनो के सयोग (मिले) से कार्य की सिद्धि होती है जिसतरह एक पहिये से रथ नही चलता दो के सयोग से चलता है द्वितीय कहावत भी एक ऐसी है कि अधा और पगा किसी वन में अग्नि के वीच फँस गये थे तब अधा पगे को अपनी पीठ पर रख-कर चल पडा और अधे ने मार्ग बतला दिया और वे दोनो अग्नि से वच गये इसतरह संयोग को प्रधान करने से सयोगवाद कहलाता

है जोकि सर्वत्र घटित नही होता ॥६३३॥

आगे लोक की ध्वनि उठी दुर्निवार दिखाते है ।

सइउट्ठिया पसिद्धी दुव्वारा मेलिदेहिंवि सुरेहिं ।
मज्झिमपंडवखित्ता माला पंचसुवि खित्तेव ॥६३४॥

एक वार भी लोक ध्वनि, उठी न रोके कोय ।
अर्जुन गल माला पड़ी, पड़ी पाँच गल त्रोय ॥६३४॥

अर्थ—यह वात सर्वत्र दिखने मे आती है कि ससार के अज्ञानी जीवो की ध्वनि जिस विपय मे लग जाती है उस ही विपय की वढवारी मे लग जाते है योग्यायोग्य का विचार नही करते जिस-तरह कि सती द्रोपदी ने अर्जुन पाडव के गले मे वरमाला डाली थी किन्तु कुछ पुरुपो के मुखसे एकवार यह ध्वनि निकल गई कि उसने तो पाचो पाडवाओ के गले मे वरमाला डाली है फिर क्या-था कि यह वात सर्वत्र फैल गई और आज तक चली आ रही है उसी तरह से ससार के अज्ञानी जीव, काल, ईश्वर, आत्मा, नियत, स्वभाव, अज्ञान, विनय, पुरुपार्थ, दैव और सयोगवाद मे से किसी एक की ध्वनि मे लग जाते है फिर वे उसी की पक्षपात मे जीवन अस्त कर देते है इसतरह की पक्षपात को लोकवाद कहते है ॥६३४॥

आगे परमत के वचन मिथ्या जिनमत के सत्य दिखाते है ।

जावदिया वयणवहा तावदिया चेव होंति णयवादा ।
जावदिया णयवादा तावदिया चेव होंति परसमया ॥६३५॥

परसमयाणं वयणं मिच्छं खलु होइ सव्वहा वयणा ।
जेणाणं पुण वयणं सम्मं खु कहंचिवयणादो ॥६३६॥

जितने वचन विलास हैं, उतने हैं नयवाद ।
अरु जितने नयवाद हैं, उतने मिथ्यावाद ॥६३५॥
परमत के वच असत हैं, क्योंकि सर्वथा वैन ।
जिनमत के वच सत्य हैं, क्योंकि कथंचित् वैन ॥६३६

अर्थ—जितने वचन बोलने के मार्ग है वे सब दृष्टि भेद हैं क्योकि वचन कुछ दृष्टि रखकर ही बोले जाते है इसलिये वे दृष्टि भेद मिथ्या है क्योकि वस्तु के अनेक धर्मो को एक साथ नही कह सकते वे दृष्टि भेद दो प्रकार के होते है सन्मार्ग के पोपक और उन्मार्ग के पोपक जिसमे परमतियो के जितने वचन है वे सर्वथा कहने से उन्मार्ग के पोषक और मिथ्या है तथा जिनमतियो के जितने वचन है वे कथचित् कहने से सन्मार्ग के पोषक और सत्य है ॥६३५-६३६॥

आगे अत मगल दिखाते है ।

गोम्मटसंगह सुत्तं गोम्मटदेवेण गोम्मटं रइयं ।
कम्माण णिज्जरट्ठं तच्चट्ठवधारणट्ठं य ॥६३७॥

गोमट संग्रह ग्रन्थ को, कहा वीर भगवान ।
कर्म निर्जरा हेतु अरु, तत्वबोध को जान ॥६३७॥

अर्थ—यह सग्रह रूप गोमटसार ग्रन्थ श्री महावीर भगवान ने भव्य जीवो की कर्मो की निर्जरा के हेतु और तत्व वोध करने के लिये कहा है ॥६३७॥

जिन ध्वनि गण वच भूत लिपि, नेमिचन्द्र संग्रेह ।
क्षीर श्रमण भाषा करी, पढो त्यागि संदेह ॥

अर्थ—इस ग्रन्थ को श्री वीर भगवान की द्विव्यध्वनि सुन कर श्री गोतमगणधर ने वचन मई किया वह गुरु परपरा से श्रीधरसेनाचार्य तक आया उन्होने श्री पुष्पदत और भूतवलि आचार्य को मौखिक कराया उन्होंने षट षडागमश्रुत को लिखा उसको पढकर श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती ने प्राकृत भाषा मे छदवद्ध किया उसको देखकर मुझक्षीर सागर मुनि ने हिन्दी भाषा मे दोहा अर्थ रचा सो इस श्रुत को भव्यजीव को अनादिकाल से लगे हुये सदेह को छोड़कर प्रमाणिक मानकर पढना चाहिये।

गोमटसार कर्मकांड समाप्त।

